UNIVERSAL LIBRARY

OU_186746

UNIVERSAL LIBRARY

OUP 557 13 7-71 1000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H320.4 Accession No. H

Author

Title

This book should be returned on or before the date last marked below.

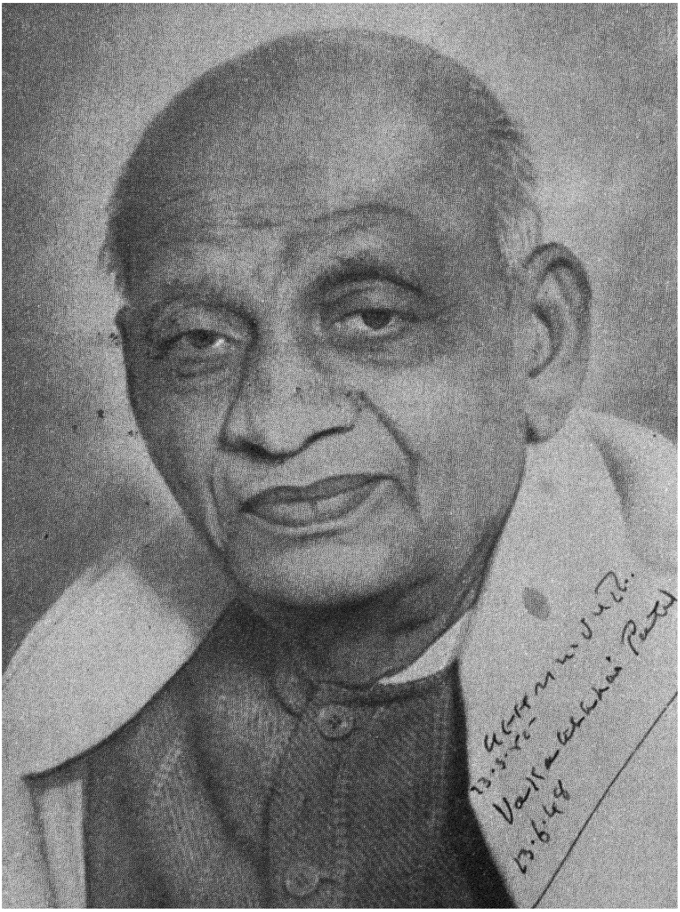
Vallabhbhai Patel
13.6.49

सरदार पटेलके भाषण

[१९१८ से १९४७ तक]

सम्पादक

नरहरि द्वारकादास परीख

अुत्तमचन्द दीपचन्द शाह

अनुवादक

रामनारायण चौधरी

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

पहला संस्करण. ५,०००

पाँच रुपये

जनवरी, १९५०

प्रकाशकका निवेदन

सन् १९१४ के अंतमें जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीकासे लौटे, तब हिन्दुस्तानमें और खास तौर पर गुजरातमें असाधारण जन-जाग्रतिका युग शुरू हुआ। यह जाग्रति कितनी चमत्कारिक हुअी, अिसकी कल्पना अुस जाग्रति-कालमें रहनेवाले लोगोंको होना मुश्किल है। परन्तु अुस जाग्रतिके अनेक महत्त्वपूर्ण परिणामोंमें से आसानीसे ध्यान खींचनेवाले दो अैतिहासिक परिणामोंसे अिस बातका अंदाज़ होता है कि वह जाग्रति कितनी अद्भुत थी। अेक तो अुस जाग्रतिके फल-स्वरूप हिन्दुस्तानसे अंग्रेज़ी हुकूमत मिट गअी; और दूसरे, अुसीके परिणामस्वरूप हिन्दुस्तानकी असंख्य रियासती हुकूमतें खतम हो गअीं। यहाँ तक कि गुजरातमें बड़ौदाकी हुकूमतका नामोनिशान मिट गया।

हिन्दुस्तान भरमें और अुसमें भी गुजरातमें होनेवाली अिस चमत्कारिक जाग्रतिमें गांधीजीको छोड़कर किसी अेक व्यक्तिका सबसे बड़ा हाथ हो, तो वह सरदार वल्लभभाअी झवेरभाअी पटेलका है।

जनतामें यह जाग्रति पैदा करनेके लिअे गांधीजीने लोक-शिक्षणके अनेक साधनोंका अुपयोग किया। पत्र-व्यवहार, अखबारोंमें लेख लिखना और भाषण — अिन सभी तरीक़ोंका अुन्होंने पूरा-पूरा अुपयोग किया।

सरदार पटेलके लिअे अखबारोंमें लेख लिखनेकी कोअी कल्पना नहीं कर सकता। गांधीजीकी तरह लोक-शिक्षणके लिअे व्यापक पत्र-व्यवहार भी अुन्होंने नहीं किया। वाणीके यानी भाषणोंके अेकमात्र साधनका अुन्होंने अपने अिस कार्यमें अुपयोग किया।

गांधीजीके बारेमें लिखते हुअे पंडित नेहरूने अेक जगह कहा है कि जिन लोगोंने अुनके साथ रहकर काम किया है, अुनके सिवाय दूसरे लोगों और अगली पीढ़ीके लिअे वे अेक दंतकथाके पात्र बन गये हैं। सरदार पटेलके बारेमें भी यह बात बहुत कुछ सच है। जिन्होंने अुन्हें प्रत्यक्ष देखा है, अुनके भाषण सुने हैं और जिन्होंने अुनके साथ रहकर गुजरात और हिन्दुस्तानके निर्माणका कार्य किया है, अुनके सिवाय दूसरोंके लिअे और भावी पीढ़ीके लोगोंके लिअे वे अेक दंतकथाके पात्र जैसे व्यक्ति हैं।

फिर भी गांधीजीका अच्छी तरह परिचय प्राप्त करनेकी आकांक्षा रखने वालेके लिअे जैसे अुनके लेख सबसे अुत्तम साधन हैं, वैसे ही सरदार पटेलका परिचय प्राप्त करनेकी अिच्छा रखनेवालेके लिअे अुनके भाषण ही अुपयुक्त साधन हैं ।

अंग्रेज़ी साहित्यके अेक विवेचकने सच ही कहा है कि शैली व्यक्तिके व्यक्तित्वको व्यक्त करती है । सरदार पटेलके व्यक्तित्वके कअी महान गुणोंके परिचयके लिअे भी अुनके भाषणोंके सिवाय और कोअी साधन नहीं है । अुनका तेज, अुनकी निर्भयता, अुनका शौर्य, अुनका अटूट धीरज, अन्यायके प्रति जला देनेवाला रोष और गुजरात तथा हिन्दुस्तानके किसान वर्गको सीधा खड़ा करने और तेजस्वी बनानेकी अुनकी व्याकुलता — ये सब और अुनके चरित्रके अैसे ही दूसरे लक्षण अुनके भाषणोंकी शैलीके दर्पणमें अच्छी तरह दिखाअी देते हैं ।

गुजराती भाषाके विकासमें बहुत बड़ा हिस्सा लेनेवाले विद्वानके रूपमें सरदार खुद कभी दावा नहीं करेंगे । सम्भव है कोअी अुन्हें विद्वानोंमें गिने तो शायद अुसे वे अपनी निन्दा समझें । फिर भी गुजराती भाषाके सामर्थ्यको बढ़ानेमें गांधीजीका जितना हाथ है, अुतना ही सरदार पटेलका भी है । अुनकी वाणी द्वारा गुजरातीका जो तेज और जो सामर्थ्य प्रकट हुआ है, वैसा शायद ही कहीं प्रकट हुआ होगा ।

अिस प्रकार गुजरातकी और अेक हद तक सारे हिन्दुस्तानकी गांधीयुगकी जन-जाग्रतिमें सरदार पटेलका कितना हाथ रहा है, यह बतानेके साधनके तौर पर, खुद सरदार पटेलका आजकी बढ़ती हुअी और आनेवाली पीढ़ियोंको सच्चा परिचय करानेके लिअे, अुनके व्यक्तित्वके गुण प्रकट करनेके लिअे, पिछले तीस सालमें गुजरातमें होनेवाली जन-जाग्रतिके अितिहासके दस्तावेज़के रूपमें और अेक पुरुषार्थी, समर्थ और तेजस्वी पुरुषकी वाणीमें गुजराती भाषा कितनी समर्थ बन सकती है, अिसका नमूना भावी सन्तानोंके सामने रखनेके लिअे सरदार पटेलके भाषण अेकत्र करनेकी ज़रूरत थी ।

सरदार पटेलके अैसे कीमती भाषण जब-जब, जैसे-जैसे दिये गये, वैसे-वैसे अखबारोंमें छपे होंगे । फिर भी बहुतसे छूट भी गये होंगे । सौभाग्यसे श्री० मणिबहनने अखबारोंमें प्रकाशित और अप्रकाशित भाषणोंमें से ज्यादातर भाषण सावधानीके साथ अिकट्ठे कर रखे थे । अुनकी अिस लगन और सावधानीके कारण ही यह संग्रह करना संभव हुआ है । अिसके लिअे आजका और खास तौर पर भावी गुजरात और हिन्दुस्तान अुनका ऋणी रहेगा ।

सरदारके प्रति भक्ति रखनेवाले श्री नरहरिभाओी और श्री अुत्तमचंद जैसे संपादक अिस कामके लिअे मिल सके, अिससे अिस संग्रहकी सुघड़तामें वृद्धि हुआी है। अिस संग्रहमें सब भाषण कालक्रमसे दिये गये हैं। अिसमें सरदार पटेलके १५ अगस्त १९४७ तकके ही भाषण लिये जा सके हैं। अुसके बादके अुनके भाषणोंका दूसरा संग्रह प्रकाशित करनेका हमारा विचार है।

हमारा पक्का विश्वास है कि गुजराती भाषाके प्रेमी, गुजरात और हिन्दुस्तानकी नवरचनाके अितिहासका अध्ययन करनेवाले और सरदार वल्लभभाओी झवेरभाओी पटेलका यथार्थ परिचय पानेकी जिज्ञासा रखनेवाले सभी लोगोंको और खास तौरपर गुजरातियोंको यह संग्रह पसन्द आयेगा।

२६ जनवरी जैसे अैतिहासिक महत्वके दिन, जब हिन्दुस्तान प्रजासत्ताक राज्य घोषित हो रहा है, अिस अत्यन्त महत्वपूर्ण संग्रहका हिन्दी अनुवाद हिन्दीभाषी जनताके सामने प्रस्तुत करते हुअे हमें अपार आनन्द होता है।

१४–१–'५०

जीवणजी देसाओी

प्रस्तावना

सरदारकी वाणीसे गुजरात खूब परिचित है। अुसमें से गुजरातने शौर्य और स्वावलम्बनका रस पीया है। अुनके तमाम भाषणोंसे, जो संग्रहीत रूपमें अिस पुस्तकमें दिये गये हैं, गुजरातकी नअी पीढ़ीको अिस बातकी कल्पना हो जायगी कि सरदारने गुजरातको किस तरह बनाया और यह निर्माण करते-करते वे खुद भी किस तरह अूपर अुठते गये।

जब १९१५-१६ में सरदारने गुजरातके सार्वजनिक जीवनमें प्रवेश किया, तबसे चाहे संकटके समय कष्ट-निवारणका काम करके जनताको टिके रहनेमें मदद देना हो, विविध प्रकारकी रचनात्मक प्रवृत्तियों द्वारा लोगोंको बलवान बनाना हो, या सरकारके अन्यायके विरुद्ध सविनय भंगकी लड़ाअियाँ छेड़कर जनताको प्राणवान और तेजस्वी बनाना हो — स्वराज्यकी रचना करनेके हरअेक काममें सरदार हमेशा आगे रहे हैं। अलबत्ता, अिन सारे कामोंमें सरदार हमेशा बापूजीकी सलाह-सूचना लेकर ही काम करते थे; और कभी वह सलाह-सूचना लेना संभव न हुआ हो, तो अिस बातकी वे बड़ी चिन्ता और सावधानी रखते थे कि अुनका काम बापूजीके सिद्धान्तोंके अनुसार है या नहीं। सरदारकी विशेष खूबी तो बापूजीके सिद्धान्तोंको व्यवहारमें लाकर अुन्हें अमली जामा पहनानेमें ही रही है। अिसमें रही हुअी सरदारकी मौलिकता और चतुराअीको न समझ सकनेवाले बहुतसे लोग अुन्हें बापूजीके अंध अनुयायी कहते थे। परन्तु सरदार बापूजीके सोच-विचार कर काम करनेवाले अनुयायी थे, यह बात अिन भाषणोंको पढ़ने पर जगह-जगह मालूम हो जायगी। १९४० में जब थोड़े समयके लिअे वे बापूजीसे अलग हो गये थे, तब भी बापूजीके प्रति ज्ञानपूर्वक वफ़ादार और सच्चे रहनेकी वृत्तिके कारण ही अैसा हुआ था। बापूजीके प्रति सच्ची भक्ति और वफ़ादारी, बिना समझे जैसा बापू कहें वैसा करनेमें नहीं है; परन्तु जब अुनकी बात न जँचे या अुनके कहे अनुसार करनेकी हममें शक्ति न हो, तब अपनी अन्तरात्माको जो सही लगे अुसीके अनुसार करनेमें है। अिसका सरदारने सुन्दर अुदाहरण लोगोंके सामने पेश किया है। वे बापूके सच्चे सिपाही थे, अिसी-लिअे गुजरातके और आज सारे देशके सरदार बन सके हैं।

लोगोंकी झूठी खुशामद करके नहीं, परन्तु सच्ची सेवा करके, अुन्हें सच्ची बात कड़वी लगे तो भी साफ़-साफ़ कहकर अुनके दिलमें प्रवेश किया जा

सकता है, और अुन्हें जहाँ ले जाना हो वहाँ ले जाया जा सकता है, यह अिन भाषणोंमें हमें स्थान-स्थान पर देखनेको मिलता है। साथ ही अिनमें हम यह भी देख सकते हैं कि हाथमें लिये हुअे कामकी तफ़सीलमें बहुत बारीकीसे घुस कर व अथक परिश्रम करके अुस पर काबू पानेसे ही सफलता मिल सकती है।

अिन भाषणोंसे यह कल्पना होती है कि स्वराज्य लेनेके लिअे लोगोंसे सरदारने कैसा पुरुषार्थ और कैसे पराक्रम कराये। अिस समय हमें राजनैतिक स्वराज्य मिल गया है, परन्तु सच्चे स्वराज्यकी रचना — जिसकी कल्पना अिन भाषणोंसे हमें होती है — तो अभी करना बाकी ही है। अिसके लिअे हमें क्या-क्या करना है, अिसकी विस्तृत कल्पना और अुसे करनेकी प्रेरणा गुजरातके नौजवानोंको अिन भाषणोंसे मिलेगी।

ये भाषण अुन रिपोर्टोंसे लिये गये हैं, जो रिपोर्टरों द्वारा लिये गये नोटोंके आधार पर विविध पत्रोंमें प्रकाशित हुअी हैं। ‘नवजीवन’ और ‘हरिजन’ में छपे हुअे भाषण सरदार देख गये होंगे, यह मानकर अुन्हें प्रमाण-भूत समझा जा सकता है। परन्तु दूसरे अखबारोंमें आये हुअे विवरण सरदारने शायद ही देखे होंगे। अिन सभी भाषणोंको पुस्तकाकार प्रकाशित करनेसे पहले सरदारको अेक बार दिखाया जा सका होता, तो अुनकी प्रामाणिकता बहुत बढ़ जाती। परन्तु अिस वक्त अुनकी अस्वस्थताके कारण और साथ ही अुन पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कामोंका जो भार है, अुसके कारण अैसा नहीं किया जा सका। परन्तु सारे भाषण मैं बहुत सावधानीसे देख गया हूँ; और विवरणमें रही हुअी त्रुटियोंको सुधारनेका प्रयत्न करके सरदारके विचारोंको यथाशक्ति सच्चे रूपमें अुपस्थित करनेकी मैंने सावधानी रखी है।

सरदारके मुखकी प्रत्यक्ष वाणीकी खूबी भाषणोंके विवरणमें पूरी तरह न आना स्वाभाविक है। विवरणोंमें भी कुछ भाषणोंके विवरण बहुत अच्छे ढंग पर लिये गये हैं, जबकि कुछ विवरण बहुत ही खण्डित और अपूर्ण हैं। फिर भी अिस तरहसे लिये गये भाषणोंके विवरणोंमें भी चेतना देनेवाली और सतेज बनानेवाली अेक प्रकारकी झंकार हम अवश्य महसूस कर सकते हैं। सरदारको साहित्यकी दृष्टिसे भाषाकी शुद्धि-अशुद्धि या बारीकीकी कोअी बहुत परवाह नहीं है। मालूम होता है अुन्होंने अपने सामने अखाका आदर्श रख छोड़ा है: “भाषाने शुं वळगे भूर, जे रणमां जीते ते शूर” — हे मूर्ख, भाषाको क्या पकड़ता है, जो लड़ाअीमें जीते वही वीर है। फिर भी देशभक्तिसे दिन-रात जलते हुअे और जनताके दुःख देखकर व्याकुल बने हुअे हृदयसे निकली हुअी अुनकी वाणी स्वयं साहित्य बन जाती है। ठेठ हृदयमें सीधी घुस जानेवाली, रूढ़ प्रयोगोंवाली जोशीली देहाती भाषा और शैलीका अेक नया ही प्रकार

अिस पुस्तक द्वारा संग्रहीत रूपमें अुपस्थित हो रहा है, और वह हमारे साहित्यमें अेक नअी ही चीज़ पेश करती है।

अिस संग्रहमें ता० १५–८–१९४७ तकके यानी हमारे आज़ादी प्राप्त करनेके दिन तकके भाषण लिये गये हैं। अधिकांश भाषण 'नवजीवन', 'हरिजन' तथा 'प्रजाबन्धु' में आये हुअे विवरणों परसे लिये गये हैं। 'जन्मभूमि', 'वन्देमातरम्', 'मुम्बअी समाचार' और 'फूलछाब' वगैरा पत्रोंमें आये हुअे विवरणोंसे भी भरसक लाभ अुठाया गया है। अिसके अलावा श्री० मणिबहन पटेलके लिये हुअे नोटों परसे भी काफ़ी संख्यामें भाषण तैयार किये गये हैं। कुछ भाषण अंग्रेज़ी और हिन्दीसे अनुवाद किये गये हैं। मैं अिस अवसर पर अुन सब पत्रोंका आभार मानता हूँ, जिनसे यह सामग्री ली गअी है।

सरदारके भाषणोंका संपादन करनेके लिअे जब मुझे नवजीवनकी तरफ़से कहा गया, तब मैंने यह काम शौक़से स्वीकार कर लिया। मगर कअी पत्रोंमें आये हुअे अुनके भाषण अिकट्ठे करने और अुन्हें व्यवस्थित रूप देनेका काम मेरी तबीयतके अनुकूल नहीं था। सरदारके प्रति भक्ति और वफ़ादारीसे प्रेरित होकर भाअी अुत्तमचंदने यह काम हाथमें ले लिया और मेरे साथ सहकारी संपादक हो गये, अिसीलिअे यह काम अच्छी तरह हो सका है।

स्वराज्य आश्रम, बारडोली, ९–१०–'४९ **नरहरि परीख**

विषयसूची

प्रकाशकका निवेदन ३

प्रस्तावना ७

१. खेड़ा सत्याग्रह — १ ३

२. खेड़ा सत्याग्रह — २ ४

३. खेड़ा सत्याग्रह — ३ ७

४. रौलट सत्याग्रह ८

५. चौथी गुजरात राजनैतिक परिषद ९

६. स्कूल-कॉलेजके विद्यार्थियोंसे २३

७. असहयोग २५

८. पाँचवीं गुजरात राजनैतिक परिषद ३१

९. विदेशी कपड़ेकी होली ३९

१०. ३६वीं राष्ट्रीय कांग्रेस — अहमदाबाद ४३

११. म्युनिसिपल आन्दोलन ४७

१२. श्रद्धाकी कसौटी ५१

१३. गोपालदासभाओ ५३

१४. अेक अेक लड़का दीजिये ५५

१५. गया कांग्रेसमें भाषण ५७

१६. श्रद्धा सहित शक्ति ५८

१७. केसरिया बाना या विचारहीनता ? ५९

१८. शान्त विचारकी ज़रूरत ६१

१९. कांग्रेसकी प्रतिष्ठा ६४

२०. भिक्षां देहि ६७

२१. नागपुर झंडा सत्याग्रहकी विजय ६८

२२. नागपुरकी जीतका रहस्य ७५

२३. धारासभाओंका बहिष्कार ७८

२४. बोरसद सत्याग्रहकी शुरुआत	७९
२५. बोरसदके डाकू	८४
२६. झूठे सबूत	९३
२७. बोरसद सत्याग्रहका विजयोत्सव	९६
२८. बोरसद सत्याग्रहकी पूर्णाहुति	९९
२९. बोरसदके स्वयंसेवकोंसे	१०१
३०. धोलका तहसीलके किसानोंसे	१०३
३१. प्रथम स्थानीय स्वराज्य परिषद	१०८
३२. गुजरात बाढ़-संकट—१	१२०
३३. गुजरात बाढ़-संकट—२	१२१
३४. गुजरात बाढ़-संकट—३	१२५
३५. गुजरात बाढ़-संकट—४	१२६
३६. गुजरात बाढ़-संकट —५	१२९
३७. गुजरात बाढ़-संकट—६	१३०
३८. गुजरात बाढ़-संकट—७	१३२
३९. गुजरात बाढ़-संकट—८	१३५
४०. छठी रानीपरज परिषद	१३७
४१. बारडोली सत्याग्रह	१३८
४२. बारडोलीकी विजय —१	१५७
४३. बारडोलीकी विजय—२	१५९
४४. विलक्षण भेंट	१६२
४५. आदर्श गाँव	१६५
४६. दैवी कोप	१६८
४७. पाँचवीं काठियावाड़ राजनैतिक परिषद—१	१७०
४८. पाँचवीं काठियावाड़ राजनैतिक परिषद—२	१७८
४९. देशी राज्योंकी आबकारी नीति	१८६
५०. सातवीं महाराष्ट्र प्रान्तीय परिषद	१८८
५१. गुजरात महाराष्ट्रको अेक कीजिये	१९६
५२. तामिलनाड़का दौरा	२०२
५३. कर्नाटकका दौरा	२०७
५४. बिहार-यात्रा	२०९
५५. स्नातकोंसे	२१३
५६. धर्मयुद्धकी शुरुआत	२१६

५७. लड़ाअी जारी रखो २२३
५८. समझौतेकी बातें २२७
५९. तीखे तीर २२७
६०. मांडवीके खादी भण्डारका अुद्घाटन २३९
६१. कराची कांग्रेसके सभापति पदसे — १ २४५
६२. कराची कांग्रेसके सभापति पदसे — २ २५७
६३. सच्चा व्यापार कीजिये २५८
६४. तीन बरस बाद २६०
६५. आठवीं रानीपरज परिषद २७२
६६. बारसद प्लेग-निवारण २७८
६७. तीसरी स्थानीय स्वराज्य परिषद २८९
६८. ग्रामसेवक सम्मेलन ३००
६९. किसान सभामें ३०३
७०. रियासती कार्यकर्ताओंसे ३२०
७१. मुक्तिके लिअे मत दीजिये ३२२
७२. धारासभाका चुनाव ३३०
७३. सातवाँ स्नातक सम्मेलन ३३५
७४. बम्बअीके व्यापारियोंसे ३३८
७५. हलपतियोंको अुपदेश ३४०
७६. राजपीपलाकी लोकसभा — १ ३४६
७७. हलपति परिषद ३५१
७८. दक्षिणी रियासती सम्मेलन ३५५
७९. विदेशी मिशनरी और हमारे डॉक्टर ३५८
८०. स्त्रियोंकी शक्ति ३६०
८१. राजकोटके रंग ३६१
८२. मज़दूरोंसे ३६४
८३. कराची कारपोरेशनके मानपत्रका जवाब ३६८
८४. कराचीमें पाटीदारोंसे ३६९
८५. राजकोट राज्य प्रजा परिषद ३७१
८६. बड़ौदाकी प्रजाको सन्देश ३७८
८७. राजकोट काण्ड ३८९
८८. विद्याविहारके विद्यार्थियोंसे ४०१
८९. हलपतियोंकी मुक्ति ४०४

९०. सत्याग्रहीकी टेक ४०६
९१. स्नातकोंसे ४०७
९२. लींबड़ीके अत्याचार ४०९
९३. भावनगर प्रजा-परिषद ४११
९४. भावनगरका दंगा ४१६
९५. गाँवोंका ऋण ४१८
९६. स्कूलबोर्डके शिक्षकोंसे ४२२
९७. स्वयंसेवकोंसे ४२४
९८. बम्बअीमें शराबबन्दी ४२६
९९. युद्धका अुद्देश्य स्पष्ट करो ४३१
१००. विश्वयुद्ध ४३३
१०१. ठक्कर बापा ४३८
१०२. शोलापुर म्युनिसिपेलिटी ४३९
१०३. शोलापुरके व्यापारियोंसे ४४०
१०४. हमारे डॉक्टर ४४१
१०५. राजपीपलाकी लोकसभा — २ ४४२
१०६. मतभेद खड़े मत कीजिये ४४७
१०७. सत्याग्रहकी तैयारी कीजिये ४५०
१०८. बड़ौदा राज्यकी प्रजासे ४५३
१०९. ग्रामसेवकोंसे ४५७
११०. स्वतंत्र भारत युद्धमें साथ देगा ४५९
१११. युद्धका विरोध ४६४
११२. म्युनिसिपल सेवा ४६७
११३. लींबड़ीके हिजरतियोंसे ४६९
११४. वढ़वाणकी सार्वजनिक सभा ४७३
११५. नाज़ीवाद और साम्राज्यवाद ४७९
११६. थामणाकी ग्रामशाला ४८२
११७. जयपुर रियासत ४८५
११८. शहर सफाअी ४८६
११९. गाँवोंको सँभालिये ४८८
१२०. आज़ादीके बिना और कुछ काम नहीं देगा ४९४
१२१. सफाअी सीखिये ४९६
१२२. गाँवोंकी रक्षा ४९८

१२३. अेक हो जाअिये ५००
१२४. गाँवका संगठन कीजिये ५०३
१२५. स्वराज्यकी प्रसव-वेदना ५०४
१२६. अहमदाबादके धनिकोंसे ५०९
१२७. युवकोंसे ५११
१२८. आखिरी लड़ाअीकी तैयारी ५१२
१२९. पत्रकार परिषदमें ५२१
१३०. कॉलेजके विद्यार्थियोंसे ५२६
१३१. राष्ट्रीय विद्यार्थी मण्डलसे ५२८
१३२. बहनोंसे ५३३
१३३. अहमदाबादके व्यापारियोंसे ५३५
१३४. गुलामीकी जंजीरें तोड़ डालिये ५३८
१३५. अंग्रेजो, चले जाओ ५४३
१३६. नौ अगस्त ५५१
१३७. चुनावोंमें शक्ति दिखाअिये ५५४
१३८. अेशिया छोड़ो ५५७
१३९. शिक्षाका माध्यम ५६०
१४०. स्वराज्य-भवनकी चार दीवारें ५६३
१४१. प्राथमिक शिक्षकोंसे ५६८
१४२. चारुतर ग्रामोद्धार मंडल ५७१
१४३. रासके किसानोंमें ५७४
१४४. करमसदमें मानपत्र ५७७
१४५. कृषि महाविद्यालय ५८०
१४६. विट्ठल कन्या विद्यालयमें ५८३
१४७. विट्ठल कन्या विद्यालयकी कन्याओंसे ५८६
१४८. खेड़ा ज़िलेके कार्यकर्ताओंसे ५८९
१४९. बड़ौदामें सार्वजनिक सभा ५९२
१५०. क्रान्तिके समयको पहचानिये ५९७
१५१. कांग्रेसके लिअे सत्ता नहीं चाहिये ५९९
१५२. पंजाबके संकटमें सहायता कीजिये ६०४
१५३. अधिक अुपजाओ ६०५
१५४. शिक्षकोंका गौरव ६०७
१५५. सेवादलका फर्ज ६०९

१५६. दिल्लीके गुजरातियोंसे ६१०

१५७. रियासती विभाग ६११

१५८. प्रजाके टुकड़े नहीं होंगे ६१४

सूची ६१८

सरदार पटेलके भाषण

१

खेड़ा सत्याग्रह — १

[खेड़ा सत्याग्रहके दिनोंमें ता० १८-४-१९१८ को रास गाँवमें समुद्र तटके किसानोंको सभामें दिया हुआ भाषण ।]

आज अिस समुद्र तटकी भूमि महात्माजीके चरणोंसे पवित्र हुअी है । बोरसद तहसीलके लोग सारे ज़िलेमें सबसे ज्यादा झगड़ालू माने जाते हैं, और खास तौर पर समुद्र तटके लोग बहुत फ़सादी कहे जाते हैं ।

अब अिस हिस्सेमें सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू हो गअी है, अिसलिअे हमें झगड़ा, लूटपाट और धोखा वगैरा सब छोड़ देने चाहिये और न्यायके रास्ते चलना चाहिये । आपमें जो जोश हो, अुसे न्यायके मार्ग पर लड़नेमें काममें लीजिये । अपनी शक्तिका बुरा अुपयोग न कीजिये । मारनेके लिअे हँसिया अुठाना छोड़ दीजिये । आपसमें भाअीचारा रखिये । विनय और विवेकसे चलिये । हमारे जो हक़ हों, वे दृढ़तासे माँगें । तहसीलदारोंका डर छोड़ दें । हक़की बात हिम्मतसे कहें । तहसीलदारसे आप नीचे नहीं हैं । कभी-कभी तो अैसा होता है कि तहसीलदारके पास २५ बीघे जमीन भी नहीं होती । हमें अुसके यहाँ खाने-पीनेका सामान तौलने नहीं जाना है । सत्कार करना हो, तो घर बुलाकर करें । अुसके दबावसे, अुसके रुआबसे न डरें, परन्तु निर्भय बनें । हमारी लड़ाअीका मुख्य अुद्देश्य यह है कि जनतामें से भय निकाल दिया जाय और कुरीतियाँ, फूट और झगड़े-टंटे मिटा दिये जायँ ।

सरकार आपको खूब तपायेगी, आपको दुःख भी देगी । मगर दुःखके बिना सुख नहीं । समझकर दुःख अुठाना सबसे अच्छा रास्ता है । मैं जानता हूँ कि आपको सीधे रास्ते लगाया जाय, तो आप लग सकते हैं । हमारी लड़ाअीमें धर्मका अंश ज्यादा है । महात्माजीके प्रति आपने अितना अधिक प्रेम दिखाया है कि मुझे विश्वास है कि आप महात्माजीका बताया हुआ रास्ता पकड़े रहेंगे ।

सरकार क्या करेगी ? जब्तियाँ करेगी, चौथाअी लगानका दंड करेगी और ज़मीन खालसा करेगी । मगर आप किसी भी तरहका फ़साद न करना । मैंने देखा है कि आपके यहाँ जब जब्ती होती है, तब आप हँसिया अुठा लेते हैं । मगर अब तो हमें लाठी तक नहीं अुठानी है । ज़मीन खालसा करेगी, तो कोअी

सारे गाँवकी खालसा नहीं होगी। आपकी ज़मीनमें तो आप ही हल चलायेंगे। आप जानते हैं कि अेक कुम्हार भी गधे पर पहले अेक मन बोझा रखता है, अुसे वह ले जाय तो फिर आधा मन बोझा बढ़ा देता है, और अिस तरह करते-करते अुससे दो मन बोझा खिंचवाता है। अिसी तरह आप जैसे-जैसे बोझा सहन करते जाते हैं, वैसे वैसे सरकार भी आप पर ज़्यादा बोझा डालती जाती है। आपने अब तक जो बोझा सहन किया है अुसे फेंक दीजिये और निर्भय होकर बैठ जाअिये। जो सत्य है अुसका अनुसरण कीजिये। फिर सरकार भी कहेगी कि जनता नामर्द नहीं है।

अन्तमें मेरी प्रार्थना है कि आकाश-पाताल अेक हो जायँ, तो भी आप अपनी प्रतिज्ञा न तोड़ें। अैसा करेंगे तो खेड़ा ज़िलेका नाम हिन्दुस्तानके अितिहासमें पहला लिखा जायगा। सारे हिन्दुस्तानकी आँखें अिस वक्त आप पर लगी हैं। रैयत जो अिन्साफ़ चाहती है, वह अिन्साफ सरकारको देना ही पड़ेगा। अगर जनबल अेकत्र हो जाय, तो कोअी भी सरकार अुसका विरोध नहीं कर सकती। यह सरकार तो अपनेको न्यायी कहती है; अिससे तो अैसा हो ही कैसे सकता है!

अिस प्रतिज्ञाका पालन करनेसे ही आपकी भावी सन्तानोंकी अुन्नति होगी।

२

खेड़ा सत्याग्रह — २

[खेड़ा सत्याग्रहके दिनोंमें गांधीजी बिहार चले गये थे, तब खेड़ा जिलेके लोगोंके नाम दिया गया सन्देश, मअी १९१८।]

हमारी लड़ाअी सत्याग्रहकी है। लोकमत और अन्धी हुकूमत दोनोंके बीच दारुण धर्मयुद्ध हो रहा है। सरकारने सत्ताके ज़ोरसे ज़मीनका लगान वसूल करनेका निश्चय किया है। लोगोंने प्रतिज्ञा की है कि सरकारके अनुचित हुक्मोंका आदरपूर्वक अनादर किया जाय और सरकार सत्ताका अुपयोग करे, तो अुससे होनेवाले दुःख सहन कर लिये जायँ, मगर लगान अदा न किया जाय।

अधिकारियोंने जब्तियाँ शुरू कर दीं। मातर तहसीलमें तो वसूलीके कामके लिअे दो नये खास अफ़सर नियुक्त किये गये। कचहरीके कारकूनों तकको अिस काममें लगा दिया गया। सारे ज़िलेमें ज़ब्तीके नोटिस निकाले। मुख्य आदमियोंके घर पर जब्तियाँ कीं। खालसा करनेके हुक्म दिये गये। चौथाअी जुर्माना लिया गया। खड़ी फ़सल जब्त कर ली गअी। क़ैद करनेका

डर दिखाया; मगर लोग अचल रहे और अफ़सर थक गये। तब कमिश्नर साहब अुनकी मददके लिअे आये। तमाम किसानोंको नड़ियादमें अिकट्ठा करके अुन्हें खूब धमकियाँ दीं, गवर्नर साहबका पत्र पढ़ सुनाया। जब्तियाँ बन्द करनेका दृढ़ निश्चय घोषित किया और लोग ज़रूर डर जायँगे, यह माननेवाले कमिश्नर-साहब किसानोंके साहसपूर्ण अुत्तरको सुनकर, अपने २८ सालके राजनैतिक अनुभवमें कभी न देखी-सुनी घटना देखकर व विस्मित होकर बिदा हुअे। अफ़सरोंने खालसा करनेके अितने नोटिस निकाले कि फॉर्म खतम हो गये, और किसी-किसी जगह तो खालसाके हुक्म भी किये। रैयतने अिन सबका खुशीसे स्वागत किया। लेकिन सरकारके खज़ानेमें कौड़ी भी नहीं आअी। अन्तमें रैयतको अिन्साफ़ देनेके लिअे नियुक्त किये गये अनुभवी कलेक्टर साहब बिदा हुअे और नये कलेक्टर साहबने खालसाकी बात छोड़कर जब्तियोंका काम शुरू किया।

गाँव-गाँवमें जब्तियोंका काम ज़ोरोंसे चला, फिर भी लोगोंने हिम्मत नहीं छोड़ी। खेड़ा ज़िलेके किसानोंके बराबर अपने मवेशियोंकी सारसँभाल रखनेवाले किसान शायद ही और कहीं होंगे। वे अपने ढोरोंको कुटुम्बका अंग मानते हैं। किसानोंकी स्त्रियाँ रातको भी गहरी नींदसे अुठकर अपनी भैंसोंको दो तीन बार चारा-घास डालती हैं और अुनके शरीर पर प्रेमसे हाथ फेरती हैं। चुटकी भरते ही खून निकल आये, अैसे सँभाल कर रखे हुअे मवेशी देखकर हमें बड़ी खुशी होती है। बहुतसे किसानोंके परिवारका आधार अिन जानवरों पर होता है। अुन्हें ज़रा भी दुःख होने पर अुनके मालिकोंको बड़ा दुःख होता है। स्त्रियाँ तो अपने ढोरोंको दुःख होता देख ही नहीं सकतीं।

जब्ती करनेवाले अधिकारी किसानोंकी अिस स्थितिसे फ़ायदा अुठाकर, किसानोंको अधिकसे अधिक कष्ट देकर आसानीसे डरानेकी नीयतसे, जब्त करने लायक़ दूसरी मिल्कियतके होने पर भी बड़ी तादादमें भैंसें जब्त करते हैं और खास तौर पर दुधारू भैंसें ले जाते हैं। कुछ जगहों पर तो जब्त करके ले जानेके बाद अुन्हें तुरंत धूपमें बाँध दिया जाता है। कहीं-कहीं अुन्हें अपने पाड़े-पाड़ियोंसे अलग कर दिया जाता है। जानवर चीख मारते हैं और स्त्रियाँ रोती-चिल्लाती हैं। यह देखकर बच्चे हृदय विदारक रुदन करते हैं। जब्तीकी मियादके दिनोंमें भैंसकी क़ीमत आधी हो जाती है। फिर भी धर्मपालन करनेवाला किसान धीरजसे प्रतिज्ञाका पालन करता है और शांतिसे दुःख सहन करता है। कहीं-कहीं अैसे अवसरों पर स्त्रियाँ बड़ी हिम्मत दिखाती हैं। जब्त किया हुआ माल नीलाम होने तक किसानको चौथाअी माफ़ करनेका लालच दिया जाता है। फिर भी अेक सालका लगान मुलतवी करवानेके लिअे लड़नेवाले किसान सत्यकी खातिर अपने मालको नीलाम होने देते हैं और दयालु माअी-बाप सरकार

नीलामके रुपयेसे ज़मीनके लगानके अलावा चौथाअी दंड वसूल कर लेती है। अितना दुःख सहन करनेकी सलाह देनेवाले महात्माजीको किसान गाँव-गाँव अपने यहाँ बुलाकर, अपने गाँवको पवित्र करनेके लिअे और अुनके दर्शनोंका लाभ अुठानेके लिअे बहुत प्रेमपूर्वक निमंत्रण देते हैं। यह निमंत्रण देनेमें अलग-अलग गाँवोंकी स्पर्धा देखने लायक़ होती है।

महात्माजीके दर्शनोंसे और अुनके वचनामृतसे किसान अपने दुःख भूल जाते हैं। कुछ किसान तो यह मानकर कि सरकारके लगान स्थगित न करनेसे अुन्हें महात्माजीके दर्शनों और अमूल्य अुपदेशोंका लाभ मिला, सरकारका अुपकार मानते हैं। अिस प्रकार लोगोंकी धार्मिक और नैतिक अुन्नति हो रही है। यह अिस लड़ाअीका सबसे बड़ा शुभ परिणाम है।

लोगोंके मनसे अधिकारी वर्गका भय निकल गया है और खेड़ाका किसान अधिकारियोंके साथ हिम्मत और अिज्जतसे काम ले सकता है; अितना ही नहीं, जो गरीबसे गरीब रैयत सैकड़ों वर्षोंसे चुपचाप बेगार करके गुलामीकी हालत बरदाश्त करती थी, वह अब मुक्त हो गअी है।

लोग समझने लगे हैं कि फूटसे बड़ी बरबादी होती है। वर्षोंसे चलने वाले झगड़ोंको छोड़कर लोग मेल-मिलापसे रहने लगे हैं। आपसमें झगड़े करके अदालतोंमें जानेका अुनका शौक़ कम हो गया है। अन्यायी हुकूमतका विरोध किया जा सकता है और असा करनेसे ही लोग अुन्नति कर सकते हैं। साथ ही सरकारको भी अिससे शिक्षा मिलनी है। हमारी लड़ाअीके ये शुभ परिणाम नज़र आते हैं। अिनके अलावा लोगोंको अुच्च शिक्षा भी मिलती है।

लड़ाअी ज्यों-ज्यों लम्बी हो रही है, त्यों त्यों जनताकी परीक्षा हो रही है। दुःख सहनेका अवसर ही न आया होता, तो जनताको बहुत लाभ न होता। अब हमारी परीक्षाका समय आया है। दुनिया हमारी तरफ़ देख रही है। अधिकारियोंको हुकूमत चलानेका मौक़ा नहीं मिलता। तहसीलमें रुपये जमा करानेके लिअे जानेवालेको कितना वक्त खराब करनेके बाद छुटकारा मिलता था; अिसके बजाय अब अधिकारी घर-घर रुपया वसूल करनेके लिअे फिर रहे हैं, लोगोंको डराना छोड़कर विनयसे समझाते हैं और प्रलोभन देते हैं। गाँवमें सत्ताके ज़ोर से साहबी भोगनेवालोंको सत्कार करनेवाला भी कोअी नहीं मिलता। मुँह माँगी चीज़ें मुफ्त लेनेवालोंको कभी कभी दाम देने पर भी ज़रूरी चीज़ नहीं मिलती। अुनकी कठिनाअियोंका अंत नहीं है। फिर भी अुन्होंने मर्यादा नहीं छोड़ी। अुनके हृदय पिघले हैं। मालूम होता है अुन्होंने यह समझ लिया है कि सच्चाअी रैयतकी तरफ़ है। मगर हमें समझना चाहिये कि मौजूदा शासन-पद्धतिमें वे लोग लाचार हैं। असे कठिन संयोगोंमें यह स्वाभाविक है कि वे कभी-कभी

मर्यादा छोड़ बैठें, क्रोध करें और हमें दुःख दें; फिर भी हमें तो मर्यादा नहीं छोड़नी चाहिये, विनय नहीं छोड़ना चाहिये और अुनसे द्वेष न करके अुन पर तरस खाना चाहिये और शांति रखनी चाहिये। कठोरसे कठोर हृदयको भी प्रेमसे वशमें किया जा सकता है और विरोधीकी कठोरताके प्रमाणमें हमारा प्रेम भी अुतना ही प्रबल होगा, तो हम ज़रूर जीत सकते हैं। सत्याग्रहकी लड़ाअीका यही रहस्य है।

गाँवोंमें स्त्रियाँ और बच्चे तक अिस लड़ाअीमें दिलचस्पी ले रहे हैं, यह आनंदकी बात है। परन्तु हमें खास तौर पर यह याद रखना है कि हमारे नौजवान अधिकारियोंके साथ उद्धतताका बरताव न करें। हम विनय छोड़ेंगे, तो नौजवान अुससे आगे बढ़कर अुद्धत बनेंगे; यदि अैसा हुआ तो हमारी लड़ाअीका नतीजा अुलटा ही होगा और हम जीतनेके बजाय ज़रूर हार जायँगे।

हमने सारे देशमें कीर्ति पाअी है और सम्भव है कि हमने खुद प्रेट साहबके हृदयमें भी दया और अिन्साफकी भावनाअें जाग्रत की हैं। अैसे मौके पर हम ज़रा भी चूकेंगे, तो जीती हुअी बाज़ी हार जायँगे। अिसलिअे मेरी सब भाअियोंसे प्रार्थना है कि घबराये हुअे अफसर मर्यादा छोड़ें और कोअी अनुचित काम करें, तो भी हम अुनसे किसी प्रकारका द्वेष न करें और अुन्हें प्रेमसे वशमें करनेके लिअे यथाशक्ति प्रयत्न करें। अिसी तरह कोअी भी अनुचित काम होता हो, तो अुसकी खबर सत्याग्रह छावनीमें की जाय।

३

खेड़ा सत्याग्रह – २

[ता० २९–६–१९१८ को खेड़ा जिला सत्याग्रहकी पूर्णाहुतिके समय महात्माजीको जो मानपत्र दिया गया था, अुसके जवाबमें भाषण देते हुअे अुस लड़ाअीमें सरदार वल्लभभाअीके किये हुअे कामका गांधीजीने जिक्र किया। अुसके अुत्तरमें सरदार पटेलने ये अुद्गार प्रकट किये :]

हिन्दुस्तानमें देवताओं और महात्माओंका यह रिवाज है कि अुन्हें चढ़ाया हुआ प्रसाद वे नहीं लेते, परन्तु अपने पुजारियोंको दे देते हैं। महात्माजीने आज अिसी तरह सब कुछ मुझे दे दिया है। मैंने कुछ भी नहीं किया है। अहमदाबादकी म्युनिसिपेलिटीमें बीस-बीस वर्षसे सेवा करनेवाले मौजूद हैं, तब मैं डेढ़ सालमें क्या कर सकता हूँ? मैं अपनी और अपने साथियोंकी तरफ़से कहना चाहता हूँ कि खेड़ा ज़िलेके लोगोंने हिम्मत और सहनशक्ति न दिखाअी

होती, तो अिस लड़ाओीमें हम कुछ भी नहीं कर सकते थे। अिसलिअे जो अिज्जत मुझे दी गअी है, वह सब मैं आपको वापस लौटाता हूँ।

हिन्दुस्तान सैकड़ों वर्षसे असाध्य रोगसे पीड़ित है। अिस रोगकी चिकित्सा करनेवाला अभी तक कोअी वैद्य नहीं मिला, और जो मिले हैं वे मीठी दवाअी देनेवाले हैं। मीठी दवासे असाध्य रोग नहीं मिटता। कुछ लोगोंको लगेगा कि सरकारके खिलाफ़ लड़नेवाला अैसी सलाह कैसे दे सकता है? मगर आप खूब याद रखना कि आपकी बीमारीका अिलाज करनेवाले और आपको औषधि देने वालेके दिलमें और रग-रगमें जनसेवा ही भरी है। आपको वह लेने लायक़ लगती हो तो लेना। आप हिम्मत न हारना।...खेड़ा ज़िला हिन्दुस्तानमें आगे आये, अिसके लिअे आप महात्माजीकी सलाहका स्वागत करना।

४

रौलट सत्याग्रह

[ता. २३-२-१९१९ को रौलट बिलका विरोध करनेके लिअे हुअी अहमदाबादके व्यापारियोंकी आम सभामें दिये हुअे भाषणका सार।]

अहमदाबादमें व्यापारियोंकी अैसी यह सभा पहली ही है और यह बदलते हुअे समयका चिन्ह है कि गुजरातके बनियोंके लिअे भी सभा करनेका वक़्त आ गया। जब युद्ध चल रहा था, तब सरकारकी तरफसे हमें यह कहा गया था कि आप मदद दीजिये और हम आपको स्वतंत्रताके मार्ग पर ले जायेंगे। भारत मंत्री यहाँ आये, तब हमने गुजरातकी तरफसे अेक अर्जी भी भेजी थी। बादमें भारत मंत्रीने सुधारोंकी योजना तैयार की और अुस योजनामें सुधार करवानेके लिअे सभाअें भी हुअीं। अब लड़ाअी खतम हो गअी, तो भी वह योजना अभी तक लटक रही है। सुधार मिलनेसे पहले भारतको अपनी सेवाके बदलेमें रौलट कमेटीके बिल मिले। अैसे कानून किसी भी राज्यमें नहीं हैं। हमारे नेताओंमें मतभेद होते हुअे भी अुन्होंने कौंसिलमें अेक स्वरसे कह दिया कि बिल मुल्तवी रखे जायँ। सरकार कहती है कि हमने बहुत सोच-समझकर बिल तैयार किये हैं और अुसकी जिम्मेदारी हमारे सिर है। अेक सरकारी सदस्यने कौंसिलमें यह कहा था कि आंदोलन तो जनताके नेता जैसा करना चाहेंगे वैसा होगा। बात सही है, और होगा भी अैसा ही। मामला अैसा ही है। गुजरातमें अहमदाबादके बनिये अैसा आन्दोलन करें, तो यह अुसका पहला ही चिन्ह है। कोअी पूछेगा कि अिस बिलसे व्यापारियोंको क्या नुकसान

है? पहले तो अिस बिलसे किसी प्रकारका राजनैतिक आंदोलन होगा नहीं। फिर सुधार दिये जायँ या न दिये जायँ, दोनों ही व्यर्थ हैं। सरकार जिसे राजद्रोही लेख मानती हो, वह हमारे पास किसी भी तरह आया हो, तो भी पुलिस हमें पकड़ कर ले जा सकती है। हम यह साबित कर दें कि वह लेख और किसी राजद्रोहके कामके लिअे अिस्तेमाल नहीं किया जानेवाला था, तो भी हमें सजा होगी और अुसकी अपील नहीं की जा सकती। अेक सदस्यने कहा कि अपील तो अिंग्लैंडमें भी नहीं है। मगर वहाँ दो जूरियाँ हैं। पहले बारह आदमियोंकी जूरीके सामने जुर्म साबित हो जावे, तो फिर नौ आदमियोंकी जूरीके सामने मुक़दमा चलता है और वे सब सर्व-सम्मतिसे किसीको अपराधी ठहरायें, तो ही सजा होती है। हिन्दुस्तानमें न जूरी है, न असेसर हैं। प्रजाके सभी निर्वाचित सदस्य अिस क़ानूनके विरुद्ध हैं, तो भी सरकार अुसे पास करनेको कहती है और अुन्हें जनताके प्रतिनिधि नहीं मानती। लेकिन जब लड़ाअीके लिअे ६७॥ करोड़ रुपयेकी रकम लेनेकी बात थी, तब अिन्हीं सदस्योंको जनताके नेता मानकर रुपयेके बारेमें प्रस्ताव करनेका भार अुन पर डाला गया था। क़ानूनका मसौदा सिलेक्ट कमेटीके सामने गया है और अुसमें थोड़ा परिवर्तन भी हो जायगा, परन्तु मसौदेका मुख्य अुद्देश्य तो क़ायम ही रहेगा। अिसलिअे हमने यह सभा करके ठीक ही किया है; और जैसा सरकारी सदस्यने कहा है, नेताओंको आंदोलन करना ही चाहिये।

प्रजाबन्धु, २-३-१९१९

५

चौथी गुजरात राजनैतिक परिषद्

[ता० २७-२८ २९ अगस्त १९२० को असहयोगके बारेमें विचार करनेके लिअे अहमदाबादमें चौथी गुजरात राजनैतिक परिषद की गअी थी, अुसके स्वागताध्यक्षके नाते दिया हुआ भाषण।]

स्वागत समितिकी तरफ़से और अहमदाबादकी सारी जनताकी तरफ़से मैं आज आपका हृदयसे स्वागत करता हूँ। आम तौर पर यह परिषद वर्षके अन्तमें, दीवालीके दिनोंमें भरनेकी प्रथा है। परन्तु महत्त्वपूर्ण और अकल्पित संयोगोंके कारण अुसकी यह बैठक जल्दी करनेकी ज़रूरत पड़ गअी है। अिसलिअे थोड़े समयमें और बरसातके मौसममें किये गये परिषद सम्बन्धी अिन्तज़ाममें आपको कुछ न कुछ खामियाँ नज़र आयेंगी और अुनके कारण कुछ असुविधाअें अुठानी पड़ेंगी। अिसके लिअे स्वागत समितिकी तरफ़से मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ।

गुजरातकी राजधानी

अहमदाबाद गुजरातकी राजधानी है। अिस समय अुसके प्राचीन वैभवके अितिहासमें जानेका मुझे कोअी अुपयोग नहीं दिखाअी देता। वह व्यापार-अुद्योगका भी केन्द्र है, परन्तु वर्तमान समयमें अुसकी महत्ता साबरमतीके किनारे स्थापित पवित्र सत्याग्रह आश्रमके कारण है। गुजरात राजनैतिक परिषदकी नींव डालनेवाले और हिन्दुस्तानके राजनैतिक जीवनके प्रचलित प्रवाहकी दिशा बदलनेवाले कर्मवीर महात्मा गांधीने साबरमतीके तट पर निवास करके अहमदाबादको जैसा चमकाया है, वैसा वह और किसी बातसे नहीं चमका। वे 'नवजीवन' द्वारा गुजरातके लोगोंमें सत्य और अहिंसाका सिंचन कर रहे हैं, और 'यंग अिडिया' के ज़रिये सारे भारतवर्षको नींदसे जगाकर स्वाभिमान और स्वधर्मका मन्त्र पढ़ा रहे हैं। तमाम हिन्दुस्तानकी आँखें अिस समय गुजरात पर हैं। अैसे कठिन समयमें गुजरात कौनसा मार्ग ग्रहण करता है, यह सब देख रहे हैं।

स्व० लोकमान्य तिलक

भारतके संकट कालमें स्वराज्यकी लड़ाअीके सेनापति लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक हमें छोड़कर चले गये। अुनकी कमी कौन पूरी कर सकता है? 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं (अुसकी भीख नहीं माँगूगा बल्कि) अुसे लेकर रहूँगा', यह अुनके जीवनका महान सिद्धान्त था, और स्वराज्य लेनेके लिअे वे भारी कष्ट झेलकर अन्त समय तक निडरतासे लड़ते रहे। हिन्दुस्तानमें अंग्रेजी हुकूमत हो जानेके बाद नौकरशाहीसे अुसके अपने ही हथियारोंसे घातक युद्ध करनेवाला अैसा दूसरा कोअी महान योद्धा आज तक पैदा नहीं हुआ। अुनकी अगाध विद्वत्ता, अुनका निर्मल चरित्र, अुनकी आदर्श सादगी, अुनकी वीरोचित निर्भयता, अुनकी अनन्य देशभक्ति और सबसे अधिक भारतवर्षमें अुनकी जगाअी हुअी स्वराज्यकी पुकार — यह अुनकी हमारे लिअे छोड़ी हुअी विरासत है। अुसका हम जितना अुपयोग करेंगे, अुतनी ही वह बढ़ेगी। राजा-महाराजाओंके नाम भुला दिये गये और भुला दिये जायंगे, परन्तु स्वर्गीय लोकमान्य तिलक भारतवासियोंके हृदयोंमें चिरकाल तक निवास करते रहेंगे। सत्ताधीशोंकी सत्ता अुनकी मृत्युके साथ ही समाप्त हो जाती है, जब कि महान देशभक्तोंकी सत्ता अुनके मरनेके बाद ही सचमुच काम करती है। लोग अुनके जीवनका अनुकरण करनेकी कोशिश करते हैं, अुनके गुण गाते हैं और दिन-रात अुन्हें याद करते हैं। लोगोंके प्रति अुनका कितना प्रेम था, अिसका जो प्रमाण अुनके अवसानके समय बम्बअीकी चौपाटी पर अेकत्र हुअी महान मानव-मेदिनीने दिया है, वह किसीकी लेखनी नहीं दे सकती। अिस परिषदका कार्य शुरू होनेसे पहले अुस महापुरुषकी मृत्यु पर शोक प्रदर्शित करनेका प्रस्ताव करना हमारा फर्ज़ है।

खिलाफ़त और पंजाबका सवाल

खिलाफ़त और पंजाबके काण्डोंसे देशमें जो गंभीर स्थिति पैदा हो गअी है, अुसके बारेमें विचार करनेके लिअे बनारसमें कांग्रेसकी महासमितिकी बैठक हुअी थी। अिस कमेटीने असहयोगके विषय पर खूब चर्चा की और अन्तमें अिस महान विषयका निर्णय करनेके लिअे कांग्रेसका विशेष अधिवेशन करना तय हुआ। कमेटीने निश्चय किया है कि कलकत्तेमें अगले सप्ताह कांग्रेसके होनेसे पहले हिन्दुस्तानकी जनता असहयोगके विषय पर खूब विचार करके अपना मत कांग्रेसको बता दे। अिसलिअे यह परिषद् जल्दी की गअी है। अिस महान प्रश्नका विचार गंभीरताके साथ होना चाहिये। राजनैतिक आन्दोलनका प्रवाह बरसोंसे अेक ही दिशामें चला आ रहा है। कअी कारणोंसे अुस प्रवाहका ज़ोर बढ़ता गया है और महायुद्धके परिणामस्वरूप अुसकी गतिमें बड़ी शक्ति आ गअी है। असहयोगका मार्ग प्रचलित दिशाके विरुद्ध है, और बड़े ज़ोरसे चले आ रहे प्रवाहको अिस दिशामें मोड़नेका बड़ा प्रश्न आपके सामने पेश हुआ है। असहयोग जनता और राज्यके बीच नीति, नियम और मर्यादामें रह कर चलाया जानेवाला महान युद्ध है। अिस युद्धमें दोनोंके बलकी परीक्षा होती है। युद्धके नियमोंका दोनों पक्ष पूरी तरह पालन करें, तो अिससे अेक पक्ष भी घाटेमें नहीं रहेगा। जीतनेवालेको तो खोना है ही नहीं। असलमें दोनों ही पक्षोंको अिससे बहुत लाभ होगा। अिस महान युद्धके परिणाम जितने सुन्दर हैं, अुतना ही यह युद्ध कठिन है। शस्त्रबलसे और बुद्धिबलसे सारे संसारमें जिसने ख्याति प्राप्त की है, जर्मन जैसे समर्थ राष्ट्रको जिसने अभी अभी मात दी है और जीत पर जीत होनेके कारण जो अुन्मत्त हो गअी है, अैसी सरकारके सामने सिर अुठाना कोअी आसान काम हो सकता है? अिसमें बड़ा साहस और कुर्बानी करनेकी ताक़त होनी चाहिये। अिसके लिअे बड़ी तालीमकी ज़रूरत है। आज हम अैसी विषय पर विचार करनेको अिकट्ठे हुअे है। असहयोगके पक्ष और विपक्षके — दोनों विचारोंके लोगोंको आग्रहपूर्वक निमंत्रित किया गया है। अिस प्रश्नका निर्णय जल्दबाज़ी और अधीरतासे नहीं करना है। दोनों पक्षोंको खूब धीरज और सभ्यताके साथ सुननेकी ज़रूरत है। स्वराज्य चाहनेवाली जनता लोकमतके किसी भी पक्षका अनादर नहीं कर सकती। सब दलोंका अंतिम लक्ष्य अेक ही है। केवल साधनोंके चुनावमें ही मतभेद है। यह मतभेद प्रामाणिक होगा, अिसमें शंका कैसे की जा सकती है? विरोधी विचारवाला दल जितना छोटा हो, अुतने ही ज्यादा विनयसे अुसकी बात सुनने और अुस पर अधिक शांतिसे विचार करनेकी ज़रूरत है। विरोधी पक्ष न हो, तो वादविवाद या चर्चाकी गुंजाअिश ही नहीं रहती। केवल बहुमतके बलके घमंडमें विरोधी पक्षकी अवहेलना करनेवाले या

अुसका तिरस्कार करनेवालेको अपना मत बलवान सरकारसे स्वीकार करानेका दावा करनेका क्या अधिकार है? यह परिषद् अिस गंभीर सवालका निपटारा आवश्यक विवेक और विचारपूर्वक करे, यही मेरी प्रार्थना है।

युद्धमें भारतकी सहायता

सन् १९१४ में जब युरोपमें लड़ाअी छिड़ी, तब यह कहा गया था कि अिस युद्धमें अिंग्लैण्डका कोअी स्वार्थ नहीं है, अिंग्लैण्डकी लड़ाअी करनेकी अिच्छा नहीं है, जर्मनीने अुसे लड़ाअीमें अुतरनेको मजबूर कर दिया है और छोटे-छोटे राज्योंकी स्वतंत्रताकी रक्षा और साथ ही सत्य और न्यायकी खातिर अिंग्लैण्डको तलवार खींचनी पड़ी है। अिस युद्धमें हिन्दुस्तानके लाखों सिपाही युरोप, अफ्रीका और अेशियाके अलग-अलग मैदानोंमें अपना खून बहाने गये। आजकल हिन्दुस्तान जैसी गरीबी पृथ्वीतल पर शायद ही कहीं होगी। अितने पर भी अपने करोड़ों बच्चोंको भूखों मार कर हिन्दुस्तानने डेढ़ अरब रुपयेकी भेंट अिंग्लैण्डको दी, करोड़ों रुपयेका कच्चा माल और लड़ाअीका दूसरा सामान हिन्दुस्तानसे ले जाया गया। जिस हिन्दुस्तानकी वफ़ादारीके बारेमें बड़ी शंकाअें की जाती थीं, अुस हिन्दुस्तानकी अैसी अकल्पित वफ़ादारी देख कर खुद अिंग्लैण्डकी जनता आश्चर्यचकित हो गअी। लड़ाअीके दिनोंमें किसी भी विवादग्रस्त विषयकी चर्चा न करनेकी भारत सरकारकी सलाह हमारे नेताओंने बड़ी खुशीसे मान ली। प्रेस अेक्ट, डिफ़ेन्स ऑफ़ अिंडिया अेक्ट और सिडीशस मीटिंग्स अेक्टका दुरुपयोग होने पर भी अुसे सहन कर लिया। भरती और युद्ध ऋणके काममें जुल्म होता देख कर भी किसीने ज़बानसे अुफ़ तक नहीं की। चारों ओरसे सबको चुप रहनेकी सलाह मिली। हिन्दुस्तानी और गोरे सिपाहियोंको समान हक़ देनेकी शर्त पर मदद देनेकी सलाह अनुचित मानी गअी। समझदार और विचक्षण नेताओंको साम्राज्यके संकटके समय मदद देनेमें किसी भी तरहकी शर्त करना शराफ़तके खिलाफ दिखाअी दिया। यह माना गया कि अिसमें हिन्दुस्तानकी शोभा नहीं है और ब्रिटिश जनताकी अुदार और न्याय बुद्धि पर और साथ ही ब्रिटिश मंत्रियोंके समय-समय पर प्रकट किये गये अुदार वचनों पर अत्यंत विश्वास रखा गया। हमारे मुसलमान भाअियोंने तो वफ़ादारीकी हद ही कर दी। मुसलमान क़ौमकी दो आँखोंके समान अली भाअियोंको लड़ाअीके शुरूसे अन्त तक नज़रबन्द रखा गया, कितने ही मुस्लिम पत्र प्रेस अेक्टके शिकार हो गये, फिर भी खुद तुर्कीके खिलाफ़ लड़कर हज़ारों बहादुर मुसलमानोंने अिंग्लैण्डके प्रधान मंत्री और दूसरे मंत्रियोंके वचनों पर विश्वास रख कर अपने प्राण गँवाये।

कुरबानीका अिनाम

अन्तमें लड़ाअी खतम हुअी । साम्राज्यकी जीत हुअी । परिणामस्वरूप हमें क्या मिला, अुसकी जाँच करें । लड़ाअीके बन्द होते ही भारत सरकारने हिन्दुस्तानके हितके नाम पर व्यक्ति-स्वातंत्र्यको जड़मूलसे नाश करनेवाले रौलट कानूनकी भेंट अत्यन्त आग्रहपूर्वक हमे दी । हिन्दुस्तान विस्मित हो गया । देशमें अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक हाहाकार मच गया । जिस समय सारी दुनियामें आत्मनिर्णयके सिद्धान्तकी बातें हो रही थीं, अुस वक्त मुट्ठी भर विदेशियोंने समझदारीके ठेकेका दावा करके संगठित लोकमतका तिरस्कार किया और हिन्दुस्तानको परतंत्रताकी बेड़ियाँ पहनानेकी धृष्टता की । संकटके मौके पर साम्राज्यको मदद देते समय शर्त करनेमें शराफ़तमें फ़र्क़ आनेका दोष देखनेवालोंकी सलाहको भी ठुकरा दिया गया । सरकार द्वारा मनोनीत किये हुअे कौंसिलके सदस्योंकी भी, जो हमेशा हर काममें सरकारके पक्षमें ही खड़े रहनेवाले थे, सलाह अिस अवसर पर व्यर्थ गअी । यह विचारहीन क़दम अुठानेका जो नतीजा हुआ, अुसे सारी दुनिया जानती है । पंजाबके गवर्नरकी ज़ालिम हुकूमतके भारके नीचे कुचली हुअी जनता अुबल रही थी । रौलट कानूनके खिलाफ़ होनेवाले आन्दोलनको ज़ोरसे दबा देनेकी नीति ग्रहण करके सरकारने आगमें घी डाल दिया । महात्मा गांधीको पंजाब जानेसे रोक दिया और अमृतसरके नेताओंको गायब कर दिया । नतीजा यह हुआ कि जनताका कुछ भाग गुस्सेसे पागल हो गया और क्षणिक पागलपनमें अुसने अनेक अत्याचार कर डाले । गुस्सेके आवेशमें होश भूलकर लोगोंने जो अत्याचार किये, अुनका हम बचाव नहीं कर सकते । सरकार अुन अत्याचारोंको रोकनेके लिअे अुचित सख्तीसे काम ले और क़सूरवार ठहरने पर अपराधियोंको सज़ा दे, तो कोअी अुसे बुरा नहीं कह सकता । निर्दोष मनुष्योंकी हत्याअें हों, सरकारी मकान जला दिये जायें, गिरजे जला दिये जायँ और स्त्रियों पर हमले हों, तब सरकार गुस्सा हो और किसी हद तक सख्तीकी मर्यादा न रख सके तो यह समझमें आ सकता है । अत्याचारोंके अनुपातमें पंजाब सरकारने सख्ती की होती, तो हमारे बोलनेकी गुंजाअिश न रहती । मगर सरकारने तो जुल्म करनेमें कोअी कसर ही नहीं रखी । किसी सुधरे हुअे राज्यके अितिहासमें जनता पर अैसा जुल्म करनेका अुदाहरण नहीं पाया जाता । वह जर्मनी द्वारा बेल्जियममें किये गये अत्याचारोंको भी भुला देता है । अिन अत्याचारोंकी ज़िम्मेदारीसे अपराधी अधिकारियोंको बचानेकी खातिर सरकारने मुक्तिका क़ानून पास किया । अुसके बाद अिस काण्डकी जाँच करनेके लिअे कमेटी मुकर्रर की गअी । अैसी कमेटियोंके न्यायमें विश्वास रखनेवालोंने जनताकी पुकारको शान्त कर दिया और सबको अिस कमेटी पर विश्वास

रखनेकी सलाह दी। सूरतकी परिषदके समय अिसी कारणको सामने रखकर माननीय वाअिसरॉयको वापस बुलवानेकी माँग करनेवाला प्रस्ताव नहीं रखा गया। मगर अिस कमेटीने तो सब बातोंको छिपानेकी कोशिश की। सरकारके चुने हुअे तीनों हिन्दुस्तानी सदस्य अेकमतसे अलग हो गये और कमेटीमें विश्वास रखनेवालोंके मुँह बन्द हो गये। सर चिमनलाल सीतलवाड़ सर्वोच्च न्यायालयमें अिन्साफ़ करनेके लिअे तो योग्य माने गये, परन्तु काले-गोरेके बीच न्याय करनेमें अुनकी शक्ति पर भरोसा नहीं रखा गया। कमेटीमें नियुक्त होनेसे पहले ही सर चिमनलालने सत्याग्रहके विरुद्ध अपने विचार प्रकट किये थे। अिसलिअे अुनकी रिपोर्टमें सत्याग्रहके विरुद्ध जो कुछ लिखा गया है, अुससे किसीको अचंभा नहीं हो सकता। मगर सरकारको तो अुस रिपोर्टका अुतना ही भाग पसन्द आ गया। अुसका अुपयोग भी हुआ और आगे भी होगा। पार्लियामेण्टकी लोकसभा ब्रिटिश न्यायकी आखिरी अदालत है। अिस देशमें अैसे लोग भी हैं, जो अीश्वरके अस्तित्वसे भी ज्यादा विश्वास ब्रिटिश न्यायमें रखते हैं। लोकसभाने अुनके अंधकारका पर्दा हटा दिया। कोअी आदमी पत्थरको हीरा मानकर अुसे लम्बे समय तक बचाकर रखे और संकटके वक्त पर अुसे भुनाने जाय और पछताये, तो अिसमें पत्थरका क्या दोष? ब्रिटिश न्यायमें विश्वास रखनेसे ही आज हमारी यह दशा हुअी है। अिसमें कोअी शक नहीं कि आम तौर पर जहाँ स्वार्थ न हो, वहाँ अेक अंग्रेज़ अधिकारी सच्चा अिन्साफ कर सकता है। हिन्दुस्तानमें अंग्रेजी हुकूमतके ज़मानेमें कितने ही हिन्दुस्तानियोंके गोरोंके हाथों मारे जानेके अुदाहरण हैं, परन्तु अेक भी अैसी मिसाल नहीं, जिसमें किसी देशीकी हत्या करनेके अपराधमें किसी अंग्रेज़को फाँसीके तख्ते पर लटकाया गया हो। लॉर्डसभामें अुमरावोंने अपनी शराफ़त दिखा दी! पंजाबके भारी दुःखोंकी हँसी अुड़ाअी गअी, अेक कायर और कमीने गोरे अफ़सरकी अिज्जत रखनेके लिअे सैकड़ों निरपराध मनुष्योंकी हत्याको भुला दिया गया, अुसे बहादुर बनाया गया और निर्दोष मारे गये लोगोंको विद्रोही ठहराया गया। अितना होनेके बाद ब्रिटिश न्यायमें विश्वास कैसे किया जा सकता है? लॉर्डसभाने हिन्दुस्तानके स्वाभिमान पर जो सख्त चोट की, अुससे सारा हिन्दुस्तान मूर्छित हो गया, देशमें सर्वत्र अंधकार छा गया, किसीको दिशा नहीं सूझी, सबके हाथ-पैर ठण्डे पड़ गये और सब विचार करने लगे कि अब क्या करें? लॉर्डसभामें लॉर्ड सिनहा हमें सलाह देते हैं कि गअी गुज़री भूल जाओ। जब लॉर्ड सिनहाको लॉर्ड बनाया गया था, तब हिन्दुस्तान खुशीसे पागल हो गया था। हम ब्रिटिश न्यायबुद्धि पर फ़िदा हो गये थे। यह साबित करता है कि राजनैतिक मामलोंमें हमारी कितनी अल्प दृष्टि है। अेक हिन्दुस्तानीको लॉर्डसभामें बिठा देनेसे क्या हिन्दुस्तानकी

तक़दीर खुल गअी ? पंजाब काण्डके समय लॉर्डसभामें लॉर्ड सिनहा न होते, तो हिन्दुस्तानको क्या हानि होती ? अुनकी अुपस्थितिसे हमें क्या लाभ हुआ ? पंजाबकी नाक काटकर हिन्दुस्तानकी अिज्जत पर हाथ डाला गया और न्याय करनेके बजाय असह्य दुःखमें पीड़ित जनताके कष्टोंकी हँसी अुड़ाअी गअी। यह कैसे भुलाया जा सकता है ? फौजी शासनके दिनोंमें पंजाबमें आतंक फैलानेके लिअे जान-बूझकर कत्लेआम किया गया, पंजाबियोंसे नाक रगड़वाअी गअी, अुन्हें पेटके बल चलाया गया, आम रास्तोंपर खड़े रखकर कोड़े लगाये गये, शहरके बीचमें फाँसीके तख्ते लगाये गये, हवाअी जहाज़से गोले बरसाये गये, विद्यार्थियोंको सोलह-सोलह मील पैदल चलाया गया, नेताओंको पकड़-पकड़कर कैदमें डाल दिया गया, झूठे सबूत पैदा करनेके लिअे जुल्म किये गये, पीनेका पानी बन्द कर दिया गया, हिन्दू-मुसलमानोंमें फूट डालनेकी कोशिश की गअी, स्त्रियोंकी अिज़्ज़त ली गअी और दूसरे अैसे कअी तरहके राक्षसी काम किये गये। यह सब हम कैसे भूल जायँ ? कांग्रेस कमेटीने बहुत ही नरम सिफ़ारिशें कीं, परन्तु अुन्हें भी नहीं माना गया। जुल्म करनेवाले अफ़सरोंमें से किसीको पछतावा नहीं हुआ, बल्कि वे अपने कृत्योंकी गर्वके साथ प्रशंसा करने लगे। अिस दुःख और अपमानको भुला देनेका अुपाय सरकारके हाथमें था। सरकारने यह अमूल्य अवसर खो दिया। जब हिन्दुस्तानकी धारासभामें पेटके बल चलनेके हुक्मके बारेमें चर्चा हुअी, तब सरकारकी तरफ़के कुछ सदस्योंने अैसी भाषा काममें ली, जैसी जुआरियों और शराबियोंकी भीड़ अिस्तेमाल करती है और पेटके बल चलनेवालोंका मज़ाक अुड़ाया गया। पंडित मदनमोहन मालवीयजीका अपमान करनेमें कोअी कसर नहीं रखी गअी। सैकड़ों हत्याअें करनेमें जनरल डायरकी नीयत साफ़ थी, अुसने सिर्फ़ हिसाब लगानेमें भूल की, अुसने हिन्दुस्तानको बचाया — ये बातें लोकसभा और लॉर्डसभामें अुसके बचावमें कही गअीं। क्या अिन्हें भुलाया जा सकता है ? सर माअिकेल ओडायर अिन तमाम अत्याचारोंके लिअे मुख्यतः ज़िम्मेदार है, मगर मंत्रि-मंडलने अुसके द्वारा की हुअी पंजाबकी सेवाओंको याद करके अुसकी प्रशंसा की। पंजाबने जो सेवाअें कीं, वे मिट्टीमें मिल गअीं; और लड़ाअीके ज़मानेमें वफ़ादारीमें मुख्य माने हुअे और लड़ाअीमें सबसे ज्यादा कुरबानी देनेवालेकी हैसियतसे मशहूर हुअे पंजाब पर विद्रोह करनेका झूठा और दुष्ट कलंक लगा दिया गया। हंटर कमेटीके सामने पेश किये गये सबूतोंसे यह साबित नहीं होता कि सारे पंजाबके तूफानमें किसी भी जगह जनताने बंदूककी अेक गोली भी छोड़ी हो। फिर भी आधुनिक शस्त्रोंसे सज्जित सेनाके विरुद्ध विद्रोहकी बात कहना धृष्टताकी चरम सीमा है। यह सब भूल जानेकी सलाह देनेवालेको मैं विनयपूर्वक पूछता हूँ कि आप हिन्दुस्तानको क्या सिखाना चाहते हैं ? दुनियाके किसी भी देशमें

अैसा अत्याचार हो और अपराधियोंको सज़ा देनेके बजाय अत्याचारोंको हँसीमें टाल दिया जाय, तो अुसका क्या परिणाम होगा अिसकी कल्पना आसानीसे की जा सकती है। तब क्या हमें जितना अपमान हो, अुतना सहन करना सीख लेना चाहिये? हिन्दुस्तानको अिस तरह अपमान सहन करना सीखनेकी सलाह देनेका किसे अधिकार है? नअी पीढ़ी अैसी सलाह देनेवालेके बारेमें भविष्यमें नहीं, थोड़े ही समयमें, कहेगी कि अैसा मनुष्य अपनी खातिर नहीं तो अपने देशकी खातिर पैदा ही न हुआ होता, तो बहुत अच्छा होता। भावी संतानोंका हम पर कुछ तो हक़ है। हम अुनके ट्रस्टी हैं। अगर हम अुनके लिअे अपमानकी ही विरासत छोड़ जायँगे, तो हमारी दौलत और हमारा ठाटबाट अुनके लिअे किस कामका है? हम अिस अपमानको पी जायँ, तो दूसरे हुअे राष्ट्र हमारा तिरस्कार करें, अिसमें क्या आश्चर्य है? अंग्रेज जातिके साझी बननेका दावा हम कैसे कर सकते हैं?

मुसलमानोंकी हालत

अब यह विचार करें कि हमारे मुसलमान भाअियोंकी क्या दशा हुअी? टर्कीके राज्यके टुकड़े हो गये। सुलतानको कुस्तुन्तुनियामें अेक क़ैदी जैसा बना दिया, सीरियाको फ्रांसने हजम कर लिया, स्मरना और थ्रेसको यूनान निगल गया और मैसोपोटेमिया तथा फिलस्तीनको हमारी सरकारने हथिया लिया। अरबस्तानमें भी अपना नियंत्रण रखकर अेक नामका शासक खड़ा कर दिया। खुद वाअिसरॉय साहबने भी स्वीकार किया कि सुलहकी कुछ शर्तें मुसलमान क़ौमका जी दुखानेवाली हैं। लड़ाअीके दिनोंमें प्रधानमंत्री द्वारा हिन्दुस्तानी मुसलमानोंको दिये हुअे पवित्र वचनको भंग करके और अिस क़ौमकी भावनाओंका अनादर करके केवल स्वार्थ बुद्धिसे मित्र राज्योंने खलीफ़ाकी सत्ताका नाश किया। अिस अन्यायसे सारी मुसलमान जातिका हृदय विदीर्ण हो गया है। अिस बारेमें दो मत नहीं हैं कि अुनके साथ बड़ा अन्याय हुआ है। अैसी स्थितिमें वे क्या करें, अिसका निर्णय सेन्ट्रल खिलाफ़त कमेटीने कर दिया है। अिस परिषदको अिस सवालका भी निपटारा करना चाहिये। मुसलमानोंकी अैसी दुःखभरी हालतमें हिन्दू तटस्थ नहीं रह सकते। हिन्दू अगर मुसलमानोंकी मित्रता चाहते हों, तो अुन्हें अुनके दुःखमें शरीक होना ही चाहिये। कुछ लोग यह दलील देते हैं कि टर्कीके प्रतिनिधियोंने सुलहकी शर्तें मान कर हस्ताक्षर कर दिये, तो फिर हिन्दुस्तानको बोलनेका क्या हक़ है? बन्दूक दिखाकर कराये गये हस्ताक्षरोंसे अन्याय कोअी न्याय नहीं बन जाता और न्याय माँगनेवालेका हक़ मारा नहीं जाता। फ़ौजी कानूनके दिनोंमें पंजाबियोंको पेटके बल चलानेवाले अधिकारियोंने अिस तरहकी अजीब सफ़ाअी दी थी कि लोग खुशीसे पेटके बल

चलते थे और कुछ लोग तो अिस हुक्म पर फ़िदा होकर दो-दो तीन-तीन बार पेटके बल चले और अन्तमें अुन्हें रोकना पड़ा। अुन्होंने यह भी कहा था कि लोगोंको फ़ौजी क़ानून अितना पसन्द आया कि वे 'फ़ौजी क़ानूनकी जय' बोलने लगे और फ़ौजी क़ानून जारी रखनेके लिअे सरकारसे अनुनय-विनय करने लगे। तो क्या अिससे फ़ौजी कानूनके अन्यायके विरुद्ध बोलनेका हक़ जाता रहा?

असहयोग

पंजाब और खिलाफतके मामलेमें होनेवाले अन्यायको रोकनेके लिअे हमने तमाम अुपाय आज़मा लिये, गाँव-गाँवमें सभाअें कीं, प्रस्ताव पास किये, विरोधकी आवाज़ अुठाअी, तार दिये, डेपुटेशन भेजे, मंत्रियोंके दिये हुअे गंभीर वचनोंकी याद दिलाअी, मगर यह सब व्यर्थ हुआ। हमें पता लग गया कि न्याय प्राप्त करनेकी प्रचलित प्रथा निकम्मी है। यह भी भान हो गया कि हम बहुत समयसे अुलटे रास्ते ले जाये जा रहे थे। मगर यह समझ कर कि जो हो गया वह मिट नहीं सकता, अितना तो हमें निश्चय करना ही चाहिये कि अब अुस रास्ते हरगिज़ नहीं जायँगे। हम कुछ भी न करें, तो भी अितना ध्यान रखना तो ज़रूरी है कि आगे हम ठगे न जायँ। हिन्दुस्तानकी अधोगति होने दी जाय या अिस समय कमर कस कर अुसके साथ खड़े रहें, यह नेताओंके हाथमें है। जनता अुनकी तरफ़ टकटकी लगाये देख रही है। महात्मा गांधी असहयोगका मार्ग ग्रहण करनेकी सलाह दे रहे हैं। खिलाफ़त कमेटीने यह सलाह मान ली है। अिस मौक़े पर अमृतसर कांग्रेसकी आखिरी दिनकी बैठकका चित्र मेरी आँखोंके सामने खड़ा हो रहा है। हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोंके रक्तसे हालमें ही भीगी हुअी जलियाँवाला बागकी भूमिका स्पर्श करके पंजाबके आतंकसे क्रोधित प्रतिनिधियोंसे खचाखच भरे हुअे मंडपके बीच खड़े होकर महात्मा गांधीने टोपी अुतारी और शुद्ध सहयोग का मार्ग ग्रहण करने, सम्राटकी घोषणाके अुदार वचनों पर विश्वास रखकर मित्रताका बढ़ाया हुआ हाथ प्रेमसे पकड़ लेने और अविश्वास छोड़ देनेके लिअे गद्‌गद कंठसे प्रार्थना की। वे ही महात्मा आज सारे हिन्दुस्तानमें मुक्त कंठसे असहयोगकी पुकार कर रहे हैं। ब्रिटिश विधानमें अुनके बराबर शायद ही किसीको श्रद्धा होगी। अंग्रेज जाति पर वे मोहित हैं। अुनके जैसी साम्राज्यकी शुद्ध सेवाअें किसने की हैं? पढ़े लिखे नेताओंमें बहुतोंने सत्ता और स्वार्थके ओहदे सुशोभित करके सेवा की है मगर अिन्होंने जुलू और बोअर लड़ाअियोंमें सिपाहीगिरी करके जैसी निस्वार्थ और शुद्ध सेवा की है, वैसी और किसने की है? मिस्टर मांटेग्यू अिनके अुच्च चरित्र और अिनकी सेवाओंकी प्रशंसा करते हैं। परंतु वे कहते हैं कि राज

नैतिक दृष्टिसे अैसे अुच्च चरित्रवाले पुरुष भयंकर होते हैं। अिसमें अुनकी दृष्टिसे कुछ सत्य है। गन्दी और अशुद्ध राजनीति चलानेवाली सरकारको अूँचे चरित्रवाले पुरुषोंका हमेशा डर रहता है; मगर शुद्ध राजनीतिवाले राज्योंके तो अैसे ही पुरुष आधार-स्तम्भ होते हैं। गांधीजीने जनताकी जैसी भारी सेवाअें की हैं, वैसी और कौन कर सकेगा? हमें अिस वक्त और कोअी मार्ग नहीं सूझता। नेताओंमें से कोअी दूसरा रास्ता नहीं बता सकता। तब हमारे लिअे जो अेक ही मार्ग खुला है, अुसे क्या हम छोड़ दें? कुछ नेताओंने असहयोगके विरुद्ध घोषणापत्र निकाला है। अुनके विचारोंकी अीमानदारीके बारेमें संदेह करनेका कोअी कारण नहीं है। दिशा बदलते समय यह संभव है कि सब विचार करें, संकोच करें, अुसके जोखमका अन्दाज़ लगायें और अैसा करनेमें मतभेद पैदा हो जाय। अिन सब बातोंका ज़ोरदार और विस्तृत खंडन महात्मा गांधीने अपने मद्रासके भाषणमें अभी-अभी कर दिया है। अुससे अधिक मैं और क्या कह सकता हूँ? कुछ लोगोंको तो असहयोगमें धर्म-भंगका दोष दिखाअी देता है। मैं अुनके बराबर विद्वत्ता या धर्मतत्त्वोंके ज्ञानका दावा तो नहीं करता। फिर भी मैं अुनसे पूछता हूँ कि जनताको असहयोगमें शरीक न होनेकी, असहयोगसे दूर रहनेकी — सार यह कि असहयोगवादियोंसे असहयोग करनेकी सलाह देते समय धर्म-भंगका दोष कहाँ चला जाता है? हम सर नारायण चन्दावरकरसे नम्रतापूर्वक अितना तो पूछ ही सकते हैं कि जिस साम्राज्यमें सर माअिकेल ओडायर जैसे लोग 'सर' की पदवी धारण कर सकते हैं और सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे महान कविको 'सर' का खिताब छोड़ देना पड़ता है, और जिन्हें आप सिर नवाने लायक पैगम्बर मानते हैं, अुन्हें भी अपना पदक छोड़ देना पड़ता है, तो आपको 'सर' का खिताब लौटा देनेमें गीताजीका कौनसा श्लोक बाधक होता है?

हाथ पर हाथ धरे बैठे रहनेका खतरा

हम सुनते हैं कि असहयोगमें खतरा है, अुसमें दंगे-फ़सादका भय है। खतरा है, यह बात सही है। आज़ादी दुनियाके किस देशको आसानीसे मिली है? चुपचाप बैठे रहनेमें क्या कम खतरा है?

मौजूदा हालतमें हाथ पर हाथ धरे बैठे रहनेमें जनताके आत्मघातके सिवाय और क्या है? नश्तर लगाये बिना जान बचना संभव न हो, तो अच्छा डॉक्टर थोड़ा बहुत खतरा अुठाकर भी नश्तर लगानेकी सलाह देगा। मुसलमान जाति स्वभावसे ही जोशीली है। अुसे असहयोगके मार्ग पर न लगाया जाता, तो आज हिन्दुस्तानमें कितनी खून-खराबी हुअी होती, अिसका किसीने विचार किया है? अिसमें शक नहीं कि सरकार अुस रक्तपातको दबा सकती थी। लेकिन

अुससे कोअी रक्तपात रुक नहीं जाता । हज़ारों मुसलमान अिस वक्त हिजरत कर रहे हैं । अिससे अन्दाज़ लगाया जा सकता है कि अुनकी धार्मिक भावनाको कितनी चोट पहुँची है । अिस भावनाको मांग न देनेका क्या परिणाम होगा, अिसका सरकार और असहयोगके विरोधी, दोनोंको विचार करनेकी ज़रूरत है । असहयोगके विरोधी असहयोगके विरुद्ध आंदोलन करनेके बजाय जनताको मार-काटसे दूर रहनेकी शिक्षा देनेमें अपनी बुद्धि और शक्तिका अुपयोग करेंगे, तो सरकार और जनताकी अच्छी सेवा कर सकेंगे । क्या किसीने खतरेके डरसे भी जनताकी अुन्नतिके महान प्रयोग छोड़े हैं ? अितना बड़ा साम्राज्य बनानेवालोंने खतरेका डर रखा होता, तो आज अुसका अस्तित्व कहाँ होता ? रेलवे और जहाज़ दोनोंके सफ़रमें दुर्घटनाओंका डर तो रहता ही है । तो क्या अिससे कोअी यह सफ़र न करनेकी सलाह देगा ? समझदार आदमीका कर्तव्य है कि वह खतरेसे बचनेके लिअे यथाशक्ति सावधानी रखे । रौलट कानून, मुक्ति-क़ानून, पंजाबके अन्याय और खिलाफतके अन्याय वगैराने जनताको सरकारकी शासन नीतिके विरुद्ध जाग्रत कर दिया है । फिर जब सरकार न माने, तब हर बार जनताको हारते हुअे देखें और अुससे बचनेका अुपाय कोअी बताये तो अुसमें बाधा दें, तो जनताकी अुन्नति कैसे हो ? असहयोगमें खतरा हो, तो कोअी और मार्ग सुझाना चाहिये । बंगालके विभाजनसे खिलाफत और पंजाबके अन्याय क्या कम अपमानजनक हैं ? अुस वक्त सारे देशमें आग लगानेवालोंको आज कुछ भी महसूस नहीं होता ? क्या हिन्दुस्तानमें से पुरुषत्व नष्ट हो गया है ?

सुधार निकम्मे हैं

हमारे सामने सुधारोंका जाल बिछाया गया है । सबसे ज्यादा भय तो अिस जालमें फँसनेका है । ये सुधार निकम्मे हैं । अिनसे हमारा कोअी काम नहीं बनेगा । जैसे मारकाट हमें हानि पहुचानेवाली है, वैसे ही ये सुधार भी हमें अन्तमें हानि पहुचानेवाले हैं । मौजूदा राजतंत्र जनताका धन और तेज चूसनेवाला और अुसे कुचल डालनेवाला यंत्र है । अुसमें से थोड़ेसे विलायती पुर्जे हटाकर देशी पुर्जे बिठा देनेसे क्या फ़र्क़ पड़ जायगा ? अेक देशी गवर्नरके हो जानेसे हमारा क्या अुद्धार हो जायगा ? अंग्रेज गवर्नरोंमें क्या अुम्दा गुण और चरित्रवाले नहीं होते ? खुद अपने पर घातक हमला होने पर भी चाँदनी चौकमें या दिल्लीमें किसीका बाल भी बाँका न होने देनेवाले माननीय लार्ड हार्डिंज जैसे महान पुरुष क्या अिनमें नहीं पाये जाते ? मगर गटरमें गंगाजलकी चार बूंद डाल देनेसे गटर थोड़े ही पवित्र हो जाती है । जब तक सारी रचनामें परिवर्तन नहीं होता, भारतका शासन भारतके हितके लिअे नहीं चलाया जाता, विदेशियोंके हितको ही प्रमुख स्थान दिया जाता है, अंग्रेज़ नौकरोंको खुश रखकर थोड़े बहुत नाममात्रके सुधार मेहरबानीके तौर पर

दाखिल किये जायँ, न्याय, स्वतंत्रता और समानताके हक़ न दिये जायँ और हम जिनका साझा चाहते हैं, अुनमें से अधिकांश हमें वैर और तिरस्कारकी नज़रसे देखें, तब तक अिन सुधारोंके जालमें फँसनेसे हमें क्या लाभ होगा ? अिन सुधारोंमें अिसका क्या आश्वासन है कि पंजाब जैसी घटनाअें फिर नहीं होंगी ? दक्षिण अफ्रीका, पूर्व अफ्रीका और फ़ीजीमें हमारी जो दयाजनक स्थिति है, अुसमें अिन सुधारोंसे क्या फ़र्क़ पड़ेगा ? हमारे घरमें ही हमारी अिज्जत न हो, तो विदेशमें कहाँसे होगी ? और अिन सुधारोंकी हमें कितनी भारी कीमत चुकानी पड़ी है ? अूँचे ओहदोंवाली नौकरियोंके खर्चमें कमीकी माँग हम वर्षोंसे करते रहे हैं, लेकिन सुधारोंके अमलमें आनेसे पहले अूँचे ओहदेवाले सरकारी अफसरों (आअी० सी० अेस०), फ़ौजी और दूसरे अूँचे पदाधिकारियोंके खर्चमें हर साल पच्चीस करोड़की वृद्धि करके अुसके बारेमें आलोचना करनेका हमारा अधिकार छीन लिया गया और जनताके स्वास्थ्य और शिक्षण-खर्चके विभाग हमें सौंप दिये गये। जनता अैसे सुधार नहीं चाहती। वह तो भुखमरीसे बचना चाहती है, अपमानसे बचना चाहती है और आज़ादीकी हवामें बढ़ना चाहती है। अिन सुधारोंसे आप अिनमें से क्या क्या दिला सकते हैं ?

धारासभाओंका बहिष्कार

अच्छे मुसलमानोंने धारासभाओंकी अुम्मीदवारी छोड़ दी। सच्चे मुसलमान धारासभाओंकी अुम्मीदवारी न करें, तो हिन्दू वहाँ किनके साथ जाकर बैठेंगे ? सहयोगका वातावरण ही कहाँ है ? सारा वायुमंडल तो ज़हरसे भरा है। सब कुछ देखते हुअे भी अंधे बननेसे क्या फ़ायदा ? हिन्दुस्तानमें रहनेवाले अंग्रेज़ोंमें से अधिकांश हमें धिक्कारते हैं। अुनके अखबार ज़हर बरसाते रहते हैं और अुनकी स्त्रियाँ भी वही राय रखती हैं। हम जिन्हें पूज्य मानते हैं, अुन्हें वे फाँसी देनेकी भावना रखते हैं। हम जिन्हें फाँसी देने लायक़ समझते हैं, अुन्हें वे पूज्य मानते हैं। सरकारने यह हुक्म निकाल कर ठीक किया कि सरकारी नौकर 'डायर' फंडमें चंदा न दें, मगर अिससे क्या अुनकी मनोवृत्तिमें कोअी फ़र्क़ पड़ गया ? धारवाड़के कलेक्टरको सरकारने मजबूर किया, अिसलिअे अुसने अपना बेवकूफ़ीभरा पत्र रद्द किया। लेकिन अिससे क्या अुसके विचार बदल गये ? वह तो मूर्ख था, अिसलिअे जो कुछ अुसके मनमें था, वह बाहर निकाल दिया। मगर वैसे विचारोंवाले तो दूसरे कितने ही होंगे। अैसे वातावरणमें साझेदारी या दोस्तीका ढोंग करना हमारे लिअे कितना शर्मनाक है ? अंग्रेज़ स्वभावसे बुरे हों सो बात नहीं। परन्तु हमारे और अुनके दृष्टिकोणमें ही भेद है। अिसका कारण हमारे और अुनके स्वार्थोंका विरोध है। यह हालत जब तक नहीं बदल जाती,

ब तक यह वातावरण कभी नहीं सुधरेगा । अैसी सूरतमें हम नअी धारासभाओंका हिष्कार करें या नहीं, अिसका निर्णय अिस परिषदको करना है ।

अन्याय और जुल्म

हम पर होनेवाले अत्याचारों और अन्यायोंमें हम सरकारको हर दिशामें मदद दे रहे हैं । हमारी आज़ादी छीन लेनेमें भी हमारी ही मदद है ।

सर रेजिनोल्ड क्रेडॉक आज हमें गर्वके साथ कह रहे हैं कि दो लाख वफ़ादार हिन्दुस्तानी पुलिस और हज़ारों हिन्दुस्तानी सैनिकोंकी मददसे सरकार जनताको दबाकर राज्य कर सकती है । हमें अिस बात पर विचार करना चाहिये । हमारे जो भाअी पुलिसकी नौकरीमें हों या पुलिसकी नौकरी ढूंढ़ रहे हों, अुन्हें तथा जो सेनामें सिपाहीगिरी करनेकी भावना रखते हों, अुन सबको वस्तु-स्थितिका ज्ञान कराना चाहिये । हमारे हज़ारों सैनिकोंका आजकल मेसोपोटेमिया, सीरिया, फ़िलस्तीन, अरबस्तान और मिस्र वग़ैरामें वहाँके लोगोंकी स्वतंत्रता छीन लेनेकी लड़ाअीमें अुपयोग हो रहा है । अुन देशोंकी जनता हमें धिक्कार रही है और हमारे सैनिकोंको वापस बुलानेको पुकार होने पर भी अभी तो और नये सैनिक भेजनेकी बात सुनाअी दे रही है । अिस बातका अिस परिषदको सख्त विरोध करना चाहिये ।

पुलिस और जनता

पुलिस जनताकी रक्षाके लिअे होनी चाहिये । मगर मौजूदा पुलिससे जनताकी कितनी रक्षा होती है, यह हम देख सकते हैं । गुजरातके बहुतसे गावोंमें लूट होने और डाके पड़नेका शोर सुनाअी देता है । पुलिस अुनकी रक्षा नहीं कर सकती । यह नहीं कहा जा सकता कि अिसमें पुलिसका दोष है । पुलिसके सिपाही ज्यादातर अपढ़ लोगोंमें से मिल सकते हैं । अुन्हें अिस समय जो वेतन मिलता है, अुससे वे अीमानदारीके साथ अपना गुजर नहीं कर सकते । अिस-लिअे यह स्वाभाविक है कि वे लोगोंकी रक्षा करनेके बजाय चोरी या डाकोंमें हिस्सेदार बन जायँ, या दूसरी तरह जनता पर जुल्म करके अपना निर्वाह करें । सरकारसे यह कोअी छिपी हुअी बात नहीं हो सकती । यदि हम राजनैतिक परिस्थितिको ध्यानमें रखें, तो अब अैसा समय आ गया है कि हमें खुद अपना बचाव करना सीखना चाहिये, और अुसके लिअे गाँव-गाँवमें स्वयंसेवक मंडल खड़े करके अुन्हें ज़रूरी तालीम देनी चाहिये । अैसे स्वयंसेवक मंडलोंकी स्थापना करनेका निश्चय अिस परिषदको करना चाहिये ।

पंचायती अदालतोंकी ज़रूरत

हमारे मौजूदा न्यायालयोंसे झगड़े बढ़ते हैं और लोगोंको शुद्ध न्याय नहीं मिलता । अिसमें अिन्साफ करनेवालोंका दोष नहीं । अुसके कअी कारण हैं,

जिनमें जानेकी ज़रूरत नहीं । अदालतोंमें जानेसे लोगोंकी जो बरबादी होती है, अुससे अुन्हें बचानेकी खास ज़रूरत है । जगह-जगह पंचायती अदालतें मुक़र्रर करके लोगोंको सस्ता और शुद्ध न्याय देनेका प्रबन्ध होना चाहिये ।

शिक्षित वर्गकी ज़िम्मेदारी

शिक्षित वर्गके सिरपर अिस समय बड़ी भारी ज़िम्मेदारी है । लोग अज्ञान हैं, लोग तैयार नहीं हैं, यह कहकर वे ज़िम्मेदारीसे नहीं बच सकते । जनताको शिक्षित करने, अुसे आवश्यक तालीम देने और अुसे अच्छे रास्ते चलानेमें अक्षरज्ञानकी खास ज़रूरत नहीं है । अुसे शिक्षित बनानेकी ज़िम्मेदारी भी अुन्हींपर है । अुससे दूर रहकर अपने धन्धेसे बचनेवाले समयमें म्युनिसिपलिटी, लोकल-बोर्ड या धारासभाओंमें जाकर ही सेवा करनेसे यह काम नहीं हो सकता । शिक्षित वर्ग राज्यकी अनीतिके दोष स्वाभाविक तौर पर आसानीसे देख सकता है । अुन्हें वह प्रकट करता है और अिससे वह सरकारके लिअे अप्रिय हो जाता है । मगर अितनेसे ही अुसका कर्तव्य समाप्त नहीं हो जाता । जनताकी अुन्नतिका आधार अुसकी हिम्मत, अुसके चरित्र और अुसकी कुरबानी करनेकी शक्ति पर रहता है ।

अुपसंहार

हममें अनेक दल हैं । हम अेक दूसरेका गला काटनेमें अपनी शक्ति और बुद्धिका अुपयोग करते हैं, मतभेद सहन नहीं कर सकते और अुसमें प्रामाणिकता नहीं देख सकते । अेक दूसरे पर आक्षेप करके झगड़ा बढ़ाते हैं । अैसी हालतमें बेचारी भोली जनता परेशान होती है और अुसे सच्चा मार्ग दिखाअी नहीं देता । यदि हमें न्याय प्राप्त करना हो और आज़ादी लेनी हो, तो अपने खुदके दोष देखना और सुधारना, सहनशीलता, आत्मश्रद्धा और धैर्य रखना, त्याग करना, गरज़ यह कि जिनसे हमें न्याय लेना है अुनके दोष देखनेके बजाय अुनके बड़े गुणों और चरित्रका अनुकरण करना सीखना चाहिये । मेरी नम्र प्रार्थना है कि भगवान हमें अैसी बुद्धि दे और सहायक हो । अन्तमें आप सबका फिर अेक बार स्वागत करके मैं अिस परिषदके अध्यक्षका चुनाव करनेकी विनती करता हूँ ।

६

स्कूल-कॉलेजके विद्यार्थियोंसे

[ता. २८-९-१९२० को अहमदाबादके स्कूल-कॉलेजके विद्यार्थियोंको असहयोगका आदेश देते हुअे किया गया भाषण ।]

कलकत्तेकी विशेष कांग्रेसने असहयोगका प्रस्ताव पास किया, अुसके बाद यहाँके विद्यार्थी वर्गकी तरफ़से नेताओंसे यह पूछा जा रहा है कि अब हमें क्या रास्ता अपनाना चाहिये? विद्यार्थी वर्ग राष्ट्रीय भावनासे अिस प्रकार सार्वजनिक प्रश्नोंके बारेमें विचार करने लगा है, यह देखकर मुझे बड़ा आनन्द होता है और लगता है कि देशके लिअे यह शुभ चिन्ह है। कांग्रेसमें असहयोगका प्रस्ताव पास हुआ है और अुसके सिलसिलेमें विद्यार्थियोंसे सरकारी पाठशालाओं और कॉलेजोंकी पढ़ाअी छोड़ देनेकी सिफ़ारिश की गअी है। अिसलिअे स्वदेशाभिमान और स्वाभिमान चाहनेवाले सब छात्रोंको अब अुस प्रस्ताव पर अमल करना है। कलकत्तेकी कांग्रेसमें असहयोगका जो प्रस्ताव पास हुआ है, वह आज तककी ब्रिटिश हुकूमतमें पहले पहल हुआ है, अिसलिअे यह स्पष्ट है कि अुसके सम्बन्धमें हमारे सिर पर भारी ज़िम्मेदारियाँ भी आ जाती हैं। मगर अिसमें शक नहीं कि अिन ज़िम्मेदारियोंको अुठाकर भी असहयोग किये बग़ैर हम स्वतंत्र नहीं होंगे। पंजाबके मामलेसे तो आप सब वाकिफ़ ही होंगे। अखबारोंमें अिस बारेमें काफ़ी लिखा गया है। आपने यह भी जान लिया होगा कि पंजाब प्रान्तमें विद्यार्थियोंको अकारण कैसे असह्य कष्ट सहने पड़े हैं। 'हट्टे-कट्टे' विद्यार्थियोंको कोड़े लगाये गये हैं। कुछ अकारण स्कूल-कॉलेजोंसे निकाल दिये गये हैं। दोपहरमें पैदल चलाकर अठारह-अठारह मीलकी दूरी पर हाज़िरी देनेके लिअे विद्यार्थियोंको जबरन भेजा गया है। अिस किस्मकी शासन-नीति चलानेवालोंकी देखरेखमें दी जानेवाली शिक्षा लेना अब आप बन्द कर दें, अिसीमें आपके स्वाभिमानकी रक्षा है। आप अपनी मौजूदा शिक्षण संस्थाओंसे निकल जायेंगे तो फिर आपका क्या होगा, अैसी शंकाओंकी भी गुंजाअिश नहीं है। देशमें ५६ लाख निरक्षर बावा लोग जब भूखों नहीं मरते, तब आप अैसी शंका क्यों करते हैं? आप अनपढ़ नहीं रहेंगे। केवल डिग्रियोंका मोह आपको छोड़ देना होगा। मैं देखता हूँ कि बहुतसे लोगोंको वकील बननेका बड़ा मोह होता है, और अुसका कारण यह माना जाता है कि वकील बहुत

कमाते हैं। मगर यह कल्पना असलमें सही नहीं है। अगर धनवान बननेकी अिच्छा हो, तो व्यापार-अुद्योगसे बन सकते हैं। आप बहुतसे सेठोंको देख सकते हैं। वे पूरे मैट्रिक पास भी नहीं होते, फिर भी लखपति बन गये हैं। वस्तुस्थिति यह है कि जबसे आप अपना स्कूल या कॉलेज छोड़ेंगे, तभीसे अपने शिक्षकोंको शिक्षाका पहला पाठ पढ़ा सकेंगे। कुछ लोगोंका खयाल है कि हम बी० अे० में हैं, अिसलिअे बी० अे० पास होनेके बाद असहयोगके आन्दोलनमें शरीक हों तो ज्यादा अच्छा रहेगा। परन्तु अैसा निश्चय दुर्बल मनसे ही होता है, क्योंकि बी० अे० होनेके बाद तो विज्ञापन देखने और विज्ञापन देख-देखकर अुम्मीदवारी करने या नौकरी ढूँढ़नेकी धुन सवार होती है, और अिस प्रकार फिर जहाँके तहाँ रह जाते हैं। गुजरात कॉलेज कल सवेरे खाली हो जाय, तो अुसमें कोअी मवेशियों या जानवरोंकी प्रदर्शनी नहीं की जायगी। अुन्हीं मकानोंका हम सार्वजनिक देखरेखमें अुपयोग कर सकेंगे। अिसलिअे गुजरातके विद्यार्थियोंको अिस मामलेमें असरकारक काम कर दिखानेके लिअे सच्चे साहसी बनना चाहिये। दूसरोंके बनिस्बत आपके ही साहस पर देशके श्रेयका ज्यादा आधार है। देशको स्वतंत्र करनेमें आप लोग ही बड़ी मदद दे सकेंगे। अिसके लिअे युरोपके अुदाहरण ताजे ही हैं। असहयोग-युद्धकी दुंदुभी बज रही है। लड़ाअी छिड़ गअी है। अैसे समय 'मैं क्या करूँगा', या 'मेरा क्या होगा' अिस तरहके नामर्दीभरे विचारों पर ध्यान न देकर सबको अुसमें कूद पड़ना चाहिये और यथाशक्ति सहायता देनेके लिअे तैयार हो जाना चाहिये। आपको भी यही करना है। वक्त थोड़ा है और महात्माजीका अभी आपके सामने भाषण करना बाकी है। अिसलिअे मैं अधिक बोलकर आपके और महात्माजीके बीचमें नहीं आअूँगा।

प्रजाबन्धु, ३-१०-१९२०

७

असहयोग

[ता० २९-३-१९२१ को 'वर्तमान परिस्थिति और असहयोग' पर मोडासा निवासियोंको अेक सार्वजनिक सभामें दिया हुआ भाषण ।]

आजका काम शुरू होनेसे पहले सबने जिस प्रेम और अुत्साहसे मेरा सम्मान किया है, अुसके लिअे मैं आपका अुपकार मानता हूँ । मैं जानता हूँ कि मुझमें कोअी विशेषता नहीं है । मनुष्यके नाते मैं भी भूलोंसे भरा हूँ । मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि भारतमें जो महान युद्ध हो रहा है, अुसके दैवी सेनापतिकी सेनामें हम सब सिपाहियोंकी हैसियतसे शरीक हुअे हैं, अिसीलिअे हमें अितना अधिक सम्मान दिया गया है । भाअी मोहनलालने मेरा परिचय देते हुअे कहा कि मैं पहले हूबहू अंग्रेज़की नक़ल था, वह सच है । और मैं फुरसतका समय खेलकूदमें बिताता था, यह बात भी सही है । अुस समय मेरा यह खयाल था कि अिस अभागे देशमें विदेशियोंकी नकल करना ही अुत्तम कार्य है । मुझे शिक्षा भी अैसी ही दी गअी थी कि अिस देशके आदमी नीच और नालायक़ हैं और हम पर राज्य करनेवाले विदेशी लोग ही अच्छे और हमारा अुद्धार करनेमें समर्थ हैं । अिस देशके लोग तो गुलामी ही करने लायक हैं । अिस तरहका ज़हर अिस देशके तमाम बच्चोंको पिलाया जाता है । जो लोग सात हज़ार मील दूर देशसे यहाँ शासन करने आते हैं, अुनका देश कैसा होगा यह देखने और जाननेके लिअे मैं बचपनसे ही तड़प रहा था । मैं तो साधारण कुटुम्बका था । मेरे पिता मन्दिरमें ही ज़िन्दगी बिताते थे, और वहीं अुन्होंने अुसे पूरी की । मेरी अिच्छा पूरी करनेके लिअे अुनके पास साधन नहीं थे । मुझे मालूम हुआ कि दस-पन्द्रह हज़ार रुपया मिले, तो विलायत जाना हो सकता है । मुझे कोअी अितने रुपये देनेवाला नहीं था । मेरे अेक मित्रने कहा कि अीडर राज्यके दरबारसे शायद ब्याज पर रुपया मिल जाय । अिस पर मैं और मेरा मित्र दोनों अीडर गये और शेखचिल्लीके-से विचार करके गाँवकी प्रदक्षिणा लगाकर वापस आ गये । अन्तमें यह तय हुआ कि विलायत जाना हो, तो रुपया कमा कर जाना चाहिये । बादमें वकालतकी पढ़ाअी की और वकालतका पेशा करके खर्चके बराबर कमाकर विलायत जानेका अिरादा किया । मगर मैंने जिस कम्पनीके मारफत विलायत जानेका प्रबंध करनेके लिअे पत्रव्यवहार किया था, अुसका आया हुआ जवाब मेरे भाअीके हाथमें पड़ गया । अिस पर अुन्होंने

मुझसे कहा : "मैं तुमसे बड़ा हूँ, अिसलिअे मुझे जाने दो। तुम्हें तो मेरे आनेके बाद भी जानेका मौका मिल जायगा, लेकिन तुम्हारे आनेके बाद मेरा जाना नहीं होगा।" अिस पर मैंने अपने भाअीको पन्द्रह दिनका समय दिया और वे पन्द्रहवें दिन विलायत चले गये।

अुनके जानेके बाद मुझे पारिवारिक क्लेश अुठाना पड़ा। वे तीन वर्ष बाद आये, तब मैं गया। मेरे आनेके बाद हम दोनोंने निश्चय किया कि स्वतंत्रता चाहिये तो अिस देशमें सन्यासी बनना होगा। स्वार्थ-त्याग करके सेवा करनी होगी। हमने तय किया कि दोनोंमें से अेक देशसेवा करे और दूसरा कुटुम्ब-सेवा करे। तबसे मेरे भाअीने अपना धड़ाकेसे चलनेवाला धंधा छोड़कर देश-सेवाका काम करना शुरू किया और हमारे घरको चलानेकी जिम्मेदारी मेरे सिर पर आ पड़ी। अिस प्रकार पुण्यकार्य अुनके सिर पड़ा और पापकर्म मेरे मत्थे आया। परंतु मैं यह समझकर मनको खुश कर लेता था कि अुनके पुण्यमें मेरा भी हिस्सा है। वकालतका धन्धा करते हुअे मेरे मनमें यह पुरानी भावना दृढ़ होती गअी कि राज्य करनेवालोंकी नकल करके ही प्रतिष्ठा प्राप्त की जा सकती है।

मैं अैसी मायामें फँसा हुआ था। अुस समय हमारे राजनैतिक जीवनमें बड़ी गंदगी थी। जनताकी तरफ़से हमारे काम करनेवालोंमें से बहुतोंमें अतिशय पाखण्ड भरा था। मैं जिस क्लबमें बैठकर ताश खेलता था, अुसमें मेरा अेक मित्र था। वह कहता था कि तुम्हें जनताकी सेवा करनी हो, तो अहमदाबाद छोड़ दो। मैंने कड़वा अनुभव होनेके बाद वकालतका धंधा छोड़ा है।

महात्मा गांधी आये, तब राजनैतिक जीवनमें सत्यका प्रवेश हुआ। खेड़ाके सत्याग्रहकी लड़ाअीमें अुन्होंने माँग की कि मुझे अेक अैसा आदमी चाहिये, जो आज ही अपना तमाम धंधा छोड़कर नड़ियादमें रहे और लड़ाअीका सब काम अपने सिर पर ले ले। मैंने वह सिर पर ले लिया। तबसे अुनके सहवाससे मुझे विश्वास हो गया कि अब तक भारत अुल्टे रास्ते पर चला है और अुनके बताये हुअे मार्ग पर चलनेसे ही भारतका अुद्धार होगा।

आज जो महान परिवर्तन हो रहा है, अुसमें अीश्वरका हाथ है। भारतकी अैसी हालत तब हुअी, जब लोग अपना कर्तव्य भूल गये। जिनमें अिन्सानियत होती है, वे अिन्सानसे नहीं डरते। हिन्दुस्तानके लोग अंग्रेजोंसे डरते हैं; अितना ही नहीं, बल्कि अंग्रेजी पोशाक पहननेवाले अपने भाअियोंसे भी डरते हैं, यद्यपि वे अिनके बराबर पापी नहीं होते।

हमारी अधम दशा

यह दशा कब हुआी, अिसका विचार करना चाहिये । पहले हिन्दुस्तानमें अितनी ज्यादा दौलत थी कि अुसकी ख्याति सुनकर दूर-दूरसे लोग यहाँ आते थे । जब हम आगे बढ़े हुअे थे, तब हमारे मौजूदा शासक जंगली थे । अंग्रेज लोग यहाँ व्यापार करने आये और हमारी फूटका फ़ायदा अुठाकर हाकिम बन बैठे । अुन्होंने बारी-बारीसे दोमें से अेकका पक्ष लिया ।

हमें सोचना चाहिये कि हम पर कौन राज्य करता है । हम जो करोड़ों रुपये आयकर और लगानके देते हैं, वे कहाँ जाते हैं ? और अुनका क्या अुपयोग होता है ? हम किसी पर १०० रुपया माँगते हैं, तो ५० कोसका चक्कर काटकर लेने जाते हैं । परन्तु करोड़ों रुपया विदेश चला जाता है, अुसका विचार तक नहीं करते । अेक समय अैसा था कि क्षत्रिय लोग धर्मकी रक्षा करते थे । आजकल हिन्दुस्तान विधवा स्त्रीके समान है । कोअी-कोअी लूटपाट करनेके लिअे हथियार रखते हैं, बाकी तमाम जनता निहत्थी और निराधार है । करोड़ों रुपया लूटा जाता है, मगर कोअी अुसका विरोध तक नहीं कर सकता ।

अब तक तो यह माना जाता था कि सरकार हमारी रक्षा करती है । यह रामराज्य है, जिसमें शेर और बकरी अेक घाट पानी पीते हैं । जबसे विदेशी राज्य हुआ, तबसे सुख मिला । मानो अुससे पहले तो यहाँ सब जगह अराजकता ही थी !

अब तक हमारे मुसलमान भाअियोंके मनमें यह बात जमी हुअी थी कि चूँकि हिन्दुस्तानमें अधिक संख्या हिन्दुओंकी है, अिसलिअे अंग्रेज़ सरकार रहेगी तो हम अपने हक़ोंकी रक्षा कर सकेंगे । अुन्हीं मुसलमानोंको अब पहले पहल विश्वास हो गया है कि हिन्दुओंकी दोस्ती होगी तो हमारा धर्म बचेगा । अिस लड़ाअीके परिणामस्वरूप जितने भी प्रपंच थे, सब खुल गये ।

सरकार हिन्दुस्तानमें चारों तरफ़से मायाजाल फैलाकर पड़ी हुअी है । अगर हमें अपनी स्त्रियोंकी रक्षा करनी हो, देशकी अिज्जत रखनी हो, तो यहाँ हमारा राज्य होना चाहिये । हमें किसी दूसरे पर राज्य नहीं करना है, परन्तु जैसे फ्रांसीसी लोग फ्रांसमें राज्य करते हैं, जर्मन लोग जर्मनीमें और अिटलीवाले अिटलीमें करते हैं, अुसी तरह हम सिर्फ यही चाहते हैं कि हिन्दुस्तानके लोग हिन्दुस्तानमें राज्य करें । आज तो हिन्दुस्तानका कोअी भी आदमी, हिन्दू हो या मुसलमान, सारी दुनियामें अिज्जतके साथ कदम नहीं रख सकता ।

मायाजालसे छूटो

अिसलिअे हमारे नेताओंने अिकट्ठे होकर तय किया कि हमें अपना राज्य करना है । बड़ी शान्तिसे लम्बे समय तक अिसका विचार करनेके बाद अेक ही

रास्ता दिखाअी दिया, और वह यह कि हमें तमाम राक्षसी मायाका त्याग करना चाहिये। हम पर जो माया छाअी हुअी है, अुसे दूर करना चाहिये। आज हम चार प्रकारकी मायामें फँसे हुअे हैं :

१. **हमारे बच्चोंकी शिक्षा** — सरकार हमारे बच्चोंको पाठशालाओंमें ले जाकर पढ़ाती है, डराकर भेजनेको नहीं कहती। मगर यह मोह अितना बढ़ गया है कि वहाँ जानेके बाद क्या दशा होती है, अिसका विचार तक हम नहीं करते। अिस पढ़ाअीमें सरकारका क्या मक़सद है? तीन लाख पर अेक अंग्रेज़ राज्य करे, अिसके लिअे जो दलाल चाहिये, वे हममेंसे लिये जायँ। अैसे तो कितने ही शिक्षक, पटवारी, चपरासी, थानेदार, तहसीलदार और कारकून वग़ैरा चाहियें। हमें अैसा लालच होता है कि हमारा लड़का अिनमेंसे कुछ हो जाय। जब हम पर जुल्म होता है, तो अपने ही आदमियोंके ज़रिये होता है। यहाँ भी जो कुछ तहसीलदार या थानेदार करता है, वही होता है। विदेशी लोग हमारे बच्चोंको फोड़कर अुन्हींके ज़रिये राज्य करने लगे। अब हमारे नेताओंने निश्चय किया है कि हम अपने बच्चोंको वहाँ जानेसे रोक दें। विलायतसे तो पटवारी वग़ैरा लायेंगे नहीं। अिसलिअे हम अपने आदमियोंको ही वहाँ जानेसे रोक दें। जो हैं अुन्हें छोड़नेको कहेंगे भी, तो वे अितने ज्यादा सड़ गये हैं कि अुनमेंसे ज्यादातर तो हमारा कहा मानेंगे ही नहीं। आप जानते हैं कि कांग्रेसने निश्चय किया है कि वकील वकालत छोड़ दें, परन्तु थोड़ोंने ही छोड़ी है। अिसी तरह जब नौकरी छोड़नेका निश्चय होगा, तब सड़े हुअे लोग नहीं मानेंगे। अिसलिअे जितनी पाठशालाअें हैं, अुन पर अधिकार कीजिये और अपने बच्चोंको अपने पर जुल्म करनेकी नहीं, बल्कि जनताकी सेवा करने लायक़ बननेकी शिक्षा दीजिये। गाँवकी शोभा गाँवके वकीलों या डॉक्टरोंसे नहीं होती, बल्कि अिस बातसे होती है कि गाँवने कितने सेवक पैदा किये। आजकल हिन्दुस्तानको सच्चे सेवकोंकी ज़रूरत है।

२. **सरकारी अदालतें** — जैसा मैंने आपसे कहा है वैसा अेका अगर हममें हो जाय, तो सरकार अपने आप खतम हो जाय। सरकार हमें बन्दूक दिखाकर अदालतोंमें नहीं बुलाती। हमीं माया-जालमें फँसकर अदालतोंमें दौड़ जाते हैं। हम गाँवमें से ही दो आदमी अैसे अच्छे ढूँढ़ निकालें जिनके द्वारा हमारा न्याय हो सके।

३. **हमारी धारासभा** — वहाँ हमारे प्रमुख आदमी बैठते हैं। अुनकी वहाँ कुछ नहीं चलती। फिर भी वे अुसे नहीं छोड़ते। सरकार जनताकी सम्मतिसे राज्य करनेका दावा करती है और दुनियाको कहती है कि हम हिन्दुस्तानसे पूछ कर राज्य करते हैं। अिसके सबूतमें वह धारासभाको आगे रख देती है।

अिसलिअे हमने धारासभाका बहिष्कार किया है। अिस तरह हमने दुनियाको बता दिया है कि जो आदमी गये हैं, वे हमारे प्रतिनिधि नहीं है। यह धारासभा तो अेक नाटक है। माननीय ड्यूक धारासभाओंका अुद्घाटन करनेके लिअे ही आये थे। मगर जहाँ-जहाँ वे अुद्घाटन करने गये, वहीं हड़तालें हुअीं।

४. **विदेशी कपड़ा** — अंग्रेज़ोंके आनेसे पहले यहाँ जितना चाहिये, अुतना कपड़ा मिलता था। लेकिन अब साठ करोड़ रुपयेका कपड़ा विदेशसे आता है। यहाँसे कपास जाती है और फिर वहाँसे कपड़ेके रूपमें सात हज़ार कोस घूमकर यहाँ आती है; और अुसके द्वारा हर साल साठ करोड़ रुपया बाहर चला जाता है। अिससे हम भिखारी बने, तो अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं। वे बन्दूक दिखाकर और डराकर हमें कपड़ा नहीं पहनाते, परन्तु हमींको अुसका मोह हो गया है। हमारी माताअें जब खादीका दो सेर बोझा शरीर पर नहीं अुठा सकतीं, तो वे बच्चोंको क्या ताक़त देंगी? अपने स्कूलोंमें चरखा जारी कीजिये, बच्चोंको कातना सिखाअिये और घर-घर चरखे दाखिल कर दीजिये। धर्म सिर्फ मन्दिर जानेमें और कबूतरोंको अनाज डालनेमें तथा चींटियोंको आटा खिलानेमें ही नहीं है। लाखों आदमी कपड़ेके बिना दुःख पा रहे हैं। अिस लिअे हमारा पहला धर्म तो यह है कि घर-घर चरखे चालू करायें। जिस दिन अैसा हो जायगा, अुस दिन सरकार मोम जैसी मुलायम हो जायगी, क्योंकि यह सरकार व्यापारके लिअे यहाँ आअी हुअी है। व्यापार ठंडा पड़ने पर सरकार भी ठंडी पड़ जायगी। अिसलिअे अिस गाँवमें अेक भी दुकान अैसी न रहे जो विदेशी कपड़ा बेचे; अेक भी दर्ज़ी या धोबी अैसा न हो, जो विदेशी कपड़ेको छुअे। जो अंग्रेज यहाँ राज्य करते हैं, वे अपने देशमें विदेशी वस्तुओंको नहीं छूते। हमें लँगोटीके बराबर मिले, तो भी हम स्वदेशी कपड़ा लें, और टुकड़े करके बाँट लें। तभी यह मोह छूटेगा।

शांति रखो

अिसके सिवाय, हमें अपने मन पर काबू रखना चाहिये। आजकल अुथल-पुथलका समय है। पार्लियामेण्टमें सवाल पूछे जाते हैं कि महात्मा गांधीको देश-निकाला क्यों नहीं दिया जाता? मगर अुनका तप अैसा है कि अुनका बाल भी बाँका नहीं कर सकते। अभी समय अैसा है कि यदि धर-पकड़ हो तो मनको काबूमें रखना चाहिये। सरकारको हरानेका यही अेक मार्ग है कि दंगा-फसाद न किया जाय। जब महीने दो महीनेमें नेता लोग पकड़े जायँ, तब आप शान्ति रखें और किसी तरहका गुस्सा न करें। अगर हम लट्ठबाज़ी करेंगे, तो वही नतीज़ा होगा, जो पिछली बार वीरमगाम और अहमदाबादमें हुआ था, और

हम ज़रूर पिछड़ जायँगे। हमारी लड़ाअीका आधार हमारे शांति रख सकने पर ही है। आपसमें अेकता रखिये, और झगड़े बन्द कर दीजिये।

अपने दोषोंको दूर करो

अिसके सिवाय हममें जितने दोष हों, अुन सबको हमें छोड़ना चाहिये। हमें धाराला (जाति विशेष) भाअियोंसे कहना चाहिये कि वे लोगोंको न लूटें और शराब न पीयें। अिस राज्यका यह रिवाज है कि बड़े गाँवमें मन्दिर या देवालय न हो तो कोअी हर्ज नहीं, मगर शराबकी दुकानके बिना काम नहीं चल सकता। यह भी अेक मोह है। अिसे छोड़ना चाहिये। आज सारे हिन्दुस्तानमें यह आन्दोलन चल रहा है। अहमदाबादमें आजकल हरअेक शराबखाने पर सुबह दस बजेसे लेकर आठ बजे रात तक लोग हाथ जोड़कर शराब पीनेवालोंको रोकते हैं और अुनकी आदत छुड़वाते हैं। आपके गाँवमें जातिवार बन्दोबस्त करनेसे यह काम हो सकता है, अिसलिअे अितना बन्दोबस्त हमें कर लेना चाहिये। जातिमें अैसा बन्दोबस्त करना चाहिये कि जो शराब पीयेगा, वह जातिमें नहीं रह सकता।

अिसी तरह चोरी और लूटपाट भी मिट सकती है। यह काम पहले साधु करते थे, परन्तु आजकल साधुओंके शरीर पर तमाम चीज़ें विदेशी होती हैं। कुछ साधुओंको तो शेयर बाज़ारमें व्यापार करते भी देखा गया है।

अिन सब बातोंका रहस्य अितना ही है कि आप अपने बच्चोंको सरकारी पाठशालाओंमें न रखें। अगर हमारे बच्चोंने यह शिक्षा न पाअी होती, तो यह अधम दशा न हुअी होती। काबुलमें और अरबस्तानमें जो स्वतंत्रता है, वह यहाँ कहाँ है? वे लोग विदेशियोंको अेक ही शर्त पर रहने देते हैं, यानी मित्रके रूपमें। परन्तु हिन्दुस्तानके लोग तो यह मानते हैं कि विदेशी राज्य हो तो ही सुख मिले। अिसलिअे अब बच्चोंकी शिक्षा अैसी ही हो कि वे सूत कातें। बारह महीने बाद सब कुछ हो जायगा। जब अिंग्लैंडमें लड़ाअी चल रही थी, तब वहाँके विद्यार्थी लड़ाअीका काम करते थे।

हिन्दू-मुसलमानोंमें मेल पैदा करो, स्वदेशी कपड़ा पैदा करो और काममें लो, पंचायतों द्वारा अपने झगड़े निपटाओ, मदिरापानसे छूटो और छुड़ाओ, स्वराज्य फंडमें मदद दो, कांग्रेसके मेम्बर बनो और निडर हो जाओ।

निडर बनो

अेक ही बात ध्यानमें रखनी है कि मरना अेक ही बार है। हरअेकके लिअे रस्सी और बाँसके सिवाय और कुछ है ही नहीं। आपके पास अैसी कोअी चीज़ है, जिसे आप साथ ले जाते हैं? आप क्यों डरते हैं? आप यह बात भूल जाते हैं कि मुझे और आपको पैदा करनेवाला अेक ही है। आप

पवित्र बनिये, अपने अैब निकाल डालिये, तो फिर किसीका डर नहीं। जिस क्षण आप निडर हो जायगे, अुसी क्षण आप स्वतंत्र हैं। ज्यों-ज्यों लोगोंमें से डर निकलता है, त्यों-त्यों सरकारमें डर घुसता है। जब लोग निडर हो जायँगे, तब देश स्वतंत्र हो जायगा। डर सरकारको है, क्योंकि वह रैयतकी मर्जीके खिलाफ राज्य करती है। हम डर मिटाकर दूसरेको डरायें, तो अिसके जैसा दूसरा कोअी पाप नहीं। अिसलिअे आप अीश्वरका डर रखिये। पहले आप डर निकाल दीजिये और स्वतंत्र हो जाअिये, तो धर्मकी रक्षा हो जायगी। जिनके पैरोंमें जंजीर है, अुनसे अपने धर्मकी रक्षा कैसे हो सकती है?

८

पाँचवीं गुजरात राजनैतिक परिषद्

[ता० ३१-५-१९२१ तथा १-६-१९२१ को भडौंचमें हुअी पाँचवीं गुजरात राजनैतिक परिषदमें सभापति-पदसे दिये हुअे भाषणमेंसे।]

दुःखका अिलाज

जनताकी जाग्रतिके लिअे परिषदें और सम्मेलन करनेका समय अब चला गया है। दुःखका अिलाज हाथमें आ जानेके बाद दुःखका रोना रोनेके लिअे अिकट्ठे होनेसे तो दुःखके मिटनेमें देर ही लगती है। सरकारकी नीतिकी आलोचना करने और अुस पर प्रस्ताव पास करनेका वक्त भी जाता रहा। चुपचाप अपना कर्तव्य करके हम सरकारके मन पर जितना असर डाल सकेंगे, अुतना सैकड़ों लेखों और भाषणोंसे नहीं डाल सकेंगे।

नरम दलवालोंकी आलोचना न करो

हमें नरम दलवालों (मॉडरेटों) की आलोचना नहीं करना चाहिये। अुनका चरित्र और स्वदेशाभिमान हमसे किसी भी तरह कम नहीं है। राज्यप्रबंधमें अुनका अनुभव और अुनकी कुशलता हमसे बढ़कर है। मगर अुनका सुधारों पर विश्वास जमा हुआ है। हम अुन्हें मोहजाल मानते हैं। हमारी श्रद्धा जनता पर है। अुन्हें जनता पर बिलकुल विश्वास नहीं। मुझे यक़ीन है कि सुधार संबंधी अुनका भ्रम दूर होनेमें देर नहीं लगेगी। हमारा और अुनका लक्ष्य तो अेक ही है। वे अपनी होशियारीसे स्वराज्य ले सकते हों, तो भले ही लें। हमें भी यही चाहिये। थोड़े ही समयमें अुनकी समझमें आ जायगा कि अुनका ग्रहण किया हुआ मार्ग तो स्वराज्यसे अुलटी दिशामें ले जानेवाला है। लोगों पर हमारे बराबर अुनकी श्रद्धा कैसे जमे? अव्वल तो हम पर अुनकी श्रद्धा

नहीं। अुसे जमानेके लिअे अुनकी कड़ी आलोचना करनेसे कैसे काम चलेगा? अिससे तो अुल्टे वे हमसे ज्यादा दूर भागेंगे। ज्यों ज्यों हमारे बरताव और कामोंमें अधिक स्वच्छता आती जायगी, त्यों त्यों हम अुनका विश्वास प्राप्त कर सकेंगे और तभी वे जनता पर विश्वास रखने लगेंगे। अिसलिअे अिस परिषदमें तो हमें सरकारको नीतिकी या अपने नरम दली भाअियोंकी आलोचना छोड़कर यही विचार करना अुचित है कि हम अपने कामको जल्दीसे जल्दी किस तरह पूरा कर सकते हैं?

कुछ लोग कहते हैं कि हम साम्राज्यसे अलग होना चाहते हैं। हिन्दुस्तान साम्राज्यमें रहेगा या अलग हो जायगा, अिसका आधार हुकूमत करनेवालोंकी नीयत और कृत्यों पर है। अभी तो हमारा निश्चय अितना ही है कि साम्राज्यमें रह कर पूरी स्वतंत्रता भोग सकते हों, तो शामिल रहना वांछनीय है। मगर अैसा न हो सके, तो अलग होकर आज़ादी लेना भी अुतना ही वांछनीय है। फिर भी अगर अैसा वक्त आया कि साम्राज्यसे अलग होनेमें ही हमारा अुद्धार हो, तो अुस स्थितिकी ज़िम्मेदारी हम पर हरगिज़ नहीं होगी। अुसके लिअे तो अंग्रेज़ जाति ही ज़िम्मेदार होगी।

स्वराज्यमें क्या नहीं होगा?

हम अैसा स्वराज्य चाहते हैं, जिसमें सैकड़ों आदमी सूखी रोटीके अभावमें मरते न हों; जिसमें पसीना बहा कर पैदा किया हुआ अनाज किसानोंके बच्चोंके मुँहमें से छीनकर विदेश न भेज दिया जाता हो; जिसमें लोगोंको कपड़ेके लिअे पराये देश पर आधार न रखना पड़ता हो; जिसमें जनताकी अिज्ज़तकी रक्षा या अुसका लुटना विदेशियोंकी मर्ज़ी पर न हो; जिसमें स्वराज्यकी धारासभाका अध्यक्ष विदेशी 'विग' या चोगा न पहनता हो; और जिसमें स्वदेशी (गांधी) टोपी पहनने पर नौकरी छूटनेका डर न हो। स्वराज्यमें स्वदेशी कपड़ा पहनना ही जनताका स्वाभाविक धर्म माना जायगा। हमारे स्वराज्यमें थोड़ेसे विदेशियोंका सुविधाके लिअे विदेशी भाषामें राजकाज नहीं होगा। हमारे विचार और शिक्षाका माध्यम विदेशी भाषा नहीं होगी। हमारे विद्यालयोंके आचार्य विदेशी नहीं होंगे। राज्यका कामकाज ज़मीन और आसमानके बीच पृथ्वीतलसे सात हज़ार फुट अूँचेसे नहीं होगा। स्वराज्यमें अैसी हालत नहीं होगी कि महान देशभक्तोंकी स्वतंत्रता तो भले खतरेमें हो, परंतु शराबियोंकी आज़ादीकी रक्षा करनेके लिअे खास चिंता रखी जाय। हमारे स्वराज्यमें यह नहीं होगा कि घरमें पैदा होनेवाली महुअे जैसी खानेके काम आनेवाली चीज़ पर नियंत्रण रखा जाय और सरकार अुस महुअेकी शराब बनाकर अुसका व्यापार करती हो; अितना ही नहीं, बल्कि अुसमें लाखों रुपयेकी विस्कीकी शराब विदेशसे आज़ादीके साथ नहीं आ सकेगी। स्वराज्यमें देशकी रक्षाके लिअे अितना

फ़ौजी खर्च नहीं होगा कि देशको गिरवी रखकर दिवाला निकालनेकी नौबत आये। स्वराज्यमें हमारी फ़ौज भाड़ेकी टट्टू नहीं होगी। अुसका अुपयोग हमें गुलाम बनाने और दूसरी जातियोंकी स्वतंत्रता नष्ट करनेमें नहीं होगा। बड़े अफ़सरों और छोटे नौकरोंके वेतनमें आकाश-पातालका अन्तर नहीं होगा। अिन्साफ अत्यन्त महँगा और लगभग असम्भव-सा नहीं होगा। और अिन सबसे विशेष बात तो यह होगी कि जब हमारा स्वराज्य होगा, तब हम अपने देशमें और विदेशोंमें भी जहाँ-तहाँ दुतकारे नहीं जायँगे।

अफ़गानोंका डर

हमें अफ़गानोंकी चढ़ाअीका डर दिखाया जाता है। कितने ही वर्षों तक यह भय बताया गया कि रूसी रीछ हमें फाड़ खायगा। यह बच्चोंको हौअेका डर दिखाकर चुप रखने जैसी बात है। अफ़गानिस्तानसे हमें किस बातका डर है? हमने अुसका क्या बिगाड़ा है? अुसने कब किसीका मुल्क हज़म कर लेनेका अिरादा रखनेका सबूत दिया है? दूसरी जातियोंको सुधारनेका दावा वह कब करता है? सारी दुनियामें बसी हुअी काली जातियों पर जहाँ मौका मिला वहाँ घुसकर मालिक बन बैठनेवालोंको सिर्फ़ अपना घर सँभालकर बैठे रहनेवालों पर अैसा आक्षेप करनेका क्या अधिकार है? अब नौजवान भारत यह बात माननेसे अिन्कार करता है कि हिन्दुस्तान पर अंग्रेज़ोंकी नहीं, तो दूसरे किसीकी सत्ता रहेगी ही। भयंकर भेड़ियोंके बीच बसनेवाला अफ़गानिस्तान अपनी रक्षा करके बैठा रहे, तो ही बहुत है। फिर भी अगर हिन्दुस्तान पर अफगानिस्तान चढ़ आये, तो हमें क्या करना चाहिये, यह पूछनेकी सरकारको क्या ज़रूरत है? जर्मन जैसी ज़बरदस्त सल्तनतके खिलाफ लड़ाअी छेड़ते समय हिन्दुस्तानको किसने पूछा था? फिर भी हिन्दुस्तानको साम्राज्यमें विश्वास था, अिसलिअे खूनका पानी करके भी अुसने सहायता दी। अिसलिअे अगर यह सवाल सरकारकी तरफ़से पूछा जाता हो, तो अिसका जवाब सरकार स्वयं ही भली प्रकार दे सकती है। जनताका विश्वास हो, तो संकटके समय राज्य निर्भय रहता है। जिस राज्यने प्रजाका विश्वास खो दिया है, वह हमेशा डरता है। अगर यह सवाल कोअी दूसरा अुठाता हो, तो अुसका जवाब यही हो सकता है कि हिन्दुस्तानको किसी भी विदेशी सत्ताके नीचे रहना मंज़ूर नहीं; फिर भले वह अंग्रेज़ हो या अफ़गान, जर्मन हो या जापान। अिस देशमें हुकूमत करने आनेवाले सभीके खिलाफ़ हिन्दू-मुसल्मान सब अेक होकर लड़ेंगे। मुट्ठीभर विदेशियोंसे चलनेवाले अिस राज्यसे स्वतंत्रता लेनेमें ३३ करोड़ मनुष्योंको दूसरोंसे मदद लेनेमें ज़रूर शर्म आयेगी। मगर असलमें तो यह बात ही बेबुनियाद है। सच पूछा जाय, तो हिन्दू-मुसलमानोंमें फूट डालनेकी यह अेक ज़बरदस्त तरकीब है। अफ़गान जंगली हैं, निर्दयी हैं

और लुटेरे हैं — ये बातें हम अभी-अभी सुन रहे हैं। परन्तु हम जानते हैं कि आज तक हमारी सरकारने अिन्हीं लोगोंके साथ मित्रता रखनेमें गर्व समझा था। अब मित्रता टूटनेके बाद वे अेकदम अितने दुष्ट मालूम होते हैं, अिसका कारण कौन समझा सकता है? हिन्दुस्तान डाकुओंसे नहीं डरता। अब भी देशमें कितनी ही जगह डाके पड़ रहे हैं। जब सारे देशकी अिज्ज़त लुट रही हो, जातिका धर्म लुट रहा हो और जनताकी स्वतंत्रता लुट रही हो, तब अिक्के-दुक्के घरों या गाँवोंके लुटनेसे क्या डरें?

अेकता भंग करनेके प्रपंच

हिन्दू-मुसलमानोंकी अेकता अभी तो अेक कोमल पौधा है। अुसे कितने ही समय तक अत्यन्त सावधानीसे पालना पड़ेगा। अभी तक हमारे मन जितने चाहिये अुतने साफ़ नहीं हैं। हर मामलेमें अेक दूसरेका अविश्वास करनेकी हमें जो आदत पड़ गअी है, वह नहीं जाती। अिस अेकताको तोड़ डालनेके लिअे कअी तरहके प्रपंच और प्रयत्न होंगे। अुसे हमेशाके लिअे मज़बूत बनानेका सुन्दर अवसर हिन्दुओंके हाथमें सहज ही आ गया है। हिन्दुओंका धर्म तो यह है कि हम अिस्लामकी रक्षा करनेमें अिस समय मुसलमानोंको पूरी तरह मदद दें और मुसलमान कौमकी शराफ़त पर विश्वास रखें।

भलोंका भ्रम

सरकारने हमारे आन्दोलनको नष्ट करनेके लिअे असाधारण क़ानूनका अुपयोग न करनेकी घोषणा की थी। परन्तु साधारण क़ानूनकी मर्यादामें रहकर वह हमारी लड़ाअीके सामने टिक नहीं सकी। अिसलिअे अुसके सामने यह चुनाव करनेके सिवाय कोअी चारा नहीं रहा कि या तो साधारण क़ानूनका दुरुपयोग किया जाय, या असाधारण क़ानूनका आधार लिया जाय। प्रतिष्ठा रखनेकी खातिर और यह बतानेकी खातिर कि अुसने अपनी घोषित नीतिका अुल्लंघन नहीं किया, सरकारने पहला मार्ग पसन्द किया। कुछ लोगोंको विस्मय हो रहा है कि डॉक्टर तेजबहादुर सप्रू जैसे क़ानून मन्त्रीके समयमें अैसा कैसे हुआ? कुछ लोग जल्दबाज़ीमें आक्षेप करते हैं। विस्मित होने जैसी अिसमें कोअी बात ही नहीं है। सरकारकी कार्यकारिणी यदि अंग्रेज़ोंकी ही बनी होती, तो अैसा करनेकी सरकारकी कभी हिम्मत न होती। अुतावलेपनमें आक्षेप करना तो हमारा अपना द्रोह करनेके बराबर है। डॉ० सप्रू और श्रीयुत शर्मा जैसे प्रौढ़ देशभक्त सरकारको साधारण क़ानूनका दुरुपयोग करनेमें या और किसी भी तरहकी दमन नीतिका अनुसरण करनेमें सम्मति देंगे, यह मानना महापाप करने जैसा है। हम नहीं जान सकते कि कार्यकारिणी कौंसिलके परदेके पीछे क्या होता होगा? अगर हमने अपनी बुद्धि गिरवी न रख दी हो, तो हम अितना तो समझ ही सकते हैं कि

आजकल डॉ० सप्रू और श्रीयुत शर्मा सरकारकी दमन नीतिका विरोध करनेमें अपनी पूरी शक्ति लगा रहे होंगे। असे कभी अवसर आते होंगे, जब ये दोनों भाअी सरकारसे खूब लड़ते होंगे, सरकारसे अलग हो जाते होंगे और अन्तमें अुनकी अिच्छाके विरुद्ध बहुमतसे काम होता होगा। असी हालतमें अुनकी दृढ़ और प्रामाणिक मान्यता यही होगी कि अगर वे कार्यकारिणी कौंसिलमें न होते, तो सरकार जनताको कुचल डालती। यही अिस राज्यकी खूबी है। सरकारकी नीतिके प्रति अुनका विरोध ही अुसकी खुराक है। अुनकी मौजूदगी ही अुसे पुष्टि देनेवाली बन जाती है। असहयोगकी लड़ाअीका रहस्य ही अिसमें रहा हुआ है।

मालेगाँव

स्वराज्यके सैनिकोंने साहस और दृढ़तासे सरकारकी दमन नीतिका जवाब दिया है, अुसके लिअे हमें गर्व होना चाहिये। हम अुन्हें मुबारकबाद देते हैं। अुनकी तपस्यासे स्वराज्य हमारे निकट आता जा रहा है। अुनकी दुःख सहनेकी शक्तिका अनुकरण करनेमें हमारी जीत है। लेकिन हमारी जीतका आधार जितना हमारी दुःख सहनेकी शक्ति पर है, अुससे ज्यादा हमारी शान्ति रखनेकी शक्ति पर है। हमें मालेगाँव जैसी घटनाओंसे सावधान रहना है। यह घटना हमें शर्मिन्दा करती है, नीचा दिखाती है और अिस बातका प्रमाण देती है कि अहिंसाका तत्त्व जितना चाहिये अुतना लोगोंमें प्रवेश नहीं कर सका है। असी घटनाओंसे हमारी जीती हुअी बाजी हार जानेका डर रहता है। शान्तिप्रिय हिन्दुस्तान मालेगाँव जैसी भयंकर घटनाओंसे थरथर काँपता है। हिन्दुस्तानका स्वभाव ही असा है कि असी घटनाअें वह सहन नहीं कर सकता। असहयोगका प्राण ही अहिंसा है; हिंसा अुसकी मौत है। मालेगाँवकी घटना हमें चेतावनी देती है कि मौजूदा मर्यादित क्रमको छोड़कर आगे बढ़नेमें अभी देर है।

आत्मशुद्धिका कार्यक्रम

हमारी लड़ाअी आत्मशुद्धिकी है। हम गुलामीसे मुक्त होनेकी आशा रखते हों, तो पहले हमें अपने ही भाअियोंको गुलामीसे मुक्त करना चाहिये। अस्पृश्यता हिन्दू धर्म पर अेक कलंक है। वह धर्मके बहाने चलनेवाला अेक ढोंग है। हमें अिसे मिटाना ही पड़ेगा। ढेड़-भंगियोंका तिरस्कार करके हम अपने कर्मोंके फल भोग रहे हैं।

तमाम गुजरातमें अिस वक्त बहुतसे स्थानों पर शराबकी दुकानों पर धरना देनेका काम हो रहा है। सैकड़ों स्वयंसेवक अुत्साह और लगनके साथ यह काम कर रहे हैं। अहमदाबादमें कितने ही कुलीन घरानोंकी बहनें अिस काममें सम्मिलित हुअी हैं। गुजरातको अिससे गर्व होना चाहिये। स्वयंसेवकोंने जिस शांति और वफ़ादारीसे अपना फ़र्ज़ अदा किया है, अुसके लिअे मैं अुन्हें बधाअी देता हूँ।

चरखेकी प्रवृत्ति

अेक समय अैसा था कि चरखेका नाम सुनकर लोग हँसते थे। जिस प्रतापी राज्यके पास तोप, बंदूक और हवाअी जहाज़ वगैराकी राक्षसी सामग्री और ट्रेनिंग पाअी हुअी सेना मौजूद है, और समुद्रकी लहरों पर जिसका काबू है, अुसके सामने अेक निःशस्त्र, मुट्ठीभर हड्डियोंवाला आदमी सिर अुठाकर अुसे घबरा सके, यह हँसीकी बात नहीं बल्कि प्रत्यक्ष प्रमाण है, जिसे हम देख सकते हैं। यह शुद्ध सत्याग्रह करनेकी शक्तिका प्रमाण है। अिसी तरह आकाशसे बात करनेवाले मैंचेस्टर और लंकाशायरके कारखानोंके भोंपू, और घोड़ोंके संख्याबलसे जिनकी शक्तिका अंदाज़ लगाया जाता है, अैसे भयंकर दिखाअी देनेवाले अिंजन वगैरा राक्षसी यंत्रोंके बलके प्रभावसे जकड़े हुअे हिन्दुस्तानकी आर्थिक मुक्ति अुसकी झोंपड़ियोंके अेक कोनेमें समा जानेवाले सादे और सुंदर चरखेमें है, अिस बातको हँसीमें अुड़ा देनेवाले भी अब अिने-गिने ही होंगे। गुजरातमें कताअीका काम धीरे-धीरे अच्छा आगे बढ़ रहा है। हमें अिसे विशेष गति देनेकी ज़रूरत है। मगर अिससे भी ज्यादा ज़रूरत विदेशी कपड़ेके बहिष्कार की है। बहुतसे लोग अभी तक देशी कपड़ा पहननेमें शरमाते हैं। कुछ अैसी बातें करते हैं कि जितना घरमें है, अुतना पहनकर फाड़ डालनेके बाद दूसरा नहीं लायेंगे! यह तो भ्रम है। शराबका व्यसन छोड़नेवाला यह नहीं कह सकता कि घरमें जो बोतल है, अुसे पूरी करनेके बाद छोड़ दूँगा। यह अश्रद्धाकी बात है। सूत कातनेके काममें या स्वदेशी कपड़ा पहननेमें हमें न अफ़गानोंकी मददकी ज़रूरत है और न वाअिसरॉय साहबकी मेहरबानीकी ज़रूरत है। स्वराज्य मिलने पर भी अगर हम स्वदेशी धर्मका पालन नहीं करते होंगे, तो वह क्या पचनेवाला है?

देशी राज्य

देशी राज्योंकी प्रजाको जाग्रत होनेकी ज़रूरत है। अब वह यह नहीं कह सकती कि 'हम क्या अंग्रेज सरकारकी रैयत हैं? हमारा अिस आंदोलनसे क्या वास्ता है?' देशी राज्योंमें अैसा कौन होगा, जो यह कह सके कि जलियाँवाला बागके साथ मेरा क्या वास्ता है? अैसा कौन कह सकता है कि देशी राज्योंमें रहनेवाले मुसलमानोंका धर्म अंग्रेज़ी अिलाकेमें बसनेवाले मुसलमानोंसे अलग है। दोनों अेक ही नावमें बैठे हैं। सौभाग्यसे अुनकी जाग्रतिकी शुरुआत हो चुकी है। काठियावाड़की राजनैतिक परिषद् अुस जाग्रतिका प्रमाण है। हमारे आंदोलनके आत्मशुद्धिवाले भागको, देशी राज्योंकी प्रजाको खूब ज़ोरसे हाथमें ले लेना चाहिये। अिसमें अुसे किसी तरहकी मुश्किल नहीं होगी। स्वदेशी आंदोलन अुसे अपना लेना चाहिये। अस्पृश्य वर्गका तिरस्कार छोड़ना चाहिये। मद्यपानका त्याग करना चाहिये। कांग्रेसके सदस्य बननेमें और स्वराज्य फंडके

चंदेमें अुसे अपना हिस्सा देना चाहिये। अिससे अधिक सहायताकी आशा अभी हम अुससे नहीं रखते। कुछ राजा पश्चिमी सभ्यताके पुजारी हैं। अुन्हें चरखेमें देशको डेढ़ सौ वर्ष पीछे ले जानेका डर दिखाओी दे रहा है। वे यह नहीं समझ सकते कि पश्चिमी सभ्यता दुनियाकी अशांतिकी जड़ है। राजा-प्रजाके बीच झगड़ा करानेवाली, बड़ी-बड़ी सल्तनतोंको नष्ट करनेवाली, महान राज्योंको ग्रहोंकी तरह टकरा कर पृथ्वी पर प्रलय लानेवाली, मालिकों और मज़दूरोंके बीच गृह-युद्ध मचानेवाली पाश्चात्य सभ्यता शैतानी शस्त्रों और सामग्री पर निर्माण हुअी है। जब अिस सभ्यताका जाल सारी दुनिया पर ज़ोरसे फैलता जा रहा है, तब अकेला हिन्दुस्तान ही अुसके खिलाफ़ अचल खड़ा रहकर अपनी, और संभव हो तो संसारकी रक्षा करना चाहता है। पाश्चात्य सभ्यताको हिन्दुस्तानमें फैलानेकी अिच्छा रखनेवालोंके पास अुस सभ्यताको हज़म करनेकी क्या सामग्री है? हिन्दुस्तान अिस सभ्यताकी दौड़में भाग लेगा, तो हमेशा पीछे ही रहेगा। वह सभ्यता अिस भूमिके अनुकूल है ही नहीं। आत्मबलका पुजारी हिन्दुस्तान अिस शैतानके तेजसे कभी प्रभावित नहीं होगा।

‘अमन’ सभाअें

हिन्दुस्तानमें सब जगह अमन सभाअें (Leagues of peace and order) बनने लगी हैं। मेरा यह खयाल था कि गुजरात अिस ढोंग और प्रपंचसे बच जायगा, लेकिन वह ग़लत निकला। मुझे यह जानकर अफ़सोस हुआ कि गुजरातमें ये संस्थाअें बननी शुरू हो गअी हैं। ये संस्थाअें अधिकारियोंकी प्रेरणा या आश्रयसे स्थापित होंगी, तो अिससे शांतिके बजाय अशांतिका ही भय अधिक है। अधिकारियोंका तो सुलह-शान्ति रखना धर्म ही है; वे अिस धर्मका पालन करते हों, तो अिन संस्थाओंकी ज़रूरत क्यों हो? ज्यादातर तो छोटे-बड़े अफ़सर जनताको बेहद रोष दिलाते हैं और अुसीके कारण दंगे-फसाद या अशान्ति होती है। बादमें दंगेकी ज़िम्मेदारी किसीके भाषण पर डाल दी जाती है। जब तक अधिकारियों और जनताके बीच ज़रा-सा भी प्रेम न हो, तब तक अैसी संस्थाओंमें शरीक होना जालमें फँसनेके बराबर है। जब प्रेमभाव होगा, तब अैसी संस्थाओंकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी। मगर ये संस्थाअें अधिकारी वर्गके आश्रय या प्रोत्साहनसे क़ायम न होती हों, तो मेरी समझमें नहीं आता कि अुनके संस्थापकोंका मकसद क्या है? क्या अब तक वे अशांति या अराजकता पसन्द करनेवाले थे? अुनका जनता पर कितना काबू है, अिसका अुन्हें पता होना चाहिये। यह सोचनेका काम मैं अुन्हीं पर छोड़ता हूँ कि अैसी संस्थाअें बनाकर वे अपना काम बना सकेंगे या जाने-अनजाने सरकारके हथियार बनकर अपनी थोड़ी बहुत रही-सही प्रतिष्ठा भी खो बैठेंगे। क्या अुन्हें पता नहीं

है कि हिन्दुस्तानकी वर्तमान अद्‌भुत शान्तिका कारण सरकारकी तोप-बन्दूकें नहीं हैं? जिन विद्रोहियोंके लिअे रौलट क़ानून पास करनेकी सरकारने असाधारण जल्दबाज़ी की, क्या अुनका हिन्दुस्तानमें नाश हो गया है? लगातार जनताका असह्य अपमान किया गया और धर्मप्रिय क़ौमके धर्म पर धावा बोला गया। फिर भी देशमें जो शान्ति बनी हुअी है, वह तो अहिंसात्मक असहयोगका ही प्रताप है। अमन सभाअें तो तभीसे स्थापित हुअी हैं, जबसे असहयोग-वादियोंने गाँव-गाँव और मुहल्ले-मुहल्लेमें लड़ाअी शुरू की। गाड़ीके नीचे घुसकर कुत्ता गाड़ीको घसीटनेका श्रेय लेना चाहे, तो भले ही ले। मगर यह याद रखनेकी ज़रूरत है कि कहीं बकरेको निकालनेमें अूँट न घुस जाय। अगर ये संस्थाअें सुलह-शान्तिकी रक्षाका भार अुठा लें, तो हम अिनका बहुत बड़ा अुपकार मानेंगे और अेक ही सप्ताहमें अुन्हें स्वराज्य भेंट कर देंगे।

अुपसंहार

गुजरातने बहुत कुछ किया है। गुजरात विद्यापीठ गुजरातकी शोभा है। लोगोंकी आँखें अुस पर लगी हुअी हैं। अुसके आचार्यों और अध्यापकोंने गुजरातकी बड़ी सेवा की है। जो स्वयंसेवक पढ़ाअी बन्द रखकर डिग्रियोंका मोह छोड़कर जनताकी सेवा कर रहे हैं, अुन्होंने गुजरातको सुशोभित किया है। गुजरातकी म्युनिसिपेलिटियोंने जनताकी भावनाका सुन्दर प्रमाण दिया है। मैं अिन सबको सच्चे दिलसे मुबारकबाद देता हूँ। मगर गुजरातने जो कुछ कर दिखाया है, अुसका लम्बा विवेचन करनेकी ज़रूरत ही नहीं। गुजरातने तो स्वराज्यका बीड़ा अुठाया है; कांग्रेसको निमंत्रण दिया है। अिस गुजरातको बहुत कुछ करना बाकी है। मैं चाहता हूँ कि अुसका विचार करके सब अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी अुठा लें, गुजरातमें स्वराज्यका झण्डा फहरा दें और गुजरातकी कीर्ति अमर करें। मेरी प्रार्थना है कि अीश्वर सबको अितना बल दे।

नवजीवन, ५-६-१९२१

९

विदेशी कपड़ेकी होली

[ता. १८-९-१९२१ को अहमदाबादमें विदेशी कपड़ेकी होली करनेको हुअी विराट सभामें दिये गये भाषणका सार।]

आजका अवसर बड़ा गंभीर है। अिस गंभीर अवसरको हमें पूरी तरह गंभीरतासे ही मनाना है। आज हम दूसरी बार यह महान अवसर मनानेके लिअे अेकत्र हुअे हैं। आजका असाधारण जुलूस अैसी पूरी शान्तिसे शहरमें घूमा है, जिससे हमें गर्व होता है। यद्यपि सारे हिन्दुस्तानियों और खास तौर पर मुसलमान भाअियोंकी भावनाओंको मौलाना मुहम्मदअली और शौकतअलीकी गिरफ्तारीसे बड़ी चोट पहुँची है, फिर भी यह गौरवकी बात है कि लोगोंने पूरी तरह मनको काबूमें रखकर शान्ति रखी है। रास्तेमें दो जगह हमारी फौजी आदमियोंसे सलामी हुअी। मगर वे तो जहाँसे आये होंगे, वहीं वापस चले जायेंगे। अिन लोगोंको तकलीफ देनेका कोअी काम लोगोंने जाने अनजाने भी नहीं किया; और हमेशा अिसी तरह अमन और शान्ति रखी जायगी, तो अिसमें शक नहीं कि सैनिक साधन छोटे बच्चोंके खेलनेके खिलौने साबित होंगे या पड़े-पड़े अुन पर जंग लग जायगा। स्वराज्य प्राप्तिके लिअे पूरी सुलह-शांतिकी ही ज़रूरत है। आज अलीभाअी पकड़े गये हैं और कल दूसरे भाअी पकड़े जायँ, खुद महात्माजी भी पकड़े जायँ, तो भी लोगोंको अपने मनका क़ाबू न खोना चाहिये। पूर्ण शांति रखना, पकड़े जानेवाले नेताओंकी जगह ले लेना और अुनके अहिंसात्मक कामको और भी तेज़ बनाना, अिस समय जनताको यही तालीम पा लेनी है।

विरोधी दल

अिस तालीमके साथ-साथ आप यह भी ध्यानमें रखिये कि हमारे अहिंसात्मक आन्दोलनके विरुद्ध आवाज अुठानेवाला वर्ग भी मौजूद है। कांग्रेसने कहा कि जो वकील हों वे वकालत छोड़ दें। यह बात विरोधी दलके गले नहीं अुतरी। कांग्रेसने हुक्म दिया कि सरकारी अदालतोंमें मत जाओ। विरोधी पक्षको अिस खर्चीली जगहसे दूर रहनेकी माँग भी खटकी। हुकूमतको कमज़ोर बनाने और ज़हरीली शिक्षासे बचनेके लिअे कहा गया कि सरकारी स्कूल-कॉलेजोंको छोड़ दो, यह सिफारिश भी विरोधी दलको पसन्द नहीं आअी। शराब वगैरा गंदे पेयसे बचनेके मामलेमें भी अिसी तरहका विरोध हुआ। अहमदाबादमें अितने ज्यादा पारसी हैं, मगर अुनमेंसे अेक भी अैसा नहीं निकला जो शराबकी

दुकान बन्द करा कर दुकानवालेको किसी दूसरे धन्धेमें लगा सके। अिन सब बातों पर काफ़ी विचार करके अब लोगों पर दृष्टि डाली गअी है। लोगोंने पहली माँग मुँहमाँगे दाम देकर पूरी कर दी है। अेक करोड़ रुपया जमा हो चुका है। नेताओंको लोगों पर भरोसा है। साधारण लोग जो कुरबानी देंगे, स्वराज्य प्राप्तिके लिअे जितना करेंगे, अुतना दूसरा कोअी नहीं करेगा। लोगोंको अब समझना चाहिये कि केवल करोड़ रुपयेसे ही स्वराज्य नहीं मिलेगा, खिलाफ़तकी आफ़त नहीं मिटेगी और पंजाबके अन्यायका अन्त नहीं होगा। स्वराज्य प्राप्तिकी बात छोटी-सी नहीं है। अतः अुसके लिअे जो त्याग करना पड़ेगा, वह भी छोटा-सा नहीं हो सकता।

बलिदान दीजिये

बलिदान कअी तरहसे दिया जाता है। गंभीर विचारके बाद और देशकी दशाका पूरी तरह खयाल करके गांधीजीने अहिंसात्मक असहयोगका झंडा अुठाया। विरोधी दलको अुसका कोअी भी अंग ठीक न लगता हो, तो क्या अुन्हें बम, तलवार या तोपका रास्ता पसंद है? छोटा बच्चा भी कह सकेगा कि यह देश अिस तरहके हथियार अुठानेकी ताक़त नहीं रखता। बंगालियोंने पश्चिमका अनुभव प्राप्त करके बमके प्रयोग आज़माये। यह बात भी गलत नहीं है कि जवानोंका खून जल्दी-जल्दी कुरबानी देनेके लिअे ज्यादा अुबल रहा है। परन्तु हमने देख लिया कि अिस तरह पशुबल काममें लेनेका दुष्परिणाम हमींको ज्यादा सहना पड़ता है और हम अूपर न चढ़कर नीचे ही नीचे गिरते जाते हैं। अंग्रेज़ लोगोंके सामने अिन शस्त्रोंसे सफल होनेके लिअे हमें वर्षों चाहिये। वर्षोंकी अवधिके बाद भी हमें अुनकी तरह तैयार होने दिया जायगा या नहीं, अिस बारेमें मुझे तो शंका ही रहेगी — बल्कि यही खयाल होता है कि वे तैयार ही नहीं होने देंगे। तब सवाल यह है कि हम क्या करें? जैसे आज तक गुलामीमें सड़ते आये हैं, वैसे ही सड़ते रहें? लोग पड़े-पड़े सड़ते रहनेको तैयार नहीं हैं। जनता स्वतंत्रता चाहती है। अुसीके लिअे अहिंसात्मक असहयोग अपनाया गया है। अुसके द्वारा त्याग तो करना ही है, परंतु वह त्याग दूसरी ही तरहका है। अंग्रेज़ लोग त्याग करना जानते हैं। अुनका यह गुण छोड़ने लायक नहीं है। लोगोंसे अभी तो कोअी असाधारण या महान त्यागकी माँग ही नहीं हुअी। वर्षोंसे जिस चीज़ने गुलामीकी बेड़ीमें जकड़ रखा है, वह बेड़ी तोड़नेकी माँग ही की गअी है। अुससे छूटने पर हम सब तरहसे आज़ाद हो सकेंगे। अिसीके लिअे विदेशी वस्त्रोंको जला डालनेका आन्दोलन हो रहा है। अिस आन्दोलनका असर अभीसे कितना गंभीर हो चुका है, यह तो अब शायद ही किसीसे छिपा होगा। विदेशी कपड़ेकी होली तो जलाअी भी नहीं गअी थी, सिर्फ़ अुसका

निश्चय ही हुआ था कि अितनेमें लंकाशायरमें खलबली मच गअी और अब प्रतिनिधि-मंडल हिन्दुस्तान आनेकी तैयारी कर रहा है! वह भले ही आये, हमें अपने आन्दोलनमें दृढ़ रहना है और शुद्ध भावनासे विदेशी कपड़ेका हमेशाके लिअे बहिष्कार करना है। देशकी तैंतीस करोड़ जनता अेक दिलसे अितना भी कर ले, तो स्वराज्य प्राप्तिमें ज़रा भी देर न लगे। दिसम्बर तक भी बाट न देखनी पड़े। स्वराज्य जल्दी मिलेगा या देरसे, अिसका दारमदार जनताके संयम और त्याग पर ही है। जब अैसी मज़बूत अेकताका दिन आयगा, तब क्या आप यह मानते हैं कि अेक लाखकी संख्यावाली विदेशी जाति यहीं रहेगी? यह जाति बड़ी होशियार है। वह चेत जायगी कि अब हिन्दुस्तानको गुलामीमें नहीं रखा जा सकता।

सरकारका अुलटा प्रचार

शुरूमें तो सरकारने असहयोगके आन्दोलनको पागलपन मान लेनेमें ही बुद्धिमानी समझी थी। सरकारने घोषणा की थी कि यह आन्दोलन अपने आप ठण्डा हो जायगा। धारासभामें यह भी कहा गया था कि जब तक असहयोग अहिंसात्मक रहेगा, तब तक अुस पर हाथ नहीं डाला जायगा। परन्तु ये वचन बहुत समय तक क़ायम नहीं रहे। अली भाअियोंको आखिर पकड़ लिया गया। अिससे पहले ही चौकन्नेपनकी नीति शुरू हो चुकी है। छोटे-मोटे नेताओंको थोड़ी-बहुत सजाअें होने लगी हैं। अैसा करते-करते अली भाअियों पर भी नज़र डाली गअी। अुनके अेक भाषणके बारेमें लोगोंमें ग़लतफ़हमी पैदा हो सकती है, अैसा मालूम होने पर अली भाअियोंने गांधीजीकी सलाहको शिरोधार्य करके स्पष्टीकरण प्रकाशित किया। अुस स्पष्टीकरणको सरकारने माफीनामा मान लिया और यह ढोंडी पिटवा दी कि माफी माँग लेनेके कारण अब अुन पर मुक़दमा नहीं चलाया जायगा। मगर अली भाअी अैसे हैं ही नहीं, जो सज़ासे डरकर माफी माँगें। अुन्हें जहाँ-जहाँ भी भाषण देनेका अवसर मिला, वहीं सरकारकी अूटपटाँग बातोंका साफ-साफ खुलासा कर दिया और कह दिया कि सरकारसे जो हो सके कर ले। हमने सरकारके डरसे स्पष्टीकरण प्रकाशित नहीं किया। हमारा स्पष्टीकरण सिर्फ अिसीलिअे है कि लोगोंमें ग़लतफ़हमी फैलनी बन्द हो जाय और हम अहिंसात्मक असहयोग पर ही क़ायम हैं, अिस बातकी किसीको शंका न रहे। जब सरकारने देख लिया कि असहयोग आन्दोलनको चलने देनेमें तो वह जिस सिंहासन पर विराजमान है वह डोलने लगा है, तब पिछले गुरुवारको आधी रातके बाद अली भाअियोंको पकड़ लिया गया। जनताने सरकारको पहचान लिया है। कितने ही प्रयत्न किये जायँ, फिर भी जनतामें अली भाअियोंकी जो प्रतिष्ठा है, अुसे ज़रा भी धक्का नहीं पहुँचेगा।

अली भाअियों पर यह अभियोग लगाया गया है कि अुन्होंने फ़ौजके आदमियोंको अुल्टे रास्ते ले जानेवाली सलाह दी है। मगर जो सच्चा मुसलमान होगा, वह अब भी अपने धर्मको ताकमें रखकर अुल्टे रास्ते नहीं चलेगा और न दूसरेको अैसी सलाह ही देगा। अली भाअियोंको पकड़नेके बाद सरकारने अखबारी बयान निकालकर हिन्दुस्तानी फ़ौजकी अिज्ज़त और भक्ति दोनोंकी रक्षक होनेका दावा किया है। परन्तु यह दावा कहाँ तक ठीक है, अिसे जनता नहीं समझती हो सो बात नहीं है। जनता यह भी जानती है कि अुलेमाओंके फतवेको ज़ब्त कर लिया गया है।

लोकमतको अपनी तरफ करनेके लिअे सरकारी प्रयत्न भी हो रहे हैं। भारतीय धारासभामें सरकारको राज़ी रखकर चलनेवाले सदस्योंको सरकारने सलाह दी है कि आप अपने विचार जनता पर प्रगट करके सरकारके पक्षमें लोकमत तैयार करते रहिये। सरकारी दल अुस सलाह पर अमल नहीं करने लगा हो सो बात नहीं। आज ही अमन सभाकी बैठक बंद कमरेमें हुअी है। जिसे निमंत्रण मिला हो, वही अुस बैठकमें जा सकता है। यह तो अुसकी कार्यपद्धति है। अुनकी रायमें लोकमत अिसी तरह तैयार किया जाता होगा! यह तो मैं नहीं कह सकता कि अिस बैठकमें पचास आदमी होंगे या ज्यादा, मगर आपको अुसके समाचारोंका अन्दाज़ा लगाना हो तो अखबारोंमें अुसकी खबर खासे दो कॉलममें छपेगी। मगर सरकार अिन सहयोगियोंको भी अच्छी तरह जानती है। सरकारको जितना अनुकूल होता है, अुतना ही काम वह अिनसे कराती है। सहयोगी वर्गमें भी सरकारका कितना विश्वास होगा, यह अेक गहन प्रश्न है।

तीसरी बार होली

लेकिन सरकार क्या करती है अिस तरफ़ ध्यान दिये बिना हमें यही विचार करना चाहिये कि हमारा क्या कर्तव्य है। सिर्फ़ अिसीलिअे स्वदेशीको सम्पूर्ण रूपसे स्वीकार करनेकी जनताको सूचना दी गअी है। विदेशी कपड़ेका बहिष्कार करनेमें कोअी ज्यादा त्याग नहीं करना पड़ता। अगर अितना भी त्याग न करना हो, तो फिर आखिरी रास्ता यही रह गया है कि जेलें भरनेके लिअे लोग बड़ी संख्यामें तैयार हों। मियाद अब लम्बी नहीं है। दिसम्बर तक हमें हिसाब निपटा देना है। अिस बीच हरअेकको स्वदेशी-व्रतका पालन करने लग जाना है। अब भी कोअी बाकी रह गये हों, तो अुन्हें महात्मा गांधीकी जयन्तीके अवसर पर, जो तीसरी बार विदेशी कपड़ेकी होली होनेवाली है अुस समय, गुलामीसे छूट जाना है। मुझे अभी-अभी खबर मिली है कि अगली ६ तारीखको यहाँ कांग्रेस महासमितिकी बैठक होनेवाली है।

यह भी देखना है कि महासमितिके सदस्य कहीं हमारी क़ीमत न आँक जायँ। मुझे आशा है कि अेक करोड़ रुपया जमा करनेमें लोगोंने जैसा शानदार जवाब दिया है, वैसा ही स्वदेशीके संबंधमें भी देंगे।

प्रजाबन्धु, २५–९–१९२१

१०

३६वीं राष्ट्रीय कांग्रेस—अहमदाबाद

[दिसम्बर १९२१में अहमदाबादमें हुअी ३६वीं राष्ट्रीय कांग्रेसके स्वागताध्यक्षकी हैसियतसे दिया गया भाषण।]

अिस वर्ष जैसे संयोगोंमें पहले कभी कांग्रेसका अधिवेशन नहीं हुआ। अपने प्रिय और पूज्य कार्यकर्ताओंके वियोगसे दुःखी होनेके बजाय आज हमारे हृदयोंमें हर्ष नहीं समाता। मैं अुन्हें नेता तो नहीं कहता, क्योंकि पूरे होनेवाले अिस वर्षमें हमने अितना सीख लिया है कि नेतापन सेवामें है। हम मानते हैं कि महान और विद्वान मुसलमान और हिन्दू आज सरकारी जेलोंमें अपनी खरी कमाअीका आराम भोग रहे हैं। अिसका कारण यह है कि अुन्होंने हमारी सेवा सिर पर ली है और हमारे लिअे कष्ट सहन किया है। हम जिस आनन्दके लिअे तरस रहे हैं, अुसे वे भोग रहे हैं। क़ानून और व्यवस्थाके सिद्धान्त पर रची हुअी होनेका ढोंग करनेवाली लेकिन, जैसा कि दिनोदिन दीपककी तरह स्पष्ट दिख रहा है, दर असल सिर्फ ज़बरदस्तीकी बुनियाद पर रची हुअी अिस सरकारने आज तक अिस आनन्दको रोक रखा था।

पास आते हुअे स्वराज्यके चिन्ह

हमने आशा रखी थी कि हम स्वराज्यकी स्थापनाका अुत्सव मनानेके लिअे अिकट्ठे होंगे, अिसलिअे अुस अवसरको शोभा दे अैसा स्वागत करनेकी हमने कोशिश की है। लेकिन वह शुभ अवसर मनाना संभव नहीं हुआ। दयानिधि परमात्माने हमारी परीक्षा करने और अैसे महँगे दानके लायक़ बननेके लिअे हमारे पास कष्ट भेजा है। क़ैद, शारीरिक हमले, जबरन तलाशी और हमारे कार्यालयों और शाखाओंके ताले तोड़ना—अिन सब घटनाओंको पास आनेवाले स्वराज्यके निश्चित चिन्ह मानकर तथा अपने मुसलमान भाअियों और साथ ही पंजाबियोंके जख्मों पर ठंढा मरहम समझकर आपके स्वागतके लिअे की गअी हमारी सजावटमें, संगीतके जलसोंमें और दूसरे आनन्दसूचक कार्यक्रमोंमें हमने किसी तरहका परिवर्तन या कमी नहीं की।

परंतु हम आपसे यह नहीं कहेंगे कि आपको हमारे यहाँ निमंत्रण देनेके सम्मानकी हमारी योग्यताका निर्णय आप अपने लिअे किये गये सुख-सुविधाके बन्दोबस्तसे करें। हमारी स्वागत संबंधी त्रुटियोंका हमें पूरी तरह खयाल है, परन्तु स्वागत समिति आशा रखती है कि आप अुन सबको दरियादिल होकर दरगुज़र करेंगे।

हमारी परीक्षाका मापदण्ड आपने दूसरा ही तय किया है और हमने अुसे राज़ीखुशीसे स्वीकार कर लिया है। हमारी परीक्षा अिसीमें है कि हमने असहयोगका रचनात्मक कार्यक्रम, अुसके मुख्य और प्राणदायक तत्त्व अहिंसाके साथ किस हद तक अपना लिया है। जो सरकार लोकमत पर अपनी सुरक्षाका आधार न रखकर जबरदस्ती पर अपना दारमदार रखती है और वैसा ही बरताव करती है, अुसकी संस्थाओंके साथ हमने संबंध तोड़ दिया है। अिसका अर्थ यही है कि हम हर हालतमें मारकाटका त्याग करना चाहते हैं। मैं सचाअीके साथ दावा करके कह सकता हूँ कि हमने मनसा-वाचा-कर्मणा अहिंसा-परायण रहनेका प्रयत्न किया है। हमने अपनी कमज़ोरियों पर विजय पाकर शुद्ध होनेकी सच्चे दिलसे और निश्चित रूपसे कोशिश की है। अिसका सबसे स्पष्ट चिन्ह हिन्दू-मुस्लिम अेकता है। यद्यपि अब तक हम अेक दूसरे पर अविश्वास रखते और अेक दूसरेको कुदरती दुश्मन मानते रहे, मगर अब हम आपसमें मोहब्बत करते हैं और पूरी तरह दोस्तीके हक़से रहने लगे हैं। मैं यह बात आपके सामने अभिमानपूर्वक ज़ाहिर करता हूँ कि हमारा संबंध केवल निष्प्राण मित्रताका नहीं है, बल्कि हम राष्ट्रीय कार्यको आगे बढ़ानेमें अेक-दूसरेके साथ मिलजुल कर काम करते हैं। अिसी तरह हमने पारसी, अीसाअी और दूसरे देशबन्धुओंके साथ मीठा संबंध क़ायम किया है।

सहिष्णुता अहिंसाका प्राण है

अपना कार्यक्रम हमने अुत्साहपूर्वक जारी रखा है। फिर भी हमने भिन्न मत रखनेवालोंके साथ दोस्तीका संबंध बनाये रखनेका प्रयत्न किया है। हमने देखा है कि सहिष्णुता अहिंसाका प्राण है। मुझे यह कहते हुअे अफ़सोस होता है कि सरकारी खिताब छोड़ने और वकीलोंके वकालत छोड़नेके मामलेमें हम गर्व करने लायक़ कुछ नहीं दिखा सके। कितने मतदाताओंने मत दिये, अिस दृष्टिसे देखें तो धारासभाओंका बहिष्कार बेशक बहुत व्यापक माना जा सकता है। शिक्षाके मामलेमें हमारा काम हमारी शोभा बढ़ानेवाला है। कुछ सर्वोत्तम पाठशालाओं और हाअिस्कूलोंने सरकारसे अपना संबंध तोड़ लिया है और अैसा करनेसे अुनका ज़रा भी नुक़सान नहीं हुआ है। ज़्यादातर बड़ी राष्ट्रीय पाठशालाओंमें हाज़िरी बढ़ती जा रही है। हमने राष्ट्रीय विद्यापीठ

और राष्ट्रीय महाविद्यालय स्थापित किये हैं, और विद्यापीठसे मान्य की हुअी अनेक शिक्षण संस्थाअें हमारे यहाँ चल रही हैं। मान्य की हुअी और दूसरी राष्ट्रीय पाठशालाओंमें कुल ३१ हज़ार लड़के और लड़कियाँ पढ़ रहे हैं।

दो वर्ष पहले हमारे प्रान्तमें शायद ही कोअी चरखा चलता होगा। आज कम से कम १ लाख १० हज़ार चरखे चल रहे हैं। अब तक २ लाख पाअुन्ड खादी हमने तैयार की है। स्वदेशीका प्रचार करने और खादी पैदा करनेमें हम लगभग पाँच लाख रुपया खर्च कर चुके हैं। ये सारे मंडप और खादीनगर बनानेमें किया गया खादीका अुपयोग अिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि स्वदेशीके मामलेमें हम क्या कर सके हैं।

शराबबन्दीके लिअे शराबखानों पर धरना देनेका काम हमने बड़े पैमाने पर शुरू किया है और अुसका परिणाम भी अच्छा हुआ है। धरना देनेवालोंका चुनाव करनेमें हमने बहुत ही सावधानी रखी है। वे अपने कामकी परीक्षामें पास हुअे हैं और कुछ को तो शराब पीनेवालों या बेचनेवालोंके हाथों मार भी बरदाश्त करनी पड़ी है।

अस्पृश्यता केवल मनका कारण है

अस्पृश्यताके मामलेमें शायद हमने सबसे ज्यादा प्रगति की है। हमारे अंत्यज भाअी आज़ादीसे हमारी सभाओंमें आते हैं। राष्ट्रीय पाठशालाओंमें अुन्हें भरती करनेका सिद्धान्त हमने स्वीकार किया है। विद्यापीठकी संचालन समितिको अिस सिद्धान्तके लिअे ज़बरदस्त लड़ाअी लड़नी पड़ी थी। मगर व्यवहारमें अछूत बालकोंको समझाकर राष्ट्रीय पाठशालाओंमें लानेका और अुच्च माने जानेवाले हिन्दुओंके बच्चोंसे वे किसी तरह नीचे नहीं हैं, यह अुन्हें महसूस करानेका आग्रहपूर्वक प्रयत्न अभी तक नहीं हुआ। अिसलिअे यद्यपि अछूतोंके लिअे अलग पाठशालाअें बढ़ाते जाना हमारा अुद्देश्य नहीं है, फिर भी कुछ समय तक हमें ये पाठशालाअें चलानी ही पड़ेंगी। परंतु अुनके लिअे खोली गअी पाठ-शालाओंकी संख्या परसे या सर्वमान्य राष्ट्रीय पाठशालाओंमें अुनकी हाज़िरी परसे यह अन्दाज़ नहीं लगाया जा सकता कि अस्पृश्यताका कलंक कितना मिटा है। अस्पृश्यता तो अेक मनका कारण है और मुझे यह कहते हुअे आनन्द होता है कि यद्यपि अिस संबंधमें हमें अभी बहुत कुछ करना है, फिर भी दिखाअी देने लायक़ परिवर्तन हम कर सके हैं।

परंतु मैं जानता हूँ कि जिस अग्नि-परीक्षामें से बंगाल, पंजाब, संयुक्तप्रान्त और दूसरे प्रान्त गुजर रहे हैं, अुसमें से हम नहीं गुज़रे हैं। मैं आशा रखता हूँ कि हमारी जिस अहिंसापरायणताका मैंने थोड़ेसे गर्वके साथ अुल्लेख किया है,

वह अहिंसा अशक्तिका नहीं, परंतु हमारे स्वेच्छापूर्वक अपनाये हुअे संयमका परिणाम है।

सूरत और नडियादकी म्युनिसिपेलिटियोंसे राष्ट्रीय पाठशालाओंका ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा छीनकर सरकारने हमें अपनी शक्ति दिखानेका मौका दिया है। अहमदाबादको भी यही प्रश्न हल करना है। आखिर यह प्रश्न तो सिर्फ़ क़ानूनके सविनय-भंगसे ही हल होगा। सामूहिक क़ानून-भंगके लिअे बारडोली और आणंद जिले बड़ी तैयारी कर रहे हैं। मैं कांग्रेसकी यह प्रार्थना प्रगट कर रहा हूँ कि अीश्वर हमें अिस कष्टसहनकी कसौटी पर खरा अुतरने और दूसरे प्रान्तोंकी क़तारमें खड़े रहने लायक़ शक्ति दे। अिसके साथ ही मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हम कोअी बात बिना विचारे नहीं करेंगे। राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय अधिकारोंकी रक्षा करनेके लिअे हम अैसा कोअी काम नहीं करेंगे, जो शान्त और शान्तिप्रिय मनुष्यको शोभा न दे।

अब मैं हकीम अजमलखाँ साहबको स्थानपन्न अध्यक्षके रूपमें सभापतिका स्थान लेनेकी प्रार्थना करता हूँ। देशबन्धु चित्तरंजन दास शरीरसे अिस समय हमारे बीचमें मौजूद नहीं हैं, परन्तु अुनकी विशुद्ध, देशभक्तिपूर्ण और त्यागपरायण आत्मा यहाँ अवश्य विद्यमान है। अुन्होंने धर्मवृत्तिसे छलकता हुआ और प्राणदायक भाषण हमारे लिअे भेजा है। बंगाल सरकारके हमारे लिअे पैदा किये हुअे संयोगोंमें महासमितिने मुस्लिम लीग वाले हमारे भाअियोंके अुदाहरणका अनुकरण किया है। अुनके अध्यक्ष मौलाना मुहम्मदअलीकी गैर मौजूदगीमें अुन्हें कामचलाअू अध्यक्षका चुनाव करना पड़ा था। देशबन्धु चित्तरंजन दासकी जगह काम करनेके लिअे महासमितिने हकीम अजमलखाँ साहबको चुन लिया है। ये साहब हमारे सबसे बड़े और शरीफ़से शरीफ़ देशवासियोंमें से अेक हैं, क्योंकि हकीम साहब हिन्दू-मुस्लिम अेकताकी मूर्ति हैं। वे हमारे मुसलमान भाअियोंके जितने विश्वासपात्र और प्रेमपात्र हैं, अुतने ही विश्वासपात्र और प्रेमपात्र हिन्दुओंके और दूसरे भाअियोंके भी हैं।

हकीम साहब! मैं आपसे सभापतिका आसन ग्रहण करनेकी प्रार्थना करता हूँ, और यह प्रार्थना करनेका सुअवसर मिलनेके लिअे अपना अहोभाग्य मानता हूँ।

नवजीवन, २८-१२-१९२१

११

म्युनिसिपल आन्दोलन

[१९–२–१९२२ के 'नवजीवन' में प्रकाशित हुआ लेख ।]

अहमदाबाद और सूरतकी म्युनिसिपेलिटियाँ सरकारने बरखास्त कर दीं, अिसमें सरकारकी मनोदशा जाननेवालेको कोअी आश्चर्य नहीं हो सकता । कितनों ही ने तो यह भविष्यवाणी कर ही दी थी । परन्तु सरकारका किया हुआ यह निश्चय अुचित है या ग़ैर क़ानूनी, अिस बारेमें अलग-अलग आलोचनाअें होने के कारण असली स्थितिको जाँचनेकी ज़रूरत है ।

अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीने शिक्षाके मामलेमें सरकारी सहायता छोड़ दी और अुसमें भी सरकारके नियंत्रणसे मुक्त होनेकी घोषणा कर दी, तबसे लंबे समय तक म्युनिसिपेलिटीके साथ सरकारका व्यवहार अैसा रहा, जिससे अुसको यह माननेका कारण मिले कि अुसके स्वतंत्र होनेके लिअे की गअी कोशिशों पर सरकारको बहुत आपत्ति नहीं है । लेकिन जबसे सरकारकी तरफ़से ये हुक्म जारी हुअे कि म्युनिसिपल पाठशालाओंके शिक्षक चूँकि सरकारी नौकर हैं अिसलिअे अुन्हें वापस ले लिया जाय, सरकारी ट्रेनिंग कॉलेजमें शिक्षा पानेवाले म्युनिसिपेलिटीके शिक्षक अलग कर दिये जायें और साथ ही म्युनिसिपल पाठशालाओंको अमान्य समझकर अुनके नाम सरकारी रजिस्टरसे निकाल दिये जायँ और म्युनिसिपल पाठशालाओंमें शिक्षा पानेवाले बच्चोंको सरकारी स्कूलोंमें भरती न किया जाय, तबसे शिक्षा पर नियंत्रण रखनेका अधिकार सरकारने जान-बूझकर खो दिया, यह बात स्पष्ट हो गअी ।

यह कांड पूरा होनेके बाद सरकारने कुलाँच खाअी और अुसके बाद म्युनिसिपेलिटीके विरुद्ध जो-जो क़दम अुठाये गये, वे सब ग़ैर क़ानूनी थे । म्युनिसिपल अेक्टकी १७८ वीं धाराके आधार पर म्युनिसिपल स्कूलोंका प्रबन्ध छीन लेनेका प्रयास, म्युनिसिपेलिटीका रुपया अुसके बैंकके खातेसे बालाबाला अुठा लेनेकी कार्रवाअी और अिसी तरह म्युनिसिपेलिटी द्वारा स्थानीय शिक्षा-मंडलको सौंपे हुअे स्कूलोंके मकानोंके ताले तुड़वाकर सरकारका अुन पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा कर लेना, अिन सब करतूतोंका क़ानूनसे बचाव नहीं ढूँढ़ा जा सकता था । अिसलिअे अपने किये हुअे दोषों पर परदा डालकर अपने हाथों पैदा की हुअी मुश्किलोंमें से निकलनेके लिअे सरकारके पास म्युनिसिपेलिटियोंको बरखास्त करनेका ही अेक अुपाय था, और वही सरकारने अख्तियार किया है ।

आम तौर पर तो जहाँ सहयोगकी बात आओी कि सवालके गुण-दोषका विचार करनेके लिअे कोओी ठहरता नहीं, और यही मान लिया जाता है कि असहयोगियोंका ही क़सूर होना चाहिये। अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीका झगड़ा, सहयोग-असहयोगके बीच नहीं था, बल्कि अन्धे सहयोग और स्वाभिमानके बीच था। (और अिसीलिअे रावसाहब हरिलालने सरकारकी मुक़र्रर की हुअी कमेटीमें रहनेसे अिनकार कर दिया है।) जब सरकारने अेतराज अुठाया, तब हमने अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीके तमाम असहयोगी सदस्यों सहित बम्बअीकी धारा-सभाके अुपाध्यक्ष रावसाहब हरिलालकी, जो अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीके सदस्य हैं, सलाह मान ली और सरकारसे शिक्षा सम्बन्धी सहायता न लेनेवाली म्युनिसिपेलिटियोंके लिअे अलग नियम बनाकर अुन्हें आवश्यक स्वतन्त्रता देनेके लिअे सरकारसे प्रार्थना करनेवाला प्रस्ताव अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीसे पास करवा दिया। वह प्रस्ताव सरकारके पास भेज दिया गया और सरकारने भी पुछवाया कि म्युनिसिपेलिटीको कैसे नियम अनुकूल होंगे! परन्तु म्युनिसिपेलिटीके अिसपर विचार करनेसे पहले ही अुसे बरखास्त करनेका हुक्म सरकारी गज़टमें प्रकाशित हो गया!

म्युनिसिपल अेक्टकी १७८ वीं धाराके अनुसार पाठशालाओंका प्रबन्ध स्कूल कमेटीसे ले लेनेका कमिश्नर साहबका हुक्म क़ानूनके खिलाफ होनेके कारण अुन्हें अैसा करनेका अधिकार नहीं था। अिसी तरह बैंकोंसे बालाबाला रुपया अुठा लेनेका भी अुन्हें अधिकार नहीं था। अिसलिअे अिस मामलेमें सरकारको लिखकर अुपरोक्त आज्ञा रद्द करानेका प्रस्ताव भी रावसाहब हरिलालने अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीसे पास कराया और अुसका जवाब भी मिला कि म्युनिसिपेलिटीका प्रस्ताव गवर्नर-अिन-कौंसिलके सामने रखा जायगा। नतीजा यह हुआ मालूम होता है कि जवाब देना मुश्किल हो गया। अिसलिअे जवाब न देकर म्युनिसिपेलिटीको बरखास्त कर दिया।

स्थानीय स्वराज्यकी नीति पर माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार प्रकाशित होनेके बाद मअी १९१८ में भारत सरकारने अेक प्रस्ताव प्रकाशित किया था। अुसमें केन्द्रीय सरकारने जो नीति घोषित की है, अुससे बम्बअी सरकारका म्युनिसिपेलिटियोंको बरखास्त करनेका यह प्रस्ताव बिलकुल विरुद्ध है। अुपरोक्त प्रस्तावमें यह बात आम सिद्धान्तके रूपमें मान ली गअी है कि स्थानीय स्वराज्यकी संस्थाओंको भूलें करने और साथ ही अिन भूलोंको अनुभवसे सुधारनेका अधिकसे अधिक अवसर दिया जाय और सरकारी अधिकारी अुनके कामकाजमें दखल न दें। प्रस्तावमें कहा गया है:

"परन्तु जैसा अिस प्रस्तावके आरम्भमें ही बता दिया गया है, भारत सरकारका आम अुसूल यह है कि गम्भीर अव्यवस्थाके खास मामलोंके सिवाय

दूसरी सब बातोंमें स्थानीय संस्थाअें भूल करें, तो अुन्हें भूल करने देकर भी अुन भूलोंसे शिक्षा लेनेका मौका दिया जाय और अुनकी व्यवस्थामें भीतरसे या बाहरसे दखल न देनेकी नीति रखी जाय। अिस तरह अूपर बताये हुअे विरले अपवादोंको छोड़कर अिस प्रकारकी दस्तन्दाज़ीका कोअी भी ठोस अधिकार सरकारी अधिकारियोंको देनेकी भारत सरकारकी मंशा नहीं है। और अुसे आशा है कि अिस प्रकार क़ानूनसे मिलनेवाली ज्यादा विशाल सत्ताका अुपयोग करनेमें अूपर बताये हुअे सिद्धान्तका ध्यानमें रखा जायगा। और किसी मौक़े पर क़ानूनकी रूसे मिलनेवाली कड़े क़दम अुठानेकी सत्ता काममें लेनेसे पहले प्रान्तीय सरकार म्युनिसिपल या स्थानीय संस्थाको भंग करके नये सिरेसे चुनाव करनेका हुक्म जारी करनेका क़दम अुठायेगी और म्युनिसिपेलिटीको सीधी सज़ा देनेकी कार्रवाअीसे बचेगी।"

भारत सरकारके अिस प्रस्तावका स्थानीय अधिकारियोंने अहमदाबाद जैसी सरकारी रिपोर्टोंमें भी क़ाबिल मानी गअी म्युनिसिपेलिटियोंके प्रबन्धमें बारबार हस्तक्षेप करके जो सरासर अुल्लंघन किया है, अुसे बम्बअी सरकारने यह बरखास्तगीका निश्चय करके बहाल कर दिया है। और भारत सरकारके अुपरोक्त प्रस्तावमें यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि प्रान्तीय सरकार म्युनिसिपेलिटियोंको बरखास्त करनेका अितना कड़ा क़दम अुठानेसे पहले किसी म्युनिसिपेलिटीको भंग करके नये सिरेसे चुनाव करनेका अधिकार क़ानून द्वारा अपने हाथमें ले ले और जहाँ क़ानूनमें सुधार किये बग़ैर भी अैसी कार्रवाअी की जा सकती हो, वहाँ तुरन्त वैसा करे। भारत सरकारके प्रस्तावमें कहा गया है कि:

"और अिस प्रस्तावकी ज्यादातर सूचनाओंका अमल क़ानूनमें वैसा परिवर्तन होनेकी राह देखे बिना ही किया जा सकता है। अिसलिअे जहाँ हो सकता हो वहाँ अविलम्ब वैसा अमल किया जाय।"

अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीके मामलेमें तो म्युनिसिपल अेक्टमें कोअी तबदीली किये बग़ैर ही बम्बअी सरकार केन्द्रीय सरकारकी अुपरोक्त सिफारिशों पर अमल कर सकती थी, क्योंकि नये चुनावोंका समय बिलकुल नज़दीक आ पहुँचा था। चुनावोंकी तारीख भी मुक़र्रर हो चुकी थी और मिल-मालिकोंके प्रतिनिधिका चुनाव तो हो भी चुका था। अितने पर भी ये तमाम क़ानूनी अुपाय ताक़में रखकर अेक सपाटेमें म्युनिसिपेलिटीको बरखास्त करके बम्बअी सरकारने भारत सरकारकी सिफारिशोंका साफ तौर पर अनादर किया है।

स्थानीय स्वराज्य विभागका प्रबन्ध लोकप्रिय मन्त्रीके हाथमें सौंपनेके बाद म्युनिसिपेलिटियाँ अिस तरह बरखास्त हो सकती है, सुधारोंकी असफलताका अिससे

अधिक ज़ोरदार सबूत और क्या हो सकता है? स्थानीय स्वराज्य सम्बन्धी नीतिके बारेमें भारत सरकारके अुपरोक्त प्रस्तावकी जानकारी भी लोकप्रिय मन्त्रीको होगी या नहीं, यह तो राम जाने। परन्तु गादी पर बैठनेके बाद आज तकके अपने अमलमें अुनके हाथसे कोअी भी जानने लायक़ पराक्रम हुआ हो, तो यह पहला ही है। अुनकी नियुक्ति होनेसे पहले पुरानी धारासभाने स्थानीय स्वराज्यके मामलेमें जो सुधार किये थे, अुन पर भी अिन्होंने पानी फेरना शुरू कर दिया है। मि० मार्टिन नामके अेक अधिकारीको स्थानीय स्वराज्यकी संस्थाओंके क़ानूनमें महत्वपूर्ण सुधार सुझाने और अुसका मसौदा तैयार करनेके लिअे मुक़र्रर किया गया था। अुन्होंने जो मसौदा तैयार किया था, वह मन्त्री महोदयके आनेसे पहलेका काम है। अिसलिअे क़ानूनमें सुधार करनेकी बात पर वे ध्यान तक नहीं दे सकते। स्थानीय स्वराज्यकी संस्थाओंकी आमदनी कैसे बढ़ सकती है, अिसके लिअे बम्बअी सरकारने अेक कमेटी नियुक्त करके जाँच करवाअी थी। अुसकी सिफारिशें भी मि० मार्टिनके मसौदेके साथ ही अिन मन्त्री महोदयकी गादीके नीचे दबी पड़ी हैं। अिसलिअे जब तक यह धारासभा और ये मन्त्री महोदय विद्यमान हैं, तब तक स्थानीय स्वराज्यकी संस्थाओंमें स्वतंत्रताकी आशा रखना फिज़ूल है; और यह स्पष्ट है कि जो संस्थाअें स्वतंत्र होनेका प्रयास करेंगी, अुनका नाश करनेका ही काम अुनके हाथों हो सकेगा। अिसे 'सुधार' के नामसे पुकारा जाता है और यह कहने और माननेवाला भी अेक दल हमारे यहाँ अब तक मौजूद है कि अिन सुधारोंकी अधिकाधिक सफलता सिद्ध करके दिखानेमें ही देशका सर्वोपरि श्रेय रहा है। अिससे ज़्यादा दुःख और क्या हो सकता है!

१२

श्रद्धाकी कसौटी

[मार्च, १९२२ में गांधीजीको जब छः वर्षकी सज़ा हुआी, अुस अवसर पर जनतासे की गअी अपील।]

गरीबोंके बेली महात्मा गांधी जेल चले गये। मगर अिससे हमें ज़रा भी निराश नहीं होना चाहिये। वे हमारे लिअे अुत्तराधिकारमें अटूट धन छोड़ गये हैं। अुसका सदुपयोग करना हमारे हाथकी बात है।

अुन्होंने दिसम्बरसे पहले स्वराज्य लेनेके लिअे जीतोड़ मेहनत की, परन्तु अुनकी माँगी हुअी क़ीमत जनताने नहीं चुकाअी। पदवीधारी पदवियोंसे चिपटे रहे। लोगोंको अदालतोंसे न्याय लेना है। विद्यार्थियोंने डिग्रियोंका मोह नहीं छोड़ा। धारासभाअें भर दी गअीं और जिन्होंने अुन्हें छोड़ दिया, अुनमें से भी बहुतोंका अभी तक भीतर ही भीतर मोह नहीं छूटा है। शराब बेचनेवालोंको अपना धन्धा नहीं छोड़ना है। शराबियोंको शराब पीना है। विदेशी कपड़ेके व्यापारियोंको अपना व्यापार जारी रखना है। जनता विदेशी कपड़ेको जलाजलू कर अुसका बहिष्कार करनेको तैयार नहीं है। विवाहके अवसर पर तो रंगबिरंगे विदेशी कपड़े काममें लेकर ही बड़प्पन दिखाना है। स्त्रियोंको बारीक साड़ियोंसे सुशोभित होना है। सिर्फ़ थोड़ेसे लोगोंको अकेली सफेद टोपीसे काम चलाना है। मिल-मालिकोंको विदेशी सूत अिस्तेमाल करके अधिक नफा कमाना है और स्वदेशी आन्दोलनसे मिलके कपड़ेकी खपत होती हो, तो भाव बढ़ाकर पूरा लाभ अुठाना है। पूँजीवालोंको पूँजी बढ़ानी है। किसीको अैशआराम छोड़ना नहीं है। सबको 'महात्मा गांधीकी जय' बोलकर और अुन्हें थोड़ा बहुत रुपया देकर अुनसे स्वराज्य लेना है। अिस तरह स्वराज्य नहीं मिलेगा, यह बात गांधीजीने बार-बार ठोक-बजाकर कही है।

अितने पर भी थोड़ा बहुत जवाब जनताने दिया, अुससे जो जाग्रति हुअी वह आश्चर्यजनक है; और सब यह स्वीकार करते हैं कि सदियोंका काम वर्षमें हो गया है। तो फिर हम निराश क्यों हों? जिस प्रतिष्ठाके बल पर हुकूमत चलती थी, अुस प्रतिष्ठाके नष्ट हो जानेका सरकारको पूरी तरह ज्ञान है और अुसे वापस क़ायम करनेके लिअे वह कमर कसकर सख्तीके अुपाय काममें लेकर आतंक फैलाना चाहती है।

फिर भी जनता अब कहाँ डरती है? स्वराज्यकी आधी मंजिल तय कर लेनेकी यह अेक निशानी है। हमें दिसम्बरसे पहले स्वराज्य नहीं मिला, परंतु

यदि अितना विश्वास हो गया हो कि हम स्वराज्यके रास्ते लग गये हैं, तो हमारे लिअे निराश होनेका कुछ भी कारण नहीं है। सीधे रास्ते चलते हुअे बाकी मंजिल पूरी करके स्वराज्य ले लेना हमारे हाथकी बात रही। अगर हम न ले सकें, तो अुसका दोष हमारे आलस्य या अशक्तिको देना होगा। अिसमें किसीका क्या दोष?

गांधीजी जेल चले गये, तो क्या हुआ! वे तो जेलमें रहकर भी हमारे लिअे कठिन तपस्या करेंगे। परंतु हमें जो कुछ करना है, वह वे बार-बार स्पष्ट और सीधे-सादे शब्दोंमें कह चुके हैं। 'नवजीवन' की फाअिल शान्तिमय असहयोगका पुराण है। अुसमें कोअी अेक भी शब्द नहीं जोड़ सकता।

कुछ लोग कहते हैं कि 'गांधीजी तो चले गये, अब अुनके साथी क्या करेंगे? अुनमें कोअी चरित्रवान या शक्तिशाली व्यक्ति नहीं है, जो अुनकी नावको आगे बढ़ा सके।' यह बात बिल्कुल सच है। अुनके साथी भूलोंसे भरे हुअे हैं। अुनके और अुनके साथियोंके बीच आकाश-पातालका अन्तर है। अुनके साथियोंकी त्रुटियाँ बेशुमार हैं, और अिन साथियोंकी अपूर्णताके कारण ही गांधीजीको कारागृहवास करना पड़ा है। साथियोंकी बोलीमें मिठास नहीं है। अुनमें संयम और सहनशीलताकी कमी है। लेकिन अैसी अनेक खामियोंके होते हुअे भी अच्छाअी यह है कि अुनमें से हरअेकको अपनी त्रुटियोंका पूरी तरह खयाल है।

परंतु जैसे अेक अिमारतको चुननेवाला गज अुसका नक़्शा बनानेवाले अिन्जीनियरके बराबर शक्ति रखनेका दावा तो नहीं करता, लेकिन फिर भी अुस नक़्शेके अनुसार अिमारत पूरी करनेमें कठिनाअी नहीं महसूस करता, वैसे ही गांधीजीके अनुयायी अगर अुनकी तैयार की हुअी स्वराज्यकी अिमारतकी योजना बराबर समझ गये होंगे, तो अुन्हें अुसके अनुसार अिमारतका काम जारी रखनेमें परेशानी नहीं होगी।

अुनकी मुश्किलोंका तो पार ही नहीं है। अुनकी त्रुटियोंको ढाँकनेवाला अब कोअी नहीं रहा। फिर भी जनताका गांधीजीके प्रति प्रेम, अुनके जेल जानेसे लोगोंके दुखे हुअे दिल, और स्वराज्यकी जाग्रत हुअी भावना, यह अुनकी सबसे बड़ी पूँजी है। अगर वे गांधीजीकी अहिंसा वृत्ति, अुनके प्रेम, अुनकी ममता, अुनकी स्वराज्यकी लगन और अुनके परिश्रमको अपनी नज़रके सामने रख कर दिन-रात परिश्रम करेंगे और गांधीजीका तैयार करके दिया हुआ स्वराज्यका चतुर्मुखी कार्यक्रम पूरा करेंगे, तो वे अपनी सारी कमियोंको पार करके गांधीजीके नामको और अपनी वफ़ादारीको चमकायेंगे, अिसमें सन्देह नहीं।

१३

गोपालदासभाअी

[श्री दरबार साहबका तालुका सरकारने जब्त किया, अुस अवसर पर ता० ३०-७-१९२२ के 'नवजीवन' में लिखा हुआ लेख।]

चरोतरके पाटीदार अपनी अिनामी ज़मीनको प्राणोंसे भी प्यारी समझते हैं। 'ज़मीन जाय तब जातका क्या जतन?' यह अिस क़ौममें मामूली कहावत है। ज़मीनके अेक टुकड़ेके लिअे कितने ही पाटीदारोंने अपने प्राण तक दे दिये हैं और फाँसीके तख्ते पर लटक गये हैं। सरकारकी अदालतों और दफ्तरोंका मुख्य भोजन ज़मीनके झगड़े ही हैं। अिस प्रकार ज़मीनके लिअे बरबाद हो जानेवाली पाटीदार जातिके शिरोमणि भाअी गोपालदासने धर्मके खातिर आज अपनी तीस हज़ारसे अूपर वार्षिक आयकी अिनामी जागीरको लात मार दी है।

गोपालदासभाअी काठियावाड़के ढसा गाँवके दरबार और रायसाँकलीके तालुकेदार हैं। अुन्हें राजकुमार कॉलेजमें शिक्षा पानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। पोलिटिकल अेजेन्टकी मुलाकात, गवर्नर साहबके दरबार और अैसे दूसरे अवसरों पर कैसी पोशाक पहनें, कैसे बोलें-चालें, अिसके सिवाय शिकार खेलने, विदेशियोंकि खाने-पीनेकी नक़ल करने, खुशामद करने वगैराकी आजकलके दरबारोंको शोभा देनेवाली शिक्षा प्राप्त करनेके अुन्हें अनेक अवसर मिले। परन्तु पूर्वजन्मके संस्कारोंके प्रतापसे अिस शिक्षाकी जालमें वे ज़रा भी नहीं फँसे।

जब बंबअीके गवर्नर साहब काठियावाड़में पिछली बार गये, तब गोपालदास भाअी खेड़ा जिलेमें चलनेवाली स्वराज्यकी लड़ाअीमें पूज्य अब्बास साहबकी सरदारीमें अेक सैनिककी हैसियतसे शरीक हुअे थे। वहाँ अुन्हें काठियावाड़के पोलिटिकल अेजेन्टका गवर्नर साहबके पधारने पर अुनका स्वागत करनेके लिअे काठियावाड़ आनेका हुक्म मिला। अुन्होंने अपने सेनापतिका हुक्म मानकर अेजेन्ट साहबकी आज्ञाका आदरपूर्वक अनादर किया। अिससे अुनके दीवानी और फ़ौजदारी दोनों अधिकार छीन लिये गये और बंबअी सरकारने अुनके विरुद्ध आखिरी हुक्म देनेसे पहले अुन्हें असहयोग आन्दोलनसे अलग हो जाने और गवर्नर साहबके पधारनेके समय गैरहाज़िर रहनेसे अुनका जो अपमान हुआ था, अुसके लिअे गवर्नर साहबसे माफ़ी माँगनेका मौका दिया। गोपालदासभाअीने अत्यन्त सभ्यता, परन्तु हिम्मतके साथ माफी माँगनेसे अिनकार कर दिया और यह कहा कि हरअेक हिन्दुस्तानीका असहयोगकी लड़ाअीमें यथाशक्ति भाग लेनेका

धार्मिक कर्तव्य है। अिसके परिणामस्वरूप ढसा और रायसाँकलीमें ता० १७-७-'२२ को सरकारकी जब्ती शुरू हो गअी। और दूसरी तरफ़ अुसी समय अुमी मैदानमें गाँवकी कन्याअें अिस घटनाका वर्णन करनेवाला गरबा गीत गाने लगीं। थानेदारने गाँवमें जगह-जगह विज्ञापन चिपकाकर जब्तीका बन्दोबस्त शुरू हो जानेकी घोषणा की और हरअेकसे कहने लगा कि आजसे मैं तुम्हारा दरबार हूँ।

गोपालदासभाअीकी रैयत अुन्हें देवताकी तरह पूजती है। अुन्होंने अपनी रैयतको प्रेमसे जीत लिया है। थानेदारके बरतावसे प्रजा भड़क गअी। सौभाग्यसे दरबार वहाँ मौजूद थे। अुन्होंने लोगोंको शान्त किया। अुस गाँवकी पाठशालाअें अेजेन्सीके प्रबन्धमें होनेके कारण बच्चोंने तमाम पाठशालाअे छोड़ दी हैं। खानगी स्कूल खोलनेका प्रबन्ध हो रहा है। जब्ती हो जानेके बादसे वहाँके लोगोंने अस्पृश्यताका त्याग करने और शुद्ध स्वदेशी व्रतका पालन करनेका निश्चय किया है।

सरकारने तालुका ज़ब्त कर लिया, मगर गोपालदासभाअीने लोगोंके दिल ज़ब्त कर लिये हैं। अुनपर सरकारकी ज़ब्ती नहीं बैठ सकती। मगर यह मामला यहीं खतम नहीं होगा। अिस प्रेमी प्रजा पर जब्तीके शासनमें तरह-तरहके दुःख पड़ना सम्भव है। और अिसी मौके पर अुनके प्रेमकी परीक्षा होनेका समय आनेवाला है।

गोपालदासभाअी राजपाट छोड़कर, गुजरातके गाँवोंमें सूखी रोटी खाकर और पैदल चलकर जनताकी सेवा कर रहे हैं। अिस कलिकालमें अैसे बहुत मिलेंगे, जो कहेंगे कि अुन्होंने मूर्खता की। धर्मको ताकमें रखकर अनेक प्रकारकी अनीतिसे धन अिकट्ठा करनेके ज़मानेमें हक़से मिली हुअी जायदादको धर्मकी खातिर गंवा देनेवालेको मूर्ख कहनेवाले मिलें, तो अिसमें क्या आश्चर्य है? परन्तु अब देह और द्रव्यको बचाकर धर्म पालनेका युग खतम होने आया है। मुझे विश्वास है कि भाअी गोपालदासका त्याग गुजरातके अितिहासमें सुनहरी अक्षरोंमें लिखा जायगा। हज़ारों युवकोंके जीवन पर अुनके त्यागका असर पड़ेगा। अिस धर्मयुद्धमें अुनके जैसे साथी मिलनेका सौभाग्य प्राप्त होने पर मुझे गर्व होता है।

१४

अेक अेक लड़का दीजिये

[ता० १-१२-१९२२ को गुजरातमें विदेशी कपड़ोंकी दुकानों पर धरना देनेका निश्चय हुआ। अिस अवसर पर स्वयंसेवकोंके लिअे की हुअी अपील।]

साम्राज्यके स्तंभ-स्वरूप पंजाबके बहादुर अकालियोंने अहिंसा और आत्म-त्यागका आदर्श यज्ञ आरम्भ कर दिया है। संकटके अनेक अवसरों पर साम्राज्यकी सेवा करते हुअे अपनी जान जोखममें डालकर अलग-अलग रणक्षेत्रोंमें दुश्मनकी तलवारके घाव झेलनेके चिन्ह जिनके शरीर पर मौजूद हैं, और जिनके सीने पर सेवाकी कदरके रूपमें साम्राज्यकी तरफ़से मिले हुअे तमगे लटक रहे हैं, अैसे पंजाबके पहलवान अकालियोंने कमरमें कृपाण पड़ी होने पर भी अिसी सरकारके अधिकारियोंके हुक्मसे पुलिसके सिपाहियोंकी लाठीके प्रहार चुपचाप सहन किये। शस्त्रबलका अुपयोग कायरों पर ही काम दे सकता है, यह अनुभव होने पर सरकारने मारपीट करना छोड़ दिया है और आखिरमें जेलखानों पर ही आधार रखना पसन्द किया है।

पंजाबकी सरकारको नये जेलखाने बसाने पड़े हैं। पाँच हज़ारसे अूपर अकाली जेल जा चुके हैं। अेक तरफ हररोज़ अेक सौ अकालियोंका जत्था कैद होता है और दूसरी तरफ जेल जानेवाले सिपाहियोंकी भरती हो रही है। अकाली मात्र खादीके सिवाय और कुछ नहीं पहनते। अिस धर्मयुद्धमें अकाली बहनें अपूर्व साहस और अुत्साह दिखा रही हैं। पुलिसकी मारसे घायल होनेवाले बहुसंख्यक अकालियोंकी देखभालके लिअे अेक अस्पताल खोला गया है। अुनकी देखभालका काम अकाली बहनें करती हैं। भरतीकी छावनीमें पड़े हुअे सैकड़ों अकालियोंको रसोअी बनाकर खिलाने और बीमारोंकी सेवा करनेका काम अकाली बहनोंने अपने हाथमें ले लिया है। अिस काममें भी फ़ौजी तालीम और व्यवस्था पाअी जाती है। अकाली बहनें भी सिर्फ़ खादी ही पहनती हैं। पंजाबमें जब अैसा धर्मयज्ञ हो रहा है कि अुसे देखनेके लिअे देवता भी आकाशसे अुतर आयें, तब सारे हिन्दुस्तानमें अपूर्व शांति छा गअी है। जो महान यज्ञ करनेका सौभाग्य बारडोलीको नहीं मिला, वह आज महात्माजीके जेलमें होनेके समय अकालियोंको प्राप्त हुआ है। अुन्होंने अहिंसाकी हँसी अुड़ानेवालों और 'असहयोग मर गया' का शोर मचानेवालोंका मुँह बन्द कर दिया है।

गुजरातकी अहिंसात्मक असहयोग पर अकालियोंसे कम श्रद्धा तो हरगिज़ नहीं होगी। गुजरात अिस सिद्धान्तको जन्म देनेवाला है। 'अहिंसा परमो धर्मः' जैनधर्मकी जड़ है। गुजरात जैनधर्मका मुख्य केन्द्र है। वहाँ अहिंसाके बारेमें भारी श्रद्धा होना स्वाभाविक है। परन्तु अकालियों जैसी हिम्मत और बहादुरी, अुनके जैसी सहन करनेकी और कुरबानी देनेकी शक्ति, अुनके जैसी अेकता और अुनके जैसी तालीम क्या गुजरातमें है? अकालियोंमें अपने धर्मके लिअे जो लगन है, वैसी क्या गुजरातियों या गुजरातके जैनोंमें अपने धर्मके लिअे है? अिसके जवाबमें यह कहनेसे गुजरातकी अिज्जत कहाँ तक बचेगी कि 'चौरीचौरा बीचमें न आया होता, तो बारडोली दिखा देता'? विदेशी कपड़ेका व्यापार ज्यादातर अहिंसाकी पुजारी जैन जातिके हाथमें ही है, यह बात दुनियासे कहाँ तक छिपी रहेगी? पंजाब खादीमय बन जाय, तो भी गांधीजीके गुजरातमें विदेशी कपड़ेका मोह न छूटे, अिस बात पर परदा डालनेसे कब तक काम चलेगा? जितना घरमें है अुतना पहन फाड़ेंगे और अब नया नहीं लायेंगे, यह कहनेवाले गुजरातियोंके घरमें आज गांधीजीको जेल गये आठ महीने हो जाने पर भी विदेशी कपड़ा खतम नहीं होता और खादीका प्रवेश नहीं होता, अिसका क्या कारण है? विदेशी कपड़ेकी अेक भी दुकान अुठ गअी नहीं मालूम होती, अिसका क्या कारण है?

यह कहनेसे गुजरातका काम पूरा नहीं हो जाता कि 'गुजरात धारासभाके बहिष्कारमें दृढ़ है और अिस विषयमें गुजरातमें दो मत नहीं है'। गांधीजीको पहचाननेवाले गुजराती धारासभामें जानेकी बात न करें, अिसमें क्या आश्चर्य है? मगर अितनेसे ही गुजरातकी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं हो जाती।

गांधीजीके पीछे पागल होनेवाले, अुनकी मौजूदगीमें अुनकी जय बोलनेवाले गुजरातियो! तुम जाग्रत हो जाओ। गुजरातकी लाज रखनी हो तो आलस्य छोड़ दो। नहीं तो समय चला जायगा और बात रह जायगी कि जिसे दुनियाने पहचाना, अुस महात्मा गांधीको अेक गुजरातने नहीं पहिचाना। गुजरात और काठियावाड़के लिअे सच्ची लगन रखनेवाले नौजवानोंको गांधीजीके जेलसे छूटने तक सिर्फ देशसेवाका ही काम करनेकी प्रतिज्ञा लेनी चाहिये। गुजरातको महात्माजीके कार्यक्रममें श्रद्धा है, गुजरातके पास रुपया है, व्यवस्था शक्ति है और विवेक है। मगर गुजरातके पास काम करनेवालों यानी स्वयंसेवकोंकी कमी है। जिन्हें देशकी लगन हो, अुन तमाम गुजरातियोंको अपना अेक-अेक लड़का देश-सेवाके काममें दे देना चाहिये।

गुजरात प्रान्तीय समितिने अभी तो गुजरातसे फक्त ढाअी हज़ार स्वयंसेवक माँगे हैं। ता० १-१२-'२२ से गुजरातमें विदेशी कपड़ेकी दुकानों पर धरना देनेका काम शुरू करना है। अिस कामके लिअे अगर गुजरातसे ढाअी हज़ार

स्वयंसेवक नहीं मिले, तो गुजरातमें देशसेवाकी कितनी लगन है, अिसका अन्दाज़ अपने आप लग जायगा।

अिस कामके लिअे गुजरात, काठियावाड़ और कच्छके किसी भी भागसे स्वयंसेवक लिये जायँगे। बाहरसे आनेवाले स्वयंसेवकोंके लिअे अनुकूल स्थान पर छावनी डालकर अुनके भोजन वगैराका बन्दोबस्त किया जायगा। जिसे स्वयंसेवक बननेकी अिच्छा हो, वह गुजरात प्रान्तीय समितिसे प्रतिज्ञापत्र मँगवाकर व भरकर भेज दे।

नवजीवन, १९-११-१९२२

१८
गया कांग्रेसमें भाषण

[गयामें हुअे कांग्रेसके ३७ वें अधिवेशनमें ता० २६-१२-१९२२ को दिया हुआ भाषण।]

मैं कोअी नेता नहीं हूँ। मैं तो अेक सिपाही हूँ। मैं किसानका बेटा हूँ और यह नहीं मानता कि ज़बानी जमाखर्चसे स्वराज्य मिल जायगा। बदमाशीमें हम सरकारका मुक़ाबला नहीं कर सकते। धारासभामें अड़ंगे डालनेवालोंमें से किसीको सरकारने जेलमें बन्द नहीं किया, परन्तु धारासभाका बहिष्कार करनेवाले महात्माजीको क़ैदमें डाल दिया। अहिंसाके सामने, रिआयतोंसे अिनकारके सामने और सहन करनेकी शक्तिके सामने सरकार थक गअी है। हम धारासभाओंके आन्दोलनमें पड़ेंगे, तो लोग और भी ठण्डे पड़ जायँगे और कांग्रेस जनताका विश्वास खो बैठेगी। धारासभाओंका आन्दोलन कांग्रेसके लिअे विनाशकारी हो जायगा। कांग्रेसने असहयोग घोषित किया, अुसके बाद अुसमें किसान शामिल हुअे हैं, मज़दूर भरती हुअे हैं और स्त्रियाँ भाग लेने लगी हैं। क्योंकि अिसमें अुनके लिअे काम करने और त्याग करनेका क्षेत्र है। सुधारोंके होनेसे पहले सरकार जानती थी कि अुसे कैसे आदमियोंके साथ काम करना है। माननीय पटेल अिसके लिअे अिंग्लैंड गये थे। अुनकी शक्तिको सरकार जानती थी, अिसलिअे अुसीके अनुसार सुधार तैयार किये। परन्तु धारासभाओंका अैसा आन्दोलन सौ वर्ष चलायें, तो भी स्वराज्य नहीं मिलेगा।

नवजीवन, २७-१२-१९२२

१६

श्रद्धा सहित शक्ति

[जब गांधीजी जेलमें थे, अुस समय कांग्रेसने देशको व्यक्तिगत सविनयभंगके लिअे तैयार करनेका प्रस्ताव स्वीकृत किया था। अुस विषयमें लिखा गया लेख।]

गयाकी कांग्रेसमें लोगोंकी श्रद्धाकी परीक्षा हो गअी। कांग्रेसके कार्यक्रममें परिवर्तन करनेके तमाम प्रयत्न विफल हुअे। महत्त्वका परिवर्तन धारासभाओंका बहिष्कार छोड़ देनेके बारेमें था। कांग्रेसके अध्यक्ष देशबन्धु दासने अिस तबदीली की हिमायत की थी। पंडित मोतीलालजी और हकीम साहब जैसे महान नेताओंने अपना सारा ज़ोर आज़माया। फिर भी धारासभाओंके बहिष्कारको छोड़ने या कुछ ढीला करनेसे प्रतिनिधियोंने बहुमतसे साफ़ अिनकार कर दिया। अितना ही नहीं, बल्कि धारासभाका बहिष्कार और भी ज़ोरदार बनानेकी सिफारिश की।

विषय निर्वाचन समितिमें ब्रिटिश मालके बहिष्कारका प्रस्ताव थोड़े बहुमतसे पास हो गया था, अुसे भी कांग्रेसके अधिवेशनमें प्रतिनिधियोंने रद्द कर दिया।

अिस प्रकार कांग्रेसने वर्तमान कार्यक्रममें जनताका खूब विश्वास होनेका प्रमाण दे दिया। लेकिन अकेली श्रद्धासे क्या होता है? शक्तिके बिना श्रद्धा बेकार है। किसी भी महान कार्यको पार लगानेमें श्रद्धा और शक्ति दोनोंकी ज़रूरत है। कांग्रेसने जनताकी श्रद्धाका सबूत दे दिया और साथ ही शक्तिका परिचय देनेकी जनतासे मॉंग की है। अिस मॉंगके जवाबमें जनताकी श्रद्धाकी भी सच्ची परीक्षा समाअी हुअी है। अगर जनताकी श्रद्धा विचारहीन न हो, अगर वह अंधश्रद्धा न हो, तो कितनी ही मुश्किलें होने और नेताओंका मतभेद होने पर भी जनता कांग्रेसकी मॉंगका पूरी तरह जवाब देगी।

कांग्रेसने बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत सविनयभंगके लिअे तेज़ीसे तैयार होनेकी मॉंग की है। अगले अप्रैलके अंत तक कांग्रेसकी संस्थाओंको मज़बूत बनाकर और पच्चीस लाख रुपये व पचास हज़ार स्वयंसेवक जुटा कर यह सबूत देनेकी मॉंग की गअी है कि देश व्यक्तिगत सविनयभंगके लिअे तैयार है। अितनी तैयारी हो जाय, तो दुबारा बलिदानका महायज्ञ शुरू हो जाय। जिन्हें कांग्रेसके मौजूदा कार्यक्रममें विश्वास है, अुनका धर्म है कि वे अिस प्रस्तावको सफल बनानेके लिअे पूरी मेहनत करें।

धारासभाओंके विषय पर अभी चर्चा जारी रहेगी; संभव है कि अब और भी ज़ोरसे चले। नेताओंने अिस बारेमें लोकमत तैयार करने और लोगोंको

अपने पक्षमें खींचनेका निश्चय किया है। असी स्थितिमें अगर दोनों पक्ष अिस विषयकी चर्चा करनेमें ही लग जायँ या अेक दूसरेके कार्यको नष्ट करनेमें अपनी बुद्धि और शक्तिका अुपयोग करें, तो यह देशका दुर्भाग्य ही होगा।

जिनका धारासभाओंमें विश्वास नहीं, अुन्हें अब अिस चर्चामें पड़ना छोड़ देना चाहिये। अिस विषय पर जरूरतसे ज्यादा चर्चा हो चुकी है। अिस सवालके लिअे देशकी अमूल्य शक्ति और बुद्धि खूब खर्च की गअी है। अब जिन्हें अिसमें दिलचस्पी हो, अुन्हें यह काम करने देकर दूसरोंको अपने काममें लग जाना चाहिये। धारासभाओंकी चर्चा बन्द करनेका सबसे अच्छा अुपाय तो ठोस काम ही है। ज्यों ज्यों कांग्रेसके प्रस्तावको अमलमें लानेका प्रमाण मिलता जायगा, त्यों त्यों यह चर्चा कमजोर पड़ती जायगी।

नवजीवन, १४–१–१९२३

१७

केसरिया बाना या विचारहीनता ?

[सरदार जब गुजरात विद्यापीठके चन्देके लिअे गुजरातसे बाहर गये हुअे थे, अुस वक्त भड़ौंच जिला राजनैतिक परिषद्में सविनयभंग करनेका प्रस्ताव पास किया गया था। अुस परसे गुजरातके कार्यकर्ताओंको दी हुअी चेतावनी।]

मैं लगभग छः सप्ताहसे गुजरातके बाहर घूम रहा था। बंबअी, कलकत्ता, झरिया और ब्रह्मदेशमें रंगून, मोलमीन और मांडले वगैरा स्थानोंका कांग्रेसके प्रतिनिधि मंडलके साथ दौरा कर आया। अिस अरसेमें मैं गुजरातमें बड़ा परिवर्तन हुआ देख रहा हूँ। गुजरातकी जनतामें कोअी नअी जाग्रति आ गअी हो अैसा तो मैं नहीं देखता, मगर मैं यह देख रहा हूँ कि गुजरातके कार्यकर्ता जेल जानेको अधीर हो गये हैं। महात्माजीको जेल गये अेक वर्ष और अेक मास हो जानेके बाद भी कौन अैसा अभागा होगा, जिसे जेलके बाहर चैन पड़े! काका साहबके पकड़े जानेके बाद तो कुछ लोग खूब अधीर और अुतावले हो गये थे। कुछ लोग तो सार्वजनिक सभायें करके अुन लेखोंको प्रकाशित करनेकी सूचना प्रान्तीय समितिके सामने लाये, जिन्हें लिखनेके लिअे काका साहबको पकड़ा गया। अुन्हें जैसे तैसे समझाया गया। मगर बादमें भाअी अिन्दुलाल गिरफ़्तार कर लिये गये। अिसलिअे अैसा मालूम होता है कि गुजरातके ज्यादातर कार्यकर्ताओंका विचार केसरिया बाना पहन लेनेका हो गया है।

पिछले सप्ताह आमोद नामके स्थान पर भड़ौंच जिलेकी परिषद् हुअी। अुस परिषदमें महादेवभाअीने सभापति-पदसे जो विचार प्रगट किये हैं, वे मैंने कल ही यहाँ आनेके बाद पढ़े। अुस परिषदमें पास हुआ क़ानूनका सविनयभंग (व्यक्तिगत) करनेका प्रस्ताव भी देखा। प्रान्तीय समितिके दफ़्तरमें नमक क़ानूनके विरुद्ध सविनयभंग करनेकी कुछ सूचनाअें आअी हैं, वे भी देखीं। अिन सब बातोंसे गुजरातके कार्यकर्ताओंके दिलका दर्द मैं देख रहा हूँ और बहुत परेशान हूँ। अिसमें कोअी शक नहीं कि गुजरातके कार्यकर्ताओंके दिलमें जितनी बेचैनी हुअी है, अुतनी गुजरातके लोगोंमें तो हरगिज़ नहीं हुअी है। कारण कुछ भी हो, या तो लोगोंको हमारी बात पसंद न हो या हमारी कार्यपद्धतिमें कुछ खामी हो। परन्तु यह बात निश्चित है कि काका साहबके जेल चले जानेके बाद अुनकी जगह लेनेवाला नया कार्यकर्ता हमने नहीं जुटाया। अिन्दुलालभाअीकी जगह भी खाली ही है। अगर अिस तरह अेकके बाद अेक या अेक साथ हम सब कार्यकर्ताओंको जेलमें जा बैठना हो, तो जानेसे पहले पीछेकी व्यवस्थाका विचार करना हमारा धर्म है।

आमोदकी परिषदमें सबके सविनयभंगका निश्चय करनेकी बात जब मैंने सुनी, तब मैं बहुत खुश हुआ। मैंने मान लिया कि गुजरातके हिस्सेमें आये हुअे तीन हज़ार स्वयंसेवक तो अुस परिषदमें ही तैयार हो गये होंगे। परिषदमें हाथ अुठानेवालोंने अपना फ़र्ज़ समझा होता, तो वहीं गुजरातका हिस्सा पूरा हो जाता। लेकिन जब मुझे मालूम हुआ कि भाअी अिन्दुलाल जेल जानेसे पहले जितने स्वयंसेवक जुटा गये हैं, अुनमें अेक भी नहीं बचा है, तब मैं हक्का बक्का रह गया। बंबअीके तमाम प्रतिनिधियोंने गयाजीमें कांग्रेसके कार्यक्रमके पक्षमें मत दिये थे। लेकिन आज अुस कार्यक्रमको पूरा करनेके लिअे कौन काम कर रहा है?

हममें से कुछ लोग यह मानते हैं कि अेक बार लड़ाअी शुरू कर देनेके बाद स्वयंसेवक और रुपया मिल जायगा। सिर्फ़ अैसे भरोसे पर ही बड़े जोखमका काम हाथमें ले लेनेमें विचारहीनता मालूम होती है।

जब तक हमारी समझमें यह बात नहीं आयेगी कि देशकी मुक्तिका आधार बारडोलीके रचनात्मक कार्यक्रम पर ही है, तब तक हम गोते ही खाते रहेंगे। गयाजीके प्रस्तावके अनुसार सविनयभंगकी तैयारी पूरी करनेका समय तो पूरा नहीं हुआ। अुससे पहले यह काम अब नहीं हो सकता, यह मानते हुअे अुसे यहीं छोड़कर सविनयभंगके लिअे जल्दबाज़ी करना केसरिया बाना पहनना नहीं, बल्कि विचारहीनता है। खादी-विभाग, शिक्षा और अछूतोंकी संस्थाओंमें काम करनेवालोंने भी स्वयंसेवकोंके प्रतिज्ञापत्र भरे हैं। अुन्हें भी जेल जानेकी

अुतावल हो रही है। मेरे खयालसे अिन भाअियोंने पूरा विचार नहीं किया। रचनात्मक काममें लगे हुअे अेक भी कार्यकर्ताको जेल जाने देनेकी बातसे मैं खुश नहीं हूँ। मेरा खयाल है कि अिससे गुजरातको बेहद नुकसान होगा। रचनात्मक काम करनेवालेको जेल जाना हो, तो या तो वह अपनी जगह काम करनेवाला ढूँढ़ दे, या अुस कामको अितना जोरसे करे कि सरकारको अुसे पकड़ना ही पड़े। जेल तो मेरे जैसे आवारा आदमियोंके लिअे या जिन्हें रचनात्मक कार्यक्रममें विश्वास न हो, अुनके लिअे है। अैसे स्वयंसेवकोंके लिअे जेलका दरवाज़ा अप्रैल खतम होनेके बाद खोल देनेमें कोअी अड़चन नहीं होगी। परन्तु अिसमें भी व्यवस्थाकी ज़रूरत तो होगी ही।

गुजरातका कोअी भी कार्यकर्ता अपनी जगह न छोड़े। मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि जब तक प्रांतीय समिति अिजाज़त न दे दे, तब तक कोअी जेलमें जानेकी कोशिश न करे।

नवजीवन, २२-४-१९२३

१८

शांत विचारकी ज़रूरत

[‘केसरिया बाना या विचारहीनता’ की पूर्तिमें लिखा गया लेख।]

सविनयभंगके सम्बन्धमें पिछले अंकमें मेरे विचार प्रकट होनेसे गुजरातमें खूब चर्चा शुरू हो गअी है। कुछ लोगोंको ये विचार पसन्द आये हैं और कुछको नापसन्द हुअे हैं। अिस सम्बन्धमें दोनों विचारवाले खूब स्वतन्त्रतासे चर्चा करें यह वांछनीय है। मेरे खयालसे जिस तरह जबलपुर या नागपुरमें मध्य-प्रान्तकी सरकारने सविनयभंग करनेके लिअे मजबूर कर दिया, अुसी तरह अगर बम्बअी सरकारकी तरफ़से हमें भी मजबूर न कर दिया जाय, तो बम्बअीमें मअी महीनेमें होनेवाले कांग्रेसके अधिवेशन तक हमें प्रतीक्षा करनी चाहिये।

सविनयभंगकी तैयारी करनेका प्रस्ताव कांग्रेसने किया था। अिसके लिअे सारे देशसे पच्चीस लाख रुपया और पचास हज़ार स्वयंसेवक जुटाने और प्रान्तवार अुसकी जिम्मेदारी बाँट देनेका प्रस्ताव भी कांग्रेसका है। अिस प्रस्तावकी अवधि

पूरी हो गअी। निश्चित अवधिके भीतर हरअेक प्रांतकी कितनी तैयारी हुअी है, अिसका हिसाब माँगा गया है। कुछ प्रांतोंमें तो अिस प्रस्ताव पर अमल करना असंभव हो गया है। सविनयभंगकी तैयारीके प्रस्तावके लिअे गयाजीमें पंजाब सबसे ज्यादा आतुर था। लेकिन आज वहाँ कांग्रेसकी संस्थाअें बिलकुल सोअी हुअी हैं। संयुक्त प्रान्तमें भी अिस प्रस्तावको थोड़ा ही सम्मान मिलेगा। दिल्लीमें भी अुस पर अमल होना सम्भव नहीं। बम्बअीमें तो मेरा खयाल है कि किसीको कोअी परवाह ही नहीं है। अुत्तर हिन्दुस्तानमें हिन्दू-मुसलमान सरकारके साथ लड़-लड़कर अूब गअे हैं। अिसलिअे अब आपसमें साम्प्रदायिक झगड़े खड़े करके अेक दूसरेके सिर फोड़नेकी अुनके जीमें आ रही है। कुछ लोगोंका खयाल था कि महात्माजीकी अहिंसाके प्रचारसे देशमें नामर्दी आ गअी; और देशमें छाअी हुअी शान्तिसे घबराये हुअे कुछ नेताओंको तो सारे देशमें अेक बार नफ़रतके यानी ज़हरीले वातावरणकी ज़रूरत थी। अब अुनके कलेजे ठंडे हुअे होंगे। हिन्दू-मुसलमान अब अहिंसा छोड़कर अेक दूसरेके सिर फोड़कर और दुकानें लूटकर मर्दानगी बता रहे हैं। अुत्तर हिन्दुस्तानके अच्छे वातावरणमें अब हलाहल ज़हर फैल गया है। अिसमें दोनों पक्षके अखबार अपना-अपना हिस्सा ले रहे हैं। दोनों पक्षके धनवान रुपयेसे मदद दे रहे हैं। सारे देशकी हवामें ज़हर फैलानेका प्रयास हो रहा है। अैसे समय जिन प्रान्तोंने थोड़ी बहुत तैयारी की है, वे सब अपनी अिच्छानुसार सविनयभंग शुरू कर दें, यह तो अनुचित ही होगा। मेरे खयालसे अैसी हालतमें तो तमाम देशकी स्थितिका संपूर्ण विचार करने और हरअेक प्रान्तकी तैयारीका हिसाब देख लेनेके बाद अंतिम निर्णय करनेका अवसर कांग्रेस महासमितिको ही देना चाहिये। थोड़ीसी तैयारीसे हरअेक प्रान्तमें अेक ही समय हमला शुरू करनेके बजाय जिस प्रान्तमें सरकारने खुद ही कारण पैदा करके लड़ाअी छेड़ना अनिवार्य कर दिया है, अुस प्रान्तकी लड़ाअीको व्यवस्थित करके अुसे मदद देना ज्यादा समझदारीका काम होगा। गुजरात अपने स्वयंसेवकोंके दल ज़रूरत पड़ने पर नागपुर या जबलपुर भेजनेको तैयार रहे और यथाशक्ति रुपयेसे सहायता करे, और दूसरे प्रान्त भी अपना हिस्सा दें, तो यह लड़ाअी सुशोभित हो जाय। व्यक्तिगत सविनयभंग भी हमें प्रान्तीय समिति जैसी संस्थासे करवाना हो, तो पूरी तरह विचार करके ही करना चाहिये। हम सविनयभंग शुरू करें, तो भी अैसा वातावरण तो हरगिज़ पैदा नहीं होना चाहिये कि जिससे रचनात्मक काम करनेवाले लोग बाहर रह ही न सकें। कुछ लोग कहते हैं कि अब हम बाहर नहीं रह सकते। अुन्हें मैं यथाशक्ति समझाना चाहता हूँ कि कुछको तो बाहर रहना ही पड़ेगा। और वे शांतिसे बाहर रह सकें, अिसकी सुविधा हमें कर ही देनी चाहिये।

स्वयंसेवकोंको भी सविनयभंगका अुद्देश्य और परिणाम समझाना पड़ेगा। हमें यह निश्चित रूपसे समझ लेना ज़रूरी है कि वर्तमान परिस्थितिमें सविनय-भंगसे सरकार पर कुछ भी असर नहीं पड़ेगा और हम कोअी परिणाम नहीं ला सकेंगे। हममें त्याग और दुःख सहन करनेकी जो भावना प्रगट हुअी है, सिर्फ़ अुसे नष्ट न होने देनेके लिअे ही मर्यादित सविनयभंग शुरू किया जा सकता है। हम जो कुछ करें अुससे स्वयंसेवकों और जनतामें बड़ी-बड़ी आशाअें बाँधी जाती हों, तो भी हमें सबको खुले तौर पर समझानेकी ज़रूरत है, ताकि बादमें अुन्हें नाअुम्मीदी न हो। हमारा रचनात्मक काम जारी रहे और हममें से कुछके जेल जानेसे अुस कामका वेग बढ़े, तो ही सविनयभंगका अुपयोग है। अगर कोअी यह मानता हो कि चूंकि बाहर हमसे कुछ नहीं हो सकता अिसलिअे जेलमें जा बैठें, तो यह सरासर भूल है। जनताकी सच्ची और शुद्ध सेवा करनेका हमारा अिरादा होगा, तो वह हमें छोड़नेवाली नहीं है। सिर्फ़ हमें अपने कामका ढंग बदलना पड़ेगा। हमारी लड़ाअी लम्बी हो गअी है। अुतावले अुत्साहसे बड़ा परिणाम निकालनेकी आशा न रखनी चाहिये। अुत्साहमें आये हुअे कार्यकर्ताओंका अुत्साह मंद पड़ने पर वह भाररूप बन सकता है। अिसलिअे अिस विषयके बारेमें हर तरफ़से पूरा विचार करके निश्चय करना चाहिये। तारीख १५ मअीको भड़ौंचमें गुजरात प्रान्तीय समितिकी बैठक होगी। अुस अवसर पर अिस विषयका और अिस सम्बन्धमें आअी हुअी तमाम सूचनाओंका निर्णय किया जायगा। जिन्होंने प्रतिज्ञा-पत्रों पर हस्ताक्षर किये हैं, वे सब अिस विषय पर खूब विचार करें।

नवजीवन, २९-४-१९२३

१९

कांग्रेसकी प्रतिष्ठा

[श्री विट्ठलभाओी पटेल ने धारासभाओंका बहिष्कार छोड़ देनेके लिअे वातावरण तैयार करना शुरू किया, अुसके जवाबमें लिखा गया लेख ।]

मद्रासमें दास बाबूने अुतावलीमें काम बिगाड़ दिया। महात्मा गांधी पर गंभीर आरोप लगाये। बम्बअीमें पिछली गांधी जयन्तीके दिन मांडवीमें हुअी सार्वजनिक सभामें स्वराज दलके अेक नेता श्री विट्ठलभाओी पटेलने अिन आक्षेपों पर अपना ज़ोरदार अेतराज ज़ाहिर करते हुअे कहा : 'जब अेक हज़ार दास महात्मा गांधीकी अेक अंगुलीके बराबर नहीं हैं, तो अुन्हें यह कहनेका क्या अधिकार है कि गांधीजीने भूल की। वाअिसरॉय साहबने समझौतेकी जो शर्तें पेश की थीं, अुन्हें मंजूर न करके गांधीजीने गंभीर भूल की, यह आज जेलसे छूटनेके आठ महीने बाद कहनेका क्या अर्थ है?' श्री विट्ठलभाओी जैसे दास बाबूके अनुयायीको अिसका अर्थ समझना कठिन हो रहा है, यह आश्चर्यकी बात है। अिसका अर्थ बहुत आसान है। दास बाबू जबसे आये हैं, तबसे लोकमतको अपने विचारोंकी तरफ घसीट लानेके लिअे जितने कोड़े जनता सह सकती है, अुतने लगाते रहे हैं। जेलसे छूटनेके बाद कुछ समय तक अुन्होंने धारासभाके प्रश्नके बारेमें मौन धारण किया। कुछ लोगोंको वहम हुआ कि श्री अरविन्द घोषकी तरह वे कहीं अेकांतमें जाकर बैठ जायँगे। परन्तु समय आते ही अुन्होंने सविनयभंग समितिके सदस्योंमें से श्री विट्ठलभाओी और अुनके साथियोंने जो अफवाहें फैलाअीं, अुन्हें शह दी। कलकत्तेमें हुअी कांग्रेस महासमितिमें जितनी खींचतान हो सकती थी, अुतनी करके सवालको अनिश्चित ही रखा। गयाकी कांग्रेसमें पूरी तरह ज़ोर आज़माने पर भी जनता पीछे न हटी, तो कांग्रेसके अध्यक्ष पदसे ही अुग्र रूप धारण करके कांग्रेसके ठहराव पर प्रहार किये। अध्यक्ष पदसे अिस्तीफ़ा दिया और महासमितिकी बैठक अधूरी छोड़कर चले गये। कांग्रेसके विरुद्ध दलबन्दी खड़ी की और बम्बअीमें आकर अुसके प्रस्तावोंके खिलाफ हमले शुरू किये। लोगोंको अपनी बात हज़म न होते देख कर समयका विचार करके अिलाहाबादमें दो महीनेका मौनव्रत ले लिया। बम्बअीमें हुअी कांग्रेस महासमितिकी पिछली बैठकमें जीत गये, तो ज्यादा सख्त कोड़े लगानेकी हिम्मत आ गअी। मद्रास जाकर महात्माजी पर अधिक कठोर आक्षेप करना शुरू किया। आठ महीनेके पहले यह बात सुननेको कौन तैयार

था ? आज तो जनता अनाथ और गरीब बन गअी मानी जाती है । जो कहेंगे वह सुनकर मन ही मन कुढ़ेगी । दूसरा नेता मिलेगा नहीं, राज़ी या नाराजीसे लाचार होकर मेरा कहा सच नहीं मानेगी, तो जायगी कहाँ ? अिस खयालसे आज आठ महीनेसे जेलमें बन्द अेक महान नेताकी पिछली बातें कह कर निन्दा की जाय, अिसका अर्थ समझनेमें क्या कठिनाअी हो सकती है ? कार्यसिद्धिके लिअे साधनकी शुद्धता देखना तो स्वराज्य-यज्ञके सिद्धांतके विरुद्ध ही है! असली मुश्किल तो यह है कि गुजरातको यह बात अच्छी नहीं लगेगी और गुजरातकी जनता अैसे आक्षेप सहन नहीं करेगी, अिसलिअे गुजरातमें स्वराज्य दलके नेता श्री विट्ठलभाअीको अपनी मुश्किलें बढ़नेका डर लग सकता है । अिस दृष्टिसे देखने पर अुन्होंने अन्तमें जो दो प्रश्न किये — दास बाबूको आज यह बात अुठानेसे क्या लाभ ? स्वराज्य दलको क्या लाभ ? — सो आसानीसे समझमें आ सकते हैं ।

श्री विट्ठलभाअी पटेल कहते हैं कि मैं आज कांग्रेसकी प्रतिष्ठा नष्ट होती देख रहा हूँ । वे कहते हैं कि 'कांग्रेसको प्रतिष्ठा बनाये रखनी हो तो कांग्रेस-समितिके प्रस्तावका आदर करना चाहिये ।' मुझे लगता है कि कांग्रेसमें अब पाखंडको प्रधानता मिलने लगी है। कांग्रेसकी प्रतिष्ठाको धूलमें मिलानेवाले अब झूठे आँसू बहानेको खड़े हुअे हैं । अपनी पसंदके प्रस्ताव हों अुन्हींको मानना, अपनी अिच्छानुसार कार्य करनेमें बाधक होनेवाले प्रस्ताव कांग्रेसके हों या कांग्रेस महा-समितिके हों, तो भी अुनका खुलेआम अनादर करना, तिरस्कार भी करना, और कांग्रेसका दल बनाकर विद्रोह तक करना, क्या ये सब कांग्रेसकी प्रतिष्ठा बढ़ानेके रास्ते थे ? कांग्रेसके अध्यक्ष ही जब अिस विद्रोही टोलीके सरदार बने और यह आवाज़ अुठाअी कि कांग्रेस जनताकी आवाज़को प्रगट करनेवाली संस्था नहीं है, सिर्फ़ दो फ़ीसदी ही लोकमत प्रगट करती है, तब क्या अिस संस्थाकी प्रतिष्ठा नष्ट होती नहीं दिखाअी दी ? स्वराज्य दलके लगभग सभी नेताओंने अपनी अिच्छा पूरी करनेके अुद्देश्यसे कांग्रेसके कार्यके अेक अेक अंग पर निरंतर प्रहार करनेके सिवाय और क्या काम किया है ? स्वराज्य दलको कांग्रेसकी प्रतिष्ठाकी परवाह ही कहाँ है ? बात यह है कि डरा-धमका कर अपनी अिच्छानुसर प्रस्ताव पास करा कर कांग्रेसकी थोड़ी-सी रही सही प्रतिष्ठाको बेच कर धारासभाओंमें घुस जाना है । विद्रोहियोंके समर्थनसे पास हुअे प्रस्तावका आदर करके कांग्रेसके प्रस्तावको ताकमें रखकर लोकमतको रौंद डालनेमें मदद देनेमें मुझे कायरताके सिवाय और कुछ दिखाअी नहीं देता । जो कांग्रेसकी रायका तिरस्कार करते हैं, विशेष अधिवेशन करके फिरसे निर्णय कर दिये जाने पर भी अुसे माननेको तैयार नहीं, अैसे दुराग्रहियोंकी रायको मजबूर होकर मान लेनेसे जनताकी अुन्नति नहीं होगी, बल्कि पतन ही होगा । नीति और न्यायकी दृष्टिसे देखें, तो बंबअीकी कांग्रेस महा-

समितिका प्रस्ताव मान्य करने — मानने योग्य नहीं है। अितना ही नहीं, परन्तु व्यावहारिक दृष्टिसे देखने पर भी अुसे मान्य करनेमें बड़ा नुक़सान है। थोड़ेसे हठी लोगोंको — फिर भले ही वे देशके महान नेता क्यों न हों — अपनी मनमानी करनेकी सुविधा दे कर, शांत करनेके लिअे जो अपना निश्चय छोड़ देते हैं और दूसरोंसे छोड़नेका आग्रह करते हैं, अुन्हें अपनी करतूतसे देशको होनेवाली अपार हानिका खयाल नहीं है। कांग्रेसकी अिज़्ज़त जो थोड़ी-बहुत बच रही है, अुसे कायम रखना हो और कांग्रेसको जिन्दा रखना हो, तो जितनी कमेटियोंसे बन सके अुतनी कमेटियोंको अिस प्रस्तावका विरोध करना चाहिये। विद्रोहके विरोधमें विद्रोह ही हो सकता है।

पटेल साहब कहते हैं कि 'अब तो कार्यकर्ताओं और नेताओंमें मतभेद पैदा हो गया है। अिसलिअे आशा नहीं कि धारासभाओं पर क़ब्ज़ा किया जा सके। गुजरात प्रान्तीय समितिके अध्यक्ष अगर महासमितिके प्रस्तावका आदर करना सीखें, तो काम बने और कांग्रेसकी प्रतिष्ठा बढ़े। महात्मा गांधी भी महासमितिके प्रस्तावका आदर करते थे।' बात सच है। दल आज नहीं पैदा हुअे। अिसके लिअे स्वराज्य दल खड़ा करनेवाले ज़िम्मेदार हैं। अगर अब भी कांग्रेसकी प्रतिष्ठा कायम रखनी हो, तो अुन्हें स्वराज्य दलसे हाथ धो लेना चाहिये, धारासभा पर कब्जा करनेकी अुम्मीद छोड़ देनी चाहिये। जिस दिन गुजरात प्रांतीय समितिको विश्वास हो जायगा कि धारासभामें स्वाभिमानके साथ काम हो सकता है, अुस दिन वह अैसा करनेमें नहीं चूकेगी। गुजरात गांधीजीको पटेल साहबसे ज्यादा जानता है। अुनके दलने गांधीजीका ज़रूरत पूरता ही अुपयोग किया है, जब कि गुजरात यथाशक्ति गांधीजीके क़दमों पर चलनेकी अीमानदारीसे कोशिश करता है। गुजरातकी कमज़ोरी गांधीजी माफ़ करेंगे, दुनिया माफ़ करेगी और अीश्वर भी माफ़ करेगा। अशक्ति अपराध नहीं है। परन्तु गुजरात विश्वासघातका अपराध तो नहीं करेगा। गांधीजी महासमितिके प्रस्तावका आदर करते थे, अिसकी गुजरातको याद दिलानेकी पटेल साहबको कोअी ज़रूरत नहीं। गुजरातको मालूम है कि जब गांधीजी बाहर थे, तब सारा देश अुनकी ज़बानसे निकलनेवाला शब्द अपना लेता था। आज नेता कांग्रेसके प्रस्तावका आदर नहीं करते और दूसरोंसे अपने मतके अनुकूल प्रस्तावको ही मान लेनेकी माँग कर रहे हैं। बंबअीकी कमेटीमें भी दो प्रस्ताव पास हुअे थे। स्वराज्य दल अुनमेंसे अेक ही प्रस्तावका आदर करनेकी माँग कर रहा है। नागपुर सत्याग्रहमें मदद देनेका प्रस्ताव अुसी कमेटीने किया है। अुसमें तो धारासभाके प्रस्तावके बराबर भी मतभेद नहीं था। लगभग सर्वसम्मतिसे पास हुअे प्रस्तावका आदर करनेका विचार करना स्वराज्य दलके लिअे अभी बाक़ी है। कांग्रेसके स्तंभस्वरूप अुसके

खज़ांची श्री जमनालालजीको गिरफ्तार कर लेनेके बाद भी अुस प्रस्तावको गौण समझकर धारासभाके प्रस्तावको ही महत्त्व दिया जाय, तो कांग्रेसकी प्रतिष्ठा कैसे बढ़ेगी ?

नवजीवन, २४-६-१९२३

२०

भिक्षांदेहि

[नागपुरकी झंडा सत्याग्रहकी लड़ाअीका संचालन कांग्रेस कार्यसमितिने सरदारको सौंपा, अुस समय सैनिकों और रुपयेके लिअे की गअी अपील।]

चूँकि कांग्रेसकी कार्यसमितिने यह हुक्म दिया है कि जब तक नागपुरकी झंडा सत्याग्रहकी लड़ाअी चले तब तक मैं मध्यप्रान्तमें रहूँ, अिसलिअे मैं आज गुजरात छोड़कर नागपुर जा रहा हूँ। गुजरातका वियोग कितने समयके लिअे होगा, यह तो भगवान जाने। दूसरे प्रान्तकी सेवा करनेका मौक़ा मुझे मिलेगा, यह सपनेमें भी खयाल नहीं था। मुझे गुजरातकी चिंता नहीं। गांधीजीके मुझसे भी ज्यादा वफादार सिपाही गुजरातमें मौजूद हैं। अिस बारेमें मुझे शंका नहीं कि वे गुजरातका भार अुठा लेंगे। लेकिन मैं अिसलिअे परेशान हूँ कि मध्यप्रान्तमें जाकर मैं क्या कर सकूँगा ?

नागपुरकी लड़ाअी अकेले मध्यप्रान्तकी नहीं, सारे देशकी लड़ाअी है। हरअेक प्रान्तने अपने सैनिक भेजकर अिस लड़ाअीका स्वागत किया है। अब अगर हम अिस लड़ाअीको व्यवस्थित ढंगसे जारी न रखें, तो देशकी अिज्जत जाती है। हरअेक लड़ाअीमें सिपाहियों और रुपयेकी ज़रूरत पड़ती है। सरकारके पास भारी वेतनवाले अफसरों और हलकी तनख्वाहवाले सिपाहियोंकी कमी नहीं। पराये पैसेसे लड़नेमें रुपयेकी कमी तो होने ही क्यों लगी ? हमको सिपाहियोंकी कमी नहीं पड़ेगी। हरअेक प्रान्त अधिकसे अधिक सिपाही भेजनेको तैयार है। अिन सिपाहियोंको वेतन भी नहीं देना पड़ेगा। मगर हरअेक प्रान्तसे सिपाहियोंको नागपुर लानेमें लाखों रुपये चाहिये। मद्रासके सैनिकोंको नागपुर आनेमें हरअेकके ६० रुपये फ़क्त रेलभाड़ेके ही होते हैं। किसी-किसी प्रान्तके पास रुपया भी नहीं है। रुपयेके बिना अितनी बड़ी लड़ाअी कैसे लड़ी जा सकती है ?

हज़ारों सैनिकोंको नागपुरके यज्ञमें होमना हो, तो कमसे-कम ५ लाख रुपया सिर्फ़ रेलकिरायेके लिअे चाहिये। अितनी रक़म चाहे तो अेक ही मारवाड़ी दे सकता है। कांग्रेसके कामके सिलसिलेमें जब मैं श्री जमनालालजीके साथ हिन्दुस्तानके दौरे पर निकला था, तब बहुतसे मारवाड़ियोंसे परिचय हुआ था।

मारवाड़ी कांग्रेसमें भी आये थे। जमनालालजीके प्रति मारवाड़ी जातिका बेहद प्रेम मेरे देखनेमें आया है। अिस क़ौमकी अुन्होंने बड़ी सेवा की है। क्या जमनालालजीकी अुग्र तपस्या मारवाड़ियोंके दिल नहीं पिघलायेगी? मुझे यक़ीन है कि मारवाड़ी जातिको अिस बातकी खबर पहुँचाअी जा सके, तो वह अितनी रक़म आसानीसे जमा करके हमें भेज देगी। भाअी मणिलाल कोठारीको मैंने मारवाड़ी भाअियोंके पास यह सन्देश पहुँचानेके लिअे भेजा है।

परन्तु मेरी आशा तो गुजरातवालों पर है। जब देशमें चारों तरफ़ अन्धकार और निराशा फैली हुअी थी, अुस वक्त कअी कठिनाअियोंके बीच जमनालालजीने अकेले ही त्याग और बलिदानकी प्रचंड वायु फैलाकर सारे देशका ध्यान आकर्षित किया था। गुजरातने अपने प्यारे पुत्रोंको होम कर अुसकी पूर्ति की। अब अगर हम थोड़ेसे रुपयेके अभावमें अिस लड़ाअीको ठंढी पड़ने देंगे, तो मुझे अैसा लगता है कि हमारी लाज चली जायगी। गुजराती चाहें तो प्रांतीय समितिके दफ्तरमें रुपयेकी वर्षा कर दें। जो सैनिकोंमें भरती नहीं हो सकते, वे तो अिस अवसरका ज़रूर स्वागत करेंगे। मुझे आशा है कि गुजराती जहाँ भी बसते होंगे, वहाँसे यह सन्देश सुनकर अपना हिस्सा गुजरात प्रांतीय समितिके मन्त्रीको भेज देंगे।

नवजीवन, २२-७-१९२३

२१

नागपुर झंडा सत्याग्रहकी विजय

[नागपुर झंडा सत्याग्रहकी विजयके निमित्त जन्माष्टमीके दिन नागपुरकी सार्वजनिक सभामें किया गया निवेदन।]

अिस अवसर पर मैं अपना आखिरी निवेदन करना चाहता हूँ। हमारी लड़ाअीके बारेमें जो शंकायें अुठ रही हैं, अुन्हें दूर करनेके लिअे और १८ अगस्तकी जिन घटनाओंके परिणामस्वरूप हमारी लड़ाअी खतम हुअी और हमारी जीत हुअी, अुनके बारेमें कुछ स्वार्थी लोगों द्वारा फैलाअी गअी पथभ्रष्ट करनेवाली, कपटसे भरी हुअी और झूठी खबरोंसे पैदा हुअे झगड़ोंको शान्त करनेके लिअे मैं यह निवेदन करना ज़रूरी समझता हूँ। सब लोग यह अच्छी तरह जानते हैं कि १ मअी १९२३ को नागपुरके जिला मजिस्ट्रेटने जब आम रास्तेपर जानेवाले जुलूस पर अंकुश लगानेके बहाने राष्ट्रीय झंडेके जुलूसको सिविल लाअिन्समें जिला कचहरीके मकानसे आगे ले जानेकी मनाही कर दी, तब यह लड़ाअी

शुरू करनी पड़ी थी। अिस हुक्ममें हमने राष्ट्रीय झण्डेको चुनौती और अुसका अपमान देखा। अिस हुक्ममें हमें झंडा लगाने, फहराने और आम रास्तोंपर अुसके शान्त और व्यवस्थित जुलूस निकालनेके हमारे प्रारम्भिक अधिकारका अिन्कार मालूम हुआ। हमारा यह खयाल सही था, यह बादकी घटनाओंने निःसंदेह साबित कर दिया है। लगभग अेक महीने तक तो कोअी मनुष्य — स्त्री या पुरुष — अकेला भी झंडा लेकर प्रतिबंध की गअी जगहोंमें प्रवेश करनेकी कोशिश करता, तो गिरफ़तार हुअे बिना नहीं रहता। पकड़ाये हुअे मनुष्योंके झंडे ज़ब्त कर लिये जाते थे। जब क़ानून और व्यवस्थाके पवित्र नाम पर दिन दहाड़े होनेवाले और किसी भी सुधरे हुअे देशमें न सुने गये क़ानूनके व्यभिचारका सार्वजनिक रूपसे भंडाफोड़ किया गया, तब मध्यप्रान्तकी सरकारको 'जुलूस' शब्दकी क़ानूनी व्याख्याके बारेमें अपना खयाल बदलना पड़ा। राष्ट्रीय झंडा लेकर चलनेवाले कोअी भी दो आदमियोंकी टोलीको जुलूस माननेका सिलसिला तो ठेठ लड़ाअीके अन्त तक जारी रहा। अेक दूसरे जिला मजिस्ट्रेट तो अिससे भी आगे बढ़ गये और अुन्होंने लोगोंको सार्वजनिक रूपमें सलाह दी कि तुम्हारे बाप-दादोंका राष्ट्रीय झंडा कब था? अिसलिअे तुम्हें राष्ट्रीय झंडेके झगड़ेकी तरफ़ नहीं देखना चाहिये। बादमें नागपुर आनेवाले प्रतिष्ठित लोगोंके पास झंडा होता, तो अुन्हें 'बदमाश और आवारा' मानकर रेलवे स्टेशनों पर ही पकड़ लेने लगे। अिस तरह लड़ाअीका अुद्देश्य आम रास्तोंका आज़ादीसे अिस्तेमाल करनेका हक़ प्राप्त करने या यूनियन जैकका अपमान करने या जनताके किसी अेक भागको चिढ़ानेका नहीं था। लड़ाअीका अुद्देश्य तो राष्ट्रीय झंडेके सम्मानकी रक्षा करना और पुलिसके क़ानूनका बहाना बनाकर हिन्दुस्तानके मध्य भागमें 'अुच्च भूमि' बना देनेकी कोशिशका विरोध करना था। साढ़े तीन महीनेकी लम्बी लड़ाअीके बाद १८ अगस्तको दोपहरके समय सौ स्वयंसेवकोंका जुलूस राष्ट्रीय झंडेके साथ मनाही किये गये क्षेत्रमें दाखिल हुआ और सिविल लाअिन्सके बड़े हिस्सेमें होकर रास्तेके दोनों तरफ़ खड़े किये गये हथियारबन्द सिपाहियोंके आश्चर्यजनक ठाटबाटके बीचसे निकाला। किसीने अुसे नहीं रोका। अिसी कारण अुस रोज़ शामको मैं लड़ाअीका विजयी अन्त घोषित कर सका।

आज मैं सभी कपोलकल्पित बातोंका या निठल्लोंकी तरंगोंका जवाब देना नहीं चाहता। परंतु जो भाअी अेकान्तवास भुगतकर अब बाहर आये हैं, और दूसरे जिन भाअियोंको जिज्ञासा हो कि पुलिसका हुक्म जारी होनेके बाद यह लड़ाअी अचानक और अितने विजयी रूपमें कैसे समाप्त हुअी, अुनकी जानकारीके लिअे मैं परिस्थितिका स्पष्टीकरण करना चाहता हूँ। जब तक सरकार धारासभाओंके प्रस्ताव पर किसी फ़ैसले पर नहीं

पहुँचती, तब तक लड़ाअीके मौजूदा क्रममें कोअी अुथल-पुथल करनेकी मेरी अिच्छा नहीं थी। और अिसके कारण स्पष्ट हैं। मेरे मनमें अिस बातके बारेमें शक था ही नहीं कि जिस रायके पीछे कार्यका समर्थन न हो, वह राय कितने ही ज़ोरसे कही गअी हो, फिर भी अगर वह विरुद्ध पक्षकी होगी, तो सिविल लाअिन्समें बसनेवाले गोरे अधिकारी वर्गको छेड़े बिना हरगिज़ नहीं रहेगी; और ज़िम्मेदार निरंकुश नौकरशाहीकी पीठ मजबूत किये बिना हरगिज़ नहीं रहेगी। आंदोलन परसे धारासभाके धुँअेके बादल हटते ही मैंने तुरंत अपना १६ तारीखका बयान प्रकाशित कर दिया। अुसमें शुरूसे नागपुर कमेटीने जिस विचारसे यह लड़ाअी छेड़ी थी, अुसे दोहरा कर लड़ाअीके मुद्दोंके संबंधमें जो ग़लतफ़हमियाँ और झूठी खबरें फैली थीं, अुन सबका खंडन कर दिया और फिर दूसरे दिन १८ तारीखके जुलूसका कार्यक्रम तैयार किया। अुसमें जुलूसका रास्ता, समय व अुस सम्बन्धकी सूचनाअें निश्चित कर दीं। अुस समय लोकभावना कितनी क्षुब्ध हो गअी थी, धारासभाके कमरेमें होनेवाले वाग्युद्धका भी असर था। ये तमाम हालात अुस कार्यक्रमको तैयार करते समय मेरे ध्यानमें थे। जैसा कि स्पष्ट है, १८ तारीखका कार्यक्रम अिस ढंगसे तैयार किया गया था कि जिससे विरोधी पक्षके दृष्टिकोणका यथाशक्ति खयाल रखा जा सके और साथ ही जिन सिद्धांतोंकी खातिर लड़ाअी लड़ी गअी है, अुन पर ज़रा भी आँच न आये। परिणाम यह हुआ कि जुलूसको किसी भी तरहकी रुकावट बिना निकलने देना सरकारने बेहतर समझा।

गवर्नरसे मुलाक़ात

जब जुलूस मनाही की हुअी भूमिसे निकल चुका और लड़ाअी जीतनेकी घोषणा कर दी गअी, तो फौरन सारा देश और खास तौर पर अेंग्लो अिंडियन पत्र हर क़िस्मके झूठे, बुद्धिभेद पैदा करनेवाले और कपट पूर्ण समाचारोंसे भर गये। अिसी प्रकार अखबारोंमें मध्यप्रांतके गवर्नर महोदयके साथकी हमारी मुलाकात संबंधी चर्चा भी की गअी। यह मुलाकात किस तरह हो पाअी, अिसमें मुझे खुद तो कम ही महत्व दिखाअी देता है। असहयोगी बाह्याचारसे चिपटे रहनेवाले हैं, अैसा जो आम खयाल है वह बेबुनियाद है। मैं खुद तो शिष्टाचारी आमंत्रणकी भी बाट न देखूँ, अगर मुझे सरकारमें परस्पर समझौतेकी सच्ची अिच्छा दिखाअी दे। फिर भी रिआयतें या क़ौलक़रार होनेके जो समाचार और अफवाहें फैलाअी गअी हैं, अुनका मैं आज अिस स्थानसे निश्चित शब्दोंमें सार्वजनिक खंडन करता हूँ। अिन खबरोंमें बिलकुल सचाअी नहीं है। हमने सरकारके साथ रिआयत नहीं की, क़ौलक़रार नहीं किये और अुसको किसी प्रकारका वचन भी नहीं

दिया। मुलाक़ात १३ अगस्तको हुआी थी। अितना ही हुआ कि अेक दूसरेके मुद्दोंको अेक दूसरेके सामने कहनेका हमें मौक़ा मिला।

अर्ज़ी देनेकी अफ़वाह

किसीकी तरफ़से ये खबरें फैलाअी गअी हैं कि मैंने ज़िला सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसको जुलूस निकालनेकी मंजूरीके लिअे अर्ज़ी दी थी। अगर अिस तरहकी कपटपूर्ण और अुलटी खबर अखबारोंमें फैलानेवाला सरकारका अेक ऊँचा अफ़सर (वह कौन है यह बादमें बताया जायगा।) ही न होता, तो अैसी अफ़वाहोंकी तरफ मैं देखता तक नहीं। मुझे मंजूरी ही लेनी होती, तो यह लड़ाअी कितने ही दिन पहले खतम हो गअी होती। टर्कीकी सुलहके अुत्सवके दिन मनाही किये हुअे भागमेंसे ज़िला मजिस्ट्रेटकी मंजूरी लेकर बड़ा जुलूस निकला था, यह मेरे ध्यानसे बाहर नहीं था। स्थानीय धारासभाके कुछ सदस्योंने मुझे कअी बार सुझाया कि यह मंजूरी वे अपने नामसे माँग लें। मैं यह समझता था कि ज़िला मजिस्ट्रेटसे रूबरू प्रार्थना कर लूँ, तो काफ़ी होना चाहिये। मामूली संयोगोंमें जुलूसके लिअे अैसी अिजाज़त माँगनेमें कोअी आपत्ति भी नहीं हो सकती। अैसा करनेकी कांग्रेसकी तरफ़से मनाही नहीं, मगर अिस हद तक लड़ाअीके पहुँच जानेके बाद अिजाज़त माँगने जाना मेरे लिअे नामुमकिन था। जब सरकार तलवारके ज़ोरसे हमसे अर्ज़ी दिलवानेकी कोशिश करती हो, अैसे समय अगर मैं अर्ज़ी दूँ तो कांग्रेसकी शान चली जाय। सच पूछें तो लड़ाअीका मोर्चा ही अिस मुद्दे पर था। और सब मुद्दे, फिर वे कुछ भी हों, तो तफ़सीलके थे। कोअी भी आसानीसे देख सकता था कि लड़ाअी अुस वक्त जम चुकी थी और अेक ही मुद्दे पर आकर केन्द्रित हो गअी थी। वह मुद्दा यह था: अेक तरफ सरकार जिसे क़ानूनी सत्ताका खुला भंग कहती है, अुसे अपने सारे साधनों द्वारा दबा देनेका सरकारका निश्चय था और दूसरी तरफ़ चाहे जितना दुःख सहना पड़े या बलिदान करना पड़े, तो भी स्वेच्छाचारी और अन्यायी सत्ताका सविनय भंग करनेका अपना हक़ सही साबित करनेका जनताका अुतना ही दृढ़ निश्चय था। १८ तारीखको मैंने ज़िला सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसको खबर दी कि मैं अुनकी आज्ञाके विरुद्ध कैसी योजना तैयार करना चाहता हूँ। अुसमें अैसी कोअी बात ही नहीं थी, जिससे अिस सूचनाको अर्ज़ी कहा जा सके। अुलटे अुस दिनके कार्यक्रमकी नक़लमें साफ़ बता दिया गया था कि अुसका अुद्देश्य नये निकले हुअे हुक्मकी जाँच करके देख लेना था। कुछ भी हो, कार्यक्रममें बड़ा और असाधारण फ़र्क़ किया जाय और वह भी सारी लड़ाअी शुरू होनेके बाद पहली ही बार, और अुसकी सूचना अगर मैं न दूँ, तो अिसमें मुझे कोअी शक नहीं कि मैं अपने फ़र्ज़में

चूकता हूँ। ज़िला मजिस्ट्रेटके रणक्षेत्र छोड़कर चले जानेके बाद पुलिस पर अचानक धावा करना अनुचित होता। मेरी बुद्धिके अनुसार अिस प्रकारके युद्धमें अचानक हमलेकी छूट नहीं होती। जुलूसकी सूचना भेजनेके बाद थोड़ी ही देरमें मनाही हुक्मवाली जगह पर पुलिसका दल खड़ा कर दिया गया था। अिसका कारण देना मेरा काम नहीं, परन्तु पुलिसको सूचना देनेकी ज़रूरत थी, यह अिस बातसे पूरी तरह साबित होता है। फिर भी अिस सूचनासे या जुलूसके कार्यक्रमकी तफ़सीलसे सरकारको अिस प्रतिकूल लड़ाअीमेंसे निकल जानेकी अनुकूलता मिल गअी हो, तो मैं खुद तो अिस बातसे खुश ही होअूँगा कि सिद्धांतको किसी तरह कुरबान किये बिना मैंने सरकारकी परेशानी किसी हद तक दूर कर दी और अुसके लिअे अिज़्ज़तके साथ पीछे हटनेका रास्ता खोल दिया। लेकिन मैं फिर कहता हूँ कि सरकारको अर्ज़ी नहीं दी गअी और न अुससे परवानगी या परवाना ही लिया गया।

धारासभाका असर

धारासभाके प्रस्तावोंके हमारी लड़ाअी पर हुअे असरके बारेमें मैंने अख़बारोंमें कुछ झगड़ा चलता हुआ देखा है। धारासभाके कामसे मुझे मदद मिली या काममें रुकावट हुअी, अिस बारेमें कोअी मत प्रकट करनेकी मेरी अिच्छा नहीं है, क्योंकि अिस बारेमें गलतफ़हमी होना संभव है। अितना कहना काफी है कि पुलिसका हुक्म धारासभाके प्रस्ताव पास होनेके बाद निकला था। लड़ाअीका अंत आया, तब तक अिन प्रस्तावों पर कोअी भी अमल नहीं हुआ था; मगर लड़ाअी खतम होते ही तमाम नज़रबन्द कैदियोंको छोड़ दिया गया। जो सरकार अपना काम अच्छी तरह जाननेका दावा करती है और नैतिक या शारीरिक बलके सिवाय और किसी चीज़को माननेसे अिनकार करती है, अुस सरकारको मुफ्तमें मिली हुअी शिक्षा — अिस शिक्षाको धारासभाके प्रस्तावका बड़ा नाम मिला हो तो भी — कभी गले अुतरेगी, अैसा भ्रम किसीके मनमें न रहे यही मैं चाहता हूँ। अैसे सारे प्रयत्न तो अुल्टे जो लोग अपनी सफ़ाअी देनेके लिअे मौजूद नहीं हैं, अुन पर अनुचित और कभी कभी नीच आक्षेप करनेका मौक़ा देते हैं। अिन प्रस्तावोंसे कोअी मतलब सिद्ध होता हो, तो अितना ही कि अगर अिन प्रस्तावोंको अलग रखकर काम किया जाय, तो अुचित अवसर पर और अुचित अुद्देश्यके लिअे शायद अुनका अनुकूल अुपयोग हो सके।

जुलूसको निकल जाने देनेके बाद तमाम कैदियोंको छोड़ देना सरकारका धार्मिक फ़र्ज़ था और यह फ़र्ज़ अदा करनेके लिअे मैं मध्यप्रांतकी सरकारको धन्यवाद देता हूँ। आज छूटकर आये हुअे लगभग हज़ार जेलवासियोंमेंसे सातको जेलके नियमोंके विरुद्ध बरताव करनेके कारण अभी तक जेलमें बंद कर

रखा है, यह देखकर मुझे दुःख होता है। फिर भी मुझे विश्वास है कि वे भी जल्दी ही छूट जायँगे। क़ैदियोंके छोड़नेमें जो थोड़ी-सी ढील हो गअी है, वह भी मुझे तो विश्वास है कि मध्यप्रांतकी सरकारके क़ाबूसे बाहरके संयोगोंके कारण ही हुअी है। मुझे यह बताते हुअे बड़ी खुशी हो रही है कि मेरे भाअी, जो मेरे आनेके बाद तुरन्त ही मेरे पीछे आ गये थे और जिन्होंने लगभग ठेठ अन्त तक लड़ाअी जारी रखनेमें मेरे साथ पूरी तरह सहयोग किया, वे * भी अिस बारके धारासभाके प्रस्तावोंके निकम्मेपनके बारेमें मुझसे पूरी तरह सहमत हैं। यद्यपि मुझे अितना तो कहना चाहिये कि अिन प्रस्तावोंको निकम्मा माननेमें हमारी दोनोंकी दृष्टि अलग है। सब लोग अच्छी तरह जानते हैं कि राजनैतिक मामलोंमें हमारे दोनोंके बीच अुत्तर और दक्षिण ध्रुवके बराबर अंतर है। मगर हम दोनों नागपुरसे अपने-अपने राजनैतिक मतोंको थोड़ा-बहुत दृढ़ करके वापस जा रहे हैं।

सच्ची विजय

स्वेच्छासे स्वीकार किया हुआ अेकान्तवास भोग कर अब हमारे बीचमें वापस आने पर मैं आप सबका स्वागत करता हूँ। आप लड़े अुससे भी बड़ा युद्ध और बड़ी कुरबानियाँ बाहर आपकी बाट देख रही हैं। अन्तिम प्रसंग पर मैंने कहा था कि झंडा सत्याग्रहकी लड़ाअी खतम हुअी और अुससे हमारे राष्ट्रीय झंडेके सम्मानकी रक्षा हुअी है। शान्तिमय और व्यवस्थित जुलूस आम रास्तोंसे ले जानेका हक़ हमें वापस मिल गया है और सत्य, अहिंसा व कष्ट-सहनकी सम्पूर्ण विजय हुअी है। आपको वापस हमारे बीचमें आकर बैठे देखकर आज मैं अपने ये शब्द ज्यादा ज़ोर देकर बोलनेमें समर्थ हुआ हूँ।

मगर हमने जो कुछ भी प्राप्त किया है, अुसमें हमारे लिअे घमंड करने जैसी कोअी बात नहीं है। हमें जो मिला या हमने जो कष्ट सहन किया, अुसमें हमारी जीत नहीं है। परन्तु जब तक हमारा अन्तिम ध्येय प्राप्त न हो जाय, तब तक अुत्तरोत्तर अधिक कष्ट सहन करनेकी शक्ति हममें आये, यही सच्ची विजय है। मैं आपसे सच कहता हूँ कि हमारी जो जीत हुअी है, अुसका श्रेय मुझे बिलकुल नहीं है। सारा श्रेय जो कष्ट सहन करके आये हैं और जो अिस लड़ाअीके लिअे कष्ट सहन करनेको तैयार थे अुन्हें है। और साथ ही सारी लड़ाअीके अरसेमें अथक शक्ति और अद्भुत व्यवस्थाका परिचय देनेवाली नागपुर कांग्रेस कमेटीको है।

कमिश्नर संवाददाता

अेक बात यहाँ कहे बिना मैं यह बयान पूरा नहीं कर सकता। १८ तारीख की घटनाओंके जो कपट पूर्ण समाचार फैले हैं, अुन सबकी जड़ ढूँढ़नेकी मैं

* स्व० माननीय विठ्ठलभाअी पटेल।

कोशिश कर रहा था। यह खोज करते हुअे मुझे अेक विचित्र प्रमाण मिल गया। जूनके आखिरी सप्ताहमें सेठ जमनालाल बजाज और अुनके साथियोंकी गिरफ़्तारीके बाद 'टाअिम्स ऑफ़ अिन्डिया' में प्रकाशित होनेवाले अुन चार सुप्रसिद्ध पत्रोंकी, और साथ ही शुरूसे अन्त तक अिस लड़ाअीके प्रति 'टाअिम्स ऑफ़ अिन्डिया' द्वारा अपनाये हुअे रुखकी कुंजी भी शायद मुझे मिले हुअे अिस प्रमाणमें ही होगी। कलकत्ताके 'स्टेट्समैन' पत्रके २१ अगस्तके अंकमें नागपुरके कमिश्नरका १९ ता० का दिया हुआ अेक तार छपा है। अुसका शीर्षक है: 'सत्याग्रह बन्द होगा। नेता हुकूमतके आगे झुक गये'। 'टाअिम्स ऑफ़ अिन्डिया' के संवाददाताका अुसी तारीखका तार अुस पत्रके २० अगस्तके अंकमें 'सरकारकी टेक मान ली' शीर्षकसे छपा है। यह तार अुस 'स्टेट्समैन' में छपे हुअे कमिश्नरके तारकी शब्दशः नक़ल है। ये दोनों तार अिकट्ठे करके पढ़ने पर यह जान लेना मुश्किल नहीं कि 'टाअिम्स ऑफ़ अिन्डिया' का संवाददाता कमिश्नर है या नागपुरका कमिश्नर 'टाअिम्स ऑफ अिन्डिया' का संवाददाता है। सम्भव है कि 'टाअिम्स ऑफ़ अिन्डिया' की तरह 'हमारे विशेष संवाददाताकी तरफ़से' छापनेके बदले 'नागपुरके कमिश्नरकी तरफ़से मिला हुआ तार' छापनेमें 'स्टेट्समैन' द्वारा की गअी गफ़लतके कारण कमिश्नर-साहबका भंडाफोड़ हो गया। यह सबूत मिलनेके बाद भी कुछ समय तक तो मैं मान ही न सका कि अैसी घोषणा अुन्होंने प्रकाशित की होगी। जाँच करने पर मुझे मालूम हुआ कि यह बात सच है। फिर भी मुझे विश्वास दिलाया गया है कि नागपुरके कमिश्नरने 'स्टेट्समैन' को जो वक्तव्य भेजा, अुसे प्रकाशित करनेका अुन्हें अधिकार नहीं दिया गया था। अिसके सिवाय मैंने यह भी देखा है कि कमिश्नरके अखबारोंके साथके संबंध और प्रवृत्तियों पर क़ाबू रखनेकी ताक़त मध्यप्रान्तकी सरकारमें नहीं है। पहले भी अेक अवसर पर यह हुक्म होते हुअे भी कि सरकारके काममें तुम्हें दखल न देना चाहिये, अिसी लड़ाअीके संबंधमें अुन्होंने अपनी अिस प्रकारकी प्रवृत्तिसे सरकारको मुश्किलमें डाल दिया था। अिस तरह ये साहब जो जीमें आता है करते रहते हैं। मैं पूरी तरह स्वीकार करता हूँ कि लड़ाअीका सम्मानपूर्ण अंत करनेकी सरकारकी आन्तरिक अिच्छा थी, और अिस बारेमें मुझे शंका नहीं है कि सरकारको कमिश्नरके कामसे अफ़सोस हुआ है। फिर भी अितना कहना मुझे अपना फ़र्ज़ मालूम होता है कि आखिर सरकार कमिश्नरकी करतूतोंकी ज़िम्मेदारीसे बच तो हरगिज़ नहीं सकती।

समाप्ति

हमें भगवानका अुपकार मानना है कि जिस समय देशमें व्यक्तिगत रागद्वेष, दलबन्दी और साम्प्रदायिक झगड़ोंके भारके नीचे परस्पर सहिष्णुता,

राजनैतिक दीर्घदृष्टि और देशका अुच्च हित दब गये थे, और जिस समय शंका और निराशाके बादल देश पर घिरे हुअे थे, अुस समय अुस दयालु भगवानने हम पर दया की और रागद्वेष और कलहके नीचे बहनेवाले जनताकी दृढ़ता, शक्ति और हृदयबलके गूढ़ प्रवाहका नम्रतासे परिचय देनेका यह अवसर हमें दिया। मित्रोंकी तमाम गलतफ़हमियों और शत्रुओंकी तमाम झुठाअीके बावजूद निर्मलता और निर्भयताके साधनोंसे सुसज्जित अिस धर्मयुद्धका स्मरण लोग भविष्यमें गौरवके साथ करेंगे, और यह धर्मयुद्ध लोगोंमें सत्य, अहिंसा और त्यागके शस्त्रोंकी श्रेष्ठताके बारेमें श्रद्धाका संचार करेगा। महात्मा गांधीका आदेश है कि सत्य, अहिंसा और त्याग ही हमारे राष्ट्रकी प्रकृति और संस्कृतिके अनुकूल हैं।

नवजीवन, ९-९-१९२३

२२

नागपुरकी जीतका रहस्य

[नागपुर झंडा सत्याग्रहकी विजयके बाद अहमदाबादमें दिया हुआ सार्वजनिक भाषण।]

अिस लड़ाअीके बारेमें जो कुछ मुझे कहना था, वह मैंने लिखकर दे दिया है। आलोचनाओंसे मैं डरता नहीं। पण्डित मोतीलालजीने मेरे कामकी आलोचना की हो, तो मैं तो अुनके सामने बच्चा हूँ। अुनके त्यागकी और अुनकी देशसेवाकी क़ीमत मैं कैसे लगा सकता हूँ? मेरे जैसे कच्चे सिपाहीकी भूल होती दिखाअी दे, तो भूल बतानेका अुनके जैसे अनुभवीको हक़ है। मगर अिस काममें शुरूसे आखिर तक मेरे बड़े भाअी, विट्ठलभाअी, मेरे साथ थे, और अिस विचारसे मुझे सन्तोष था कि अेक विरुद्ध विचारके नेता भी साथ हैं। अिस लड़ाअीमें जीत हुअी हो और गर्व करनेका कारण मिला हो, तो अुसका श्रेय अुन लोगोंको है, जिन्होंने कष्ट सहन किया या जो कष्ट सहनेको तैयार थे। परन्तु जीत न हुअी हो, लड़ाअी बन्द करनेमें भूल हुअी हो और शरमाने जैसी बात हुअी हो, तो अुसकी ज़िम्मेदारी मेरी है। मैंने लड़ाअी अिसलिअे बन्द नहीं की कि मेरे पास सैनिक तैयार नहीं थे। मेरे पास तो आखिरी दिन भी १४८ आदमी थे। ज्यादाको आनेसे रोकनेका मुझे प्रयत्न करना पड़ा, तो भी हररोज़ मनुष्य आते और स्टेशन पर पकड़े जाते। सरकार जानती थी कि मुझे पकड़ लेने पर भी १५ हज़ार आदमी आते ही रहेंगे।

अिसलिअे मुझे लड़ाअी समेट लेनेका कोअी कारण नहीं था। लेकिन जब तक सत्यकी लड़ाअी थी, तब तक मैंने अुसे जारी रखा। जहाँ असत्य

दिखाअी देता है वहाँ मेरा हृदय काँपता है। अंग्रेज़ोंके गिरजेके सामने शान्ति रखनेमें मुझे सभ्यता मालूम हुअी। अंग्रेज़ोंके घरके सामने जा कर 'जय' पुकारनेमें सभ्यता नहीं थी। अिस प्रकार स्वयंसेवकोंको सूचना देनेमें मैंने सभ्यताके अनुसार काम किया है। अिसमें अगर किसीको भूल लगती हो, तो अैसी भूल तो मैं ज़िन्दगीभर करूँगा। हमें अंग्रेज़ोंको दिखा देना था कि तुम्हारी अुचित भावनाओंमें हम बाधक बनना नहीं चाहते। सरकारका जो असत्य था, अुसका हमने विरोध किया। हमारी लड़ाअीमें जितना सत्य, अहिंसा और सहनशक्ति थी, अुतनी हमारी सरकार पर जीत हुअी। सरकारी मकानोंपर झंडा फहरानेका हमारा अिरादा हो, तो मैं कहता हूँ कि हम हार गये। लड़ाअी छेड़नेवाले छूटकर आये, तो मैंने अुनसे पूछा। अुन्हें लड़ाअीके परिणामसे हर्ष हुआ अिससे मुझे संतोष हुआ। सारी दुनियाको संतुष्ट करनेकी ताक़त मुझमें नहीं है।

जिनका लड़नेका तरीक़ा दूसरा है, अुन्हें अिसमें भूल दिखाअी देना स्वाभाविक है। मैं तो खेड़ाकी लड़ाअीमें नौ महीने महात्माजीके साथ था। वे कोअी भी क़दम अुठानेसे पहले सरकारको खबर देते और बादमें क़दम अुठाते थे। मैं अगर पहलेसे नागपुरमें होता तो ज़रूर अर्ज़ी देता। सरकार तो नामंजूर ही करती। अिसका साफ़ सबूत मेरे पास है। ६ अप्रैलको जबलपुरमें सुन्दरलालजीको सिविल लाअिन्समें मंज़ूरीके बिना जानेसे रोक दिया गया, तो अुन्होंने तुरन्त अर्ज़ी लिखकर दे दी। मगर अुन्हें अिनकार कर दिया गया। नागपुरमें तो मंज़ूरीकी बात बादमें आअी। पहले तो अेक भी आदमी — स्त्री भी — झंडा लेकर नहीं जा सकता था। मगर सरकारने जब देखा कि अब तो रास्ता देना ही पड़ेगा, तब अिजाज़तकी बात सामने रख दी। जब तक सरकारका हुक्म मौजूद था, मैं आखिरी दिन और आखिरी मिनट तक अुसके खिलाफ़ लड़ा। मगर जब मजिस्ट्रेट घरमें घुस गये और सुपरिण्टेण्डेण्ट सामने आये, तब मैंने अुनको बताया कि आपके साथ अब अिस ढंगसे लड़ूँगा। अितने हज़ार सैनिकोंको छोड़ा, परन्तु अेकसे भी सरकारको यह कहनेकी हिम्मत न हुअी कि आअिन्दा अैसा न करना। दुनिया जानती है कि ये लोग फिर यही करेंगे।

आज आपके सामने शेरके दो बच्चे बोल गये। अिन लड़कोंने तो दुःखको हँसते हँसते सहना सीख लिया है। मैं अुन्हें लेनेके लिअे जब जेलके दरवाज़ेपर गया, तो हरअेकको बिलकुल दुबला देखकर मुझे दुःख हुआ। मेरे मित्र भोगीलाल लालाके लड़केको तो मैं पहचान भी नहीं सका। जेलके कोल्हूमें बैलका काम मनुष्यसे करवाया जाता है। लोहेका कोल्हू आठ घण्टे चलाना पड़ता है। अेक दिनमें ३२ मीलका चक्कर होता है। अूपरसे घूँसा मारनेवाले और गला पकड़नेवाले तो होते ही हैं। हमें जीत मिली हो तो यही कि गुजरातके

सैनिक मैंने अैसे देखे, जिन्होंने अपनी तरफ़से कोल्हूकी माँग की। डॉक्टर चन्दूलालने राज़ीखुशीसे अँधेरी कोठरी माँग ली। गुजरातके आदमियोंने सरकारी अधिकारियोंको डरा दिया, सरकार पर और लोगोंपर असर डाला और हिन्दुस्तानके सैनिकोंपर छाप डाली। मुझे तो अिसीमें सबसे बड़ी जीत दिखाअी देती है।

दूसरी जीत यह हुअी कि जब लोग हताश हो गये थे और अैसा मालूम होता था कि लोगोंमें सत्व नहीं रहा, तब लोगोंकी ताक़त दिखानेका मौक़ा मिला। देशके चारों कोनोंसे मनुष्य आते, पकड़े जाते और हँसते-हँसते जेल जाते। बिहारका अेक लड़का जेलमें मर गया। अुसे मरनेके अेक घण्टे पहले कहा गया कि माफ़ी माँग ले तो छोड़ दिया जायगा। अुसने अिनकार कर दिया, और जेलमें देह छोड़ी। अैसी वीरता दिखानेका हमें सुन्दर अवसर मिला; अिससे बड़ी जीत और क्या चाहिये?

जीतके समय हमें ज्यादा नम्र बनना चाहिये। हार-जीत दिलानेवाला अीश्वर है। जीतनेके बाद घमण्ड करनेवाला वहींका वहीं हार जाता है। युरोपमें जीतनेवाले हार गये हैं, अिसका यही कारण है। अुन्हें जीतका नशा चढ़ गया है, अिसलिअे वे हारनेवालोंसे भी ज्यादा बरबाद हुअे हैं। हम तो अितनी ही श्रद्धा रखें कि सच्चे काममें अीश्वर हमारे साथ है और हमें मदद देगा।

कालापानी जानेवाले भी मध्यप्रान्तकी जेलोंमें घबरा जाते हैं। जहाँ माफ़ी मँगवानेका ही अेक मात्र हेतु हो, वहाँ जेलके क़ानूनमें रहकर भी अितना ज़ुल्म ढाया जा सकता है कि आदमीकी हिम्मत छूट जाय। अिन जेलोंमें अैसा हुआ है। फिर भी जब गुजरातके अेक-अेक आदमीने कहा कि हम दुबारा जेल जानेको तैयार हैं, तब मुझे यक़ीन हो गया कि महात्माजीके आन्दोलनकी जड़ें गुजरातमें खूब गहरी जम गअी हैं।

नवजीवन, ९-९-१९२३

२३

धारासभाओंका बहिष्कार

[ता० १५, १६, १७, १८ सितम्बर १९२३ को दिल्लीमें कांग्रेसका विशेष अधिवेशन हुआ। असमें धारासभाओंका बहिष्कार अुठा लेनेका प्रस्ताव पास हुआ। अुस प्रस्ताव पर राय ली जाने पर प्रगट किये गये अुद्गार।]

मैं राजेन्द्रबाबूका अक्षरशः समर्थन करता हूँ। मेरी राय ज़रा भी नहीं बदली। मेरा विश्वास अभी तक ज्योंका त्यों बना हुआ है। फिर भी मैं अपना विरोध वापस लेनेके लिअे क्यों खड़ा हुआ हूँ? आपने अिस प्रस्तावको पेश करनेवालेकी सुन्दर प्रार्थना सुनी। मैं और आप अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे महान नेता और असहयोगके कार्यक्रमके जन्मदाता गांधीजीके प्रति मौलाना मुहम्मदअलीसे ज्यादा वफ़ादार और कोअी मनुष्य अिस देशमें नहीं हो सकता। वे मुझसे जो मदद माँगे सो देनेको मैं तैयार हूँ। मैंने अपना हृदयमंथन किया और देखा कि अुन्हें सहायता देनेके लिअे यदि मैं कम-से-कम कुछ कर सकता हूँ, तो सिर्फ़ यही कि अपना विरोध वापस ले लूँ। वे मुझसे कहते हैं कि दो बरसकी गैरहाजिरीके बाद आनेवालेकी स्थितिका तुम्हें ख़याल करना चाहिये। अब तक अुन्हें दो साल तक बाहर रहनेवालोंकी मुश्किलोंका भी अन्दाज हो गया होगा और मैं आशा रखता हूँ कि जैसे मैं अुनके प्रति समभाव रखता हूँ, वैसे ही वे भी मेरी तरफ रखेंगे। आपने देखा है कि नौजवान बरदाचारीका दिल चूर-चूर हो जाता है। मैं जानता हूँ कि मेरे अिस रवैयेसे सैकड़ोंके दिल चूर-चूर हो जायँगे। अिस बातका मुझे अभी तक विश्वास नहीं हुआ है कि अिस समझौतेसे असहयोगको मार्मिक चोट नहीं लगेगी। परन्तु जैसे बरदाचारी भविष्यमें निराशा देखते हैं और सोचते हैं कि मुहम्मदअली कोकनाड़ा कांग्रेसमें कहींके न रहेंगे और भविष्यमें देश फिरसे असहयोग पर आना चाहेगा तो भी नहीं आ सकेगा, वैसे मैं भविष्यमें निराशा नहीं देखता। मैं खुद तो मानता हूँ कि थोड़े समयकी मुल्तवीसे फ़ायदा होगा। आज असहयोगके लिअे वातावरण नहीं है। अेक दूसरेके बारेमें संदेह है, प्रेमभाव नहीं है। यह प्रेमभाव स्थापित करनेका प्रयत्न है। अिन कारणोंसे मैंने तय किया है कि अिस प्रस्तावका न तो समर्थन किया जाय और न विरोध ही। जो मेरे मतके हैं अुनसे मेरा अनुरोध है कि वे कम-से-कम अितना ज़रूर करें, जितना मैं कर रहा हूँ। अिस सारे समयमें देशके बड़े

नेताओंका विरोध करना दुःखद काम था और आज वह विरोध छोड़ देना पड़ रहा है सो भी अुतना ही दुःखद है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप अिस दुःखद स्थितिमें से निकलें। मैं तमाम जिम्मेदारी मौलाना मुहम्मदअलीके सिर पर डालता हूँ। मेरे मित्र जमनालालजी और गंगाधरराव देशपांडे, जो अिस सारे समय विरोधमें मेरे साथ शामिल रहे हैं, वे भी मेरे जैसी ही राय रखते हैं। अब मैं बैठ जाता हूँ और अन्तमें साफ शब्दोंमें कहता हूँ कि मैं अिस प्रस्तावका न तो समर्थन करता हूँ और न विरोध ही।

नवजीवन, १८-९-१९२३

२४

बोरसद सत्याग्रहकी शुरुआत

[बोरसद तहसीलमें हैडिया* कर के विरुद्ध सत्याग्रहका विचार करनेके लिअे बोरसद तहसील परिषद हुअी थी। अुसकी पहली रातको बोरसद निवासियोंकी सभामें दिया गया भाषण।]

कल परिषद होनेवाली है। अुसका अुद्देश्य क्या है सो हम आज रातको सोच रखें, ताकि वहाँ निर्णय करना आसान हो जाय। प्रश्न बड़ा गंभीर है। धारासभाकी बैठक होगी और वहाँ हमारी फरियाद की जायगी, अिस प्रतीक्षामें बैठे रहनेसे काम नहीं चलेगा। वह तो ठेठ फरवरीमें होनेवाली है। आप डाकुओंके साथी हैं, हत्यारे डाकुओंकी मदद करते हैं, अैसा खुला अिलज़ाम आपके सिर लगाकर सरकारने आप पर दो लाख चालीस हज़ारका जुर्माना लाद दिया है। अब तक आपको दो-चार डाकुओंका ही कष्ट था। अुन्होंने बहुतसे डाके डाले और कितने ही खून किये। अिस दुःखका अंत होनेसे पहले ही यह दूसरा दुःख आ पड़ा। तरह-तरहके अत्याचार करनेवाली पुलिस गाँव गाँव पहुँच गअी और अुस पर यह दो लाख चालीस हज़ारका दंड! डाकू तो आपके यहाँ आकर रुपया छीन ले जाते थे, मगर ये डाकू तो कहते हैं कि हमारे यहाँ आकर रुपया दे जाओ; और साथ ही यह भी कहते हैं कि तुम डाकुओंके साथी हो। अेक कष्ट था, अुससे छुड़वानेके बहाने यह दूसरा ही कष्ट!

दरबार श्री गोपालदासका कहना मानकर अभी तक आप लोग जुर्माना अदा करनेसे रुके हुअे हैं। अब जुर्माना दिया जाय या नहीं, अिसका कल निर्णय करना है। परन्तु अुससे पहले आज रातको सब विचार कर लें। अिसमें

* अतिरिक्त पुलिसका खर्च पूरा करनेके लिअे लोगोंपर लगाया गया कर।

पाखंडसे काम नहीं चलेगा; यह रास्ता कष्ट-सहनका है, संयम और शांतिका है। यह काम कोअी आर्थिक लाभके लिअे नहीं करना है; अिसलिअे करना है कि फिर कोअी आपको डाकुओंके साथी न कह सके — स्वाभिमानके लिअे करना है। यदि आपको अपनी अिज्जत प्यारी हो, यदि आप चोर-डाकुओंके साथी न हों, बल्कि सीधे-सादे और सच्चे आदमी हों, तो बेधड़क होकर यह कर न देनेका निश्चय करें।

यह लड़ाअी बोरसदमें ही शुरू हो और बोरसदके ही लोग अगर पीछे हट जायँ, तो दूसरे सभी पीछे हट जायेंगे और अुसका पाप आपको लगेगा। सरकारी किताबोंमें लिखा है कि बोरसदके लोग डरपोक हैं, कायर हैं, नामर्द हैं और चोरीका माल रखनेवाले हैं। यह आरोप मिटा देनेके लिअे आपको दो-तीन काम करने होंगे।

सच्ची रक्षा

हरअेक गाँवमें पुलिसके जुल्मसे लोगोंकी रक्षा करनेके लिअे अेक-दो स्वयंसेवक रखने पड़ेंगे। वहाँ स्वयंसेवकोंको पुलिसके साथ लड़ना या अुन्हें गालियाँ देना नहीं है। वे लोग जो कुछ करें अुसकी रिपोर्ट ही अुन्हें यहाँ भेज देनी है। पुलिस जुल्म न करे तो वैसी रिपोर्ट दें। दूसरी बात यह करनी है कि सरकार जो जीमें आये करे, हम यह ज़ाहिर कर दें कि अपने हाथसे जुर्मानेका अेक पैसा भी हम नहीं देंगे। अीश्वरका नाम लेकर सच्चे दिलसे यह प्रतिज्ञा कीजिये। छोटी बुद्धि या आर्थिक लाभकी वृत्ति न रखिये। धार्मिक बुद्धिसे ही अिस लड़ाअीमें पड़िये और यह समझिये कि अिसमें स्वाभिमानकी रक्षा करनी है।

जो सरकार अेक-दो डाकुओंको न पकड़ सकी, वह अब आप सबको पकड़ने निकली है। अैसा शक्तिशाली है यह राज्य! जहाँ अैसा ज़बरदस्त राज्य हो, वहाँ हमारी क्या बिसात? पुलिसकी बन्दूकोंकी मददसे हम डाकुओंको पकड़ना चाहेंगे, तो अिसमें हमारी क्या रक्षा होगी? वे लोग तो पुलिसकी ही बन्दूकें छीनकर हमें मारेंगे। हमें तो डाकुओंकी ही बन्दूकें छुड़वानी चाहियें। अिस तहसीलमें डाकू हमेशासे ही पैदा होते आये हैं। अुन्हें मिटानेके लिअे सरकारका जाब्ता सच्चा अुपाय नहीं; अुसका अेक यही अुपाय है कि हम ख़ुद सुधरें। हमें अैशआराम छोड़कर अपना जीवन अुनके जैसा बना डालना पड़ेगा। ये डाकू भी आखिर मनुष्य हैं। वे अच्छे स्वभाव और अुम्दा गुणोंवाले होते हैं। अुन्हें राज्यके कष्टसे लाचार होकर डाकूपन अख्तियार करना पड़ता है। वे अज्ञानके कारण अिस रास्ते लगते हैं। अिसका अुपाय यही है कि हर गाँवमें अैसे स्वयंसेवक रखे जायँ, जो अपनी निःस्वार्थ सेवासे अुनकी जातिको वशमें करें और सुधारें। हमें अैसे कअी थाने क़ायम करने पड़ेंगे। बन्दूकका रास्ता ग़लत है। जो मौतसे डरता

है, अुसके लिअे बन्दूक है। बन्दूक होते हुअे भी पुलिस डरती है। डाकू मौतको जेबमें लिये फिरते हैं, अिसलिअे अुन्हें किसीका डर नहीं होता।

सरकारने क्या किया?

स० — अिस गाँवकी आबादी कितनी होगी?

सभामें से ज० — तेरह हज़ार।

स० — अिस तेरह हज़ारकी आबादीमें डाकुओंके साथी कितने होंगे?

ज० — दस-पन्द्रह।

अिन पन्द्रह आदमियोंके कसूरके लिअे सरकार १२,९८५ आदमियोंको दंड देती है। परन्तु अिन पन्द्रह आदमियोंका पुलिसने क्या किया? अुसने डाकुओंको नहीं पकड़ा, अुनके अिन पन्द्रह साथियोंको नहीं पकड़ा, बाकी आप लोग रहे सो आपको पकड़ लिया! अिस राज्यका कैसा अिन्साफ़ है! यह तो रामराज्य है! यहाँ कमिश्नर साहब आये थे तब क्या कर गये? गाँवके कोअी लोग अुनसे मिले थे?

ज० — वे तो बंगलेमें खाना खाकर चले गये।

वे तो बंगलेमें खाना खाकर चले गये! अब हम सारी जाँच करके आपको जुर्माना न देनेकी जब सलाह देंगे, तब वे कहेंगे कि फ़सादी लोगोंने यह लड़ाअी खड़ी कर दी। क्यों की, तो कहेंगे अुन्हें दूसरा धन्धा नहीं था। वे तो अेक दिन खाना खाकर चले गये; यहाँ भाअी मोहनलाल पंड्या और भाअी रविशंकर अेक-अेक गाँव घूम आये और प्रजाकी स्थिति अपनी आँखों देख आये। प्रजा विचार करती है कि बाबर अच्छा है या ये अतिरिक्त पुलिसके गिद्ध? नापामें अेक पुलिसवालेने अेक छोटे लड़केका गाल काट लिया! बाबरियाने हत्यायें की हैं, मगर अुसने अैसा कृत्य नहीं किया। सरकारने अुस सिपाहीको बरखास्त कर दिया, मगर अुस लड़केका गाल काट लिया, अुसका क्या हुआ?

यदि सरकारने यह घोषित किया होता कि आजकल हमारी स्थिति बहुत बुरी है, पुलिस रखनी चाहिये, मगर अुसे वेतन देनेके लिअे खज़ानेमें रुपया नहीं है, आप चंदा करके रुपया दे दीजिये, तो हम चंदा करके रुपया दे देते। मगर वह तो चोरके साथी बताकर दण्ड देती है। अिस प्रकार डाकुओंके साथी कहलाकर तो हम अेक पाअी भी नहीं दे सकते।

चेतावनी

परन्तु अिस लड़ाअीकी गम्भीरताका विचार करें। अगर आपसमें ही लड़ना हो, तो पहले ही विचार करके छोड़ दें। बोरसदके सिर पर बड़ी ज़िम्मेदारी है। जैसा बोरसद करेगा वैसा ही दूसरे गाँववाले करेंगे। अगर आप

हिम्मत हार गये तो सब खराब होंगे। अब तक आप लोगोंने विचार तो कर ही लिया होगा, अिसलिअे मैं बोरसद शहरका विचार जानना चाहता हूँ। कर न देनेका जिनका निश्चय हो वे हाथ अुठायें। (सबके हाथ अुठ गये।)

आपका अगर यही विचार हो, तो अब मेरी अेक सलाह है: अिस काममें खूब सावधानी रखनेकी ज़रूरत है। अपने पर संयम रखा जाय। सरकारके आदमी दंगा करानेकी कोशिश करेंगे। यह सीख लीजिये कि किसी भी हालतमें दंगा हरगिज़ न किया जाय। अिस लड़ाअीमें जीतकी कुंजी शांति और अहिंसा ही है।

दो-तीन रुपयेकी कोअी बड़ी बात नहीं है। हम कोअी भिखारी नहीं हैं कि दो-तीन रुपये फेंक न सकें। परन्तु सरकार तो लुटेरोंके साथी कह कर हमसे रुपया लेना चाहती है। सरकार अपनी गरीबी मंजूर करे और यह ज़ाहिर करे कि अुसकी सत्ता खतम हो गअी है, तो हम अपना बन्दोबस्त खुद कर लेनेको तैयार हैं।

गुलाबराजा

'टाअिम्स' पत्र अेक लेखमें कहता है: महात्माजीने जो आंदोलन किया अुससे हुकूमतका रोब नहीं रहा और अिसीलिअे डाकू पैदा हो गये हैं। परंतु वह गुलाबराजा जब डाके डालने निकला, तब तो गांधीजी हिन्दुस्तानमें आये भी नहीं थे। अुस समयके कलेक्टर वुडको मारनेके लिअे वह घूमता था, क्योंकि वह गुलाबराजाको सज़ा करवाना चाहता था। कलेक्टरका डेरा सिंगलाव गाँवमें था। वहाँ अुसने सुना कि गुलाबराजा गायकवाड़ हदमें डाके डाल रहा है। यह खबर थी कि अंग्रेज़ी पुलिसकी अुसे मदद है। अुसने अिसकी जाँच शुरू की। अुस वक्त गुलाबराजा ज़रीदार साफ़ा बाँधे और कमर कसे हुअे पास ही खड़ा था। अुसने कहा: मैं हूँ गुलाबराजा। वुडने कहा: तेरे हाथ खुले कैसे हो सकते हैं? तुझे तो बेड़ियाँ पहनानी चाहियें। गुलाबराजा बोला: पकड़ा जाअूँ तब तेरे अधिकारमें जो हो सो कर लेना। आज तो मैं राजा हूँ। बादमें कलेक्टरके कहनेसे अुस पर मुकद्दमा खड़ा किया गया। तहसीलदारके सिखानेसे थाने पर अेक बनियेने गुलाब राजाको गालियाँ दीं। अिस पर गुस्सेमें आकर अुसने अुसके सिरमें अेक कंकर मारा। अिस बात पर मुक़दमा चला। गुलाबराजाने मुझे वकील बनाया। मुक़दमेमें कुछ हो सके अैसा नहीं था, लेकिन कलेक्टरने बड़े जजसे मिलकर अुसे नौ महीनेकी सजा दिलाअी। अुसे अिसकी खबर लग गअी, तो वह अदालतमें हाज़िर ही नहीं हुआ और अुस दिनसे अुसने डाके डालना शुरू कर दिया। अुसके बाद अुसने बावन डाके डाले हैं और पच्चीस-तीस खून किये हैं। जिस पुलिस सुपरिण्टेण्डेंटने अुसे सताया था, वह तो लम्बी छुट्टी लेकर

चला गया ! कलेक्टरको रोज़ खबर जाती थी कि गुलाबराजा वल्लभभाअी वकीलके घर रोज़ रातको आता है। अुसने मुझे बुलाया और बड़े-बड़े ओहदे देनेके अनेक प्रलोभन देकर अुसे पकड़वा देनेके लिअे कहा। मैंने कहा : मैं थोड़ा-बहुत क़ानून जानता हूँ। मेरे घर वह आता हो, तो मुझे खुद ही ज़ाहिर करना चाहिये और न करूँ तो जुर्म माना जायगा, यह मैं जानता हूँ। लेकिन मैंने अुसे अेक सलाह दी कि आपकी बन्दूकें निकम्मी हैं — दो धारिये (अेक तेज धारदार शस्त्र) बनवा कर रखें। कलेक्टरने तुरंत धारिये बनवा लिये। बादमें गुलाबराजा गायकवाड़में पकड़ा गया।

सफेद टोपीवाले डाकू

वैसे महात्माजीके आन्दोलनमें ये खादीवाले नये डाकू निकले हैं यह सच है, और ग़रीब लोगों पर जहाँ-जहाँ सरकारका जुल्म होता होगा, वहाँ ये डाकू पहुँच जायेंगे। नौजवान स्वयंसेवकदलमें तुरंत शामिल हो जायें यह ज़रूरी है। जुल्मके हरअेक स्थान पर अुन्हें खड़ा कर देना पड़ेगा।

सरकार अगर डाकुओंको माफी दे दे, तो वे कल ही प्रगट हो जायँ। मगर अुसके वचन पर किसीको विश्वास हो अैसा कहाँ है? सरकारको अतिरिक्त पुलिस रखनी पड़े, तो वह अपने खर्चसे रखनी चाहिये। गायकवाड़ने अपने ही खर्चसे रखी है, और जब हमें स्वराज्य मिल जायगा, तब अिस ढंगसे हमारा शासन नहीं चलेगा। हमें तो डाकुओंको सुधार लेना पड़ेगा। अिस जिलेकी पाटणवाड़िया और बारैया जैसी ताकतवर जातियोंको सुधारना पड़ेगा। अिन लोगोंमें ताकत है, बुद्धि भी है, मगर ज्ञान नहीं है। अुन्हें कोअी चोरीका शौक़ नहीं है। वे दुर्भाग्यसे अैसी स्थितिमें पड़ जाते हैं। अुन्हें सुधारनेके लिअे सत्य मार्ग पर चलनेवाले स्वयंसेवकोंको अुनके बीचमें आश्रम बनाकर रहना चाहिये। जो पढ़-पढ़कर शहरोंमें चले जाते हैं, अुन्हें शहरका रास्ता छोड़कर सेवा-कार्यके लिअे वापस गाँवमें आना पड़ेगा।

संगठन कीजिये। अीर्ष्या या चुगलीका त्याग कीजिये। अेक नावमें बैठे हैं अैसा मानकर चलेंगे, तो अिस लड़ाअीमें ज़रूर जीत होगी। सरकार अपनी ताक़तसे भले ही ले ले, मगर हम अपने हाथसे जुर्माना हरगिज़ नहीं देंगे। अैसा दृढ़ निश्चय आप करेंगे, तो कल दूसरे गाँवोंके लोग आयेंगे, अुन्हें भी हम लड़ाअीमें शामिल होनेके लिअे समझा सकेंगे।

नवजीवन, ६-१२-१९२३

२५

बोरसदके डाकू

[ता० २-१२-१९२३ को बोरसद तहसील परिषदमें सभापति-पदसे दिया गय भाषण ।]

अिस परिषदमें पहला निर्णय हमें यह करना है कि हमारा ध्यान कांग्रेसकी तरफ़ है या धारासभाकी तरफ़ । जब तक हम यह फैसला न कर लेंगे, तब तक हम यह लड़ाअी जीत नहीं सकते। भेड़ोंके रेवड़की तरह ३३ करोड़ पर दो लाख विदेशी जो राज कर रहे हैं, अुनके जुल्म-ज्यादतियोंसे लोगोंको छुड़ानेका अुपाय मुट्ठीभर पढ़े-लिखोंके हाथमें नहीं, आपके ही हाथमें है । थोड़ेसे पढ़े-लिखे लोग सरकारके आदमियोंके साथ, अुन्हींकी जमाअी हुअी शतरंज पर, अुन्हींकी भाषामें हरानेका दावा करेंगे, तो यह बात नहीं होगी । अिस बारके चुनावोंमें अिस बातका अनुभव अच्छी तरह हो गया है । जो वर्ग वहाँ पहले जाता था वह नष्ट हो गया है, और दूसरे वर्गका प्रवेश हो गया है । अुन्हें आपने भेजा है, मगर वे धारासभामें जानेसे पहले तय कर गये हैं कि धारासभाओंसे कुछ नहीं मिलेगा; अुन्होंने कहा है कि धारासभा स्वराज्य लेनेका स्थान नहीं है, फिर भी सरकारकी हाँ में हाँ मिलानेवाले वहाँ जाकर सरकारके साथ सहयोग करते हैं, अिसीलिअे हम अुन्हें निकालकर धारासभाओंको भंग करके सरकारके साथ असहयोग करनेवाले हैं। कांग्रेसको अुनकी अिस तोड़नेकी बात पर विश्वास नहीं, मगर वह कहती है कि तुम्हें अैसा विश्वास हो तो तुम खुशीसे जाओ । अब वे तोड़ सकते हैं या नहीं तोड़ सकते, अिससे हमें वास्ता नहीं । अिसलिअे अब हम धारासभाओंकी बात भूल जायँ । धारासभा हमें अपंग बनानेवाली चीज़ है। दो घोड़ों पर सवारी करने लगेंगे, तो हम ज़रूर गिरेंगे। युद्धके लिअे रवाना होनेसे पहले ही दोनोंमें से अेक घोड़ा चुन लें । मैदानमें जानेके बाद जो योद्धा घोड़ेके चुनावका विचार करने बैठता है, वह ज़रूर हारता है । अिसलिअे पहले यह जाँच कर लीजिये कि कौनसा घोड़ा स्वराज्य तक पहुँचायेगा । अपनी ताकत वहाँ तक पहुँचायेगी या दूसरेकी आशा, यह निर्णय करके अेक घोड़े पर सवार होकर मैदानके लिअे रवाना हों । धारासभामें जाकर कर माफ़ करानेकी आशा न रखिये । धारासभाको तो अभी दो महीनेकी देर है । यह गलत बाजी है । अगर आप साफ़ कह दें कि अिस अतिरिक्त पुलिसका कर हम नहीं देंगे, तो आपका सरकारके साथ सीधा सम्बन्ध हो जायगा । और वही असली घोड़ा है ।

महात्माजीका रास्ता

महात्माजीने हमें काम करनेका सीधा रास्ता बता दिया है। अिस रास्तेके बारेमें अुनके जेल चले जानेके बादसे हममें शंका और अश्रद्धा आ गअी है, और अिसलिअे काम आगे नहीं बढ़ता। अुन्होंने कहा था कि सरकारके साथ सहयोग छोड़ दो, क्योंकि अुसका राज्य हमारे सहयोगसे ही टिका हुआ है। आज अिस अतिरिक्त पुलिसका दो लाख चालीस हज़ार रुपयेका जो दण्ड हमारे सिर पर लाद दिया गया है, अुसमें भी हमारा ही हाथ है। पुलिसके आदमी भी हमारे ही हैं। आप डाकुओंको आश्रय देते हैं, यह खबर देनेवाले भी हमारे ही आदमी हैं। आज तो खेड़ाके कलेक्टर भी हमारे ही अेक सिंधी भाअी हैं। अब जो लोग आपसे जुर्माना वसूल करके आपको डाकुओंके साथी क़रार देनेवाले आयेंगे, वे भी आपके ही आदमी होंगे। अिस प्रकार जो राज्य हमारी ही मदद पर निर्भर रहकर हम पर जुल्म कर रहा है, अुसकी संगत छोड़ देना ही सच्चा मार्ग हो सकता है। पढ़े-लिखे लोग अपने स्वार्थको नहीं छोड़ सकते और स्वार्थके वश होकर सरकारको मदद देते रहते है। आप अुस गुलामीकी शिक्षासे बचे हुअे हैं। आप क्या करेंगे? आप अपने शरीर परसे और घरमें से विदेशी कपड़ेको निकाल डालिये; विदेशी कपड़ा पहनकर आप विदेशी लोगोंके गुलाम बन गये हैं। विलायतके लोग यहाँसे ५ करोड़की कच्ची कपास ले जाते हैं और अुसका साठ करोड़का कपड़ा बनाकर वापस भेजते हैं। अिस तरह वे आपका जो धन हरण कर लेते है, अुसी धनसे वे लोग आपके कमिश्नर और कलेक्टर भेजते है, तोप और बन्दूक भेजते हैं और आप पर हुकूमत करते हैं। अिससे छूटनेका सरल अुपाय यही है कि देशमें जितना कपड़ा बने अुतना ही पहनें। अितना ही नहीं, बल्कि आपके अपने ही खेतमें पैदा की हुअी कपास हो, आपके ही घरमें आपकी स्त्री, बहन या माँने अुसका सूत काता हो और आपके ही गाँवके जुलाहेने अुसे बुना हो, वही कपड़ा आप पहनें। अैसा करेंगे तो आपके गाँवका रुपया गाँवमें ही रहेगा। और जैसे ही साठ करोड़ रुपये हर साल यहाँसे विलायत जाना बन्द हो जायँगे कि तुरन्त ही अिन लोगोंके सब फ़साद खतम हो जायँगे। हमारे अकाल भी बन्द हो जायँगे। अकाल बन्द होने पर गरीब लोगोंको रोटी मिलेगी और चोरी-डाके अपने आप बन्द हो जायँगे। हम धर्मका, पुण्यका रास्ता छोड़कर अधर्मके और पापके रास्ते लग गये हैं। गांधीजीने कहा है कि अधर्मका रास्ता छोड़ो और स्वराज्य चाहिये तो पढ़े-लिखे लोगोंकी आशा छोड़ो और चरखेको अपनाओ। गांधीजीका सन्देश सबके कानोंमें पड़ा ज़रूर है, मगर अभी तक हमारी नींद नहीं खुली। अिसीलिअे महात्माजी जेलमें बैठे-बैठे भी चरखा चलाते रहते हैं और जो कोअी जेलसे बाहर आता

है, अुसके साथ अेक ही सन्देशा भेजते हैं कि मैं जो कर रहा हूँ, वही तुम भी करो। हम अुनकी बात मानेंगे तब अिस देशमें अकाल नहीं होगा, लूट-पाट नहीं होगी और अुस समय अिस देशमें रामराज्य होगा।

जाँच

बोरसद तहसीलमें जो खास स्थिति पैदा हो गअी है, वह अिस परिषदके बुलानेका मुख्य कारण है, और अिसीलिअे परिषद जल्दी करनी पड़ी है। दिल्ली कांग्रेससे लौटते ही पता चला कि सरकारने यहाँ कैसी नीति ग्रहण की है, और गुजरात प्रांतीय समितिने तुरंत ही श्री मोहनलाल पंड्या और साथ ही श्री रविशंकर, अिन दोनोंको तहसीलमें दौरा करके जाँच करने और यह राय देनेके लिअे भेजा कि क्या क़दम अुठाने चाहिये। डाकू कौन हैं, वे किस कारण डाकू बने, वे कैसे अपराध करते हैं, सरकारी पुलिस अुन्हें क्यों नहीं पकड़ती, लोगोंकी रक्षा पुलिस क्यों नहीं करती, सरकार सारा दोष रैयतके मत्थे क्यों मढ़ती है, लोगोंको अतिरिक्त पुलिस पसंद है या नहीं और लोग कर देनेके लिअे रज़ामंद हैं या नहीं, अिन सारी बातोंकी जाँच करके रिपोर्ट देनेका काम अुन्हें सौंपा गया। अिन दो भाअियोंने अेक-अेक गाँवका दौरा करके हक़ीक़त मालूम की और कल अुन्होंने अपनी रिपोर्ट पेश कर दी है। अुस परसे प्रांतीय समितिने जो निश्चय किया है वह मैं आपको बताअूँगा। मगर अुसे बतानेसे पहले मैं खुद आपकी राय जान लेना चाहता हूँ। अिन दो भाअियोंकी रिपोर्ट परसे मुझे जो हाल मालूम हुआ है वह पहले आपसे कहता हूँ। सन् १९१७ में गोळेल गाँवमें बाबर नामका पाटणवाड़िया पहले पहल डाकू बना। शुरूमें तो वह मामूली, तुच्छ अपराध करता था। जब सरकार अपराध नहीं पकड़ सकती या जब सरकार किसीको ज़रूरतसे ज्यादा सज़ा देती है, तब वह आदमी मनुष्य न रह कर राक्षस बन जाता है। यह डाकूपन नहीं, राक्षसपन है। डाकूपन तो ढसाके दरबारका कहा जायगा। जो आदमी राज्यके क़ानूनको न माने और जनताकी रक्षा करनेके लिअे राज्यके अन्यायी क़ानूनोंका विरोध करे, वह सच्चा डाकू है। यह बाबर आज तक पकड़ा नहीं गया और छोटे-मोटे जुर्म करता फिरता है। अुसे पकड़नेके बजाय पुलिसने लोगोंके विरुद्ध रिपोर्ट की कि लोग अुसके साथ मिले हुअे हैं। अिस पर से तीन साल हुअे खड़ाणा और जोगण नामके गाँवोंमें अतिरिक्त पुलिसके दो थाने डाल दिये गये हैं। पुलिसकी रिपोर्ट यह थी कि अिन दो गाँवोंके पाटणवाड़िया और बारैया लोग डाकुओंकी मदद करते हैं। अिन गाँवोंमें जो थाने रखे गये, अुनके लिअे दंड भी अिन्हीं जातियों पर लादा गया।

भीतरी रहस्य

मगर अिस अतिरिक्त पुलिसने लोगोंकी कैसी रक्षा की, अिसका सच्चा हाल मेरे पास आया है। जोगण गाँवमें ही बाबर देवाने दिन दहाड़े शीभाअी नामके आदमीका खून कर दिया। फिर भी पुलिसकी रिपोर्ट तो यही क़ायम रही कि लोग डाकुओंकी खबर नहीं देते। गोळेलमें अुसने पुलिसके आदमियों पर ही हमला किया। अैसी हालतमें अतिरिक्त पुलिस जनताकी क्या रक्षा कर सकती है? खड़ाणा और जोगणके लोग कलेक्टरके पास गये और कहा कि हमसे यह कर नहीं दिया जाता। डाकुओंका जुल्म सहा जा सकता है, मगर यह जुल्म नहीं सहा जाता। तहसीलदारने भी रिपोर्ट की कि अिन लोगोंकी स्थिति अैसी है कि अिनसे कर वसूल करना असंभव है। पिछली ३० अप्रेलको अतिरिक्त पुलिसकी निश्चित अवधि पूरी होती थी। अुस वक्त तहसीलदारने यह राय दी और कहा कि अिसका कारण लोगोंकी अुद्दंडता नहीं है, परन्तु अुनमें शक्ति ही नहीं रही; अगर तकाज़ा करेंगे, तो लोग गाँव छोड़कर चले जायँगे। तहसीलदारकी रिपोर्ट मेरे पास है। अुधर ज़िला पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टने तहसीलदारसे बिलकुल अलग यह रिपोर्ट की कि अतिरिक्त पुलिसके थाने क़ायम रखने चाहिये। अुसके कारण ये बताये कि बाबर देवा और अुसकी टोली अभी तक गिरफ्तार नहीं हुअी है; अुसने खबर देनेकी शंका होनेसे अतिरिक्त पुलिसके देखते-देखते अपनी स्त्री और दूसरे संबंधियोंकी ७ हत्याअें कर डाली हैं; मगर पुलिस कुछ न कर सकी। दूसरा कारण वे यह देते हैं कि डाकूने जोगणमें शीभाअीको दिन दहाड़े मार डाला है, फिर भी कोअी शहादत नहीं देता, अिसलिअे मुक़दमा नहीं चल सका। जो पुलिस वहाँ बैठी है, वह तो सबूत दे नहीं सकती; और सरकार लोगोंसे शहादत मांगती है! तीसरा कारण यह देते हैं कि जोगणके पाटणवाड़िये बाबरको अपने खेतोंमें आश्रय देते हैं और अुसके संबंधी अुसकी कोअी खबर देनेके बजाय अुसे खाने-पीनेकी मदद देते हैं। चौथा कारण यह है कि सुपरिण्टेण्डेण्टको मालूम हुआ है कि बाबर खड़ाणा गाँवमें आता है। पाँचवाँ कारण यह है कि खड़ाणा और दूसरे गाँवोंके लोग बाबरकी कुछ भी खबर नहीं देते। छठा कारण यह है कि अतिरिक्त पुलिसका अितना ज़ाब्ता न होता, तो खड़ाणाके कितने ही पाटणवाड़िये लोग बाबरकी टोलीमें मिल गये होते। अैसे कारण देकर पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट कहते हैं कि अतिरिक्त पुलिसके थाने क़ायम रखना ज़रूरी हैं। अब यह रिपोर्ट पढ़ कर कलेक्टरने कमिश्नरको तीसरी ही रिपोर्ट की। अुनके काग़ज़ात भी मेरे पास हैं। वे सिफारिश करते हैं कि अिन तीनों गाँवोंसे थाने अुठा लिये जायँ, क्योंकि अतिरिक्त पुलिस कोअी रक्षा नहीं कर सकती। मगर वे यह भी कहते हैं कि सारी बोरसद

तहसीलमें अपराध बहुत बढ़ गये हैं, डाकू बढ़ गये हैं, अिसका अिंतज़ाम करना चाहिये। अुन्होंने कहा है कि हमारी और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी अेक कान्फ्रेन्स अिस मामले पर विचार करनेके लिअे हुअी थी। अिस कान्फ्रेन्समेंसे ही सब कुछ पैदा हुआ दीखता है। वे लिखते हैं, अिन दो गाँवोंका ही दोष नहीं है, तहसीलमें अैसे बहुतसे गाँव हैं जो खबर नहीं देते। अुनकी मैं अलहदा रिपोर्ट करूँगा, मगर अिससे पहले बाबरके साथ संबंध रखनेवाले लोगों पर ज़मीनके मामले चलाये जायँ और देखा जाय कि क्या होता है। फिर यही कलेक्टर साहब लिखते है कि लोग यदि खबर नहीं देते हों, तो केवल डरसे ही। अब कमिश्नर साहब और चौथी ही रिपोर्ट करते हैं। अिन्हें अुन तीनोंकी राय ठीक नहीं लगी। थाने क़ायम रखनेके लिअे पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टके कारण अिन्हें योग्य मालूम हुअे, अिसलिअे अिन्होंने कहा कि अिन दोनों गाँवोंमें अेक साल और अतिरिक्त पुलिस रखी जाय और अुसका जुर्माना वसूल किया जाय।

अलियाकी दोस्ती

अिस प्रकार जून १९२३ में अेक वर्षके लिअे ही अतिरिक्त पुलिस रखनेका निश्चय हुआ था। अुसके बाद अब अेकदम सरकारका विचार क्यों बदल गया और सारी तहसीलमें सभी जातियोंको ज़िम्मेदार मानकर थाने कायम करनेका विचार कैसे पैदा हुआ, अिसके कागज़ात मेरे पास नहीं आये। परन्तु अेक बात निश्चित है। जितने लोग मिले हैं, अुन्होंने यही बात कही है। अलीभाअी नामका अेक मुसलमान डाकू है। जब बाबर किसी भी तरह नहीं पकड़ा गया, तब पुलिसने अिस डाकूसे दोस्ती की और डाकूको पकड़नेके लिअे डाकूके साथ संधि की और अुसे बंदूकें दीं। जो खूनी और लुटेरा था अुसके हाथमें अेक दूसरे लुटेरेको पकड़नेके लिअे बंदूकें देनी पड़ें, यह सरकारके लिअे कितनी शर्मकी बात है! यह तो सरकारका नहीं, डाकुओंका ही राज्य हुआ। डाकुओंको मदद देनेके कारण लोगों पर जुर्माना किया गया। अब सरकारने डाकूकी मदद की, अुसके हाथमें बंदूकें दीं, अिसकी क्या सज़ा दी जाय? अुसे दंड देनेवाला तो अेक अीश्वर ही है। सरकारका रोब कम हो रहा है, अुसके दिन लद रहे हैं। नहीं तो अुसे अिस तरह हत्यारेसे मित्रता नहीं करनी पड़ती। हथियार हाथमें आनेके बाद अुसी आदमीने कितनी अधिक हत्याअें कीं और डाके डाले, यह बात सरकारसे छिपी हुअी नहीं है। सरकारका अुद्देश्य अुसकी मददसे बाबरको पकड़नेका होगा, मगर लोगोंको क्या पता कि सरकारका क्या अुद्देश्य था? सरकारको घोषणा करनी चाहिये कि अुसने भूल की है। अलीने जो-जो अत्याचार गरीब लोगों पर किये हों, अुनकी ज़िम्मेदारी सरकारकी ही है।

दूसरी बात यह है कि यह मुसलमान डाकू, डाकू नहीं था। ज़मीनके किसी झगड़ेमें अुसने गाँवके बीच ठीक दोपहरके समय अेक वकीलका खून कर दिया। खून करनेकी जगह कचहरीसे चौथाअी मील भी दूर नहीं होगी, फिर भी सरकार अुसे न पकड़ सकी। जब अैसा तूफानी आदमी यह देखता है कि सरकारमें अितनी अधिक कमज़ोरी है, और जब सरकारी पुलिसकी तरफ़से ही अुसे मदद मिलती हो, तो वह भी डाकू बन जाता है।

खबर देनेवालेका हाल

सरकार कहती है कि लोग डाकुओंकी खबर नहीं देते। बाबरियाने जो बाअीस हत्याअें की हैं, अुनमेंसे अेक भी पैसेवाला नहीं था। अिसलिअे अुसने लूटके लिअे हत्याअें नहीं कीं, मगर अिस शंकासे ही की हैं कि ये लोग अुसकी खबर देते हैं। अिस प्रकार बाअीस हत्याअें होने पर भी अगर सरकार कहती हो कि लोग खबर नहीं देते, तो अुसकी पुलिसके कितने आदमी मारे गये? अेक रावळियेको खबर देनेके कारण डाकूने पेड़से बाँधकर कीलें ठोक दीं। सरकारको यह दशा और कितनोंकी करानी है? यह देखा जा सकता है कि डाकूकी सूचना देनेमें कितना जोखम भरा है। अेक प्रथम श्रेणीके मजिस्ट्रेट वासदसे बोरसद आते थे, रास्तेमें डाकू मिल गया। डाकूने थप्पड़ मारकर अुनके हाथसे बन्दूक पटकवा ली। जान बचानेके लिअे अुन्हें कहना पड़ा कि मैं तो कारकून हूँ। जिस राज्यमें अैसे मजिस्ट्रेट हों अुस राज्यको क़ायम रहनेका कितना अधिकार है और अुसे लोगोंसे जुर्माना लेनेका क्या हक़ हो सकता है?

सरकारका दिवाला

अिस तमाम हकीक़तसे साबित होता है कि जनताका दोष नहीं है। सरकार यह जानती है। मगर सरकारके पास न रुपया है और न ताक़त। जब अिस तरह हत्यारे नहीं पकड़े जाते, तो आसपासके देशी राज्य अुसकी शक्तिका अन्दाज़ लगा लेते हैं। ये गाँव और दूसरे गाँव देशी राज्योंके साथ आसपासमें गुँथे हुअे हैं। देशी राज्योंमें अिन्हीं डाकुओंके आतंकसे प्रजाको बचानेके लिअे अतिरिक्त पुलिस रखी गअी है। तो फिर ब्रिटिश राज्य भी क्यों नहीं रखे? मगर देशी राज्य पुलिसका खर्च खुद अुठाते हैं, जब कि दिवालिये अंग्रेज़ोंको लोगोंसे रुपया अैंठना पड़ता है। सरकारको अपनी अिज्ज़त बचानी हो, तो खूनियोंको पकड़ना चाहिये। वे अभी तक नहीं पकड़े जाते, तो अब गाँव-गाँवमें बन्दूकवाले आदमी रखने चाहियें। मगर अुन्हें वेतन देनेको रुपया तो है नहीं। वह कहाँसे लाना? आपके पाससे। मगर अिसके लिअे आपका दोष बताना चाहिये। दोष बताये बिना लें, हमारे पास रुपया नहीं है यह कहकर माँगें, तो भी अिज्ज़त

जाती है। अिसलिअे आपका दोष निकाला कि आप लुटेरोंके साथी हो। अब हम क्या करें?

अिस जुर्मानेसे कुछ लोग मुक्त रखे गये हैं। वे कौन हैं? जिनका अिस अपराधमें सबसे ज्यादा हाथ है, जो अधिकसे अधिक सहायता देते हैं, वे मुक्त रखे गये हैं। अपराधियोंको पकड़नेका फर्ज सरकारी नौकरोंका है, मगर वे जुर्मानेसे बरी हैं। दूसरा वर्ग पादरियोंका है, जिन्हें डाकुओंके साथी कहा जाय, तो वे सरकारके खिलाफ़ बन्दूक लेकर खड़े हो जायँ। अुन्हें भी मुक्त कर दिया गया है! अुनके मातहत ढेड़ वगैरा अीसाअी बने हुअे जो लोग रहते हैं, अुनकी स्थिति तो हमारे जैसी ही है। चौकीदार और मुखिया लुटेरोंके हाथसे बचे हुअे हैं, सो अुन्हें भी मुक्त रखा गया है। मेरी जानकारी यह है कि अेक-अेक चौकीदार और पटेल जानता है कि बाबर कब कहाँ रहता है। मगर अुसे पकड़नेकी किसीकी हिम्मत नहीं होती। अिन सबको मुक्त रखा गया है। धारासभामें जानेवालोंको मुक्त नहीं किया गया। वे भी डाकुओंके दोस्त ही हैं। स्वागत-समितिके अध्यक्ष धारासभामें बैठने लायक करार दिये गये, मगर वे भी अिस जुर्मानेसे नहीं बच सके!

लड़नेवालेकी वृत्ति

अैसे राज्यमें हमें अपनी अिज्जत रखनी हो तो क्या करें, अिसका विचार करनेके लिअे आज गाँव-गाँवसे प्रतिनिधियोंको यहाँ बुलवाया गया है। सभी गाँवोंके आदमी यहाँ आ गये है। अब यह निश्चय कर लेना चाहिये कि यह जुर्माना अदा करना है या नहीं। मैं जानना चाहता हूँ कि आपकी राय क्या है? अगर आपका मत यह हो कि जुर्माना न दिया जाय, तो अुसका कारण पहले समझ लीजिये। ढाअी रुपयेकी बचत हो जायगी, अिस हलके विचारसे जुर्माना न देना हो तो अिस लड़ाअीमें पड़नेमें सार नहीं है। अगर यह लगता हो कि हम चोर-डाकुओंके साथी नहीं हैं और चक्रवर्ती सरकारको भी हमसे यह कहनेका हक़ नहीं है, तो ही लड़ाअी छेड़िये। फिर भले ही सरकार दो रुपयेके बदलेमें दस रुपयेका माल ले जाय। डाकुओंके साथी कहलाकर सरकारको ढाअी रुपये देनेके बनिस्बत डाकू लूट ले जायें यह अच्छा है। यह समझ लिया हो कि 'हम अीमानदार, अिज्जतवाले लोग हैं; डाकुओंके डरसे बचनेके लिअे हम डाकुओंके साथी होनेका स्वीकृति-पत्र अपने हाथों लिख कर नहीं देंगे; जैसे डाकू ले जाते हैं वैसे चाहो तो तुम भी आकर ले जाओ', तो ही लड़ाअी छेड़िये। यह महात्माजीका रास्ता है। अुन्होंने सिखाया है कि असत्य छोड़ो, चोरी छोड़ो, अनीति और अधर्म छोड़ो और निर्भय बनकर सच्चाअीके रास्ते पर चलो। अेक और बात याद दिलाता हूँ। लड़ाअीके दौरानमें सरकारके आदमी

और आपके दुश्मन आपको बहका कर फ़साद करानेका प्रयत्न करेंगे। आप दंगा बिलकुल न करें। महात्माजीकी लड़ाअीमें धारिये और लाठीका काम नहीं है; अुसमें हमारे साहसका ही काम है। सरकारको जितना मारना हो मार ले। आप गालियाँ देंगे या लाठी चलायेंगे, तो अुसके पास बहुत अुपाय हैं। डाकुओं को वह नहीं पकड़ सकती, मगर आपको तो फ़ौरन पकड़ लेगी। किसीको गाली देने या मारनेमें बड़प्पन नहीं, बड़पन है धर्मकी खातिर कष्ट सहन करनेमें। महात्माजीने सत्यकी खातिर अनेक दुःख अुठाये हैं और अब भी जेलमें बैठे हैं। अिसीलिअे लोग अुन्हें पूजते है। डाकू फाँसी पर लटकते हैं, तब लोग अुलटा कहते है कि अच्छा हुआ, पाप कटा।

ये दो बातें पसन्द हों तो अब मैं पूछता हूँ कि जिन्हें कर न देना हो, वे हाथ अुठा दें। (तमाम प्रतिनिधियोंने हाथ अुठाये।) सत्ताके सामने सयानापन बेकार है। मोमका हाकिम लोहेके चने चबवाता है। सरकारके साथ बराबरी कैसे की जाय, अिसलिअे कर दे दिया जाय। जिन्हें अैसा लगता हो वे बेशक हाथ अुठा दें। (विरोधमें कोअी नहीं था)

स्वयंसेवक-सेना

अब अतिरिक्त पुलिसकी अिज्ज़तके भी हमारे पास सबूत हैं। स्वागत समितिके अध्यक्षने अिन लोगोंको बाबरके दादा बताया है। वह तो चोरी-चुपके आपका रुपया ले जाता है और ये लोग खुल्लमखुल्ला सबके देखते हुअे लेते हैं। अभी अतिरिक्त पुलिसके आदमीने ही नापामें अेक आठ-दस सालके लड़केका गाल काट लिया, यह तो आप जानते ही है। अैसा तो बाबरियाने भी कभी नहीं किया। कितनी ही स्त्रियोंकी अिज्ज़त पर हाथ डालनेकी शिकायत भी आअी है। अब अगर हमें अपनी बहन-बेटियोंकी अिज्जत बचानी हो, तो अिस पुलिसको ठीक करना पड़ेगा। हरअेक गाँवमें कमसे कम अेक-अेक स्वयं-सेवक रखना पड़ेगा। गाँवके लोग अुसे रोटी देंगे, यह मुझे विश्वास है। जो जनता हज़ारों बाबाओंको रोज़ लड्डू और मालपुअे खिलाती है, वह अपने सेवकोंको रोटी देनेमें हरगिज़ संकोच नहीं करेगी; और गांधीजीका आदमी रोटी और नमकके सिवाय और कुछ माँगेगा भी नहीं। पुलिस जानती है कि सरकारने अुसे लोगोंको सज़ा देनेके लिअे रखा है, डाकुओंको पकड़ना है सो तो ठीक है। अैसी पुलिस रैयत पर जुल्म किये बिना कैसे रहेगी? कल ही अब्बास साहबको अेक सरकारी अफ़सरने कहा था कि सिपाहियोंके आदमियों द्वारा घोड़ोंके लिअे लोगोंके यहाँसे पूले लेनेकी खबर लगते ही मैंने वापस दिलवा दिये। लोग अर्ज़ी दें, तो जुल्म कम हों! मगर आप अैसी कोअी अर्ज़ी न दीजिये। जुल्मको रोकनेके लिअे पुलिस रखी गअी और अुसी पुलिसके जुल्मके लिअे आपको अर्ज़ी देनी

पड़े ! यह तो हमारे लिअे अिस पुलिसको स्वीकार कर लेनेके बराबर होगा । यह देख लेना तो खुद सरकारका फ़र्ज़ है । हमारी अर्ज़ी तो अेक अीश्वरको ही है कि हम सत्यके रास्ते पर चल रहे हैं, तू ही हमारी रक्षा करना । जिन्हें गरीब जनताको अुसके दुःखमें मदद देना अपना धर्म लगता हो, वे दरबार गोपालदासको अपने नाम दे दें । जब तक लड़ाअी चलेगी, वे बोरसदमें स्थायी रूपसे छावनी रखेंगे । नेता हमेशा छावनीमें मौजूद रहेंगे । हर गाँवसे पुलिसके जुल्मोंकी खबर स्वयंसेवक अुन्हें देते रहें ।

यहाँ आये हुअे आदमियोंसे मेरी प्रार्थना है कि अगर कोअी आज तक लुटेरोंको मदद देता रहा हो, तो यहाँसे निश्चय करके जाना कि यह काम बुरा है । अैसे करनेवाला सारी जाति पर जुल्मकी वर्षा करता है । सत्यके मार्गपर चलना हो, तो बुरेका त्याग करना चाहिये, चरित्र सुधारना चाहिये । बारैये और पाटणवाड़िये वगैरा लोग शराब न पीयें और दूसरोंको न पीनेके लिअे समझायें । मुझे खबर मिली है कि सरकारका अिरादा अिस सारी जातिको तहसीलमें से निकाल देनेका है । अैसा हो और सारी जातिको घर छोड़कर जाना पड़े, तो यह बहुत ही बुरी बात है । अिसमें ज़िलेकी बेअिज्ज़ती है । लुटेरोंका नाश करना चाहिये, मगर अेकके अपराधके कारण सारी जातिको देश निकाला देना अिस ज़मानेमें नहीं होना चाहिये । अिसलिअे आप खुद सुधरिये और खराब आदमियोंको समझाअिये कि तुम्हारा जुल्म हमसे बरदाश्त नहीं होता; बैठे हुअे तुम्हारा पेट भरना हम सहन कर लेंगे, मगर ये बुरे काम तुम छोड़ दो ।

अिस तहसीलमें आधी आबादी तो बारैया और पाटणवाड़िया वगैरा लोगोंकी है । जब तक ये लोग नहीं सुधरेंगे, तब तक सारे ज़िलेको कष्ट होगा । मगर अुन्हें सुधारना हमारा ही काम है । रास्तेपर लानेवाला मिल जाय, तो अेक बारैया भी हमारे ही जैसा संस्कारी और खानदानी बन सकता है । अिसके लिअे साधुओंको जाकर अुनके साथ रहना चाहिये । भगवे कपड़े पहननेवाले ही साधु नहीं होते । जो जनताकी सच्ची सेवा करते हैं, वे साधु हैं ।

अब दो शब्द बोरसद गाँवके लोगोंसे कहता हूँ । अगर बोरसद अपनी ताक़त दिखायेगा, तो अुसका असर देहातके लोगों पर भी पड़ेगा । जिस गाँवमें यह परिषद हुअी है, अुसकी ज़िम्मेदारी सबसे ज्यादा है । अुसे आपसकी फूट छोड़कर सरकारके साथकी लड़ाअीमें अेक हो जाना चाहिये ।

आज आपने जो निश्चय किया है, अुस पर दृढ़तासे डटे रहें । अीश्वरसे प्रार्थना कीजिये कि वह अिस लड़ाअीमें आपकी जीत कराये । मैं भी अीश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि आपको अिस धर्मकी लड़ाअीमें फ़तह मिले ।

नवजीवन, ९-१२-१९२३

२६

झूठे सबूत

[बोरसदमें सरकारने ही डाकुओंको मदद दी थी, फिर भी अुन्हें आश्रय देनेका दोष अुसने लोगोंके मत्थे मढ़ दिया था। अिस बारेमें सरकारके सबूत कितने झूठे थे, अिस पर सरदारने नीचेका लेख लिखा था।]

खेड़ा जिलेके बोरसद तहसील पर और आणन्द तहसीलके कुछ गाँवों पर अन्धेरगर्दी शुरू हो गअी है। लोगोंकी रक्षा करनेमें सरकार असमर्थ साबित हुअी है। लुटेरों और हत्यारोंके कष्टसे पीड़ित जनताकी रक्षा करनेके बजाय अुसे दोषी ठहराकर अुस पर ढाअी लाख रुपये जैसा भारी दण्ड लगाकर हर गाँवमें अतिरिक्त पुलिस बैठा दी गअी है।

सरकारने यह अन्यायी नीति शुरू करनेसे पहले अपना बचाव करनेका अुपाय किया। सरकारने लाखों रुपये खर्च करके अेक समाचार विभाग (अिन-फर्मेशन ब्यूरो) खोल रखा है। अिस विभागका अफसर अक्तूबर महीनेके शुरूमें आणन्द और बोरसद आया था। अिसके बाद तुरन्त ही खेड़ा जिलेके डाकुओं सम्बन्धी रिपोर्टें आअीं। अिन रिपोर्टोंके पढ़नेसे ही मालूम होता है कि वे सरकारी समाचार-विभागके अिस अफसरकी ही भेजी हुअी होनी चाहियें और वे नागपुरके कमिश्नर जैसे किसी स्थानीय अधिकारीकी ही दी हुअी होनी चाहियें, या अुनमेंकी तमाम बातें अुसे किसी अैसे अधिकारीसे ही मिली हुअी होनी चाहियें। अिस रिपोर्टके 'टाअिम्स ऑफ अिण्डिया' में प्रकाशित होनेके बाद तुरन्त ही अतिरिक्त पुलिस रखनेका सरकारका हुक्म निकला। अिस हुक्मसे ढाअी लाख जैसी भारी रकमका जुर्माना अिस अकालके वर्षमें अिन गरीब गाँवों पर लगा दिया गया और निर्दोष लोगोंको दोषी करार दे दिया गया।

१८ सालसे अूपरके हरअेक आदमीसे जुर्माना वसूल करनेका तय हुआ है। अिस अन्यायी हुक्मके अमलसे स्त्रियों तकको अलग नहीं रखा गया। किसी भी राज्यमें स्त्रियों पर अैसे हुक्म लागू नहीं होते, मगर अिस राज्यमें सरकार स्त्रियोंसे भी डाकुओं और हत्यारोंको पकड़वानेकी अपेक्षा रखती है। यह समझमें नहीं आता कि जिस राज्यमें डाकुओंको पकड़नेका फर्ज स्त्रियों पर पड़ जाता है, अुस राज्यमें पुलिसके लिअे क्या काम रह जाता है!

सरकारी समाचार-विभागको स्थानीय खबरें पहुँचानेके लिअे सरकारने जगह-जगह प्रमाणपत्र देकर अेजेन्ट मुकर्रर कर दिये हैं। अैसे अेजेन्ट आणन्द और बोरसदमें

भी हैं। अिस महकमेके अफसर जब आणन्द और बोरसदमें हालात जानने आये, तब अुन्होंने अपने ही अेजेन्टोंसे मिलनेका कष्ट किया होता तो थोड़ी बहुत हक़ीकत मिल जाती, मगर वे तो अुनसे मिले ही नहीं। तहसीलके किसी प्रमुख सज्जनसे भी मिलनेका कष्ट अुन्होंने नहीं किया। अिस प्रकार अुन्हें जो जानकारी मिली, वह तो सिर्फ़ अधिकारियोंसे ही मिली होगी। अितनीसी बातके लिअे अुन्हें बोरसद तक आनेकी ज़रूरत ही नहीं थी। अुन्होंने 'टाअिम्स ऑफ अिण्डिया' में भेजी हुअी अपनी रिपोर्टमें सिर्फ़ लोगोंको ही दोष नहीं दिया है, बल्कि खेड़ा ज़िलेकी सत्याग्रहकी लड़ाअीको भी अुसमें शामिल कर दिया है। बोरसद और आणन्द तहसीलके पिछले तीस वर्षोंके अपराधोंकी सूचीकी जाँच की जाय, तो मालूम होगा कि जब तक गांधीजी खेड़ा ज़िलेमें रहे थे और सत्याग्रहकी लड़ाअी हो रही थी, अुसी समयमें कमसे-कम अपराध हुअे हैं। मगर अिन साहबने तो यह खोज की है कि अपराधोंकी मात्रा आम तौर पर बढ़ जानेका कारण यह आन्दोलन है! खेड़ा ज़िलेकी सारी ठाकुर जाति पर 'क्रिमिनल ट्राअिब्ज़ अेक्ट' ('जरायम-पेशा जाति क़ानून') लगाया गया, तब तो गांधीजी हिन्दुस्तानमें आये भी नहीं थे। गुलाबराजाकी मशहूर टोलीने जब खेड़ा ज़िलेमें आतंक फैलाया था, तब तो सत्याग्रहका नाम भी किसीने नहीं सुना था।

ज़िलेके अधिकारी बदलते हैं, तो शासनकी नीति भी बदल जाती है। हरअेक अफ़सर अिन ठाकुर भाअियों पर नया प्रयोग आजमाता रहता है। कोअी 'क्रिमिनल ट्राअिब्ज़ अेक्ट' लगाकर सुबह-शाम हाज़िरी देनेको बाध्य करता है, कोअी जमानतके बहुतसे मुक़दमे चलाकर जेलें भर देता है, कोअी अुन पर जुर्माने करके अतिरिक्त पुलिस बैठा देता है और कोअी सारी क़ौमको ज़िलेसे निकालकर 'क्रिमिनल सेटल्मेंट' (अपराधियोंकी बस्ती) बसानेकी सिफ़ारिश करता है। मगर अिस क़ौमको सुधारनेकी या शिक्षा देनेकी सिफ़ारिश कोअी नहीं करता। सब अिस जातिको कुचलनेकी ही नीति ग्रहण करते हैं। किसीको पुलिसका दोष तो दिखाअी ही नहीं देता।

जब पिछले साल डाकुओंका आतंक बढ़ गया और अपराधोंकी मात्रा बढ़ गअी, तब मिस्टर गैरेट नामके कलेक्टरने, जो अभी अहमदाबादके कलेक्टर हैं, ज़िलेके प्रमुख और प्रतिष्ठित सज्जनोंकी अेक सभा करके असली कारण ढूँढनेका प्रयास किया। सभामें अुपस्थित अधिकांश लोग हमेशा सरकारको मदद देनेवाले ही थे, फिर भी अुन सबने अेक स्वरसे ज़िलेकी पुलिस और साथ ही मजिस्ट्रेटोंके खिलाफ खूब गुबार निकाले। ज़िलेकी अिस हालतके लिअे पुलिस और मजिस्ट्रेटोंकी कमज़ोरी और रिश्वतखोरी ही जिम्मेदार है और सरकारके [illegible]

आनेवाले अैसे बुरे अिन्तज़ामके कारण ही ज़िलेकी यह दशा हुअी है, यह लगभग सभीने अेक स्वरसे कलेक्टर साहबको सुना दिया।

अिस बात पर परदा पड़ गया और पुलिस या अधिकारीवर्गका कोअी दोष सरकारी समाचार-विभागके अफ़सरके कानों तक पहुँचा ही नहीं। सन् १९१९ में गांधीजीको रौलट अेक्टके आन्दोलनके समय पकड़ा, तब जो दंगे हुअे थे, अुसमें अिस ज़िलेमें कुछ जगहों पर तार तोड़ डाले गये थे। यह अपराध करनेवालोंको प्रमाणमें हलकी सज़ा हुअी थी, अिसलिअे लोगों पर बुरा असर पड़ा; अैसा वे अपनी ८-१०-'२३ की रिपोर्टमें 'टाअिम्स' में लिखते हैं! जब कि सच्ची बात तो यह है कि अुस समय असली अपराध करनेवाले तो पकड़े ही नहीं गये थे और निर्दोष आदमियोंको पकड़ लिया गया था। जिन व्यक्तियोंने दंगा रोकनेमें सरकारको मदद दी थी और जिन्हें आणन्दके ही थानेदारने अैसी मदद देनेके लिअे प्रमाणपत्र देनेकी कलेक्टर साहबसे सिफ़ारिश की थी, अुन्हीं आदमियोंको बादमें पकड़कर जेलमें बन्द कर दिया और जुर्म करनेवालों तथा कअी दूसरे निर्दोष मनुष्योंसे रुपया लेकर अुन्हें छोड़ दिया। अैसे थानेदारको अदालतसे अच्छा काम करनेका प्रमाणपत्र मिला! यह सारी बात पहले तो सरकारने मानी ही नहीं, परन्तु अुसे दो वर्ष बाद अिसे माननेको विवश होना पड़ा। अिस कामकी विशेष जाँच करनेके लिअे अेक अफ़सर मुक़र्रर किया। जाँचमें थानेदार द्वारा बहुतसे लोगोंसे रुपया अैंठनेका सबूत मिल गया और जब अुसी थानेदार पर मुक़दमा चलनेको हुआ, तब तो अुसने आत्महत्या कर ली। अैसी स्थितिमें सरकारको सहायता देना कितना जोखमका काम है, अिस बारेमें लोगोंने मि० गैरेटको खूब सुनाअी। मगर अैसी कोअी बात सरकारी समाचार-विभागके अफ़सरको नहीं मिली।

बोरसद और आणन्दके लोगोंने हज़ारों रुपये खर्च करके अपने जानमालकी रक्षा करनेके लिअे गाँव-गावमें रक्षक रखे हैं। अिसमें भी सरकारी समाचार-विभाग वाले लोगोंके दोष निकालते हैं। अुन्हें यह पता नहीं कि खेड़ा ज़िलेके सुपरिण्टेण्डेण्टने खुद ही विज्ञापन देकर लोगोंको अपना रक्षक रखकर बन्दोबस्त कर लेनेकी सलाह दी थी!

पुलिसको डाकुओंकी खबर देनेवाले या शहादत देनेवाले लोगोंकी निर्दयतासे हत्याअें हुअी हैं। किसीको पेड़से कीलें ठोककर मार डाला गया है, तो किसीकी नाक काट ली गअी है। फिर भी पुलिसने अुस खबरका अुपयोग करके डाकुओंको पकड़नेके बजाय खबर देनेवालोंके नाम डाकुओंको मालूम होने दिये। अितने पर भी लोगों पर यह अिलज़ाम लगाया गया है कि वे डाकुओंकी अित्तला नहीं देते। लोगों पर जुर्माना करके अतिरिक्त पुलिस

बैठानेका सरकार द्वारा निश्चय होनेके बाद ही समाचार-विभागवाले बोरसद और आणन्द आकर सरकारके निश्चयका समर्थन करनेवाली रिपोर्ट 'टाअिम्स' में छपाते हैं और अिसके बाद तुरंत ही सरकारके हुक्म जारी होते हैं; तब सरकारने ही अपने हाथ मज़बूत करनेके लिअे अिन्हें भेजा होगा, अिसके सिवाय और क्या अनुमान लगाया जा सकता है! और जब अिसी कामके लिअे आये हों, तो लोगोंसे मिलकर सच्चे हालात जाननेकी अिन्हें परवाह ही क्यों हो?

अैसे महकमे पर जनताके लाखों रुपये बेकार बरबाद होते हैं, यह स्पष्ट है। सरकारी अदालतोंमें झूठी गवाहियोंसे अन्यायका न्याय बन जाता होगा; मगर सत्यकी अदालतमें तो झूठे सबूतसे अन्याय दुगुना अन्याय ही बनता है।

नवजीवन, ९-१२-१९२३

२७

बोरसद सत्याग्रहका विजयोत्सव

[ता० १२-१-१९२४ को बोरसद सत्याग्रहके विजयोत्सवके निमित्त बोरसदमें हुअी सभामें दिया गया भाषण।]

अेक महीनेकी छोटीसी लड़ाअीमें ही आपने कितना महान बलिदान किया है, कितनी हिम्मत दिखाअी है, कितनी अेकता रखी है और कितना अुत्साह बताया है! यह सब करनेसे ही आप जो माँगते थे, वह सब प्राप्त कर सके। यह सब दरबार साहबके, पंड्याजीके या मेरे, किसीके बुद्धिचातुर्यसे आप नहीं पा सके हैं; मगर आज जेलमें बैठे हुअे हमारे गुरु और जगतके महान तपस्वीके बताये हुअे मार्ग पर चलनेसे ही यह फ़तह मिली है। अुनकी दी हुअी दीक्षाकी गुरुदक्षिणा तो अभी हमें देना बाकी ही है, यह तो हमने अुनके ऋणका ब्याज मात्र लौटाया है। जब तक वह ऋण अदा नहीं हो जाता, तब तक मुझे और आपको अपना सिर नीचा ही करना पड़ेगा। अुन्हें हम भूल गये हैं, नहीं तो आज डाकुओंकी बात ही कहाँसे होती? अिसीलिअे अब भूली हुअी बात हम फिर ताज़ा करें और अिस समय अपनी कमजोरियोंकी जाँच करके अुन्हें दूर करें। मुझे मालूम हुआ है कि आप विजयोत्सव मनानेवाले हैं, तो भले ही मनाअिये। मगर मेरी सलाह है कि अपने अुत्सवमें कुर्की करने आनेवालोंको भी भाग लेनेके लिअे बुलाअिये। हमारी लड़ाअी आसुरी नहीं है। अिसलिअे जब दुश्मनने हथियार डाल दिये हैं, तब आप अुसके साथ मुहब्बत कीजिये और पुलिसको भी अपने जलसेमें भाग लेनेके लिअे बुलाअिये।

लगान देनेकी सलाह

अब तो अेक ही बात रह गअी है। फ़सल कम हुअी है, अिसलिअे लगान दिया जाय या नहीं। अिस मामलेमें मैंने जाँच की है और कुछ लोगोंने भी मुझसे कहा है कि संभव है फ़सलका अन्दाज़ लगानेमें प्रामाणिक भूल हुअी हो। अिस बारेमें हमारे और सरकारके बीच मतभेद है और यह स्वाभाविक है। सरकार लगान लेनेकी दृष्टिसे हिसाब करती है और हम न देनेकी दृष्टिसे। यह मतभेद तो रहेगा ही। मगर अिस साल न देंगे, तो अगले साल तो दुगुना देना ही है। हमने अेक लड़ाअी खतम की है, अिसलिअे अिसी साल अेक और लड़ाअी मोल लेना ठीक नहीं। अभी तो अिसीकी ज़रूरत है कि हमें लड़ाअीसे जो लाभ मिले है, अुनको अच्छी तरह कायम करें। अिसलिअे मेरी आपको सलाह है कि अिस मामलेमें कलेक्टरका जो हुक्म हो, अुसके अनुसार लगान अदा कर दिया जाय। रुचिकर सलाह तो सभी मानते हैं, परन्तु अरुचिकर सलाह भी आप मानने लगेंगे, तब ही स्वराज्यकी स्थापना करना संभव है। अगर आप सिर्फ अपनेको पसन्द आये अुतना ही हमारा कहना मानेंगे, तब तो हमारा पतन ही है। आप सरकारको विश्वास दिला दीजिये कि हम सीधे रास्तेसे ही लड़नेवाले है।

डाकुओंसे क्या कहें ?

अब भी आपके बीच कितने डाकू रह गये हैं, यह तो मैं नहीं जानता। ये लोग बन्दूकसे नहीं डरे, परन्तु आपकी अेकतासे डर गये हैं। ये लोग यह बात समझते हैं कि आपमें जहाँ अठारहों वर्णकी अेकता होगी, वहाँ अुनका घुसना मुश्किल है। यहाँ आये हुअे लोगोंमेंसे कोअी भी अुनके साथी हों, तो अुन्हें यह धंधा छोड़ देनेके लिअे समझाना चाहिये। मुझे यदि कोअी डाकू मिले, तो मैं अुसे अितनी ही बात कहूँगा: "तेरा जीना बेकार है। तू गोलीसे मरेगा, फाँसी पर लटक कर मरेगा, ठोकर खाकर मरेगा, किसी न किसी तरह तो ज़रूर मरेगा। अितने पाप करनेके बाद तो अब पुलिस थाने पर जाकर, सरकारके बंगले पर जाकर, अपराध स्वीकार करके पश्चात्ताप कर, ताकि पाप कुछ कम हो। यमके दूतसे कोअी छिपा नहीं रह सकता। वह तो दुनियाके परदे पर किसी भी जगहसे ढूँढ़ लेगा। अपराध स्वीकार करके फाँसीके तख्ते पर लटकनेमें बहादुरी है। वैसे, छिपनेमें तो कायरता ही है।" अगर आपको वे लोग कभी मिलते हों, तो मेरा यह सन्देश पहुँचा देना और अगर मेरी मुलाक़ात अुनसे करा दो तो मैं अुनसे कहूँगा।

प्रेम सच्चा है या क्षणिक ?

मैं सत्याग्रह छावनी छोड़कर यहाँसे जा रहा हूँ। दरबार साहब, मोहनलाल, रविशंकर — ये सब यहीं रहेंगे। अिनका आप अच्छा अुपयोग करें। आपने

अभी हम पर खूब प्रेम दिखाया है, मगर यह सच्चा है या क्षणिक, अिसमें कोअी स्वार्थबुद्धि भरी है या नहीं, अिसकी परीक्षा अब होनेवाली है। मैं जब आपको सरकारके साथ लड़ाता हूँ, तब आप हम पर खूब ममता दिखाते हैं। मगर जब आपकी कमज़ोरियोंके साथ लड़ाअूँगा, तब पता लगेगा कि यह प्रेम सच्चा है या नहीं। आप अेकता रखेंगे, अहिंसाका पालन करेंगे, शराब छोड़ देंगे, यह सब करेंगे तो आपको सरकारसे नहीं लड़ना पड़ेगा। सरकार तो माया है, हवाअी किला है, पानीका बुदबुदा है, अुसे पहचान लें तो अुसी वक्त फूट जाये। मगर हमारी आँखों पर परदा पड़ा हुआ है, अिसलिअे हमने अुसे नहीं पहचाना। अिसलिअे मैं कहता हूँ कि यहाँ रहनेवाले भाअियोंका आप सदुपयोग करें।

जुल्म करना बंद करो

अब अेक आखिरी बात। आपको जैसे सरकारके जुल्मसे कष्ट हुआ था, अुसी तरहका कष्ट आपके जुल्मसे दूसरोंको होता है। औरोंको भी वह अुतना ही बुरा लगता है, अिसलिअे सत्ताका दुरुपयोग न करें। मुझे खबर मिली है कि आसोदरके जिन लोगोंने सरकारी टैक्स चुका दिया, अुनमेंसे बीस आदमियोंको गाँवसे निकाल दिया है। यह बुरी बात है, अत्याचार है। गाँव और जातिके बंदोबस्तका दुरुपयोग न करें। जिनमें कमज़ोरी है, वे हमारी भलमनसाहतसे सुधरेंगे। अुन्हें अच्छे बनाना हो तो हमें ज्यादा अच्छे बनना चाहिये। हम अच्छे नहीं बनेंगे, तो वे कायर होकर सरकारके पास जायेंगे। हरअेक आदमीमें हमारे जितनी ही ताकत नहीं हो सकती। वह पैदा करनी चाहिये। अुन्हें आतंकसे मुक्त करके अभय दान दो। अुन्हें अुनकी स्वतंत्रता लौटा दो। हम खुद ही अन्यायी बन जायँ, तो हम दूसरोंसे न्याय नहीं माँग सकते। गलती करनेवालेको माफ कर दो। अुनके साथ मुहब्बत करो। यह सब काम आप करेंगे, तो अगला लगान भरनेके समय हम सारे गुजरातमें बड़ी लड़ाअी छेड़ सकेंगे। प्रभु आपको अितनी शक्ति दे, यही मेरी प्रार्थना है।

प्रजाबन्धु, २०–१–१९२४

२८

बोरसद सत्याग्रहकी पूर्णाहुति

[अुस अवसर पर दिया हुआ वक्तव्य ।]

बोरसद सत्याग्रहकी लड़ाअी अब बन्द होती है । सत्य, अहिंसा और तपकी अेक बार फिर विजय हुअी है । हमारी लड़ाअी जितनी न्यायकी थी, अुतनी ही जल्दी यह विजय हुअी है, यह विशेष आनंदकी बात है । यह विजय अपूर्व है, क्योंकि अिस बार दोनों पक्षोंकी जीत हुअी है । सरकारने अपनी भूल खुले दिलसे और हिम्मतके साथ स्वीकार की है । प्रतिष्ठाकी खातिर की हुअी भूलसे किसी भी कीमत पर चिपटे रहनेकी परंपराको छोड़कर, निर्दोष और कुचली हुअी जनताको दोषी और दुःखी बनानेके महान अपराधसे बचकर, सत्यको स्वीकार करके सरकारने खुद भी विजय प्राप्त की है । अितना बड़ा नैतिक बल दिखानेवाले नये गवर्नर सर लेस्ली विल्सनको यदि हम सच्चे दिलसे मुबारकबाद न दें, तो हम अपने कर्तव्यसे चूकते हैं ।

हमारी जीत अिसमें नहीं है कि सरकारने वसूल किया हुआ जुर्माना और कुर्क किया हुआ माल वापस देने और अतिरिक्त पुलिसका खर्च बरदाश्त करनेका निश्चय किया है, बल्कि हम पर लगाये गये कलंकको सरकारने वापस ले लिया है अिसीमें हमारी जीत है । परन्तु असली जीत तो अुसकी महत्ता समझने और अुसे हज़म करनेकी शक्तिमें है । सरकार हमेशा अपनी भूल स्वीकार करते हुअे डरती है । शुद्ध शस्त्रोंसे अन्यायका सामना करनेवाली प्रजाके आगे झुकनेमें भी सरकार राज्यके लिअे खतरा मानती है । यह पहला मौका है जब कि सरकारने बिना संकोचके अपनी भूलका सार्वजनिक अिक़रार किया है और सत्याग्रहके हथियारसे लड़नेवाली प्रजाके सामने झुककर यह मंजूर किया है कि यह लड़ाअी 'राजमान्य' है । सरकारकी अिस शिष्टताका दुरुपयोग नहीं होगा, अिसके लिअे शब्दोंसे विश्वास दिलानेके बजाय भावी व्यवहारसे दिखा देना हम ज्यादा ठीक समझेंगे ।

अिस लड़ाअीकी पूर्णाहुतिमें जो शोभा और मिठास है, अुसे क़ायम रखनेकी जिम्मेदारी जितनी प्रजा पर है, अुतनी ही स्थानीय अधिकारियों और कर्मचारियों पर है । कुर्कीके काममें जिस सख्तीसे काम लिया गया, अुसमें किसी-किसी मौके पर दोनों पक्षोंके दिल खिंच गये । यह स्वाभाविक है । कुछ पटेलों वग़ैराको अिस्तीफ़े देने पड़े हैं, कुछकी माल-मिल्कियतका नुकसान हुआ

है और कुछकी झूठी शिकायतें हुआी हैं। हमें अुम्मीद है कि पूर्णाहुतिके अिस प्रकरणमें दोनों पक्ष अेक दूसरेकी भूलोंको भूल कर सभ्यता और अुदारतासे काम लेंगे। हमने खुद अिस लड़ाअीमें पुलिसकी बहुत कड़ी आलोचना की, मगर अैसा करनेमें हमें कोअी आनन्द नहीं हुआ। हमारा पुलिस-विभागसे या अुसके किसी भी अफसरसे किसी भी तरहका विरोध नहीं है। हमारा और पुलिस-विभागका अुद्देश्य अेक ही है। परंतु हमारे और अुनके तरीकेमें ज़मीन-आसमानका फर्क़ है। दोनोंका हेतु जनताको सुख-शान्ति देना है। सरकारने अपना तरीका बोरसदके ठाकरड़े भाअियों पर बरसों तक आज़माया, पर अुसका परिणाम अुल्टा हुआ। हम अिस बातसे अिनकार नहीं करते कि सरकारका अुद्देश्य शुद्ध था, मगर अुसका नतीजा बुरा ही आया है, यह बात सरकारसे छिपी नहीं है। अिस दुःखी कौमके साथ आश्वासन और मिठाससे काम लेनेकी ज़रूरत है। अेक दो हत्यारों और डाकुओंको पकड़नेमें जिन अनेक मनुष्योंने अपने प्राण गँवाये हैं, अुनके कुटुम्बोंके प्रति आश्वासनका अेक भी शब्द सरकारके किसी पत्रव्यवहार या पत्रिकामें हमारे देखनेमें नहीं आया। अिससे हमें बहुत ही दुःख हुआ है। सरकारी विज्ञप्तिके आखिरी अंशके जवाबके लिअे ही लाचार होकर हमें अितना ज़िक्र करना पड़ा है।

बोरसद तहसीलकी जनताने जिस शान्ति और संयमसे दुःख सहन किये, अुसके लिअे हम अुसे मुबारकबाद देते हैं। स्वयंसेवकोंने जिस लगन, अुत्साह और हिम्मतसे बोरसद तहसीलकी जनताकी सेवा की है, अुसके लिअे वे भी धन्यवादके पात्र हैं और जिन-जिन सज्जनों और अखबारोंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपसे मदद दी है, अुनका भी हम बोरसद तहसीलकी जनताकी तरफसे अिस मौक़े पर आभार मानते हैं।

अीश्वरकी कृपासे बोरसद सत्याग्रहकी लड़ाअी आज सांगोपांग पूर्ण होती है, यह घोषणा करते हुअे हमें आनंद होता है, और सत्य और अहिंसाकी अिस विजयके लिअे हम भगवानके बहुत कृतज्ञ हैं।

नवजीवन, १३-१-१९२४

२९

बोरसद्के स्वयंसेवकोंसे

[बोरसद सत्याग्रहकी विजयके बाद स्वयंसेवकोंको दी गअी सूचनाअें।]

हम नागपुरसे लौटे तब मुझे सपनेमें भी खयाल नहीं था कि अितने थोड़े समयमें अीश्वर गुजरातको अितना बड़ा अवसर, अितना सुन्दर मौका देगा। महात्माजी जब बाहर थे, तब अुनका दिया हुआ अुपदेश अुनकी गैर मौजूदगीमें आपने अच्छी तरह पालन करके बता दिया है, अिससे मालूम होता है कि गुजरातमें अभी प्राण हैं। बापूजी अैसी लड़ाअी लड़नेके बाद क्या क़दम अुठाते, अिसका अच्छी तरह विचार करके ही मैंने और दरबार साहबने हमारी पत्रिका लिखी है। हमने सत्याग्रहकी लड़ाअीको समझा हो, तो जीत होनेके बाद हममें नम्रता और निरभिमानता आनी चाहिये; और अगर वह न आये तो यही कहा जायगा कि हमने घमण्ड किया। यह बात मेरे हृदयमें स्पष्ट थी, अिसलिअे लड़ाअीकी पूर्णाहुतिके मौके पर हमारी पत्रिकामें मैंने भरसक मीठी भाषाका अुपयोग किया है।

फ़िलहाल हमें सरकारको छोड़ देना होगा। जब तक हममें अुसके साथ आखिरी मुक़ाबला करनेकी ताक़त न आ जाये, तब तक हम सरकारका विचार न करें। फिर भी असाधारण प्रसंग आने पर लड़ना पड़ा तो ज़रूर लड़ेंगे, परंतु बिना कारण तो हरगिज़ नहीं लड़ेंगे। मैंने खूब विचार किया है कि हिन्दुस्तानकी वर्तमान स्थितिमें हम सरकारके साथ बार-बार लड़नेके प्रयोग नहीं कर सकते। अुसके साथ आखिरी मुकाबला किस तरह किया जाय, अिसका बड़े-बड़ोंको भी पता नहीं चलता। वे बापूके रास्तेका विचार करते हैं, परंतु वह अुन्हें नहीं सूझता। **कांग्रेसमें और हर जगह बड़े बड़े लोग रचनात्मक कार्यकी और सविनयभंगकी बातें तो खूब करते हैं, परंतु मुझे उनमें विश्वास नहीं है। उन्हें अपनेमें ही विश्वास नहीं है, और जब नेताओंमें ही श्रद्धा न हो, तब तो हम ज़रूर हार जायेंगे। मुझे तो यही लगता है कि जब तक हम बापूका रास्ता नहीं पकड़ेंगे, तब तक अिस लड़ाअीका अन्त नहीं आयेगा।** बोरसदकी लड़ाअीमें सरकारने हमारा बल परख लिया। अुसने जान लिया कि आगे-पीछे हारना तो पड़ेगा ही, अिसलिअे अुसने समय पर सब कुछ समेट लिया। अैसी ताक़त पैदा किये बिना यदि लड़नेका विचार करेंगे, तब तो हमें हारना ही पड़ेगा।

बापू हमें बारडोलीका कार्यक्रम सौंप गये हैं। वह अुनके अपने अनुभवसे ही तैयार किया हुआ है। बहुतोंको अुनकी बातें अव्यावहारिक लगती हैं। मगर मुझे तो वे पूरी तरहसे व्यावहारिक लगती हैं। मुझे अिसका अभिमान है कि मेरे जैसा लड़ाअीका शौक़ीन आपमें से अेक भी नहीं है; फिर भी मैं दूसरोंको रोकता हूँ, क्योंकि हममें कमज़ोरियाँ बहुत हैं। अब यह लड़ाअी खतम होनेके बाद में अेक भी आदमीको खोना नहीं चाहता। लड़ाअीके दरमियान मुझे या दरबार साहबको पकड़ा होता, तो वह हमको पुसाता; मगर अब अपने क्रोध या गुस्सेसे कोअी पकड़ा जाय, तो यह हमें नहीं पुसायेगा। यह तो साफ़ आत्महत्या ही होगी। हमें बिना कारण अपनी शक्ति नहीं खोनी चाहिये। अब तो हमारे लिअे जनतामें अपना तेज भरनेका समय आया है। अिस लड़ाअीमें जनताने देख लिया है कि सरकारके साथ अच्छी तरह लड़ा जा सकता है। अंतिम लड़ाअीमें सरकार अपनी ताक़त पूरी तरह आज़मायेगी। यह जाति व्यापारी है, बहुत बुद्धिशाली है। वह और किसीसे नहीं, परंतु व्यापारीसे ही बस में आयेगी। अिसीलिअे अीश्वरने हमें वणिक नेता दिया है। अुन्होंने अपनी बुद्धि और अनुभवसे जो कार्यक्रम दिया है, अुसमें से ७५फी सदी पर भी अमल करें, तो हम आखिरी लड़ाअी लड़ सकते हैं।

जब खूब जोशके साथ लड़ना होता है, तब आदमी मिल जाते हैं। नशेकी खुमारीमें भी आदमी मिल जाते हैं, परन्तु संयम रखकर नीरस लगनेवाला काम करनेके लिअे तो थोड़ेसे ही बहादुर मिलते हैं। बाकी सब भाग जाते हैं। आपको, जिन्होंने नशा चख लिया है, अब मैं अिस नीरस दिखाअी देनेवाले परंतु स्थायी रसवाले रचनात्मक कामके लिअे कमर कसनेको कहता हूँ। अिस कार्यक्रमको सारी तहसीलमें अमलमें लानेके लिअे यहाँके तमाम केन्द्र कायम रहने चाहियें। हमें प्रजाके पेटमें घुसना पड़ेगा; अुसमें जो अपराध होते हैं, अुनका कारण ढूँढ़ना पड़ेगा; शराबकी तमाम दुकानें बन्द करानी पड़ेंगी, अिस तहसीलसे अपराधोंका रजिस्टर साफ़ कराना होगा और विदेशी कपड़ेको निकाल देना होगा। यह सब बापूके हथियारसे सिद्ध होगा। अिसलिअे मैं सब कार्यकर्ताओंसे अेक ही बात कहता हूँ कि अगर आप बापूके सच्चे वफ़ादार होंगे, तो आप अपनी मौजूदा जगह नहीं छोड़ेंगे। आपके सिर पर ज़िम्मेदारी आअी है, तो थक कर भागेंगे नहीं। यह मत समझना कि मैं कम अकुलाया हुआ हूँ। अिस अकुलाहटमें ही मैंने दो वर्ष पहले डाकोरमें बड़े पैमाने पर लड़ाअीकी बातें की थीं। लेकिन मैंने देखा कि सारी बाज़ी हाथसे चली गअी, जगह-जगह मतभेदोंने घर कर लिया और विराट लड़ाअीके लिअे कोअी स्थान नहीं रहा। आज तो हम बापूको मुँह दिखानेकी तैयारी कर लें। वे आयेंगे तो शायद हम आरामसे बैठ

जायँगे। आज ही काम करनेका सच्चा अवसर है। मैं आपको अेक सालकी मोहलत देता हूँ। अेक वर्षमें अूपर लिखी हुआी बातें हम अमलमें ले आयें, अदालतोंको ताले लगा दें, शराबकी दुकानें बंद करा दें, पंचायतें स्थापित कर लें, अपराध बंद करा दें और घर-घरमें खादीका प्रवेश करा दें; तो मैं आपसे कहता हूँ कि आअिन्दा हम सरकारको बड़ी लड़ाअीकी चुनौती देनेके लिअे समर्थ हो जायँगे।

नवजीवन, २०-१-१९२४

३०

धोलका तहसीलके किसानोंसे

[जून १९२७ में चलोड़ा गाँवमें धोलका तहसीलके किसानोंकी सभामें दिये गये भाषणका महत्त्वपूर्ण अंश।]

किसानोंका अैसा सम्मेलन तो जब कोअी काम हो, सरकारके साथ या साहूकारके साथ कोअी लड़ाअी हो तभी होता है। मगर किसान संघ कुछ ज्यादा काम कर सके, अिस लिअे डाह्याभाअीकी सूचनासे आप सबको अिकट्ठा किया गया है। अिस गाँवके किसानोंको देखने पर अकसर खेड़ा जिलेके किसान याद आते हैं। आपमें और अुनमें ज्यादा फ़र्क़ मुझे नहीं दिखाअी देता।

आम तौर पर किसानोंके दो प्रकारके ही दुःख होते हैं। अेक अज्ञानसे अपने ही हाथों मोल लिया हुआ है; और दूसरा, हम परतंत्र हैं, दूसरोंकी हुकूमतमें हैं और गुलाम हैं। यह दुःख विशेष है और वह सर्वसामान्य है। अकेले किसानोंको नहीं, सबको है। आप हिन्दुस्तानके दूसरे भागोंके किसानोंसे कुछ सुखी हैं। औरोंको बहुत दुःख है। वह दुःख देखा नहीं जा सकता। करोड़ों किसान अैसे हैं, जिन्हें पहननेको कपड़ा, खानेको रोटी और पीनेको साफ़ पानी नहीं मिलता। यह दुःख आपको नहीं है। परन्तु जो समझदार किसान हैं, अुन्हें परतंत्रतामें अपने स्वाभिमान-भंगके लिअे दुःख है। जैसे बैलकी गर्दन पर जुआ रखनेमें वह अपमान दुःख नहीं समझता, वैसे ही अगर आप भी न समझते हों, तो आपको भी दुःख नहीं है। परंतु अगर आपकी आत्मा जाग्रत हो, तो आपको विदेशी हुकूमत चुभनी चाहिये। जैसे क़ाबिल आदमी ढोरको पाल सकता है, वैसे ही क़ाबिल अिन्सान अिन्सानको भी पालता है, मगर वह गुलाम है। अिस समय हमारी यही दशा है। महात्मा गांधीने अिसीलिअे अेक वर्षमें सबको गुलामीसे छुड़ानेकी अुम्मीद की थी।

वे क्या कहते हैं, अिस पर आप विचार कीजिये। किसानका गुज़र सिर्फ खेती पर हरगिज़ नहीं चल सकता। जिसके पास लम्बी-चौड़ी ज़मीन होगी, जो विशेष बुद्धि रखता होगा और जो विशेष मेहनत करता होगा वही गुज़र चला सकेगा। आजकल ज़मीनके टुकड़े होते जा रहे हैं। अैसी हालतमें खेतीके साथ फुरसतमें घर बैठे करनेका अुद्योग हो, तो ही किसानका काम चल सकता है।

अिस गाँवमें लगभग बत्तीस सौ मनुष्योंकी आबादी है। अेक मनुष्यको औसत दस-पंद्रह रुपयेका कपड़ा तो चाहिये ही। हिसाब गिनें तो आप हर साल तीस-चालीस हज़ार रुपया बाहर भेजते हैं। यह कहाँ तक चलेगा? आपकी समझमें नहीं आता कि वह समय आ रहा है, जब आपके बैल आपके पास नहीं रहेंगे। बैलोंका स्थान मशीनें ले लेंगी। गाड़ियाँ नहीं रहेंगी। हल वग़ैरा सब बाहरसे आयेंगे। अुन सब मशीनोंसे आपकी खेती होगी। अहमदाबादमें खेती-बाड़ीकी प्रदर्शनी होनेवाली है। अुसमें आपको सब कुछ बतायेंगे और फिर कहेंगे कि रोटियाँ किसलिअे बनाते हो, तैयार रोटियाँ मँगाकर खाओ।

आपके पैदा किये हुअे मालके और आपके बीचमें कुछ दलाल हैं। अुनका विचार कीजिये। आपकी कपास बावल जाती है, वहाँ जिनिंग फैक्ट्रीमें लोढ़ी जाती है, अुसकी रूअी बनती है, वहाँसे प्रेसवालोंके पास जाती है, अुसकी गाँठें बँधती हैं, वहाँसे रेलमें अहमदाबाद जाती है। अुस सौदेमें भी बीचमें व्यापारी होता है, वहाँसे बम्बअी जाती है, वहाँसे जहाज़ोंमें विदेश जाती है, वहाँ कारखानोंमें काती और बुनी जाती है, अुसका जो कपड़ा बनता है, वह वापस जहाज़से बम्बअी आता है, बम्बअीमें मूलजी जेठा मार्केटमें जाता है, वहाँसे अहमदाबाद आता है, अहमदाबादसे वह कपड़ा चलोड़ा आता है और फिर आप पहनते हैं। यह कितना ज्यादा अुल्टा व्यापार है! जैसे हम बैलसे काम लेते हैं, अुसी तरह विदेशी हमसे मज़दूरी कराकर सब कुछ ले जाते हैं। मज़ा यह है कि यह सारा नाटक हमारे ही आदमियोंके द्वारा होता रहता है। गांधीजी कहते हैं कि साठ करोड़का कपड़ा जो विलायतसे आता है, अुसे बंद करो। आप अपना कपड़ा पैदा कीजिये। अुससे आपके बुनकरोंको रोज़ी मिलेगी। अुससे आपकी माँ, बहनों और लड़कियोंको पोषण मिलेगा। अिन छोटी-छोटी लड़कियोंको कितने बारीक कपड़े पहनाते हो? ये कपड़े पहनाना क्या हमें शोभा देता है?

किसान, जो कि बुद्धिमान हैं, यह नहीं समझते, यह देखकर मुझे बहुत दुःख होता है। आज अुन्हें सिनेमा, नाटक और लक्ष्मीविलास (होटल) पसन्द हैं। आज कल सुबह-शाम मोटर लारियोंमें अहमदाबाद और चलोड़ा दौड़ लगाते हो, मगर आप यह समझ लें कि सारे ज़िलेके किसानोंके सत्त्व, खून, हड्डियों और मांस पर अहमदाबाद बसा है। किसानोंको जैसे पहिले थे वैसे

बनना चाहिये । कोअी धर्मात्मा पुरुष, तपस्वी जो कुछ कहे अुसे सुन कर जो अच्छा लगे अुस पर अमल करो, खाली मीठी-मीठी बातें सुनकर खुश न हो जाओ ।

दूसरी बात यह है कि किसानोंमें गाँव-गाँव लड़ाअी-झगड़े और फूट है । अिसे किसान खुद न समझेंगे तो और कौन समझायेगा ? हमारा काम यह है कि हम अपने मतभेदोंको अितना बड़ा रूप न दें, जिससे लड़के आपसमें लड़ मरें । अेक दूसरेकी चुगली व शिकायत नहीं करना चाहिये । मेल रखनेवाले किसानोंको कोअी नहीं सता सकता ।

अेक और बात है, जिसके लिअे किसानोंको शर्म आनी चाहिये । जो सबल हैं, सुखी हैं और साधनवाले हैं, अुन पर अेक आरोप या तोहमत है कि वे घमंडी हैं । और वे अितने घमण्डी होते हैं कि अीश्वरको भी भूल जाते हैं । अुसके दरबारमें तो राव-रंक, अूँच-नीच सब समान हैं । अुस दरबारमें अुन्हें हिसाब देना पड़ेगा, यह बात वे भूल जाते हैं । अतः वे अपनेसे नीचेके वर्गको सताते हैं । नीचेके वर्गसे वे बेगार कराते हैं । सरकार जितनी बेगार नहीं कराती, अुतनी वे कराते हैं । अितनी हलचल होनेके बाद भी किसानोंके दिलमें यह भावना नहीं जमी कि किसी भी मनुष्यको अछूत मानना पाप है । अस्पृश्यता अेक वहम है । जब कुत्तेको छूकर नहाना नहीं पड़ता, बिल्लीको छूकर नहाना नहीं पड़ता, तो फिर जो हमारे जैसे मनुष्य हैं, अुन्हें छूकर कैसे अपवित्र हो जाते हैं ? हिन्दुओ, जागो । आप भूल कर रहे हैं । अंत्यज मुसलमान या अीसाअी बन जाते हैं । वे अीसाअी बनकर आते है, तो आप अुन्हे सलाम करते हैं । अिस प्रकार हमारे यहाँ धर्मका निवास न रहता हो, तो अीश्वरका क्या दोष ? जब वह हिन्दू धर्म छोड़ देता है, तब हमारे साथ बैठने लायक़ हो जाता है । फिर तो वह विधर्मी बनकर विरोधी बन जाता है ।

हमारे पास ज़मीन हो, रुपया हो, समझ हो, तो अिन सबका अुपयोग क्या ? जो सुखी है, वह सुखके मदमें औरोंको दुःखी करता है । यह तो ठीक नहीं । हमारी बुद्धि धोखा देनेके लिअे नहीं है । वह हमें भगवानने सदुपयोग करके औरोंको सुख पहुँचानेके लिअे दी है । हमें गरीब और दुःखीकी सहायता करनी चाहिये । जिस किसानकी छायामें सब रहते हों, समा जाते हों, वह सच्चा किसान है । अठारहों वर्ण किसानके पीछे रहते थे, अिसका कारण था अुसका प्रेम । अठारहों जातियाँ अेक कुटुम्ब, अेक शरीर बनकर रहती थीं । अुस तरहकी व्यवस्थाके लिअे हमें अपने हृदयोंमें परिवर्तन करना चाहिये, प्रेम रखना चाहिये । हम सबका न्याय करनेवाला अेक अीश्वर है । अिसलिअे किसान यदि यह बात समझ लें तो ही सुखी होंगे ।

डाह्याभाअीने कहा था कि गुजरातमें हिन्दू-मुस्लिम अेकतामें फर्क नहीं पड़ा, वह बात अब गलत होती जा रही है। गुजरात हिन्दू-मुसलमानोंके झगड़ेसे नहीं बचेगा। आप यह मत मानना कि कल आपके यहाँ यह नहीं होगा। सारे हिन्दुस्तानमें यह दावानल जल रहा है। अुससे हम बच जायँगे, यह माननेका कोअी कारण नहीं है। अभी सब अेक दूसरेका सिर फोड़नेको अुत्सुक हैं। मगर गावोंमें ये प्रश्न तुच्छ है। किसानोंका अिनके साथ ज्यादा वास्ता नहीं। सरकारके साथ भी अुनका अधिक वास्ता नहीं। मामूली दुःख तो सरकारसे दूर कराया जा सकता है। मगर हुकूमत विदेशी है, यही अेक बड़ा दुःख है। आपके घरका अिंतजाम दूसरोंको सौंपा हो, तो वह कैसा चलता है यह आपको सोचना है। जब तक अिंतजाम दूसरोंके हाथमें है तब तक सुख नहीं। अिसी तरह शासनतंत्र हाथमें लेनेके लिअे भी किसानोंको जाग्रत होना चाहिये।

अब स्वतंत्रताके चिन्ह दिखाअी देते हैं। स्वतंत्रता ज़रूर आयेगी। अिसलिअे आप अपनी ज़िम्मेदारी अुठाना सीखिये। अभी तो आपको अुसका थोड़ा-थोड़ा प्रमाण मिलता है, परन्तु कल अैसा समय आयगा कि आपको ही अपनी पुलिस रखनी पड़ेगी। अिसीका नाम स्वराज्य है। जब आपके लड़के बन्दूक लेकर डाकुओंका सामना करते होंगे, तब आपके पास स्वराज्य होगा। आजकलके लड़कोंने तो धनुष भी नहीं देखा, युद्धकी पुकार नहीं सुनी। जब आपके बच्चे मर्दानगीके खेल खेलते होंगे, कवायद करते होंगे, और सेनामें भरती होंगे, तभी आप गाँवकी रक्षा कर सकेंगे। और यही स्वराज्य है। यह सब आकाशसे नहीं गिरेगा, लेना पड़ेगा। अिसलिअे आप जाग्रत हो जाअिये। चारों तरफ क्या हो रहा है, अुसे जानिये। नहीं जानेंगे तो ठगे जायँगे। आजकल दुनिया अैसी बन गअी है कि अेक स्थान पर होनेवाली घटनाकी जानकारी चौबीस घण्टोंमें सारी दुनियामें हो जाती है। चीनमें क्या हो रहा है, अफ्रीकामें क्या हो रहा है और अमेरिकामें क्या हो रहा है, अिसका पता तुरन्त ही यहाँ चल जाता है। चलोड़ामें भी कोअी जानने लायक बात हो जाय, तो सारी दुनियामें अुसकी खबर हो जायगी। आपका काम यह है कि दुनियामें क्या हो रहा है, अुसे जानें।

किसान सबसे बड़ा पाप तो यह करते है कि वे छोटे-छोटे बच्चोंकी शादी कर देते हैं। अगर मेरी सत्ता हो, तो जो बारह-तेरह वर्षकी लड़कियोंकी शादी कर देते हैं, अुन्हें बन्दूकसे मारने या फाँसीके तख्तेपर लटकानेका क़ानून पास कराअूँ। चौदह-पंद्रह वर्षकी लड़कियाँ माँ बन जायँ, बहुतसी बालविधवाअें हो जायँ, तो फिर अकाल नहीं पड़ेगा तो क्या होगा? यह सब मैं आपका भाअी होकर कह रहा हूँ। आप समझिये। आप अपनी लड़कियोंकी हत्या कर रहे हैं। जातिभोजोंका फज़ूल खर्च कम करें। अिज्ज़तके नामपर होनेवाली

बालहत्याअें बन्द करें। लड़कियोंका विवाह अठारह सालसे पहले न करें। अंग्रेज़ोंकी बाअीस-पच्चीस वर्षकी कुंवारी लड़की होती है, वह हमारे गाँवमें दवाखाना खोलकर बैठ जाती है और सारे जिलेके मर्दों और औरतों पर हुकूमत करती है। छोटी-छोटी लड़कियों पर स्त्रीका सारा बोझा लादकर अुन्हें कुचल न डालें। वे अेक कोमल पुष्प हैं, खिलती हुअी कली हैं, अुन्हें असमय ही क्यों मारते हैं? अगर पहलेकी स्थिति लानी हो, धर्मराज्य, रामराज्य लाना हो और आपमें बापदादोंका दिल हो, तो हिम्मत रखें और अच्छी बातोंपर अमल करें।

वैसे अिन लड़कियोंने जैसा राग अलापा वैसा अलापनेसे क्या होता है? मैं आअूँ तब भी गीत गाती हैं और कोअी अफ़सर आये, तब भी गीत गाती हैं, अिससे क्या हुआ? लड़के नौकरीके लिअे कंगालकी तरह भीख माँगते फिरते हैं। खेती अुत्तम न रहकर अधम हो गअी है। किसानसे भीख कैसे माँगी जाती है? किसान अर्ज़ियाँ देना सीखे हैं, अिसीलिअे अुनका सब कुछ चला जाता है। अिससे क्या होगा? आप हिम्मत रखें, अपने पाप मिटायें। फिर आपको अर्ज़ियाँ नहीं देनी पड़ेंगी। विवाह जैसी गम्भीर वस्तु गुड्डे-गुड्डीका खेल हो गया है। आयु सौ वर्षकी थी, सो पचासकी रह गअी। पचाससे तीस हुअी और अब बीस-पच्चीस वर्ष पर आ पहुँचे हैं। पहलेके-से साढ़े छः फुट अूँचे, गलमुच्छे रखनेवाले और पहलवान जैसे व्यक्तिकी अेक भी शकल किसानोंमें मुझे नहीं दीखती। आजकलके जवान तो अपने कपड़ोंका बोझ तक नहीं अुठा सकते। पहले बाल-विवाह होते थे, परन्तु कन्याको सात-सात वर्ष तक ससुराल नहीं भेजते थे। पाटीदारो! आपके पीछे-पीछे ठाकरडे और राजपूत वगैरा सब अिस रास्ते जा रहे हैं। आपने मुझे प्रेमसे यहाँ बुलाया है, तो मैं यह बात कह रहा हूँ। अगर मैं आपके गाँवमें रहता होअूँ, तो आपको घड़ीभर भी चैन न लेने दूँ। किसानोंके दुःखोंका पूरा अध्ययन करनेके बाद ही मैंने यह कहा है, और मुझे अिससे शर्म आती है कि आपको यह सब कहना पड़ता है। मगर आप समझिये। अीश्वर आपको अितनी बुद्धि, समझ और शक्ति दे।

नवजीवन, १२-६-१९२७

३१
प्रथम स्थानीय स्वराज्य परिषद्

[ता. ६-७-१९२७ को सूरतमें जो प्रथम गुजरात स्थानीय संस्थाओंकी परिषद (गुजरात लोकल बॉडीज कान्फ्रेन्स) हुअी, अुसके अध्यक्षपदसे दिया गया भाषण ।]

गुजरातकी स्थानीय संस्थाओंकी पहली प्रान्तीय परिषदका अध्यक्षपद मुझे देकर आपने मेरा जो सम्मान किया है, अुसके लिअे मैं आपका आभार मानता हूँ। पूनामें पिछले साल सारे प्रांतकी जो परिषद हुअी थी, अुसके परिणाम स्वरूप प्रांतके सब भागोंमें अैसी परिषदें हुअी मालूम होती हैं। अगले सप्ताह सारे प्रांतकी दूसरी परिषद फिर पूनामें होनेवाली है। अुस मौक़े पर गुजरातकी तरफसे हम कुछ मार्गदर्शक सूचनाअें कर सकें, अिस अुद्देश्यसे गुजरातकी यह पहली परिषद हो रही है। अिसे करनेका श्रेय अिस शहरके म्युनिसिपेलिटीके अध्यक्ष, मेरे मित्र भाअी मोहननाथ दीक्षितको है। असलमें यह परिषद अहमदाबादमें होनी चाहिये। मगर अैसा न होनेमें मेरा कुछ दोष है। मुझे अिस काममें विश्वास कम है और यह आशा नहीं है कि अिससे बहुत लाभ होगा। पूनाकी पहली परिषदकी रिपोर्ट और अिसी तरह बादमें जगह जगह होनेवाली परिषदोंकी रिपोर्टें देखने पर मुझे अैसा लगता है कि हमारे सामने जो मुख्य प्रश्न है और जिसे हल किये बिना हमारी मुश्किलें दूर नहीं होंगी, अुसे गौण स्थान दिया गया है और जिस चीज़में ज्यादा सार नहीं है, अुसे अनुचित महत्त्व दिया गया प्रतीत होता है।

स्थानीय स्वराज्यकी संस्थाओंकी अुत्पत्तिका और अुनके क्रमशः होनेवाले विकासका आज तकका अितिहास आपके सामने पेश करनेसे कुछ भी लाभ नहीं होगा। यह तो अिस विषय पर प्रकाशित हुअी किसी भी पुस्तकसे देखा जा सकेगा। स्थानीय संस्थाओंकी मामूली ज़रूरतोंसे भी हम अनभिज्ञ नहीं है, अिसलिअे अुनका पिष्ट-पेषण करना व्यर्थ है। और मैं मानता हूँ कि जहाँ साधारण आवश्यकताअें पूरी करनेकी भी शक्ति न हो, वहाँ भविष्यमें आनेवाली बड़ी जिम्मेदारियोंका चित्र खींचना बेमौके होगा।

मुख्य प्रश्नके निपटारेकी ज़रूरत

समय असमय यह कहा जाता है कि मताधिकार बढ़ गया, लोक-निर्वाचित सदस्योंका अनुपात बढ़ गया, अछूतोंके लिअे अलग निर्वाचक मंडल बन गया, अध्यक्ष और अुपाध्यक्ष चुननेकी स्थानीय संस्थाओंको स्वतंत्रता मिल गअी,

बाहरका हस्तक्षेप कम हो गया, और अैसे अनेक प्रकारके सुधार स्थानीय स्वराज्यके मन्त्रीके कार्यकालमें हो गये। ये सब बातें हम स्वीकार करेंगे। मगर अिनसे हुआ क्या? जब तक मुख्य प्रश्नका निपटारा न हो जाय, तब तक तो यह शवका श्रृंगार करने जैसा ही होगा।

स्थानीय स्वराज्यकी ज़रूरतें

लोगोंमें अेक प्रकारकी सामान्य जाग्रति आ गअी है। लोग विशेष सेवा और सुविधा चाहते हैं। जनताके प्रतिनिधियोंका अनुपात बढ़नेके साथ-साथ वे विशेष आशा रखते हैं और माँग करते हैं, यह स्वाभाविक है। अिस वस्तुस्थितिका मुक़ाबला करनेके लिअे साधन बढ़ने चाहियें, लेकिन अुसके बजाय वे कम हुअे हैं। प्रान्त भरमें १५७ म्युनिसिपेलिटियाँ हैं। अुनमेंसे लगभग सभीकी आर्थिक स्थिति बुरी है। चारों तरफ़से साफ़ और काफ़ी पानी, अच्छी नालियों, तंग और गन्दे मुहल्लोंको खुले बनाने, अच्छे रास्तों, हवा और रोशनीवाले पाठशालाओंके मकानों, बच्चोंके खेलनेके स्थानों, सफ़ाअी सुधारने, म्युनिसिपेलिटीके दफ्तरके मकानों, दवाखानोंके मकानों, बाज़ारों और कसाअीखानों वगैराकी सब तात्कालिक आवश्यकताओंकी पुकार मच रही है। अुधर अधिकांश म्युनिसिपेलिटियाँ रुपयेके अभावसे पीड़ित हैं और अिनमें से कोअी भी काम नहीं कर सकतीं। प्रान्तकी म्युनिसिपेलिटियोंके १९२४–२५ के म्युनिसिपल टैक्स और आय-व्ययके विवरण पर अपनी समालोचनामें सरकार खुद ही यह बात मानती है और अिस स्थितिके लिअे स्वयं म्युनिसिपेलिटियोंको ही ज़िम्मेदार समझती है। कुछ म्युनिसिपेलिटियाँ अपने शिक्षकोंके वेतन महीनों तक नहीं दे सकतीं।

लोकल बोर्डोंका बुरा हाल

लोकल बोर्डोंका तो अिससे भी बुरा हाल है। अुनकी आमदनीका ज़रिया सिर्फ़ लोकलफण्ड सेस है और अुनकी ज़िम्मेदारियाँ बढ़ा दी गअी हैं। स्थानीय स्वराज्यका कामकाज मंत्रियोंके हाथमें आनेसे थोड़े ही समय पहले सरकारने लोकल बोर्डोंके रास्तों पर लिये जानेवाले टोल (टैक्स) की प्रथाको लंबे अनुभवके परिणाम स्वरूप बंद करवा दिया था। अिसका मुख्य कारण यह था कि किसानोंको अुससे बहुत ही कष्ट होता था और अुस अनुपातमें आमदनी काफी नहीं होती थी। प्रजाकीय मंत्रियोंके शासनमें सरकारने हर जगह यह टोल वापस लगा देनेके लिअे प्रोत्साहन दिया है। जब लोकल बोर्ड अपने ही रास्ते ठीक रखनेमें असमर्थ हैं, अैसे समय अुन्हें प्रान्तीय रास्ते भी सौंपनेका विचार हो रहा है! शिक्षाके नये क़ानूनसे अुन पर नअी ज़िम्मेदारियाँ डाल दी गअी हैं। गुजरातके ज़्यादातर ज़िला बोर्डोंने अभी तक यह ज़िम्मेदारी लेनेसे अिनकार कर रखा है। ज़िला बोर्ड और शिक्षा-विभागके आर्थिक ज़िम्मेदारीके झगड़ोंमें ग़रीब शिक्षकोंको कअी

जगह आठ आठ और दस दस महीनेका वेतन नहीं मिला है। वे बेचारे अपना गुज़र किस तरह करते होंगे, अिसका कोअी विचार नहीं करता। शिक्षक साठे-परांजपे योजनाको भूलकर चढ़ा हुआ वेतन लेनेके लिअे अेज्युकेशनल अिन्स्पेक्टर और लोकल बोर्डके अध्यक्षोंके दफ़्तरोंमें चक्कर काटने लगे है।

सरकार आर्थिक मदद नहीं देती

स्थानीय स्वराज्यका शासनतंत्र चलानेमें सबसे ज़्यादा महत्त्वका सवाल अुसकी आर्थिक कठिनाअी हल करनेका है, और अिस प्रश्नने सुधार जारी होनेके बाद ही ज़्यादा गंभीर रूप धारण किया है। अिससे पहले स्थानीय संस्थाओंकी ज़िम्मेदारियाँ कम थीं। सरकारका नियंत्रण ज़्यादा होनेके कारण स्थानीय अधिकारियों और सरकारकी सहानुभूति रहती थी। जनता ज़्यादातर अुन्हींको ज़िम्मेदार समझती थी। अिसके सिवाय हरअेक महत्त्वके काममें आर्थिक मदद मिलती थी। पानी, गटर, नगर-सुधार, लोकोपयोगी मकान, पाठशालाओंके मकान और अिस प्रकारकी सभी अुपयोगी सार्वजनिक योजनाओंमें सरकार अपना हिस्सा नियमपूर्वक देती थी। यह तमाम मदद सुधार जारी होनेके बाद बंद कर दी गअी है। अिस संबंधमें मैं अपना अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीका अनुभव आपके सामने पेश करूँगा। पानी और गटरकी योजना अमलमें लानेके लिअे हमने ४५ लाख रुपयेका कर्ज़ सरकारकी मंजूरीसे लिया है। अुसमें सरकारी निश्चयके अनुसार आधी मदद सरकारको देनी चाहिये। अुस मददकी अर्ज़ीकी आज चार वर्षसे कोअी सुनवाअी नहीं हुअी। पूनामें भांबुर्डा नगर-रचनाकी योजनामें सरकारने १६ लाख रुपया खर्च करके योजना शुरू होनेसे पहले पुल बनवाया। अुस परसे अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीने अुसीके जैसी अेलिस-ब्रिजकी नगर-रचनाकी योजना तैयार करके, जिन शर्तों पर पूनामें पुल बना अुन्हीं शर्तों पर अहमदाबादमें पुल बना देनेकी मंजूरीके लिअे योजना भेजी थी। वह दो सालसे सरकारके पास पड़ी है। अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीने म्युनिसिपल दफ़्तर, बरसातके पानीकी गटरें, प्रयोगशाला, मांसबाज़ार, शाकबाज़ार, पाठ-शालाओंके मकान और नगर-रचनाकी योजनाअें वगैरा बड़े बड़े काम लाखों रुपये खर्च करके पिछले तीन वर्षोंमें किये। परंतु सरकारसे अेक फूटी कौड़ी भी नहीं मिली और न मिलनेकी अुम्मीद ही है। अिस प्रकार सरकारकी तरफ़से मिलनेवाली मदद ही बन्द नहीं हुअी, पर अब सरकारने 'भूखी बिल्ली बच्चोंको खाय' वाली नीति ग्रहण कर ली है। हर विभागने स्थानीय संस्थाओंको किसी न किसी तरह जितना चूसा जा सके अुतना चूसना शुरू कर दिया है। म्युनिसिपल तंत्र चलानेवालोंको अिस नीतिके प्रति हमेशा जाग्रत रहना पड़ता है। अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीसे छावनीको, लगभग २५ वर्ष हुअे, मुफ़्त पानी देनेकी सरकारने

व्यवस्था करवाअी थी । प्रति हज़ार गैलन पर सिर्फ़ ढाअी आने दिये जाते थे। यह कहा जाता था कि अिस अिन्तज़ामका अिकरारनामा ३० वर्षके लिअे हुआ था । शहरके करदाताओंसे, जिनके रुपयेसे पानी देनेकी व्यवस्था हुअी है, प्रति हज़ार गैलनके आठ आने लिये जाते थे और अुस करके लिअे सरकारकी मंजूरी ली जाती थी । अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीको जब मालूम हुआ कि ३० सालका अिक़रारनामा होनेकी बात ही झूठी है और अैसा अिक़रारनामा क़ानूनके अनुसार हो ही नहीं सकता, यह राय पहले सरकारके अपने ही क़ानूनी सलाहकार ने दी थी, तब जो दर शहरमें दी जाती थी अुस दरसे सिर्फ़ ३ सालका रुपया माँगा गया । अिस माँगका सीधा जवाब न मिलने पर म्युनिसिपैलिटीने छावनीका पानी बंद करनेका नोटिस दिया । तब विरोधके साथ सरकारने रुपया जमा करवाया । मगर अिस रुपयेको वापस लेनेका मुक़दमा म्युनिसिपैलिटीके ख़िलाफ़ अदालतमें लड़कर व्यर्थ खर्चा किया और कराया । अन्तमें वह दावा हार गअी और रुपया देना पड़ा ।

रुपया अैंठनेकी सरकारकी युक्तियाँ

अभी-अभी सरकारने वैतनिक मजिस्ट्रेटोंका वेतन भी म्युनिसिपैलिटीके सिर पर डाल दिया । सरकारकी यह करतूत अुसके अपने क़ानूनी सलाहकार की रायके विरुद्ध होने पर भी सरकार म्युनिसिपैलिटियोंकी कुछ नहीं सुनती । पहले तो सरकारने पिछले तीन वर्षका वेतन म्युनिसिपैलिटियोंसे माँगा । जब म्युनिसिपैलिटियोंने देनेसे साफ़ अिनकार कर दिया, तो अब चालू सालसे लेनेका निश्चय किया है। सुधारोंके जारी होनेसे पहले मिली हुअी ग्रान्टको देते समय की गअी शर्तोंके अनुसार काममें लेने पर भी सरकारने अुसका ब्याज माँगनेका और न दिया जाय, तो शिक्षा संबंधी ग्रान्टमें से काट लेनेका निश्चय किया है ! अहमदाबादकी (म्युनिसिपल) मेनेजमेन्ट कमेटीसे सन् १९२३ में अिस प्रकार ४२ हज़ार रुपया अनुचित रूपसे काट लिया और मौजूदा म्युनिसिपैलिटीसे भी अुसी तरह बादकी ब्याजकी रक़म वसूल करनेकी कोशिश की । अिस पर म्युनिसिपैलिटीने बहुत सख्त अेतराज़ किया है और पहलेका काटा हुआ रुपया वापस वसूल करनेके लिअे क़ानूनी कार्रवाअी करनेका प्रस्ताव किया है। पी० डब्ल्यु० डी० ने पुरानी ग्रान्टों और योजनाओंके बारेमें अेक बड़ी रक़मका कर्ज़ा खोज निकाला और माँगा तथा अुसे वसूल करनेके लिअे अनुचित दबाव डाला । अिसके विरुद्ध सख्त लड़ाअी लड़नी पड़ी । सन् १९२४ में सरकारने अेक निश्चय ज़ाहिर किया कि हर म्युनिसिपैलिटीको अपने खर्चका ४ फी सदी डॉक्टरी सहायता पर खर्च करना चाहिये । कोअी म्युनिसिपैलिटी अैसा नहीं करती है, अतः आअिंदा अैसा करे। अगर वह अैसा न करे, तो सरकारी अस्पतालोंको अुतनी रक़मके बराबर ग्राण्ट

दे दे। मुख्य बात म्युनिसिपैलिटियोंसे सहायताके रूपमें रुपया अैंठना होने पर भी, अुस पर पर्दा डालनेके लिअे अुस प्रस्तावमें साथ-साथ यह भी कहा गया है कि म्युनिसिपैलिटियाँ अपने अस्पताल खोलें, यह वांछनीय है। अगर कोअी म्युनिसिपैलिटी अैसा करेगी, तो सरकार अुसे अुचित सहायता देकर प्रोत्साहित करेगी और यदि कोअी सिविल अस्पतालकी व्यवस्था अपने हाथमें लेनेको तैयार होगी, तो वह भी सौंप देगी। अिस परसे अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीने सिविल अस्पताल अुसे सौंपनेकी माँग की और अेक योजना पेश करके सरकारकी ज़्यादातर शर्तें मान लीं। अिस माँगका स्थानीय अधिकारियोंने जोरदार समर्थन किया, तो भी जैसा कि खयाल था, दो वर्ष तक पत्र-व्यवहार होनेके बाद सरकारने सिविल अस्पताल सौंपनेसे अिनकार कर दिया। अब म्युनिसिपैलिटीने अपना स्वतंत्र अस्पताल खोलनेकी योजना बनाकर सरकारसे अुसके वचनके अनुसार सहायता माँगी है। देखना है अुसका क्या परिणाम निकलता है। अिस प्रकार हर दिशामें स्थानीय संस्थाओंसे टेढ़े-मेढ़े तरीकोंसे रुपया अैंठनेकी कोशिशें चलती रही हैं। मंत्रीके अधीन विभागमें होनेसे ये संस्थाअें सरकारी अधिकारियोंकी सहानुभूति खो बैठी हैं और त्रिशंकुकी अवस्थामें आ पड़ी हैं।

कर लगानेकी सत्ता पर अंकुश

स्थानीय संस्थाअें जो कर लगा सकती हैं, अुन्हें लगानेकी सरकार मंजूरी नहीं देती; और फिर वही कर खुद लगाती है और अपनी आमदनी बढ़ाती है। अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीने पहले मनोरंजन-कर लगानेकी मंजूरी माँगी। वह मंजूरी शिक्षा-विभागके मंत्रीने नहीं देने दी और थोड़े ही समय बाद अुसने धारा-सभामें बिल पेश करके यह कर लगा दिया। यह कर लगाते समय जो वचन दिया गया था, अुसे भी सरकारने बादमें भंग कर दिया। खुद स्थानीय स्वराज्यके मंत्री अपने परिषदके भाषणमें स्वीकार करते हैं कि चूँकि स्थानीय संस्थाओंको कर लगानेकी मंजूरी नहीं दी जाती, अिसलिअे अिन संस्थाओंके काम रुक गये हैं। लोग सेवा और सुविधाओंकी विशेष माँग करने लगे है, अतः स्थानीय संस्थाओंके लिअे सरकार पर अधिकाधिक आधार रखना अनिवार्य हो गया है। फिर भी मंत्री महोदय सरकारकी तरफसे मिलनेवाली मददकी जो-जो सूचनाअें की गअी हैं, अुन सबको निकम्मी मानते है! अुन्होंने हमारी मुश्किलोंका कोअी भी व्यावहारिक अुपाय नहीं सुझाया। अुन्होंने कर्ज लेकर बड़े काम करनेकी सलाह दी है। पर कर्ज कैसे लिया जाय, यह तो बताया ही नहीं। क्या सरकार म्युनिसिपैलिटियोंको कर्ज देनेके लिअे तैयार है? अिस बारेमें भी मेरा अनुभव कड़वा है। मैंने पिछले साल ही सरकारसे सिर्फ़ साढ़े तेरह लाख रुपयेका क़र्ज ५ फ़ी सदी ब्याज पर माँगा था। सरकार ४ फ़ी सदी ब्याज

पर कर्ज़ ले सकती है। अुसे १ फ़ीसदीका साफ़ नफ़ा रहता है। फिर भी सरकारने कर्ज़ देनेसे अिनकार कर दिया और बादमें हमने वह कर्ज़ बाज़ारसे लिया। बम्बअीको पिछले साल ९० लाख रुपयेका कर्ज़ दिया गया और अिस साल भी बम्बअीने बड़ी रक़मका कर्ज़ माँगा है। अिस हक़ीक़तकी तरफ़ सरकारका ध्यान दिलाया गया तो भी अिनकार कर दिया। फिर कर्ज़का ब्याज हमें ज्यादा देना पड़ता है। पहले अहमदाबादको ६½ फ़ीसदी ब्याज पर कर्ज़ लेनेकी मंजूरी दी गअी थी। अुस वक्त अुस परका आय-कर माफ़ करनेकी म्युनिसिपेल्टीने माँग की थी, वह भी नामंजूर कर दी गअी। सूरतको ७ फ़ीसदी पर कर्ज लेना पड़ता है। अिन्डियन ट्रस्ट अेक्टके मुताबिक सिर्फ़ बम्बअी शहरके सिवाय और किसी भी स्थानीय संस्थाके कर्ज़में ट्रस्टका रुपया लगानेकी अिजाज़त नहीं है। अिसलिअे हमारा क़र्ज बाजारमें नहीं चल सकता और ब्याजकी दर ज्यादा देनी पड़ती है। अिस बारेमें क़ानूनमें सुधार करनेकी खास ज़रूरत है। अिस तरह कर्ज़ लेनेमें हमें प्रोत्साहन नहीं मिलता। कर्ज़ लेनेके लिअे अुसके नियमोंके अनुसार अुसका ब्याज और सिंकिंग फंड आदि चुकानेके आश्वासनके लिअे पहले कर लगाना चाहिये और अिस बारेमें पहलेसे सरकारको विश्वास दिला देना चाहिये। अिसके बिना कर्ज़ नहीं मिल सकता। स्थानीय संस्थाओंकी ऋण लेनेकी शक्ति मर्यादित है और अुन पर कामके बोझ बहुत हैं। अिसलिअे ऋण लेनेकी शक्ति खतम हो जानेके बाद हमारी कठिनाअियाँ तो मौजूद ही रहेंगी। कुछ बड़े शहरोंने अिस प्रकारके ऋण बाजारसे पाँच फ़ीसदी पर लेकर अपने काम किये हैं। अिसलिअे सरकार पर अुन म्युनिसिपेलिटियोंकी साख और शक्ति दोनोंका बहुत अच्छा असर पड़ा है, यह तो सरकारने खुद अपनी समालोचनामें स्वीकार किया है।

शिक्षाके क्षेत्रकी तरफ दृष्टि

शिक्षाके क्षेत्रकी ओर दृष्टि डालने पर भी अैसी ही कठिनाअी नज़र आती है। पहले मंत्री महोदयने प्राथमिक शिक्षाका जो क़ानून बनाया था, अुसका परिणाम शून्य हुआ है। पाठशालाअें बढ़नेके बजाय घटी हैं। अनिवार्य शिक्षाकी जितनी योजनाअें शिक्षा मंत्रीकी जेबमें रखी हैं, अुतनी भी मंजूर हो जायँ तो अुनके लगभग नौ लाख रुपये खर्च होते हैं। अभी तो केवल थोड़ी ही संस्थाओंने अैसी योजनाअें भेजी हैं। अहमदाबाद स्कूल बोर्डकी अनिवार्य शिक्षाकी योजना तीन वर्षसे सरकारने ताक पर रख छोड़ी है। जितनी योजनाअें जाती हैं, अुतनी सब अेकके बाद अेक नंबरवार ताक पर रख दी जाती है और अिस युगमें अुनमेंसे कोअी मंजूर हो, अैसी आशा कम है। प्रेमचन्द रायचन्द ट्रेनिंग कॉलेज बन्द करनेका शोर मचा हुआ है। दक्षिण विभागसे भी यही

पुकार आअी है। मध्य विभागमें शिक्षा-विभागके दफ़्तरके नौकरोंको अलग करनेके नोटिस मिलनेकी खबर है। शिक्षकोंकी तनखाहके झगड़े जगह जगह चल रहे हैं। सार यह है कि स्थानीय संस्थाओं और सरकार दोनोंकी आर्थिक कठिनाओके बीचमें प्रारंभिक शिक्षाकी दुर्गति हो रही है।

स्थानीय स्वराज्यके मन्त्री सरकारकी और हमारी आर्थिक कठिनाअियोंका सारा भार 'मेस्टन अेवार्ड' के मत्थे मढ़ते हैं। अुधर लोग सरकार पर अुनके पसीनेकी गाढ़ी कमाअीको समुद्रमें डालनेका पागलपन करनेका दोष लगाते हैं। 'सक्खर बैरेज' के बहावमें बहनेवाली और 'बैक बे' के खड्डेमें डूबनेवाली सरकार कब अुबरेगी यह कहना मुश्किल है।

आपमें से कुछ लोग अगले सप्ताह पूना जानेवाले है। जो जायँगे अुनसे मेरी आग्रहपूर्वक सिफारिश है कि अुन्हें अिस परिषदमें अिस महत्त्वके सवालपर परदा न पड़ने देकर अुसका साफ़ साफ निर्णय कराना चाहिये। वस्तुस्थिति ठीक ठीक समझ लेनेमें हमारा लाभ है। सरकारसे कोअी भी मदद निकट भविष्यमें मिल सकती है या नहीं, अिसका निश्चित निर्णय हो जाना चाहिये। मीठे-मीठे शब्दोंपर झूठी आशाअें बाँधकर कर्तव्य-क्षेत्रमें चूक जानेसे हमें बहुत नुक़सान हो सकता है। अगर किसी भी मददकी आशा न हो, तो सैकड़ों आदमियोंको दूर दूरसे महत्त्वके काम छोड़कर, संस्थाओंके सिर पर व्यर्थ खर्चका भार डालकर, सफर खर्च कराकर अेक जगह अिकट्ठे करने और भाषण पढ़कर चले जानेसे कुछ भी लाभ नहीं होगा। अिस परिषदकी कसौटीके लिअे मैं कुछ व्यावहारिक सूचनाअें आपके सामने पेश करता हूँ।

कुछ सूचनाअें

१. घनी आबादीवाले शहरोंमें जिन ज़मीनोंकी सरकारको सार्वजनिक अुपयोगके लिअे ज़रूरत न हो, अुनके सारे सिटी सर्वेके नम्बर (ज़मीनें) स्थानीय संस्थाओंके सुपुर्द कर दिये जायँ।

२. स्थानीय संस्थाओंकी आर्थिक स्थिति सुधारनेकी तीव्र आवश्यकता देखकर, स्थानीय संस्थाओंके मातहत नगर-रचनाकी योजनाओंका प्रारम्भिक खर्च पूरा कर सकनेके लिअे और अिस तरहके विकासकी योजनाओंके लिअे लिये जानेवाले कर्ज़ोंके सिंकिंग फंड और अुनके वार्षिक खर्चको पूरा करनेके लिअे स्थानीय हदमें रही हुअी बिना खेतीकी ज़मीनोंका लगान स्थानीय संस्थाओंके नाम कर देनेके लिअे सरकारसे माँग की जाय।

३. स्थानीय संस्थाओंकी हदमें से लिये जानेवाले मनोरंजन-कर की आमदनी वहाँकी स्थानीय संस्थाओंके शिक्षाके कामके लिअे अुनके सिपुर्द की जाय।

४. पूना परिषदमें लोकल बोर्डोकी आयके साधन बढ़ानेके लिअे जो प्रस्ताव पास किये गये हैं, अुनमें से अेक पर भी अमल नहीं होता और यह भी मालूम नहीं हुआ कि अुस दिशामें कुछ प्रयत्न किया गया है या नहीं। अिस बारेमें आगामी परिषदमें स्पष्टीकरण होनेकी खास ज़रूरत है।

अिसके सिवाय सरकारसे आर्थिक सहायता माँगे बिना क़ानूनमें कुछ परिवर्तन करनेसे स्थानीय संस्थाओंकी आमदनीके साधन बढ़ानेके नीचे लिखे सुझाव परिषदके सामने रखना मुझे ज़रूरी मालूम होता है:

१. आम रास्तों पर तख्ते या विज्ञापन रखने वालों और आम रास्तों पर माल बेचनेके लाअिसेन्सदार फेरीवालोंसे लाअिसेन्स-फ़ीस लेनेका अधिकार म्युनिसिपेलिटियोंको क़ानून द्वारा जल्दीसे जल्दी दिया जाय।

२. अिसी तरह १९२५ के सिटी म्युनिसिपेलिटीज़ अेक्टमें सुधार करके किसी भी म्युनिसिपल बरोको खाने-पीनेकी चीज़ें बेचनेवाले खानगी बाज़ार और दुकान दोनोंको लाअिसेन्स लेनेके लिअे मजबूर करने और अुनसे फ़ीस लेनेका अधिकार दिया जाय।

सरकार सच्ची किफ़ायत नहीं करती

सरकार अपनी आर्थिक स्थिति तंग होनेकी पुकार मचाती है, मगर अुसके प्रबंधके शाही खर्चमें जो अनेक दिशाओंमें कमी हो सकती है वह कुछ भी नहीं की जाती। प्रारम्भिक शिक्षाका कामकाज स्थानीय संस्थाओंको सौंप देनेके बाद अिन्स्पेक्टरों और डिप्टी अिन्स्पेक्टरों वगैराके दफ्तरोंके खर्च रखनेकी कोअी आवश्यकता नहीं है। खुद डाअिरेक्टरका दफ्तर भी बन्द कर दिया जाय तो भी कोअी हर्ज नहीं है। जिस दफ़्तरसे अपने विभागके प्रबन्धका विवरण दो दो साल तक प्रकाशित न हो, अुस दफ़्तरकी अुपयोगिता कितनी होगी, अिस बारेमें स्वाभाविक रूपमें ही शंका पैदा होती है। सरकारको यह भी पसंद नहीं है कि लोग सरकारकी मददके बिना अपने खर्चसे शिक्षाका स्वतंत्र प्रबन्ध कर लें। सरकार शिक्षा परसे अंकुश हटाती भी नहीं है और खुदमें शिक्षा देनेकी शक्ति भी नहीं है।

सरकारके पी० डबल्यु० डी० विभागमें व्यवस्था खर्च ५० से ६० फ़ीसदी तक होने लगा है। हर ज़िलेमें अेक्ज़ीक्यूटिव अिन्जीनियर, सब डिवीज़नल अफ़सरों और ओवरसियरों और दफ़्तरका खर्च सरकार पर व्यर्थ पड़ता रहता है। अुनसे काम लेनेके लिअे सरकारके पास रुपये नहीं है। हर ज़िलेमें अेकाध पुलिस लाअिनके कमरे या कोअी थाने-चौकियोंके छोटे-छोटे मकान बनानेके सिवाय और कोअी काम नहीं है। अधिकांश स्थानीय संस्थाअें अपने स्वतंत्र अिन्जीनियर नहीं रख सकतीं। ज़िलेकी स्थानीय संस्थाओं और पी० डबल्यु० डी० विभागका काम मिला दिया जाय, तो भी पी० डबल्यु० डी० को पूरा काम नहीं

मिल सकता। अितने पर भी यदि कोअी संस्था पी० डब्ल्यु० डी० के द्वारा काम करानेकी माँग करे, तो अुससे पच्चीस फ़ीसदीके जितना भारी विभागीय खर्च माँगा जाता है। दो दो ज़िलोंका काम मिला कर चलाया जाय तो भी काम चल सकता है। कहीं कहीं स्थानीय संस्थाओंके साथ मिल कर काम चलाया जा सकता है।

मुझे मालूम नहीं कि अिन सारे विषयों पर पूना परिषदमें चर्चा हो सकती है या नहीं। मैं तो सिर्फ़ अितना ही चाहता हूँ कि स्थानीय संस्थाओं और सरकारके बीचका आर्थिक सम्बन्ध निश्चित हो जाना चाहिये और अिन संस्थाओंको अनिश्चित स्थिति और झूठी आशाओंसे हमेशाके लिअे मुक्त हो जाना चाहिये। जो कुछ भी मदद मिलती हो अुसमें सरकारका दखल नहीं होना चाहिये; क्योंकि अैसी स्थितिमें अन्तमें कुछ मिलता भी नहीं और आशा ही आशामें काम भी नहीं होता। हमारी वर्तमान स्थिति अैसी नहीं है कि हम अपनी महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओंको लम्बे अर्से तक मुल्तवी रख सकें। सूरतका ही अुदाहरण लें, तो अिस शहरमें रोज़ पच्चीस लाख गैलन पानी काममें लाया जाता है। अितने छोटेसे शहरमें जब हर रोज़ अितना पानी जज़्ब होता है, तो शहरमें रोग और मृत्युकी मात्रा बढ़े और शहरियोंकी शरीर-सम्पत्ति दुर्बल हो, अिसमें क्या आश्चर्य? अिस पानीको निकालनेके लिअे गटर आदिकी योजना 'मेस्टन अेवार्ड' पर कैसे मुल्तवी रखी जा सकती है! फिर पच्चीस लाख गैलन पानी देने पर भी चारों तरफ़से म्युनिसिपेलिटीको पानीकी पुकार सुननी ही पड़ती है। जहाँ पीनेके पानीकी, गटरकी, पाखाने साफ करनेकी, कचरा हटानेकी और अिसी तरहकी और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकताअें पूरी करनेके साधन चाहियें, वहाँ सरकारका मुँह ताकते हुअे कब तक बैठे रहा जा सकता है? मैं खुद तो अधीर हो गया हूँ और मैं मानता हूँ कि आपमें से अधिकांश लोग बहुत समय तक धीरज नहीं रख सकेंगे।

सरकारकी आशा छोड़ो

हमारे शहर न शहर हैं न गाँव। शहरोंमें रहकर भी आधे तो ग्रामजीवन बिताते हों अैसी हालतमें हैं। आधे मकानोंमें पाखाने नहीं हैं। कहीं अपने घरका कूड़ा डालनेकी जगह नहीं है। तंग गलियों और घनी आबादीके बीचमें रहकर भी कुछ लोग मवेशी रखते हैं। कितने ही ग्वाले शहरोंके बीचमें गायोंके झुण्ड रखते हैं। रास्तों पर जगह-जगह झुण्डके झुण्ड पशु फिरते हैं। आम तौर पर लोग तन्दुरुस्ती और सफ़ाअीके नियम पालन करनेमें अत्यन्त शिथिल हैं और अैसे मामलोंमें वे न तो स्वधर्म समझते हैं और न पड़ोसी-धर्म ही। अपने घरका कूड़ा पड़ोसीके दरवाज़ेमें फेंकनेमें कुछ भी बुराअी नहीं समझते। अूपरकी मंज़िलसे,

खिड़की या छज्जे परसे, कचरा डालने या पानी फेंकनेमें भी नहीं हिचकिचाते। हमारी स्थानीय स्वराज्यकी संस्थाओंको देखने पर या हमारे शहरोंमें घुसने पर विदेशियोंको कहीं भी स्वराज्यका चिन्ह दिखाओी नहीं दे सकता। लोगोंको कहीं भी थूकने, कहीं भी पेशाब करने और कहीं भी गन्दगी करनेकी आदतें हैं। गाँवोंकी हालत शहरोंसे अच्छी नहीं है। किसी भी गाँवमें घुसें तो कअी अेक घूरे नज़र आयेंगे। गाँवके तालाबके आसपास गाँवका पाखाना बन जाता है, गाँवके कुअेंके आसपास कीचड़ हो जाता है और पानी बिगड़ता रहता है। अैसी स्थितिमें सरकारकी तरफ़ ताकते रहना मैं महापाप समझता हूँ। हमारे पास ताज़ा मिसाल है, जिससे अंदाज़ हो सकता है कि सरकार पर आशा लगाकर बैठनेमें कितनी जोखिम है। मध्य विभागमें हैज़ा फैल जानेसे हज़ारों आदमी देखते-देखते मर गये, अुससे क्या सरकार महाबलेश्वर छोड़कर वहाँ जानेवाली थी? अिससे सौवें हिस्सेकी हालत भी किसी छावनीमें पैदा हो जाती, तो क्या आप यह मानते हैं कि अुसका मुक़ाबला करनेके लिअे जरूरी आर्थिक सहायता 'मेस्टन अेवार्ड' पर मुलतवी कर दी जाती? सरकारके तमाम साधनों और सुविधाओंको बिजलीकी भाँति वहाँ पहुंचा दिया जाता। अतः यह मेरी पक्की राय है कि हम वस्तुस्थितिको अच्छी तरह समझकर सरकार पर आधार रखना छोड़ दें और अपनी जिम्मेदारियां खुद ही अुठाने और लोगोंको अुठानेके लिअे समझाने लग जायं। सरकारको ज़रूरत होती है, तब वह कहींसे भी रुपया ले आती है, मगर वह हमारे लिअे रुपया निकालनेवाली नहीं है।

जगह-जगह तहसील बोर्डों और ज़िला बोर्डोंके बीच संघर्ष होता पाया जाता है। अिस बारेमें क़ानूनमें कितना परिवर्तन करनेकी ज़रूरत है, अिसकी मुझे विशेष जानकारी नहीं है। परन्तु अिस परिषदमें अुन संस्थाओंके जो प्रतिनिधि आये हुअे हैं, वे ही अुसके बारेमें सच्चा हाल बता सकेंगे। ग्राम पंचायतोंका क़ानून पास हुअे वर्षों हो चुके हैं, फिर भी वह अैसा रहा है मानों बना ही नहीं। सारे अहमदाबाद ज़िलेमें सिर्फ़ दो ही ग्राम-पंचायतें जीवित रही हैं। यही स्थिति लगभग तमाम गुजरातमें है। अिसका मुख्य कारण यही है कि अुन्हें रुपयेकी मदद देनेका कोअी अिन्तज़ाम नहीं किया गया और न अुन्हें कोअी अधिकार ही दिया गया। अिस सम्बन्धमें अेक कमेटी मुक़र्रर की गअी थी। अुस कमेटीने साल डेढ़ साल पहले कुछ सुधारोंके लिअे जो रिपोर्ट दी थी, अुसका क्या परिणाम निकला यह अभी तक मालूम नहीं हुआ।

प्रबंध सम्बंधी सूचनाअें

स्थानीय संस्थाओंके कार्यसंचालनमें जो मुश्किलें आती हैं, अुनका मुख्य कारण यह है कि सिविल सर्विस, अेज्युकेशनल सर्विस, मेडिकल सर्विस, अिन्जीनियरिंग

सर्विस, पुलिस सर्विस वगैरा द्वारा हरअेक सरकारी महकमेके लिअे खास तालीम पाये हुअे कार्यदक्ष नौकर प्राप्त करनेके सरकारने जो साधन रखे हैं, वैसे ही स्थानीय संस्थाओंका कामकाज चलानेके लिअे अुन अुन विषयोंमें प्रवीण नौकर तैयार करनेवाली कोअी सर्विस या अैसी ही कोअी अनुकूलता नहीं है। पूना परिषदमें स्थापित 'लोकल सेल्फ़ गवर्नमेण्ट अिन्स्टिटयूट' की तरफ़से यह कमी पूरी करनेकी जो शुरुआत की गअी है, अुसमें परिवर्तन और सुधार होनेकी ज़रूरत है। कार्यसंचालनमें आनेवाली कठिनाअियाँ दूर हो सकें, अिस अुद्देश्यसे नीचे लिखी सुचनाअें परिषदके सामने पेश करनेकी अिजाज़त चाहता हूँ:

(१) स्थानीय संस्थाओंके नौकरोंके लिअे तमाम स्थानीय संस्थाओं द्वारा अपनाने लायक़ नमूनेके नियम तैयार करनेके लिअे अेक कमेटी नियुक्त की जाय, जिसमें खास तौर पर निम्न लिखित बातों सम्बंधी नियमोंका समावेश हो:

१. छुट्टी और छुट्टीके दिनोंके वेतन सम्बंधी नियम।
२. सफ़रके और दूसरे भत्ते।
३. नौकरीकी मियाद और निवृत्त होनेके नियम।
४. पेन्शन और ग्रेच्युअिटी।
५. प्रोविडेण्ट फण्ड।

(२) सन् १९२५ के सिटी म्युनिसिपेलिटीज़ अेक्ट, १९०१ के ज़िला म्युनिसिपेलिटीज़ अेक्ट और सन् १९२३ के लोकल बोर्ड्ज़ अेक्टमें अैसा सुधार करानेकी कार्रवाअी की जाय, जिसके आधार पर स्थानीय सरकारकी तय की हुअी शर्तों पर छुट्टीके वेतन, जॉअिनिंग टाअिमका भत्ता, सफ़र भत्ता और नौकरीकी मियादके हिसाबसे पेन्शन, ग्रेच्युअिटी या प्रोविडेण्ट फण्डके लाभोंके लिअे अुचित सहायता देकर स्थानीय संस्थाअें अेक दूसरेसे अधिकृत डेपुटेशनकी प्रथाके अनुसार आवश्यक योग्यतावाले म्युनिसिपल या लोकल बोर्डोंके नौकरोंकी सेवाअें प्राप्त कर सकें।

(३) हरअेक विभागके मुख्य स्थानमें अविलम्ब ट्रेनिंग क्लासकी शाखाअें खोलनेकी अिन्स्टिटयूटसे प्रार्थना की जाय।

(४) स्थानीय संस्थाओंकी अिस सर्व संबंधी ट्रेनिंग क्लासका पाठ्यक्रम स्थानीय स्वराज्यके सिद्धान्तों और अमलका निजी अनुभव रखनेवाले अनुभवियोंकी अेक कमेटीकी सलाहसे तय किया जाय।

स्थानीय संस्थाओंके खर्च पर जो सरकारी नौकर स्थानीय संस्थाओंमें काम करते हों, अुन पर अुन संस्थाओंका कुछ भी नियंत्रण न हो तो बड़ी कठिनाअियाँ पैदा होती हैं। मैं अिसकी अेक मिसाल दूँगा। चेचकका टीका लगानेवाले डॉक्टरोंको म्युनिसिपेलिटीकी तरफ़से वेतन मिलने पर भी म्युनिसिपेलिटीका अुन पर

कोअी नियंत्रण न होनेके कारण अुन लोगोंके कामकी कोअी देखरेख नहीं होती और अुनके विरुद्ध आनेवाली लोगोंकी शिकायतोंके सम्बंधमें म्युनिसिपेलिटियाँ कुछ भी नहीं कर सकतीं। असे नौकरोंको स्थानीय संस्थाओंके मातहत ही कर देना चाहिये।

स्थानीय स्वराज्यके अिन्स्टिटयूटके कामकाज और अुसके पूरे खर्चेकी रिपोर्ट प्रकाशित होनी चाहिये और वह हरअेक स्थानीय संस्थाके पास पहुँचनी चाहिये। अुस संस्थाके कामकाजके नियम और अुसके अधिकारियोंको दिये गये अधिकारों वगैराका हाल भी प्रकाशित होना चाहिये।

अुपसंहार

स्थानीय संस्थाओंमें काम करनेवाले आप सबके लिअे मौजूदा समय बड़ा कठिन है। राज्यकी तरफ़से मिलनेवाली मदद बंद हो गअी है, जबकि दूसरी तरफ़ जनता अपने नागरिक कर्त्तव्योंके प्रति अभी तक अुदासीन है। व्यापार-अुद्योगमें असाधारण मंदी आ गअी है। प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारकी तरफसे लिये जानेवाले कर-भारसे जनता कुचली जा रही है। अिसके सिवाय स्थानीय संस्थाओंके कर का बोझा भी अुस पर जितना डाला जा सकता है, अुतना डाला जा चुका है। ज्यादा डालनेकी गुंजाअिश नहीं रही। पहलेकी तरह यह बात नहीं रही कि अपने कामकाजसे निपट कर फुरसतके समय शामको घंटे दो घंटे हाज़िरी दे देनेसे अिन संस्थाओंका कामकाज चलाया जा सके। शुद्ध निष्ठासे सेवा करनेवालेको अिन संस्थाओंमें अपना तमाम वक्त देना पड़ता है। अुसे माथेरान या महाबलेश्वर जाना नहीं पुसा सकता। अुसे आराम लेनेका अवकाश ही नहीं। अितने पर भी अुसके सिर अपयशकी पोटली तो रहेगी ही। अिन तमाम कठिनाअियोंके बीच आपको हिम्मत और दृढ़तासे रास्ता बनाना है। अैसा करनेके लिअे अीश्वर आप सबको बल दे।

प्रजाबन्धु, १० १७-७-१९२७

३२

गुजरात बाढ़-संकट — १

[सहायताके लिअे अपील]

पिछले सप्ताह हुअी मूसलाधार वर्षाने गुजरात–काठियावाड़को यकायक अनपेक्षित संकटमें डाल दिया है। गाँवके गाँव बह गये या पानीमें डूब गये हैं, लोग भूखे-प्यासे बैठे हैं; अिस प्रकारकी छुटपुट खबरें आ रही हैं। डाक, रेल और तार लगभग सभी बंद हो जानेके कारण अभी कोअी अैसा आवागमन शुरू नहीं हुआ, जिससे अैसे कोअी अधिकृत हालचाल यहाँ तक पहुँच सकें कि बाहरके देहातोंमें सच्ची स्थिति क्या है और जानमालकी बरबादी कितनी हुअी है। परन्तु अहमदाबाद शहरकी जो हालत हो गअी है अुससे और बाहरके गाँवोंके बारेमें आती हुअी चौंकानेवाली अफ़वाहोंसे चारों तरफ़ फैले हुअे संकटकी कुछ कल्पना की जा सकती है।

अहमदाबादमें बरसातका सालाना औसत ३० अिंच माना जाता है, जब कि अिस बार अभी तक ७० अिंच वर्षा हो चुकी है, जिसमेंसे ५२ अिंच अकेले गत सप्ताहमें ही हुअी है। अितनी अतिवृष्टि पिछले पचास बरसमें कभी हुअी हो, अैसा किसीको याद नहीं है। अकेले अहमदाबाद शहरमें दो हज़ारसे ज्यादा मकान गिर पड़े हैं। हज़ारों लोग बेघरबार होकर अपना माल-असबाब छोड़कर केवल पहने हुअे कपड़ोंसे ही बाहर निकल गये हैं। मज़दूरों और ग़रीब लोगोंके मोहल्ले पानीमें डूब गये हैं। अैसी स्थितिमें खेतों और खेतीकी हालतका तो विचार भी नहीं किया जा सकता।

संकटकी सही कल्पना तो रेल, डाक वगैराका कामकाज शुरू होने पर चारों तरफ़के समाचार मिलेंगे, तभी हो सकती है। फिर भी यह माननेके लिअे काफी कारण है कि यह संकट लगभग सारे गुजरात-काठियावाड़ पर अकस्मात टूट पड़ा है। गुजरात और गुजरातसे बाहर रहनेवाले गुजराती दोनोंने अब तक दूसरे प्रान्तोंके संकट निवारणके लिअे कअी बार खुले हाथों मदद दी है। दया धर्म गुजराती लोगोंका विशेष गुण माना गया है। मुझे पूरी आशा है कि वे अिस घरके संकट कालमें प्रजाके कष्ट निवारणके लिअे तात्कालिक मदद देनेमें पीछे नहीं रहेंगे। समस्त गुजरातसे और गुजरातके बाहर रहनेवाले दानी लोगोंसे मैं यह अपील करता हूँ कि हरअेक भाअी-बहन अपने संकटग्रस्त भाअी-बहनोंके लिअे अपनेसे जो कुछ हो सके वह सहायता तुरंत गुजरात प्रान्तीय समिति या नवजीवन कार्यालय, अहमदाबादके पते पर भेज दें।

नवजीवन, ३१–७–१९२७

३३

गुजरात बाढ़-संकट — २

[ता० ८-८-१९२७ को अहमदाबाद जिला संकट-निवारण समितिकी सार्वजनिक सभामें अध्यक्षपदसे दिया हुआ भाषण।]

यह विवरण तो सिर्फ़ रूपरेखा है। अब महत्त्वका प्रश्न क्या है, सो हमें सरकारके सामने खुले तौर पर पेश करना पड़ेगा। अगर हम अैसा नहीं करेंगे, तो भावी सन्तानें अुसके लिअे हमें ज़िम्मेदार समझेंगी। मैंने अिस सवालकी पूरी तरह जाँच की है और अुसके सम्बंधमें मैं अुत्तर विभागके कमिश्नरके साथ बातचीत और पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ। यह अवसर अैसा है कि जब सहयोगी या असहयोगी, अधिकारी या रैयत, सब अेक ही नावमें बैठे हैं। अगर अिस नावमें छेद हो गया और अुसे बन्द नहीं किया गया तो नाव ज़रूर डूब जायगी। घरमें बैठे रहनेवाले या सिर्फ़ बाज़ारमें घूमनेवालेसे अिसका जवाब नहीं दिया जा सकता। संकट सम्बंधी अखबारोंकी बातें पत्थरको भी पिघलानेवाली थीं। क्या वे सच थीं? — यह सवाल हम अपने आपसे पूछते हैं। आज अहमदाबादमें पहलेकी तरह ही गाड़ियाँ और मोटरें चल रही हैं, अिसलिअे हमें शंका हो सकती है कि क्या वे सब बातें बनावटी थीं? मगर अिस चित्रका सपना लोग नहीं भूल सकते।

अहमदाबादमें अेक करोड़का नुकसान

अकेले अहमदाबादमें ही अेक करोड़का नुक़सान हुआ है। दूसरे छोटे छोटे गाँवोंमें भी दो दो लाखका नुकसान हुआ है। खेड़ामें, नलकंठामें जाकर देखिये तो आपकी समझमें आयेगा कि वहाँ कितना ज़बरदस्त नुकसान हुआ है। लक्ष्मीपुरा नामके गाँवका तो नाम-निशान ही नहीं रहा। खपाटियापराका भी वही हाल हुआ है। कितने लोग सलामत रहे हैं, अिसकी गिनती तो अभी बादमें ही होगी। नलकंठामें गले तक पानीमें होकर अेक आदमी अनाजकी मदद लेने आया, तब हमारे आदमियोंको खबर लगी कि पानीके अुस पार मनुष्य हैं। मातर तहसीलमें बेड़ा बाँधकर और तैरकर स्वयंसेवक मदद पहुँचाते हैं। अहमदाबादके लोगो! याद रखो कि गाँवोंका स्वरूप आज भयंकर बन गया है और अुसको ठीक स्थितिमें लानेके लिअे सामग्री देनी पड़ेगी, नहीं तो सारा गुजरात बरबाद हो जायगा।

गाँव टूटेंगे तो शहर नहीं रहेंगे

आजकल खेड़ामें २०० आदमी काम कर रहे हैं। भड़ौंचमें डॉ० चन्दूलालके नेतृत्वमें अच्छा काम हो रहा है। वहाँ तो बम्बअीसे आदमी आ पहुँचे हैं। रेलवे टूट जानेसे काठियावाड़ अलग पड़ गया है। मिलोंका माल नहीं जा सकता और रेलें न हों तो मिलोंको कोयला भी कैसे मिलेगा? यह पश्चिमकी यांत्रिक रचनाकी कड़वी गोलीका अनुभव है। अैसा ही अुम्र भर न भूला जा सकनेवाला अनुभव श्री० अब्बास तैयबजीको हुआ है। अुन्हें बड़ौदासे अपने कुटुम्बकी कुशलताका तार या पत्र कुछ भी नहीं मिल रहा था। अुनके बंगलेके पासकी भंगीकी कोठरी और सअीसकी कोठरी पानीसे गिर पड़ीं। अिस-पर अुनके कुटुम्बने भंगी और सअीसको बंगलेके अूपरकी मंज़िलपर बुलाकर अपने साथ रख लिया। अन्तमें बोरसदमें कांग्रेसके अेक स्वयंसेवकने पानी पार करके अब्बास साहबको अुनके परिवारका कुशल समाचार पहुँचाया। अिससे भी बुरी हालत गाँवोंमें अनेक मनुष्योंकी हुअी है और अुनका संकट निवारण करनेके लिअे हमें जितना काम करना चाहिये, अुसका सौवाँ भाग भी अभी तक हमने नहीं किया है।

संकट निवारण और जनता तथा सरकार

अहमदाबादने अिस मौके पर अच्छी अुदारता दिखाअी है। अिसके लिअे अुसे धन्यवाद देना चाहिये। अब सारी व्यवस्था की जा रही है और अनाज और कपड़ा बाँटा जा रहा है। बंबअीसे मारवाड़ी स्वयंसेवक भी गुजरातमें मदद लेकर आये हैं। कुछ संस्थाअें अपनी तरफ़से खुद ही व्यवस्था कर रही हैं। व्यापारी अिस कामको हाथमें ले लें, तो अिससे अच्छा और कोअी काम नहीं। अुन्होंने अब तक जो काम करके दिखाया है, वह प्रशंसाके योग्य है। खेड़ाका कलेक्टर सारे ज़िलेसे अलग पड़ गया था। हमारे कलेक्टरको भी तहसीलदारों वग़ैरा की तरफ़से तार डाक कुछ भी नहीं मिल रहा है। अैसे वक्तमें वे क्या कर सकते हैं? फिर भी हर अेकने भरसक काम किया है। जो कुछ काम हुआ है, अुसके लिअे मुझे अेक गुजरातीकी हैसियतसे गर्व होता है। अैसे समय किसी कलेक्टर या अधिकारीने निर्दयता दिखाअी हो, यह मैं नहीं मानता। अैसा निष्ठुर कोअी नहीं हो सकता। यह अवसर अीश्वरको पहचाननेका ही था। अैसे वक्तमें लोगोंने ढेड़-भंगीको भी घरमें रखा था। अैसे समयमें अधिकारी भी अपने ओहदेका विचार नहीं कर सकते। अुन्होंने भी भरसक कोशिश की है। यह मौका धारासभा बंद रखवाने या तेज़ भाषण देनेका नहीं, परन्तु ग़रीबों, किसानों और ढेड़-भंगियोंकी सुध लेनेका है।

गुजरातका किसान भिखारी नहीं बनना चाहता

अब कामकी रूपरेखाको विस्तृत करनेकी ज़रूरत है। गुजरातका किसान स्वाभिमानी है। वह दयाकी रोटी खानेको तैयार नहीं है। प्राण जायँ तो भी वह दान लेनेसे अिनकार करता है। अब अुसका अुपाय करना चाहिये। समितिने संयोगोंका विचार करके सस्ते भावोंसे अनाज बेचनेकी दुकानें खोली हैं, मगर किसान पेटसे ज़्यादा खेतकी तरफ़ देखता है। अुसे फिरसे बोनेके लिअे बीज चाहिये। अगर आठ दिनमें बीज न मिला, तो अेक बरस तक अुसका खेत बेकार पड़ा रहेगा। यह काम सरकारका है। अुसने तकावी देनेके हुक्म जारी किये है। मैं सरकारको अुलाहना देने या अुसके साथ झगड़ा करनेको तैयार नहीं हूँ। अभी तो काम किस ढंगसे होता है, यही देखना है। तकावी पर आधार रखनेसे किसान बरबाद होगा। सरकारका यंत्र अितना धीमा है कि किसानको तकावी मिलनेमें अेक महीना लग जायगा, अिसलिअे वह कुछ नहीं कर सकेगी। अिस तरह अगर खेतोंमें अनाज पैदा नहीं होगा, तो आप यह मत समझिये कि गुजरात खुशहाल रहेगा। बीजका तुरंत बोया जाना और गुजरातकी पुनर्रचना करना ज़रूरी है। अुसके लिअे किसानको स्वावलंबी बनानेकी ज़रूरत है। अनाज और कपड़ा तो केवल छोटा सवाल है। किसान भिखारी बनना नहीं चाहता। अगर अुसे मज़दूरी मिलेगी तो वह भिक्षुककी तरह रोटी लेनेसे अिनकार कर देगा। यदि किसानको बीज नहीं मिला, तो वह मिलोंमें भी नहीं आयेगा और भिखारी बन जायगा। मगर भिखारीपनको प्रोत्साहन देना तो मैं अधर्म समझता हूं। समिति चाहती है कि आपसे हो सके अुतनी मदद अिस कोषमें दीजिये। खेती लायक अेक भी खेत पड़ा न रहना चाहिये।

गाँवोंके मकानोंका क्या?

अेक और सवाल यह है कि देहातमें जो मकान गिर गये हैं, अुन्हें बनानेके लिअे देहातके लोगोंके पास रुपया नहीं है। मकानके जानेके साथ अुनका सर्वस्व चला गया है। जिनके पास कुछ रहा है, वे टूटे हुअे घरमें रहकर जी रहे है। आप अहमदाबादके लोगोंको दस पंद्रह लाख रुपये देकर अुनके मकान खड़े करनेमें सहायता देंगे, मगर किसानका झोंपड़ा खड़ा न होगा तो समझ लीजिये कि आपके बंगले भी नहीं रहेंगे। हर अेक गाँवमें पचास फ़ीसदी घर गिर गये हैं। अुनकी व्यवस्था सरकार कर सकती है। बम्बअी सरकारके पास ढाअी करोड़ रुपयेका अकाल बीमा कोष है। अैसे आफ़तके समय मैं अुसमें से अेक करोड़ रुपया कमिश्नरसे माँग रहा हूं। मैंने अुनसे कहा है कि सरकार न दे, तो आप मेरे साथ रहिये। फिर आप और मैं लड़ेंगे। वे अपनी

जेबमें कमिश्नरीका अिस्तीफ़ा डालकर जायँ, तो सरकारको यह काम करना ही पड़ेगा। कलेक्टर भले हैं।• वे गाँव-गाँव घूम रहे हैं। मगर किसान हमेशाके लिअे बरबाद न हों, अिसके लिअे सरकार क्या कर रही है? जो क़र्ज़ लेनेमें समर्थ हों, अुन्हें क़र्ज़ देकर और जो बिलकुल असमर्थ हों, अुन्हें मुफ़्त रुपया देकर भी अुनके छप्पर खड़े करनेमें सरकारको सहायता देनी चाहिये। दिया हुआ क़र्ज़ वापस आ जाने पर कोषमें कोअी बड़ी कमी नहीं रहेगी। अमीन परिवार जैसोंको स्त्रियाँ, जो घरसे बाहर भी नहीं निकलती थीं, आज टूटे-फूटे झोंपड़ोंमें रह रही हैं। अिसलिअे सरकारको जहाँ तक हो सके जल्दी ही घोषणापत्र प्रकाशित करके किसानोंको तसल्ली देनी चाहिये। अिस कोषमें से अेक करोड़ रुपया किसानोंको अुधार दिलवा कर भी हम अुनके झोंपड़े खड़े करानेकी कोशिश करेंगे। नहीं तो किसान बरबाद हो जायँगे, क्योंकि आज अुन्हें कोअी अुधार देनेवाला नहीं है। अुनकी स्थितिका मेरे जितना खयाल तो बम्बअीमें रहनेवाले या कलेक्टरको भी नहीं होगा। जिस वक्त सरकारके कर्मचारी नहीं पहुँच सकते थे, अुस वक्त किसानोंको रोटी देनेके लिअे दान देनेवालोंकी भावनाका हम आभार मानते हैं। मगर मकान बनानेके बारेमें अुन्हें धीरज बँधानेकी जरूरत है और अिसके लिअे समय पर जाग्रत हुअे बिना कुछ नहीं होगा।

गांधीजीका सन्देश

मेरे पास तारसे गांधीजीका सन्देश आया है। अुसमें वे लिखते हैं कि मुझसे किसीके साथ लंबी बातचीत या चर्चा नहीं हो सकती, मगर मेरे आनेसे गुजरातको नैतिक बल भी मिल सकता हो तो मैं आ जाअूँ। मुझे लगता है कि अुन्हें कष्ट देना फज़ूल है। हम अपना संकट अुठा लें, अिसीमें हमारी शोभा है।

प्रजाबंधु, १४-८-१९२७

३४

गुजरात बाढ़-संकट—३

[दानवीर धनिकोंसे]

स्थानीय, बाहरके और खास तौर पर बम्बअीके दानवीर लोगोंकी अुदारतासे गुजरातका घाव कुछ कुछ भरने लगा है। तार और रेलका व्यवहार शुरू होते ही बम्बअी और बाहरके अुदारहृदय दानियोंके दिल क़ाबूमें नहीं रहे। गुजरातके पीड़ित होनेकी खबरसे रो अुठनेवाले बम्बअी निवासी गुजराती रेलका अधूरा आवागमन शुरू होते ही अपने दुःखी भाअियोंके प्रति प्रेमसे अुमड़ कर अुनकी खबर लेने निकल पड़े है। छोटी-बड़ी व्यापारी पेढ़ियोंने अपने आदमियोंको रुपया देकर और अधिक रुपयेकी माँग भेजनेका अधिकार देकर गुजरात और काठियावाड़की ओर रवाना कर दिया है। अैसे दानियोंके दल अिस समय देहातमें घूम घूम कर अपने हाथों अन्न-वस्त्रका दान करनेके लिअे गुजरातमें चारों तरफ फैल गये हैं।

जहाँ अुदारताकी यह बाढ़ और यह स्पर्धा अेक तरफ बड़ा आनंद पैदा करती है, वहाँ दूसरी तरफ़ अिसमें कअी बार पाया जानेवाला पागलपन और आवश्यक-अनावश्यकके लिअे वांछित विवेककी कमी खेद भी अुत्पन्न करते है। अिस दानमें आनेवाला रुपया अत्यंत अुदार और दयाधर्मी लोगोंकी तरफसे आ रहा है। अुसका प्रबंध अैसे समयमें काफ़ी कड़े दिलवाले आदमियोंके हाथमें और नियंत्रणमें होना चाहिये। अनजान गाँवोंमें बहुतसे आदमी अपने या अपने आदमियोंके हाथसे अनियंत्रित दान करनेका आग्रह रखें, तो दानका अुद्देश्य कैसे पूरा हो? जो बहुसंख्यक दल आजकल गुजरातमें आ गये हैं, अुनमें से बहुतोंके हाथोंसे अनाज और रुपया दोनों बरबाद हो रहे हैं, अैसी खबरें मेरे पास आने लगी हैं। दूरके प्रदेशोंमें, रेलसे दूरके गाँवोंमें, जहाँ सचमुच संकट है वहाँ अैसे दानी पहुँचते ही नहीं और रेलवे स्टेशनोंके पास या सड़कों पर जो गाँव है और जहाँ मददकी कम ज़रूरत है, वहाँ बार बार मदद मिलनेसे स्पष्ट ही वह दुगनी हो जाती है। अैसे दानियोंसे मेरी प्रार्थना है कि वे अुन समझदार दानियोंका अनुकरण करें, जो समितिके केन्द्रोंकी या जाने हुअे स्थानीय कार्यकर्ताओंकी मदद लेकर अपने हाथोंसे व्यवस्थित दान करते हैं। अिससे अुन्हें अपने हाथसे रुपया खर्च करनेका संतोष मिलनेके अलावा अुनका रुपया ठीक ढंगसे खर्च होगा। दुःखका क्षेत्र अितना विशाल है कि अभी तो फैलाअी हुअी नज़र पहुँचती ही नहीं। असली

दुःख तो अभी अुठाना बाकी है। बहुत जगहों पर अन्न-वस्त्रकी अब ज्यादा ज़रूरत नहीं रही। अिसलिअे बाहरसे सहायता भेजनेवाले दानियोंको अनाज वगैरा न भेजकर जहाँ तक हो सके रुपया भेजना चाहिये और खर्च करनेवालोंको अुसे बहुत ही सख्तीके साथ खर्च करना चाहिये। गुजरातमें काम करनेवाले हरअेक केन्द्रके कार्यकर्ताओंको सूचनाअें दे दी गअी हैं कि अपने हाथसे दान करनेकी अिच्छा रखनेवाले हरअेक दानीको अुचित स्थान और पात्र दिखानेकी सहायता दें। अिस सहायताका अुपयोग करनेकी दानियोंसे प्रार्थना है।

नवजीवन, १४-८-१९२७

३५

गुजरात बाढ़-संकट—४

[तात्कालिक और भविष्यके कामका स्वरूप]

संकटके प्रदेशमें अनाज और कपड़ेकी तात्कालिक सहायता देनेका काम अब धीरे धीरे समेटनेका वक्त आ पहुँचा है। अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक मुख्य स्थानों पर ज़िम्मेदार कार्यकर्ता रख दिये गये हैं। अुनके मातहत बहुतसे सैनिक दिन-रात सेवाका काम कर रहे हैं। बम्बअीकी व्यापारी संस्थाओंकी तरफ़से अुत्साही स्वयंसेवक दल अनाज, कपड़े और रुपयोंकी मदद जगह-जगह पहुँचा रहे हैं। अेक भी गाँव अैसा नहीं रहा, जहाँ यह मदद न पहुँची हो। अैन वक्त पर खुले हाथों पीड़ितोंको जल्दी मदद देना सम्भव हुआ, यह सारे गुजरातके लोगोंके लिअे शोभाकी बात है। अब अगर अिस सहायताका काम चतुराअीसे न समेट लिया जाय, तो दानका दुरुपयोग होना सम्भव है। गुजरातको अुससे लाभके बजाय हानि हो सकती है।

तात्कालिक सहायताका काम व्यवस्थित हो चुका कि तुरन्त ही किसानोंको खेतीसे लगानेका रास्ता निकालकर अुस काममें अुन्हें भरसक मदद करने और प्रोत्साहन देनेका काम हाथमें लिया गया है। बाहरी मदद पर अधिक समय तक लोगोंको आश्रित रखकर गुजरातको पंगु नहीं बनाना है। भिक्षा-वृत्तिको बढ़ावा देनेमें पुण्य नहीं, परन्तु पाप है। गुजरातके किसानोंमें से ज्यादातर फिरसे खेतीके काममें लग गये हैं। सरकारकी अिच्छा अुन्हें मदद देनेकी होते हुअे भी अुसका तंत्र अितना मन्द गति वाला है कि वह अैन वक्त पर पूरा काम दे ही नहीं सकता। अिस स्थितिको ध्यानमें रखकर अुसके तंत्रकी आलोचना करनेमें व्यर्थ समय न खोकर हरअेक जगह किसानको बीज मुहैया करनेका काम शुरू कर दिया गया।

यह काम लगभग आधा पूरा होने आया, तब सरकारका खेती-विभाग जागा। बम्बअी सरकारके अर्थशास्त्री सर चुन्नीलालकी अध्यक्षतामें नड़ियादमें जो परिषद पिछले रविवारको हुअी थी, अुसमें खेती-विभागके बड़े अधिकारीने खुले रूपमें बताया था कि अुनके पास सिर्फ़ अेक हज़ार मन ज्वारका बीज था। यह बीज ४॥। रु० मनके हिसाबसे खरीदा गया था और अुन्हीं पड़त दामों पर वे अुसे किसानोंको बेचना चाहते थे। अिसमें अेक पैसा भी घाटा अुठानेका सरकारका अिरादा नहीं था। अब यही बीज प्रांतीय समितिकी तरफ़से ३॥। रु० मनके हिसाबसे खरीद किया जा रहा था और फी मन बारह आनेका घाटा सहकर ३ रु० फ़ी मनमें किसानोंको बेचा जा रहा था, ताकि बाज़ारमें व्यापारी बीजका भाव न चढ़ा सकें। साथ ही, अकेले खेड़ा ज़िलेको ७० हज़ार मन बीज चाहिये और अिस कामको खेती-विभाग पूरा नहीं कर सकता। अिसलिअे अन्तमें परिषदमें यह निश्चय किया गया कि बीज बाँटनेका काम गुजरात प्रांतीय समितिकी तरफ़से सफलता-पूर्वक हो रहा है, अिस बातको ध्यानमें रखकर अुसीको पूरा करने दिया जाय।

यह देखना ज़रूरी है कि सारे गुजरातमें अेक भी अेकड़ ज़मीन फिरसे जुते बिना न रहे। अिसकी भरसक कोशिश हो रही है। खेती हो तभी मज़दूर वर्गको मज़दूरी मिलेगी। जब तक मुफ्त अनाज और कपड़ा दिया जाता रहेगा, तब तक स्वाभाविक है कि मजदूरी करनेकी तरफ़ अुनका मन नहीं जायेगा। अिसलिअे हर केन्द्रको यह सूचना दे दी गअी है कि जहाँ तक हो सके, जल्दी ही तात्कालिक सहायताका काम शान्तिसे समेट लिया जाय।

मध्यम वर्गके किसान और छोटे छोटे देहाती व्यापारी बहुत ही दुःखी हालतमें हैं। अुन्हें धर्मादेकी रोटी हज़म नहीं होती। सच्चा कष्ट तो अिस वर्ग पर आ पड़ा है। अुन्हें मदद देनेका काम बहुत नाजुक है। फिर भी अुसका कोअी अुपाय तो ढूँढ़ना ही पड़ेगा।

गुजरातके बाहरके छुटपुट अुत्साही और अुदार स्वयंसेवकोंको मेरी सलाह है कि अब वे या तो हरअेक केन्द्रके मुख्य अधिकारीके साथ मिल जायँ या अुन्हें और कुछ मदद देनेकी अिच्छा हो, तो अुसे मुख्य स्थान पर देकर अब वापस अपने धन्धेमें लग जायँ। जिसने गाँवोंका दुःख देखा न हो, अुसे असली दुःखकी कल्पना होना मुश्किल है और अिसलिअे झूठे दुःखके भुलावेमें आकर अुनके हाथों दयावृत्तिका दुरुपयोग होना सम्भव है। जिन भागोंमें गाँव बिलकुल नष्ट हो गये हैं और जहाँ नदियोंका पानी फैल जानेसे खेतोंकी ज़मीनपर पाँच पाँच छः छः फुट रेत चढ़ गअी है, वहाँ किसानोंको बहुत लम्बे समय तक मदद देनेकी व्यवस्था करनी पड़ेगी। यह काम स्थायी स्थानीय आदमियोंसे ही हो

सकता है। अुसमें रुपयेकी ज़रूरत तो होगी ही। अिस प्रकार जिस सहायताकी अब ज़रूरत नहीं, अुसे जल्दी ही बन्द कर देना चाहिये।

सबसे ज्यादा महत्त्वका सवाल तो जो हज़ारों मकान गिर गये हैं और जिसके कारण किसान बेघरबार हो गये है, अुन्हें ढँकनेका है। अिस सम्बन्धमें मुख्य दायित्व सरकारका है और यह स्पष्ट है कि यह काम अुसके सिवाय और किसीके बूतेका नहीं है। अकेले खेड़ा ज़िलेमें सरकारी गिनतीके अनुसार ७२,००० मकान टूट गये हैं। अहमदाबाद ज़िलेका नुक़सान भी लगभग अितना ही है। गाँवोंमें अब अैसा कोअी व्यापारी नहीं रहा जो रुपया अुधार दे सके। अुनकी जगह पठान घुस गये हैं। किसानोंको अपना मकान खड़ा करनेके लिअे या तो पठानके पास जाना होगा या सरकारकी मदद लेनी होगी। अिसके सिवाय और कोअी अुपाय नहीं रहा। अैसे संकटके अवसर पर किसानोंको मदद मिले अिसलिअे अुन्होंने वर्षों तक कर चुकाकर बीमा करा रखा है और ढाअी करोड़ रुपयेकी अुसकी पूँजी सरकारके पास पड़ी है। अुसका अुपयोग करनेकी माँग हो चुकी है। यह रक़म अिस वक़्त काममें न आअी तो और किस अवसर पर आयेगी?

सर पुरुषोत्तमदासने गुजरातके कार्य-संचालकोंके साथ बातचीत करके नड़ियादकी परिषद्में अेक कच्ची योजना पेश की है। अुसके अनुसार सरकार अेक करोड़ तीस लाख रुपयेकी सुविधा करेगी। अिसमें से दस लाख रुपये भंगी, ढेड़ वगैराके झोंपड़े मुफ़्त बना देनेके लिअे सहायताके तौरपर देने हैं। बाकी सबको लम्बी मियादकी किस्तोंसे थोड़े ब्याज पर रुपया अुधार देकर मकानोंकी मरम्मत करने या बनानेकी सुविधा करना है। कुछ लोगोंकी तरफ़से गुजरातके गाँवोंकी सारी पुनर्रचना करनेके सुझाव दिये गये हैं। मगर अितना बड़ा भगीरथ कार्य सरकार अपने सिर पर नहीं लेगी। अिस कामकी कठिनाअियाँ बेशुमार हैं और अुसमें करोड़ों रुपये लगानेकी ज़रूरत पड़ेगी। अितना रुपया सरकार दे, यह आशा नहीं है। अिसलिअे जहाँ तक हो जल्दी ही टूटे हुअे घरोंको खड़े कर देनेके सम्बन्धमें जो छोटी योजना नड़ियाद परिषद्में पेश की गअी है, अुसीका जल्दी निर्णय हो अिस बातपर लोकमत संगठित होना चाहिये। परिषद्में किसीने अिस योजनाका विरोध नहीं किया और सरकारकी तरफ़से और कोअी योजना अभी तक सुझाअी नहीं गअी है। अिसलिअे यह आशा रखी जा सकती है कि बहुत करके अूपरकी सूचना स्वीकृत हो जायगी।

नवजीवन, २१-८-१९२७

३६

गुजरात बाढ़-संकट — ५

[गुजरातको फिरसे अपने पाँवों पर खड़ा करनेका काम]

पिछले रविवारको आणंदमें गुजरात प्रान्तीय समितिकी तरफ़से सारे गुजरातके हरअेक विभागके मुख्य कार्य संचालकोंकी परिषद् हुअी थी। संकट निवारणका काम संगठित रूपसे चलानेकी चर्चा करनेके बाद जो प्रस्ताव पास किये गये थे, वे अिस अंकमें अन्यत्र प्रकाशित हुअे हैं। अिन प्रस्तावों पर अमल शुरू हो गया है। खरीफकी फ़सलका बीज मुहैया करनेका काम खतम होने आया है। रबी की फ़सलके बीजकी जाँच और व्यवस्था शुरू हो गअी है। जगह-जगह सस्ते अनाजकी दुकानें खोल दी गअी हैं। अिन दुकानों पर जो भीड़ होती है, अुससे मालूम होता है कि मध्यमवर्गको, जो मुफ़्त मदद नहीं लेता, अिस अितज़ामसे बड़ी राहत मिल रही है। बड़ौदा विभागके वहाँके प्रजामंडलकी तरफ़से जो समाचार आये हैं, अुनसे मालूम होता है कि अिस प्रबंधके अनुसार वहाँके कामको पूरा करनेके लिअे १० हज़ार रुपये चाहियें। मातर तहसीलमें भी १,००० मन अनाज रोज़ अुठ जाता है।

अिस प्रकार जहाँ-जहाँ दुकानें खोली गअी हैं, वहाँ काफी अनाज अुठ रहा है। अिस सारे खर्चको पूरा किया जा सकेगा या नहीं, अिस बारेमें कुछ कार्यकर्ता शंका प्रकट करते हैं। गुजरातके कार्यकर्ता आत्मश्रद्धा रखेंगे, अपने पर भरोसा रखेंगे और जैसा स्वच्छ और सुन्दर काम वे कर रहे हैं, वैसा हिम्मत और दृढ़तासे करते रहेंगे, तो मुझे पूरा विश्वास है कि अिस कामके लिअे हमें रुपयेकी कमी हरगिज़ नहीं रहेगी। मुझे अुम्मीद है कि गुजरात प्रान्तीय समितिको आजकल चारों ओरसे जो सहायता मिल रही है, वह अिस कामके पूरा होने तक मिलती ही रहेगी।

गुजरातमें अनाज और कपड़ेका अितज़ाम हरअेक केन्द्रमें हो रहा है। मगर कुछ लोग जितना जल्दी हो सके, बड़े-बड़े कोषोंसे चट रुपया ले लेनेको अधीर हो रहे हैं। ये अर्ज़ियाँ मालूम होता है ज़्यादातर मकानोंके लिअे रुपयो प्राप्त कर लेनेके अुद्देश्यसे ही दी जाती हैं। मकान बनानेका काम अभी तुरंत हाथमें लेना वांछनीय नहीं है। अेक रुपयेकी जगह चार खर्च करें, तभी वह काम अभी हो सकता है। दीवालीके बाद अिमारती कामके लिअे ज़रूरी सामानकी व्यवस्था हो जाने पर यह काम हाथमें लिया जाय, तो ही दानके रुपयेका सदुपयोग हो सकता है।

गुजरातको अभी लाखों रुपयेकी ज़रूरत होगी। यह अभी तक निश्चित नहीं हुआ है कि सरकार और देशी राज्य दोनों अपनी-अपनी प्रजाको अिस काममें कितनी मदद देंगे। जब तक अिस बारेमें निश्चय न हो जाय, तब तक किसे कितनी मदद दी जा सकती है, यह तय करना समुद्रमें डुबकी लगानेके समान है। अभी तो किसानोंको अपने पैरों पर खड़ा करने भर के लिअे जितनी मददकी ज़रूरत हो, अुतनी ही देना योग्य होगा। कोअी यह न समझे कि गुजरातको फिरसे अपने पैरों पर खड़ा करनेका काम महीने दो महीनेमें ही निपट जायगा। नष्ट-भ्रष्ट और खंडहर बने हुअे गुजरातको अेक बार फिरसे हँसता-खेलता बनानेके लिअे अेक-अेक कार्यकर्ताको बहुत लंबे समय तक गुजरातकी जी-तोड़ सेवा करनी पड़ेगी।

नवजीवन, ४-९-१९२७

३७

गुजरात बाढ़-संकट — ६

[बिना मालिकके लावारिस जानवरोंकी-सी प्रजा — बड़ौदा राज्यकी लापरवाही]

बम्बअी सरकारको ब्रिटिश गुजरात पर आअी हुअी आफतका विश्वास हो गया, तबसे अुसने लोगोंको मदद देनेके अेकके बाद अेक क़दम अुठा कर अपनी नेकनीयती साबित करनेकी कोशिश की है। अुसने बारह लाख रुपयेकी तकावी भरसक जल्दीसे किसानोंमें बाँट कर नअी काश्तकी सुविधा कर दी। साथ ही गरीबोंके टूटे हुअे झोंपड़ोंके छप्परोंके लिअे ढाअी लाख रुपया मंजूर करके टीन वगैरा माल यथाशक्ति शीघ्र बाँटनेकी व्यवस्था की, और अुसके लिअे की गअी विशेष व्यवस्था तो जारी ही रहेगी। अिसके सिवाय गिरे हुअे मकानोंको फिरसे बनवानेके लिअे आवश्यक रुपया अुधार देनेकी स्पष्ट नीति घोषित करके अुसने लोगोंको आश्वासन दिया और अिस कामको तेज़ीसे पूरा करनेके लिअे अेक खास और अनुभवी अफसरको मुक़र्रर कर दिया। बम्बअीका गवर्नर अब अिसी सप्ताहमें गुजरातके अलग-अलग भागोंका दौरा करने, गाँवोंकी स्थितिकी खुद जाँच करने और लोगोंको तसल्ली देनेके लिअे निकल पड़ा है।

ब्रिटिश गुजरातकी तुलनामें बड़ौदा राज्यकी कुछ कम हानि नहीं हुअी है। छोटी-छोटी नदियोंके किनारे बसे हुअे बहुतसे गाँवोंमें पानी फैल गया था। बड़ौदा शहर पर तो सबसे बुरी बीती है। मनुष्योंकी बरबादी अिस राज्यमें बहुत ज़्यादा हुअी है। मवेशी वगैरा भी बड़ी तादादमें बह गये हैं। प्रजाकी हालत बिना मालिकके लावारिस जानवरोंकी-सी हो गअी है। यह आशा रखी गअी थी कि श्रीमंत महाराजा सयाजीराव राज्य

पर आअी हुअी अिस भयंकर विपत्तिकी खबर सुन कर पहले ही जहाज़से देश लौट आयेंगे। मगर वह व्यर्थ साबित हुअी। अब तो प्रजाने अुनके वापस आनेकी आशा ही छोड़ दी है। प्रजाको तात्कालिक मदद देनेके लिअे अुन्होंने अुदारतापूर्वक अेक लाख रुपये तारसे दिये, मगर अुसमें से कुछ भी खर्च नहीं किया गया, जब कि अहमदाबाद ज़िला संकट-निवारण समितिने ३०-३५ हज़ार रुपये अपनी हदके पड़ोसी कड़ी, कलोल वगैरा बड़ोदा राज्यके प्रदेशोंमें खर्च कर डाले हैं। बम्बअीके अुदार सज्जनोंने भी बड़ोदा ज़िलेमें हज़ारों रुपये खर्च कर दिये हैं।

दीवान साहब नये हैं। राज्य और प्रजासे नावाकिफ़ हैं। राज्यका खज़ाना तर है और अुसके वार्षिक बजटमें ३०-३५ लाख रुपयेकी बचत रहती है। अिसके सिवाय राज्यके पास अेक बड़ी रकम फालतू पड़ी है। बड़ोदा और कड़ी ज़िलेमें लगभग पौन लाख मकान गिर गये हैं। फिर भी अिस मामलेमें राज्य क्या करना चाहता है, वह अभी निश्चित नहीं हो सकता है। लगभग बड़ोदा ज़िलेके बराबर ही नुकसान कड़ी ज़िलेमें हुआ है। फिर भी बाढ़ आनेके बाद वहां (कड़ी) के सूबा तुरंत ही अपने खानगी कामसे छुट्टी पर चले गये और राज्यको यही खयाल रहा कि कड़ी ज़िलेमें कुछ भी संकट नहीं है। अंतमें जब कड़ी ज़िलेके लोगोंने चिल्लपों मचाअी, तब अभी थोड़े दिन हुअे अुसकी जाँच की गअी और अुसे संकटके प्रदेशमें शुमार किया गया। बादमें अुसके लिअे अेक लाख रुपये तक़ावीके मंजूर किये गये। यह तक़ावी अभी तक भी बाँटी नहीं गअी है। गरीबोंके छप्पर खड़े करनेमें कोअी मुफ्त मदद दी जायगी या नहीं, अिसका निर्णय प्रकाशित नहीं किया जा रहा है। चारों तरफसे लोगोंकी जो शिकायतें सुनाअी दे रही हैं, अुन परसे राज्यकी नेकनीयती पर बड़ी शंकाअें की जा रही हैं। गिरे हुअे मकानोंको खड़े करनेके लिअे अुधार रुपया देनेकी अलग-अलग योजनाअें पेश होती हैं और अुनपर विचार होता है। मगर कोअी भी अेक तरीका या नीति निश्चित नहीं की जाती। राज्य किसीको पाँच सौ रुपयेसे ज्यादा रकम अुधार नहीं देगा, यह लगभग तय हुआ जैसा मालूम होता है। अैसा निश्चय करनेसे पहले दीवान साहब सोजित्रा, धर्मज, भादरण, वसो और पीज वगैरा गाँवोंमें जाकर किसानोंके गिरे हुअे बड़े-बड़े मकान यदि खुद देख लेते, तो यह मर्यादा न रखी जाती। बड़ोदा शहरके लिअे महाराज कुमार धैर्यशीलराव राज्यका खज़ाना तर होने पर भी भीख माँगते हैं। प्रजामें न जाग्रति है और न किसीमें चिल्लानेकी हिम्मत। सारे राज्यमें अगर किसी भी जगह व्यवस्थित ढंगसे पूर्ण राहत मिलती हो, तो वह अेक रेज़िडेन्सी है और अुसका श्रेय केवल रेज़िडेण्टको खुद ही है। ज्यों ज्यों वक्त बीत रहा है, त्यों त्यों लोगोंका विश्वास

अुठता जा रहा है और यह आवाज़ सुनाअी देती है कि राज्य कुछ करना ही नहीं चाहता। अैसे अवसर पर अेक प्रमुख देशी राज्यका अपनी दुःखी प्रजाके प्रति अैसा रवैया देख कर खेद हुअे बिना नहीं रहता।

आम तौर पर किसी देशी राज्यके भीतरी प्रबन्धकी आलोचना करना मैं पसन्द नहीं करता। परन्तु यह मौका अैसा है कि अगर राज्य अपने धर्ममें चूकता है, तो अेक देशी राज्यके सिर पर स्थायी कलंकका टीका रह जाता है और प्रजा हमेशाके लिअे बरबाद हो जाती है। यह राजनीतिका मामला नहीं है; केवल जीव-दया और मानव-धर्मका विषय है। आवश्यक अुदारताके साथ प्रजाकी सहायता करनेमें अगर राज्यकी तरफसे अब भी देर हो, तो राज्यकी प्रजाको ज़रूर विचार करना चाहिये कि अुसे क्या करना है। अगर विपत्तिमें पड़ी हुअी प्रजा अितनी कमज़ोर हो गअी हो कि वह अकेले कुछ कर न सके, तो राज्यके बाहरकी पड़ोसी प्रजा भी अुसे कुचली जाती देखकर हाथ पर हाथ धरे तो हरगिज़ बैठी नहीं रह सकती। अैसे आम संकटके समय राज्य पर-राज्यकी मर्यादा नहीं हो सकती। अितनी बड़ी प्रजाको गिरने देनेमें पड़ोसी प्रजाके लिअे लांछन ही नहीं, बड़ी जोखिम भी है।

नवजीवन, ११-९-१९२७

३८

गुजरात बाढ़-संकट — ७

[कौमी भेदभाव बिना काम होता है।]

माननीय गवर्नर महोदय गुजरातके पीड़ित प्रदेशोंमें अेक सप्ताहका दौरा करके गुरुवारको वापस पूना चले गये हैं। अिस दौरेमें अुन्होंने बहुतसे गाँव और संकट-निवारण केन्द्र देखे हैं। देहातकी हालत देखकर लोगोंके दुःखका अुनके मन पर खूब असर हुआ है। अवसरके अनुसार अुन्होंने किसी भी तरहके रोब-दाब और धूमधामके बिना और साथ ही किसीका भी आतिथ्य स्वीकार न करके हरअेक जगह लोगोंके साथ मिल-जुलकर और भरसक आज़ादीके साथ बातें करके असली स्थितिका अन्दाज़ लगानेका प्रयत्न किया। लोगोंकी कठिनाअियोंकी अुचित बारीकीके साथ जाँच करके अुन्होंने सब जगह यथाशक्ति मदद देनेका आश्वासन दिया। हर जगह समितिकी तरफसे होनेवाला काम देख कर अुन्होंने संतोष प्रकट किया और कार्यकर्ताओंकी तारीफ की।

यह सब आशाजनक है। अब सरकारकी तरफसे मिलनेवाली मददका निश्चय जितनी जल्दी हो सके, होना चाहिये। अिस बारेमें गवर्नर महोदयसे खूब

आग्रह किया गया है और अुन्होंने यथासंभव अिस महीनेके अन्त तक सरकारका निर्णय घोषित करनेका वचन दिया है।

अिस प्रकार अेक तरफ हमारा काम कितने ही अंशोंमें सरल होता जा रहा है, तो दूसरी तरफ हमारे काममें नअी-नअी कठिनाअियाँ पैदा होती जा रही हैं। संकटके शुरूके दिनोंमें लोग जातिपाँति या सम्प्रदायका भेदभाव भूलकर अेक दूसरेको मदद देनेमें लग गये थे। दुर्भाग्यसे वह वक्त जाता रहा। गुजरातमें जगह जगह हिन्दू-मुसलमानोंके झगड़े शुरू होने लगे हैं। अिससे हमारे कार्यकर्ताओंकी मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। पिछले सताह महेमदाबादमें हिन्दू-मुसलमानोंके बीच तीव्र झगड़ा हो गया, जिसके कारण हिन्दुओंने मुसलमानोंका बहिष्कार शुरू कर दिया है। समितिकी तरफसे चलनेवाली सस्ते अनाजकी दुकानोंसे मुसलमानोंको माल न देनेका हिन्दू आग्रह कर रहे हैं। अुनका विरोध सहकर भी समिति कोअी भेदभाव न रखकर सस्ता अनाज वगैरा देनेका काम ज्योंका त्यों कर रही है। अितने पर भी महेमदाबादके अेक मुसलमान सज्जनने समिति द्वारा मुसलमानोंको मदद देना बन्द कर देनेकी खबर अखबारोंमें छपवाकर मुसलमानोंके लिअे अलग मददकी अपील की है। नड़ियादसे भी मुसलमानोंको मदद न देनेका समिति पर आरोप लगाकर अलग सहायताकी माँगे की गअी हैं। सूरत या रांदेरकी अेक मुस्लिम संस्थाकी तरफसे भी अिसी तरहकी अपील प्रकाशित हुअी है।

गुजरात प्रांतीय समितिकी तरफसे आज तक किसी भी तरहके कौमी भेदभावके बिना हर जगह अेक ही ढंगसे सबको मदद दी गअी है। सहायताके आँकड़े और तफसील हरअेक केन्द्रके दफ्तरमें रहते हैं और जो कोअी देखना चाहे, अुसे बताये जाते हैं। समितिकी तरफसे मिलनेवाली सहायताके अलावा मुसलमानोंको खास तौर पर अुदारतापूर्वक सहायता देनेके लिअे अलग मदद हासिल करनेकी कोशिश की जाय, तो अिसमें किसीको आपत्ति नहीं हो सकती। लेकिन समितिकी तरफसे मुसलमानोंको मदद नहीं दी जाती, अैसा आरोप लगा कर साम्प्रदायिक भावनाओंको अुभाड़ कर खास मदद माँगनेमें अुन स्वयंसेवकोंके साथ बड़ा अन्याय होता है, जिन्होंने संकटके अैन मौके पर, जब कोअी भी मदद नहीं दे सकता था, अपनी जान जोखिममें डाल कर देहातमें पहुँच कर मुसलमान भाअियोंकी मदद की थी। आज भी गुजरातके गाँवोंमें हजारों मुसलमान समितिकी तरफसे सहायता पा रहे हैं। जो मुसलमान भाअी समिति पर आक्षेप करके अलग माँग कर रहे हैं, वे जान में या अनजानमें देहातके हजारों दुःखी मुसलमानोंको कठिनाअीमें डाल रहे हैं। मेरा खयाल है कि अुनका अुद्देश्य मुसलमानोंकी सेवा करना होने पर भी, अिस तरहसे

की हुअी सेवाके कुसेवा बन जानेका डर है। गुजरातके मुसलमानोंके पास शांत सेवा करनेका जीता जागता संगठन नहीं है। मुसलमानोंका दुःख देख कर कुछ भले मुसलमानोंकी भावनाअें अुमड़ जाना स्वाभाविक है। यह भी संभव है कि अुन्हें मददके लिअे आसानीसे रुपया मिल जाय। परन्तु गुजरातके हज़ारों गाँवोंमें वे मुसलमानोंको व्यवस्थित रूपसे मदद पहुँचा सकने लायक साधन जुटा सकते हैं या नहीं, अिसका अुन्हींको विचार करना चाहिये। संकट-निवारणका काम थोड़े दिनका नहीं है और वह छुटपुट आदमियोंसे पूरा भी नहीं हो सकता। आज समितिकी तरफसे लगभग अेक हज़ार आदमी संकट-निवारणका काम कर रहे हैं। सस्ते अनाजकी सौ से अधिक दुकानें चल रही हैं। हर दुकानमें औसत ४० से ५० रुपये रोजका घाटा अुठाया जाता है। किसी जगह किसीको नंगा-भूखा रहनेका अवसर नहीं आने दिया गया। अब अिससे भी कठिन काम हाथमें लेनेका समय आया है। जो हज़ारों मकान गिर पड़े हैं, अुन्हें खड़ा करनेके लिअे पीड़ित जनताको व्यवस्थित रूपसे मदद देनेका काम विशेष रूपसे कठिन है। अकेले रुपयोंसे लोगोंका दुःख दूर नहीं हो सकता। स्थिर होकर लोगोंके बीचमें बस कर और अुनकी ज़रूरतों पर नज़र रख कर अुन्हें लम्बे अरसे तक सहायता देनी पड़ेगी। जो मुसलमान साम्प्रदायिक भावनाके वशीभूत होकर या क्षणिक जोशमें आकर मुसलमानोंकी अलग सेवा करनेका अिरादा रखते हैं, अुन्हें मेरी यह सलाह है कि वे अूपरके सारे हालात पर गौर करके काम करें।

अभी तक मेरे पास अेक भी अैसी शिकायत नहीं आअी कि किसी भी केन्द्रसे मुसलमानोंको जाति-भेदके कारण मदद न दी गअी हो या हिन्दू-मुसलमानोंमें किसी भी प्रकारका पक्षपात किया गया हो। अगर किसीके मनमें अैसी शंका हो, तो मैं खुद साथ चल कर जिसे यकीन करना हो अुसे यकीन करा देनेको तैयार हूँ। कितनी ही मुश्किलें पैदा होने पर भी प्रान्तीय समितिके कार्यकर्ता समितिके मुकर्रर किये हुअे तरीके और व्यवस्थामें किसी भी तरहका परिवर्तन नहीं होने देंगे, अैसी मुझे आशा है।

नवजीवन, १८-९-१९२७

३९

गुजरात बाढ़-संकट — ८

[नड़ियाद परिषद्‌में सोची गअी रूपरेखा ।]

गुजरात संकट-निवारण कार्यके मुख्य कार्यकर्ताओंकी तीसरी परिषद् पिछले शुक्रवारको सुबह नड़ियाद अनाथाश्रमके मकानमें गुजरात प्रांतीय समितिके तत्त्वावधानमें हुअी थी । लगभग २०० कार्यकर्ता अुपस्थित थे । सस्ते अनाजकी दुकानोंके बारेमें हरअेक केन्द्रका अनुभव जाननेके बाद सर्व सम्मतिसे यह प्रस्ताव पास किया गया कि ये दुकानें दीवाली तक जारी रखी जायँ और अुसके बाद बन्द हो सकती हैं या नहीं, अिसका निर्णय दीवालीसे पहले दुबारा होनेवाली परिषद्‌में किया जाय ।

बाढ़से बिलकुल नष्ट हुअे गाँवोंमें अब तक जो मुफ्त सहायता दी जा रही है, अुसमें अनुभवसे कुछ फेरबदल करनेकी ज़रूरत मालूम हुअी है । सबकी यह राय हुअी कि जो मनुष्य सशक्त हैं और जो खेतीके काममें नहीं लगे हैं, अुन्हें निकम्मे बिठाये रख कर व अधिक समय तक मुफ्त अनाज देकर आलसी बना देनेमें खतरा है । अिस संबंधमें नड़ियाद तहसीलकी शेढी नदीके किनारेके गाँवोंमें भाअी लक्ष्मीदासजीने अेक प्रयोग शुरू किया है । जिन कुटुम्बोंको मुफ्त मदद दी जाती है, अुनके सशक्त मनुष्योंसे अुस हिस्सेके टूटे हुअे रास्तोंकी मरम्मत करनेका काम लिया जाता है और यह काम वे खुशीसे करते है । अिससे कुछ सार्वजनिक अुपयोगी काम हो जाता है, मेहनत करनेवालेको यह संतोष रहता है कि वह मुफ्त मदद नहीं लेता और अुसके कुटुम्बका निर्वाह भी हो जाता है । अिस अनुभव परसे आगेके लिअे यह निश्चय किया गया कि बाढ़से नष्ट हुअे प्रदेशमें हर जगह अिसी ढंगसे काम लेकर सहायता दी जाय और सबसे सिफारिश की गअी है कि वे नड़ियादमें होने वाला काम देखें । रबी की फसलके बीजका नमूना खेती-विभागके विशेषज्ञोंसे जँचवाकर और अुसका भाव तय करके हरअेक भागमें पहुँचानेका काम अेक कमेटीको सौंप दिया गया है ।

नये सिरेसे बोअी हुअी फसलके लिअे अेक बरसातकी सचमुच ज़रूरत थी । किसान दस-पन्द्रह दिनसे बरसातका खब रास्ता देख रहे थे । हर जगहसे

छोड़ दी है। अेक बरसातकी कमीसे साल भर बेकार जानेका डर है और रबी की फसलकी बुवाअी भी प्रमाणमें कम होगी।

जैसे जैसे दिन बीत रहे हैं, वैसे वैसे गिरे हुअे मकानों और बहे हुअे गाँवोंको फिरसे खड़े करने और बसानेका सवाल अधिकाधिक नज़दीक आता जा रहा है। हर जगहसे अिमारती सामान, जैसे अींट, चूना, सीमेंट, टीनकी चादर, लकड़ी, बाँस वग़ैराकी सुविधाके लिअे माँगें आने लगी हैं। सरकार कितनी मदद देना चाहती है, अिसकी लगातार पूछताछ हो रही है। कार्यकर्ता लोग परेशान थे कि अिस संबंधमें क्या किया जाय। सबको अेक बातका विश्वास हो गया है कि अगर सभी कार्यकर्ता अगले जेठ महीने तक अपना-अपना क्षेत्र न छोड़ें और अभी जिस अुत्साह, लगन और अेकताके साथ काम कर रहे हैं, अुसी तरह करते रहें, तो ही यह काम बहुत हद तक पूरा हो सकता है। आठ महीनेमें सभी मकानों और गाँवोंको खड़ा कर देना तो असंभव-सा दीखता है। फिर भी सरकार, जनता और कार्यकर्ता तीनों मिलकर, कामका महत्त्व समझ कर, जिस तरह अब तक काम किया है अुसी तरह करते रहें, तो लगभग पौन हिस्सेका काम अवश्य ही पूरा किया जा सकता है। मालूम होता है सरकारने अपने जंगलोंसे अिमारती लकड़ी और बाँस मँगा कर हरअेक तहसीलमें यथाशक्ति शीघ्र बाज़ार भावसे या अुससे कुछ कम दामों पर यह माल देनेके लिअे डीपो खोलना तय किया है। अिसलिअे अिस बारेमें अधिक कुछ करनेको नहीं रह जायगा। सरकार अिस काममें कितनी मदद देगी, अिसके बारेमें अिस मासके अन्त तक कोअी घोषणापत्र प्रकाशित होगा ही, अैसा अन्दाज़ है।

अधिकांश कार्यकर्ता टीनकी चद्दरें काममें लेनेके विरुद्ध हैं। परिषदने निश्चय किया है कि गुजरातकी आबहवाके प्रतिकूल होनेके कारण अिस कामको प्रोत्साहन न दिया जाय। ज्यादा मुश्किलका सवाल तो बड़े पैमाने पर ज़रूरी अींटें और खपरैल बनवाने और कारीगर जुटानेका है। अिस बारेमें आवश्यक व्यवस्था करनेके लिअे परिषदने अेक कमेटी बनाअी है। बाढ़से नष्ट हुअे गाँवोंके लोग साधनहीन हो गये हैं और तमाम सामग्री बाहरसे लाना अनिवार्य है, अिस कारणसे अिन गाँवोंको फिरसे बसानेमें बहुतसी कठिनाअियाँ हैं, और बहुत वक्त लगना संभव है। अिसलिअे अिस अुद्देश्यसे कि यह काम अब तुरंत हाथमें लिया जाय तो ही अैसे सब गाँवोंको निपटाया जा सकता है, नडियाद तहसीलमें शेढी नदीके किनारेके अेक गाँवका नक़्शा और खर्चका अंदाज़ तैयार कराया गया है और यह तय हुआ है कि जिस गाँवके बसानेके स्थानको बदलना हो अुसका अिन्तज़ाम तुरंत कर लिया जाय। ज़मीनकी क़ीमतके अलावा डेढ़ सौ घरोंके अिस गाँवको बसानेके खर्चका अन्दाज़ ६५,००० रुपया लगाया गया है। अिसमें

अींट, चूनेका अुपयोग नहीं किया जायगा। सिर्फ मिट्टी और लकड़ीका ही काम करना तय हुआ है। परिषदका यह अिरादा है कि अिस गाँवको अैसा नमूनेदार बनाया जाय कि अिसके ढंग पर दूसरे गाँव भी बसाये जा सकें। अिस गाँवको जल्दीसे बसा देनेका निश्चय होनेके कारण अेक कमेटी मुक़र्रर करके अुसकी नींव डालनेका काम आगामी विजयादशमीके दिन माननीय विट्ठलभाअी पटेलके हाथों कराना तय हुआ है। और अिस गाँवके लोगोंको सरकारकी तरफसे जो मदद मिलनेवाली हो, अुसके मिलते ही वे तैयार हुअे अुपरोक्त गाँवमें मकान खरीद कर अुनमें प्रवेश करें, अैसा प्रबन्ध करनेका अिरादा है। और यदि यह प्रयोग सफल हो जाय तो बाढ़से नष्ट हुअे अधिकांश गाँवोंको अिस प्रकार नये ढंगसे अगले चौमासेके पहले फिरसे बसा देनेका गुजरात प्रांतीय समितिका अिरादा है। गुजरातके कार्यकर्ताओंने अिस संकटके समय जो अपूर्व अेकता, दृढ़ता और सेवा-भाव दिखाया है, वह अिस कामके पूरा होने तक ज्योंका त्यों क़ायम रहेगा, अैसी मुझे पूरी आशा है।

नवजीवन, २५-९-१९२७

४०

छठी रानीपरज परिषद

[मअी १९२८ में पूना (महुआ) में हुअी छठी रानीपरज परिषदके सभापति पदसे दिये गये भाषणके कुछ अुद्गार।]

मैं आज यहाँ आया तो हूँ, परंतु मेरा दिल बारडोलीमें ही है। आज अभी अेक घुड़सवार स्वयंसेवकने आकर खबर दी है कि मेरे साथी रविशंकरको, जिन्हें मैंने सरभणमें सेनापति मुक़र्रर किया है, सरकारने पकड़ लिया है। यह खबर सुनकर आज मेरी आत्मा खूब अुल्लासमें है। क्योंकि अिससे अच्छा बलिदान देनेकी शक्ति मुझमें नहीं है।

ये सारे जुल्म अिसलिअे हो रहे हैं कि हम अज्ञान हैं। वेड़छीकी लड़कियोंसे तो अुनके अबला होने पर भी कोअी बेगार नहीं ले सकता, तो तुम मर्दोंको डरा कर कोअी कैसे बेगार ले सकता है? जंगलमें रहनेवाले शेर, चीते तो गाँवमें रहनेवाले मनुष्यको डराते हैं; फिर तुम जंगलमें रहनेवाले होकर भी शहरियोंसे, जो तुमसे डर सकते हैं, क्यों डरते हो? गांधीजीके भेजे हुअे संदेशका अगर तुम अक्षरशः पालन करो, शराब छोड़ दो, खादी और चरखेको अपनाओ, तो तुम्हारे यहाँ लक्ष्मीकी वर्षा होने लगे। हमने अिस संदेशको अभी

तक पूरे वेगसे नहीं अपनाया है। अगर पूरे वेगसे अपनालें, तो अेक सालमें हम दुनियामें अुथल-पुथल कर सकते हैं।

जिनमें अपनी जान जोखिममें डालकर ताड़ जैसे अूँचे पेड़ पर चढ़कर, जिसमें पकड़नेके लिअे डाली तक नहीं होती, ताड़ी निकालनेकी हिम्मत है, अैसे तुम लोग अुन लोगोंसे क्यों डरते हो, जिनमें ताड़पर चढ़नेकी भी हिम्मत नहीं है? अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे लड़के निडर और होशियार बनें, तो अुन्हें हमारे आश्रमोंमें रखो। फिर भी यदि तुम खुद न सुधरो और हमारे यहाँसे घर आने पर लड़के शराब ही पीयें, तो हमारे सुधारनेसे वे कहाँ तक सुधरेंगे?

नवजीवन, ६-५-१९२८

४१

बारडोली सत्याग्रह

[सन् १९२८ में बारडोली सत्याग्रहकी लड़ाअीके समय दिये गये भाषणोंमें से।]

१

मैं तो आपको सलाह ही दे सकता हूँ और वह भी आपके अपने ही ज़ोर पर। हम दूसरे सभी अुपाय आज़मा चुके। अब कोअी सुनेगा, यह आशा झूठी है। अब तो अेक आखिरी अुपाय ही बाकी रहा है, और किसी भी प्रजाके लिअे यह अुपाय आखिरी ही होता है। वह है बलके सामने बल। सरकारके पास तो हुकूमत है, तोप-बन्दूक है और पशुबल है। आपके पास सचाअीका बल है, दुःख सहन करनेकी शक्ति है। अैसी दो ताकतोंका यह मुक़ाबला है। अगर आपको अच्छी तरह खयाल हो कि आपकी बात सच्ची है, यह अन्याय है और अुसका सामना करना आपका धर्म है, यह बात आपके दिलमें पैदा हो गअी हो, तो आपके खिलाफ़ सरकारकी पूरी शक्ति कुछ भी काम नहीं कर सकेगी। अुसे लेना है और आपको देना है। आप स्वेच्छासे हाथसे अुठाकर न देंगे, तब तक यह काम कभी नहीं होगा। लगान देना, न देना आपकी अिच्छाकी बात है। जब आप यह तय कर लेंगे कि यह सरकार कुछ भी करे, हम फूटी कौड़ी भी जमा नहीं करायेंगे; चाहे ज़ब्ती करे, चाहे ज़मीनें खालसा करे, हम यह लगान मंज़ूर नहीं करेंगे, तो अुसे लेनेका काम सरकारसे कभी नहीं हो सकेगा। किसी भी हुकूमतसे यह नहीं हो सकता। जब जनता अेक हो जाती है, तब अुसके सामने ज़ालिमसे ज़ालिम हुकूमत भी नहीं टिक सकती। अगर आप सचमुच अेकमत होकर निश्चय कर लें कि हम यह लगान खुशीसे या अपनी मरज़ीसे नहीं देंगे, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अिस हुकूमतके पास

अैसा कोअी साधन नहीं जिससे वह आपको अपने निश्चयसे डिगा सके और फोड़ सके। यह निश्चय करनेका काम आपका है। किसीके जोश दिलानेसे, किसी पर या मेरे जैसों पर आधार रख कर यह निश्चय नहीं करना। अपने ही बल लड़ना हो, आपमें ही हिम्मत हो, आपमें ही लड़ाअीके पीछे बरबाद हो जानेकी शक्ति हो, तो ही यह काम करना।

लड़ाअीके खतरों पर पूरी तरह विचार कर लीजिये। यह याद रखिये कि अिसमें जितने बड़े खतरे हैं, अुतने ही बड़े परिणाम भी समाये हुअे हैं। काम जितना मुश्किल है, अुतना ही महत्त्वका है। लेकिन अगर थोड़ी सख्ती होते ही अिसे छोड़ देंगे, तो अुससे सिर्फ़ आपको ही नहीं, बल्कि गुजरातको और सारे हिन्दुस्तानको नुकसान पहुँचेगा। अिसलिअे जो निश्चय करें वह अीश्वरको साक्षी रख कर पक्की बुनियाद पर करें, ताकि बादमें कोअी आप पर अुँगली न अुठावे। अगर आपके मनमें यह हो कि मोमका हाकिम भी लोहेके चने चबवाता है, तब अितनी बड़ी हुकूमतके सामने हमारी क्या ताक़त है, तो आप यह बात छोड़ ही दीजिये। परंतु आपका यह खयाल हो कि अैसे मामलेमें तो लड़ना ही हमारा धर्म है, अगर आपको यह लगता हो कि जो राज्य किसी भी तरह अिन्साफकी बात माननेको तैयार नहीं, अुससे न लड़नेमें और रुपया जमा करा देनेमें हमारी और हमारे बालबच्चोंकी बरबादी ही नहीं होती, बल्कि हमारा स्वाभिमान भी जाता है, तो आप यह लड़ाअी ज़रूर लड़ें।

यह कोअी लाख-सवालाखकी वृद्धिका या ३० सालके साढ़े सैंतीस लाखका सवाल नहीं है, बल्कि सच-झूठका सवाल है, स्वाभिमानका सवाल है। यह अिस प्रथाका विरोध करनेका सवाल है कि अिस सरकारमें हमेशाके लिअे किसानकी कोअी सुननेवाला ही नहीं है। सारे राज्यका आधार किसान पर है। हुकूमतका सारा कामकाज किसान पर ही निर्भर रहता है। फिर भी अुसकी कोअी नहीं सुनता, अुसे कोअी दाद नहीं देता। आप जो कहें वह सभी झूठ। अिस स्थितिका विरोध करना आपका धर्म है, और वह विरोध भी ढंगसे किया जाय, जिससे अीश्वरके यहाँ जिस दिन जवाब देना पड़े, अुस दिन आपके लिअे मुश्किल न हो। मिजाजको क़ाबूमें रखकर, सत्य पर अटल रहकर और संयम रखकर सरकारके खिलाफ़ लड़ना है। ज़ब्ती करनेवाले अफ़सर आयेंगे, आपको खूब सतायेंगे, अुत्तेजित करनेकी कोशिश करेंगे, चाहे जैसी भाषा बोलेंगे, आपको परेशान करेंगे और आपकी जो भी कमजोरियाँ अुन्हें दिखाअी देंगी अुनके जरिये आप पर हमले करनेकी खूब कोशिश करेंगे। फिर भी आप मुख्य ध्येयसे न डिगें और अहिंसाकी प्रतिज्ञासे विचलित न हों। शांति और संयमके साथ अिस निश्चय पर दृढ़ रहिये कि हम अपने हाथसे सरकारको अेक पाअी भी नहीं देंगे, वह चाहे तो जब्ती करे,

खालसा करे, खेत पर जाय, नीलाम करे और जो कुछ जबरदस्तीसे करना हो करे, मगर हमारी मरजीसे कुछ नहीं करा सकती; हमारे हाथसे सरकारको कुछ नहीं मिलेगा। यही अिस लड़ाओीकी असली बुनियाद है। अगर आप अितना कर सकेंगे, तो मुझे ज़रा भी शक नहीं कि वांछित परिणाम ज़रूर आयेगा। क्योंकि आपकी लड़ाओीका आधार सत्य पर है।

२

बारडोलीमें आज मैं अेक नओी स्थिति देख रहा हूँ। पुराने दिन मुझे याद हैं। अुस वक्त अैसी सभाओंमें पुरुषोंके बराबर ही बहनें भी आती थीं। अब आप पुरुष अकले ही सभामें आते हैं। आप बड़े कहलानेवाले लोगोंको देखकर संकोच करना सीख रहे दीखते हैं। मगर मैं कहता हूँ कि अगर हमारी बहनें, माताअें और स्त्रियाँ हमारे साथ नहीं होंगी, तो हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे। कल सवेरे जब्तियाँ आयेंगी। हमारी चीज़ें, बरतन और ढोर-डंगर ले जानेके लिअे जब्ती करनेवाले आयेंगे। अगर हम अपनी बहनोंको अिस लड़ाओीसे परिचित नहीं रखेंगे, हमारी ही तरह अुन्हें भी तैयार नहीं करेंगे और अिस लड़ाओीमें अुनको पुरुषोंके बराबर ही दिलचस्पी लेनेवाली न बनायेंगे, तो अुस वक्त वे क्या करेंगी? खेड़ा ज़िलेके अपने अनुभवोंमें मैंने देखा है कि जब घरके मवेशी छोड़ कर ले जाये जाते हैं, तब स्त्रियोंको लड़ाओीकी तालीम न मिली हो, तो अुन्हें बड़ी चोट लगती है। अिसलिअे आप बहनोंको अच्छी तरह लड़ाओीकी तालीम दीजिये। कितना ही कष्ट हो, कितने ही दुःख आयें, सब कुछ सहकर भी हमें ये लड़ाअियाँ लड़नी पड़ेंगी। भले ही सरकार ज़मीन खालसा करनेके हुक्म जारी करे, चाहे जो हो, मगर हम हाथ अुठाकर अेक पैसा भी न देनेके निश्चयसे नहीं डिगना चाहिये।

आप जो विवाह हाथमें ले चुके हैं, अुन सबको जल्दीसे निपटाने पड़ेंगे। लड़ाओी छेड़नी हो तो दूसरा क्या हो सकता है? कल सबेरे अुठकर आपको सुबहसे शाम तक घरोंको ताले लगाकर खेतोंमें घूमते रहना पड़ेगा और छावनी जैसी जिन्दगी बितानी पड़ेगी। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सब यह स्थिति समझ लें; गरीब-अमीर, सब जातियाँ अेक दिल होकर अिस तरह काम करें जैसे अेक ही शरीरमें सबके प्राण हों और रात पड़ने पर ही सब घर आयें। अैसा करना होगा। जब्तियाँ करनेके लिअे भी सरकारको गाँवमें से या तहसीलमें से ही आदमी लाने पड़ते हैं न? सारी तहसीलकी हवा अैसी हो जानी चाहिये कि अुन्हें अिस कामके लिअे अेक आदमी भी ढूँढ़े न मिले। अभी तक अैसा जब्ती करनेवाला अफ़सर मैंने तो नहीं देखा, जो कंधे पर अुठाकर बरतन ले जाय। सरकारी कर्मचारी तो अपंग होते हैं। पटेल, मुखिया, बेगारी, पटवारी कोओी सरकारकी

मदद न करे और साफ कह दे कि मेरे गाँव और तहसीलकी अिज्ज़तमें मेरी अिज्ज़त है। तहसीलकी अिज्ज़त जाय, तो मुखियापन किस कामका? अुसके हितमें ही मेरा हित है। तहसीलकी हानि हो, वह अपंग बने, तो अिसमें पटेलका हित नहीं है। अिसलिअे हम पूरी तहसीलका वायुमण्डल अैसा बना दें कि अुसमें स्वराज्यकी गंध हो, गुलामीकी नहीं; अुसमें सरकारसे लड़नेकी टेकका तेज लोगोंके चेहरे पर दिखाअी देता हो।

मैं आज आपको चेतावनी देने आया हूँ कि अब खेलकूद और अैश-आराममें आप घड़ी भर भी न बितायें। सब जाग्रत हो जाअिये। बारडोलीके नामकी दुनियामें चारों ओर प्रशंसा हुअी है। आज दोपहरको ही परिषदमें अेक मुसलमान भाअीने हमें बताया कि बारडोलीके किसी भी निवासीको देखकर बंगालके लोग कैसे अुसके चरणोंकी धूल लेनेको तैयार हो जाते हैं। या तो हमें, तहसीलको खराब होना है और मर मिटना है, या सुखी होना है। अब राम-बाण छूट चुका है। हम असफल हुअे तो सारे हिन्दुस्तानको असफल बना देंगे; हम टिके रहे तो तर जायँगे और हिन्दुस्तानको पदार्थपाठ सिखायेंगे। आपकी ही तहसीलने गांधीजीको सारे देशकी लड़ाअीकी नींवका पत्थर बननेकी आशा दिलाअी थी। वह परीक्षा तो अुस समय नहीं हुअी, यद्यपि देश-विदेशमें बारडोलीका डंका बज गया। अब आज वह परीक्षा देनेका अवसर आ गया है। आप हिन्दुस्तानको स्वराज्य दिलाने निकले थे, पर अब अिस बातकी परीक्षा होगी कि आप अपने घरकी लड़ाअीके लिअे क्या करते हैं। अिसमें पीछे रह गये, तो अिज्ज़त-आबरू तो जायगी ही; साथ ही सारे हिन्दुस्तानकी भारी हानि होगी।

मैं आज ही अेक परिषद पूरी करके तुरंत यहाँ आपके पास आया हूँ। क्योंकि, अब तहसीलके जितने भाअी-बहन मिलें, अुन सबको अपना यह सन्देश सुना देना चाहता हूँ कि अब सब सावधान रहें, पूरी तरह जाग्रत रहें और गाफ़िल न रहें। सरकार अेक भी अुपाय बाकी नहीं छोड़ेगी, आपमें फूट डालेगी, आपसमें झगड़े करायेगी, कुछ न कुछ फ़ितूर करेगी, मगर आप अपने तमाम निजी और गाँवके झगड़ोंको अभी लड़ाअीके दिनोंमें कुअेंमें डाल दीजिये; लड़ाअी खतम होने तक अैसी हरअेक बातको भूल जाअिये; बादमें चाहें तो सब याद करके लड़ लेना। और चाहें तो अिस तरह बादमें लड़नेके निश्चयके दस्तावेज़ लिख कर पेटियोंमें सँभाल कर रख लीजिये! मगर अभी तो बापदादोंका बैर भी भूल जाअिये। जन्मभर जिसके साथ न बोले हों और अबोला रखा हो, अुसके साथ भी आज बोलिये; आज गुजरातकी अिज्ज़त आपने अपने हाथमें ली है, अुसे सँभालना और अपने हाथसे अेक दमड़ी भी सरकारको न देनेके निश्चय

पर डटे रहना; नहीं तो जीना न जीना बराबर हो जायगा और तहसील पर स्थायी बोझा लद जायगा। कुछ लोगोंको ज़मीन खालसा होनेका डर है। खालसाका क्या अर्थ? क्या आपकी ज़मीनें अुखाड़कर सूरत या विलायत ले जायँगे? ज़मीन खालसा करें या कुछ भी करें, फेरबदल होगा तो सरकारके दफ्तरके कागज़ोंमें होगा, मगर आपमें अेका होगा तो यह करना तो तहसीलके लोगोंका काम है कि आपकी ज़मीनमें दूसरा कोअी आकर हल न चलाये। फिर सरकारी दफ्तरमें वह भले ही खालसा हो जाय। खालसा हो जानेकी दहशत छोड़ दीजिये। जिस दिन आप अपनी ज़मीनें खालसा करानेको तैयार होंगे, अुस दिन सारा गुजरात आपकी हिमायतमें खड़ा होगा, यह निश्चित मानिये। खालसा होनेका डर हो, अैसी नामर्दी हो, तो लड़ाअी लड़ी ही नहीं जा सकती। अगर आप अपने अेक ही गाँवमें पक्का बन्दोबस्त कर लेंगे, तो भी सारी तहसीलको मज़बूत बना सकेंगे, सारे परगनेको जाग्रत कर देंगे।

लड़ाअीकी शुरुआत हो चुकी है। अब यह मान लीजिये कि हरअेक गाँवमें बड़ी-बड़ी फ़ौजी छावनियाँ हैं। गाँव-गाँवका हाल रोज़ तहसीलके केन्द्रमें पहुँचना चाहिये और केन्द्रके हुक्म गाँव-गाँव पहुँचने और अमलमें आने चाहियें। हमारी तालीम ही हमारी जीतकी कुंजी है। सरकारका आदमी तो हर गाँवमें अेकाध पटवारी या मुखिया ही होता है, लेकिन हमारे पास तो सारा गाँव है।

३

आप मुझे और मेरे साथियोंको 'बाहरके' मानते मालूम होते हैं। मैं तो अपने निजी लोगोंकी मदद कर रहा हूँ। आप यह बात भूल जाते हैं कि आप जिस सरकारकी तरफसे बोल रहे हैं, अुसके संगठनमें मुख्यतः बाहरके ही लोग भरे हुअे हैं। मैं आपको बता दूँ कि मैं अपनेको हिन्दुस्तानके किसी भी भागके बराबर ही बारडोलीका भी निवासी समझता हूँ और वहाँके दुःखी निवासियोंके बुलाने पर ही वहाँ गया हूँ। और मुझे किसी भी क्षण छुट्टी दे देना अुनके हाथमें है। अुनके सत्वको दिन-रात चूसनेवाली और बाहरसे आकर तोप-बन्दूकके ज़ोरसे लादी हुअी अिस हुकूमतको भी अुतनी ही आसानीसे विदा कर देना अुनके हाथमें होता तो कितना अच्छा होता!

४

मैं जैसे-जैसे तहसीलके गाँवोंमें घूमता जाता हूँ, वैसे-वैसे देखता जाता हूँ कि अिन पन्द्रह दिनोंमें लड़ाअीका स्वरूप समझाने पर लोगोंका डर चला गया है। अभी दो-चार आने रहा हो, तो अुसे निकाल कर कुअेंमें फेंक दीजिये। डरना आपको नहीं, सरकारको है। कोअी सुधरी हुअी सरकार जनताकी संमतिके बिना राज नहीं कर सकती। आजकल तो वह आपकी आँखों पर पट्टी बाँधकर राज

करना चाहती है। सरकार कहती है: तुम सुखी हो। लेकिन मुझे तो आपके घरोंमें नज़र डालने पर अैसा कुछ दिखाअी नहीं दिया कि आप दूसरे ज़िलेके किसानोंसे ज्यादा सुखी हों। आप डरते-डरते नाज़ुक बन गये हैं। आपको झगड़ा-फसाद करना नहीं आता, यह आपका गुण है। मगर अिससे अन्यायका विरोध करनेका जोश भी हममें न रहे, अैसे नाज़ुक हमें नहीं हो जाना चाहिये। यह तो डरपोकपन है। अिस तहसीलमें रातके १२-१ बजे तक में घूमता हूँ, लेकिन मुझे कोअी 'कौन' कहकर नहीं पूछता। रविशंकर कहते हैं: अिस तहसीलके गाँवोंमें अजनबीको कुत्ता तक नहीं काटता और न कोअी भैंस सींग मारती है! आपकी साहूकारी ही आपके लिअे बाधक बनी है। अिसलिअे आँखोंमें जोश आने दीजिये और न्यायकी खातिर और अन्यायके विरुद्ध लड़ना सीखिये।

५

पटेल तो गाँवका मालिक है, गाँवका मुँह है और सरकारको लोगोंकी तरफसे कुछ कहनेवाला है। पटेल कोअी सरकारका बिका हुआ सात रुपयेका दुबला* (गुलाम) नहीं है। सात रुपयेकी खातिर जो मनुष्य अपने कुटुम्बियोंके घरके कपड़े-लत्ते नोचने जाय अुसे दुबला न कहें तो क्या कहें? और दुबला भी अपने मालिकके घरमें अैसा काम करनेके लिअे नहीं घुसेगा। पटेल बेगारी नहीं है और जो अैसे काम करायें, तो अैसी पटेलाअीको आग लगा दो! मज़दूरी करनेवालेको आपसे तो ज्यादा मज़दूरी मिलती है।

पटवारियोंके बारेमें बोलते हुअे कहा: आपका वालोड पटवारी पैदा करनेवाली अेक खदान है। आप रुपया खर्च कर-करके लड़कोंको पढ़ाते हैं, अुससे ये पटवारी तैयार होते हैं। अैसे पढ़े-लिखोंसे यह रविशंकर जैसा अपढ़ ब्राह्मण क्या बुरा है? आपको मनमें बड़प्पन मालूम होता है कि हमारा लड़का पढ़कर पटवारी बनेगा। बाजारमें निकलेगा तो पीछे-पीछे बेगारी चलते होंगे। मगर अिसी लड़केको जब सरकारका हुक्म होगा, तब अुसे सगे बापके घर जब्ती करने जाना पड़ेगा। यह सब सरकारकी और अुसकी शिक्षाकी मायाके खेल हैं।

६

अिस लड़ाअीमें मैं सिर्फ आपके थोड़ेसे रुपये बचानेकी खातिर ही नहीं पड़ा हूँ। बारडोलीके किसानोंकी लड़ाअीके जरिये मैं तो गुजरातके सारे किसानोंको

* भीलसे मिलती-जुलती अेक जातिका आदमी, जो सूरत तरफके किसानोंके खेतोंमें मजदूरी करके गुलाम जैसी जिन्दगी बिताता है।

पाठ सिखाना चाहता हूँ । मैं यह सिखाना चाहता हूँ कि अिस सरकारका राज्य केवल आपकी कमज़ोरी पर ही चल रहा है । वर्ना देखिये न, अेक तरफ़ तो विलायतसे बड़ा कमीशन यह जाँच करने आया है कि जनताको किस तरह ज़िम्मेदार हुकूमत दी जाय और दो बरसमें गृह-विभाग लोगोंको सौंप देनेकी बातें हो रही हैं, और दूसरी तरफ़ यहाँ ज़मीनें खालसा करनेकी सरकार चाल चल रही है । ये सब निरी गीदड़ भभकियाँ हैं । जिसे सरकारी नौकरी करनी हो वह भले ही अिससे डरे । किसानोंके बच्चोंको अिनसे डरनेका कोअी कारण नहीं है। अुन्हें तो विश्वास होना चाहिये कि यह ज़मीन हमारे बापदादोंकी थी और हमारी ही रहेगी । किसानकी ज़मीन तो कच्चा पारा है। जो अिसे अिस हालतमें लेगा, अुसके बदनसे वह फूट निकलेगी । दस साल पहले जब देशमें सुधारोंके अनुसार चलनेवाली हुकूमत नहीं थी, तब भी खेड़ा ज़िलेमें सरकारसे अेक बीघा ज़मीन भी खालसा नहीं हो सकी, तो क्या अब हो सकेगी? ये लोग व्यर्थ कागज़ खराब करते हैं । अिस तरह ज़मीनें खालसा होंगी, तब तो अिस कचहरीके मकानमें हाकिम नहीं होगा, यहाँ अंग्रेज़ी राज नहीं होगा, बल्कि डाकुओंका राज होगा ! मैं तो कहता हूँ कि डाकुओंको आने दो ! अैसे बनियोंके राजमें रहनेसे तो अुनके राजमें मज़ा आयेगा । तहसीलके लोगोंसे मैं कहता हूँ कि कोअी न डरे । डेढ़ महीनेमें आप लोगोंमें कितना फ़र्क़ पड़ गया, यह देखिये । पहले आपके चेहरों पर कितना डर और घबराहट थी? कोअी अेक-दूसरेके पास बैठते भी नहीं थे । और आज? आज तहसीलदार तो सिर्फ़ अिस मकानका ही अफ़सर है । मकानके बाहर अुसकी हुकूमत नहीं रही । अभी देखिये तो सही, यही हाल रहा तो समय आने पर अुसे चपरासी भी नहीं मिलेगा ।

आपकी ज़मीनोंके लिअे सरकार बाहरसे ग्राहक लानेकी बातें करती है । मगर तहसीलके लोग सारा हिसाब लगाकर बैठे है । सन् १९२१ में जो गर्जना की थी, वह क्या डरनेवाले लोगोंके ज़ोर पर की थी? अुस वक़्त हालात बदल गये और परीक्षा न हुअी । आज भले ही वह परीक्षा हो जाय । और अिसमें कौनसा ज़ोर चाहिये? अगर सरकार पन्द्रह रुपयेके भाड़ेके आदमियोंको अिकट्ठा करके अुनकी फ़ौज बना लेती है और वही फ़ौज बिना समझे, बिना स्वार्थके लड़ाअीके मैदानमें जाकर पटापट मरती है, तो आप तो हज़ारोंके खातेदार हैं, और आपको तो अपने वतनकी खातिर और अपने बाल-बच्चोंकी रोटीकी खातिर लड़ना है । कौन अभागा है जो अैसी लड़ाअी नहीं लड़ेगा? मैं तो चाहता हूँ कि यह लड़ाअी भले ही लम्बी चले । हम यहाँ बैठे हुअे सारे गुजरातके

७

जिस दिन सरकारी दफ़्तरमें किसान अिज़्ज़त और आबरूवाला माना जायगा, अुसी दिन अुसकी तक़दीर पलटेगी। आज तो सरकार जंगलमें घूमनेवाले पागल हाथीकी तरह मदोन्मत्त हो गअी है, जो अपनी चपेटमें आनेवाले हर किसीको कुचल डालता है। पागल हाथी मदमें यह मानता है कि जब मैंने शेर-चीतोंको मारा है, तो मेरे सामने मच्छरकी क्या गिनती? लेकिन मैं मच्छरको समझाता हूँ कि अिस हाथीको जितना घूमना हो अुतना घूमने दे और बादमें मौक़ा देखकर अुसके कानमें घुस जा! क्योंकि अितनी शक्तिवाला हाथी भी कानमें मच्छरके घुस जानेपर तड़प तड़पकर, सूँड़ पछाड़ते हुअे ज़मीन पर लोटने लगता है। मच्छर क्षुद्र है, अिसलिअे अुसे हाथीसे डरना ही चाहिये, अैसी बात नहीं है। मिट्टीके बड़े घड़ेसे असंख्य ठीकरियाँ बनती हैं, फिर भी अुनमेंसे अेक ही ठीकरी मिट्टीके सारे घड़ेको फाड़नेके लिअे काफ़ी होती है। घड़ेसे ठीकरी किसलिअे डरे? वह घड़ेको अपने जैसी ठीकरियाँ बना सकती है। फूटनेका डर किसीको रखना चाहिये तो अुस घड़ेको रखना है, ठीकरियोंको क्या डर हो सकता है?

८

मैं तो आपको कुदरतका क़ानून सिखाना चाहता हूँ। आप सब किसान होनेके कारण जानते हैं कि जब थोड़ेसे बिनौले ज़मीनमें गड़कर व सड़कर नष्ट होते हैं, तब खेतमें मनों कपास पैदा होती है। खुद मरे बिना स्वर्ग जा सकते हों, तो ही सिर्फ़ धारासभामें प्रस्ताव पास करनेसे हमें आज़ादी मिल सकती है।

कष्ट तो आप कहाँ नहीं अुठाते? किसानके बराबर सरदी, गरमी, मेह और मच्छर-पिस्सू वग़ैराका अुपद्रव कौन सहन करता है? सरकार अिससे ज़्यादा दुःख और क्या दे सकती है? मगर मैं चाहता हूँ कि आप समझकर दुःख सहें। अर्थात् जुल्मका विरोध करना सीखें। डरकर अुसे स्वीकार न करें।

अगर भेड़ोंमें से ही अुन्हें सँभालनेवाला भेड़ा न निकले, तो क्या वे विलायतसे सँभालनेवाले ला सकेंगी? ला सकें तो भी यह अुन्हें पुसा नहीं सकता। वे कोअी ढाअी आनेमें नहीं रहेंगे, अैसे छप्परोंमें नहीं रहेंगे; अुन्हें बंगले चाहियें, बाग़-बगीचे चाहियें; अुनकी खुराक अलग, ज़रूरतें अलग; अुन्हें अलग धोबी, अलग भंगी वग़ैरा चाहिये। अिस तरह तो सरकारको सिरसे मुंडन महँगा पड़ जाय। हर गाँवमें दो दो अंग्रेज़ रखे, तो अिस तहसीलके पाँच लाख वसूल करनेके लिअे कितने गोरे रखने पड़ें और अुनका कितना खर्च आये, अिसका हिसाब लगाना मुश्किल नहीं है।

पटेलोंको यह सब कहना क्या मुझे अच्छा लगता है? मुझे तो अुलटी शर्म आती है। मैं चाहता हूँ कि हमारे पटेलोंकी प्रतिष्ठा बढ़े। पटेल तो रैयतके रक्षक होने चाहियें। अैसे पटेलोंको मैं अपने भाअी समझूँगा और अुनसे हाथ मिलानेमें मुझे गर्व होगा।

मुझे शुरूमें कोअी कोअी कहते थे कि अिस झगड़ेमें फँसकर जोखिममें पड़नेके बजाय सुबह दो घण्टे जल्दी अुठकर ज्यादा मज़दूरी कर लेंगे। अैसे लोगोंका दुनियामें जीनेका क्या काम है? वे मनुष्यके रूपमें बैलका जीवन बितायें, अिसके बजाय तो मरकर बैलका ही जन्म धारण कर लें। मैं गुजरातके लोगोंको तेजस्वी देखना चाहता हूँ। कोअी यह न कह सके कि कंगाल या बुरी वणिक वृत्तिका गुजराती क्या कर सकता है? गुजराती भी अुतना ही बहादुर बन सकता है, जितना देशका और कोअी आदमी बन सकता है। अुसे सिर्फ़ अपने सम्मानकी खातिर मरना सीखना चाहिये। मैं गुजरातियोंसे कहता हूँ कि शरीरसे भले ही आप दुर्बल हों, मगर दिल शेरका-सा रखिये; स्वाभिमानकी खातिर मरनेकी ताक़त हृदयमें रखिये। कोअी आपको आपसमें लड़ा न सके, अितनी समझ रखिये। जो दो चीज़ें आपको लाखों खर्च करने पर भी नहीं मिल सकतीं, वे आपको अिस लड़ाअीमें सहज ही मिल रही हैं। साक्षात् लक्ष्मी आपको तिलक लगाने आयी है। आपका सौभाग्य है कि सरकारने आप पर यह कर-वृद्धि की।

९

बहनोंको सम्बोधन करके कहा: सरकारी आदमी आपका माल-असबाब ज़ब्त करने आयें, तो अुनका स्वागत करना और अपनी चूड़ियाँ निकालकर देना और कहना: 'लो, यह पहनना हो तो भले ही पहन लो।'

हालियों*की तरफ़ मुड़कर कहा: तुम्हें डर लगता है कि तुम्हें जब्ती करने बुलवायेंगे, तो क्या करोगे? यह डर ही निकाल डालो। तुम मर्द हो, दुबले नहीं हो। दुबलेका अर्थ है निर्बल, कायर और नामर्द। कायर और नामर्द तो वही हैं, जिनकी हड्डियाँ टूट गअी हैं और जो तुम्हारी मेहनत-मजदूरी पर आधार रखते हैं। तुम खेतमें मज़दूरी करते हो, बड़ी बड़ी बोरियाँ अुठाकर दो-दो कोस चले जाते हो, तुम्हें कौन दुबला कहेगा? अेक गाँवके पटेलसे तहसील-दारने कहा कि ज़ब्त किये हुअे मालको अुठानेके लिअे बेगारी न मिले तो पटेलको ही माल अुठाना पड़ेगा। अुस पटेलको तुरन्त अुससे कह देना चाहिये था कि, 'यह मेरा काम नहीं। बेगारी यह काम करनेको तैयार नहीं है, मैं भी

---

* दुबला जातिके लोग

नहीं हूँ। आपको बड़ा वेतन मिलता है साहब, आप ही अितना काम क्यों नहीं कर लेते ?'

१०

अिस धरतीपर अगर किसीको सीना तानकर चलनेका अधिकार हो, तो वह धरतीसे धनधान्य पैदा करनेवाले किसान को ही है।

सारी दुनिया किसानके आधार पर टिकी हुअी है। दुनियाका आधार किसान और मज़दूर पर है। फिर भी सबसे ज्यादा जुल्म कोअी सहता है, तो ये दोनों ही सहते हैं। क्योंकि ये दोनों बेज़बान होकर अत्याचार सहन करते हैं। मैं किसान हूँ, किसानोंके दिलमें घुस सकता हूँ, अिसलिअे अुन्हें समझाता हूँ कि अुनके दुःखका कारण यही है कि वे हताश हो गये हैं और यह मानने लगे हैं कि अितनी बड़ी हुकूमतके विरुद्ध क्या हो सकता है? सरकारके नाम पर अेक चपरासी आकर भी अुन्हें धमका जाता है, गालियाँ दे जाता है और बेगार करा लेता है। सरकार मनचाहा कर का बोझा अुन पर डाल देती है। बरसों मेहनत करके पेड़को बढ़ायें तो अुस पर कर, खेत खोदकर पाल बाँधकर क्यारी बनायें तो अुस पर कर, अूपरसे बरसातका पानी क्यारीमें पड़े तो अुस पर अलग कर और किसान कुआँ खोदकर पानी निकाले तो अुसके भी सरकार पैसे लेती है। व्यापारी ठंडी छायामें दुकान लगाकर बैठता है, तो अुस पर २,००० की वार्षिक आय तक कोअी कर नहीं। परन्तु किसानके पास बीघे भर ज़मीन भी हो, अुसके लिअे वह बैल रखता हो, भैंस रखता हो, ढोरके साथ ढोर बन जाता हो, खाद वगैरा बनाता हो, और बरसातमें घुटनों तक पानीमें बिच्छुओंके बीच हाथ डालकर चावल बोये, अुसमें से खानेका अनाज पैदा करे, क़र्ज़ करके बीज लाये, अुसमें से थोड़ी कपास हो जाय तो खुद स्त्री-बच्चोंके साथ जाकर अुसे बीने, गाड़ीमें डालकर अुसे बेच आवे; और अितना करने पर अुसे २५-५० रुपया मिल जाय, तो अुस पर भी सरकारका कर!

किसान डर कर दुःख अुठाये और ज़ालिमकी लातें खाये, अिससे मुझे शर्म आती है। और मैं सोचता हूँ कि किसानोंको गरीब और कमजोर न रहने देकर सीधे खड़े करूँ और अूँचा सिर करके चलनेवाले बना दूँ। अितना करके मरूँगा, तो अपना जीवन सफल मानूँगा।

जो किसान मूसलाधार बरसातमें काम करता है, कीचड़में खेती करता है, मारकने बैलोंसे काम लेता है और सर्दी-गरमी सहता है, अुसे डर किसका?

सरकार बड़ी साहूकार और किसान किरायेदार, यह कबसे हुआ? स्वेच्छाचारी ढंगसे जितना जी में आये, अुससे ले लिया जाता है। सरकार किसानको मारती है और हमारे पढ़े-लिखे लोग भी, जो अुसके हथियार बनते हैं, अुसे मारते हैं।

११

हमारी अिस लड़ाअीमें अिन धारासभाके सदस्योंकी स्थिति कुछ कुछ मेहमानों जैसी ज़रूर है, क्योंकि जिसे वैध लड़ाअी कहते हैं, अुसके क्षेत्रमें वे बुद्धिके खेल खेलते हैं। अिस तरहकी लड़ाअीमें मुझे दिलचस्पी नहीं है। वह मेरी समझमें नहीं आती। मुझे तो प्रत्यक्ष लड़ाअीमें मज़ा आता है। पराअी शतरंज जैसे चालाकीके खेलमें, जिसमें प्यादे अुनके मालिककी मरज़ीके अनुसार चलाने पड़ते हैं, पासे फेंकना मुझे अगम्य लगता है। जो लड़ाअी हम लड़ रहे हैं, वह दूसरोंको कठिन वस्तु लगती होगी, मगर मुझे नहीं लगती। मुझे तो अिनकी वैध लड़ाअी देखकर बड़ा विस्मय होता है, क्योंकि अुसका परिणाम शून्य होता है। अिस प्रकार अुनका और मेरा कार्यपद्धतिके मामलेमें अितना मतभेद है। परन्तु अिस काममें हम सब अेकमत हैं। क्योंकि अिसमें जनताकी बात सत्य है। सच कहा जाय तो अुन्होंने मुझे यह काम सौंपा है। अुन्होंने मुझसे कहा कि हम तो अपने सारे दाव लगाकर देख चुके, परन्तु अेक भी नहीं चला। अिसलिअे अब आप अपनी प्रत्यक्ष लड़ाअी आज़माअिये। मैंने अुसे मान लिया है। हमको अिसमें कोअी नहीं हरा सकता, क्योंकि हमारे गुरुने जो विद्या हमें सिखाअी है, अुसमें हारके लिअे स्थान नहीं है। . . .

यह लड़ाअी क्या अेक लाख रुपये बचानेके लिअे है? अगर अुचित हो तो अेकके बदले दो लाख दे दें। मगर अुन्होंने तो आपकी अर्ज़ी नहीं सुनी, आपके प्रतिनिधियोंने धारासभामें जो कुछ कहा वह नहीं सुना और मेरे जैसे आदमीकी भी, जो कभी सरकारको कुछ लिखता ही नहीं, नहीं सुनी! अगर आज मेरे खयालसे २२% की वृद्धि ठीक होती, तो दूसरोंके अिनकार करने पर भी मैं कहता कि चुका दो। खेड़ा ज़िलेमें बाढ़ आअी और लोगोंके सिर पर महान विपत्ति आ पड़ी, तब बाहरसे लोगोंके लिअे खूब सहायता आ गअी। सरकारने भी जो कुछ बन सका, किया। अिन सब बातोंके परिणाम स्वरूप किसान अपनी फसल पैदा कर सके थे। बादमें जब लगानकी किस्त देनेका समय आया, तब मुझे कुछ लोग सुझाने लगे कि अैसी आफ़तके कारण अिस साल लगान माफ़ हो जाय तो अच्छा। मैंने कहा, नहीं, जब मैं देखता हूँ कि सरकार अपनी तरफ़से भरसक कोशिश कर रही है; और कोअी कमी रहती है तो वह सरकारकी बदनीयतके कारण नहीं, बल्कि स्थानीय अधिकारियोंके ही कारण है—जो अुदारताके काम करनेके आदी नहीं हैं—तब अैसी बात हो ही कैसे सकती है? अिसलिअे मैंने अुस वक्त तमाम किसानोंसे कह दिया कि तुम्हारे खेतोंमें अीश्वर कृपासे फ़सल हुअी है, तो लगान अदा कर देना तुम्हारा धर्म है। करोड़ों रुपया कर्ज़ लिया जाता है, वह कर्ज़ तुम्हारे ही सिर पर है।

और सरकार दस लाख रुपया मुफ्त भी देती है। अिसके अलावा, लोगोंने पन्द्रह बीस लाख रुपयेकी मदद दी है। सरकारने भी मनसे या बेमनसे यथाशक्ति मदद दी है। तो फिर अैसी हालतमें अुसके साथ झगड़ा करना हमें शोभा नहीं देता। मैं अभिमान नहीं करता, मगर जो सच बात है वह कहता हूँ कि समितिके सदस्योंने समय पर सहायता न दी होती और तुरंत बीज मुहैया न किया होता, तो सरकारको अिस वर्ष गुजरातके लगानमें ५०-६० लाखका नुकसान हुआ होता। अितने पर भी जब मैंने बारडोली तहसीलके किसानोंकी बात सरकारको लिखी कि अुनके साथ अन्याय हुआ है, यह बताया कि किसान कितने बरबाद हो रहे हैं और यह कहा कि गुजरातमें अेक दो बचे होंगे तो अुन्हें भी आपका स्टीम रोलर कुचल डालेगा, तब मुझे जवाब देते हैं कि 'तुम तो बाहरके हो।'

१२

मेरे सुननेमें आया है कि आपके गाँवमें जो अेक अीसाअी ज़ब्ती करनेवाले अफ़सर मुकर्रर हुअे है, अुन्हें गाँवसे खाने-पीनेका सामान नहीं मिलता। मेरी सलाह है कि आप अैसा न करें। अफ़सर कोअी हमारे दुश्मन नहीं हैं! यह बेचारा हुक्मका ताबेदार बन कर आया है। हुक्म न मान कर नौकरी छोड़नेकी अुसकी हिम्मत नहीं। अुससे हमें द्वेष न होना चाहिये। किसीके जीवनकी आवश्यकताअें पूरी न होने देना, दूध, साग, धोबी और नाअी न मिलने देना सत्याग्रह नहीं है। बाजारमें मिलनेवाली चीज़ें पूरे दाम देने पर सबकी तरह अुसे भी मिलनी चाहियें। अेक अनजान आदमी गाँवमें आ जाय और अुसका अिस तरह बहिष्कार हो, तो अुसकी कैसी स्थिति हो जायगी? न वह नौकरी छोड़ सकता है और न लोगोंका जुल्म ही सह सकता है। किसीको अैसी स्थितिमें डाल देना सत्याग्रह नहीं, बल्कि निर्दयता कही जायगी। अिसलिअे घी, दूध, शाक और अिसी तरह कोअी बीमार पड़ जाय तो दवा वग़ैरा जिन्दगीकी ज़रूरतें कोअी बन्द न करे। बेशक, ज़ब्तीके काममें अुसे किसी प्रकारकी मदद न दी जाय और गाड़ी, मजदूर या पंच वग़ैरा कुछ भी देनेसे साफ़ अिनकार कर दिया जाय। अुसे कह दिया जाय कि हमें आप पर रोष नहीं है, भले आप अीसाअी हों, हिन्दू हों, या मुसलमान हों — हमारे लिअे तो सभी सरकारी नौकर समान हैं, आपके साथ हमारा निजी विरोध कुछ भी नहीं; मगर आप हमारे खिलाफ जब्ती लेकर आवें, तो अुसमें हम आपको हरगिज़ मदद नहीं दे सकते। हमारा झगड़ा तो बड़ोंके साथ है, अैसे ग़रीब नौकरोंके साथ नहीं है। हमारी ताक़त तो सभ्यताके साथ दुःख सहन करनेमें है। सरकारमें कमजोरी है, अिसलिअे वह पुलिसकी मदद लेती है और आबकारी विभागकी सहायता लेकर

लोगोंको दबानेकी कोशिश करती है। अैसी हालतमें पुलिसको भी खाने-पीनेकी चीज़ोंमें अड़चन पैदा करना ठीक नहीं। भूखों मरती सेनाके विरुद्ध लड़ना धर्मयुद्ध नहीं है। अिसलिअे कड़ोद गाँवको मेरी सलाह है कि अैसे कोअी नियम गाँववालोंने बनाये हों, तो भी अब अुन्हें बदल डालें।

अेक और ज़रूरी सलाह देता हूँ। ज़ब्तीका काम हो रहा हो, तब वहाँ लोगोंकी भीड़ जमा न हो। सरकारका अिरादा मारपीट करनेका हो, तो वह अिरादा अिस तरह लोगोंकी भीड़ होनेसे ही पूरा हो सकता है। अगर कोअी दंगे-फ़सादके रास्ते जायेंगे, तो समझ लेना कि हमारा पतन हो गया। अिस सरकारके पास सबसे ज्यादा आसुरी साधन हैं। राक्षसी युद्धमें तो वह अेक मिनिटमें सारे बारडोलीका भुरकुस अुड़ा सकती है। वह हमें अिस रास्ते लगानेका प्रयत्न करेगी, हमें सतायेगी, लोग पागलोंकी तरह भीड़ करेंगे तो अुन्हें चिढ़ायेगी और फिर किसी नौजवानका मिज़ाज बिगड़ जायगा तो वह हम पर तुरन्त सवार हो जायगी। अैसा न होने देनेके लिअे खूब सावधानी रखना। अुसे ताले तोड़ने दो, दरवाजे चीरने दो, वह जो कुछ करे शांतिसे करने दो, पासमें कोअी खड़े न रहो और घरमें अैसी क़ीमती चीज़ें न रखो जो आसानीसे ले जाअी जा सकें।

१३

कलेक्टर साहबने बताया है कि बारडोली तहसीलके लोगोंमें बहुतसे किसान रुपया अदा करनेके लिअे तैयार हैं, लेकिन अुन्हें मार डालने और आग लगा देनेका डर है अिसलिअे वे नहीं चुकाते। अिसलिअे अब मैं हर गाँवमें पूछता हूँ कि किसीको अैसा भय हो, तो मुझसे कहे। किसीको रुपया जमा कराना हो और डर लगता हो तो मेरे पास आये। मैं तहसीलदारके यहाँ आपके साथ चलूँगा और कोअी आप पर हमला करने आयेगा, तो मैं अुससे कहूँगा कि वह आपसे पहले मेरे सिर पर वार करे। मैं कायरोंको लेकर लड़ने नहीं निकला हूँ। मैं तो अुन्हींके साथ खड़ा रह कर लड़ना चाहता हूँ, जो सरकारका डर छोड़कर बहादुर बन गये हैं। मैं तो किसानोंसे कहता हूँ कि आपको अैसा लगे कि जुल्म हुआ है, तो निडर होकर रुपया जमा करानेसे अिनकार कर दीजिये; मगर किसीको यह लगता हो कि लगान बढ़ानेमें न्याय है, तो वह खुशीसे अदा कर दे। जिसे डर होगा अुसकी मैं रक्षा करूँगा। मुझे अुस पर दया तो आयेगी कि लेने-देनेवाला तो अीश्वर है, लेकिन अुसका विश्वास छोड़कर अुसने सरकारका भरोसा किया।

वैसे जाति और पंचायतका बंदोबस्त तो हम ज़रूर कर सकते हैं। हममें से कमज़ोरोंको सहायता देना ज़रूरी है। कलेक्टर साहब अपनी मुलाक़ातमें सामाजिक

व्यवस्थाकी शिकायत करते हैं। मगर मैं अुनसे पूछता हूँ कि आपका सिविल सर्विसका समूह और क्या है? अेक सदस्यकी भूल हो जाती है, तो भी सब मिल कर अुसे बचाते हैं या नहीं? तब किसान अपनी न्यायकी लड़ाअीके लिअे अपना बन्दोबस्त क्यों न करें? मैं किसानोंको सलाह देता हूँ कि आप जातिकी व्यवस्था ज़रूर कीजिये। मगर लोगोंको मार डालने और आग लगानेकी धमकी दी जाती है, अैसी अफवाहें फैलानेका किसीको मौक़ा मत दीजिये। (सभामेंसे आवाजें — बनावटी बात है, बनावटी बात है।) बिलकुल बनावटी न भी हो। यह संभव है कि किसीने तहसीलमें अैसी बात अुड़ाअी हो और अफ़सरोंसे कही हो। अंग्रेज़ खुद अैसी बातें गढ़ लेनेवाले नहीं होते। मैं जानता हूँ कि हमारे लोग साहबके पास जाते हैं, तब दिलमें न हो अैसी बातें भी कह देते हैं। वे साहबको खुश करनेवाली बातें ढूँढ़ते हैं और झूठी बातें भी कह देते हैं। अिसीलिअे तो मैं सलाह देता रहा हूँ कि अुनके पास जाओ और अुनके रुआबमें आ जाओ, अिससे तो अुनके पास न जाना ही अच्छा है। मैंने अिस तहसीलकी नब्ज़ पहचान ली है। यहाँ कुछ लोग दो घोड़ों पर सवारी करनेवाले हैं। वे अिस फ़िक्रमें रहते हैं कि सरकार अन्तमें मान जाय तो भी सुरक्षित रहेंगे और लोगोंको कुचल दे तो भी बच जायँगे। वे जहाँ कहीं जायँगे, वहाँ मुँह देखकर बात करेंगे। परन्तु हमारा तप सच्चा होगा और हमारी बरबाद होनेकी तैयारीका अुन्हें विश्वास होगा, तो वे ज़रूर हमारे साथ हो जायँगे।

१४

अब मैं आअूँ या न आअूँ, यह ध्यान रखना कि हम पर कोअी कलंक न लगे। कोअी मर्यादा मत छोड़ना। गुस्सेका कारण मिले तो भी अभी चुप्पी साध लेना। मुझसे कोअी कह रहा था कि थानेदार साहबने किसीको गाली दी। मैं कहता हूँ कि अिससे अुनका मुँह खराब हुआ। हमें शान्ति धारण कर लेनी चाहिये। अभी तो मुझे गाली दें, तो भी मैं सुन लूँगा। अिस लड़ाअीके सिलसिलेमें आप गालियाँ भी खा लेना। अन्तमें वे खुद अपनी भूल समझ जायँगे। पुलिसका या और कोअी कर्मचारी अपनी मर्यादा छोड़े, तो भी आप अपनी मर्यादा मत छोड़ना। आपकी प्यारीसे प्यारी चीज़ लुट जाय, तो भी कुछ न बोलना। कोअी हताश न होना, बल्कि अुलटे हँसना। अगर आप यह सीख लेंगे तो जैसे बरसात आनेसे पहले बैसाख-जेठमें घबराहट होती है, वैसी ही आजकी घबराहट भी बन जायगी। अुसके हुअे बिना वृष्टि संभव नहीं। पहले अंधेरा होता है, आँधी आती है और बिजली कड़कती है, बाद मे बारिश आती है। दुःख सहे बिना निपटारा होगा ही नहीं। और यह दुःख तो हमने खुद अपने सिर लिया है। अिसमें हमारा क्या चला जायगा? क्षणिक

सुख छोड़ कर हम अैसी अमूल्य वस्तु प्राप्त करेंगे, जो लाखों खर्च करने पर भी पाना दुर्लभ है। तेज, बहादुरी और अुसीके साथ जैसा मैं चाहता हूँ वैसा विनय — यह कमाअी हमें यों ही कभी नहीं मिल सकती थी। वह अिस लड़ाअीसे अिस तहसीलके किसानोंको मिल जाय, यही मैं अीश्वरसे माँगता हूँ।

अिस वक्त सरकारका पारा गरम हो रहा है। लोहा भले ही गरम हो जाय, परन्तु हथोड़ेको तो ठंढा ही रहना चाहिये। हथोड़ा गरम हो जाय तो अपना ही हत्था जला देगा। आप ठंढे ही रहिये। कौनसा लोहा गरम होनेके बाद ठंढा नहीं होता? कोअी भी राजा प्रजा पर कितना ही गरम क्यों न हो जाय, अुसे अन्तमें ठंढा होना ही पड़ेगा। जनताकी पूरी तैयारी होनी चाहिये।

१५

आपके जब्ती करनेवाले अफसर ब्राह्मण हैं। चार बजे अुठकर प्रभु स्मरण करने या प्रभाती गानेके बजाय आजकल भैंसोंका स्मरण करते हैं। अुनसे कौन डरे और कौन अुनकी परवाह करे? . . . वालोडके थानेमें अेक आदमी भैंसकी पूंछ पकड़ रहा है और दूसरा दुह रहा है! किसीने अिसका चित्र ले लिया है। सरकारी नौकरी करने पर ग्वाला और कसाअी बनना पड़ता है! आग लगे अैसी जिन्दगीको! सरकारी नौकर कहते हैं: गाँवके लड़कोंके ढोल-नगाड़ोंसे भी ज्यादा अिन ढोरोंकी चिल्लाहटसे कान फट गये। तब अिन भैंसोंके लिअे भी घोषणापत्र क्यों नहीं निकाल देते कि शोर न मचाओ! वे आपके ही थानेमें — आपकी हुकूमतके मातहत बैठी हैं। . . . 'अपनी भैंसोंके बारेमें आप बेपरवाह हैं न!' लोग कहते हैं: 'जी हाँ, हम अुन्हें मरी हुअी समझते हैं।' . . . समझ लेना कि सरकारी हैज़ा आ गया था। कोअी अिसका खयाल मत करना। समझ लेना कि अेक नये प्रकारका सरकारी रोग आ गया था।

वालोड़में भाषण खतम होने आया, तब भैंसोंकी चिल्लाहट सुनाअी देने लगी। तब सरदार कहने लगे: सुनिये, भैंसोंकी चिल्लाहट। रिपोर्टरो लिख लो, और समाचार देना कि भैंसें भाषण दे रही हैं। नगाड़ोंकी आवाज़ पर राज अुलट जाते थे, अब अिन भैंसोंकी पुकार सुनिये (फिर भैंसोंकी चिल्लाहट)। यह राज कैसा है, अिसे अभी तक आप नहीं समझे हों, तो ये भैंसें पुकार पुकार कर कह रही हैं: 'अिस राजमें से अिन्साफ मुँह छिपाकर भाग गया है।'

१६

मैं जानता हूँ कि दिन भर द्वार बन्द करके मनुष्य और पशु सबको बन्द रहना बुरा मालूम होता है और आप अपने मवेशी और घरकी जायदाद सरकारको लूटने देनेके लिअे तैयार हैं। मगर मुझे आपको समझके साथ दुःख सहन करना सिखाना है और आपको तैयार करना है। अिसके बिना

अिस होशियार और चालाक सरकारके सामने हम कामयाब नहीं होंगे। मुझे आपको दिखाना है कि सौ रुपयेकी नौकरीके लिअे जनेअू पहननेवाला ब्राह्मण हाथमें रस्सी लेकर कसाअीको देनेके लिअे ढोर पकड़ता फिरता है। हमारे ही आदमियोंको, अूँचे वर्णके लोगोंको यह हुकूमत कैसे राक्षस बना देती है, यह मुझे आपको दिखाना है।

हमारी तो अेक छोटीसी लड़ाअी थी। परन्तु सरकार हठी बनकर अुसे बड़ा रूप दे रही है। अगर आज जनता अपनी टेक पर अच्छी तरह टिकी न रहे, तो सरकार अुसे कुचल डालेगी। मगर जनता सच्ची टेक पकड़ लेगी, तो सरकार हार जायगी। कभी अिस तहसीलके सब लोग बरबाद हो जायँ या मर जायँ तो भी क्या हुआ? अस्सी हज़ार मरें या जियें, अिसकी अीश्वरकी सृष्टिमें क्या गिनती है? अेक मन गेहूँका बीज ज़मीनमें दबकर व सड़कर नष्ट हो जाता है, मगर अुसके बदलेमें मनों गेहूँ पैदा होता है। अिसी तरह आप बारडोली तहसीलके किसान बीज बनकर भले ही बरबाद हो जायँ, और गुजरातके किसान-जगतका भला करें। यह समझना कि आज लक्ष्मी आपको तिलक करने आअी है। अैसा समय बार बार किसीके भाग्यमें नहीं आता। आप किसानोंको डरनेकी कोअी बात ही नहीं हो सकती। डर तो सरकारको हो सकता है — जिसे अपना राज्य रखना है; सरकारी अफ़सरोंको हो सकता है — जिन्हें नौकरी खो बैठनेका भय है।

१७

आप मुझे आराम लेनेको कहते हैं, मगर मुझे कोअी आराम नहीं लेना है। जेलके बाहर हूँ तब तक रात-दिन आपके बीचमें रहना मेरा धर्म है। आपको पता नहीं होगा, मगर मुझे पता है कि आपके पीछे कितने भूत फिर रहे हैं। कभी वे आपके पीछे लगकर आपको पागल बनायेंगे, कभी गिरायेंगे। अुनसे आपको बचाना मेरा फ़र्ज़ है। जिसने तहसीलका रखवाला होनेका दावा किया है, अुसका धर्म सतत जाग्रत रहनेका है। आपने मुझे तहसीलका रखवाला मुकर्रर किया है, तो जब तक मैं बाहर हूँ, तब तक मेरे लिअे सोना नहीं हो सकता। मेरा धर्म खुद जाग्रत रहकर आपको निरन्तर जाग्रत रखना है।

१८

याद रखिये कि जो सत्यकी खातिर बरबाद होनेको तैयार बैठे हैं, वे ही अन्तमें जीतेंगे; और जिन्होंने अधिकारियोंके साथ घपला किया होगा, अुनके मुँह काले ही होंगे। अिसमें मीनमेख नहीं होगा। यह समझ लीजिये कि आपकी ज़मीन आपका दरवाज़ा खटखटाती हुअी आपके यहाँ वापस आयेगी और कहेगी कि मैं आपकी हूँ।

सरकार कहती है कि अुसने १६८० अेकड़ ज़मीन बेच डाली है और अभी ५००० अेकड़ बेचनेवाली है। सरकारका कमिश्नर कहता है कि ज़मीनकी कीमत लगानसे १२३ गुनी हो गअी है। सरकार यह जाहिर करे कि अगर यह ज़मीन बेची गअी है, तो अुसकी क्या कीमत ली गअी है? नहीं तो ज़मीन जिस कीमत पर बेची गअी है, अुसके हिसाबसे सरकार लगान मुक़र्रर करे।... ज़मीन रखनेवालोंके सामने तो पारसी भाअियों और बहनोंके दल खड़े रहेंगे और कहेंगे : पहले गोलियाँ चलाओ और फिर ज़मीन हज़म करो; आप ज़मीनमें हल चलायें अुससे पहले आपको हमारे खूनकी नदी बहानी पड़ेगी और हमारी हड्डियोंकी खाद बनानी होगी।

सरकार घोषणापत्र प्रकाशित करके कहती है कि २९ जून तक की तुम्हें मोहलत दी जाती है। अैसे वायदेके सौदे ही करने होते, तो लोग अितनी मेहनत और अितने संकट किसलिअे मोल लेते?... घोषणापत्रमें पठानोंके चाल-चलनको 'हर प्रकारसे आदर्श' बताया गया है, तो फिर खुद ही अुनका अनुकरण क्यों नहीं करते! अपने अफ़सरोंसे कह दीजिये कि पठानों जैसा ही आदर्श चाल-चलन रखें। फिर तो आपको किसीके अच्छे चाल-चलनकी ज़मानत ही नहीं लेनी पड़ेगी.... सरकारको हमारा संगठन खटकता है। किसानोंको मैं सलाह देता हूँ कि जो आपको दगा दे अुसे बिलकुल मत छोड़िये। अुसे कह दीजिये कि हमने अेक नावमें बैठकर यह साहस किया है; अिसमें तुझे छेद करना हो, तो तू नावमें से अुतर जा। हमारा तेरा कोअी सम्बन्ध नहीं है। यह संगठन हमारी रक्षाके लिअे है, किसीको दुःख देनेके लिअे नहीं। अपनी रक्षाके लिअे संगठन न करना आत्महत्या करनेके बराबर है। अेक वृक्षको भी बाड़ लगाकर पशुओंसे बचाते हैं और गेरू लगाकर दीमकसे बचाते हैं, तो अितनी जबरदस्त सरकारके खिलाफ़ जो लड़ाअी शुरू की है, अुसमें किसान अपनी रक्षाके लिअे बाड़ क्यों नहीं लगायेंगे?... सरकार कहती है कि पहले रुपया अदा कर दो। चौर्यासी तहसीलने अदा कर ही दिया है न? आपने अुनके साथ क्या न्याय कर दिया?... घोषणापत्रमें अैसी शेखी हाँकी गअी है कि ज़ब्तीका माल रखनेवाले और जमीन रखनेवाले मिल गये हैं। जो मिले हैं वे कौन हैं? माल रखनेवाले आपके ही चपरासी और पुलिसवाले, भैंस रखनेवाले खुशामद करके सूरतसे लाये हुअे अेक दो कसाअी और जमीन रखनेवाले सरकारके खुशामदी और सरकारी नौकरोंके संबंधी। दुनिया जानती है अिनकी कैसी अिज्ज़त है।

१९

बहिष्कार क्यों न करें? सरकार क्या बहिष्कार नहीं करती? सरकारकी अनीतिमें जो अफ़सर शामिल नहीं होता, अुसे सरकार अलग कर देती है या

बदल देती है। तो आप बहिष्कार क्यों न करें? आप किसीकी रोज़ी नहीं छीन लेते। आप तो सिर्फ़ अुसके साथ संबंध तोड़ देते हैं और अुसकी सेवा लेना बंद कर देते हैं। अैसा बहिष्कार करनेका हरअेक समाजको जन्मसिद्ध अधिकार है। अिसमें किसीको सतानेकी बात नहीं है। हम किसीका पानी, दूध, खाने-पीनेका सामान, मंदिर, बीमारीके समयकी सेवा और स्मशान पहुँचानेकी सेवा बंद नहीं कर सकते। अैसा करें तो हम मनुष्य नहीं रह जाते। हमें बहिष्कार करके मनुष्यत्व नहीं खोना है; विरोधीको मनुष्य बनाना है। बहिष्कारका बल आत्मरक्षाके लिअे है। जैसे अुगते हुअे छोटेसे पौदेको बाड़की ज़रूरत है, दीमक न लगनेके लिअे गेरू या डामरकी ज़रूरत है, वैसे ही स्वतंत्रताका स्वाद चखकर स्वतंत्र रूपमें अभी अभी पैरों पर खड़ा रहना सीखे हुअे समाजको समाजद्रोहियोंसे बचनेके लिअे बहिष्कारकी ज़रूरत है।

बहिष्कार करनेका हमें हक़ है, मगर वह अपने ही आदमियोंका। हमारी बड़ी जातियोंमें जो दीमक पैदा हो जाय, अुसके खिलाफ़ बहिष्कार कीजिये। मगर पारसियों जैसी छोटीसी जातिका कोअी आदमी भूल करे तो अुसे दरगुज़र कीजिये। कोअी अुसके यहाँ शराब पीने न जाय, तो आप अिसमें कुछ नहीं कर सकते। मगर किसीको यह मत समझाअिये कि अुसके यहाँ न जाकर दूसरेकी दुकान पर पीने जाय। अुन्हें मज़दूर मिलने चाहियें, नाअी मिलने चाहियें। पारसी सज्जनोंको भी आपके साथ रहना हो, तो अुन्हें अपनी अड़चनें आपके सामने स्पष्ट रूपमें रखकर न्याय प्राप्त करना चाहिये। मगर आपमें से ही कोअी आपसे द्रोह करे, तो अुसका पक्का बहिष्कार ज़रूर कीजिये। बहिष्कारमें भी मनुष्यको जिस सेवाका हक़ है, वह सेवा तो हरगिज़ नहीं छोड़ी जा सकती। मगर अुस आदमीसे सेवा लेना, अुसके साथ मिलना जुलना और रोटी-बेटी व्यवहार — ये सब बंद कर दीजिये।

२०

किसी भी किसान या साहूकारकी अेक बालिश्त भी ज़मीन जब तक खालसा रहेगी, तब तक अिस लड़ाअीका अंत नहीं होगा और हज़ारों किसान अुस पर अपने सिर दे देंगे। यह कोअी हरामका माल नहीं है कि भड़ौंच जाकर अेक घासलेटवाले पारसीको ले आये, और वह जिस तरह चाहे लूट मचा ले। मैं अिस सार्वजनिक सभामें चेतावनी देता हूँ कि यह ज़मीन रखनेसे पहले अच्छी तरह विचार कर लेना। किसानका खून पीने आना है, तो अैसा करनेवालेका न्याय भी भगवान अिस ज़िंदगीमें कैसा करता है यह मत भूलना। यह निश्चित मानना कि अिन मुफ़्तमें ज़मीन लेने आनेवालोंकी वही दशा होगी, जो अुस नारियलके लोभी ब्राह्मणकी हुअी थी।

दो किस्मकी मक्खियाँ होती हैं। अेक मक्खी दूर जंगलमें जाकर फूलोंसे रस लेकर शहद बनाती है, दूसरी मक्खी मैले पर ही बैठती है और गंदगी फैलाती है। अेक मक्खी दुनियाको शहद देती है और दूसरी रोग फैलाती है। मैंने सुना है कि आपके यहाँ ये संक्रामक मक्खियाँ काम कर रही हैं। अिन मक्खियोंको अपने पास आने ही न दीजिये। आप गंदगी और मैल ही अपनेमें मत रखिये कि जिससे ये मक्खियाँ आपके पास आयें।

२१

आमका फल बेवक्त तोड़ेंगे, तो वह खट्टा लगेगा। दाँत खट्टे हो जायँगे। मगर अुसे पकने देंगे तो वह अपने आप टूट पड़ेगा और अमृतके समान लगेगा। अभी समझौतेका समय नहीं आया है। समझौता कब हो सकता है? जब सरकारकी मनोदशा बदले और जब अुसका हृदय-परिवर्तन हो, तब समझौता हो सकता है। तब हमें लगेगा कि अुसमें कुछ मिठास है। अभी तो सरकार वैर भावसे तिलमिला रही है।

२२

कोअी घासलेटवाला या ताड़ीवाला पराअी ज़मीनको हज़म करनेके लिअे आये, तो अिससे क्या हुआ? यह तो व्यभिचारीका काम है। घासलेटवाला तो क्या, कोअी सत्ताधीश भी अिस ज़मीनको हज़म नहीं कर सकता यह लिख रखिये। कहते हैं कि पुलिसके खूब आदमी आ रहे हैं। भले ही पुलिस आये, फ़ौज़ आये, ज़मीन तो जहाँकी तहाँ रहेगी और किसान भी जहाँके तहाँ रहेंगे। पुलिस और अफ़सरोंको क्यों परेशान कर रहे हो? तहसीलमें अुनके लिअे खड़े रहनेकी भी तो जगह नहीं है। जिस वक्त बरसात होगी अुस वक्त किसानके बच्चेके सिवाय और यहाँ कौन रह सकता है? बिक्री है ही कहाँ? यह तो किसानोंसे बदला लेनेके लिअे और अुन्हें बरबाद करनेके लिअे दो चार बदमाश स्वार्थियोंको खड़ा करके अुन्हें ज़मीन दे दी है। अिसलिअे मैं कहता हूँ कि जब तक किसानोंको चप्पा चप्पा ज़मीन वापस नहीं मिल जाती, तब तक लड़ाअी बंद नहीं होगी।

२३

मन भर गेहूँ बीज बनता है, ज़मीनमें सड़-गल जाता है और अुससे बेशुमार फ़सल पैदा होती है। बारडोलीको मैं अैसे ही बीजवाला बननेके लिअे कह रहा हूँ और आपका भी जब अिस सिलसिलेमें धर्म अुत्पन्न हो जायगा, तब आपको भी वही रास्ता बताअूँगा। भड़ौंचमें कहा: अगर सरकारकी नज़र ज़मीन पर हो, तो मैं अुसे चेतावनी देता हूँ कि मैं आनेवाली फसल पर अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक आग लगा दूँगा, मगर अेक पैसा भी यों ही नहीं देने

दूँगा। अहमदाबादमें कहा: अुन्हें घमण्ड होगा कि हमारे पास रावणसे भी ज्यादा बल है, मगर रावण बारह महीने तक बगीचेमें बन्द रखी हुआी अेक अबलाको वशमें नहीं कर सका था और अुसका राज्य नष्ट हो गया था। यहाँ तो अस्सी हज़ार सत्याग्रही हैं। अुनकी टेक छुड़वा सकने वाला कौन है?

२४

अहिंसाके सिद्धांतका पालन करनेवाले तो हिन्दुस्तानमें अिधर अुधर बहुतसे अज्ञात लोग हैं; अुनके भाग्यमें प्रसिद्धि नहीं है। जो अुसका पूरा पालन नहीं करते, अुनके भाग्यमें प्रसिद्धि आ गअी है। अहिंसाके पालनकी बात करना ही मेरे लिअे तो छोटे मुँह बड़ी बात करनेके बराबर है। यह तो हिमालयकी तलहटीमें बैठकर अुसके शिखर पर पहुँचनेकी बात करने जैसा होगा। मगर बात अितनी ही है कि कोअी कन्याकुमारीके सामने बैठकर अुस शिखर पर पहुँचनेकी बात करता है, तो अुससे तलहटीमें बैठकर यह बात करनेवाला कुछ ज्यादा समझदार कहलायेगा। वैसे मैं तो गांधीजीसे लिया हुआ टूटा-फूटा सन्देश आपके सामने रख रहा हूँ। जब अिमीसे आपमें प्राण आ गये हैं, तब अगर मैं अिस धर्मका पूरी तरह पालन करनेवाला होता, तो हम १९२२ की प्रतिज्ञा पूरी कर चुके होते।

४२

बारडोलीकी विजय – १

१

भगवानको साक्षी रखकर ली हुअी अेक प्रतिज्ञामें हम पूरे अुतरे हैं और आज अुस विजयका अुत्सव मनानेके लिअे खुशीसे अिकट्ठे हुअे हैं। अिस अुत्सवमें भाग लेनेका सबको अधिकार है। परन्तु अिस अुत्सवके अन्तमें हमें यह ख़याल रहना चाहिये कि हमारे सिर पर कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी आअी है। अब हमें स्थायी काम हाथमें लेना ज़रूरी है — अैसे काम कि बादमें फिर कभी अैसी लड़ाअियाँ लड़नी ही न पड़ें।

मैं खुद आप चाहें अुतना आपके बीचमें रहनेको तैयार हूँ। मैं गाँव-गाँव घूमकर आपको समझाअूँगा कि मोक्षका मार्ग तो हमारे ही हाथमें है। तोप-बंदूकोंके खिलाफ़ लड़नेकी कोअी ज़रूरत नहीं। थोड़ेसे संयम सीखने हैं, थोड़ेसे पाप धोने हैं और थोड़ा बहुत मिथ्याभिमान हो तो अुसे छोड़ना है। जिसने अेक बार तोपके गोलों तक पहुँचनेकी तैयारी कर ली हो, अुसके लिअे

यह सब करना मुश्किल नहीं है। अभी तो मैं सिर्फ़ यह सूचना ही दे देता हूँ। मैं आपके साथ ही रहूँगा, अिसलिअे अब अितनी बड़ी सभामें ज्यादा गला नहीं फाड़ूँगा।

मैं अितना ही कहकर आपसे बिदा लूँगा कि आप सबने यह लड़ाअी तो सुन्दर ढंगसे लड़ी, मगर अब अिससे भी बड़े कामके लिअे तैयार हो जाअिये। जो जाँच समिति मुक़र्रर होगी, अुसके लिअे सबूत अिकट्ठे करनेका काम है। मगर यह तो छोटा काम है, और अिसके करनेवाले मिल जायँगे। अगर मेरे साथी मेरी बात मानें, तो बारडोली तहसीलमें हम अैसा काम करेंगे, जो सारे हिन्दुस्तानके लिअे आदर्श होगा। यह काम जब आप करेंगे, तब आपको मीठा लगेगा।

जब हमने सत्याग्रहकी लड़ाअी छेड़ी, तब अुसके परिणामोंका आपको पता नहीं था। ज्यों ज्यों समय बीतता गया और परीक्षा होती गअी, त्यों त्यों अुसमें रस आता गया और आपमें जाग्रति बढ़ती गअी। अिसी तरह अब बादके बैठे और ठंडे कामके बारेमें भी विश्वास रखिये। काम कठिन तो ज़रूर है, फिर भी जैसे-जैसे आगे बढ़ेगा वैसे-वैसे अुसके फल आपको खूब मीठे लगेंगे।

अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि जैसे अिस लड़ाअीमें आप सबने मेरा साथ दिया है, वैसे ही अब आगेके काममें भी सब साथ देंगे। अीश्वर आपको अैसा करनेकी बुद्धि और शक्ति दे और भगवान आपका भला करे।

२

सरकारके साथ लड़ना तो मीठा लगता है, मगर याद रखिये मुझे तो आपके साथ भी लड़ना पड़ेगा। किसान अपनी भूलोंसे दुःखी हो रहा है। वे भूलें मैं सुधारना चाहता हूँ। अिसमें मैं आपका साथ चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि बारडोली तहसीलकी बहनें, जिन्होंने मुझपर अितना प्रेम बरसाया है और मुझे भाअीके समान माना है, अिस काममें मेरा साथ दें। अुनकी मददके बिना अिसमें से कुछ भी होना सम्भव नहीं है।

मैं आपसे कह देना चाहता हूँ कि सरकार तमाम लगान माफ़ कर दे, तो भी यदि आप न चाहें तो सुखी नहीं हो सकते। यह तो मुझे पसन्द है कि आप हुकूमतके ज़ुल्मोंके विरुद्ध लड़ें। परन्तु हमें जानना चाहिये कि हम अपनी ही मूर्खतासे बहुत ज्यादा दुःखी होते हैं और हम खुद ही अपने दुःखोंके लिअे ज़िम्मेदार हैं; तो फिर हम अुनके खिलाफ़ क्यों न लड़ें? अिसके लिअे तो रात-दिन युद्ध करना चाहिये।

अिसलिअे अब मैं बारडोली तहसीलकी तमाम पंचायतों और संघोंसे कहता हूँ कि आप अपनी पंचायतोंको पुनर्जीवित कीजिये और पुराने शरीरोंमें

नव चेतन भरिये। पंचायत तो अैसी होनी चाहियें, जो गरीबोंकी रक्षा करती हों और जिनके जरिये सारी जातिका पुनरुद्धार होने लगे।

क्या छोटे-छोटे बच्चोंकी शादी कर देनेसे कभी किसी जातिका कल्याण हो सकता है? जो लोग सीने पर गोलियाँ झेलनेके लिअे तैयार होनेका दावा करते हों, वे कभी अपने छोटे-छोटे बालकोंका विवाह कर सकते हैं? क्या अुनके लिअे सरकारको अेक खास अुम्रसे पहले बच्चोंकी शादी बन्द करनेका क़ानून बनाना पड़ता है? अगर हमारे सुधारके लिअे सरकारको क़ानून बनाने पड़ते हों, तो हम अुसके साथ कैसे लड़ सकेंगे?

जैसे हम सरकारका हृदय-परिवर्तन करना चाहते थे, वैसे ही हमें अपना हृदय-परिवर्तन भी करना पड़ेगा।

४३

बारडोलीकी विजय – २

[अहमदाबाद शहरकी तरफ़से दिये गये मानपत्रका जवाब देते हुअे प्रगट किये गये अुद्गार।]

आपने अहमदाबादके नागरिकोंकी तरफ़से मुझे जो मानपत्र दिया, है अुसमें मुझे गांधीजीके पट्टशिष्यके रूपमें बताया है। मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझमें वह योग्यता आवे। परन्तु मैं जानता हू, और मुझे अच्छी तरह मालूम है कि मुझमें वह नहीं है। पता नहीं वह योग्यता प्राप्त करनेके लिअे मुझे कितने जन्म लेने पड़ेंगे। मैं सच कहता हूँ कि आपने प्रेमके आवेशमें मेरे लिअे जो अतिशयोक्तिपूर्ण बातें लिखी हैं, अुन्हें मैं पी जाअूँ तो हर्ज नहीं, परन्तु यह बात हज़म नहीं हो सकती। आप सब जानते होंगे कि महाभारतमें द्रोणाचार्यका अेक भील शिष्य था, जिसने द्रोणाचार्यके मुँहसे अेक भी अुपदेश नहीं सुना था। परंतु वह गुरुका मिट्टीका पुतला बनाकर अुसका पूजन करता था और अुसके पैरों पड़कर द्रोणाचार्यकी विद्या सीख गया। जितनी विद्या अुसने प्राप्त की थी, अुतनी द्रोणाचार्यके और किसी शिष्यने प्राप्त नहीं की थी। अिसका क्या कारण है? कारण यह है कि अुसमें गुरुके प्रति भक्ति थी, श्रद्धा थी, अुसका दिल साफ़ था और अुसमें योग्यता थी। आप मुझे जिनका शिष्य कहते हैं, वे गुरु तो हमेशा मेरे पास मौजूद हैं। अिसमें मुझे कोअी शंका नहीं कि अुनका पट्टशिष्य तो क्या, बहुतसे शिष्योंमें से अेक शिष्य होने लायक़ योग्यता भी मुझमें नहीं है। अगर वह योग्यता मुझमें होती, तो आपने भविष्यके लिअे मेरे विषयमें

जो आशाअें प्रगट की हैं, अुन्हें मैं आज ही पूरी कर देता। मुझे आशा है कि हिन्दुस्तानमें अुनके बहुतसे अैसे शिष्य पैदा होंगे, जिन्होंने अुनके दर्शन नहीं किये होंगे और जिन्होंने अुनके शरीरकी नहीं, परन्तु अुनके मंत्रकी अुपासना की होगी। अिस पवित्र भूमिमें कोअी न कोअी अैसा ज़रूर पैदा होगा। कुछ लोग कहते हैं कि गांधीजी चले जायेंगे, तब क्या होगा? मैं अिस बारेमें निर्भय हूँ। अुन्हें स्वयं जो कुछ करना था, वह अुन्होंने कर लिया है। अब जो बाक़ी रह गया है, वह आपको और मुझे करना है। हम अुसे करेंगे तो अुन्हें तो कुछ भी करना बाकी नहीं है। अुन्हें जो कुछ देना था, वह अुन्होंने दे दिया। अब हमें यह करना है। बारडोलीके लिअे आप मुझे श्रेय देते हैं, लेकिन मैं अुसका पात्र नहीं हूँ। कोअी असाध्य रोगसे पीड़ित बीमार बिछौनेमें पड़ा हो, अिस लोक और परलोकके बीच झूल रहा हो; और अुसे कोअी संन्यासी मिल जाय, जड़ीबूटी दे दे और अुसकी मात्रा घिसकर पिलानेसे रोगी स्वस्थ हो जाय — अैसी दशा हिन्दुस्तानके किसान की है। मैं तो सिर्फ़ वह जड़ीबूटी घिसकर पिलानेवाला हूँ, जो अेक संन्यासीने मुझे दी है। श्रेय अगर किसीको है, तो अुस जड़ीबूटी देनेवालेको है। कुछ श्रेय पथ्यका पालन करनेवाले रोगीको मिलना चाहिये, जिसने संयम रखा और अिस तरह हिन्दुस्तानका प्रेम प्राप्त किया, और जिसके प्रतिनिधिकी हैसियतसे आज आप मेरा सम्मान कर रहे हैं। दूसरे कोअी सम्मानके पात्र हों तो वे मेरे साथी हैं, जिन्होंने चकित करनेवाले अनुशासनका परिचय दिया है और जिन्होंने मुझे कभी पूछा तक नहीं कि कल आप क्या हुक्म जारी करेंगे? कल आप क्या करनेवाले हैं? कहाँ जानेवाले हैं? किसके साथ समझौतेकी बातें करेंगे? गवर्नरके डेप्युटेशनमें किस किसको ले जायँगे? पूना जाकर क्या करेंगे? जिन्होंने मुझ पर ज़रा भी अविश्वास नहीं किया, पूरा विश्वास रखा है और अनुशासन दिखाया है। मुझे अैसे साथी मिले हैं, यह भी मेरा काम नहीं है। अैसे साथी जो पैदा हुअे हैं, जिनके लिअे गुजरातको गर्व है, यह भी अुन्हींका काम है। अिस प्रकार अिस मानपत्रमें की गअी प्रशंसा बाँट दी जाय, तो सब दूसरोंको ही मिलेगी और मेरे हिस्सेमें यह कोरा कागज़ ही रह जायगा।

युवक संघका मानपत्र देख कर मेरा दिल भर आया है। अगर मैं अहमदाबादके युवकोंको समझा सकूँ, तो कहूँगा कि तुम्हारे घर गंगा आअी हुअी है। मगर गंगाके किनारे बसनेवालोंको गंगाकी क़दर नहीं होती। हज़ारों मीलसे लोग गंगामें नहा कर पवित्र होनेके लिअे आते हैं। आज दुनियामें सबसे पवित्र कोअी स्थान हो सकता है, तो वह अिस अनेक प्रवृत्तियोंवाले शहरमें नदीके परले किनारे पर है, जहाँ जगतके अनेक स्त्री-पुरुष पवित्र होनेके लिअे आते हैं।

युवकोंको पवित्र होनेका यह अवसर मिला है। युवक अगर समझें तो अिस गंगाका पान करके वे कभी अघायें ही नहीं।

किसानोंके लिअे मैंने जो काम किया है, अुसके लिअे मानपत्र कैसा? मैं किसान हूँ। मेरी नस नसमें किसानका खून बहता है। जहाँ जहाँ किसान पर दुःख पड़ता है, वहीं मेरा जी दुःखता है। हिन्दुस्तानमें जहाँ ८० फ़ीसदी लोग किसान हैं, वहाँ युवकोंका धर्म और क्या हो सकता है? किसानोंकी सेवा करनी हो, दरिद्रनारायणके दर्शन करने हों, तो किसानोंके झोंपड़ोंमें जाओ। बारडोलीकी लड़ाअीमें युवकसंघने बहुत काम किया है। बंबअीके युवकोंने शुरुआत की। वहाँकी बहनोंने आकर स्थिति देखी और अुनकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी। अुन्होंने बंबअी शहरको जाग्रत किया। बादमें सूरत और अहमदाबादके युवकोंमें भी चेतना फैली। अगर यह चेतना क्षणिक न हो, यह प्रकाश दीपककी ज्योति जैसा नहीं परन्तु सूर्य जैसा स्थायी हो, तो देशका कल्याण हो जायगा। देशका कल्याण न मेरे हाथमें है और न गांधीजीके हाथमें, वह तो तुम युवकोंके हाथमें है। हरअेक देशमें युवकोंने ही स्वतत्रंता ली है, हज़म की है और भावी नौजवानोंको दी है। अिस मानपत्रका अर्थ यह है कि यह काम तुम्हें पसंद है, तुम्हारे दिलोंमें अिसके प्रति रस पैदा हुआ है। मुझे अुम्मीद है कि बाकीका जो भगीरथ कार्य रह गया है, अुसे हम साथ मिलकर करेंगे।

मैं भगवानसे माँगता हूँ कि आप सबने जो अतिशयोक्तिपूर्ण शब्द मेरे लिअे अुपयोगमें लिये हैं, अुनके योग्य वह मुझे बनाये और आपने अपने लिअे जो अुम्मीदें बाँधी हैं, अुन्हें पूरी करनेकी आपको शक्ति दे। भगवान आपका भला करे।

४४

विलक्षण भेंट

[ता. १४-११--१९२८ को वराड़ (तहसील बारडोली) में भैयादूजके दिन बहनोंने भाअीसे जो विलक्षण प्रकारकी भेंट माँगी, अुसके जवाबमें दिया गया भाषण ।]

आपने शिक्षाकी माँग की। शिक्षा दो तरह की होती है : अेक शिक्षा मनुष्यको मानवताका ज्ञान कराती है और दूसरी मनुष्यसे मानवता छीन लेती है; अेक मनुष्यको घमंडमें चूर कर देती है और दूसरी मनुष्यको — पुरुष और स्त्री दोनोंको — अुसके धर्मके प्रति जाग्रत करती है । यह दूसरी ही सच्ची शिक्षा है । अगर आपको यह शौक हो कि शहरी बहनोंकी तरह आप बारीक साड़ी और बूट पहनना सीखें, खाना बनाना और झोलीमें कपास भरना भूल जायँ, तो अैसी शिक्षा देनेका प्रबंध मैं आपके लिअे नहीं कर सकता । यह तो अुच्छृंखलताकी शिक्षा हुअी । सच्ची शिक्षा यह है कि आप कभी खेतोंमें काम करना छोड़ें ही नहीं और आपको खेतोंसे कोअी हटा न सके । दुनियामें हम सब थोड़े बहुत अंशमें अपराधी हैं । मगर जो आदमी पसीना बहाकर खेतमें काम करता है और दुनियाके लिअे अन्न और वस्त्रकी सामग्री पैदा करता है, वह दुनियामें सबसे कम अपराधी है । अिसलिअे अभी आप जो अुत्तम काम कर रही हैं, अुसे छुड़ा देने वाली शिक्षा देनेकी तो मैं कभी सम्मति नहीं दे सकता । हाँ, आपको थोड़ासा अक्षर-ज्ञान भले ही मिले; मगर अिसके सिवाय आपको तो मृत्यु-भोजमें शरीक न होने, मरनेके बाद किये जाने वाले खर्चका विरोध करने और अपने लड़के-लड़कियोंको छोटी अुम्रमें ब्याह देनेसे साफ अिनकार करना सीखनेकी शिक्षाकी ज़रूरत है । मैं आपको यही शिक्षा देना चाहता हूँ । वराड़के कर्ज़का हिसाब लगायें, तो आपको भोजके लड्डू खाते वक्त विचार होने लगे । ये लड्डू कौन खाये ? जिसे भूत बननेकी अिच्छा हो, वह मृत्यु-भोजके लड्डू खाये ! और लड़के-लड़कियोंको बचपनमें गुलाम बना देनेमें क्या बड़प्पन हो सकता है ? मैंने अपने लड़केका बीस सालकी अुम्रमें ग्यारह रुपये खर्च करके विवाह किया और मेरी लड़की २४ वर्षकी हो गअी है, तो भी मैंने अुसे अभी तक कुँवारी रखी है ।

संतानको सुधारो

मैं तो आपको तीन बातें समझाना चाहता हूँ : आप अपनी संतानको सुधारिये, अपने ढोरोंकी संतानको सुधारिये और अपनी फ़सलकी संतानको सुधारिये । तीनों ही मामलोंमें आप दिन दिन क्षीण होती जा रही हैं । आप

मुझे पूछती हैं कि आपके पति आपको विदेशमें साथ क्यों नहीं ले जाते? आपसे सच कहूँ? वहाँ विदेशोंमें अुनकी स्थिति ढेढ़-भंगी जैसी है। वहाँ आपको ले जाकर क्या करें? वहाँ आपको ले जायँ, तो आप अुनकी सच्ची हालत जान लें। वहाँ विदेशोंमें जाकर ढेढ़ोंकी स्थितिमें पड़े रहनेसे यहाँकी गुलामी मिटानेकी कोशिश करना क्या बेहतर नहीं है? विदेशोंमें हमारे यहाँके मज़दूर और बड़े गायकवाड़ महाराजा दोनोंकी हालत बराबर है। असी दशामें पड़नेके बजाय यहीं रहें तो क्या बुरा है? और अुन्हें यहाँ रखनेके लिअे भी आपकी ही अुन्नति होना ज़रूरी है। अगर आप यह समझ लें कि सारी अुन्नतिकी कुंजी ही स्त्री की अुन्नतिमें है, तो हमने पहला अध्याय पूरा कर लिया। अिस अुन्नतिके रास्ते लगाये बिना मैं आपको नहीं छोड़ूँगा। आप मुझे छोड़ना चाहेंगी, तो भी मैं नहीं छोड़ूँगा। मुझे तो अेक तहसील द्वारा सारे देशको पदार्थपाठ सिखाना है। अिसीलिअे मैं अभी तक यहाँ अपनी छावनियाँ डाले हुअे बैठा हूँ। अिन छावनियोंके नायक त्यागी मनुष्य हैं। वे सेवाके लिअे सब कुछ अर्पण कर चुके हैं। आप अिनका पूरी तरह अुपयोग कर लीजिये। अगर रविशंकर और मोहनलाल पंड्या जैसोंको आपके बीचमें रख कर भी मैं आपको अुन्नतिका शौक न लगा सकूँ, तो अक्षर-ज्ञानसे आपको कोअी फ़ायदा नहीं हो सकता। अगर आप सीखना चाहें, तो अिन लोगोंकी संगतिसे ही बहुत कुछ सीख सकती हैं। मुझे तो आज बड़ा असंतोष है कि मेरे हीरे जैसे साथियोंका पूरा अुपयोग यहाँ नहीं होता। यह डर भी बना रहता है कि कहीं ये रत्न मिट्टीमें न मिल जायँ। अिनसे अपनी कुरीतियाँ मिटाना सीखिये और अपनी संतानको सुधारिये। आपको अपने पशुओंकी संतानकी कोअी परवाह नहीं है। गोपालन आप जानती नहीं और आपकी भैंसें भी कद्दावर और मन-मन भर दूध देनेवाली नहीं दिखाअी देतीं; और फसलकी संतान अर्थात् खेतीकी पैदावारकी तो आपको कुछ भी परवाह नहीं। किसान गँवार समझा जाता है। सौ सौ बीघा ज़मीन जोतनेपर भी किसान दरिद्रीका दरिद्री ही बना रहता है। कौनसी फसल पैदा की जाय, कैसे बीज बोये जायँ, और खेतीका हिसाब कैसे रखा जाय, अिनमेंसे अेक भी बातका किसानको पता नहीं होता। वह अपना अनाज बेच देता है और फिर बनियेके यहाँसे खरीदकर लाता है, अपनी रूअी बेचकर विलायती कपड़ा या मिलका कपड़ा खरीदता है, और बेचने और खरीदनेमें दोनों तरफ़से नुकसान अुठाता है।

आप तो शक्तिरूप हैं

आप जब तक ये सब बातें न समझेंगी, तब तक अिस तहसीलमें मेरा चक्कर काटना बेकार है। मुझे आपकी दशाका विचार करके नींद नहीं आती।

मुझे तो आपको आपकी ही ज्वारकी रोटी खिलानी है और आपकी ही कपासकी खादी पहनानी है। जिन बहनोंको खेतोंमें कपासके डंठलोंमें काम करना है, अुनका बारीक साड़ीसे कैसे काम चल सकता है? अुन्हें तो मनभर कपास समाये, अैसी मोटी ओढ़नी ही चाहिये। अिन सब बातोंकी शुरुआत भी आप ही कर सकती हैं। आप यह क्यों मानती हैं कि आप अबला हैं? आप तो शक्तिरूप हैं। अपनी माताके बिना कौन पुरुष पृथ्वी पर पैदा हुआ है? आप अपनी दीनता मिटाअिये। आपकी दीन स्थिति मैं जानता हूँ। जितनी आप जानती हैं, अुतनी मैं भी जानता हूँ। तलाक देने पर आपकी क्या दशा होती है, यह मैं जानता हूँ। बारडोलीसे बाहर आपकी अिज्ज़त बढ़ी है। देश-विदेशमें आपकी कीर्ति फैली है, क्योंकि आपने अपनी मुश्किलें होने पर भी, अपनी दीन दशाके बावजूद, बहादुरी दिखाअी है। यही बहादुरी यदि आप भीतरी सुधार करनेमें दिखायें, तो आपकी दीन दशा अपने आप मिट जायगी। और अिस सारे सुधारकी बुनियाद यह है कि आप अपना पैदा किया हुआ अन्न काममें लीजिये और खेतकी रूअी पींज कर और कात कर बुनने लग जाअिये। आप खेतोंमें काम करनेवाली बहनोंको कातने और पींजनेका आलस्य क्यों हो? मेरी लड़कीको पींजना आता है, तो आपको क्यों नहीं आ सकता? आप पींजना सीखनेको तैयार हो जायँ, तो मैं अपनी लड़कीको पींजना सिखानेके लिअे भेजनेको तैयार हूँ। कैसे भी हो आने वाली फसल पर तो मैं कुछ गाँव अैसे देखना चाहता हूँ, जिनमें विदेशी सूतका अेक तार भी न हो, जिनका अेक मुक़दमा भी अदालतमें न जाता हो, जिनमें जरा भी फूट न हो, स्त्रियोंको कष्ट न हो, अेक भी बाल-विवाह और अेक भी विवाह-भोज या मृत्यु-भोज न होता हो। यह स्थिति पैदा करनेमें आप बहनें पूरी तरह मदद दीजिये।

और खर्च करनेके बाद बिलकुल तैयार हो चुकी फ़सल अेक ही रातमें नष्ट हो गअी और मुँहमें आया हुआ कौर दैवने छीन लिया! बेचारे किसान कपास और तम्बाकूके जले हुअे खेतोंमें जाकर फूट फूटकर रोते हैं।

पिछली बार अुन्होंने बाढ़-संकटसे अुबरकर तुरन्त ही फिरसे खेती और मेहनत-मज़दूरी करके जितनी पैदावार हो सकती थी अुतनी की और सरकारका तमाम लगान भी अदा किया। दुर्भाग्यसे अिस बार तो दूसरी फ़सल पैदा होनेकी मौसम भी नहीं है। वर्ना अिन बहादुर और मेहनती किसानोंको अितना ज्यादा दुःख महसूस न होता। अिस वक्त अुनकी सबसे बड़ी परेशानी यह है कि अगली फसल तक जीना कैसे। अिज्ज़तके खयालसे वे किसीके सामने हाथ नहीं पसार सकते और क़र्ज करके पैदा की हुअी फ़सल भी जाती रही।

अिस बार ज़मीनका लगान लेनेका विचार करना किसानके खूनकी आख़िरी बूँद चूस लेनेके समान हो जायगा। मुझे आशा है कि अिस बार सरकार गुजरातके किसानोंके साथ अुदारतासे काम लेगी। लगानका क़ानून और अुसके नियम मुर्देका खून चूसनेवाले हैं। अिन नियमोंके अनुसार तो कोअी पैदावार न हुअी हो, तो घासका ही अन्दाज़ लगाकर किसानोंसे लगान लिया जा सकता है। लेकिन अिस बारकी भयंकर विपत्तिको देखते हुअे अगर सरकारने किसानको पूरी राहत न दी, तो किसानके लिअे जीने और मरनेके बीच चुनाव करनेका सवाल पैदा हो जायगा। ठंढसे फसलको कितना नुक़सान हुआ है, सरकार अिसकी जाँच कर रही है। यह जाँच पूरी हो जानेके बाद लगान और दूसरी बाकी वसूल की जाय या नहीं, अिसके हुक्म जारी होंगे। सरकारने अिस आशयका घोषणापत्र प्रकाशित किया है, अिसलिअे फिलहाल तो किसान किस्त जमा करानेके भयसे छूट गये हैं।

गुजरातके किसानोंको मेरी सलाह है कि कैसी भी आफ़तमें वे हिम्मत न हारें। अीश्वरको हमारी परीक्षा लेनी होगी, यह समझकर अुन्हें सावधानीसे किसी भी तरह अगली फसल तक टिके रहनेका प्रयत्न करना चाहिये।

नवजीवन, १०-२-१९२९

पाँचवीं काठियावाड़ राजनैतिक परिषद् – १

[ता. ३०–३१ मार्च तथा १ अप्रैल १९२९ को मोरबीमें हुअी पाँचवीं काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्के अध्यक्षपदसे दिया हुआ भाषण।]

*　　　*　　　*

परिषदकी मर्यादा

वर्तमान परिस्थितिका विचार करके चार वर्षके अनुभवके बाद पिछले साल हमने परिषदमें देशी राज्यों या राजाओंके सम्बंधमें व्यक्तिगत आलोचना न करनेकी परिषदकी मर्यादा स्वेच्छासे कायम की है। यह मर्यादा कितनी ही कड़ी मालूम होती हो, तो भी मौजूदा संयोगोंमें अुसका अुल्लंघन न करनेमें ही परिषदकी शोभा है।

देशी राज्योंकी हालत

देशी राज्योंकी स्थिति बेढंगी और दुःखदायक है। दुनियामें अैसी विचित्र संस्थाअें और कहीं नहीं हैं। राज्य कहलाने पर भी अिन संस्थाओंकी पराधीनताकी कोअी हद नहीं। अकेले काठियावाड़में ही छोटे बड़े अनेक राज्य हैं। अुन सब पर साम्राज्यकी तरफ़से अेक चौकीदार रखा गया है। अुसकी नज़रसे कोअी चीज़ छिपी नहीं रह सकती। अुसकी अिच्छाके अनुकूल चलनेमें राज्यकी सुरक्षितता समझी जाती है और समझदारी मानी जाती है। किसी समय साम्राज्यकी हुकूमत जमानेके लिअे देश-कालके अनुसार देशी राज्योंके साथ कुछ भी समझौते क्यों न हुअे हों, लेकिन अब अुनपर आधार रखना डूबतेका तिनकेको पकड़ने जैसा ही है। अिन पुरानी संधियोंके बारीक अर्थ समझने या समझानेकी खातिर लाखों रुपये खर्च करके धाराशास्त्रियोंको रखना पड़ता है, यही अिन राज्योंकी दुःखद स्थितिका सूचक है। साम्राज्यकी सत्ताके साथ मित्रताका दावा करना छोटे मुँह बड़ी बात करना है। शेर और गीदड़की दोस्ती भी कहीं सुनी है? अिस देशसे कअी देशी राजा हर साल युरोप-यात्रा पर जाते हैं। अिनमें से वहाँ किसी भी राजाका किसी भी देशमें स्वागत हुआ हो या अुसे आदर मिला हो, तो बताअिये? अिन राजाओंमें से कुछके राज्योंका क्षेत्रफल अफ़गानिस्तानसे कम नहीं है, परन्तु जब अफ़गानोंके अमीरने गत वर्ष युरोपकी यात्रा की, तब अुसका हर देशमें स्वागत हुआ और अुससे मित्रता करनेकी सबकी अिच्छा हुअी। अिसका क्या कारण है? सही बात तो यह है कि मौजूदा संयोगोंमें देशी राज्योंकी सलामती नहीं है। राजा महाराजा भयभीत दशामें रहते हैं, क्योंकि अिन

राज्योंकी स्थिति स्वाभाविक नहीं है। प्रजाके सुखसे सुखी और दुःखसे दुःखी, यह शासनसूत्र कहीं भी पाला नहीं जाता। अिस कृत्रिम दशामें पड़े हुअे राज्योंको अपनी प्रजा पर सितम ढानेका अमर्यादित अधिकार ज़रूर मिला हुआ है। मगर रैयतको सताकर मनमाने कर वसूल करके राज्यका खजाना भरने या फाँसीकी सज़ा देनेका अधिकार होनेमें सची राज्यसत्ता नहीं है। दुनियाकी तमाम ताक़तोंका सामना करके प्रजाकी रक्षा करनेमें ही सची राज्यसत्ता है। वह किसी भी देशी राज्यके पास या तमाम राज्य अेकत्र हो जायँ, तो अुनके पास भी नहीं है। लम्बे अरसेकी पराधीनताके कारण राज्यधर्म लुप्त हो गया है। अंधीधुंधी और अराजकता व्यापक हो गअी है। प्रजा निष्प्राण, निस्तेज और कंगाल बन गअी है। अिस दुःखदायक स्थितिके लिअे हमारे राजा महाराजा ही जिम्मेदार हैं, यह मानना भूल है। साम्राज्यके महान वृक्षकी ज़बरदस्त छायामें छोटे मोटे राज्योंके कोमल पौदे मुरझा गये हैं, चेतनाहीन हो गये हैं और लगभग जड़वत् बन गये हैं। देशी राज्योंमें दिखाअी देनेवाली अराजकता तो दर असल साम्राज्यमें फैली हुअी अराजकताकी परछाअी है।

राजा क्या कर सकते हैं?

अिस त्रिशंकु दशामें भी राजा चाहें तो बहुत कुछ कर सकते हैं। वे प्रजाको ज़िम्मेदार हुकूमत देकर निर्बल राज्योंको सबल बनायें। साम्राज्यके संरक्षणमें रहनेके बनिस्बत प्रजाका प्रेम सम्पादन करनेमें राज्यकी विशेष सुरक्षा है। अिस क्रान्तिकालमें निरंकुश शासनके दिन लद गये हैं। सारा हिन्दुस्तान अेक देश है। अिसमें ब्रिटिश हिन्दुस्तानके लिअे अेक और देशी राज्योंके लिअे दूसरी अनेक प्रकारकी नीति, अिस तरह अलग विभाग करना असंभव है। सारे देशकी प्रजा अेक होने पर भी आज तो छोटे मोटे हरअेक राज्यकी नीति अलग अलग है, अेजेंसीकी अलग है और ब्रिटिश भारतकी अलग है। सारे देशकी जनताके रीत-रिवाज अेक-से हैं। व्यापार-धंधेका सम्बंध, संस्कृति और दूसरा व्यवहार देखते हुअे देशकी राज्य-व्यवस्था अेक ढंगकी ही हो सकती है। अलग अलग व्यवस्था क़ायम नहीं रह सकेगी। ब्रिटिश भारतकी जनता स्वराज्यके लिअे अधीर हो अुठी है। जिस जनताको स्वतंत्रता प्राप्त करनेकी तीव्र अिच्छा हो गअी है, अुसकी प्रगतिको कोअी नहीं रोक सकेगा। यह स्वराज्य या स्वतंत्रता किस प्रकारकी हो सकती है, अिस सम्बंधमें कितने ही मतभेद क्यों न हों, मगर यह तो निर्विवाद है कि ब्रिटिश भारतकी मौजूदा राज्यपद्धतिमें महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुअे बिना नहीं रहेंगे। अुनका अप्रत्यक्ष असर देशी राज्योंकी प्रजा पर भी होना ही चाहिये। अैसी स्थितिमें देशी राज्य सिर्फ़ वफ़ादारीके ढोल बजा कर बैठे रहेंगे, तो बड़ी भूल करेंगे और अन्तमें अैसा समय आयेगा कि जो समझाने पर नहीं

किया, वह अुन्हें हारने पर करना पड़ेगा। जिस साम्राज्यमें खुद सम्राटकी सत्ता मर्यादित है, अुस साम्राज्यमें निरंकुश सत्ता भोगनेकी आशा रखना वफ़ादारी तो हरगिज़ नहीं है। सच्ची वफ़ादारी तो सम्राटका अनुकरण करनेमें है। जिन राज्योंने समयका विचार करके अपने राज्योंमें लोकप्रिय संस्थाअें स्थापित करना शुरू कर दिया है, अुन्होंने कुछ खोया नहीं। प्रजाका अविश्वास करनेके लिअे देशी राज्योंके पास कोअी भी कारण नहीं है। अिस देशकी जनता स्वभावसे ही विश्वासपात्र है और अुदार है। राजकोटके ठाकुर साहबने अिस दिशामें थोड़ीसी शुरुआत की, तो तुरंत ही हमारी राजनैतिक परिषदने भावनगरमें अुन्हें मानपत्र देकर अपनी कृतज्ञताकी भावना प्रदर्शित की। अविश्वास भयका कारण है। प्रजाका विश्वास राज्यकी निर्भयताकी निशानी है। अितना याद रखना चाहिये कि राज्य प्रजाके लिअे है, प्रजा राज्यके लिअे नहीं है।

पुनर्रचनामें देशी राज्योंका स्थान

अिस देशके राज्यतंत्रकी पुनर्रचनाका दिन नज़दीक आता जा रहा है। अुसके अनुकूल बननेमें ही देशी राज्योंकी शोभा और सुरक्षितता है। पुरानी पद्धतिमें तबदीली करनी ही पड़ेगी। अिस पुनर्रचनामें देशी राज्योंका स्थान कहाँ है और अुनकी प्रचलित शासन-प्रणालीमें कैसे फेरबदल होने चाहियें, अिस बारेमें अिस देशके सब दलोंके प्रमुख नेताओंने मिलकर जो योजना तैयार कर ली है, अुस पर राष्ट्रीय कांग्रेसकी मुहर लग गअी है। अिस योजनाके तैयार करनेवालोंमें ज़्यादातर देशी राज्योंके पक्षपाती हैं। अुनमेंसे कुछ तो बड़े बड़े राजा महाराजाओंके साथ स्नेह संबंध रखनेवाले हैं। देशी राज्योंके कोअी विरोधी तो हैं ही नहीं। अिस योजनासे अलग रहने या अैसे अविश्वासकी नजरसे देखनेके बजाय अुस पर गंभीरतासे विचार करना चाहिये। अुसमें अुचित फेरबदल करवाने हों, तो अुनकी गुंजाअिश रखी गअी है; और ये फेरबदल योजना तैयार करनेवालोंके साथ सलाह मशविरा करके किये जा सकते हैं। मेरी तुच्छ बुद्धिमें यह सीधा रास्ता छोड़कर बाहरकी मदद या हस्तक्षेप चाहनेमें देशी राज्य सबल बननेके बजाय और भी निर्बल बन जायँगे। स्वतंत्र हिन्दुस्तानसे देशी राज्योंको डरनेका कोअी कारण नहीं है। अुसीसे देशी राज्य बलवान बनेंगे। देशी राज्यों और हिन्दुस्तानकी प्रजाका हित परस्पर विरोधी नहीं है। अेकके बलमें दूसरेका बल समाया हुआ है।

राजा मालिक नहीं

राज्यके खजानेके राजा संरक्षक हैं, मालिक नहीं। यह रुपया ज़्यादातर प्रजाकी भलाअीके लिअे खर्च किया जाना चाहिये। राज्य-वैभवको शोभा देनेवाला खर्च भले ही हो, मगर अुसकी मर्यादा होनी चाहिये। राजाके निजी खर्चकी

वार्षिक रक़म और अुसकी व्याख्या निश्चित होनी चाहिये। साथ ही अुस पर अीमानदारीसे अमल होना चाहिये। आमदनी बढ़ानेमें ही राज्यकी समृद्धि नहीं है। कुछ राज्योंकी पूँजी अितनी ज्यादा बढ़ गअी है कि पूँजीके ब्याजसे ही राज्यका खर्च अच्छी तरह चल सकता है। जहाँ अैसी स्थिति हो, वहाँ रैयतका बोझा कम होना चाहिये। कुछ राजा विदेशोंमें खानगी जायदाद बनाने लगे हैं। राजाकी निजी सम्पत्तिकी भी मर्यादा मुक़र्रर होनी चाहिये।

युरोपके सफ़रका शौक

आजकल राजाओंमें युरोपके सफ़रका शौक बढ़ चला है। निरंकुश शासनके शौकीनोंको अपना राज्य छोड़कर अेक दिन भी बाहर जानेका कोअी हक़ नहीं है। अिससे ग़रीब प्रजाके धनकी बड़ी बरबादी होती है और राजाओंको निजी लाभ कुछ भी नहीं होता। अुल्टे वे कुछ अैसी बुराअियाँ ले कर आते हैं कि दुनियामें हँसीके पात्र बनते हैं। कुछ राजा तो अैसे हैं जिन्हें अिस देशमें रहना बिलकुल माफिक नहीं आता और प्रसंगवश अिस देशमें आना पड़े, तो भी वे अैसे संयोगोंमें आते हैं जिनसे गृह-कलह होता है और खुद राजरानीको शर्म छोड़ कर दिल्लीके राज-सिंहासन तक राजाके कुलक्षणोंकी शिकायत करने दौड़ना पड़ता है। अैसे राजाओंको अमर्यादित भोगविलास करना हो तो राजगद्दी छोड़नी ही चाहिये। राजाओंको अपने कुलकी अिज्ज़तकी खातिर भी यह विदेशोंमें भटकनेका रिवाज़ अेकदम बन्द कर देना चाहिये।

ज़मीनका लगान

सरकारकी निर्दय नीतिने ब्रिटिश भारतके किसानोंकी बरबादी कर दी है। देशी राज्योंने अुसकी नक़ल करते हुअे अुसमें संशोधन करके अुसे और भी निर्दय बना दिया है। परिणाम स्वरूप काठियावाड़के किसानोंकी विशेष दुर्दशा हो गअी है। लगानकी पद्धति निश्चित भी नहीं है। किसी जगह फी बीघाके हिसाबसे लगान नक़द लिया जाता है, तो कहीं पैदावारका हिस्सा लिया जाता है। अिसमें भी राज्यको लाभ हो तो बीघेके हिसाबसे लगान नक़द ले लेता है, नहीं तो पैदावारका हिस्सा माँगता है। पैदावारका हिस्सा वसूल करनेमें किसानोंको जो परेशानी अुठानी पड़ती है अुसकी कोअी हद नहीं। लगानके अलावा चौथाअी, 'हकसाअी' और अैसे ही तरह तरहके करोंके बोझ अुन पर होते हैं। किसानके लिअे अनिवार्य नियम होते हैं कि वह अपने खेतमें क्या बोये, कितना बोये। अपनी फसलको कहाँ पेरवाये और कहाँ बेचे। सारांश यह है कि किसानकी मज़दूरी बेकार जाती है। हजारों किसान किसान न रह कर मज़दूर बनते जा रहे हैं और मज़दूरी भी न मिलनेके कारण अुन्हें

काठियावाड़ छोड़ कर दूर दूरके प्रदेशोंमें भागना पड़ता है। किसी समय यथेच्छ दूध, दही और पेट भर कर रोटियाँ खानेवाले किसानोंको पानीमें भिगोअी हुअी सूखी रोटियाँ भी पेट भर कर खानेको नहीं मिलतीं। बेचारा किसान निराशामें और भूखों मरनेकी चिन्तामें ही किसी तरह जीता है। अुसके पेटमें चूहे कूदते रहते हैं। किसानोंकी संतान कमजोर होती जा रही है और अुनके चेहरे पर नूर नहीं है। विदेशी राज्यका दृष्टिकोण अलग होता है, अुसका कारबार खर्चीला होता है, अुसे अपने देशके आदमियोंको बड़े बड़े वेतन देकर पालना होता है, भारी खर्च करके बड़ी सेना रखनी पड़ती है, अिसलिअे वह कुछ भी कर सकता है। परन्तु देशी राज्योंके लिअे अुसकी नकल करनेका कोअी कारण नहीं है। अुन्हें सेना नहीं रखनी पड़ती; रखनी हो तो भी कोअी रखने नहीं देगा। राज्यकी आमदनीका दारोमदार ज्यादातर किसानों पर रहता है। किसान ही राज्यके पालनकर्ता हैं। अैसे किसानोंकी बरबादी करनेवाला राज्य जाने अनजाने राज्यकी अिमारतकी जड़ें खोदता है। किसानकी लगान देनेकी शक्तिको ध्यानमें रखकर लगान ज़रूर लिया जा सकता है, मगर अुसका अुपयोग किसानकी भलाअीके लिअे ही होना चाहिये। यह दुःखकी बात है कि आज अिन दोनों नियमोंका चारों ओरसे अुल्लंघन हो रहा है।

रेलवे, सड़क और चुंगी

काठियावाड़की रेलोंकी स्थिति वेश्या जैसी है। अुनका असली मालिक कोअी नहीं और भोगनेवाले अनेक हैं। अनजान मुसाफिर अिस देशमें रेलका सफ़र करने निकले, तो बिना पूछे यहाँकी रेलमें पैर रखते ही जान सकता है कि काठियावाड़ कहाँसे शुरू होता है। अुसकी अैसी दुर्दशा है। मुसाफिरोंके लिअे कोअी भी सुविधा नहीं है। अलग अलग हिस्सेदार राज्य अुसके हिस्से करके अलग अलग प्रबन्ध करते हैं। अिसका परिणाम यह हुआ है कि मुसाफिरों और साथ ही व्यापारियोंको कअी तरहकी कठिनाअियाँ और असुविधाअें अुठानी पड़ती हैं। अिससे काठियावाड़के व्यापारको बड़ा नुक़सान होता है। यह समझकर कि यह रेलवे सार्वजनिक हितके लिअे बनाअी जा रही है, गैर-हिस्सेदार राज्योंने अिसे अपनी हदमेंसे ले जानेकी सुविधा दी थी। अुन्हें यह पूछने या देखनेका भी हक़ नहीं रहा कि अिस रेलवेका अुपयोग लोक कल्याणके लिअे होता है या नहीं। प्रजाकी तो अिस प्रबन्धमें कोअी आवाज़ ही नहीं। अिसकी मौजूदा व्यवस्था सिर्फ़ तात्कालिक आमदनी बढ़ानेके स्वार्थी खयालसे ही होती है। अुसमें सुधार करनेकी खास ज़रूरत है। अिसमें यदि हिस्सेदार राज्योंका, गैर-हिस्सेदार राज्योंका और साथ ही प्रजाकी आवाज़वाला और तीनोंके हितोंकी रक्षा करनेवाला तीनोंके प्रतिनिधियोंका अेक बोर्ड मुक़र्रर हो और अुसका

स्वतंत्र अध्यक्ष नियुक्त करके समान व्यवस्था कायम हो जाय, तो व्यापार-धन्धा बढ़े, प्रजाको सुविधा मिले, आज जितनी आमदनी होती है अुसमें अच्छी वृद्धि हो और हिस्सेदार राज्योंको कोअी नुकसान न हो।

बड़ी सड़कें (ट्रंकरोड्स) जबसे देशी राज्योंको सौंपी गअी हैं, तबसे अुनका बुरा हाल होने लगा है। आज तो अुन्हें नामके ही रास्ते कहा जा सकता है। अिससे तो ये रास्ते न हों और पहलेकी तरह गाड़ीके रास्ते हों, तो प्रजाको कम तकलीफ़ हो।

और हरअेक राज्यने अपनी अपनी सरहद पर अिच्छानुसार चुंगीकी चौकियाँ लगा दी हैं। अिससे प्रजाको अनेक प्रकारके कष्ट भोगने पड़ते हैं और व्यापारका नाश हो रहा है। राजा लोग चाहें तो अिस स्थितिको सुधार सकते हैं।

खादी

ब्रिटिश नीतिका सबसे बड़ा पाप अिस देशके तमाम गृहअुद्योगोंको बुद्धि-पूर्वक नष्ट कर देनेमें है। अंग्रेजी हुकूमतके जमनेसे पहले यह देश अपनी ज़रूरतका तमाम कपड़ा बनानेके सिवाय लाखों रुपयेका कपड़ा विदेशोंको भेजता था। अुस वक्त अिस देशमें अेक भी कारखाना या मिल नहीं थी। यह सब कपड़ा हाथ-कते सूतका और हाथ-बुना होता था। अिस अुद्योगसे करोड़ों आदमी घर बैठे बिना पूँजी लगाये अपनी रोज़ी कमा सकते थे। अिन सबकी रोज़ी मारी गअी है। अुनके लिअे और कोअी अैसा धन्धा नहीं है, जिसमें अितने अधिक मनुष्य काममें लगाये जा सकते हों। देशी राज्य चाहते तो समय पर अपनी प्रजाको अिस दुःखसे बचा सकते थे। काठियावाड़ खादीका सुंदर क्षेत्र है। जितनी चाहिये अुतनी कपास यहाँ पैदा होती है। हर साल खेतीका मौसम खतम होने पर हज़ारों आदमियोंको मज़दूरीके लिअे काठियावाड़ छोड़ना पड़ता है। अिस प्रकार हर तरहकी अनुकूलता है। काठियावाड़की हदमें विदेशी कपड़ेका व्यापार बंद करके काठियावाड़का लाखों रुपया बचाया जा सकता है। राज्यके अपने हितके लिअे भी खादीको राजमहलोंमें और राज्यकी संस्थाओंमें प्रतिष्ठा मिलनी चाहिये। प्रजाकी आर्थिक अुन्नतिका अिसके जैसा अुत्तम साधन और कोअी नहीं है।

शराब-बन्दी

अिस पवित्र देशमें रहनेवाली हिन्दू और मुसल्मान दोनों जातियोंके धर्ममें शराब पीनेकी मनाही की गअी है। अैसी हालतमें राज्यकी आमदनी बढ़ानेके लिअे विदेशी हुकूमतके आबकारी विभागकी नकल करके शराबका व्यापार और प्रचार करना महापाप है। देशी राज्योंको यह शोभा नहीं देता। काठियावाड़में

किसी किसी रियासतने शराब-बन्दीकी पहल करके सुन्दर अुदाहरण सामने रख दिया है। अुसका अनुकरण करके तमाम काठियावाड़मे से अिस संक्रामक रोगका जहाँ तक हो सके, जल्दी नाश करना चाहिये।

अस्पृश्यता

अछूतोंको काठियावाड़में विशेष कष्ट है। रेलगाड़ीमें सफ़र करनेमें अुन्हें बहुत तकलीफ़ अुठानी पड़ती है। निर्बलोंकी रक्षा करना राज्यका धर्म है। सबल तो अपनी रक्षा आप कर सकते हैं। परन्तु कमजोरकी रक्षा राज्य न करे तो और कौन करेगा? राज्यकी सार्वजनिक पाठशालाओंमें पढ़ने, सार्वजनिक कुओं-तालाबोंका पानी अिस्तेमाल करने और सार्वजनिक मकानोंमें विश्राम लेनेका हक़ अछूतोंको मिलना चाहिये। अैसा बन्दोबस्त होना चाहिये कि राजदरबारमें वे अछूत न माने जायँ। राजा लोग चाहें तो अिन दुःखियोंका दुःख आसानीसे मिटा सकते हैं।

प्रजाकी हालत

राज्योंके दोष बहुतसे होंगे। मगर अुनके दोषोंकी तरफ़ देखते रहनेसे प्रजाका कल्याण नहीं हो जायगा। जो प्रजा जुल्म सह लेती है, वह राज्यको ज़ालिम बनानेमें सहायक होती है। जुल्मका विरोध करना प्रजाका धर्म है। जो प्रजा अपना धर्म भूल जाती है, अुसे राज्यके दोष देखनेका अधिकार कम है। अत्याचारी राजाको गद्दीसे अुतार देनेका प्रजाको हक़ है। समर्थ राजाओंके विरुद्ध भी सबल प्रजाके अिस हक़का अुपयोग करनेकी बात अितिहास बताता है। बलवान प्रजाके सामने राज्यसे कुछ नहीं हो सकता। मगर जहाँ प्रजा जाग्रत और निर्भय नहीं, वहाँ अत्यन्त संयम और धीरजकी ज़रूरत है। अधीर और अुतावले बननेसे प्रजाको लाभ होनेके बजाय हानि होनेकी संभावना है।

देशी राज्योंमें लोकमतका नाम निशान भी नहीं है। अिस स्थितिके लिअे कोअी राजाओंको जिम्मेदार माने, कोअी प्रजाको जिम्मेदार समझे या कोअी वस्तुस्थितिको ज़िम्मेदार माने, परन्तु अितनी बात तो निश्चित ही है कि प्रजामें अपना दुखड़ा रोनेकी भी ताक़त नहीं रही है। प्रजाको जगानेवाला हो तो अुसे जाग्रत होनेमें देर नहीं लगती, और जाग्रत प्रजाको राजा पहचाने बिना नहीं रहेंगे।

सौराष्ट्रकी आजकी ज़रूरतें

सौराष्ट्रको आज मूक और सच्चे सेवकोंकी ज़रूरत है। हरअेक प्रजाकी अुन्नतिका आधार ज्यादातर अुसके शिक्षित वर्ग पर है। काठियावाड़का शिक्षित वर्ग कूटनीतिज्ञके रूपमें मशहूर है। अुसकी ज़बानमें अमृत भरा होता है, मगर हृदयमें क्या है सो तो भगवान भी नहीं जानते। दिल गीदड़का हो तो भी मुँह अुसे शेरका-सा बनाना आता है। 'खुशामदमें ही आमद है', अिस सूत्रको

अुसने रट रखा है और पूरी तरह अमलमें लाना सीखा है। "बापू, आपके जैसा दयालु राजा न हुआ है और न होगा" — अैसा कहनेवाले वर्गने राजाके कानोंको सच्ची बात सुननेकी आदत ही नहीं डाली। अमलमें पहलेके कम पढ़े हुअे राजकाज चलानेवाले वर्गमें भले ही और कुछ भी बुराअियाँ हों, परन्तु वह प्रजाको जुल्मसे बचा सकता था और अुसमें राजाको मिठाससे सच्ची बात कहनेकी हिम्मत भी थी। यह वर्ग सेवाधर्मसे राज्यकी नौकरी करे, तो काठियावाड़की बड़ी सेवा कर सकता है।

जो नौकरीमें नहीं हैं अुन्हें अनुकूलता है, परन्तु अिच्छा नहीं। कुछ तो काठियावाड़के वातावरणसे घबराकर बाहर निकल जाते हैं। काठियावाड़का अर्थ है, यहाँके गाँवोंमें रहनेवाली प्रजा। अुस प्रजामें किसने प्रवेश किया है? अुसकी क्या दशा हो गअी है? अुसकी प्राणाग्नि बुझ गअी है। अुसके बुझे हुअे दिलोंमें चिनगारी पैदा करनेकी ज़रूरत है। वह खाली फूँक मारनेसे नहीं जलेगी। वह तो अुसकी हड्डियोंके साथ काठियावाड़के स्वदेशप्रेमसे जलनेवाले, स्वार्थत्यागी, साधुवृत्तिवाले नौजवानोंकी हड्डियाँ घिसनेसे जलेगी। कड़ी कलम या सख्त ज़बानसे यह काम नहीं होगा। सत्तामें सयानापन नहीं होता। अुसे गुस्सा करते देर नहीं लगती। और वह गुस्सा निर्दोष प्रजा पर अुतरे, तो अुसका विपरीत परिणाम होता है। आजकी परिस्थितिमें परिषदका मुख्य कार्य प्रजामें प्राण भरनेका अुपाय करना ही होना चाहिये। बहुतसे सच्चे स्वयंसेवक प्रजामें फैल जायँ और प्रजाके साथ ओतप्रोत हो जायँ तो ही यह काम हो सकता है। आज अिस परिषद और प्रजाके बीच सच्चा संबंध नहीं है। वह कायम करना चाहिये। वह संबंध चरखेके सिवाय और किसी तरह कायम नहीं हो सकता। यह अनुभव सिद्ध बात मैं आपके सामने पेश करनेका साहस कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि यंत्रबलके तेजसे जो चौंधिया गये हैं, अुन्हें यह बात मानना मुश्किल मालूम होगा। दूसरे देशोंमें जो संयोग और अनुकूलताअें हैं, वे हमारे यहाँ नहीं हैं। पड़ोसीका महल देखकर अपनी झोंपड़ी तोड़ डालनेवाला महल तो बना ही नहीं सकता, झोंपड़ी भी खो बैठता है। चरखेमें कितनी बड़ी दिव्य शक्ति भरी है, अिसका प्रमाण-पत्र हमें हमारे फूलचंदभाअी और अुनके साथियोंसे मिलेगा, जिन्होंने बारडोली तहसीलके वेड़छी गाँवमे और अुसके आसपास बसे हुअे रानीपरज प्रदेशमें अिसका दृश्य देखा है और अनुभव किया है। यह अुनसे पूछिये कि वर्षोंसे व्यसन, भय और भुखमरीकी शिकार बनी हुअी अिस रानीपरज प्रजामें चरखेने कितना परिवर्तन किया है। जिस झोंपड़ीमें चरखा घुस जाता है, वहाँसे शराब और ताड़ीका नाश हो जाता है। चरखा रखनेवाले भयमुक्त हो गये हैं; और अपनी पैदा की हुअी कपास खुद ही लोढ़ने, पींजने, कातने

और बुनने लग जानेके कारण वे अुद्यमी बन गये हैं। अपनी ज़रूरतका तमाम कपड़ा घर बैठे पैदा करने लग जानेके कारण वे कर्ज़से मुक्त हो कर दलिया और रोटी खाने लगे हैं। अिन सैकड़ों कुटुम्बोंको गृहजीवनके मिठासका अब पहली ही बार दर्शन होने लगा है। यह काम करनेमें कितना धीरज, शान्ति और संयम चाहिये, अिसका अुन्होंने अनुभव किया है। वहाँ आज भी बहुतसे स्वयंसेवक कुटुम्बका मोह छोड़कर झोंपड़े-झोंपड़ेमें चरखेका मंत्र फूँकते ही रहते हैं। अैसे काममें देशी राज्योंके साथ टक्कर होना संभव नहीं है। अिसमें राज्यका सहयोग प्राप्त किया जा सके, तो बहुत काम हो सकता है। अिसमें राज्य और प्रजा दोनोंका कल्याण है। बारडोली सत्याग्रहकी लड़ाअीकी अपेक्षा अुसके बाद वहाँ हुअे आत्मशुद्धिके कार्यको मैं ज्यादा अच्छा मानता हूँ। प्रजाको स्वाधीनताकी दिशामें ले जानेवाला सच्चा मार्ग यही है। अिस धाँधलीके ज़मानेमें यह काम पहले तो नीरस लगता है, परन्तु जिसने अेक बार अिसका स्वाद चख लिया है, अुसे अिसके सिवाय और कामोंमें कम रस आता है। सौराष्ट्रके कार्यकर्ताओंके लिअे निराश होनेका कोअी कारण नहीं है। कर्तव्यनिष्ठ पुरुष कभी निराश नहीं होता। जिस भूमिमें अिस कलिकालमें भी संसारका सबसे महान पुरुष अुत्पन्न हुआ है और राक्षसी संहार-शक्तिकी प्रतिस्पर्धासे व्याकुल हुअे जगतको सत्य, शान्ति और प्रेमका नया मंत्र दे रहा है, अुस भूमिमें जन्म लेनेका अभिमान किसे नहीं होगा? यह अीश्वरी संकेत है कि अिसी मार्गमें सौराष्ट्रका और जगतका कल्याण है।

४८
पाँचवीं काठियावाड़ राजनैतिक परिषद – २

[अुपसंहारका भाषण]

जिसने काठियावाड़की प्रजाका, काठियावाड़के राजाओंका, मुतसद्दी वर्गका, किसानोंका और ढेढ़-भंगियोंका प्रेम और विश्वास संपादन किया हो, वही अिस परिषदके अध्यक्ष पदको सुशोभित कर सकता है। मैं अिनमें से अेक भी बातका दावा नहीं कर सकता। परन्तु गांधीजीका हुक्म हुआ कि मैं अध्यक्ष बनना मंजूर कर लूँ; और हुक्म पालन करनेकी बात जहाँ आती है, वहाँ मेरा दावा है कि मेरे जैसा सिपाही और कोअी नहीं होगा। यह नहीं माना जा सकता कि जगतमें जो परिवर्तन हो रहा है, अुसका काठियावाड़के नौजवानों पर असर न पड़े। युवकोंको अिस जमानेमें अपना जीवन कड़वा लगे, अधीरता हो जाय और दौड़नेकी जीमें आये, तो अिसे मैं समझ सकता हूँ। वृद्धोंको काठियावाड़की प्रजाके दोषोंका, अुसकी अशक्तिका पूरा खयाल होता है और कअी मर्यादाओंमें

रह कर काम करनेका भान होता है। अिसमें बड़ी मर्यादा राजा-प्रजाका अविश्वास है। राज्यका यह आग्रह कि गांधीजीकी मौजूदगीमें ही परिषद की जाय और अिस आग्रहको कार्यकर्ताओंको मजबूर होकर मानना पड़े, यह अिस अविश्वासका सबूत है। यह स्थिति दुःखदायक है। अिसमें पड़नेका मुझे अुत्साह ही नहीं हो सकता। मैं यह अभिमान रखनेवाला आदमी हूँ कि स्वतंत्रता जितनी मुझे प्यारी है, अुससे ज्यादा प्यारी शायद ही और किसीको होगी। अिसलिअे यहाँ जैसी बेढंगी परिस्थितिमें अपनी मरजीसे तो मैं हरगिज़ नहीं पड़ूँगा। परंतु जो हमेशा सरल स्थितिमें रहना चाहता है, अुसे दुनियाका अनुभव नहीं है। वह राजा-प्रजाकी स्थितिको नहीं समझता। मुझे खयाल है कि मैं आपका अध्यक्ष बनने पर भी नामका ही अध्यक्ष हूँ। यह खयाल न हो, तो मैं बेवकूफ़ माना जाअूँगा, क्योंकि आगे, पीछे और चारों तरफ़ मुझे मर्यादा ही मर्यादा दिखाअी देती है। मनमें हमेशा यही भावना रही है कि किस तरह काम करनेसे राजा-प्रजाको दुःख न हो, बुज़ुर्ग लोगोंको दुःख न हो, जवानोंको दुःख न हो, और तीन दिनका जागरण करा कर तालियाँ बजवा कर मोरबीके लिअे दुःखकी विरासत न छोड़ जाअूँ।

काठियावाड़को क्या दवा दूँ?

आपने मुझसे बड़ी आशा रखी है, क्योंकि कुछ समय पहले बारडोलीमें थोड़ासा विश्वास और आशा पैदा करनेवाला काम हुआ है। मगर मैं अपने दिलकी बात कहूँ? काठियावाड़में दीया तले अँधेरा है। अगर मैं कुछ सीखा हूँ और आप मानते हैं कि मुझमें कुछ शक्ति है, तो जो व्यक्ति आज काठियावाड़को और हिन्दुस्तानको रास्ता दिखा रहा है, अुसीसे मैं सीखा हूँ और अुसीसे शक्ति प्राप्त की है। मेरे मनमें कहीं भी यह खयाल नहीं है कि बारडोलीमें मेरी शक्तिसे कुछ हुआ है; और अगर यह खयाल कहीं छिपा हो, तो मैं सदा यही चाहता हूँ कि भगवान अुसे निकाल दे। मैं तो अेक निमित्त मात्र था। मेरा और गांधीजीका सम्बन्ध अैसा हो गया है कि अुनके और मेरे विचारमें फ़र्क़ नहीं होता, लेकिन व्यवहारमें तो आकाश-पातालका अन्तर है। अुनके पैरोंमें बैठने लायक़ बननेके लिअे मुझे कितने जन्म लेने पड़ेंगे, वह तो अीश्वर ही जाने। लेकिन मैंने अुनसे जो चीज़ ली है, अुसे बारडोलीके लोगोंके सामने रख दी। मगर वह चीज़ क्या आज काठियावाड़के लोगोंको दी जा सकती है? जिसे त्रिदोषकी व्याधि हो गअी हो, अुसे मिठाअी दी जा सकती है? काठियावाड़को त्रिदोषकी व्याधि है। त्रिदोषवाला मनुष्य कपड़े फाड़ता है, बड़बड़ाता है और अुसे अपनी सुध नहीं रहती। अैसे मनुष्यको मिठाअी दे दें, तो वह मर जाय। समझदार आदमी अैसे रोगीके लिअे दूसरा ही अुपाय ढूँढ़ता है। आपसे सच कहता हूँ कि सार्वजनिक सभाओंमें मंच परसे व्याख्यान देना मुझे नापसन्द

है। बहुत बोलनेसे लाभ नहीं बल्कि हानि होती है। काठियावाड़को आज असली ज़रूरत कम बोलनेकी और ज़रूरी बात बोलना सीखनेकी है। काठियावाड़को ज़हरीले वातावरणकी ज़रूरत नहीं, बल्कि प्रेमका वातावरण पैदा करनेकी ज़रूरत है। जिसे रात-दिन परनिन्दा करनेकी आदत होती है, अुसकी स्थिति दयाजनक हो जाती है। अुसे सुननेवालेकी स्थिति भी दयाजनक हो जाती है। आप मुझे पूछेंगे कि क्या राजा-महाराजा निन्दाके पात्र नहीं हैं? निन्दाका पात्र कौन नहीं है? अब तक अैसा कोअी राज्य दुनियामें नहीं हुआ, जो निन्दाका पात्र न हो। परन्तु निन्दा करनेसे क्या होता है? आपके कुछ दुःख तो अैसे हैं, जिन्हें सार्वजनिक रूपसे कहनेकी आपमें ताकत भी नहीं है। किसानों पर अनेक जुल्म होते होंगे, फिर भी वे यहाँ आकर अुन्हें जाहिर नहीं कर सकते। खुले तौर पर तो यही कहेंगे कि 'बापूका राज बहुत अच्छा है।' अैसी हालतमें परिषद करने या देशी राज्यमें घुसकर काम करनेमें कितनी ज्यादा मुश्किलें आती हैं! अिन मुश्किलोंको हम अिस वक्त बढ़ायें या घटायें? क्या आज काठियावाड़में अैसे राज्य नहीं हैं, जहाँ हमें ठहरनेको जगह पाना भी मुश्किल हो? अैसी स्थितिमें गला फाड़-फाड़कर चिल्लाना हो और यह कहलवाना हो कि राजाको खूब सुनाअी, तो आपको मेरा सुझाव है कि ब्रिटिश भारतमें आ जाअिये, बम्बअी चले जाअिये और वीरमगाम तो पास ही है, वहाँ चले जाअिये। वहाँ दस-पाँच दिन जितना चाहिये बोल लीजिये। मगर व्यर्थ ज्यादा बोलनेसे आखिरमें आपको लकवा हो जायगा।

विद्रोहका स्वरूप

नौ वर्षमें हमने पाँच परिषदें की। अितनेसे हम समझ गये होंगे कि परिषदकी मर्यादा कितनी है, अुससे लाभ कितना होता है और यहाँ काम किस तरह करना है? आज हम बिना खतरेवाले प्रस्ताव पास करते हैं। बहुतसे प्रस्तावोंमें राजाओंसे प्रार्थना की जाती है, क्योंकि हमें कुछ करना-धरना नहीं है। लेकिन राजाओंकी दृष्टिमें परिषदकी प्रतिष्ठा नहीं है, राजा हमें दाद देनेको तैयार नहीं हैं। अिसका कारण यह नहीं कि राजा दुष्ट हैं। सच्चा कारण यह है कि वे हमारे प्रस्तावोंके पीछे कोअी गम्भीरता या बल नहीं देखते। राजाओंसे काम कराना हो, तो या तो परिषदका राजाओंके प्रति प्रेम होना चाहिये या परिषदमें राजाओंको गद्दीसे अुतार देनेकी शक्ति होनी चाहिये। अगर हमारे पास अिन दोनोंमें से अेक भी चीज़ न हो, तो हमारी दशा वर्णसंकरकी-सी हो जाती है। राजाओंको यह विश्वास होना चाहिये कि यह आदमी जो माँग लेकर आया है, अुसे स्वीकार नहीं करेंगे, अिस आदमीको वापस भेज देंगे, तो प्रजाको आघात पहुँचेगा, अिस

लगना चाहिये कि अिस आदमीको निकाल देंगे, तो वह कल बारडोलीकी तरह कुछ न कुछ कर बैठेगा। आजकल राजाओंका प्रेम-संपादन करनेका प्रयत्न खुशामदमें शुमार किया जाता है। काठियावाड़में खुशामद और सभ्यतामें भेद करना कठिन है। मैं काठियावाड़के गुणों, साहसीपन और प्रेम वगैराकी तारीफ करने नहीं आया। अगर मैं काठियावाड़के अुदार गुणोंकी तारीफ ही करता रहूँ, तो मुझे दुश्मन समझिये। यह तारीफ करनेके लिअे आपने मुझे नहीं बुलाया है। आपके पास जो गुण हैं, अुनमें कुछ न कुछ वृद्धि करूँ, तो ही आपकी सेवा हो सकती है। अिसलिअे मुझे आपमें जो बुराअियाँ दीखती हों, अुन्हें प्रेमभावसे आपको बताना चाहिये। आपकी-सी ज़बानकी मिठास मुझमें होती, तो मैं आपको मीठे ढंगसे आपकी बुराअियाँ बता देता। मगर मैं तो किसान ठहरा। अेक चोटमें दो टुकड़े करनेकी मेरी अुम्र भरकी आदत है। अिसलिअे आपसे कहता हूँ कि सभ्यता और खुशामदमें फ़र्क़ करनेकी आदत डालिये। मैं न बूढ़ा हूँ, न जवान; परन्तु वृद्धावस्था और युवावस्थाके संगमके किनारे बैठा हुआ हूं। मेरे जीमें जवानोंका खेल खेलनेकी आती है, मगर बूढ़ोंका अनुभव मुझे संयम भी सिखाता है। मैंने काठियावाड़के जवानोंके साथ बारडोलीमें खेल खेले हैं। परन्तु मुझे जवानोंके अुत्साहसे जितनी प्रेरणा मिलती है, अुतना ही बूढ़ोंका अनुभव भी साथ जोड़ना चाहता हूँ। बूढ़ोंकी हँसी अुड़ानेवाला बापकी विरासत खो देता है। आजकल विद्रोहकी पुकार सारे देशमें सुनाअी दे रही है, मगर चिल्लाहट मचानेवाले विद्रोह नहीं कर सकते। बगावत करनेवाले तो मूक होते हैं। वे अपना जोश अपनेमें भर रखते हैं और समय आने पर अुसे बाहर निकालते हैं। आजकल अलग-अलग राज्योंकी अेकता करनेके लिअे अेक-अेक राज्यमें क्या अेक-अेक आदमी भी है? आप वस्तुस्थितिको समझिये। आप किस बातके सपने देख रहे हैं? हवाअी किले क्यों बाँध रहे हैं? ज़मीन पर खड़े हुअे आप ज़मीन पर नज़र न डालेंगे, तो आसमान पर देखते-देखते आपकी आँखें फट जायँगी। दुनियामें कोअी विद्रोही हो सकता है, तो गांधीजी जैसा आदमी ही, दूसरा कोअी नहीं। मगर अुनका विद्रोह असत्यके खिलाफ है, पाखंडके खिलाफ है, गन्दगीके खिलाफ है, किसी व्यक्तिके खिलाफ नहीं। यही बगावत सच्ची बगावत है। क्या आपको विद्रोहका क्षेत्र चाहिये? वह क्षेत्र तो मौजूद ही है। जब सूर्यका प्रकाश पड़ता है तब कहीं भी अँधेरा नहीं रहता, मगर वह अुगता है अेक ही जगह। अिसलिअे जिसने विद्रोहका स्थान चुना है, अुसने विचारपूर्वक ही चुना होगा, क्योंकि वह विद्रोहकी कला जानता है। अुसने यह विचार कर लिया है कि मैं अैसे स्थानसे विद्रोह करूँगा, जहाँसे वह ३३ करोड़में फैल जायगा। आज अेक भी गाँव अैसा नहीं है, जहाँ बारडोलीका असर न पड़ा

हो। सारी सल्तनत भी जान चुकी है कि निर्जीव और नामर्द दिखाअी देनेवाले किसान क्या करके दिखा सकते हैं। मगर अिसके लिअे कितनी तैयारी, कितने संयम और कितने संगठनकी ज़रूरत थी, यह तो अुसमें भाग लेनेवाले ही जानते हैं। यह अेक दिनका काम नहीं था। आज भी अुस छोटीसी जगहमें ढेरों आदमी मौजूद हैं। वे मूक सेवा करनेवाले हैं। अुन्हें अैसी परिषदोंमें आनेकी अिच्छा तक नहीं होती। अैसे आदमियोंका संग्रह करके आप काठियावाड़के अेक गाँवमें ही प्रयोग करके दिखा दिजिये कि राज्यके साथ आपका कोअी झगड़ा नहीं, आपको तो प्रजामें प्राण भरने हैं। राजाओंको बता दीजिये कि बलवान प्रजा पर राज्य करो, गुलामों पर राज्य करनेमें क्या धरा है? प्राणवान प्रजा पर राज्य करो, मुर्दोंपर राज्य करनेवाले राजा तो वैसे ही हैं, जैसे नाटकोंमें दिखाये जाते हैं। आजकलकी स्थिति कितनी दयाजनक है। काठियावाड़के किसानोंको मेरे जैसे आदमीके पास भी अर्जी भेजनी हो, तो वह गुमनाम होती है; और अुसमें भी वे रुक्केके साथ सूचना देते हैं कि आप और किसीको बतायेंगे तो गांधीजीकी सौगन्ध है। अैसे आदमियोंसे क्या काम लिया जा सकता है? अैसे मुर्दोंमें जान फूँकनेके लिअे कितना समय चाहिये?

वातावरण साफ़ कीजिये

मगर आप कहेंगे कि राजाओंके सुधरे बिना कुछ नहीं हो सकता। राजाओंको सुधारनेके रास्ते मैं बता चुका। राजाओंको अीश्वरका डर लगे, अितनी आपमें साधुता हो और राजा-प्रजाके बीच अितना विश्वास और प्रेम हो, तो राजा आसानीसे सुधर जायँ। अैसा अेक भी राजा नहीं है, जो अुन लोगोंके सामने अपना सिंहासन छोड़कर बैठनेको मजबूर न हो, जिनमें प्रेम भरा होता है और जिनमें जल्दी कार्रवाअी करनेकी शक्ति होती है। अिस देशमें प्रेमको पहचाननेवाले राजा हैं, मगर हममें वह प्रेम नहीं है। वह प्रेम पैदा करना कठिन है। अुसके लिअे अत्यन्त संयम और सहनशक्तिकी ज़रूरत है। अिस प्रेमके साथ साथ विरोध करनेकी शक्ति भी प्रजामें चाहिये। हमें यह साबित कर देना चाहिये कि अिस परिषदके पीछे प्रजा है। अगर अैसा न हुआ, तो हमारा बोलना व्यर्थ होगा, हमारी प्रतिष्ठा चली जायगी और हमारी निन्दा होगी। अिसलिअे हम जो कुछ बोलें, अुसमें बल होना चाहिये। दुनियामें अैसे अेक भी राजाकी मिसाल नहीं है, जो कोरी निन्दासे हार गया हो। अिससे तो राजा ढीठ बन जाता है। अिसलिअे मैं आपसे कहता हूँ कि आप यह ध्यान रखें कि आपके कान भी सभ्यता सीखें और निन्दा सुननेके आदी न बनें। आज आपकी ज़बानमें खुले तौर पर कुछ कहनेकी हिम्मत नहीं है; सिर्फ कोनेमें बैठकर बोलनेकी आदत है। अुसे निकाल डालिये। कोनेमें बैठकर

बोलना व्यर्थ जाता है। आज काठियावाड़का वायुमंडल अितनी पराधीनता और अितनी षड्यंत्र बाज़ीसे भरा है कि स्वतंत्र मनुष्यका अुसमें दम घुटने लगता है। अुसे साँस लेना मुश्किल हो जाता है। यहाँ यह पहचानना मुश्किल हो जाता है कि शत्रु कौन है और मित्र कौन? अिसका पता नहीं चलता कि कोअी आदमी कुछ कह रहा हो तो अुसकी तहमें स्वार्थ कितना है और सेवा कितनी है? अिस स्थितिमें सफ़ाअी करनेकी बहुत ही ज़रूरत है। कोनेमें बैठकर चुपकेसे आलोचना करना बन्द करनेकी ज़रूरत है। अिस आदतसे ज्यादा कमज़ोरी आयेगी।

युवकोंसे

काठियावाड़के युवक अकुला रहे हैं और यह चाहते हैं कि अुन्हें कोअी रास्ता बतावे। वे कहते हैं कि यहाँ हमें काम करनेका कोअी अुपाय नहीं सूझता। अुनसे मैं कहता हूँ कि तुम मेरे यहाँ आओ। वहाँ आकर शक्ति प्राप्त करो। क्या तुम समझते हो कि जो काठियावाड़ी आजकल मेरे पास मौजूद हैं, अुनमें काठियावाड़की सेवाकी लगन कम हो गअी है? वे जानते हैं कि हिन्दुस्तानका वायुमंडल साफ़ होगा, तब यहाँका वातावरण अपने आप साफ़ हो जायगा। अगर हम आजका धर्मपालन करेंगे, तो कलका काम कल खुद ही कर लेगा।

मैंने यहाँके सामाजिक प्रश्नोंकी चर्चा नहीं की है। यहाँ अितनी गंदगी है कि दिल काँप अुठता है। यहाँकी कितनी अधिक कन्याअें और स्त्रियाँ ब्रिटिश सीमामें बेची जाती हैं। ब्रिटिश गुजरातकी अदालतोंमें जाअिये और अिन मामलोंके बारेमें वहाँके काठियावाड़ी वकीलोंसे पूछिये, तो आपको शर्म आयेगी। अिस गंदगीको रोकनेके लिअे सच्ची सेवा-वृत्ति चाहिये। काठियावाड़का व्यापारी वर्ग अुदार है। अेक काम भी अैसा नहीं हुआ, जिसमें अुदार सहायता देनेमें काठियावाड़के व्यापारियोंने प्रमुख भाग न लिया हो। रुपयेकी कमी नहीं रहेगी। अैसी स्थिति पैदा करनी है कि यहाँका वायुमंडल सुधरे और सेवकोंको यहाँ रहनेकी अिच्छा हो। मगर काठियावाड़ी युवकोंके पैर काठियावाड़की धरती पर न टिकें और वे अेकके बाद दूसरा और दूसरेके बाद तीसरा नया नया काम ही ढूँढ़ते रहें, तो सेवा नहीं हो सकती। हमने रैयतको ध्यानमें रखकर जो प्रस्ताव पास किये हैं, अुतनों पर भी अमल करेंगे तो हमें यहाँ दुबारा अिकट्ठे होनेका और लोगोंसे रुपया माँगनेका अधिकार मिलेगा। अगर हम खुद ही अपने किये हुअे ठहरावों पर अमल न करें, तो राजा क्यों करेंगे? हममें यह वृत्ति होनी चाहिये कि राजा कुछ भी क्यों न करें, हमें तो अपने धर्मका पालन करना ही है। अेक अुदाहरण देता हूँ। काठियावाड़के अेक दरबारने अपनी जागीर छोड़ी थी, तब आपमें बड़ी वीरता आ गअी थी। आपने 'गोपाल कोष' अिकट्ठा

करनेका विचार किया था और मैंने अिनकार कर दिया था और सुझाया था कि आपमें कुछ करनेकी शक्ति न हो, तो त्याग करनेवालेकी अिज़्ज़त क्यों खराब करते हो? दरबार गोपालदासके पीछे कितने लोग हैं, यह आप आज बता रहे हैं। अच्छा काम आप थोड़ा भी करेंगे, तो वह हज़ारों भाषणोंसे ज्यादा अच्छा होगा। काठियावाड़की प्रजाको आजकल तेज़-तर्रार बातें चाहियें, मगर अुसे असली ज़रूरत अन्तर्दृष्टि की है। अीश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि वह काठियावाड़को यानी हम सबको वह अन्तर्दृष्टि प्रदान करे।

अुपसंहार

आपने, महाराजा साहबने और सारी प्रजाने मेरे प्रति जो प्रेम प्रगट किया है, अुसके लिअे मैं किन शब्दोंमें आपका आभार मानूं? मुझसे मोरबीकी तो कोअी सेवा नहीं हुअी; होगी भी या नहीं, यह मैं नहीं जानता। मगर प्रजाने और खुद महाराजाने जो तमाम सुविधाअें जुटा दीं और मेरे प्रति अत्यंत प्रेम और ममता दिखाअी है, अिससे मुझे खयाल हुआ है कि यहाँ काम करनेका कितना बड़ा क्षेत्र है। प्रजामें बल पैदा करना राजाका काम है। अेक दूसरेके सम्पर्कमें आनेसे और सेवा करनेकी शक्तिसे राजा पर असर होगा। परन्तु आज तो हम राजाओंसे दूर भागते हैं। राजाओंमें सब बातोंकी आशा रखकर हम खुद कुछ नहीं करते। अिससे न तो हम राजाओंकी सेवा कर सकेंगे और न प्रजाकी।

आज आपसे खूब तालियाँ बजवाना हो, तो यह कराते मुझे आता है। यह कला मैंने सीखी है। मैं अैसी गालियाँ देना जानता हूँ कि कुनबी खड़ा-खड़ा जल अुठे और अितना कड़वा बोलना भी जानता हूँ, जिससे आपको दुःख हो। मगर अिन सब बातोंसे क्या मैं आपको लाभ पहुँचा सकता हूँ? आज तो काम करनेके सिवाय और कोअी धर्म नहीं है। हमें अपने पास किये हुअे प्रस्तावोंमें विश्वास है या नहीं? अुनके पीछे झूठे मत भी हो सकते हैं, क्योंकि यहाँका वातावरण कृत्रिम है। गांधीजीके पास खादी पहनकर आते हैं, राजाके पास दूसरी पोशाक, पोलिटिकल अेजन्टके पास तीसरी पोशाक और घरमें चौथी ही पोशाक! अैसे प्रपंच करनेवालोंके सामने बलवेकी बातें रखनेसे हम बलवा तो नहीं करेंगे, मगर खुद जल जायँगे। आज आपने गांधीजीके कलके भाषण और मणिलालकी प्रेमभरी वाणीके कारण बहुत कुछ किया है। अब मैं आपको फिरसे सब बातोंका सार सुनाना नहीं चाहता। यह काम कल गांधीजीने मेरे लिअे कर दिया है। मुझे आप अपने जैसा ही समझकर मेरे विचार जान लीजिये। मैं महात्मा नहीं हूं। गांधीजीको आप महात्मा कहिये और अुन्हें मोक्ष तक पहुँचे हुअे मानकर अुनके पास ही खड़े रहिये। मगर मैं तो आपके जैसा ही पापी

हूँ। मुझे बहुत लोग गांधीजीका अंधभक्त कहते हैं। मैं चाहता हूँ कि मुझमें सचमुच अुनका अंधभक्त होनेकी शक्ति हो। मगर वह नहीं है। मैं तो साधारण बुद्धिका दावा करनेवाला आदमी हूँ। मुझमें समझनेकी शक्ति है और मैंने दुनिया भी काफी देखी है। अिसलिअे समझे बिना ही अेक हाथकी लंगोटी पहनकर घूमनेवालेके पीछे पागल हो जाअूँ अैसा मैं नहीं हूँ। मेरे पास बहुतोंको ठगकर धनवान बननेका धंधा था, मगर वह मैंने छोड़ दिया; क्योंकि अिस आदमीसे मैंने यह सीखा कि वह धंधा करके किसानकी भलाअी नहीं हो सकती। अुन्हींके मार्गसे हो सकती है। वे जबसे हिन्दुस्तानमें आये, तभीसे मैं अुनके साथ हूँ, और अिस जन्ममें तो अुनका साथ नहीं छूटेगा। अितने पर भी मैं अुन्हें अपने काममें अलग रखता हूँ, क्योंकि हम अपनी शक्ति गँवा बैठे हैं। हमेशा अुनकी ही तरफ़ देखते रहेंगे, तो वह शक्ति नहीं आयेगी। सदा ही, हर जगह अुनकी आशा रखी जाय, तो हमारा काम कैसे चलेगा! मैसूरमें जब वे बीमार थे, तब बहुतसे लोगोंने अुन्हें तार दिया था कि प्रलय-निवारणके लिअे आअिये। अुन्होंने मुझे तार दिया : 'आअूँ'? मैंने अुन्हें लिखा था कि अगर आपको यह देखना हो कि आपने दस साल पहले गुजरातको जो मंत्र दिया था, वह हज़म हुआ या नहीं तो मत आअिये। बारडोलीमें भी मैंने अपने जेल चले जानेके बाद ही अुनसे आनेको कहा था। हममें अनुशासन और व्यवस्थाकी कमी है, सिपाहीगिरीकी कमी है। हमें हुक्म बजा लानेकी आदत नहीं पड़ी है। व्यक्ति-स्वातंत्र्यके अिस ज़मानेमें हम स्वच्छंदताको ही स्वतंत्रता मान बैठे हैं। हिन्दुस्तानका दुःख, काठियावाड़का दुःख, नेताओंके अभावका नहीं है, पर नेताओंकी अधिकता और सिपाहीगिरीके अभावका है। अीश्वर काठियावाड़के नवयुवकोंको वह शक्ति दे!

नवजीवन, ७-४-१९२९

४९

देशी राज्योंकी आबकारी नीति

[अप्रैल १९२९ में अुनाअी रानीपरज परिषदमें अध्यक्ष पदसे दिया हुआ भाषण ।]

यहाँ बड़ोदा और वाँसदा दोनों रियासतोंकी सरहद मिलती है । बड़ौदामें राजमहलसे लेकर गरीबोंकी झोंपड़ी तक शराबने सत्यानाश कर डाला है । जिस राज्यकी नीति गरीब लोगोंको व्यसनी बनाकर अुनके व्यसनीपनसे राज्यकी आमदनी बढ़ानेकी हो, अुस राज्यमें और राजकुटुंबमें सुख और शांति कैसे हो सकती है ? मैंने सुना है कि वाँसदाके राजा बहुत भले हैं, लेकिन जब शराबकी आमदनी घटती है, तब अुनकी अीश्वर-श्रद्धा ढीली पड़ जाती है और अुन्हें शंका होने लगती है कि महुआ हमारा अीश्वर है या और कोअी । जिन राज्योंको अीश्वर पर विश्वास नहीं और जिनको अैसा खयाल होता है कि रैयत शराब-ताड़ी छोड़ देगी तो आमदनीका क्या होगा, अुन राज्यों पर मुझे दया आती है । अिस मेलेमें, जहाँ हजारों स्त्री-पुरुष पवित्र होनेके लिअे आते हैं, शराबकी दुकानें खोलनेकी मंजूरी दी जाय और प्रोत्साहन तक दिया जाय, यह किसी हिन्दू राजाको शोभा दे सकता है ? जिस यात्राके धाममें पवित्र बनना चाहिये, वहाँ शराबकी पाँच दुकानें लगाने देनेके बराबर कोअी महापाप नहीं है । शराबसे कर अुत्पन्न करनेवाले राज्य गरीबोंको कैसे खुशहाल बना सकते हैं, यह कला वे अैसी प्रदर्शनियोंमें आकर देखें और पंगु और दरिद्र प्रजा पर राज्य करनेके बजाय खुशहाल प्रजा पर राज्य करनेका विचार करें तो कैसा अच्छा हो ! आज तो राज्यमे जितनी पाठशालाअें है, अुनसे ज्यादा शराबखाने हैं । ये सब स्कूल बन्द हो जायें तो परवाह नहीं, मगर शराबखाना तो अेक भी नहीं रहना चाहिये ।

ये रियासतें हमारे शराबबन्दीके कामसे डरती हैं । मैं नहीं समझता कि वे क्यों डरती हैं । अिन रजवाड़ोंके साथ लड़ाअी करना मैं अपने लिअे शर्मनाक मानता हूँ । वाँसदा जैसे बालिश्तभर राज्यको तो अेक ठाकरड़ा डाकू बनकर बस में कर सकता है । अुसके साथ लड़नेमें मैं अपनी शक्ति क्यों खर्च करूँ ! मेरा काम तो ब्रिटिश साम्राज्यके साथ लड़ना है और मैंने अपना क्षेत्र तय कर लिया है । परन्तु रियासतें याद रखें कि यदि अुनके अधिकारी प्रजाको कष्ट देंगे, तो मैं घड़ीभर भी बरदाश्त नहीं कर सकूँगा । खादी और शराबबन्दीका जो पुण्य-

कार्य हो रहा है, वह रोकनेसे नहीं रुकेगा । ७०० कुटुंब अपनी ही खादी काममें लेनेकी प्रतिज्ञा लिये हुअे हैं। अुस दिन ठेठ नासिकसे तीन दिन पैदल चलकर अेक आदमी वेड़छी तक चरखा लेने आया था और नक़द दाम देकर अुसे सिर पर रख कर ले गया । अिससे ज़ाहिर होता है कि चरखेका जादू कहाँ तक फैला है ।

यहाँके कुछ शराबकी दुकानवालोंके गपोड़ोंसे बंबअीके पारसी घबरा अुठे हैं । मैं बंबअीके पारसियोंको विश्वास दिलाता हूँ कि यहाँके जंगलोंमें रहनेवाला अेक भी पारसी सीधे रास्ते चलेगा, तो अुस पर बहिष्कारका या दूसरा कोअी ज़ुल्म न होने देनेकी ज़िम्मेदारी मैं लेनेको तैयार हूँ । बंबअीके अखबारोंमें जो शिकायतें आती हैं, अुनमें कोअी तथ्य नहीं है । मुझे दुःखके साथ कहना चाहिये कि जो लोग शिकायतें करते हैं, वे पारसी नहीं बल्कि पारसी क़ौमको लज्जित करनेवाले हैं । अुनकी करतूतोंकी कुछ बातें मेरी जानकारीमें हैं। मगर मैं अुन्हें प्रकट करना नहीं चाहता । जब तक पारसी जातिके रत्न जैसे मीठूबहन और दूसरे पारसी भाअी अिस काममें लगे हुअे है, तब तक अिन झूठी चिल्लाहटोंसे मैं डरनेवाला नहीं हूँ । वे लोग अधिकारियोंको भड़का कर तंग करना चाहते हों, तो मैं अुससे भी नहीं डरूँगा । मैं तो सरकारकी जेल दस सालसे ढूँढ़ रहा हूँ, मगर वह मुझे मिलती ही नहीं । अेक पारसी भाअी मुझसे कहते थे कि अिस 'नीच वर्ण 'को डरा कर रखना ही अच्छा है । हाँ, डर सबको चाहिये, मगर वह डर अीश्वरका होना चाहिये । किसी मनुष्य या सत्ताका डर नहीं होना चाहिये । शराबकी दुकानवाले क्या और दूसरे क्या, सबको पापसे बचनेका डर होना चाहिये ।

नवजीवन, २८-४-१९२९

५०

सातवीं महाराष्ट्र प्रांतीय परिषद

[ता. ४ और ५ मअी १९२९ को बांद्रामें हुअी ७ वीं महाराष्ट्र प्रांतीय परिषदके अध्यक्षपदसे दिये गये लिखित अंग्रेजी भाषणसे।]

महाराष्ट्रने अपने कुछ अच्छेसे अच्छे सपूतोंको गुजरातकी सेवामें अर्पण करके गुजरातको अपना खूब ऋणी बनाया है। हमारे युवकोंको शिक्षा देनेका काम अुनके ज़िम्मे है और शिक्षक तथा चरित्र निर्माण करनेवालोंके रूपमें गुजरातमें अुनकी अच्छी प्रतिष्ठा है। अिस ऋणको चुकानेके मामलेमें गुजरातने अभी तक कुछ नहीं किया। मगर आपने मुझे अध्यक्ष बनाकर अिस ऋणका भार बढ़ाया ही है। आज तक आप हमें शिक्षा देते रहे हैं और हमने आपसे पढ़ना पसंद किया है। अैसी परंपरा चली आ रही है।

* * *

किसी नये या ज़रूरी कामके सिलसिलेमें निर्णय न करना हो, तो गुजरातमें हम लोग ज़िला या प्रांतीय परिषदें नहीं करते। किसी सच्ची प्रांतीय परिषदमें भाग लेना मुझे याद हो, तो वह १९२० में अहमदाबादमें हुअी गुजरात प्रांतीय परिषद थी। अुस वक्त असहयोगका कार्यक्रम देशके सामने पेश हुआ था और अुसके बारेमें अुचित निर्णय करनेके लिअे कांग्रेसका विशेष अधिवेशन होनेवाला था। कांग्रेसको वह निर्णय करनेमें मदद देनेके लिअे प्रांतोंका अपनी राय जाहिर करना फर्ज़ था। अुसके बाद भी हमने अेक दो प्रांतीय परिषदें कीं ज़रूर, मगर मुझे अैसा नहीं लगता कि अुनमें से कोअी भी अुपरोक्त स्मरणीय परिषद जैसी महत्त्वपूर्ण या आवश्यक थी।

* * *

कांग्रेसका कार्यक्रम फिरसे घोषित करना, अिस कार्यक्रमकी अेक-अेक बात पर अमल करनेके लिअे प्रांतके हरअेक स्त्री-पुरुषसे कहना, पिछले चार महीनोंमें हरअेक ज़िला समितिने अुसमेंसे कितना काम पूरा किया अुसकी रिपोर्ट पेश करनेके लिअे ज़िला समितियोंको सूचित करना, दूर-दूरके गाँवोंमें कांग्रेसका संदेश पहुँचानेके लिअे स्वयंसेवक भरती करना और अिस तरह अिस कार्यक्रमको सफल बनानेके लिअे यथाशक्ति शीघ्रतासे लगातार कोशिश करना — अितना ही काम अिस परिषदके लिअे करना बाकी रह जाता है।

पिछले कांग्रेस अधिवेशनमें स्वीकृत प्रस्तावों पर हमें फिरसे विचार करना पड़े, अैसी कोअी घटना अुसके बाद नहीं हुअी; अुलटे जो कुछ हुआ है, अुससे तो १९३० में किये जानेवाले अंतिम युद्धके लिअे तैयार होनेका हमने जो निश्चय किया है, अुसे और भी दृढ़ बनानेकी ज़रूरत मालूम होती है। जब ग्रहण लगनेवाला होता है, तब अुसका वेध पहलेसे ही शुरू हो जाता है। अिस न्यायसे अिस साल जो घटनाअें हुअीं और जिनका अंतिम परिणाम वाअिसरॉय द्वारा आर्डिनेन्स निकाल कर पब्लिक सेफ्टी बिल पास करानेमें आया, वे किसी भावी अशुभ आपत्तिकी सूचक हैं। हमारे देशके अितिहासमें हम अेक नाज़ुक घड़ीमें आ पहुँचे हैं। अिसके जैसा दूसरा गंभीर अवसर रौलट बिल पास होनेके वक्त आया था। सच कहा जाय तो सुधारोंसे पहलेके दिनोंमें वाअिसरॉय द्वारा की गअी कार्रवाअियोंसे आजके वाअिसरॉयका यह कृत्य ज़्यादा अपमानजनक और जान-बूझकर किया हुआ है। सुधार हुअे हों या नहीं, पेरामाअुन्ट्सी (सर्वोपरिसत्ता) ही नौकरशाहीकी टेक मालूम होती है और आपकी धारासभाका अध्यक्ष केवल नाम मात्रका हो या समर्थ हो, वाअिसरॉयको यक़ीन है कि वह जो चाहे सो करनेकी सत्ता अुसके पास है।

* * *

वाअिसरॉय साहबने आतंकवादियों और अुदार दलवालोंकी विचारधाराके बीचके खुले झगड़ेकी तरफ खास तौरसे ध्यान खींचा है। मगर असलमें अुनका किया हुआ यह अुल्लेख तो बम फेंकनेवालोंकी आतंक नीति और अुसे भी मात करनेवाली सरकारकी आतंक नीति दोनों पर लागू होता है। दोनों तरफ़से बरती जानेवाली यह आतंक नीति अेकसी ही मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ है। अिन दोनोंका अिलाज सत्याग्रह ही है। अहिंसात्मक असहयोग और सविनय क़ानून-भंग अिसीके दो स्वरूप हैं। ये दोनों हमारे देशके अितिहासमें बहुत ही महत्त्वके समयमें शुरू किये गये थे।

वाअिसरॉय साहबके वक्तव्यमें व्यक्त की गअी दमन नीति मेरठकी गिरफ्तारियोंमें और साथ ही विचारशीलता व अहिंसक वृत्तिके लिअे लोगोंमें प्रभाव रखनेवाले साम्बमूर्ति और खाडिलकर जैसे आदमियों पर मुक़दमे चलाकर दी गअी सज़ाओंमें खुले आम अख्तियार की गअी दिखाअी देती है। अधिकारियोंके हाथमें अधिक सत्ता सौंप दी जाय, तो वे अुसका कैसा दुरुपयोग करते हैं और वे जिसे चाहें अुसे अपने लम्बे-चौड़े जालमें फँसानेके लिअे झूठे-सच्चे सब तरहके बहाने कितनी आसानीसे बना सकते हैं, यह हमें बारडोलीके सत्याग्रहकी लड़ाअीके समय अच्छी तरह देखनेको मिला। सत्याग्रहको बोलशेविज़्मका रूप माना गया और मुझे भारतीय लेनिनकी बड़ी अुपाधि दे दी गअी! लेनिनके बारेमें अपना सारा ज्ञान

मुझे पंडित जवाहरलाल नेहरूकी लिखी हुअी 'सोवियट रशिया' नामक छोटीसी पुस्तकसे मिला है। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि सोवियट संस्थाओंकी व्यवस्था और सोवियट प्रणालीके बारेमें मैं बिलकुल अपरिचित हूँ। लेकिन आजकल पढ़े-लिखे मध्यम वर्गको किसान और मज़दूर वर्गके सम्पर्कमें लानेके लिअे किसी भी कल्याणकारी आन्दोलन या प्रवृत्तिको शुरू किया जाता है, तो अुसे खतरेका निशान ही बताया जाता है; और अिन हलचलोंको बदनाम करनेके लिअे बोलशेविज़्म और कम्युनिज़्मके दो विशेषण हर वक्त तैयार ही रहते हैं।

वर्तमान परिस्थिति १९१९ की परिस्थिति जैसी ही नाज़ुक है, शायद अुससे अधिक गंभीर भी हो सकती है। देशका वातावरण देखा जाय तो वह निश्चित ही ज्यादा अनुकूल है। देशमें कभी कभी हिंसाके छुटपुट काम हुअे हों तो भी अिस बारेमें मुझे कोअी शंका नहीं कि अहिंसाका संदेश धीरे-धीरे जनता तक पहुँच रहा है। अहिंसा पर अुसकी श्रद्धाकी कसौटी अुस समय हुअी है, जब लाला लाजपतराय और पंडित जवाहरलाल पर पाशविक हमले हुअे और महात्मा गांधीको बिना कारण अुत्तेजनात्मक ढंगसे गिरफ़्तार किया गया। अिन सब मौकों पर जनताने अनुकरणीय संयम दिखाया है। अिस सुधरते हुअे अनुकूल अहिंसक वातावरणको ध्यानमें रखकर हमने संग्रामकी जो तारीख विचारपूर्वक तय की है, अुस दिन तक लड़ाअीके लिअे तैयार होनेमें हम अपनी सारी शक्ति लगा दें। हमने जितनी गंभीरतासे और विचारपूर्वक वह तिथि मुकर्रर की है, अुतनी ही गंभीरतासे और विचारपूर्वक हमने अपना कार्यक्रम स्पष्ट रूपसे निश्चित किया है।

* * *

धारासभा-प्रवेशके मामलेमें मेरे विचार आप जानते हैं। मैं जैसा १९२२ में था, वैसा ही अब भी कट्टर अपरिवर्तनवादी हूँ। केन्द्रीय धारासभामें जनताके चुने हुअे अध्यक्षने कितने सुंदर ढंगसे अपना फ़र्ज़ अदा किया, अिसके लिअे और सब देशवासियोंकी तरह ही मुझे भी गर्व है। फिर भी अितना कहे बिना मुझसे नहीं रहा जाता कि अध्यक्षके दिये हुअे फैसले और अुसके बाद होने वाली घटनाओंसे यही बात साफ़ तौर पर साबित होती है कि धारासभाअें केवल मायाजाल ही हैं। मेरा निश्चित मत है कि प्रान्तीय धारासभाओंमें भी केन्द्रीय धारासभाके अध्यक्ष जैसे ही होशियार अध्यक्ष हों, तो भी अुनमें कोअी सुधार नहीं हो सकता। शायद अिसी कारणसे अुनका यह स्वरूप ज्यादा मायावी बन जाता है। अेक और बात मुझे बहुत महत्त्वकी मालूम होती है। मुझे दिन-दिन अधिकाधिक विश्वास होता जा रहा है कि जब तक देशके सामने यह धारासभाओंका कार्यक्रम रहेगा, तब तक रचनात्मक

कार्यक्रम पर अुसका चित्त केन्द्रित करना असंभव नहीं, तो भी बहुत मुश्किल ज़रूर है। कांग्रेसके बताये हुअे कार्यक्रमको अच्छी तरह पूरा करनेके लिअे असहयोगका वातावरण ही सबसे ज्यादा अनुकूल भूमिका है। देशको सविनय कानूनभंगके लिअे तैयार करनेके कार्यक्रममें जो सारा वर्ष बिताना था, अुसी वर्षमें देश धारासभाओंके चुनावोंके चक्करमें फँस गया, अिससे ज्यादा दुर्भाग्यकी बात शायद ही हो सकती है। अपनी यह व्यक्तिगत भावना आपके सामने प्रगट किये बिना नहीं रहा जाता। गांधीजीमें स्वतंत्रताकी जो लगन है और जिसके कारण वे भोजन और आराम लेना ही नहीं, बल्कि अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति साबरमती सत्याग्रह आश्रममें कभी-कभी मालूम होनेवाली खानगी कठिनाअियोंको भी भूल जाते हैं, अुस लगनका अेक अंश भी हममें ज्वलंत रूपमें विद्यमान होता, और जिस ढंगसे यह निष्कलंक पुरुष स्वराज्यके कार्यक्रममें अपने आपको खपा रहा है, अगर हम अुसका दिन-रात, सोते-जागते स्मरण करते होते, तो हम अिस माया-जालमें फँसनेसे साफ़ अिनकार कर देते और हमारी परीक्षा और वेदनाके अिस वर्षमें हम धारासभाओंके चुनावके साथ कोअी वास्ता न रखते। धारासभा-प्रवेशके बारेमें मेरे अैसे दृढ़ विचार होनेके कारण मुझे स्वीकार करना चाहिये कि अगले धारासभाके चुनावोंके सिलसिलेमें आपको कुछ भी सलाह देनेकी योग्यता मुझमें नहीं है।

पिछले कुछ महीनोंमें होनेवाली घटनाओंमें हमें जिसके बारेमें सन्तोष और गर्व हो सकता है, वह है: सारे राष्ट्रने अुस धोखेबाज़ कमीशनका कितना सफल बहिष्कार किया। मेरा यह खयाल है कि अुस बहिष्कारका स्वाभाविक परिणाम नेहरू रिपोर्टकी मंजूरी ही होना चाहिये। मुझे अैसा विश्वास और आशा है कि मौजूदा साल खतम होनेसे पहले नेहरू रिपोर्टको पूरी तरह स्वीकार करनेके बारेमें जो भी थोड़े-बहुत मतभेद हैं, वे या तो दूर हो जायँगे या कोअी अैसा नया मसौदा तैयार कर लिया जायगा, जिससे सब जातियों और दलोंमें समझौता हो सके।

* * *

रचनात्मक कार्यक्रमका महत्त्व हालमें दिये गये अेक भाषणमें गांधीजीने अितने अच्छे ढंगसे प्रतिपादित किया है कि अुससे ज्यादा अच्छे ढंगसे शायद ही किया जा सके। 'सरकार किससे झुकेगी?' अिस सवालका जवाब देते हुअे अुन्होंने कहा है:

"आपने देखा है कि हमारे काबिलसे काबिल अध्यक्षका किया हुआ अच्छेसे अच्छा और परिणामकारक काम सर्वशक्तिमान वाअिसरॉयके मुँहसे निकले हुअे अेक शब्दके कारण क्षण भरमें धूलमें मिल गया। हमारे सामने

कितना बड़ा काम पड़ा है, आपको अुसकी कल्पना करानेके लिअे ही अिस घटनाकी तरफ मैं आपका ध्यान खींच रहा हूँ । हिन्दुस्तानकी आज़ादी आज आये या वर्षों बाद आये, वह अिन नाममात्रकी धारासभाओंके ज़रिये कभी नहीं आयेगी, बल्कि कांग्रेसके बताये अनुसार देहातमें होनेवाले कामके द्वारा ही आयेगी। अगर वाअिसरॉयको मालूम होता कि धारासभाके अध्यक्ष अेक पूरे जाग्रत और कार्यक्षम राष्ट्रके प्रतिनिधि हैं, तो श्री विट्ठलभाअीने जो फ़ैसला दिया, अुसके वे अनुकूल होते। वाअिसरॉय पर और जिस सरकारके वे बड़े अधिकारी हैं, अुस सरकार पर असर पैदा करनेके लिअे बम फेंकनेवालेकी आवेशमय शक्तिकी नहीं, मगर करोड़ों मनुष्योंकी अेकतासे, शान्त रूपमें और सतत किये हुअे कामसे अुत्पन्न हुअी शक्तिकी ज़रूरत है। मुझे अैसी अैक्यवाली कांग्रेस बना कर दिखा दीजिये जिसका हिसाब साफ़ हो, जिसके रजिस्टरोंमें लाखों ग्रामवासियोंके नाम सदस्योंमें लिखे हों, जिसके हरअेक गाँवमें खादी-भंडार चल रहे हों, जो देशके हरअेक व्यक्तिकी अिज्ज़त कायम रखनेके लिअे हमेशा जाग्रत हो, जिसने अस्पृश्यताका कलंक मिटा दिया हो, जिसने हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी, यहूदी और सिक्ख जातियोंके बीच अेकता स्थापित की हो। अैसी कांग्रेस आप सिद्ध करके दिखा दीजिये, फिर आप देखेंगे कि देशके प्रतिनिधियोंके चुने हुअे अध्यक्षकी सत्ता की कोअी वाअिसरॉय अवहेलना या हँसी नहीं कर सकेगा।"

क्या अितने बरसोंके बाद आज कांग्रेसके रचनात्मक कार्यक्रमकी विविध धाराओंके बारेमें विवेचन करनेकी सचमुच ज़रूरत है? जिस महाराष्ट्रको हिन्दुस्तानके सब प्रान्तोंसे पहले स्वराज्यका मंत्र प्राप्त करनेका सौभाग्य मिला हो, अुसे क्या सचमुच यह याद दिलाना ज़रूरी है कि विदेशी कपड़ेका बहिष्कार करनेकी कितनी ज्यादा ज़रूरत है? यदि मैं भूलता न होअूँ, तो और किसी भी प्रान्तको राजनीतिका ककहरा सीखनेको मिला होगा, अुससे बहुत पहले महाराष्ट्रने लोकमान्यसे सीख लिया था कि विदेशी कपड़ेके बहिष्कारके बिना कोअी भी राष्ट्र स्वावलम्बी या स्वतंत्र नहीं हो सकता। बेशक अुस जमानेमें अिस बहिष्कारको अमली बनानेका मार्ग देशके मिल अुद्योगको आश्रय और प्रोत्साहन देना ही था। मगर यह याद रखना चाहिये कि अुन दिनोंमें भी महाराष्ट्रमें कोअी मनुष्य ब्रिटिश माल या ब्रिटिश कपड़ेके बहिष्कारकी बात नहीं करता था। महाराष्ट्रके स्वदेशी आन्दोलनका अर्थ यही था कि मिलोंमें तैयार हुअे या गृहअुद्योगसे बने हुअे अपने देशमें पैदा हुअे कपड़ेके द्वारा ही तमाम विदेशी कपड़ेका बहिष्कार किया जाय। जो देशी मिलों द्वारा विदेशी कपड़ेका बहिष्कार करनेकी हिमायत करते हों, अुन्हें बंग-भंगके दिन याद करने चाहियें। देशकी ज़रूरतका तमाम कपड़ा मुहैया करना आर्थिक दृष्टिसे और साधन-

सामग्रीकी दृष्टिसे भी मिलोंके बूतेके बाहर है। फिर हिन्दुस्तानके करोड़ों भूखों और बेकारोंको काम और रोटी देनेका जो महाप्रश्न हमारे सामने है, अुसे मिलें अंशतः भी हल नहीं कर सकतीं। अगर अिस बात पर वे ध्यान दें, तो मिलों द्वारा विदेशी कपड़ेका बहिष्कार करनेकी बात छोड़ देंगे। मिलोंको हमारे विज्ञापन या विशेष आश्रयकी कोअी ज़रूरत नहीं है। अपने मालका विज्ञापन वे हमसे ज्यादा अच्छी तरह कर सकती हैं। केवल खादी काममें लेनेके आग्रहसे अुन्हें लाभ ही होगा। मिल-मालिकोंको अगर हम यह समझा सकें कि मिल-अुद्योग हमारी अेक राष्ट्रीय थाती है, तो हमारे अिस महान और प्रचंड राष्ट्रीय आन्दोलनको सफल बनानेके लिअे अुनके साथ सहयोग किया जा सकता है। अिस सहयोगको सफल बनानेकी गांधीजीने पिछले साल भरसक कोशिश की थी। मगर अुस वक्त शायद अनुकूल समय नहीं आया था। मैं आशा रखता हूँ कि मिल-मालिकोंका समय रहते अपनी भूल मालूम हो जायगी और कुछ नहीं तो अपने पर मँडरानेवाली विपत्तिसे अपने आपको बचानेके लिअे ही वे राष्ट्रके नेताओंके साथ सहयोग करेंगे। अगर अुन्हें अिस तरह समझाया जा सके तो मुझे यकीन है कि वे अेक ही बारमें अपनी और अपने देशकी सेवा करेंगे और अुद्योगमें आनेवाली कठिनाअियोंका भी अन्त कर देंगे। क्योंकि मज़दूरोंको भी यह खयाल होगा कि हम किसी अच्छे काममें लगे हुअे हैं और अुसमें हमें अपने मालिकके साथ सहयोग करना चाहिये। अैसा होगा तब ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल (मालिक-मज़दूरके झगड़ों संबंधी क़ानून) जैसे कितने ही बिल बन जायँ, तो भी वे बेकार होंगे और मिलोंमें होनेवाले दंगे और झगड़े फिर दिखाअी नहीं देंगे। अिसका सीधा-सादा कारण यही है कि फिर मिल-मालिक हमारे साथ सहयोग करेंगे और मालकी पैदावारमें, अुसकी कीमत ठहरानेमें और साथ ही मज़दूरोंकी मज़दूरी तय करनेके मामलेमें राष्ट्रके नेताओंकी सलाह मानेंगे। मगर अिस मामलेमें मिल-मालिक अपना फ़र्ज़ समझनेमें ढील करें, तो भी खादी पैदा करके अुसे अिस्तेमाल करनेका देशका फ़र्ज़ रहता ही है। अुल्टे मिल-मालिकोंके झक्कीपनके कारण केवल खादी अिस्तेमाल करनेका आग्रह रखना हमारा फ़र्ज़ हो जाता है।

* * *

अस्पृश्यताके बारेमें मुझे आपसे अितना ही कहना है कि यह प्रश्न पंडित मालवीयजी और सेठ जमनालाल बजाजने जितनी लगनके साथ हाथमें लिया है, अुतनी ही लगनसे आपको भी हाथमें लेना चाहिये। आपमेंसे सबसे प्रतिष्ठित लोगोंको खास तौर पर हरिजन मुहल्ले देखने जाना चाहिये; सभाओं और जुलूसोंमें शरीक होनेको अुन्हें बुलाना चाहिये और कुअें, मन्दिर और पाठशालाओं

वगैराके बारेमें अुन्हें जो मुश्किलें अुठानी पड़ती हों, अुन्हें खुद जानकर यथासंभव जल्दी ही दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिये।

मुझे लगता है कि दूसरे व्यापक और बड़े साम्प्रदायिक सवाल यानी हिन्दू-मुसलमानोंके सवालके सिलसिलेमें अगर मैं आपके सामने अितने ही आत्म-विश्वासके साथ बात कर सकता, तो कितना अच्छा होता। मगर हाल ही में हुअे साम्प्रदायिक दंगों और कुछ स्थानों पर हुअी निर्दय और निर्मम हत्याओंकी याद अभी तक ताजा होनेके कारण मुझे भय है कि हिन्दू-मुस्लिम अेकतामें मुझे जो श्रद्धा है, अुसका असर मैं आप पर नहीं डाल सकूँगा। अिस मारकाटकी जिम्मेदारी अुनके सिर पर है, जो जनता पर असर रखते हुअे भी अपनी ज़बान और कलम पर क़ाबू नहीं रखते। संभव है अभी हमारे भाग्यमें और भी बुरे दिन हों और अब तक जितने लोग मारे गये हैं अुनसे भी ज्यादा कुरबानी देनी पड़े। मगर मुझे विश्वास है कि आगे-पीछे बैर और बदलेके हिमायती अपनी आत्मघाती नीतिकी विफलता या मूर्खता अनुभव किये बिना नहीं रहेंगे।

जब तक यह न हो, तब तक दोनों कौमोंके समझदार लोगोंको जानना चाहिये कि साम्प्रदायिक झगड़े या दंगे हमारी निष्क्रियता और कांग्रेसके कार्य-क्रमके प्रति अुदासीनताके कारण सम्भव होते हैं। ज्यों ही रचनात्मक कार्यक्रमका ताजा और विशुद्ध खून देशकी नसोंमें बहने लगेगा, त्यों ही ज्यादातर बुराअी दूर हो जायगी।

ज़मीनके लगानका सवाल

आपके प्रान्तके कअी सवालोंमें से थोड़े-बहुत मुझे भी मालूम हैं। अुनके सिलसिलेमें मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ। अलग-अलग तहसीलोंके लगानके बन्दोबस्तकी जो रिपोर्टें सरकारकी तरफ़से समय-समय पर प्रकाशित हो रही हैं, अुनके बारेमें महाराष्ट्रके किसानोंमें भारी असन्तोष फैला हुआ है। ये रिपोर्टें बन्दोबस्तके अधिकारियोंकी रिपोर्टें नहीं हैं, बल्कि लगान बढ़ानेवाले अुन अधिकारियोंकी रिपोर्टें हैं, जो यह मानते हैं कि जितना हो सके अुतना लगान बढ़ानेकी सिफ़ारिश न करेंगे, तो हमारा सरकारका नमक खाना बेकार होगा। यह बात मानी हुअी है कि ठेठ पचहत्तर साल पहले किसानोंका कुछ भी विचार किये बिना ही लगान मुक़र्रर कर दिया गया था। किसानोंसे यह कहा गया था कि यदि तुम्हें लगान भरना न पुसाता हो, तो तुम ज़मीन छोड़ सकते हो। किसानोंकी बातकी पूरी तरह अवहेलना करनेकी यह प्रथा तबसे चली आ रही है। बारडोलीकी जाँचमें क्या-क्या बातें बाहर आअी हैं, यह मैं नहीं बता सकता, क्योंकि जाँच समितिकी रिपोर्ट अभी प्रकाशित होना बाकी है। मगर

अेक रहस्य अभी खुला है कि असिस्टैण्ट सेटलमेंट अफ़सर और सेटलमेण्ट कमिश्नरकी रिपोर्टोंमें किसी प्रकारका जाँचका तत्त्व दिखाअी नहीं दिया। जो बारडोलीमें हुआ वही और जगह भी हुआ होगा, अिस बारेमें शंका करनेका कोअी कारण नहीं है।

(लगान अदा न करनेकी लड़ाअी किस प्रकार लड़ी जाय, अिस बारेमें बताया कि:) मैं नम्रतापूर्वक कहूँगा कि अिस किस्मके आन्दोलनोंमें हमें आर्थिक हानिका खयाल नहीं करना चाहिये। अगर हम अपने गरीब गुलामों जैसे किसानोंको मनुष्य बनाना चाहते हों, तो अुनमें स्वेच्छासे आत्मत्याग और कष्टसहन करनेकी आदत डालनी चाहिये। अुनके साथ जीता-जागता सम्पर्क साधे बिना आप अैसा नहीं कर सकते। अिस बारेमें भी मैं आपके सामने नम्रतापूर्वक बारडोलीका सबक और अुदाहरण रखना चाहता हूँ। बारडोलीके किसानोंकी दृढ़ताका और अुनका सत्याग्रह अमोघ बननेका अेक कारण यह था कि हम किसानोंकी सेवाके लिअे स्वयंसेवकोंका अेक बड़ा दल खड़ा कर सके थे। ये स्वयंसेवक चाहे जैसी असुविधाअें सहकर दिन-रात छोटेसे छोटे माने जानेवाले काम करनेको तैयार थे। स्वयंसेवक दलके अैसे सजीव सम्पर्क और सम्बन्धके बिना हम किसानोंको साथ रखनेमें, और अुन्होंने सबको चकित और मुग्ध करनेवाली जो सहनशक्ति बताअी अुसके लिअे तैयार करनेमें समर्थ न हुअे होते।

युवकोंसे दो शब्द

मेरा भाषण पूरा होने आया है। स्वराज्यके लिअे अधीर न बना हो, अैसा अेक भी दल आज देशमें नहीं है, फिर भले ही वह औपनिवेशिक स्वराज्य हो या पूर्ण स्वराज्य। मगर अिन सबमें ज्यादासे ज्यादा अधीरता हमारे युवकोंमें है। मुझे अिसमें सन्देह नहीं कि यह अधीरता सच्ची है। मगर अिस अधीरताका सही अन्दाज़ तो अिससे लगेगा कि वे अपने अिष्ट ध्येयके लिअे कितना त्याग करने और कितना कष्ट सहनेको तैयार हैं। अिस सिलसिलेमें श्री नरीमानके नेतृत्वमें बंबअी प्रान्तके युवक बारडोलीके झण्डेके नीचे जिस तरह अुत्साहपूर्वक अिकट्ठे हुअे, अुसके लिअे मुझे अुन्हें आनन्द और गर्वके साथ धन्यवाद देना चाहिये। मगर आज जब सारे देशके युवक तिलमिला अुठे हैं, अैसी हालतमें अगर मैं अेक-दो शब्द सावधानीके कह दूँ, तो अनुचित न होगा। वे अच्छी तरह समझ लें कि अूटपटाँग भाषण या अूटपटाँग कार्य सहनशक्ति या स्वार्थत्यागकी शक्तिके द्योतक नहीं हैं। कुरबानीके क्षणिक आवेशमें अपने आपको खुशी-खुशी होम देनेमें बहादुरी भले ही हो; परन्तु किसी भी प्रकारकी दलबन्दीमें पड़े बिना केवल अज्ञात रहकर अखण्ड श्रम और अनुशासनवाला सेवामय जीवन बितानेमें ज्यादा

बहादुरी है। क्षणिक आवेशमें आकर किये हुअे बलिदान हमें नहीं चाहियें, परन्तु सतत कष्ट अुठाकर त्यागपूर्वक किये गये कामोंकी हमें ज़रूरत है।

महात्मा गांधीने १९१९ में क्रान्तिका जो महान कार्यक्रम शुरू किया, युवक लोग अुसकी विशालताका अच्छी तरह विचार करें। अिस प्रयोगके कारण अेक बलवान वाअिसरॉयकी मति कुण्ठित हो गअी और अिसी प्रयोगके बारेमें अुस वाअिसरॉयसे भी बढ़कर गवर्नरको यह स्वीकार करना पड़ा कि यह प्रयोग 'लगभग सफल होनेके नजदीक पहुँच गया था।' अुन दिनों गांधीजीने कहा था कि 'हम सब अेक ज्वालामुखीकी चोटी पर बैठे हैं और मेरी सारी कोशिश अुसकी अैसी मज़बूत चट्टान बना देनेकी है जिससे वह कभी न फूट सके।' यह अुदात्त प्रयोग है। यह प्रयोग धधकती हुअी स्वदेशभक्तिसे प्रेरित होनेवाले युवकोंके अूँचेसे अूँचे आदर्शवादको शोभा दे सकता है। महाराष्ट्रके नौजवान अपने शान्त साहस, दृढ़ निश्चय और वीरतापूर्ण सहनशक्तिके लिअे मशहूर हैं। मैं आशा रखता हूँ कि वे गांधीजीकी अहिंसक क्रान्ति द्वारा खुले हुअे मार्गमें अपनी शक्तियोंका अुपयोग करने लगेंगे और हिन्दुस्तानके दूसरे प्रान्तोंके नौजवानोंको रास्ता दिखायेंगे।

५१

गुजरात महाराष्ट्रको अेक कीजिये

[सातवीं महाराष्ट्र राजनैतिक परिषदमें अुपसंहारके समय गुजरातीमें दिया हुआ भाषण।]

आज महाराष्ट्र परिषदमें मैं अपना हृदय अुँडेलना चाहता हूँ। मुझे विश्वास हो गया है कि महाराष्ट्रमें मेरे विचारोंका अनर्थ नहीं होगा। मगर मैं जो कुछ कहता हूँ, आप विश्वास रखिये कि महाराष्ट्रके हितमें ही कहता हूँ। मुझे यह बतलाना चाहिये कि जब मैं यहाँ आया, तब डरते-डरते आया था। मुझे यह डर था कि मैं महाराष्ट्रमें जा तो ज़रूर रहा हूँ, पर मैं 'पोलिटिशियन' नहीं हूँ, क्योंकि पोलिटिक्सके साथ जो गन्दगी मिली हुअी मानी जाती है, वह अलग न रखी जाय तो मैं पोलिटिक्समें नहीं रह सकता। मैं किसानोंमें रहनेवाला अेक किसान हूँ। मैं किसानोंसे साफ़ काम कराना चाहता हूँ। अुन्हें धोखा देना नहीं चाहता और न अुनसे धोखा दिलाना ही चाहता हूँ। महाराष्ट्र 'पोलिटिशियन' लोगोंका केन्द्र है और महाराष्ट्रका मंच तो विद्वानोंका अखाड़ा है, अिसलिअे मैं यहाँ आते हुअे डरता था। मैंने महात्माजीसे कहा था, मुझे वहाँ कहाँ भेज रहे हैं? अुन्होंने कहा: 'मैं बँध चुका हूँ'। अिसलिअे मैं अुनकी आज्ञासे यहाँ आया। मगर मुझे यह बतलाना चाहिये कि अिन दो-

तीन दिनका मुझे मीठा अनुभव हुआ है। मैं महाराष्ट्रको जैसा सोचता था, अुससे अलग पाता हूँ और आज मुझे अैसा लगता है कि मैं घरमें ही खड़ा हूँ।

हमने अिन दो दिनोंमें जो प्रस्ताव पास किये हैं, अुनमें से अधिकांशमें कुछ करनेकी बात नहीं है, क्योंकि अुनमें से कुछ तो सरकारके कृत्योंकी निन्दा और भर्त्सना करनेवाले हैं। अैसे कृत्योंकी निन्दा करनेका काम किसी हद तक ज़रूरी हो जाता है। मगर मुझे अुसमें मज़ा नहीं आता। सरकारसे प्रार्थना और निन्दा दोनोंमें से अेकमें भी मेरा तो विश्वास नहीं है। किसी तन्त्र या संस्थाकी बार-बार निन्दा की जाय, तो वह ढीठ बन जाती है; और फिर वह सुधरनेके बजाय निन्दा करनेवालेकी निन्दा करने लगती है। मैं तो जनताका बल बढ़ानेमें मानता हूँ। क्योंकि अगर हममें ताकत होगी, तो सरकार परिषदके प्रस्ताव तारसे जानना चाहेगी। आज तो शायद हमारे प्रस्ताव पढ़नेकी सरकारको फ़ुरसत भी न हो, क्योंकि हम पर हुकूमत करनेवाले दूसरी तरहसे कैसे भी हों, परन्तु वे बुद्धिशाली और विचक्षण हैं और अुन्हें अिस बातकी पहचान है कि जनताकी शक्ति कितनी है। मुझे तो जनताका बल बढ़ानेवाले प्रस्ताव पसन्द आते हैं। कलकत्तेमें अनेक चर्चाओंके बाद अेक प्रस्ताव मंजूर किया गया। अब यह विचार करनेकी बात है कि अुस प्रस्तावको अमलमें कैसे लाया जाय। आज क्या तैयारी करना है, अुसीका विचार करना है। कल क्या होगा, अिसका विचार मत कीजिये। 'अिन्डिपेन्डेन्स' और 'डोमिनियमन स्टेटस' का झगड़ा छोड़िये। आज अिन दोनोंमें से अेक भी नहीं मिल सकता। परन्तु दोनोंमें से अेक भी क्यों नहीं मिलता, अिसके कारण ढूँढ़िये न? हमें अूपरकी मंजिल पर जाना है; मगर आज चढ़नेका प्रयत्न करनेके बजाय अिस बातकी तकरार क्यों करते हैं कि आधी दूर तक सीढ़ियाँ चढ़ना है या ठेठ तक चढ़ना है? आधी दूर तक तो चढ़िये, फिर जिसे आगे जाना हो अुसे आगे जाने दीजिये। हमारे अधीर नौ-जवानोंकी अधीरता मुझे अच्छी लगती है। मगर क्या ही अच्छा हो, यदि वे यही अधीरता काममें भी दिखायें! कविवर टैगोरने दुम हिलानेवाले और हाथ चाटनेवाले कुत्तेकी जो बात कही है, वह अिसी सम्बन्धमें कही होगी या और कुछ, यह कौन जाने! मगर मि० राजा देहातमें आयेंगे तो वहाँ अेक नअी कहावत सुनेंगे कि जो कुत्ता बहुत भौंकता है वह काटता नहीं। जिन्हें 'रिवोल्यूशन' करना है, वे लोग क्या मंच पर आकर चिल्लाहट मचाते होंगे?

दुनियामें क्रान्ति हो रही है। संसारमें संहार शक्तिकी स्पर्धा चल रही है। वह कहाँ तक पहुँचेगी, अिसकी कल्पना नहीं है। मगर अैसा समय आ रहा है जब जगत स्वीकार करेगा कि अेक लंगोटी पहना हुआ मुट्ठीभर हड्डियोंवाला

आदमी जो कहता था, वही सच बात कहता था। मैं महाराष्ट्रसे पूछता हूँ कि ८ साल पहले जब हम अस्पृश्यताकी बात कहते थे, तब हमारे मनकी क्या स्थिति थी? आज अस्पृश्यताके प्रस्ताव पर जो भाषण हुअे, अलग-अलग दलोंके और अलग-अलग वृत्तिके मनुष्योंने आकर अिस प्रस्तावका जो समर्थन किया और अिस प्रस्ताव पर जो विवेचन किया, वह बताता है कि महाराष्ट्रमें बड़ा परिवर्तन हो रहा है। महाराष्ट्रका अैसा ही परिवर्तन दूसरी बातोंमें भी ज़रूर होनेवाला है। मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या आज तलवारका जमाना है? भले ही हम शिवाजी और अुनके पराक्रमकी बातें करें, मगर क्या आज शिवाजीके तरीकेसे राज्य लेनेका वक्त है?

आज हम अैसे स्थान पर अिकट्ठे हुअे हैं, जहाँ महाराष्ट्र और गुजरातका संगम होता है। महाराष्ट्रका संयम, महाराष्ट्रका त्याग, महाराष्ट्रकी सहनशक्ति और महाराष्ट्रकी विद्वत्ता दूसरे किस प्रान्तमें है? मगर आज महाराष्ट्र शिथिल होकर पड़ा है। जब महाराष्ट्र आगे बढ़ेगा, तब हिन्दुस्तान भी आगे बढ़ने लगेगा। आज महाराष्ट्रमें श्रद्धा नहीं है। अिन सात वर्षोंमें जो परिवर्तन हुआ है, अुसका अुसे पता हो या न हो, परन्तु जैसा श्री नटराजन कहते हैं, महाराष्ट्रको ही पता चलेगा कि स्वराज्य सोचे हुअे समयसे जल्दी आ रहा है। जब तलवारका जमाना था, तब शिवाजी हुअे। अैसा अेक भी अुदाहरण तो बताअिये जब किसी निःशस्त्र प्रजाने सशस्त्र बनकर स्वराज्य प्राप्त किया हो। महाराष्ट्रके त्याग, संयम और संस्कृतिके साथ गुजरातकी व्यवहारबुद्धिको मिलानेकी ज़रूरत है। जब शिवाजीकी ज़रूरत थी, तब भगवानने शिवाजीको भेज दिया; लोकमान्यकी ज़रूरत थी, तब लोकमान्य मिल गये। आज अिस वणिक राज्यके साथ लड़नेके लिअे वणिक नेताकी ज़रूरत है। वह नेता भगवानने गांधीजीको गुजरातमें भेजकर हमें दे दिया है। यहाँ कहा गया है कि अेक पक्षी पेड़ पर है और अेक शिखर पर है। जिसे जहाँ अुड़ना हो वहाँ अुड़े, जिसे जो मार्ग लेना हो सो ले। यह बात गलत है। हम सब खड्डेमें पड़े हुअे हैं और अुसमें से निकलनेके लिअे अेक ही मार्ग अपनाना है। अेक-दूसरेके पैर खींचने लगेंगे, तो गिर जायँगे। गांधीजीकी शिक्षाको आप साधुओंकी शिक्षा बताकर फेंक देते हैं। मगर मैं साधु नहीं हूँ। मैं तो व्यवहार समझनेवाला आदमी हूँ। मैं यों ही घरबार छोड़कर, दिवाला निकालकर बैठनेवाला आदमी नहीं हूँ। मैं तो हमारी असेम्बलीके अध्यक्षसे भी कहता हूँ कि वहाँ क्यों बेकार पानी बिलो रहे हैं? यहाँ आअिये और गांवोंमें बैठकर काम कीजिये। हम सरकारकी हड्डी-हड्डी ढीली कर देंगे। वहाँ पार्लियामेण्टरी प्रोसीजर पढ़कर असेम्बलीके सामने हाजिर किये हुअे दस पन्नेका रूलिंग पढ़कर सुनाओ, अितनेमें तो वह आ

धमकता है और कहता है कि तुम अपना रूलिंग अपनी जेबमें रखो, मुझे तो कानून बनाना है और तुम्हारा अधिकार छीन लेना है। जब वह अधिकार छीन लेगा, तब विट्ठलभाअी अुसे छकानेके लिअे और कोअी तरकीब ढूँढ़ेंगे। मगर अिससे कुछ नहीं होगा। मैंने तो बारडोलीमें फिरसे जाँचकी माँग की थी। सरकारने बातका बतंगड़ बना दिया और यह शोर मचा दिया कि 'यहाँ जॉर्जका राज्य चलता है या व्यक्तियोंका राज्य चलता है।' मगर वे लोग तो नब्ज़ पहचानते हैं। झटसे मान गये। महाराष्ट्रमें अिस बातके लिअे क्षेत्र है, मगर आप लोगोंमें दो मत हों, तो अैसी बात न कीजिये। अैसे प्रयोग अेक ही तरहके वातावरणमें हो सकते हैं। अुसमें आप यह कहें कि सबको जिस मार्गसे जाना हो, जानेका अधिकार है, तो यह बात नहीं चलेगी। बम मारनेका अधिकार सबको भले ही हो, मगर महाराष्ट्रके गाँवोंमें सत्याग्रह चल रहा हो और पुलिस भैंस पकड़ ले जाय, तब यदि कोअी किसान पुलिसको मारने खड़ा हो जाय, तो फिर अुस सत्याग्रहका खातमा ही समझो। हमें अैसा लगता हो कि कुछ पढ़े-लिखे नौजवान अुल्टे रास्ते जा रहे हैं, तो हम अुन्हें रोकें। बम फेंकनेवालोंका अितिहास पढ़िये। बीस वर्षसे बंगालमें यह कांड चल रहा है। वहाँ कितने आदमियोंने माफ़ी माँगी, कितनोंने जुर्मका अिक़बाल किया, कितनोंसे माँ-बाप मिलनेसे अिनकार करते थे और कितनोंको घरबार छोड़ना पड़ा था? अैसे वातावरणमें सारे देशको नहीं रखा जा सकता। जयरामदासने अेक रास्ता बमका और दूसरा अहिंसाका बताया मगर अैसा नहीं है। अेक रास्ता फौजका और दूसरा अहिंसाका है। लश्करकी हिंसासे सफलता पानेके लिअे भी योजना चाहिये, व्यवस्था चाहिये। हमारे पास हिंसाकी योजना बनानेके लिअे साधन या शक्ति कहाँ है? अगर वह शक्ति और साधन होते तो आप अैसे भोले नहीं हैं कि गांधीजीकी बात मानकर बैठे रहते। बहुतसे यह कहते हैं कि गांधीजीने हिन्दू-मुसलमानोंकी अेकताकी बात कहकर फँसा दिया। मैं कहता हूँ कि जो मुसलमानोंके हाथों मार खाते हैं, वे अपनी कायरता छिपानेका बहाना ढूँढ़नेके लिअे गांधीजीका नाम लेते हैं। गांधीजीने किसीको भागनेकी या कायरताकी सलाह नहीं दी। अुन्होंने तो सीना तानकर मर जानेकी या दुश्मनका मुक़ाबला करके अुसे मारनेकी बात कही है। आपमें ताक़त हो, तो लड़कर निपट लीजिये। हाँ, पीठ पीछेसे किसीको मारना तो बहादुरीका काम नहीं है।

लगानका सवाल महाराष्ट्रका ही नहीं, सारे प्रान्तका है और होना चाहिये। यह बात श्री गोखले कह गये हैं यह मैं जानता हूँ। मैं बारडोलीका प्रयोग करके सो नहीं गया। जब तक किसानोंका दु:ख मेरे दिलमें बसा हुआ

है, तब तक मैं अुसे छोड़नेवाला नहीं हूँ। मगर महाराष्ट्रसे मैं अेक ही तरहके वातावरणकी माँग करता हूँ। वातावरण अेक ही तरहका हो जाय, तो महाराष्ट्रके साथ गुजरातको अेक करनेमें अड़चन न हो; और जिस दिन महाराष्ट्र और गुजरात अेक हो जायँगे, अुस दिन कितने ही शक्तिशाली राज्यको भी सप्ताह भर शासन करना मुश्किल हो जायगा। मैंने बोरसदमें प्रयोग किया, बारडोलीमें किया, दूसरी जगह भी करूँगा। परन्तु जैसे घास बरसात होने पर ही अुगती है, वैसे ही आम लोगोंको अेकसा वातावरण होने पर ही तैयार किया जा सकता है। आज महाराष्ट्र अेक स्वरसे नहीं बोलता। अुसमें अनेक दल हैं, खादीवाले अेक बात कहते हैं, अपरिवर्तनवादी दूसरी, और कौंसिलवाले तीसरी। मैंने अैसा सुना है कि कर्नाटकमें महाराष्ट्रकी संस्कृति लुट रही है, अिसका झगड़ा चल रहा है। मेरी सलाह है कि आप विद्वानोंसे कह दें कि वे किसी शहरमें जाकर लाअिब्रेरीमें बैठकर काम करें। खादीवालोंसे मैं कहता हूँ कि झगड़ेमें मत पड़ो; चित्त शान्त न रहता हो, तो मेरे पास आ जाओ। आपको तो यहाँ बड़ा मंडप बनाना पड़ा, और बनानेवालोंका आभार मानना पड़ता है। हमारे यहाँ चार घंटेमें मंडप बन गया। वहाँ पंखोंकी ज़रूरत नहीं पड़ती थी। हमें तो पेड़ोंके नीचे ठंडी हवा मिलती ही रहती थी। यहाँ तो आपको कअियोंका अुपकार मानना पड़ता है, और किसीका नाम रह जाय तो फिर माफ़ी माँगो। अरे कहीं अुपकारोंकी भी कोअी सूची होती है? अमुक अमुक वगैरा, अितना काफी है। हमारे यहाँ परिषदें तीन घंटेमें पूरी होती हैं और सप्ताह भरमें तीन-तीन परिषदें होती हैं। अुनमें हज़ारों स्त्री-पुरुष आते हैं और पुरुषोंके जितनी ही स्त्रियाँ भी हाज़िर होती हैं। महाराष्ट्र न पूनामें है, न बांद्रामें। वह तो देहातोंमें है। महाराष्ट्रके सौभाग्यसे महाराष्ट्रमें बहुतसे शहर नहीं है। हमारे यहाँ कअी शहर हैं और मेरे शहरमें अनेक मिलें हैं। मैं कभी मिलोंकी और मिलके कपड़ेकी बात करूँ तो शायद चले भी, मगर आप किस हिसाबसे मिलके कपड़ेकी बात करते हैं, यह मैं नहीं समझ सकता। आपको तो गरीब देहातियोंकी ही बातें करनी चाहियें। आपको तो यही अुपाय ढूँढ़ना चाहिये कि महाराष्ट्रके देहातियोंको जो दो रुपये महीना मिलते हैं अुसके चार कैसे किये जायँ। वह अुपाय गांधीजीने बताया है, अुसके सिवाय और कोअी नहीं हो सकता। महाराष्ट्र और गुजरातकी स्थिति भिन्न-भिन्न नहीं है। क्या आप समझते हैं कि बारडोलीमें रुपया मिल गया और महाराष्ट्रमें नहीं मिलेगा? अरे, बारडोलीमें मिले, अुसमें ड्योढ़े जुटा देना मेरा काम है। हिन्दुस्तानमें जहाँ-जहाँ शुद्ध यज्ञ हुआ है, वहाँ-वहाँ दान देनेवालोंका अभाव क्या कहीं भी मालूम हुआ है?

बस अेक ही बातकी जरूरत है। आपको वातावरण अुत्पन्न करना चाहिये। बारडोलीमें शराबवाले, बनिये, ढेढ़, भंगी, हिन्दू, मुसलमान सबको साथ रखा। अैसा वातावरण बनाओ, तो किसानोंको विश्वास हो। बम्बअी सरकारमें आजकल कुछ अफसरोंका दुष्चक्र चल रहा है। अेण्डरसन जैसे अफसरने अैसी बातें की हैं, जिससे सरकार बेवकूफ बनती है। अुसने धारासभामें पानीपत जैसा खून-खच्चर मचानेका कहा है। मैंने कहा: भाअी, पानीपतमें किसीका भी नहीं रहा। दोनों पक्ष नष्ट हुअे। तुम्हारा भी अैसा ही होगा। अुसमें मेरा क्या? कितने ही प्रस्ताव किये, अुन्हें पी गये। अिन लोगोंकी नीयत ही खराब है। बारडोलीमें बोल्शेविज़्मकी बातें कीं, तब मैंने कहा: मैं जमानत देता हूँ कि यहाँ झगड़ा नहीं होगा। मेरा साक्षी वह बम्बअीवाला पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट हीली है। अिन लोगोंको वशमें करनेका अेक ही रास्ता है— अिनके शस्त्रबलको निकम्मा बना दिया जाय। मैं बारडोलीमें पुलिससे कहा करता था कि गोलियाँ और लट्ठ खेलो, तुम्हारे लिअे यहाँ कोअी काम नहीं है। महाराष्ट्रमें अैसा वातावरण बना दीजिये कि पुलिसको खेल खेलना ही रह जाय। फिर तो जो बारडोलीमें हुआ वही महाराष्ट्रमें भी हो सकेगा। महाराष्ट्र और गुजरातकी हद तो लगी हुअी ही है।

मैंने तो यह रास्ता बता दिया। आपके पास और रास्ता हो तो वह बताअिये। नहीं तो वाद-विवाद छोड़िये और हमारे साथ हो जाअिये। गंगाधरराव और मैं दोनों आपके यहाँ आकर डेरा डाल देंगे। आपने मेरे प्रति जो बेहद प्रेम दिखाया है, अुसके लिअे मैं आपका आभार मानता हूँ। दो दिनके अितने अनुभवके बाद ही मैं गुजरात और महाराष्ट्रको साथ होनेकी बात कह रहा हूँ। अीश्वर आपको सन्मति दे।

नवजीवन, १२-५-१९२९

५२
तामिलनाड़का दौरा

[सितंबर १९२९में तामिलनाड़में दिये गये भाषणोंका सार।]

१
वेदारण्य परिषद्‌में

मेरे जैसे किसानके लिअे आप जैसे वक्ताओं और कुशल राजनीतिज्ञोंमें स्थान नहीं है। मुझमें किसानोंमें काम करनेकी निपुणता है और अिसीमें मेरी शक्ति और अशक्तिकी मर्यादा रही हुअी है।' मैं अभी तक अुस अरुचिकर लगनेवाले असहयोगका ही अुपासक हूँ। और आप जानते ही हैं कि १९२१ के अुस पुराने कार्यक्रमके बारेमें मेरा विश्वास घटनेके बजाय अुलटे बढ़ गया है। फिर भी आपने मुझे क्यों बुलाया है? हम अैसी भयंकर स्थितिमें आ पड़े हैं कि गांधीजी जैसेको भी कांग्रेसकी पतवार सम्हालनेमें संकोच होता है। हम अुनका नाम चाहते हैं, पर अुनका कहा हुआ काम नहीं करना चाहते। अतः अुन्हें हमारा पथ-प्रदर्शन करनेकी अुमंग कैसे हो? देशको आज कांग्रेसका कार्यक्रम पूरा करनेकी ज़रूरत है। अिस वक्त जो चर्चाअें और विवाद चल रहे हैं, अुनमें मुझे जरा भी दिलचस्पी नहीं है।

धारासभाओंके कार्यक्रमका जो भूत हमने खड़ा कर दिया है, वह अेक दिन हमें निगल जायगा। अुस कार्यक्रमके कारण जो कुछ करना है, वह तो हमें सूझता ही नहीं। मगर हम हवामें हाथ मार रहे हैं। आपके पवित्र मन्दिरोंके प्रान्तमें, शंकर और रामानुज जैसे ऋषियों और नन्द जैसे साधुओंके प्रदेशमें अस्पृश्यताकी दुर्गंध क्यों हो? जमनालाल बजाज जैसा सच्चा वैष्णव अिस समय हिन्दुत्वकी सेवा कर रहा है। अुसके कार्यसे कुछ सीखिये और अपने मन्दिरोंको अछूतोंके लिअे खोलकर सच्चे देव मन्दिर बनाअिये। आपके ब्राह्मण ब्राह्मणेतरके झगड़ोंकी दुर्गंध भी कँपकँपी लानेवाली है। जब तक आप अिस दुर्गंधको नहीं मिटायेंगे, तब तक कोअी काम नहीं होगा। खादी और मद्यनिषेधके बारेमें आपके यहाँ आकर बात करना — दोनों विषयोंमें निष्णात राजगोपालाचार्यके प्रदेशमें आकर अिस बारेमें बात करना — काशीमें गंगाजल ले जानेके बराबर है। यह आदमी आपको खादीधारी नहीं बना सकेगा, तो दुनियाका और कोअी भी आदमी नहीं बना सकेगा। मद्यनिषेधका काम आप अच्छी तरह

कर रहे हैं और आपने अपने प्रयत्नोंका अपनी सरकार पर अच्छा असर डाला है। अिस प्रयत्नके परिणामस्वरूप सरकारने मद्यनिषेधके प्रचारके लिअे चार लाख रुपये मंजूर किये हैं। मगर चार लाख रुपये किस अुद्देश्यसे मंजूर किये गये हैं, वह कौन जाने? क्या यह अगले चुनावके लिअे पानी आनेसे पहले पाल बाँधना तो नहीं है? नहीं तो चार लाखकी मदद देनेके बजाय सरकार अितनी दुकानें ही क्यों नहीं बन्द कर देती? हमारे जैसे देशमें मद्यनिषेधके प्रचारकी क्या ज़रूरत हो सकती है? युरोप-अमेरिकामें भले ही आवश्यकता हो, क्योंकि वहाँ तो शराब पीनेमें अिज्ज़त समझी जाती है। मगर यहाँ जिस वस्तुका प्रत्येक धर्ममें निषेध है, अुसका प्रचार करनेकी क्या ज़रूरत हो सकती है? अगर सरकारकी नीयत साफ़ हो, तो वह हरअेक ग्राम-पंचायत और स्थानीय संस्थाको अिस मामलेमें क़ानून बनानेकी अिजाजत दे, झूठे मुकदमे चलाना बन्द कर दे और अपने अधिकारीवर्गको सूचित करे कि मद्यनिषेध सरकारका अनिवार्य ध्येय है और वे लुकछिपकर भी अुसके विरुद्ध प्रचार न करें। आज तो अधिकारी समझते हैं कि वे शराब पीनेका प्रचार करेंगे, तो सरकार अुनकी पीठ थपथपायेगी।

हमारे प्रान्तकी तरह आपके यहाँ भी लगानका सवाल बड़ा विकट है। आप तो कअी बार अिसके लिअे धारासभामें प्रस्ताव भी करा चुके हैं, फिर भी सरकारको अुन प्रस्तावोंकी कोअी परवाह नहीं है। अगर आपके लिअे सत्याग्रहका अुचित कारण न हो, तो और किसके लिअे हो सकता है? लगानका तरीका जितना हमारे यहाँ खराब है, अुतना ही आपके यहाँ भी है। हमारे यहाँ जैसे खूब अन्धेरगर्दी चलती है, वैसे ही आपके यहाँ भी है। आप अपनी धारासभाके सदस्योंसे क्यों नहीं कह देते कि या तो वे अिस स्थितिको खतम करवायें, या पूरी तरह सुधरवायें, वर्ना धारासभासे निकलकर आपसे सत्याग्रह करायें!

हम अिस समय अुल्टे रास्ते चल रहे हैं। १९२१ के कार्यक्रमके बिना अुद्धार नहीं होगा। आपकी काम करनेकी नीयत ही न हो, तो ध्येय बदलकर क्या करेंगे? अगर सारे नौजवान आज ही कॉलेज छोड़नेको तैयार हों, तो सबके लिअे काफी काम है। अिन लगान और शराब सम्बन्धी नीतिके दो प्रश्नोंसे टक्कर लेनेके लिअे अुन नौजवानोंकी सेना सहज ही तैयार हो सकती है और अुससे सरकारकी हड्डी-पसली ढीली की जा सकती है! मगर किया क्या जाय! आज तो 'अिन्डिपेन्डेन्स' के प्रस्तावमें ही आपको कृतकृत्यता मालूम होती है! यह निश्चित समझ लीजिये कि सच्चे त्याग और आत्मशुद्धिके बिना स्वराज्य नहीं आयेगा।

२

पुराना कार्यक्रम चाहिये

जो कार्यक्रम अेक ही वर्ष तक देशके सामने रखा गया और जिसके वेगसे हमने आकाशमें अुड़कर कअी अजीब सपने देखे थे, जिसके परिणाम-स्वरूप स्वराज्य लगभग सामने आकर खड़ा हो गया था, जिस कार्यक्रमने अैसा वातावरण पैदा कर दिया था कि मनुष्य बुरा करते या पाप करते अपने आप डरता था, वह कार्यक्रम अेक ही वर्षमें बंद हो गया। अिसके बाद नया कार्यक्रम देशके सामने आया। अैसे चलते हुअे छः वर्ष हो गये, मगर अुसके कारण हम आगे नहीं बढ़े। हमारे देशमें झगड़े बढ़ गये हैं, दल बढ़ गये हैं, वातावरण दूषित हो गया है और धारासभाओंको तोड़ देनेके निश्चयके साथ अुनमें जानेवालोंको आज धारासभाओंने थकाकर चूर-चूर कर दिया है। आज तो आपके प्रान्तमें धारासभाओंमें जाकर मंत्रियोंकी जगह लेनेकी बातें हो रही हैं, अमुक दलको बाहर निकाल देनेकी बातें हो रही हैं और साथ ही साथ 'अिन्डिपेन्डेन्स' लेनेकी बातें हो रही है। सरकार भोली नहीं है कि वह आपकी अिन बातोंसे धोखेमें आ जायगी। आपने अपने यहाँकी लगान-नीति बदलवानेके लिअे सबसे पहले आन्दोलन किया था, पार्लियामेण्टके लगानको धारासभाके नियंत्रणमें लानेकी सिफ़ारिश किये आज दस साल हो गये, मगर आपकी सरकार आज मजेसे लगान बढ़ाती जा रही है। अिसका क्या कारण है? अिसका कारण यह है कि आप आपसमें खूब लड़ रहे हैं। सरकार कहती है कि अच्छा है लड़ते रहें। आपसमें लड़ना बन्द करेंगे तभी तो हमारे साथ लड़नेकी फ़ुरसत मिलेगी! मैं आपसे कहता हूँ कि आप अपने झगड़े अेक वर्षके लिअे ही भूल जािअये और लगान-नीति बदलवानेके लिअे संगठन कीजिये। आज आपके नेता स्वतंत्रताके नारे लगाते हैं, मगर कौनसा काम करके स्वतंत्रता ली जाय अिसकी किसीको परवाह नहीं है। गांधीजीको अध्यक्षपद देना है, परन्तु गांधीजीका चरखा किसीको नहीं चाहिये। मैं आपसे कहता हूँ कि अिस बीसवीं सदीमें जिस शहरमें ७५ मिलें चल रही हैं, अुसी शहरके पास नदीके किनारे बैठकर जो आदमी अपने चरखेसे तार निकाल रहा है, अुसके बारेमें आप क्या सोचते हैं? अगर आप अुन्हें पागल समझते हों, तो अुनका नाम अध्यक्ष-पदके लिअे सुझानेवाले आप लोग क्या अुनसे ज्यादा पागल नहीं है? मगर वे पागल नहीं हैं। अुनका व्यावहारिक ज्ञान मुझसे और आपसे ज्यादा है; और हम आज नहीं तो कल अुनके बताये हुअे मार्ग पर ही आनेवाले हैं।

३

किन ब्राह्मणोंसे लड़ें

आपको ब्राह्मणोंसे द्वेष क्यों होता है ? अिन ब्राह्मणोंने आपका जो बिगाड़ किया है, अुससे ज्यादा अुन दूसरे ब्राह्मणोंने आप दोनोंका नुकसान किया है, अिसका आपको पता है ? ५ हज़ार मील दूरसे आकर जो लोग राज कर रहे हैं, वे ब्राह्मण बन बैठे हैं। वे हैं तो 'पंचम' जातिमें गिनने लायक, मगर आप ब्राह्मण और अब्राह्मण दोनों अुन्हें 'ब्राह्मणों' की तरह पूजते हैं और सुबह-शाम अुनकी खुशामद करते हैं। आपको अुन ब्राह्मणोंसे लड़ना है, अुन ब्राह्मणोंको आप पर ज्यादती करनेसे रोकना है या अिन ब्राह्मणोंको रोकना है ? यह मान लें कि अिन ब्राह्मणोंने आपका बहुत बिगाड़ा है, मगर अुन ब्राह्मणोंके बराबर तो हरगिज़ नहीं बिगाड़ा। आपके मॉ-बापोंने तो अिन्हीं ब्राह्मणोंसे क्रिया करवा कर विवाह किया था, तो आज आपको अुनसे विवाह कराना क्यों बुरा लगता है ? क्या ब्राह्मण आपसे अूँचे हैं ? आप अपने आपको अुनसे अूँचे क्यों नहीं मानते ? जो आदमी खेतीसे अनाज पैदा करता है, वह दुनिया भरमें सबसे अूँचा है। मैं अुस जातिमें पैदा हुआ हूँ, और आप भी अुसी जातिके हैं। आप क्यों अपनेको नीचा मानते हैं ? और जहाँ रामानुज जैसेने भी अब्राह्मणको गुरु बनाया और जहाँ गांधीजी जैसे अब्राह्मणके आगे बड़े बड़े मान्धाता जैसे ब्राह्मणोंकी गरदन झुकती है, वहाँ आप अिन ब्राह्मणोंके अूँचेपनसे क्यों डरते हैं ? कुछ भी हो, अेक वर्षके लिअे आप अपने झगड़े संदूकमें बंद कर दीजिये, ज़रूरत हो तो दस्तावेज लिख कर व स्टाम्प लगाकर अुसे तिजोरीमें रख लीजिये। सरकारके साथ लड़ लेनेके बाद हम आपसमें लड़ लेंगे। आजकल तो ये लड़ाअियाँ केवल आत्महत्या करनेके बराबर हैं।

४

विधिके बिना विवाह करनेवालोंसे अुन्होंने कहा : आपको चार आनेमें शादी करनी हो तो शौकसे कीजिये। परन्तु चार मिनिटमें विवाह करनेकी बात कहें तो मैं काँप अुठता हूँ। भले ही आपको ब्राह्मणकी ज़रूरत न हो, परंतु अिस गंभीर विधिका कोअी साक्षी तो चाहिये। आपके माँ-बापने अिसी विधिसे शादी की, पर अिससे आपका क्या बिगड़ा ? मगर यह बात छोड़ दें तो भी क्या आपको यह पता है कि विधि मात्रको मिटा देनेसे, कोअी बदमाश आदमी अच्छेसे अच्छे प्रतिष्ठित आदमीकी लड़कीको अुड़ा ले जाय और पॉच साक्षी खड़े करके कहे कि 'यह मेरी स्त्री है', तब आप क्या करेंगे ?

५

[अेक छोटेसे मंडलके सामने बोलते हुअे अस्पृश्यताके बारेमें अुद्‌गार ।]

अस्पृश्यकी व्याख्या आप जानते हैं? प्राणीके शरीरमें से जब प्राण निकल जाते हैं, तब वह अस्पृश्य बन जाता है । मनुष्य हो या पशु, जब वह प्राणहीन बन कर, शव होकर पड़ जाता है, तब अुसे कोअी नहीं छूता और अुसे दफ़नाने या जलानेकी क्रिया होती है । मगर जब तक मनुष्य या प्राणीमात्रमें प्राण रहते हैं, तब तक वह अछूत नहीं होता । यह प्राण प्रभुका अेक अंश है और किसी भी प्राणीको अछूत कहना भगवानके अंशका, भगवानका तिरस्कार करनेके बराबर है । यही बात आपको अेक पवित्र ब्राह्मण विचार और आचरणसे सिखा रहे हैं । अुनका आप विरोध करते हैं? आपके अैसे भाग्य कहाँ हैं कि यह आदमी यहाँ आकर बैठे और आपकी सेवा करे? मैंने तो अिनसे कह दिया कि यदि लोगोंको आपकी सेवा नहीं चाहिये, तो अिन लोगोंको छोड़ दीजिये । आप कहते हैं कि अुन्होंने धर्मको भ्रष्ट कर दिया, अिसलिअे आपके यहाँ बरसात नहीं होती । यह बात गलत है । मैं अपने प्रान्तमें यही बात कर रहा हूँ, और भी बहुतसे अस्पृश्यता-निवारणका काम कर रहे हैं, और अुन सबके प्रदेशोंमें बरसात होती है । बरसात नहीं बरसनेका कारण हमारे दोष ही होंगे । भगवान किसीको दूसरेके दोषोंके लिअे सज़ा नहीं देता । हरअेक आदमी अपने ही दोषोंसे दुःखी होता है । अिसलिअे यदि आप अपने संकटका कारण राजाजीको मानते हों, तो यह आपकी बड़ी भूल है । आप अब भी चेतिये । अीश्वरसे प्रार्थना कीजिये कि वह आपको स्वच्छ बनाये और गलत क़दम अुठानेसे रोके ।

नवजीवन, ८/१५/२२-९-१९२९

५३

कर्नाटकका दौरा

[सन् १९२९ के सितम्बरमें तामिलनाडका दौरा खतम करके कर्नाटकमें आये, तब वहाँकी अलग अलग संस्थाओं और किसानोंके समक्ष दिये गये व्याख्यानोंसे ।]

१

(बंगलोरके गुजरातियोंसे)

गुजरातको शोभायमान कीजिये, जहाँ रुपये कमाते हैं अुस प्रदेशकी भलाअीमें पूरी दिलचस्पी लीजिये, अुसकी सेवा कीजिये और खादीके बारेमें अितना प्रेम पैदा कीजिये कि दूरसे खादीकी सफ़ेद टोपी और पूरे खादीके कपड़े पहने हुअे भाअियोंको आते देखकर यही खयाल हो कि ये तो गुजराती ही होंगे ।

२

(बंगलोरमें साअिन्स अिन्स्टिट्यूटके विद्यार्थियोंसे)

आप अूँची शिक्षा पा रहे है, अिसलिअे अपने गरीब भाअियोंको मत भूलिये । अुनकी पसीनेकी कमाअीसे ही आपको शिक्षा मिल रही है । आप कैसी भी शिक्षा लीजिये, मगर अैसे मत बन जाअिये कि जब आप गरीब किसानोंमें जायँ, तो जैसे मोटरको देखकर किसानोंके बैल बिदकते हैं, वैसे किसान आपको देखकर बिदक जायँ । आप विज्ञानकी अितनी पढ़ाअी कर रहे हैं, तो आपके विज्ञानके अध्ययनका परिणाम यह आना चाहिये कि किसान अेक बालके बदले दो बाल पैदा करने लगें, अर्थात् पैदावार दुगुनी हो जाये ।

३

(किसानोंसे)

हमारी सरकारकी बुद्धिकी बलिहारी है । अुसे सिंधकी मरुभूमिमें बाग लगाना है । वहाँ करोड़ों रुपये रेतमें गाड़ना है । बारह करोड़की बात थी पर बावन हो जायँगे । परन्तु अैसा करनेमें गुजरातका बगीचा वीरान हो जायगा और आखिरमें असली काम भी नहीं बनेगा । अिसका सरकारको क्या पता ? अैसी बेवकूफ़ी और कहीं भी बरदाश्त नहीं हो सकती । सरकारने दिवाला निकाल दिया है, और परिणाम स्वरूप अुसे यह मालूम होते हुअे भी कि अुसकी लगान-नीति गलत है, अुसे सुधारनेकी अुसकी हिम्मत नहीं होती । आजकल सरकारको शुद्ध और कुशल शासन-व्यवस्थाकी परवाह नहीं है, परन्तु अुस शासन-व्यवस्थाके

लिअे रुपये अिकट्ठे करनेकी ही परवाह है। सरकारको चाहे किसी बातकी परवाह हो, हमें तो प्रामाणिक लगान-नीतिकी ही परवाह है और हम अुसको जारी करा कर ही चैन लेंगे। सरकारको चाहिये तो बड़े वेतनवालोंकी कमी कर दे, अुनके वेतन कम कर दे — स्वराज्यमें तो मंत्रियोंको चार हज़ार रुपये मासिक हरगिज़ देखनेको नहीं मिलेंगे — वह कुछ भी करे, मगर अुसे किसानोंको चूसनेकी नीति बदलनी पड़ेगी। आप किसान लोग अेक ही वस्तु अपनेमें पैदा करके वह नीति बदलवा सकेंगे — निर्भयता या अीश्वर-श्रद्धा। अपनी फूट तो छोड़नी ही पड़ेगी। अिसके बिना कोअी चारा ही नहीं। मगर आप लड़ते झगड़ते रहेंगे तो भी मैं अुस बातको नहीं छोड़ूँगा। मैं गुजरातके किसानोंके ज़रिये लड़ लूँगा। मगर आप यह न चाहते हों कि गुजरातके किसान ही पिसते रहें, तो आप फूट छोड़िये और अेक हो जाअिये। अेक हो जानेसे शायद हम आसानीसे बाज़ी जीत लेंगे।

आपके प्रतिनिधि धारासभामें जाकर अेक दूसरेके साथ लड़नेका धंधा करते हैं और बाहर आपको लड़ाते हैं। क्या यह अच्छा है? क्या आप अुनके लड़ानेसे लड़ेंगे? (किसान बोले: 'अब हम अुनका कहना नहीं सुनेंगे। अुन्हें हमारा कहना सुनना पड़ेगा।')

(अिस पर वल्लभभाअी बोले:) 'तो अुनसे कहिये कि किसान संघमें शरीक हो जाअिये, न होना हो तो अुसका कारण बताअिये। अगर शरीक न हों तो मान लीजिये कि वे सरकारसे डरनेवाले हैं, सरकारके पक्षके हैं। अुनसे पूछिये कि आप सरकारका भला चाहते हैं या हमारा?' (अेक जगह पूछा:) 'आपके प्रतिनिधि चिकोड़ी अंगड़ी क्यों लड़ते हैं?' किसान बोले: 'अपने स्वार्थके लिअे।' 'तो अैसे लोगोंको आप किसलिअे चुनते हैं?' किसान बोले: 'अैसी सलाह देनेवाला आपके सिवाय और कोअी अभी तक हमें नहीं मिला।'

'अिस सरकारके बिना काम चल सकता है, लेकिन रोटीके बिना नहीं चल सकता।' 'सरकार अीश्वर जैसी निष्पक्ष है; अुसके लिअे ब्राह्मण ब्राह्मणेतरका भेद नहीं। वह सबको अेकसा समझती है।' 'सरकार है ही कहाँ? बारडोलीके लोग सरकारका नाम ही भूल गये। अिसलिअे सरकारके आदमी बारडोलीमें कैदी बन गये।' 'सरकारको आपको शिक्षा देनेकी अितनी चिन्ता नहीं है, जितनी आपके लिअे शराब पीनेकी सुविधा कर देनेकी है।' 'वकील और अदालतके पास जानेसे यमराजके यहाँ जाना बेहतर है। दुनियामें भगवानके नाम पर जितना झूठ अदालतोंमें बोला जाता है, अुतना और कहीं नहीं बोला जाता होगा।' 'ये अदालतें और शराबकी दुकानें शैतानके घर हैं।

विदेशी कपड़ा भी अैसी ही चीज़ है। अिन तीनोंको छोड़ कर सरकारको भूल जाओ और निर्भय होकर बैठ जाओ, तो आपका बाल भी बाँका नहीं होगा।'

नवजीवन, २९-९-१९२९

५४
बिहारयात्रा

[दिसम्बर १९२९ में बिहारके दौरेमें वहाँके किसानोंके सामने प्रगट किये गये अुद्गार।]

१
'क्रांतिकी जय' बोलनेवाले युवकोंसे

आप नौजवान लोग जो 'क्रान्तिकी जय' और 'साम्राज्यवादका क्षय' आदि नारे लगाते हैं, अुनसे मैं पूछता हूँ कि क्या आप अिनका अर्थ भी समझते हैं या जैसे तोता राम-राम रटता है, वैसे ही नारे लगाते हैं? क्रान्ति (रिवोल्यूशन) कहाँ है, यह मुझे बतायेंगे? अंग्रेज़ 'लाँग लिव दि किंग' बोलते हैं अुसका अर्थ है, रूसी लोग 'क्रान्तिकी जय' बोलते हैं अुसका भी अर्थ है। क्योंकि अंग्रेज़ोंके पास नामका राजा है और रूसमें सच्ची क्रान्ति हुअी है। मगर हमारे यहाँ क्या है? हमारे यहाँ तो राजा भी नहीं है और क्रान्ति भी नहीं। अेक बार क्रान्ति कीजिये, फिर 'जय' बुलवाअिये। जो चीज़ है ही नहीं, अुसकी 'जय' क्या बुलवाअी जाय? हाँ, अेक क्रान्तिकी जय बुलवा सकते हैं। आपके यहाँ चम्पारनमें 'रिवोल्यूशन' हुआ था। अुस रिवोल्यूशनसे आप देश-विदेशमें प्रसिद्ध हुअे। अुसका अर्थ किसान समझते हैं। अिसलिअे आपको नये राष्ट्रीय नारेकी ज़रूरत हो, तो बोलिये 'चम्पारन सत्याग्रहकी जय'। अिस नारेसे किसानोंके दिल जितने हिलेंगे, अुतने और किसी नारेसे नहीं। और आप 'क्रान्ति क्रान्ति' क्या करते हैं? आपने अपने जीवनमें तो क्रान्ति की नहीं। पुराने वहम और रीति-रिवाजोंसे आप चिपटे हुअे हैं, परदा तोड़नेकी आपमें हिम्मत नहीं। मौजूदा पाठशालाओं और विद्यालयोंमें जाकर आपको क्रान्ति करना है, सो कैसे होगी? 'महात्मा गांधीकी जय' के नारेमें जिस क्रान्तिकी जय बोली जाती है, वह और किसी नारेमें कहाँ सुनाअी देती है? क्योंकि महात्माजीका अर्थ हैं क्रान्तिका अवतार। अगर आपको क्रान्तिका दूसरा अवतार देखना हो, तो देखिये न आजकल बिहारमें ही घूमनेवाली मीराबहनको। अुनकी गुदड़ी जैसी मोटी खादीकी साड़ी और अुनका देहाती पहिनावा देखकर वे बिहारकी गंवारिन लगती हैं। वे अपना पींजन और तकली लेकर जितने गाँवोंमें गअी हैं, अुतने गाँवोंमें आप

नहीं गये होंगे। बिहारके गाँवोंकी गन्दगी और गरीबीको जितना वे जानती हैं, अुतना आप नहीं जानते। अुन्होंने देहाती भाषा सीख ली है। वे आपकी स्त्रियोंमें घूमती हैं। अुन्हें न गन्दगीसे घृणा है और न मोटरकी गरज़ है। अुन्हें न अच्छा भोजन चाहिये और न सभ्यताके साधन। फिर भी क्या आप जानते हैं कि वे किसकी लड़की हैं? अुनका बाप अेक बड़ा नौसेनापति था। अुन्हें किसी चीज़की कमी नहीं थी। अुनके घर पर पूरा ठाट-बाट था। अुस सबको छोड़कर वे यहाँ तीरथ करने आयी हैं और गांधीजीकी पुत्री मीराके नामसे प्रसिद्ध हुआी हैं। अुन्होंने अपने जीवनमें अैसी क्रान्ति की है, आप भी वैसी ही क्रान्ति कीजिये न। यदि नहीं कर सकते, तो व्यर्थ बकवास मत कीजिये।

२

किसानोंके साथ

चम्पारनका अितिहास हिन्दुस्तानके अितिहासमें पहला और अमूल्य अध्याय बनेगा। अुस अितिहासका निर्माण करनेवाले आप लोग डरपोक क्यों हैं? आपके ये चेहरे यह नहीं बताते कि आपके यहाँ सत्याग्रह हो चुका है। आपके यहाँ जो सत्याग्रह हो चुका है, अुसके परिणाम मौजूद हैं। निलहे गोरोंका नाम भी नहीं रहा और अनुचित करोंका नामोनिशान मिट गया, यह बात सच है। परन्तु अब जब आपको डरानेवाले ये मनुष्य और कर नहीं रहे, तब आप क्यों डरते हैं? जैसे बैल मोटरसे बिदकता है, वैसे आप सरकार और ज़मींदारके आदमियोंसे डरते हैं। अिस भयका कोअी अर्थ भी है? वे सरकारके आदमी कौन हैं और ज़मींदार कौन है? क्या अुनके दो सिर और चार कान हैं? डर आपको हो या अुन्हें हो? आप तो जगतके अन्नदाता हैं। आप जैसा पवित्र दुनियामें और कौन है? मैं यह नहीं कहता कि आप निर्दोष हैं, मगर यदि कोअी संसारमें कमसे कम पापी मनुष्य है, जो अपने पसीनेकी कमाअी खाता हो, तो वह आप हैं। और आप तो अपने पसीनेकी कमाअी भी पूरी खाये बिना औरोंके पेट भरते हैं। आप न हों तो दुनियाका घड़ी भर भी काम नहीं चल सकता; और दुनियाका न चले, तो ज़मींदारका तो चल ही कैसे सकता है?

३

(चम्पारनमें किसानोंको लक्ष्य करके कहा:)

गांधीजी आपको आशीर्वाद देते हैं, मैं आपको गालियाँ देने आया हूँ। आप चम्पारन निवासियोंके चेहरे पर नूर क्यों नहीं है? रस और कससे भरी हुअी अुपजाअू और कच्चा सोना पैदा करनेवाली धरती होते हुअे भी आपको

पूरा खानेको क्यों नहीं मिलता ? मेहनत मज़दूरी करनेवाले आप पशुओंकी तरह अपंग होकर क्यों बैठे हैं ? आपको शर्म नहीं आती कि आप अपनी स्त्रियोंको परदेमें रखकर खुद ही अधांगवायुसे पीड़ित हैं ? ये स्त्रियाँ कौन हैं ? आपकी माँ, बहन और पत्नी । अुन्हें परदेमें रखकर क्या आप यह मानते हैं कि आप अुनके सतीत्वकी रक्षा कर सकेंगे ? अुनपर अितना अविश्वास क्यों ? या आप अिसलिअे डरते हैं कि वे बाहर आकर आपकी गुलामीको देख लेंगी ? आपने अुन्हें गुलाम पशुओंकी तरह रखा है, अिसलिअे अुनकी औलाद आप भी गुलाम पशुओंकी तरह हो गये हैं । बारडोलीमें मैंने लोगोंसे कह दिया था कि आप अपनी स्त्रियोंको मुझसे मिलने और बात करनेकी स्वतंत्रता न दें, तो मुझे सत्याग्रह नहीं कराना । स्त्रियाँ समझ गअीं और सभाओंमें आने लगीं, और कुछ समय बाद तो सभाओंमें पुरुषोंके बराबर ही स्त्रियाँ भी आती थीं । मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह जाकर अपनी स्त्रियोंको सुनाना और कहना कि गुजरातसे अेक किसान आया था, जो कह रहा था कि तुम बाहर नहीं निकलोगी, तो अपने लिअे कभी सुख न होगा । मेरी चले तो मैं सब बहनोंसे कह दूँ कि अैसे डरपोक और नामर्दोंकी स्त्रियाँ बननेसे तो अुन्हें तलाक दे देना अच्छा है ।

४

(जमींदारोंकी तरफसे किसानों पर लगान वगैराके जुलमके सिलसिलेमें बोलते हुअे कहा :)

आपके और सरकारके बीचमें यह दलाल कहाँसे आ खड़ा हुआ ? हमारे यहाँ तो अैसे दलाल नहीं दिखते । क्या अिनके बाप-दादे ज़मीन जोतने गये थे या कमाने गये थे ? किसने अिनके हक़ 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' साबित कर दिये ? यह किसके घरका कानून है कि वे हमेशा सरकारको अेक निश्चित रकम देते रहें और आपसे लिया जानेवाला लगान बढ़ाते ही चले जायँ ? आप अिस कानूनको क्यों मानते हैं ? आपका पेट न भर जाय, तब तक आप अिन्हें कुछ भी देनेको क्यों तैयार होते हैं ? आप अुतना ही अनाज पैदा करके बैठ जाअिये, जितना आपके खानेके लिअे काफ़ी हो । तब अिन लोगोंको पता चलेगा । जहाँ-जहाँ अन्याय दिखाअी दे, वहाँ-वहाँ विरोध कीजिये, अपने नेताओंके साथ बातचीत कीजिये, संगठन कीजिये, अेक हो जाअिये और हरअेक अन्यायी कर देनेसे अिनकार कर दीजिये । बारडोलीके किसानोंके पास और कोअी ताक़त नहीं थी । अिनकार करके बैठे रहनेकी अुनमें ताक़त थी, अुन्हें मरनेका डर नहीं था, ज़मीनके चले जानेका डर नहीं था और जेल जानेका डर भी नहीं था । आप मरनेसे क्यों डरें ? क्या ज़मींदार अमर होकर आया है ? राजा भी अमर नहीं है, तो ज़मींदार

कैसे अमर होगा ? अेक बार मरना ही तो है। मगर अुसकी चाबी न सरकारके हाथमें है, न ज़मींदारके हाथमें। वह तो सिर्फ़ अीश्वरके हाथमें है। और जेलका डर किसलिअे? आप यहाँ बाहर रहते हैं अिसके बजाय वहाँ सुखमें ही रहेंगे। आपको यहाँ जिन्दा रखनेके लिअे कोअी दवा नहीं देगा, दूध नहीं देगा; मगर वहाँ बीमार पड़ेंगे तो आपको दूध मिलेगा, दवा मिलेगी और अच्छे होंगे तो काम करके तीन बार खानेको मिलेगा। आप ज़मींदारके गुलाम किसलिअे बनते हैं? अुसके आधीन क्यों होते हैं? वह आपका गुलाम बने, आपके आधीन रहे। आप सुखसे खाना सीखिये, अपना अन्न पैदा कीजिये। पहले चाँदी जैसी कपास पैदा करते थे, अब भी संन्यासीको शोभा देनेवाले रंगकी कोकटी कपास पैदा करते हो। वह कपास पैदा करके अपने कपड़े बनाअिये। यह अन्न और वस्त्र पैदा करके, अपना पेट भरके और अपनी लाज ढँककर, बादमें ज़मींदारको देनेकी बात कीजिये। आपकी ज़मीन पर ज़मींदार आपको वृक्ष न लगाने दे और आपकी ज़मीन दूसरेके नाम कर देने पर आपको ज़मीनकी कीमतकी २५-२५ फ़ीसदी भेंट देनी पड़े, यह कौनसा न्याय है? मैंने सुना है कि आपके बारेमें धारासभामें क़ानून बन रहा है। अुस क़ानून पर आप ज़रा भी आधार न रखिये। आप जो करेंगे वही कानून होगा। सिर्फ़ ताकत पैदा कीजिये, संगठन कीजिये और अेक हो जाअिये। आपमें से अेक भी आदमी द्रोह न करे। आपमें से कोअी भी फूट डालनेवाला न निकले। आप अपनी माँगें समझदार नेताओंसे निश्चित करा कर अुतना देनेके लिअे ज़मींदारोंको मजबूर कीजिये, नहीं तो अुनसे कह दीजिये कि तुम्हें फूटी कौड़ी या अेक दाना अनाज भी नहीं मिलेगा।

५

गुड्डे-गुड़ियोंका ब्याह

बिहारमें दौरा करते हुअे अेक जगह अेक ब्राह्मणने भरी सभामें वल्लभभाअीसे पूछा: "आप 'स्वराज्य स्वराज्य' की बातें कहते हैं, परन्तु हमारे पास लड़के-लड़कियोंको अिच्छानुसार ब्याह देने जितना स्वराज्य था, वह भी हम तो खो बैठे हैं।" वल्लभभाअी खूब नाराज़ हुअे और बोले: "जो ब्राह्मण गुड्डे-गुड़ियोंका विवाह करनेके लिअे स्मृतियाँ अुद्धृत करते हैं, वे ब्राह्मण नहीं राक्षस हैं। और जो माँ-बाप अिन ब्राह्मणोंकी बात मानकर बच्चोंको विवाहकी काली माताको भेंट चढ़ाते हैं, वे स्वयं पशु हैं। मेरे हाथमें क़ानून हो तो मैं अैसे लोगोंको गोलीसे अुड़ा देनेकी सज़ा निश्चित करूँ।"

नवजीवन, २९-१२-१९२९

५५

स्नातकोंसे

[ता० १२–१–१९३० को गुजरात विद्यापीठके स्नातकोंके स्नेह-सम्मेलनके अवसर पर दिया गया भाषण ।]

आपने मेरे जैसे निरक्षरको अध्यक्ष क्यों चुना ? आप स्नातकोंका स्नेह-सम्मेलन करें या और कोअी सम्मेलन करें, अुसमें मेरा स्थान तो शायद ही हो सकता है। मैं तो यहाँ गेहूँमें कंकर जैसा बन जाता हूँ । अिसलिअे मैं तो हरअेकसे अिन तीनों दिन पूछता रहा कि बताअिये तो सही कि मैं क्या कहूँ ?

मेरे खयालसे विद्यापीठके लिअे यह स्थान चुननेमें भूल हुअी है। बारडोलीमें भी मैंने जुगतरामसे कहा था कि लड़कोंको लेकर वेड़छी भाग जाओ, नहीं तो लड़कों पर बाहरसे आनेवालोंका असर पड़ेगा । राष्ट्रीय शिक्षाका अुद्देश्य यह है कि किसानोंके लड़के बापदादाकी विद्या न भूल जायँ और वापस देहातमें जाकर रहें । मुझे तो गाड़ी चलानेवाले, खुरपी पकड़नेवाले, चरस खींचनेवाले और हल लेकर खेती करनेवाले चाहिये । आजकल तो सबको हाथ हिलाकर या ज़बान हिलाकर काम करना है। अिस विद्यापीठका अुद्देश्य यह है कि अिसके विद्यार्थी किसानोंके जीवनमें परिवर्तन करनेवाले बनें । यदि कोअी हल पकड़कर चार-पाँच बीघे ज़मीन जोत डाले, तब मैं कहूँगा कि वह सच्चा स्नातक है ।

सिपाही कैसे बनें ?

तुमने मुझे बहुत बार मदद दी है और ज़रूरत पड़ने पर तुम्हें फिर बुलाअूँगा । तुम सबको मेरा कड़वा अनुभव हो चुका है । मैं किसीको मुँह नहीं खोलने देता, मेरे सामने तुम्हें संशोधन रखने या प्रस्ताव करनेका समय नहीं रहेगा । मैं जो हुक्म जारी करता हूँ अुसमें हिंसा है या अहिंसा, अिसकी चर्चा तुम लड़ाअी खतम होनेपर गांधीजीके साथ कर लेना । गांधीजीकी तरह मैं युद्धके समय लाड़-प्यार या चर्चा करने नहीं बैठूँगा — यद्यपि हमेशा ही मेरे भाग्यमें सरदारी नहीं आयेगी । वैसे जब कभी मुझे सिपाही बनना होगा, तब मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि सिपाही कैसे बनते हैं ? असलमें सुख सरदारीमें नहीं, सिपाहीगिरीमें ही है ।

आजकल हिन्दुस्तानके सार्वजनिक जीवनमें काम करनेवाले किसानोंके संगठनकी बातें करते हैं । जो किसानोंको जानते ही नहीं, वे अुनका क्या संगठन करेंगे ? किसान अुनका विश्वास कैसे करेंगे ? पाँच मनका बोझा अुठाकर किसान या

मज़दूर बनो तब मालूम होगा। तभी बौद्धिक और औद्योगिक शिक्षाका अुपयोग मालूम होगा। किसानोंका संगठन करना हो तो किसान बनो। अभी तो गांधीजीने तुम्हारे सामने लड़कियोंके करने लायक काम ही रखा है, अुसीमें तुम बड़बड़ाहट और चिल्लाहट मचा देते हो। कारण तुम शहरके पास हो।

बुद्धिका व्यभिचार

जो खुद धन पैदा न करके दूसरोंका धन लेनेकी तरकीब करता है, अुसे मैं बुद्धिका व्यभिचार कहता हूँ। गुजरातकी खेतीमें कौनसी खाद डाली जाय, क्या परिवर्तन किये जायँ, अिस बारेमें अधिकसे अधिक तुम अेक निबन्ध लिख सकते हो, मगर अुसे हल नहीं कर सकते। तुम्हारी अिस तरहकी बुद्धि और शिक्षाका क्या अुपयोग?

तुलसीदासजी कहते हैं: 'परधन पत्थर मानिये, परस्त्री मात समान।' अितना ही तुम सीख लो, तो विद्यापीठके अच्छेसे अच्छे स्नातक बन सकते हो। तुम अेक भी पुस्तक न पढ़ो तो काम चल सकता है। चरित्रका विकास होगा, तो बुद्धिका विकास तो हो ही जायगा। पुस्तकें पढ़नेवाले हमेशा सच्चरित्र ही होते हों, सो बात भी नहीं है। विद्याविलासियोंमें चरित्रवान भी होते हैं और भोगविलासी भी होते हैं, अैसा मेरा अनुभव है। चरित्रशुद्धि कठिन काम है। मगर अुद्यमी जीवन बितानेवालेको चरित्रभंगके अवसर कम आते हैं।

पुस्तकीय शिक्षाकी परवाह न करो। अैसे मनुष्य बहुत मिलते हैं और गुजरात क्लबमें ज्यादातर निठल्ले बैठे रहते हैं। वे किराये पर भी मिल जायँगे। तुम्हें भाषण और चर्चायें किस तरह करनी चाहियें और किस तरह लेख लिखना चाहिये, यह जाननेके बजाय यह मालूम करना हो कि दरिद्र मनुष्योंका संकट किस तरह मिटा सकते हो और स्वराज्यके सिपाही किस तरह बन सकते हो तो मैं बताअूँ। किसानोंको जानने और खुद किसान बननेके लिअे मुझे बीस सालका पिछला अनुभव और सारा पढ़ा हुआ भूल जाना पड़ा।

किसानोंसे मुहब्बत

किसानोंसे मुहब्बत करना आसान काम नहीं है। वे व्याख्यानोंसे नहीं लुभायेंगे। अुबारसद गाँवमें जाकर दो-चार युवकोंने लोगोंको अिकट्ठा करके पूछा: 'आपमें से कितने मरनेके लिअे तैयार हैं?' और जब कोअी तैयार न हुआ, तो वक्ता महाशय कहते हैं: 'मुझे शर्म आती है कि मैं नामर्द लोगोंके झुंडमें कहाँसे आ पहुँचा!' मगर अिस तरह भाषण देनेसे किसानोंका हित नहीं सोचा जा सकता। यह सीखना हो तो जिसे भाषण देना कठिन मालूम होता है और जो मूढ़ जैसा दिखाअी देता यहाँ बैठा है, (मोहनलाल पंड्या) अुसके पास

जाओ, या लाखों लोगोंके जीवनमें परिवर्तन करनेवाले, जिनसे पुलिस कमिश्नर भी डरते हैं असे विकराल धारालाओं (जाति विशेष) की लूटका माल पैरोंमें रखवा लेनेवाले, अुन चार किताब पढ़े हुअे रविशंकरके पास जाओ। वे बड़ी मुश्किलसे रेलगाड़ीमें बैठे थे। वे कभी नहीं कहते कि मुझे बौद्धिक और औद्योगिक शिक्षाका जरा मेल कर लेने दीजिये! मुझे तो पढ़नेमें झंझट मालूम होती है। मैं कभी नहीं पढ़ता। तुम्हें बासी अन्न खानेकी क्या आदत है! पराया लिखा हुआ क्यों पढ़ते हो? कुछ अपना लिखो न! तुम बारह महीनेमें अेक बार मिलकर (स्नातकोंका सम्मेलन वर्षमें अेक बार होता था) ह्रस्व अि और दीर्घ अी की चर्चा करनेवाले अर्थात् केवल शास्त्रीय चर्चा करनेवाले अिन साक्षरोंके सम्मेलनमें नहीं जाओगे तो सुखी होओगे। स्वराज्य मिल जायगा तो भी तुम्हारा जीवन तो स्वराज्यकी अिमारत तैयार करनेमें ही जायगा। मैंने तो कभी आयरलैंड या कैनेडाके विधान नहीं पढ़े। किसानोंके सामने अिनकी क्या ज़रूरत? अखा पढ़ लो, गीता पढ़ लो और अधिक हुआ तो तुलसीकृत रामायण पढ़ लो।

सारे नेता बातें बड़ी-बड़ी बनाते हैं, मगर अुनसे यह पूछा जाय कि 'तुम्हारी योजना क्या है सो बताओ' तब घबराते हैं। पंजाबमें मुझे राष्ट्रीय भाषा सम्मेलनका सभापति बनाया गया! तुम सब पढ़ोगे तब सभापति बनोगे, मैं बगैर पढ़े ही सभापति बन आया। मैंने अेक भी हिन्दी पुस्तक नहीं पढ़ी, फिर भी सब किसानोंको समझा सकता हूँ। आजकल भी चालीसगाँव और थाना वगैराके पत्र मेरे पास आते हैं। काशीमें खूब पढ़कर भी अेक संस्कृतका बड़ा विद्वान रंगरेज़की दुकान पर बैठा था, यह भी मैं जानता हूँ। मगर संस्कृतको क्या वह ओढ़े या बिछाये? संस्कृतमें क्या कोअी बिल बनाया जाय? अिसलिअे अब वह बम्बअीमें पड़ा है। यह विद्यापीठ अुत्तम किसान और मज़दूर पैदा करनेके लिअे है। देश-सेवा न करनेकी अिच्छा रखनेवालोंके लिअे यहाँ स्थान नहीं है। बिहार विद्यापीठमें अेक विद्यार्थीने मुझसे पूछा था कि हिंसा और अहिंसामें क्या भेद है? मैंने कह दिया कि 'यंग अिंडिया' के पन्ने पढ़ना। जब मेरे अेक-अेक शब्दसे हिंसा टपकती है, तो अुसे अहिंसा कहाँसे सिखाअूँ?

मैं तुमसे कहता हूँ कि सिपाहियोंका जैसा दल गुजरातमें है, वैसा और किसी प्रांतमें नहीं है। रणभेरी बजते ही सब सैनिक तैयार हो जाते हैं। तुम्हें लड़ाअीकी चर्चा करनी हो तो मेरे पास आ जाना। बंबअीके कॉलेजोंके बहुतसे लड़के मेरे पास आते हैं। तुम भी बहुत घमंड मत रखना। यह सरकारी कॉलेज भी अैसा हो रहा है कि दियासलाअी लगाते ही भड़क अुठेगा। जो पंजाबके विद्यार्थियोंकी तरह सिर्फ अधीरतासे 'लॉंग लिव रिवोल्यूशन' बोलते हैं, अुनका

भी अुपयोग हो जायगा। देशमें सब अधीर हो गये हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि यह अधीरता किस जगह किस ढंगसे प्रकट होगी। यहाँ कितने काम करनेवाले हैं और हममें से कितने बगुलाभगत हैं यह भी मैं जानता हूँ। यह ध्यान रखना कि तुम्हारी अिज्ज़त पर कोअी हाथ न डालने पाये। अेकता पैदा करो और चरित्रका विकास करो। तुम्हारे पास वक्त थोड़ा है और मामला गंभीर है। गाफ़िल मत रहना।

५६

धर्मयुद्धकी शुरुआत

[१९३० में सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू करनेकी तैयारी हो रही थी, अुस समय ११ फरवरी १९३० को गुरुवारके दिन भड़ौंचमें दिया हुआ भाषण।]

मैं अिस ज़िलेमें अनायास ही आ पहुँचा हूँ। सार्वजनिक भाषण देना मुझे अनुकूल नहीं है। मैं तो यह समझ चुका हूँ कि मनुष्योंके दिल सुंदर व्याख्यानोंसे नहीं हिलाये जा सकते, और हिलाये जा सकते हों तो भी क्षणभरके लिअे ही। यदि हमें कोअी बड़ा काम करना हो, तो करके ही दिखाया जा सकता है। मैं यह मान लेता हूँ कि आजकल हिंदुस्तानमें जो कुछ हो रहा है, अुससे आप सब वाकिफ़ होंगे! नहीं जानते हों तो मेरा बात करना बेकार है। लाहोर कांग्रेसके पूर्ण स्वराज्यके प्रस्तावसे विलायतके अखबारोंमें खलबली मच गअी है। पहले ये अखबार हिन्दुस्तानकी खबरें छापनेको तैयार नहीं थे और रुपया खर्च करने पर भी नहीं छापते थे। आजकल अुन्होंने कॉलमके कॉलम खोल दिये हैं। कुछ अखबार कांग्रेसके अध्यक्ष और महात्मा गांधीके पास अुनसे संदेश लेनेके लिअे रुपया भेजते हैं। विलायतके करोड़पति और कूटनीतिज्ञ अेक ही राग अलाप रहे हैं कि हिंदुस्तानमें जो आंदोलन हो रहा है, अुसे किसी भी कीमत पर दबा देना चाहिये और महात्माजीको जेलमें डाल देना चाहिये। अिसके सिवाय कोअी बात ही नहीं।

हिन्दुस्तानकी आज़ादीका अितना अधिक विरोध होता हो, अितना भयंकर आंदोलन चल रहा हो, और हिन्दुस्तानका वतनी अुसे जानता भी न हो, तो अुसे मुझे कुछ नहीं कहना है।

धर्मयुद्ध शुरू होता है

अेक ही बात है। अब अेक अैसा धर्मयुद्ध शुरू हो रहा है जैसा दुनियाने कभी नहीं देखा होगा। वह अिस प्रकारका है कि अुसमें अेक तरफ सारी सात्त्विक और धार्मिक शक्तियोंका संग्रह है और धार्मिक हथियारोंका ही अुपयोग

होनेवाला है; और दूसरी तरफ आसुरी शक्तिका संग्रह है। दुनियामें रावणके जमानेसे लेकर आज तक कभी न देखे गये राक्षसी साधनोंवाली हुकूमत आसुरी शक्तियोंका अुपयोग करनेकी धमकियाँ दे रही है। अिन दो सत्ताओंके बीच युद्ध होनेवाला है। अिस युद्धमें हम क्या हाथ बँटायेंगे और किसका पक्ष लेंगे, अिसका आपको फैसला करना है। यह युद्ध अैसा है जैसा दुनियामें कभी नहीं हुआ, और आपके सौभाग्यसे आपके ही आँगनमें शुरू होनेवाला है। आपको मालूम होगा और न हो तो मैं बता देता हूँ कि अिस देशका या विदेशोंका अितिहास पढ़ेंगे तो अुसमें गुजरातका नाम-निशान नहीं मिलेगा। आपके बच्चोंको दूसरोंका अितिहास पढ़ना पड़ता है। अधिकसे अधिक अुसमें यह लिखा होता है कि गुजराती व्यापार करके खानेवाले दलाल हैं। अुन्होंने कभी तलवार नहीं अुठाअी, कभी रणक्षेत्र नहीं देखा, अुन्होंने तोपके धड़ाके नहीं सुने और न धूप-छाँह ही देखी है। अैसे गुजरातमें अैसा धर्मयुद्ध शुरू हो रहा है, यह आपका सद्भाग्य है। अिसमें आप क्या हिस्सा लेंगे, अिसका विचार आपको खुद करना है।

व्यापारियोंकी स्थिति

जिस गुजरातमें युद्ध नहीं हुआ, जिसने चुनौती नहीं सुनी, जिसकी नसोंमें खून नहीं अुछलता, जिसके चेहरे पर तेज नहीं और आँखोंमें नशा नहीं, वह किसलिअे अैसा युद्ध मोल ले बैठा, यह कोअी ज़रूर पूछ सकता है। आप क्या जवाब देंगे? मगर वह वचनसे नहीं दिया जा सकता। जवाब देना हो तो बारडोलीके किसानोंकी तरह दीजिये। वे आपमें से ही थे। सारे गुजरातमें नरमसे नरम अुन कमज़ोर किसानोंने हथियारोंके बिना अेक बार तो अिस सल्तनतकी गरदन झुका दी है। ये गुजराती दूसरी बार जो भयंकर युद्ध शुरू कर रहे हैं, वह हिन्दुस्तानकी अिज्ज़तके लिअे कर रहे हैं। गुजरातको अपना अितिहास पढ़नेको मिले और हमारे पुरखोंने अिस लड़ाअीमें अपना हिस्सा अदा किया, यह जानकर भावी सन्तानें अपना सिर अूँचा कर सकें, अिसलिअे अिस लड़ाअीमें आपको शरीक होनेमें गर्व होना चाहिये। यह गर्व होनेके लिअे आप क्या करेंगे? आपके यहाँ लड़ाअी चेतेगी। चेतनेमें अब कोअी देर है क्या? जो देशका भला चाहते हैं, वे तो घड़ियाँ गिन रहे हैं। आज, कल, दो दिन, चार दिन, महीने नहीं, घड़ियाँ गिनी जा रही हैं। आप जानते हैं कि व्यापारियोंका व्यापार नष्ट होकर अुनका कचूमर निकल गया है। चाँदीको चोर चुरा ले जायँ तो अुसकी शिकायत भी हो सकती है और पेटीमें पड़ी हो तो 'सौके भये साठ', मगर अिसकी क़ीमत क्यों कम हो गअी यह कौन पूछता है? लेकिन आज तो न चाँदी है, न व्यापार है। जिनके बड़े-बड़े

कारखाने थे, बड़ी-बड़ी मिलें थीं, अुनके हाथ-पैर ठंडे हो गये हैं। बम्बअीके मिल-मालिकोंके चेहरे देखें तो मालूम हो, आज गिरे या कल गिरे। भड़ौंचमें तो पूँजी ही क्या थी? यह भी कोअी धनमें धन है! यहाँ न कारखाने हैं, न व्यापार है और न बंदरगाहकी तरफ ही कोअी देखता है।

किसानोंकी स्थिति

और भड़ौंचके किसान क्या कर रहे है? आप कभी भड़ौंचके किसानोंसे मिलते हैं? देहातका कभी दौरा करते है? अुनसे कुछ पूछते भी है? यदि पूछेंगे तो पता लगेगा कि अुनकी क्या हालत है?

गुजरातके किसानोंकी नब्ज़ जितनी मैं पहचानता हूँ, अुससे ज्यादा अच्छी तरह कोअी नहीं जानता। किसानोंके हाथमें जो हथियार है, अुसका अुपयोग अुन्हें आ जाय, तो वे दुनियाकी अिस ज़बरदस्त सरकारके सामने अन्त तक जूझनेको तैयार हो जायँ। अुसके पास रह ही क्या गया है? अुसके पास खानेके लिअे न अनाज है, न रोटी है। अैसी स्थिति होने पर भी अुसके दरवाज़े पर बैठ कर सरकारका दूत अुसे यमदूतसे भी ज्यादा कष्ट देता है। किसान बरबाद हो गया है। साल खराब आते रहे हैं। फिर भी यह सरकार तरकीबें करती है, हुंडावन (पैसेकी दर घटाना-बढ़ाना) करती है और अन्य कअी प्रपंच करती है। सरकार जिस प्रकार राज्य चला रही है, अुसे देखते हुअे सरकार दिवाला निकाल दे, अैसी हालतमें है। अुसके अपने शब्दोंमें कहें तो अुसके पास शासन चलानेके लिअे रुपया नहीं रहा है।

डॉक्टर-वकील बदनामी लेंगे?

तो क्या थोड़े-बहुत वकील-डॉक्टरोंसे काम चल जायगा? आखिर कब तक चलेगा? कार्य समितिका प्रस्ताव हो गया है कि लड़ाअी शुरू होनेवाली है। थोड़े ही दिनोंमें लड़ाअीके मुख्य नायकको सरकार कैद कर लेगी। समिति मानती है कि वह हिन्दुस्तानके नेताओंको पकड़ लेगी। अुस समय समिति अुम्मीद रखती है कि वकील बदनामी नहीं अुठायेंगे और जब नेता जेल चले जायँगे, तब वे लम्बे-लम्बे वकालतनामे लेकर और चोगे पहनकर चक्कर नहीं लगायेंगे। अदालतें अब थोड़े दिनकी है, अधिकसे अधिक दो साल। स्वराज्यके बहीखातेमें जमा और नामे दोनों बाजू हैं। वकालत न छोड़नेवालोंके नाम हमेशाके लिअे नामेकी तरफ लिखे जायँगे। अब आप या तो हमेशा वकालत कीजिये और हिन्दुस्तानकी गुलामीके साक्षी रहिये, या वकालत छोड़कर रणयज्ञमें खप जाअिये।

नौजवान डिग्रियोंकी आशा रखेंगे?

नौजवान चिल्लाया करते थे: 'बलवा होना चाहिये', 'अिंडिपेंडेन्स चाहिये'। अब अुस चिल्लाहटको सच्ची सिद्ध कर दिखानेका समय आ गया है।

हिन्दुस्तानकी मुक्तिके लिअे नेताओंके पैरोंमें बेड़ियाँ पड़ रही होंगी, अुस समय क्या वे साअिकलों पर बैठकर, किताबें लिये हुअे कॉलेजोंकी अिमारतोंकी तरफ़ चक्कर लगायेंगे? 'लॉंग लिव रिवोल्यूशन' का शोर मचानेवाले डिग्रियोंकी आशा नहीं रखेंगे। याद रखिये यह लड़ाअी आखिरी है।

क़र्जका हिसाब

हमारे नाम पर चढ़ाया हुआ कर्ज़ यदि गलत होगा तो हम अुसे चुकानेसे अिनकार करते है, कांग्रेसके अिस प्रस्तावसे वाअिसरॉय घबरा गये हैं। मगर हम अिसमें हिसाबके सिवाय और क्या चाहते है? विलायतमें खलबली मच रही है कि ये तो कर्ज़ चुकानेसे अिनकार कर रहे हैं। जिनके पास बन्दूकची भी नहीं, अुनकी ज़बान अितनी लम्बी होगी, यह आशा अुन्होंने नहीं रखी होगी। मगर यह प्रस्ताव क्या कोअी नया है? यह प्रस्ताव गया कांग्रेसमें हो चुका है।

राज्य करनेका अर्थ?

दो ही रास्ते है: हिन्दुस्तानमें राज्य करना, नहीं तो छोड़ कर चले जाना। मैं भी कहता हूं कि राज्य किया जाय। मगर यह कोअी राज्य है? व्यापारियोंका व्यापार जाता रहा, किसान निस्तेज हो गये, सारी रैयत बरबाद हो गअी और जाति-जातिमें झगड़े हुअे। अिससे तो अराजकता अच्छी। अैसा ही राज्य करना है, तो मैं कहता हूँ कि पधारिये। मगर वे कहते है कि राज्य करनेका अर्थ है तलवार बजाना। यह बात आखिरी है। हिन्दुस्तानकी प्रजा अिसके लिअे अुन्हें अेक बार जी भरकर मौका दे दे। भले ही वे अपने सारे हथियार आज़मा लें। मगर अुनका प्रयोग करने पर पता चल जायगा कि वे काममें आने लायक हैं या नहीं। गुजरातका तपस्वी जो शिक्षा दे रहा है, वह हज़म हो गअी होगी, तो अिनके हथियार निकम्मे हो जायँगे।

लड़ाअीके लिअे तैयार हो जाअिये

आप आँखोंसे देख रहे हैं कि हम सब निहत्थे हैं। हम राक्षसी सामग्रीका मुक़ाबला करनेका नहीं कहते। हम अितनी ही ताकत बतायें कि अिस सरकारका महज़ साथ न दें, तो अुसको अपने हथियारोंका अिस्तेमाल करनेकी नौबत ही नहीं आयेगी। सरकार भी अब समझ तो गअी है कि हथियारोंसे काम लेनेसे अब कुछ नहीं होगा और राज्यमें तबदीली किये बिना काम नहीं चलेगा। अगर आप सरकारका साथ न दें, तो हालत यह है कि अुसके हथियार धरे ही रहेंगे। अिस सरकारके पापोंसे जब हम अिस हद तक बरबाद हो गये हैं, तो फिर अुसका साथ क्यों दें? अिसलिअे अब तैयारी कीजिये। आप तैयारी नहीं

करेंगे तो आपकी खातिर लड़नेवालोंको ज़्यादा कष्ट भुगतना पड़ेगा। आप तय कर लें कि सरकारका साथ हरगिज़ नहीं देंगे, तो कांग्रेसको आशा है कि लड़नेवालोंका काम आसान हो जायगा।

दस-पंद्रह दिन बाद क़ानूनका सविनय भंग किया जायगा। वह अिस ढंगसे और अैसे व्यक्तियोंके द्वारा होगा, जो अहिंसात्मक हो, जिनमें क्रोध न हो, अीर्ष्या न हो और जिनकी सात्विकता-शुद्धतामें शक न हो; अैसा अेक धार्मिक यज्ञ होनेसे अुनकी शुद्धताका विश्वास हो जायगा। शुरू करनेवाला और अुसके साथी पकड़े जायँगे। सोचना यह है कि अुनके पकड़े जाने पर आप क्या करेंगे। अिंग्लैण्डका अेक राजनीतिज्ञ अभी कह चुका है कि १९२२ में जब गांधीको पकड़ा था, तब हिन्दुस्तानमें कुत्ता तक नहीं भौंका था। अेक तरहसे यह बात सच है और झूठ भी है। बारडोलीकी लड़ाअी शुरू करनी थी, वह अुन्होंने बंद रखी। तलवार म्यानमें रख ली। अगर दो क्षत्रिय लड़ते हों और अेक तलवारको म्यानमें रख ले, तो दूसरा वार नहीं करता। वार करनेवाले क्षत्रिय नहीं, मायावी राक्षसी योद्धा थे। अितने पर भी गांधीजीने तमाम काम करनेवालोंको मनाही हुक्म दे दिया था कि मेरे पीछे मत आना और आन्दोलन शुरू मत करना। परिणामस्वरूप खूब शान्ति रही। अिसका अर्थ यह लगाया गया कि अेक कुत्ता भी नहीं भौंका। मगर जब तलवार म्यानमें नहीं रखी गअी थी, तब तो अुन्होंने भी मंजूर किया था कि अुनका अस्थि-पंजर ढीला पड़ गया था। वाअिसरॉयको सूझता ही न था कि क्या करे? बम्बअीका गवर्नर कह चुका है कि स्वराज्य लगभग मिल चुका था।

महात्माजीने पंद्रह वर्ष तक आपको क्या सिखाया है? अुस साबरमतीके किनारे बैठकर अितनी शिक्षा दे देनेके बाद आज वे नया क्या कहते? अब कहनेको कुछ नहीं रहा। अब आपका काम देखा जायगा। वे तो दुनियाके श्रेष्ठ पुरुष माने जाते हैं। अुनकी जोड़का दूसरा जीवित व्यक्ति नहीं मिलता। संसार आपसे हिसाब पूछेगा कि आपने क्या किया? अुन्होंने तो काम कर दिया है और करेंगे। अुनके बाद अुनके साथी पकड़े जायँगे। तब आप गुजरातियोंकी परीक्षा होगी। क्या अितने वर्ष तक अुनसे शिक्षा पाकर भी अभी तक आपको यह जानना बाकी है कि आप क्या करेंगे?

किसानोंसे और आपसे मैं पूछता हूँ कि क्या अीश्वरमें श्रद्धा है? आप खुदाको मानते हैं? जो जन्म लेता है वह मरता है, सो जानते हैं? मृत्यु बिना किसीका छुटकारा नहीं। नामर्दोंकी तरह मरनेके बजाय बहादुरों और अिज्ज़तवालोंकी मौत मरना सीखिये। तोपोंके धड़ाके होते हों, हवाअी जहाज़ोंसे बम गिरते हों, और टपाटप मनुष्य मरते हों, तब अितिहासमें नाम तो होता है।

हमारे यहाँ अैसा दिन कब आयेगा? वह दिन तभी आयेगा, जब कोअी भी गुजराती सरकारका साथ न दे।

हिन्दू-मुसलमानोंका क्या?

सरकार पूछती है कि तुम हिन्दू-मुसल्मानोंका क्या करोगे? क्या आपने कोअी अैसा मुसलमान देखा है, जो यह कहता हो कि नमक कर अच्छा है, अुसे क़ायम रखो। हिन्दू-मुसलमान सभी गाँव-गाँवमें कहते हैं वह ठीक है, या जो आप कहते हैं वह। यह ज़मीनका लगान अन्यायपूर्ण है। लगान आधा होना चाहिये। कोअी मुसलमान लोगोंसे शराब पीनेको नहीं कहते। बड़े बड़े ओहदेवाले लोग लड़ानेकी कोशिश करते हैं। वैसे, गाँवोंमें रहनेवाले मुसलमानोंको तो कोअी लड़ाअी नहीं सूझती है। जिन्हें सरकारी पद चाहियें, अुन्हींको लड़ानेकी सूझती है।

हममें से कुछ लोगोंका खयाल है और सरकार भी कहती है कि हम चले जायँगे, तो फिर अफ़ग़ान आ जायँगे, पठान आ जायँगे और अेक भी कुँवारी कन्या नहीं बचेगी। डेढ़ सौ वर्ष राज्य करनेके बाद अुन्होंने यह हालत कर दी है। अिसका अुपाय हम नहीं कर सकें, तो हम तैंतीस करोड़ लोगोंको आत्म-हत्या कर लेनी चाहिये।

मगर अैसी बातें सुनकर अुन्हें सह लेना ही भयंकर अपमान है। यह सुन लेनेके बाद तो नींद भी नहीं आनी चाहिये। तलवार-बन्दूकसे सरकारके साथ निपटनेकी बात करना मूर्खता है। मुक़ाबला करनेके लिअे अच्छा रास्ता यह है कि जिस क़ानूनका भंग करना कांग्रेस तय करे अुसे भंग किया जाय। साठ पैंसठ करोड़का अुन्हें फ़ौजी खर्च चाहिये। मगर फ़ौजकी ज़रूरत ही क्या है? जिसे लाठी रखनेका भी हक़ नहीं है, अुसके लिअे अितना भारी खर्च क्यों? हमें अैसा करना चाहिये कि जिससे अिसका अुपयोग न हो। सरकार कहती है कि हम न होंगे, तो तुम लोग हिन्दुस्तानमें लड़-लड़ कर मर जाओगे। हम भले ही लड़-लड़ कर मर जायँ। मगर जितने रह जायँगे वे तो आरामसे रहेंगे? साम्प्रदायिक झगड़ोंसे किसीकी हस्ती खतम नहीं हुअी। थोड़े हिन्दू या थोड़े मुसलमान या दोनों ही रहेंगे। मगर विदेशके दो लाख आदमी आकर अैसी हालत कर दें, तो अुसे तो मिटाना ही चाहिये।

गुजरातकी आशा

आप सबकी परीक्षा नज़दीक आनेवाली है। महीने या पंद्रह दिनमें वह समय आ जायगा। आपको सोच लेना चाहिये कि आप क्या करेंगे। आप सबके लिअे मर्दानगी दिखानेका समय आ गया है। अपना धर्म समझ लीजिये। लोग जो आशा हिन्दुस्तानसे रखेंगे, अुससे ज्यादा गुजरातसे रखेंगे। आजसे ही गुजरातको भान हो जाय कि मरना तो अेक बार है ही। यह अीश्वरकी बात है,

सरकारकी नहीं, और वह मिथ्या नहीं है। तो फिर हँसते-हँसते क्यों न मरें ? अुस अवसरको सौभाग्य समझिये और तैयार होकर रहिये।

साबरमतीके संतकी कुछ बात समझे हों, तो यह सारी बात आसान है। अैसा समझिये कि यह तो विमान और वैकुण्ठका बुलावा आया है। जिसे मरनेका डर हो, अुसका जीना व्यर्थ है। अुसके लिअे यह अवसर नहीं है। तमाम गुजरातियोंको मैं यहाँसे कह देना चाहता हूँ कि जिसे मरनेका डर लगता हो, वह यात्रा करने जाय, जमीन-जायदादकी व्यवस्था करके चला जाय। जिसके पास रुपये हों, वह विदेश चला जाय। सच्चे गुजराती हों तो शर्म आनेका काम मत करना। सिर नीचा करके मत चलना। दरवाज़े बन्द करके भीतर घुसकर मत बैठना। थोड़े ही दिन हैं। कोअी पढ़ते हों या न पढ़ते हों, रोज़ धमकियाँ आती रहती हैं। अब बहुत तेज़ीसे काम होनेवाला है और तेजीसे करनेकी ताकतका हिसाब गुजरातसे लगाना है।

कुछ अमरीकी सज्जन विलायती सरकारसे कहते हैं कि आसुरी शक्तिका अुपयोग न करें। अैसा करेंगे तो बेजा करेंगे। लड़ाअियोंसे सारी दुनिया तंग आ गअी है, अूब गअी है। दुःखी दुनियाको हिन्दुस्तान नया रास्ता बता रहा है। यह प्रयोग देखने लायक है। हमें अैसा खेल करके दिखा देना है, जो कभी न हुआ हो।

हममें से कुछ कहते हैं कि हम लायक कहाँ हैं ? मगर पानीमें अुतरे बिना क्या तैरना सीख जायँगे ? दो डुबकियाँ खायेंगे तब आ जायेगा। सरकार डराती है कि सेनाका क्या करोगे ? यह हम देख लेंगे, तुम्हारे जैसे सस्ते अफसर युरोपसे बहुत मिल जायँगे।

हम ट्रस्टी हैं !

सरकार कहती है कि हम ट्रस्टी हैं। ट्रस्टी किसके ? कौन तिलक लगाने गया था कि आप यहाँ आअिये। अब अैसी बातें नहीं चलेंगी। हिन्दुस्तानको डराकर कहो कि तुम हमारे साथ रहो, तो अब कोअी माननेवाला नहीं है। तेरा सारा भार तो हमारे सिर और तू बन्दूकका कुन्दा लिये फिरता रहे! अिसे अैसा साथ करना है। सब कुछ कुअेंमें डाल दे न।

सरकार कहती है कि हमने तुम्हें शान्ति दी। यह शान्ति किस कामकी ? पेटमें तो चूहे कूदते हैं, खानेको अन्न नहीं, नसोंमें खून नहीं और आँखोंमें तेज नहीं। अब तो वह और हम आखिरी अुपाय आज़मा लें।

मुट्ठीभर हड्डियोंवाला आदमी

मुट्ठीभर हड्डियोंवाला आदमी साबरमतीमें बैठा-बैठा चरखा चला-चला कर सरकारको हिला रहा है, यह अेक कौतुक है। अुसने आप पर आशा बाँध रखी

है। आप क्या करनेवाले हैं? आज तकका जो अुपदेश सुना है और समझा है, अुसकी क़ीमत होनेवाली है। आपको खुशी होनी चाहिये। भड़ौंची चिवड़े और चायमें ही पड़े रहे तो डूब मरना होगा। आपके बीच स्पर्धा होनेवाली है। बारडोली वाले कहते हैं कि देखना, हमारी अिज्जत पर हाथ मत डालना। खेड़ावाले मिले थे। वे कहते थे कि अिस बार भी हम नहीं? अिन सबसे मैं पूछता हूँ कि मरनेके लिअे कितने तैयार हैं? रास्ता अपने आप मिल जायगा। जैसे सूर्य अुगने पर प्रकाश हो जाता है, वैसे ही अपने आप समझ आ जायगी। पकड़-धकड़ होने दीजिये। फिर दुनिया जान लेगी कि कुत्ता भौंक रहा है या क्या हो रहा है?

खुदाके बन्दे हों तो प्रार्थना कीजिये कि वह अिज्जत बनाये रखे, हममें दृढ़ता रखे और मरनेकी शक्ति दे। सरकारका भी भला हो कि अुसे अैसी मति सूझी, जिससे हमें यह मौका मिला। पंद्रह वर्षसे हमें जो शिक्षा मिली है, अुसकी यह कसौटी है।

गुजराती अितिहासमें स्वतंत्रताका पहला पन्ना लिख रहे हैं। अीश्वर आपको ताकत दे। अीश्वर आपका भला करे।

५७

लड़ाअी जारी रखो

[सन १९३० को लड़ाअीके शुरूमें साबरमती जेलमें पौने चार महीने सज़ा भोग कर जब सरदार पटेल बाहर आये, तब अहमदाबादकी जनताके सामने दिया हुआ भाषण।]

पहले तो आप सबने मेरा जो प्रेमपूर्वक सम्मान किया है, अुसके लिअे मैं सच्चे दिलसे आप सबका आभार मानता हूँ।

अभी अेकदम तो आप मुझसे हमारे कामके बारेमें सलाह या सूचना की आशा नहीं रखते होंगे। क्योंकि मैं तो हमारी लड़ाअीकी शुरुआतसे पहले ही जेलखानेमें जा बैठा था। वहाँ बैठे-बैठे मुझे देशकी लड़ाअीने कैसा रंग पकड़ा है, अिसकी पूरी जानकारी नहीं मिलती थी। मगर अब जब देशके सभी नेता जेलमें बन्द कर दिये गये हैं और हमारे सेनापति महात्माजी भी गिरफ्तार हो गये हैं, तब भी आप सबका अितना ज़्यादा अुत्साह और अुमंग देखकर मुझे सचमुच गर्व होता है, और मैं आप सबको सच्चे हृदयसे मुबारकबाद देता हूँ। आपने जो अपूर्व शान्ति रखी है और जो अडिग हिम्मत दिखाअी है, अुसके लिअे और आपकी कुशलता और आपके त्यागके लिअे भी मुझे आपको बधाअी देनी चाहिये।

अिससे ज्यादाकी तो आप मुझसे अिस वक्त आशा न रखें। मैं पहले तो यह जानना चाहता हूँ कि हमारे गुजरातमें कैसा काम हो रहा है। कार्यकर्ता सब नये ही हैं, अुनके साथ भी मुझे परिचय करना है। वे किस पद्धतिसे काम कर रहे हैं, अुन्हें क्या क्या मुश्किलें आती हैं, यह सब मैं जान लूँ। सार यह कि जब मैं गुजरातमें हमारी मौजूदा लड़ाअीकी क्या स्थिति है अिस बातसे अच्छी तरह वाक़िफ़ हो जाअूँ, अुसके बाद ही सलाह और सूचना दे सकता हूँ और मार्ग बता सकता हूँ।

जेलके सुख

मगर आपने मुझसे जेलयात्राकी बातें सुननेकी ज़रूर आशा रखी होगी। अुसकी तो आपसे क्या बात कहूँ? वहाँ कोअी सिर नहीं फूटते थे, न वहाँ किसी तरहका दुःख ही मालूम होता था। अगर कोअी यह कहे कि जेलमें दुःख है, तो आप अुसकी बात ही मत मानिये। वहाँ तो बिलकुल चैन है और वह भी रोज़के सिर्फ़ चार पैसेमें ही। अिन चार पैसोंके खर्चमें जेलमें जितना सुख मिलता है अुतना बाहर नहीं है। क्योंकि आज जब हमारी हिन्दुस्तानकी कांग्रेसके अध्यक्ष जेलमें बन्द हैं, जब जगतके श्रेष्ठ पुरुष महात्मा गांधी यरवदा जेलमें हैं, तब जेलसे बाहर रह कर आरामसे अन्न खाना धूल खानेके बराबर है। सौ मन रूअीके बिस्तरों पर सोना भी चिता पर सोनेके बराबर है। अिसलिअे सच कहता हूँ कि जेलमें जितना सुख मालूम होता है अुतना बाहर नहीं होता। मुझे तो अेक ज़िला मजिस्ट्रेटके नोटिसका अनादर करनेके अपराधमें तीन महीने और तीन हफ़्तेके लिअे मुफ़्तका भोजनालय मिल गया था। और मैंने आजके दिनकी सिर्फ़ दो रोटियोंके सिवाय और कुछ नहीं छोड़ा। आज शामकी दो रोटियोंका मेरा हक़ था और कल सवेरेकी अेक पाअीकी ज्वारकी काँजी भी मुझे मिलनी चाहिये थी। यह मेरा अधिकार — जैसा कि मुझे छोड़ते समय मैंने जेलरसे कहा था — मुझसे छीन लिया गया। बाकी तो वहाँ आनन्द ही था।

हमारे जेलमें बैठे हुअे तमाम मित्र भी आनन्दमें हैं। अिन मित्रोंसे विदा लेते समय मुझे जो दर्द हुआ है, वह आप नहीं समझ सकते। बच्चेको माँसे बिछुड़ते वक्त जो दुःख होता है, वही मुझे हुआ है और मुझे विदा देते समय अुन्हें भी खूब दुःख हुआ है।

सरकारका गुस्सा

तो आप जेलके दुःखोंका डर तो रखिये ही नहीं। सरकार अिस वक्त रोषमें भरी हुअी है। अुसे गुस्सा आ रहा है। जैसे अिस वक्त हमारे शरीरमें जो गरमी लग रही है, वह अेक दो दिनमें बरसातके टूट पड़नेकी निशानी है और अुससे पानी ही पानी हो जानेवाला है, अुसी तरह अिस सरकारकी गरमी भी यही

बताती है कि वह थोड़े ही दिनोंमें अब पिघल कर पानी-पानी हो जायगी।

मैंने जेल जानेसे पहले हमारी लड़ाओीके बारेमें तमाम भविष्यवाणियाँ कर दी थीं, मगर लाठीके बारेमें तो मुझे कल्पना ही नहीं थी। मैंने सोचा था कि गोलियाँ चलायेंगे, मगर सरकारने लाठियाँ चलाओीं। यह नओी ही चीज़ है। खैर होगा। यह सरकार तो 'सुधरी हुओी' है न! अिसलिअे वह अपनी 'सभ्यता' कओी नये-नये ढंगसे बताती है।

असली जेलखाना कौनसा ?

आजकी स्थिति देखते हुअे मुझे बहुत ही आशा होती है। आप सबका अुत्साह देखकर मैं खुशीसे पागल हो रहा हूँ। अब आप यह दिखा दीजिये कि यह अुत्साह क्षणिक नहीं है। वह पल भरके लिअे आओी हुओी बाढ़ नहीं है, बल्कि अेक समर्थ तपस्वीकी दस-बारह वर्षकी प्रखर तपश्चर्याका फल है। आज मुझे बहुतसे लोग सलाह दे रहे थे कि मैं भाषण न दूँ, मैं फँस न जाअूँ; और कुछ लोग कहते थे कि मैं आजकी सभामें नहीं आअूँ। क्योंकि अुन्हें डर था। मगर मेरे हाथकी रेखामें जेलकी बात ही नहीं है। जेल जाना मैंने जाना ही नहीं। अिस सरकारकी जेल भी कोओी जेल है? असली जेलखाना तो मायाका बंधन है। हमारी आत्माके ये जो मोह, माया, काम और क्रोधके बंधन हैं, वही सच्चा जेलखाना है। जिस आदमीने स्वेच्छासे ये बन्धन तोड़ दिये हैं, अुस आदमीको अिस दुनियाका बलवानसे बलवान साम्राज्य भी बन्धनमें नहीं रख सकता। अिसीलिअे मैं कहता हूँ कि जेल तो मेरे लिअे किसी गिनतीमें ही नहीं है, और अिस जिंदगीमें तो अुसकी मुझे कुछ भी चिन्ता नहीं है।

बहनोंका भाग

आज ही मैंने अिस कथित जेलखानेसे बाहर निकलते समय खेड़ाके १९ वीर भाअियों और अेक बहनको अुसमें घुसते देखा। यह बहन गाँवमें रहनेवाली अेक ब्राह्मणी है। अुसके भाओी मेरे साथ १५ वर्षसे काम कर रहे हैं। वे ३ बार जेलमें गये थे और मैं अुन्हें तीन बार बाहर निकाल लाया हूँ। अब भी वे जेलमें हैं। मैंने जेलमें रहे हुअे और सब भाअियोंसे कह दिया है कि मेरे लिअे हमेशा अेक कोठरी ज़रूर खाली रखें। या तो मैं अुन सबको जेलसे बाहर निकाल लाअूँगा या फिर मैं अुनके साथ ही भीतर जा बैठूँगा। वह जेल गओी हुओी बहन निरक्षर है, मगर अुसके भाओी गुजरातके अेक तपस्वी हैं। अुन्होंने हज़ारोंके जीवनमें परिवर्तन कर डाला है और आजकल वे नासिक जेलमें है। अुनका नाम रविशंकर है। अुनकी बहन चंचलबहनको जब मैंने जेलमें घुसते देखा, तब मुझे जैसी खुशी हुओी वैसी और किसी चीज़से नहीं हुओी थी। जब गुजरातके

गाँवोंकी बहनें जेल जाने लगेंगी, तब हमारी जीत नजदीक ही समझिये। गुजरातमें आजकल जो अितिहास निर्माण हो रहा है, अुसमें बहनोंका भाग देखकर मैं हर्षोन्मत्त हो जाता हूँ।

राजमार्ग

मैं चाहता हूँ कि अिस वक्त जो अुत्साहकी — देशसेवाकी — लहर चल रही है, वह अुतनी ही बल्कि अुससे भी ज्यादा तेज़ चलती रहे। जेलका दरवाज़ा खोलकर यरवदा जेलमें बन्द किये गये हमारे महान सेनापतिको बाहर लाकर अगर हमारी अिज्ज़त पर डाले गये हाथको हम हटा न दें, तो हमारा जीना व्यर्थ ही समझिये।

मौत तो अेक ही बार आती है, दो मर्तबा नहीं; और वह करोड़पति या गरीब, किसीको भी नहीं छोड़ती। तो फिर अुसका क्या डर? हम मौतका डर छोड़कर निर्भय बन जायँ। मैंने अैसी कोअी भी सरकार नहीं देखी, जो ३३ करोड़की अेक महान जातिको अुसकी अिच्छाके विरुद्ध तोप या मशीनगनका डर दिखाकर दबा सके। अिसलिअे हमारा निश्चय अगर सच्चा ही होगा, तो निश्चित समझिये कि जीत भी हमारे हाथकी ही बात है।

मैं गुजरातकी परिस्थितिसे वाकिफ़ होकर थोड़े ही समयमें कोअी मार्ग सुझाअूँगा। परन्तु नया मार्ग और क्या होगा? कांग्रेसने और महात्माजीने रास्ता बता ही दिया है। अुस रास्ते चलनेमें सत्य और अहिंसा दो की ही ज़रूरत है। वह मार्ग राजमार्ग है। अुसपर बच्चेसे लेकर बूढ़े, स्त्री और पुरुष सब जा सकते हैं। यह लड़ाअी ही अैसी है कि अुसे बच्चे तक चला सकते हैं। अिस मौके पर जो अपना मुँह छिपायेंगे, अिस लड़ाअीमें जो अपना योग्य स्थान नहीं लेंगे, अुनका नाम अितिहासमें काले अक्षरोंमें लिखा जायगा। अिसलिअे आप सब अपना-अपना धर्म समझ लीजिये, हिम्मत और दृढ़तासे लड़ाअीको आगे बढ़ाते रहिये और अन्तमें विजय प्राप्त कीजिये। अीश्वर हमको शक्ति दे। अीश्वर हमारा कल्याण करे।

नवजीवन, २९–६–१९३०

समझौतेकी बातें

[जब १९३० की लड़ाअी जारी थी, अुस वक्त अुदारदली नेताओंकी तरफसे समझौतेकी कोशिशें हो रही थीं। अुन्हें ध्यानमें रखकर लिखी गअी टिप्पणी ।]

आज जो समझौता करनेकी बातें कर रहे हैं या जो बीच-बचावके लिअे गांधीजीके पास जानेकी कोशिश कर रहे है, वे जाने-अनजाने देशकी बहुत बड़ी कुसेवा कर रहे हैं। अैसा बीच-बचाव करनेवाले जनताके स्वाभिमानका भंग कर रहे हैं। जब सरकारका हृदय-परिवर्तन हो जायगा और अुसे लगेगा कि समझौतेका असली वक्त आ पहुँचा है, तब यरवदा जेलकी कुंजी अुसके पास ही होनेसे दरवाज़ा खोलकर गांधीजीके साथ सीधी बात करनेमें अुसे जरा भी संकोच नहीं होगा। कोरे बीच-बचावकी बातोंसे लोगोंके भुलावेमें पड़ने और लड़ाअीमें शिथिलता आ जानेका डर रहता है। समझौतेका समय अभी बहुत दूर है और अगर हम गाफिल रहकर शिथिल हो जायँगे, तो वह और भी दूर चला जायगा। अिसलिअे अैसी मिथ्या बातोंपर ज़रा भी ध्यान न देकर सबको कांग्रेसका काम और भी ज़ोरसे जारी रखना चाहिये। किसीको भी यह नहीं भूलना चाहिये कि लड़ाअीका अन्त जल्दी लानेका यही अेक अुपाय है।

नवजीवन, २०-७-१९३०

५९

तीखे तीर

[सन् १९३० की सत्याग्रहकी लड़ाअीके समय अहमदाबाद, बम्बअी वगैरा स्थानों पर दिये गये भाषणोंसे ।]

१

(अहमदाबाद प्रान्तीय समितिमें सरदारको अभिनंदनपत्र देनेके लिअे अहमदाबाद ज़िलेके अिस्तीफे देनेवाले पटेलोंकी अेकत्र हुअी सभामें दिया गया भाषण ।)

मैं नहीं समझता था कि अितने अधिक पटेल भाअियों और मुखिया भाअियोंसे मिलनेका मौका आयेगा। क्योंकि जेलमें मुझे जो अखबार मिलता था, अुसमें सरकारकी तरफसे होनेवाला यह प्रचार ही पढ़नेको मिलता था कि दिये हुअे अिस्तीफे वापस ले लिये गये हैं। सरकारकी तरफसे अैसी बातें फैलाअी गअी हैं कि कांग्रेसके जुल्म और ज़बरदस्तीसे अिस्तीफे दिलवाये गये हैं। अितने अधिक पटेलोंके अिस्तीफोंके लिअे मुझे अत्यन्त हर्ष होता है। मैं किसानोंमें

१५ सालसे काम कर रहा हूँ । १५ वर्ष पहले ही मैंने जान लिया था कि किसान दिलके भोले हैं । अुनकी भलाअीके लिअे अुनका यह भोलापन दूर होना चाहिये । मैंने देखा कि भोलापन दूर करनेके लिअे समयकी ज़रूरत होगी । किसानोंके दुःखमें मेरे और मेरे मित्रोंके भाग लेनेसे किसान जाग्रत हुअे । मुझे दुःख होता था कि सरकारमें किसानोंकी अिज्ज़त नहीं है । सरकारमें अुनकी यह प्रतिष्ठा है कि किसान प्रपंची और पटेल बकवासी और तिकड़मी होते हैं । खेड़ाके सत्याग्रहके समय मुझे अिसका पता चला और मैंने अिसे दूर करनेका संकल्प किया । आपका तो क्या, पशुका भी पेट भरनेके लिअे भगवानने साधन दिये हैं और आप अिस अिज्ज़तके साथ पेट भरें, तो अिन्सान और जानवरमें फर्क ही क्या रहा ? किसानोंसे मैंने कहा है कि आप हर जगह सिर मत झुकाओ । आपका सिर सिरजनहारके सामने ही झुके, और किसीके सामने नहीं । मर्दका मस्तक परमेश्वरके आगे झुकता है । राक्षसी सत्ताका प्रतिनिधि कितना ही बड़ा या छोटा हो, तोप-बन्दूकका प्रतिनिधि हो, अुसमें जान लेनेकी ताकत हो और जागीर देनेकी अुदारता भी हो, पर जो अुसके सामने झुकता है वह मर्द नहीं नामर्द है । अब तक हम तो नामर्द रहे, मगर अब हमारी औलाद तो नामर्द न बने ।

गुजरातमें किसानोंका दुःख अज्ञान है । अुनमें पटेल भी आ जाते हैं । शुरूमें पटेल लोगोंके रक्षक होते थे, अब पटेलोंके ज़रिये भक्षण होता है । यह मैंने आपको बोरसद और बारडोलीकी लड़ाअीके वक्त समझाया था । अिस सरकारकी नौकरी करना तो हमारे लिअे अपने बच्चों और कुटुंबकी हत्या करनेके बराबर है ।

संतानका कल्याण

हम तो अितना ही कहते हैं कि नमकका कानून रद कर दो, ज़मीनका लगान आधा कर दो, सरकारकी शराब पिलानेकी व्यवस्था बन्द कर दो और जिस विदेशी कपड़ेने हमारे किसानोंकी बरबादी की है, अुसकी जगह अुनके खेतकी कपाससे सूत बना कर अुन्हें बरबादीसे बचाओ । किसानोंको मृत्युशय्यासे अुठानेकी माँगोंके लिअे हमारे नेता जेलमें हैं । अिसलिअे आप अिस सरकारका साथ मत दो । १५ सालका काम अब चमक रहा है । अभी आपमें निर्भयता, स्वाभिमान और डर दूर होनेकी ज़रूरत है । कोअी भी मुखिया अपना दिया हुआ अिस्तीफ़ा वापस क्यों ले ! अिस्तीफ़ेसे तो आपका और आपकी भावी संतानोंका कल्याण होगा ।

हिन्दुस्तानका बड़ा मुखिया जेलमें हो, राष्ट्रपति जवाहरलाल जेलमें हों और अपना पद अपने पिताको सौंप चुके हों, लाखों रुपयेकी आमदनीवाले पिता

भी, जिन्होंने धूप-छाँह देखी न हो, जेलमें हों, अैसी हालतमें क्या आपको मुखियापन शोभा देगा ?

कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि दमन होगा। दमन कब होता है ? जब किसान पागल हो जायँ तब। पाँच-पचास हज़ारको गोलियोंसे छेद देंगे तब किसानोंका भला होगा। जैसे बीज बोने पर सड़ कर फट जाता है और फिर अुग कर निकलता है, वैसे ही सरकारकी अिस सड़ानमें से हिन्दुस्तानके लिअे कुछ न कुछ पैदा होगा। मैंने जेलमें सुना था कि बारडोलीमें सरकारने फौजका प्रदर्शन किया, मगर अुससे हमें क्या ? फौजके साथ झगड़ा करना हो तभी दमन होगा न ?

विष्टा खानेकी लोलुपता !

प्राण लेनेका अधिकार तो अीश्वरको है। सरकारकी तोप-बन्दूकें हमारा कुछ नहीं कर सकेंगी। हम रास गाँव वालोंकी तरह गाँव खाली कर दें तो सरकार क्या करेगी ? आप पेट तो कहीं भी भर सकोगे। मगर आबरू चली गअी तो फिर नहीं आयगी। गुजरातके किसानोंको व्यवस्थित ढंगसे काम करना है। फिर भले ही वे जेल, तोप या बन्दूक के लिअे तैयार न हों। अभी तो सरकारका साथ देना पाप है। अगर आप अैसा पाप करेंगे, तो आपके बच्चे आपके नामके साथ अपना नाम जोड़नेमें शर्मायेंगे। अिस सरकारकी नौकरी न मिली, तो भी क्या और मिल गअी तो भी क्या ! अब पटेल और मुखियाको पटेल साहब लिखनेकी और अुन्हें कुरसी देनेकी कैसे सूझी ! आपकी तो अुन्हें बड़ी गरज़ है। आपके बिना राज्य नहीं चल सकता। जब पटलाअी करनेका समय आये तब ज़रूर करना। मगर रिश्वत, खुशामद, ठहरानेका बन्दोबस्त, खाटें भेजना, और अींधन देना पटलाअी नहीं, गुलामी है। जब पटलाअी करनेका वक्त आयेगा, तब मैं बताअूँगा। किसानोंकी कमाअी पर ही राज्य चलता है। आप मर्द हैं, किसान बच्चे हैं। किसानकी कोखसे जन्म लिया हो और आपकी रगोंमें किसानका खून बहता हो, तो आप अिस्तीफ़े वापस न लें। विष्टा खानेकी अिच्छा आपके मनमें क्यों हो !

जुल्मके बाद फतह

मेरी तो भविष्यवाणी है कि जैसे प्रसव-वेदनाके बाद राहत मिलती है, अुसी तरह ज्याददीके बाद ही फतह होती है, आराम होता है। यहाँ सारे देशकी मुक्तिका सवाल है। सरकार जुल्म करेगी तभी कुछ होगा। मैं तो आज हूँ कल नहीं। मगर मैं यह चाहता हूँ कि किसान नामर्द न रहें। वे तैयार न होंगे, तो हिन्दुस्तानका नाश हो जायगा। तैंतीस करोड़ गुलाम दुनिया पर भारस्वरूप हैं। दुनियाको अुनकी ज़रूरत नहीं है। दो बरस चिथड़े पहन लोगे,

तो अिससे अिज्जत नहीं जायगी। यह अच्छे कपड़े पहननेका समय नहीं है। शराब पर अेक पाअी भी खर्च मत करो। अदालतोंमें क्यों जाते हो? गाँवोंका बन्दोबस्त हो जाय तो कौन पकड़ता है?

किसान मर्द बनें

नामर्दीकी जिन्दगीका क्या कारण है? कायरकी तरह डरते-डरते मरना ही नामर्दोंका काम है, यह समझ लो तो राज्य हम चला सकेंगे। तैंतीस करोड़ पर जबरदस्तीसे राज्य या तो हमारी नामर्दीके कारण या हमें फुसलाकर ही हो सकता है। सरकार यह मानती हो कि पाँच-पचास हजारको जेलमें भेज देनेसे यह बाढ़ रुक जायगी, तो अुसकी यह गिनती गलत है। आपमें फूट नहीं पड़नी चाहिये। कोअी अफ़सर समझाकर या डराकर अिस्तीफ़ा वापस लेनेको कहे, तो आप वापस न लें। भगवान आपको बल दे।

२

माधवबाग में

(जेलसे छूटनेके बाद जब बम्बअी गये थे, तब माधवबागमें बम्बअीके भाअी-बहनोंके समक्ष दिया गया भाषण।)

मार्शल लॉ हो जाय तो नामर्द निर्वंश हो जायँ

शोलापुर जैसा मार्शल लॉ सारे हिन्दुस्तानके आदमियों पर घोषित हो जाय, तब तो नामर्दोंका वंश मिट जाय। हम हिन्दुस्तानी जबसे डरने लगे कि मार्शल लॉ हो जायगा तो क्या करेंगे, समझ लीजिये अुसी दिनसे हमपर कमबख्ती सवार हुअी। मैं जब जेल गया तब संदेशा दे गया था कि जिनके पास रुपया ज्यादा हो और जिन्हें डर लगता हो, वे सब कुछ समेटकर विदेश चले जायँ। गुजरातमें धर्मयुद्ध शुरू किया गया है, अिसलिअे कोअी नामर्द न रहे। अिस धर्मयुद्धको गंदा मत करना, नहीं तो समझ लेना कि मौत आ गअी।

व्यापारको भले ही आग लग जाय!

कहते हैं कि बम्बअीमें व्यापार-धंधा नष्ट हो रहा है। मैं कहता हूँ कि व्यापार डूब जाय, अुसको आग लग जाय, तो भी मैं तो ज़रा भी नाराज नहीं होअूँगा। दस लाख नामर्दोंके बजाय वहाँ पाँच लाख मर्द रह जायँगे, तो मैं खुश होअूँगा। जब सबसे श्रेष्ठ व्यक्तिको, जिसके नामकी छोटे और बड़े-बूढ़े सब जय बोलते हैं, जेलमें बंद कर दिया है, तब क्या हम व्यापार करेंगे? जिसकी पूजा करनी चाहिये, अुसे जेलमें डाल रखा है। हम ३३ करोड़ होते हुअे भी दो लाख अंग्रेज अुन्हें जेलमें रखें, तो अैसे समय व्यापारका विचार कैसे किया जा सकता है?

कॉलेजोंको जला दो : स्कूलोंको नष्ट कर दो

कॉलेजोंको आग लगा दो, स्कूलोंको नष्ट कर डालो। हिम्मत न हो तो घरमें बैठे रहना, मगर व्यापारकी बात मत करना। डेढ़ सौ वर्षोंसे हमने सच्चा व्यापार कहाँ किया है? अेक ही बनिया सच्चा व्यापार जानता है, और वह अिज्जतका व्यापार है। वह जेल में है अितना ही नहीं, बल्कि अुसके तीन बेटे भी जेलमें हैं। बेटेका सोलह सालका छोटा बेटा भी जेलमें है। और अुसकी पत्नी क्या कर रही है? अपनी जान जोखिममें डालकर वह गाँव-गाँव शराबखानों और कपड़ेकी दुकानों पर पिकेटिंग करती है। अैसे समय मैं आपको व्यापार नहीं करने दूँगा।

फूटे हुअे सिरोंकी माला

आज सिर फूट रहे हैं। सिर क्यों फूटते हैं? अिसलिअे कि करम फूट गये हैं। गुजरातके अेक-अेक आदमीका सिर नहीं फूट जाय, तब तक लड़ाअी जारी रहेगी। गांधीजी फूटे हुअे सिरोंकी माला सरकारको भेंट करनेकी अिच्छा रखते थे। सरकार अिस समय घबरा गअी है; चिढ़ गअी है। अिसका क्या कारण है? अुसका अेक हथियार बोथरा हो गया है। बन्दूक काममें लेनेसे अुसे शर्म आती है, वह दुनियासे डरती है। अेक ही निःशस्त्र आदमीने सरकारको समझा दिया है, अीश्वरका परिचय करा दिया है। अुन्होंने समझा दिया है कि कुछ भी कर ले, तो भी प्राण लेना तेरे हाथमें नहीं है। सल्तनतोंको तोड़नेवाला अूपर बैठा है। मैं अपने दिलकी आग बम्बअीके लोगोंके सामने अुँड़ेल रहा हूँ। आजकी सभा तो दूसरे ही कामके लिअे है। मैं अेक सभा करनेवाला हूँ, अुस वक्त तुम्हारा धर्म समझाअूँगा। आज तो अितना ही कहूँगा कि अिस समय व्यापार नामर्दोंका काम है।

जो नामर्द हो वह समुद्रमें डूब मरे

कल कॉलेजोंके विद्यार्थियोंसे मिलना है। अगर यह मौका मिला तो मैं कहूँगा कि वे कॉलेजोंमें जाकर अिस समय डिग्रियाँ लेनेकी बात करते हों, तो वे हिन्दुस्तानके दुश्मन हैं। मेरा लड़का हो और वह अैसे समय कॉलेजकी बात करे, तो मैं अुसे गोलीसे अुड़ा दूँ।

क्या पढ़ोगे?

कोअी कहते हैं कि कॉलेजसे बाहर निकालकर क्या करना चाहते हो? मैं कहता हूँ कि कॉलेजमें जाकर क्या अितिहास पढ़ोगे? पेरीनबहनका अितिहास पढ़ा है न!

मुझे हिन्दुस्तानके सेनापतिकी जगह दी गअी है। मैं किसान हूँ। साफ बात कहूँगा। अस्पष्ट बातें नहीं करूँगा। मुझे सफ़ाअीकी झूठी और गलत

बातें नहीं आतीं। मेरे पास प्रपंच नहीं चल सकता। कॉलेजके विद्यार्थी चिल्लाहट तो बहुत मचाते थे। जिसकी पूजा करते थे, वह जवानोंका नूर पंडित जवाहर जेलमें है। अुसने आशा रखी थी कि कॉलेजोंमें पढ़नेवाले विद्यार्थी बाहर आ जायेंगे। कल मुझसे सब मिलने आयेंगे, तो मैं अुन्हें अैसी बातें कहूँगा कि खड़े-खड़े जल अुठें। बम्बअीके व्यापारियोंसे कहनेका अवसर नहीं है। अुन्होंने जो कुर्बानियाँ की हैं, अुसपर मुझे गर्व है। अुन्हें धन्यवाद देता हूँ। मगर अितना काफी नहीं है। पीछे हटनेकी बात न करो। कलंकका टीका न लगवाओ, अिज्ज़तके मौक़ेमें पीछे मत रहना।

भले ही सारा गुजरात जल अुठे!

क्या आपको मालूम है? मालूम न हो तो मैं कहता हूँ कि सरकारको आशा है कि दो-चार महीने लड़ाअीको यों ही लम्बाया जाय, तो वह अपने आप बंद हो जायगी। मगर मैं सरकारसे कहता हूँ कि हिन्दुस्तानमें कुछ भी हो जाय, गुजरात सारा जल अुठे, मगर कभी सिर नीचा नहीं होगा। अिस बार चूक गये, तो सदाके लिअे गुलामी चिपक जायगी। दुनियाके अितिहासमें काले अक्षरोंमें नाम लिखा जायगा। आज तो संसार आश्चर्यसे यह देख रहा है कि अेक प्रजा शस्त्र न होने पर भी क्या कर रही है! अब ज्यादा दिन छिपाये नहीं छिप सकता। अगर हमारा बलिदान पूरा और सच्चा होगा, तो दुनियासे लम्बे अरसे तक छिपा नहीं रहेगा। सत्यको कौनसा राक्षस छिपा कर रख सकता है? जो सत्य होगा, वह तो आखिरमें प्रकट होगा ही।

आत्मा गोलियोंसे नहीं छिदेगी

'मार्शल लॉ' से डरते हों, तो लड़ाअी छोड़ देनी चाहिये। यह सही है कि शोलापुरमें लोगोंको कारण मिला होगा, मगर अेक बात तो आप ज़रूर स्वीकार करेंगे कि शोलापुरके लोगोंने पागलपन किया। दो पुलिसके सिपाहियोंको जला दिया। अेक कंकर पड़ने पर भी तो सामने बन्दूक तैयार रहती है। क्योंकि अब दूसरे हथियार कामके नहीं रहे। मगर आपने जो शान्ति रखी है, अब अुससे भी ज्यादा रखना। साथ ही साथ ज़बान पर भी काबू रखना। बोलनेमें मर्यादा मत छोड़ना, गालियाँ देना तो कायरोंका काम है।

सरकार हमारे सिर तोड़ेगी, मगर याद रखिये कि वह हमारा दिल नहीं तोड़ सकती। गोलियोंसे हमारे दिल छलनी हो जायँगे, मगर अैसी कोअी गोली नहीं बनी जो आत्माको छेद सके।

अंग्रेजोंके खयालमें हिन्दुस्तान मूर्खोंका घर!

अिस लड़ाअीको आप अच्छी तरह समझ लीजिये। आपने जो शान्ति रखी है, अुसके लिअे सारा हिन्दुस्तान खूब खुश हो रहा है। आपकी शान्तिके लिअे अुसे

गर्व है, मगर यह समझ लीजिये कि यह तो कसौटीकी शुरुआत है। बातें हो रही हैं कि यों समझौता हो जायगा और सरकार यह करेगी, वह करेगी। मुझे अैसी बातें सुनकर दुःख होता है। मुझे लगता है कि मैं जेलसे छूटकर यहाँ कहाँ आ गया!

याद रखिये कि अेक भी अंग्रेज़ अीमानदारीसे यह नहीं मानता कि हिन्दुस्तानको कुछ देना चाहिये। अरे, अभी तो बहुत देर लगेगी। अुन्हें छोड़ना है और वह अिस प्रकारसे कि जिसकी अुन्हें कल्पना भी नहीं होगी। अुनका तो खयाल यह है कि हिन्दुस्तान मूर्खोंका घर है। मीठी-मीठी बातोंसे धोखेमें आ जायगा। मगर अेक आदमी अैसा है, जिसे कोअी धोखा नहीं दे सकता। क्योंकि अुसमें प्रपंच नहीं है। वह सीधा है। गोल या चौकोर कैसी भी मेज़ रखिये, मगर वह अुसके धोखेमें नहीं आयेगा और दूसरा कोअी अुसमें नहीं जायेगा। मुझे विश्वास है कि आप भी अिसे समझ गये होंगे। कितने ही लोग, जो सच्ची सेवा कर रहे थे, जेलमें जायँ और हम गोलमेज़ परिषदकी बातें करें, यह फ़ज़ूल है।

३
बम्बअीके धनिकोंसे

[बम्बअीके मूलजी जेठा मार्केटमें दिया हुआ भाषण।]

मैं किसानका लड़का हूँ। किसानकी ज़बानमें मिठास नहीं होती। मेरी जीभ कुल्हाड़े जैसी है और मेरी बात कड़वी लगे, तो भी हम दोनोंके हितकी है। मैं साफ़ बात पसन्द करनेवाला हूँ। आप व्यापारी हैं, आन्दोलनसे प्रेम रखते हैं, अुत्साह रखते हैं और देशका भला चाहते हैं। हम परेशान हैं और अिस परेशानीमें बहुतसे लोग पिट जायँगे। आपको परेशानी होती है, अिससे मुझे दुःख होता है। आपको लम्बे अरसेसे महात्माजीने सूचना दे दी थी कि विलायती कपड़ेका व्यापार छोड़ दीजिये, और अगर आपने महात्माजीकी सलाह मान ली होती तो बहुत अच्छा होता।

मुझे यह चिन्ता हो रही है कि बम्बअीके व्यापारसे देशका सत्यानाश हो रहा है। मेरे कहनेका गलत अर्थ न करें। आपका व्यापार सच्चा नहीं है, अिसकी सूचना सन् १९२१ में दी जा चुकी है। विलायतमें अंग्रेज़ कहते हैं कि जब १९२२ में गांधीजी पकड़े गये, तब अेक कुत्ता भी नहीं भौंका था। हम अैसा अपमान कैसे सह सकते हैं? महात्माजी जेलमें रहें, यह कैसे सहा जाय? हमारा जीना व्यर्थ है। मार्शल लॉ से महात्माजीको जेलमें नहीं रखा जा सकता। महात्माजी जेलमें हैं, वहाँसे अुन्हें छुड़ानेके लिअे क्या किया जाय? सरकार बन्दूक दिखाती है, अुसके विरुद्ध हिन्दुस्तानमें बहुतसे साधन हैं।

नंगे फिरनेमें शर्म नहीं

गुजरातके किसानों और स्त्रियोंसे कहता हूँ कि आप लोग विलायती कपड़े मत पहनिये। नंगे फिरेंगे तो मुझे शर्म नहीं आयेगी। हिन्दुस्तान सारा ही नंगा फिरे तो भी क्या? हमें विलायती कपड़ा पहनाकर नामर्द बना रहे हैं। आप सब समझते हैं कि यह बुरा है।

आपने पंडितजीसे जो बातें की हैं, अुस बारेमें विचार कीजिये। साथ ही साथ आप यह भी याद रखिये कि आपका अनुकरण सारे हिन्दुस्तानमें होगा। आजकल सारे आन्दोलनका केन्द्र-स्थान बम्बअी है। आजकल जो आन्दोलन हो रहा है, अुसमें व्यापारियोंको बड़ा हिस्सा लेना है। बच्चेसे लेकर स्त्री और बूढ़े तक सबको हिस्सा लेना है। अब आपको यह सोचना है कि वापस लौटना है या अुस पार जाना है। दुःख ही सुखका मूल है। अेक बार धक्का लगता है। मार्केटका प्रायश्चित्त करना है। आप आज तकका हिसाब लगाकर देखिये कि आज तक कितना रुपया विदेश भेज दिया, देशका कितना नुकसान किया और दो-चार व्यापारियोंकी कमेटी मुकर्रर करके आँकड़े प्रकाशित कीजिये कि आज तक अितने करोड़ रुपये विदेश भेज दिये हैं। अिससे आपकी समझमें आयेगा कि हमने कितने पाप किये हैं।

दिवाला निकालना पड़े तो भी क्या?

आपके पास लाखोंका माल है। अिसलिअे मान लीजिये कि दिवाला निकालनेकी नौबत आ जाय तो भी क्या? ३३ करोड़ आदमी दिवाला निकालें अिसके बजाय आपके पास तो बुद्धि है, सो कभी भी व्यापार कर सकते हैं। आपके बेटे सारी दुनियामें व्यापार कर सकेंगे और अुस वक्त आपका व्यापार स्वतंत्र भारतमें असंख्य गुना बढ़ जायगा। आप कड़वी घूँट पी जाअिये और स्थाअी जीर्णज्वर निकाल डालिये। हम कड़वी बात प्रेमभावसे कहते हैं। आपको नुकसान अुठानेके लिअे कहता हूँ, सो कहनेकी मेरी क्या बिसात है? देशके लिअे जितना प्रेम मुझे है, अुतना ही आपको भी है। सारी दुनियाकी दृष्टि अिस देश पर थी। जब संसारके लोग नंगे फिरते थे, तब हिन्दुस्तानके वैभवसे तमाम दुनिया चकित थी। मगर आजकल दलालीके सिवाय और कोअी काम नहीं है। मैं किसानोंसे कहता हूँ कि जैसे आप खानेके लिअे खुराक पैदा करते हैं, वैसे ही अगर आपको कपड़ा पहनना हो, तो वह भी पैदा कर लें।

विलायती चिथड़ा भी न बेचा जाय

देशकी बेअिज्जती हो अिसके बजाय अिज्जतका व्यापार करने और हिन्दुस्तानके मार्गदर्शक बननेके लिअे चाहे जितना नुकसान अुठा लीजिये। जब भाअी और बहनें जेलमें जा रहे हों, अुस समय गंदा व्यापार नहीं हो सकता। जो काम करें

वह साफ तौरसे कीजिये, पिछले दरवाजेसे मत कीजिये। अपनी कमज़ोरी छिपानेके लिअे अधिक पाप करनेके बजाय तो आपको मेरी सलाह है कि आप जो निश्चय करें अुस पर कायम रहिये, पीछे मत हटिये। कांग्रेसकी माँग है कि विलायती कपड़ेका अेक चिथड़ा भी नहीं बेचा जा सकता। आप जो निश्चय करें, अुस पर अीमानदारीसे अमल कीजिये। अैसा कीजिये कि जिसके पीछे जासूसी न हो। आपका वचन सच्चा होना चाहिये और अुसका अीमानदारीसे पालन करना चाहिये। अिस पापसे छूटनेके लिअे भगवान आपको शक्ति दे।

४

पारसी भाअी-बहनोंसे

[बम्बअीकी पारसी राजनैतिक सभाके आश्रयमें बम्बअीमें हुअी पारसियोंकी सभामें दिया हुआ भाषण।]

स्वराज्य बतानेवाले पारसी हैं

पारसी बम्बअीके मस्तिष्क हैं और मैं यह मानता हूँ कि जो मस्तिष्क-शक्ति पारसी क़ौममें है, वह और किसीमें नहीं है। मैं आज यहाँ अितने ज्यादा पारसियोंको देखकर बहुत ही खुश हुआ हूँ। स्वतंत्रताका मार्ग तो आप ही लोगोंने दिखाया है। दादाभाअी नौरोजीने सारे हिन्दुस्तानका पथप्रदर्शन किया है और पेरीनबहनने जो काम करके दिखाया है, वैसा तो सारे हिन्दुस्तानमें किसी नेताने नहीं किया। अैसी स्त्री कैदमें रहे, यह सहन नहीं हो सकता।

अमरीकियोंसे भी बढ़कर

बहुतसे व्यापारियोंके साथ मेरी मुलाकात हुअी है और वे कहते हैं कि हमारे व्यापारको बड़ा नुकसान हो रहा है। परन्तु हमें व्यापार नफेका न करके अिज्जतका करना है। हमें पराधीन रहकर, गुलामीकी बेड़ियोंके बन्धनमें रहकर, व्यापार नहीं करना है। अुन्हें तो अपने व्यापारकी परवाह है, हमारे व्यापारकी नहीं। बम्बअी बड़ा बंदरगाह ज़रूर है, मगर बरसोंसे अुसे अेक खड्डा बना दिया गया है, जहाँसे हिन्दुस्तानका धन विलायत खिंचता जा रहा है। मगर हिन्दुस्तानके पारसी अैसे हैं कि वे चाहें तो अिस धनको जानेसे रोक सकते हैं और न्यूयॉर्कके धनिकोंसे भी टक्कर ले सकते हैं।

जब तक आप अुनकी हुकूमतमें खुशामद करते रहेंगे, तब तक आपको खिताब और सारे सुख मिलते रहेंगे। अैसा कहा जाता है कि हम राज्य करने योग्य नहीं हैं और हर बातमें बोल्शेविज़्मके होनेका डर भी बताते रहते हैं। परन्तु मैं अितना ही कहूँगा कि अगर हिन्दुस्तान आज़ाद होनेको तैयार हो और आज़ाद हो जाय, तो अैसे बोल्शेविज़्मको मैं अपनी जेबमें रखकर फिर सकता हूँ।

स्वतंत्रताका पहला लेख महर्षि दादाभाअी नौरोजीने लिखा है और अुनकी पोतियोंने जो कुछ करके दिखाया है, वह और किसीसे नहीं हो सकता। अिसीलिअे मुझे पक्की आशा है कि पारसी, जो अिस लड़ाअीमें शरीक हुअे हैं, अुसे कभी पीछे नहीं हटने देंगे।

ऋषिकी जाति

जिस जातिमें दादाभाअी नौरोजी जैसे महर्षि पैदा हुअे हों और जिस जातिमें अुस पुरुषकी पोतियाँ अितना अच्छा काम कर रही हों, वह जाति क्या नहीं कर सकती? अिसलिअे मेरी आखिरी अर्ज यह है कि आप दादाभाअी नौरोजीका महामंत्र सफल कीजिये।

जैसी अिज्जत वैसी सेवा

जेल कमेटीका साहब मुझसे मिलने आया। अुसने पूछा कि आपकी तबीयत तो अच्छी है? खुराककी चर्चा की। फिर मैंने कहा कि अिसमें न पड़ना ही अच्छा है। आपकी अिज्जतके अनुसार भोजन मिलता है। मेरे साथी कह रहे थे कि हम तो मेहमान बनकर जा रहे हैं। मगर सेवा तो अिज्जतके अनुसार ही करेंगे न! रोटीके साथ नमक तक देनेसे अिनकार कर दिया। काफ़ी जाँच करनेके बाद नमक दिया गया। सरकार किस प्रकारकी है, यह खोजनेमें हमें मज़ा आता था। वह शरीरको कष्ट दे सकती है। मगर आप जानते हैं अिस शरीरमें कितनी शक्ति है? हम अैसी जेलमें रहे हैं कि अुसके सामने यह जेल तो है ही क्या? नौ महीने माँके पेटमें रहे, वहाँ अनेक कष्ट सहे हैं। जेलमें तो सुन्दर हवा है, पानी है, वहाँ क्या कष्ट होने वाला है? कष्ट तो अुसे दिया जा सकता है, जिसकी आत्मा, जिसका मन दुर्बल है। जो देशके लिअे सिर हथेलीमें लिये फिरते हैं, 'सिर जावे तो जावे पर आज़ादी घर आवे' का मन्त्र जपते हैं, अुन्हें सरकारकी रोटियाँ क्या दुःख दे सकती हैं!

चार आनेमें बादशाही

सरकारका मेरे लिअे चार आना खर्च होता था और अुसमें मैं बादशाही करता था। मुझे वहाँ ज्वारकी रोटियाँ और भाजी मिलती थी, अिसका मुझे दुःख नहीं। मैं नादानके घर मेहमान हुआ, अतः अुसने अपनी समझके अनुसार मेरा स्वागत किया। हममें से बहुतोंको सरकार रोज़ दस आनेकी खुराक देनेको तैयार थी, मगर जब हमारे दूसरे भाअियोंको चार आनेकी खुराक मिलती हो, तब हमने दस आनेमें पेट भरनेसे अिनकार कर दिया। हमने चार आनेमें मौज की और आजकल जो जेलमें हैं, अुन्हें भी चार ही आने मिलते। हमसे जब सरकारी अफ़सर मिलने आते, तब पूछते कि आप दुबले क्यों हो गये? मैं

जवाब देता कि आपकी मेहमान नवाज़ीसे ही तो ! आप जब हमें चार आनेकी खुराक देते हैं, तो अुसमें हम मोटे कहाँसे हों ?

सरकारकी नीयत ही यह है कि जेलमें हमें कष्ट दिया जाय और बाहर हमारे सिर फोड़े जायँ । मगर अिस शरीरमें तमाम दुःख सहन करनेकी शक्ति है। जब दुःख असह्य बन जाता है, तब मनुष्य बेहोश हो जाता है और अुसे दुःखका पता नहीं चलता । यह शरीर मिट्टीका बना हुआ है, मिट्टीके पुतलेकी तरह टूट जानेवाला है । लाठियोंसे सिरके टुकड़े हो जायेंगे, मगर दिलके टुकड़े नहीं होंगे। आत्माको गोली या लाठी नहीं मार सकती । दिलके भीतरकी असली चीज़को — आत्माको — कोअी हथियार नहीं छू सकता ।

५

बहादुरोंकी माँ बनना हो तो

(बहनोंसे)

अगर आपको बहादुरोंकी माता बनना हो, तो घरके नौजवानोंको बाहर निकालिये । जो जेलसे डरते हों, अुनसे कहिये कि मौत किसीको छोड़नेवाली नहीं । तिजोरीमें घुस जाओगे, तो भी वह तुम्हें पकड़ लेगी । तो फिर अुससे क्यों भागें ? आप शाहपुरके दरवाज़े पर देखती होंगी कि 'राम बोलो भाअी राम' कहते हुअे रोज कितने ही मुर्दे ले जाये जाते हैं ? और मुहल्लोंमें रोज कितने ही नये जन्मते हैं ? अिस देहकी ममता झूठी है । अुसका मोह क्या रखा जाय ! जो मर्दका नाम धारण करता है, अैसे अेकको भी घरमें मत रहने दीजिये । आपके घरोंमें जो भी जवान हों, चाहे वे आपके पति हों, भाअी हों, या लड़के हों, वे घरमें नहीं रहने चाहियें । अुनसे कहो कि जाओ युद्धमें, जब तक लड़ाअी जारी है तब तक घरमें मत रहो । कोअी भय मत रखो । भय रखोगी तो नरकमें वास होगा । जो नामर्द हैं वे गुजरातमें नहीं रहने चाहियें । जिन्हें डर लगता हो अुनसे आप तलाक़ ले लीजिये । जो गोलियोंसे, सिर फूटनेसे या जेलसे डरते हों, अुन नामर्दोंके साथ शादी नहीं करनी चाहिये । जो बापूकी लड़ाअीमें मरेंगे, अुन्हें तो स्वर्ग मिलेगा । अगर हम न मरे और सरकार मर गअी, तो यहीं स्वर्ग बन जायगा । हमें तो हिन्दुस्तानमें स्वर्ग बनाना है, या फिर मरकर स्वर्गमें जाना है ।

समझौतेका समय नहीं आया

कहीं कहींसे समझौतेकी बातें होती हैं ! अरे, अुनपर आशाअें बाँधेंगे तो मारे जायँगे । याद रखिये कि अभी समय नहीं आया । जल्दी करनेसे आम नहीं पकते । अगर आम परसे कच्ची कैरी तोड़कर खायेंगे, तो दाँत खट्टे होकर

टूट जायँगे और कैरीको तोड़नेमें भी कष्ट होगा। फलको पकने देंगे तो वह अपने आप गिर पड़ेगा और असके अमृतरूपी रसका लाभ भी मिलेगा; अिसी तरह जब समझौतेका समय आयगा, तब सच्चा लाभ मिलेगा।

हिंसाके विरुद्ध अहिंसा

हिंसाके विरुद्ध अहिंसाका हथियार आज़माकर गांधीजीने दुनियाकी आँखें खोल दी हैं। आजकल दुनियामें संहार शक्तिका जोर है। अिस प्रबल शक्तिके सामने मुट्ठीभर हड्डियोंवाला अेक आदमी खड़ा रहकर सरकारको कँपा रहा है। असके पास जैन धर्मका 'अहिंसा परमो धर्मः' का शस्त्र है, और अस शस्त्रका वह अद्‌भुत ढंगसे अिस्तेमाल कर रहा है। अितनी शक्ति रखनेवाला और कोअी आदमी आप मुझे बता दें, तो मैं अस व्यक्तिको तीर्थंकर मानकर नमस्कार करनेको तैयार हूँ। क्या अैसे व्यक्तिमें त्रुटियाँ निकालना अुचित है? दुनियामें अगर कोअी हिन्दुस्तानको पहचाननेवाला है, तो यह आदमी है। अिस सारी सल्तनतको हिला देनेवाले अिस व्यक्तिके पास भी आपके धार्मिक ग्रन्थोंमें लिखी हुअी अहिंसा ही है।

६
नवसारीके पारसियोंसे

[ता० २४–७–१९३० को नवसारीमें पारसी भाअी-बहनोंकी सभामें दिया गया भाषण।]

मेरा प्रेमपूर्वक स्वागत करनेके लिअे मैं आपका आभार मानता हूँ। नवसारी तो मेरे लिअे तीर्थस्थान है, क्योंकि हिन्दुस्तानको जो बीमारी हो गअी है असे पहचाननेवाला यहीं पैदा हुआ था। पारसी क़ौममें तो बड़े-बड़े धनाढ्य पैदा हुअे। बड़े-बड़े कारखाने चलानेवाले ताता और पिटिट पैदा हुअे। बड़े-बड़े दान देनेवाले हुअे। मगर पारसी क़ौमकी अिज्ज़त किसने बढ़ाअी? यह अिज्ज़त बढ़ानेवाले थे दादाभाअी नौरोजी। अुनका नाम सुनकर कितने ही बड़े विद्वानका सिर भी अुनके सामने झुक जायगा।

अुन्हें हम दादा कहते हैं, क्योंकि अुन्होंने हमें जगाया और कहा कि हिन्दुस्तानको भुखमरीका रोग लगा है। यह अुन्होंने आँकड़े निकालकर बता दिया। यह अितना कंगाल देश है कि यहाँ प्रति व्यक्ति सिर्फ़ तीस रुपया सालाना आमदनी है। अुन्होंने यह भी सुनाया कि यह राज्य अैसा है, जिसमें करोड़ोंको रोटी तक खानेको नहीं मिलती। आज तक किसीने अिस बातसे अिनकार नहीं किया, अुल्टे सभी अिस बातकी साक्षी देते हैं। अंग्रेज़ अध्ययन-कर्ताओं और गोखले जैसोंने भी अुनका समर्थन किया है।

अुन्होंने अिस रोगके साथ ही अुसका अिलाज भी बताया। अुन्होंने यह कहकर कि जब तक स्वराज्य नहीं होगा, तब तक यह बीमारी नहीं मिटेगी, ‘स्वराज्य’ शब्द बोलना सिखाया।

६०

मांडवीके खादी भंडारका अुद्‌घाटन

[नवम्बर सन् १९३०में चरखा संघकी तरफसे बम्बअीके मांडवी मुहल्लेमें खुलनेवाली नअी खादीकी दुकानका अुद्‌घाटन करते समय प्रकट किये गये अुद्‌गार।]

तीन महीने पहले लोकमान्य तिलककी संवत्सरीके दिन बम्बअीमें बोरी-बन्दर स्टेशनके सामने हमने जो दृश्य देखा था, वह आज मेरे सामने खड़ा हो रहा है। अुसके बाद ३ महीने यरवदा जेलमें बिताकर मैं आज पहली बार आपके पास आया हूं। अिन तीन महीनोंके दरमियान बम्बअीमें बहुतसी घटनाअें और बहुतसी तबदीलियाँ हो चुकी हैं और बम्बअीसे भी ज्यादा अुसके बाहर हिन्दुस्तानमें क्या-क्या परिवर्तन हो चुके हैं, वे भी आप और मैं जानता हूं। अिन सब बातोंका विचार मेरा कार्यक्रम बनानेसे पहले मुझे और आपको करना है। मेरे जेलसे बाहर निकलनेके पहले ही पं० जवाहरलालने मेरे लिअे हुक्म दे रखा था कि अुनके बादमें हिन्दुस्तानका तंत्र मुझे सम्हालना है। अुनका हुक्म मैं शिरोधार्य करता हूँ और अुस पर अमल करनेकी कोशिश कर रहा हूँ। वैसे मैं जानता हूँ कि वे खुद भी जेलसे छूटनेके बाद मुश्किलसे अेक सप्ताह ही बाहर रह सके थे। अुनके जानेके बाद मेरे बाहर आने तकके समयके लिअे पं० मोतीलालजीने श्री सेनगुप्ताको मुकर्रर किया, तो वे मेरे आने तक भी न रह पाये। अिसलिअे अैसी स्थितिमें आप सहज ही कल्पना कर सकेंगे कि मैं कितने समय तक बाहर रह सकूँगा।

किसानोंकी मुलाकात

मैं जानता हूँ कि किसी हद तक तो यह मेरे ही हाथमें है कि मैं कितने दिन बाहर रहूँ। अभी तो मैं देशकी स्थितिसे कुछ वाकिफ हो जाना चाहता हूँ और यह भी आशा रखता हूँ कि गुजरातके अपने किसानोंके दर्शनका लाभ मिल जाय तो वह ले लूं। लेकिन मेरे कानमें आवाज आ चुकी है कि गुजरातके किसानोंकी और मेरी मुलाकात न होने देनेकी कोशिशें हो रही हैं, और ये कोशिशें होना मुझे स्वाभाविक लगता है।

बम्बअीसे क्या कहूँ ?

बम्बअीमें आज मेरे लिअे नया कहनेको क्या हो सकता है? यहाँ तो कअी बड़े-बड़े नेता आये हैं और आयेंगे। वे आपसे जो कहना था, सो कह चुके हैं। बम्बअीके लिअे आज कोअी नअी बात सुननेकी नहीं हो सकती। मुझसे मिलने, मुझे देखने और मेरी आवाज सुननेकी अिच्छा आपको हो यह ठीक है। वैसे मेरे दिलकी बात तो आपसे कहाँ छिपी है? अुस वाणी पर दुनियामें कोअी ताला नहीं लगा सकता। वह तो मैं जेलमें बैठा होअूँगा, तो भी आप तक पहुँचेगी और आपके हृदयमें पैठ जायगी।

पंडितजीसे मुलाकात

अिसलिअे मुझे छूट कर आये जो थोड़े दिन हुअे हैं, अुनमें मुझे खास दौड़धूप करनेकी ज़रूरत नहीं जान पड़ी। फिर मुझे पंडितजीसे जल्दी मिलना भी था। अुनकी बीमारीके बारेमें सुनकर मुझे बड़ी चिंता हो रही थी। मैंने जेलसे तार दिया था, मगर वह तार न तो पंडितजीको पहुँचाया गया, न मुझे ही अिस बारेमे खबर दी गअी! अिसलिअे बाहर आते ही यह सोचकर कि अुन्हें देख लूँ और अुनके दुःखमें कुछ भाग ले सकूँ तो ले लूँ, मैं दिल्ली हो आया। मगर आज जब सब दुःखी हों, तब कौन किसके दुःखमें भाग ले? मैं बीमारकी खबर लेने गया था, पर मुझे कहते शर्म आती है कि खुद मुझे भी बुखार आ गया! मेरे जैसे किसानको भी कहीं बिस्तरमें पड़ना चाहिये? मेरे साथ महादेव थे, अुन्हें भी बुखार आ गया।

देशके लिअे बाहर और देशके लिअे भीतर

मुझे बहुतसे लोग कहने आते हैं कि मेहरबानी करके अभी जल्दी मत कीजिये, बोलिये नहीं। आप बाहर रहेंगे तो अभी हमे सलाह पूछनेके लिअे जगह मिल जायगी। अिन सबको मेरा जवाब यह है कि मुझे किसीकी सलाहकी ज़रूरत नहीं है। कब गिरफ्तार होना और कब नहीं होना, यह जितना मैं जानता हूँ अुतना कोअी नहीं जानता। मुझे जिस वक्त महसूस होगा कि मेरे जेल जानेसे देशकी सेवा होगी, तब मैं तुरन्त जेलमें चला जाअूँगा; और जब तक यह लगेगा कि बाहर रहने में फ़ायदा है, तब तक बाहर रहूँगा। मैं तो अपना भविष्य अपने हाथमें रखनेवाला आदमी हूँ। मैं दुश्मनोंके हाथोंमें खेलनेवाला नहीं हूँ। मगर आप तो मुझे पकड़ा हुआ ही समझिये, क्योंकि समझदार आदमीके लिअे तो बुरेसे बुरे संयोगोंकी कल्पना करके चलना ही अुचित है। आजकल देशमें अेक छोटासा स्वयंसेवक भी बाहर नहीं रह सकता। सरकार जब मेरी लड़कीका बाहर रहना बरदाश्त न कर सकी, तो मुझे तो क्या बरदाश्त करेगी? मेरी लड़कीसे ही जब वह डरती है, तो मुझसे तो डरेगी ही न?

अिज्ज़त बनानेका अवसर

मगर मैं निश्चिन्त हूँ, क्योंकि किसान मेरे मनकी बात जान चुका है। वह जानता है कि ज़मीन-जायदाद चली जायगी तो फिर पैदा की जा सकेगी, घर-बार चला जायगा तो फिर खड़ा हो जायगा, मगर अिज़्ज़त चली जायगी तो वह फिरसे नहीं आयेगी।

गुजरातके लिअे अिज्ज़त बनानेका आज अवसर आया है। गुजरातका आदमी पहले चतुर मालूम होता था, व्यापार करना जाननेवाला मालूम होता था, मगर अितिहासमें नाम लिखवानेका समय कभी आया हो, तो वह पहले पहल आज ही आया है। अिसलिअे गुजरातके किसानों और व्यापारियोंसे, गुजरातके जवानों और विद्यार्थियोंसे, गुजरातके भाअियों और बहनोंसे मैं कहता हूँ कि नाम अुज्ज्वल करनेका जो धन्य दिवस आज आया है, अुसे मत चूकिये।

सरकारका मिथ्याभिमान

वैसे मैंने पहले ही कह दिया है कि कोअी डरे नहीं। प्राण लेना अिस दुनियामें और किसीके हाथमें नहीं है। जानेका वक्त आया, तब बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी पलभरमें चले गये और अुन्हें कोअी रोक नहीं सका। बड़ी सल्तनत भी अिसी तरह अपने पापोंके भारसे चली जायगी तब अुसे कोअी रोकनेवाला नहीं है। कोअी सत्ता यह घमण्ड रखती हो कि वह लाठियों, गोलियों या बमोंसे अपनी हुकूमत चला सकेगी, तो यह मिथ्याभिमान है।

जेलमें मुझे अेक 'टाअिम्स' नामक अखबार मिलता था। अुसमें रोज अैसी ही खबरें आया करती थीं कि यह आन्दोलन खतम हो रहा है और फलाँ फलाँने रुपये अदा कर दिये हैं। मगर मैं अुनसे सही बात समझ लेता था। आन्दोलन तो खतम नहीं हो रहा था, मगर लोगोंको हताश करनेके लिअे खराब वातावरण पैदा करनेकी कोशिशें हो रही थीं।

अहिंसाके लिअे हिजरत

मैंने किसानोंको अेक बात और भी सिखा रखी है कि यह लड़ाअी सभ्यताकी है। अुसे कोअी जरा भी असभ्यता करके दूषित मत करना; और यदि अैसा अवसर आ जाय कि सभ्यता छोड़नी पड़े, तब देश छोड़ दें मगर सभ्यता न छोड़ें। अगर मर्यादा छोड़ देंगे तो हम बदनाम हो जायेंगे। जिसके पवित्र नामसे यह महान धार्मिक युद्ध शुरू किया गया है, अुसकी पवित्रताकी रक्षा करना और अैसा लगे कि अुसकी रक्षा नहीं हो सकती, तो अपनी जगह छोड़कर चले जाना। अिसका परिणाम अच्छा ही होगा।

बारडोली, जलालपुर, बोरसद आदि कअी तहसीलोंके किसान हिजरत कर गये हैं। अिससे मुझे ज़रा भी दुःख नहीं होता। बारडोलीकी सारी आबादी अस्सी-नब्बे हज़ारकी चली गअी होगी। बोरसदके गाँवोंसे भी पचास हज़ार गये होंगे। अितने विशाल देशमें से अितने हिजरत कर गये तो क्या हो गया? क्या अिस दुनियासे लाखों आदमी रोज़ हमारे देखते देखते हिजरत नहीं कर जाते? ये सब हिजरत करके कहाँ जाते हैं, यह कोअी नहीं जानता। ये किसान तो गाड़ीमें थोड़ा अनाज और चीज़-वस्तु भी लेकर जा सकते हैं; जबकि वे लम्बी हिजरतवाले कोअी माल-असबाब लिये बिना ही चल देते हैं, खाली हाथ जाते हैं। कितने ही छिपते फिरें, मगर अेक दिन आपको और मुझे भी अिस हिजरत पर तो जाना ही पड़ेगा। बड़ी-बड़ी सल्तनत चलानेवालोंको भी यह हिजरत तो करनी ही पड़ेगी, और लाठी, बन्दूक और तोप चलानेवालोंको भी करनी ही पड़ेगी। हमारे किसानोंकी हिजरतसे तो दुनियामें अुनकी अिज्ज़त बढ़ रही है। अंग्रेज शायद ही हमारी अच्छाअियाँ देख सकते है, मगर अुन्हींमें से अेक आदमी बारडोलीमें घूमकर लिख गया है कि जो दुनियामें नहीं हुआ, सो मैंने यहाँ आँखोंसे देखा; बचपनमें परियोंकी कहानियाँ सुनी थीं, वे प्रत्यक्ष देख लीं। अेक अंग्रेजकी हमारे किसानोंके बारेमें यह राय पढ़कर मुझे हर्ष और अभिमान हुआ। मैं किसानोंकी तरफसे निश्चिन्त हूँ। अुनसे न मिलने दें, तो भी मुझे परवाह नहीं है। मारपीट करके कुछ रुपया वसूल कर लें, तो अुसकी भी मुझे परवाह नहीं है। मुझे विश्वास हो गया है कि किसान तो अपना कर्त्तव्य करेंगे ही।

बहिष्कारकी नींव — खादी

मुझे विश्वास है कि आप व्यापारी भी अपना फर्ज़ अदा करेंगे। आपने कुरबानी की है, त्याग किया है, परंतु आपसे मुख्य आशा यह रखी जाती है कि आप अपनी व्यापारिक बुद्धि और कुशलता देशके चरणोंमें रख दें। आज हम बहिष्कार तो कर बैठे हैं, मगर अुसकी नींवको सुरक्षित नहीं रखेंगे, तो अूपरकी अिमारत गिर जायगी। यह न भूलिये कि विलायती कपड़ेके बहिष्कारकी बुनियाद चरखा और खादी है। जब तक अुसकी पक्की व्यवस्था नहीं करेंगे, तब तक सब काम कच्चा है। बम्बअीमें और अहमदाबादमें जो मिलें है, वे सब अच्छी तरह चलती हैं, अिससे गुजरातको अभिमान है। मुझे खुद गुजरातीकी हैसियतसे अुनके लिअे गर्व है। परन्तु मिल शक्तिशाली हैं और अुनमें अपना रास्ता आप बना लेनेकी ताक़त है। खादीकी हलचल भी अुन्हें फायदा ही पहुँचानेवाली है।

व्यापारिक चतुराअी खादीको अर्पण करो

जब महात्माजी अपनी अैतिहासिक कूच पर रवाना हुअे, तबसे हम सुन रहे थे कि खादी खतम हो गअी है। मगर खादी अैसी चीज़ है कि ज्यों-ज्यों अुसकी माँग बढ़ेगी, त्यों-त्यों अुत्पत्ति अपने आप अकल्पित ढंगसे होगी ही। मेरे जैसेने भी यरवदा जेलमें बेकार बैठे हुअे नौ पौण्ड सूतका ढेर लगा दिया। साबरमतीमें मैंने आठ पौण्ड जमा कर लिया था। अिस तरह सूतका ढेर लगने लगा और अब प्रश्न पैदा हो गया है कि अुसका क्या किया जाय? आज हम कंधों पर खादीके थान रखकर फेरी पर निकलें या लड़ाअी चलायें? अगर बम्बअीका आन्दोलन सच्चा हो तो जितनी खादी तैयार हो, वह सब हमेशा बिक जानी चाहिये। लाठियाँ खानेमें बम्बअी जितना जोश दिखाता है, अुतना ही प्रेम खादीके प्रति दिखाये तो देखते-देखते खादी खप जाय। मांडवीका यह खादी भंडार खोलना मैंने मंजूर तो कर लिया, मगर यहाँ आपके बीच खादीकी दुकानका अुद्घाटन भी क्या किया जाय? यहाँ तो तख्ता लटकाया कि चलने लगी। आप व्यापारी अपनी व्यापारिक बुद्धिका लाभ नहीं देंगे, तो पागलपनमें सब कुछ चला जायगा। जैसे जापानी कुछ समय तक ढेरों सफेद टोपियाँ बेच गये और मिलवालोंने भी ढेरों बनावटी खादी चला दी, वैसा ही होगा। अिसलिअे गुजरातके व्यापारियोंसे मेरी यह माँग है कि आप कुशलतासे अैसी रचना कीजिये कि सच्ची खादी खपानेमें तकलीफ़ न हो। आप यही समझ लीजिये कि हिन्दुस्तानकी आज़ादी अिस खादीमें ही है। हिन्दुस्तानकी सभ्यता खादीमें ही है। हिन्दुस्तानमें जिसे हम परमधर्म मानते हैं, वह अहिंसा खादीमें ही है और हिन्दुस्तानके किसानोंका, जिनके लिअे आप अितनी भावना दिखाते हैं, कल्याण भी खादीमें ही है।

फिर भले ही वे हमारी सभाअें बन्द कर दें, भले ही नौ आर्डिनेंसोंमें दसवाँ और जोड़ दें। अिनकी कोअी परवाह न करके आप कांग्रेसकी खादीकी वर्दी पहनिये, तब आप खुद ही चलते-फिरते कांग्रेस-हाअुस या स्वराज्य-भवन बन जायँगे।

यह भण्डार, जिसका मैं आज अुद्घाटन कर रहा हूँ, अब आप सँभालें। अिसलिअे नहीं कि मैंने अुद्घाटन किया है, बल्कि कांग्रेसकी अिज्ज़तके लिअे अैसा करें, क्योंकि मैंने आजकी रस्म कांग्रेसके सेवककी हैसियतसे ही अदा की है। अगर कांग्रेसकी बेअिज्ज़ती हुअी, तो आपकी ही बेअिज्ज़ती हुअी समझिये।

किसान भगवानकी शरणमें है

कुछ लोग मुझे कहने आते हैं कि गुजरातके किसानोंको क्यों बरबाद कर रहे हो? गुजरातका किसान अितना पंगु हो, तो मुझे सचमुच दुःख होगा।

मगर वह पंगु नहीं है। गुजरातका किसान अिसमें पिस जायगा, तो मैं मानूँगा कि अुसने देशकी मुक्तिके यज्ञमें सर्वोत्तम भाग लिया है। जो दो-चार तहसीलें आज लड़ रही हैं, अुन्हें नक्शेमें से निकाल डालना हो, तो भले ही निकाल दो। मुझे अुनके लिअे गर्व होगा। हमें तो अिस मौजूदा नक्शेको मिटाकर अुसमें नये रंग भरने हैं। अुस नये नक्शेमें सच्ची अिज्ज़तके स्थान अिन तहसीलोंके होंगे। यह डर बताया जाता है कि किसानोंकी ज़मीन चली जायगी। किसानोंकी ज़मीन चली जायगी, तो क्या सरकारको किसीने ताम्रपत्र पर अिस देशका राज्य लिख दिया है? गुजरात जैसे किसान अुसे सारे हिन्दुस्तानमें नहीं मिलेंगे।

यह सब कुछ आप समझते हों, तो मुझे खादी भण्डारका क्या अुद्घाटन करना है? आप ही मूलजी जेठा मार्केटको खादी मार्केट क्यों न बना दें? मैंचेस्टरका कपड़ा लाकर अुसके दलाल बननेके बजाय अपने देशके दलाल बन जाअिये। अिस तरह दोनों घोड़ों पर सवारी कब तक करते रहेंगे? अब समझौतेकी आशा छोड़ दीजिये। समझौता किस बातका? गुलामीका समझौता कैसा? दो महीनोंमें नहीं और चारमें भी नहीं — अैसा समझौता कभी नहीं होगा। आप पूछते हैं कि जो कपड़ा बचा हुआ है, अुसका क्या किया जाय। मेरी मानें तो मैं आपका जितना विदेशी कपड़ा हो, अुसे जमा करके अुसका नअी दिल्लीमें ढेर लगाअूँ और दियासलाअी लगा दूँ। यह कपड़ा दे दीजिये और अुसकी सूची बना कर रख लीजिये। स्वराज्यमें कर्ज़ लेकर भी आपके रुपये चुका देंगे। आज भले ही कांग्रेसकी यह स्थिति न हो, परन्तु अेक दिन वही देशका राज्य लेगी, यह अंधेको भी दीखता है। आप निर्भय रहिये और समय रहते सच्चा व्यापार करने लग जाअिये।

पीछे कदम नहीं

अब हम फिर मिलें या न मिलें, अितना निश्चित समझ रखिये कि जो काम शुरू किया है, अुसमें पीछे क़दम कोअी न अुठावे। थक जायँ तब थोड़ी देर सुस्ता लीजिये, मगर पीछे कदम हरगिज़ मत रखिये। अीश्वर आपको बुद्धि और शक्ति दे और अिस देशका कल्याण करे।

६१

कराची कांग्रेसके सभापति पदसे – १

[मार्च १९३१ में जब कराचीमें कांग्रेसका ४५वां अधिवेशन हुआ, अुस अवसर पर अध्यक्षकी हैसियतसे दिया गया भाषण ।]

अपना छोटासा भाषण शुरू करनेसे पहले मैं पंडित मोतीलालजीके स्वर्गवाससे श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, पंडित जवाहरलाल और अुनके परिवारको हुअी भारी हानिके लिअे सम्मानपूर्वक संवेदना प्रकट करना चाहता हूँ । मुझे विश्वास है अिस बातसे अुनका शोक कुछ हलका होगा कि अुनके दुःखमें सारा देश शामिल है । पंडित मोतीलालजीकी सहायता अिस मौके पर कितनी ज़रूरी थी, यह तो हम सबको और खास तौर पर गांधीजीको जब पिछले महीनेमें समझौतेकी अत्यन्त नाजुक मंत्रणायें चल रही थीं, अुस दरमियान मालूम हो गया ।

मौलाना मोहम्मदअलीकी मृत्युका घाव ताज़ा ही था कि पंडित मोतीलालजीके अवसानका दूसरा घाव देशको सहना पड़ा । यह दुःखकी बात है कि स्वर्गीय मौलानाके साथ हमारा मतभेद था, मगर जो दिलमें हो वही जबानसे बोलनेवाले अुस बहादुर देशभक्तकी देशसेवा कभी भुलाअी नहीं जा सकती । मैं बेगम साहिबा, मौलाना शौकतअली और अुनके सारे परिवारके साथ आदरपूर्वक हमदर्दी ज़ाहिर करता हूँ ।

अिसके सिवाय पिछले १२ महीनोंमें अनेक वीरों और वीरांगनाओंने प्रशस्त रूपसे चलनेवाले सत्याग्रह युद्धमें अपने प्राण दिये । अैसे अितिहासमें अज्ञात और कीर्तिके कभी स्वप्न न देखनेवाले गुमनाम वीरोंके अमर नामोंका भी मुझे ज़िक्र करना चाहिये । परमात्मा अुनकी आत्माओंको शांति दे । अुनके बलिदान हमें आत्मशुद्धिके मार्ग पर अग्रसर करें और हमें अधिक त्याग और तपश्चर्या करनेकी प्रेरणा दें ।

नौजवान भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरुको थोड़े ही दिन पहले फाँसी हुअी है । अिससे देश बेहद अुत्तेजित हो गया है । अिन युवकोंकी कार्य-पद्धतिसे मुझे वास्ता नहीं है । मैं यह नहीं मानता कि और किसी अुद्देश्यसे हत्या करनेकी अपेक्षा देशके लिअे हत्या करना कम निंद्य है । फिर भी भगतसिंह और अुसके साथियोंकी देशभक्ति, हिम्मत और कुरबानीके सामने मेरा सिर झुक जाता है । अिन युवकोंको दी गअी फांसीकी सजाको देशनिकालेमें बदल देनेकी लगभग सारे देशकी माँग होने हुअे भी सरकारने अुन्हें फाँसी दे दी है । अिससे प्रकट होता है कि मौजूदा शासनतंत्र कितना हृदयहीन है ।

मगर हमें अुत्तेजना और आवेशमें अपने ध्येयसे विचलित नहीं होना चाहिये। अिस आत्मारहित और काष्ठवत् चलनेवाली मौजूदा हुकूमतके खिलाफ हमने जो भयंकर अभियोग-पत्र तैयार किया है, अुसमें हथियारों पर अवलम्बित अिसकी सत्ताका यह ताज़ा और अद्भुत प्रदर्शन वृद्धि करता है। अगर लोकमत पर होनेवाला यह अत्याचार हमें अहिंसाके असिधारा जैसे हमारे रास्तेसे न डिगाये, तो अिससे हमारी स्वराज्यके लिअे योग्यता सिद्ध करनेकी शक्ति बहुत बढ़ जायगी। भगवान अिन बहादुर देशभक्तोंकी आत्माओंको शांति दे, और यह जानकर कि अुनके दुःख और शोकमें सारा देश शरीक है, अुनके कुटुम्बको कुछ संतोष प्राप्त हो।

मेरे जैसे सीधे-सादे किसानको आपने देशके प्रथम सेवकके पदके लिअे चुना है, वह मेरी स्वल्प सेवाकी क़दरके बजाय गुजरातने पिछले यज्ञमें जो अद्भुत बलिदान दिये, अुनकी क़दर करनेके लिअे है, यह मैं अच्छी तरह समझता हूँ। यह आपकी अुदारता है कि अिस सम्मानके लिअे आपने गुजरात प्रान्तको चुना। वरना सच बात तो यह है कि अिस जमानेकी अपूर्व जाग्रतिवाले पिछले वर्षमें किसी भी प्रान्तने कुरबानी करनेमें कोअी कसर नहीं रखी। यह दयालु भगवानकी कृपा ही है कि वह जाग्रति सच्ची आत्मशुद्धिकी जाग्रति थी।

अहिंसाका अुज्ज्वल युग

अिसका अर्थ यह नहीं है कि हमने भूलें नहीं कीं। मगर यह बात तो निर्विवाद है कि हिन्दुस्तानने दुनियाके सामने यह ज़ाहिर कर दिया है कि अहिंसाका सामुदायिक प्रयोग अब स्वप्नदर्शियोंका स्वप्न या मनुष्यका मिथ्या मनोरथ नहीं रहा, परन्तु वह सच्ची सिद्ध वस्तु है। अब तक मानव-जाति हिंसाको देवी बना कर बैठी हुअी थी। वह अुससे परेशान थी, मगर अहिंसाकी सफलताके बारेमें अुसे विश्वास नहीं था। अहिंसाके हमारे सफल प्रयोगने अुसमें भविष्यके लिअे नअी आशाओंका संचार किया है। अहिंसक लड़ाअीमें भाग लेनेकी किसानोंकी शक्तिके बारेमें बहुतोंको शंका थी और वे बड़े-बड़े दंगे-फसादोंकी दहशत रखते थे। मगर अिस वर्गने जिस बहादुरी और अपूर्व सहनशक्तिसे अिस लड़ाअीमें भाग लेकर अुस शंका और दहशतको झूठा साबित कर दिया, वही अिस लड़ाअीमें सिद्ध होनेवाली अहिंसाका सबसे बड़ा सबूत है। मुझे यहाँ यह भी बता देना चाहिये कि स्त्रियों और बच्चोंको लड़ाअीमें अपना हिस्सा लेनेका आह्वान करके गांधीजीने अपनी अद्भुत व्यवहार कुशलताका परिचय दिया है। अिन वर्गोंकी शक्ति स्वाभाविक रूपमें ही जाग्रत हो अुठी और अुन्होंने अैसा काम किया कि अुसकी पूरी कीमत लगानेके लिअे अभी अधिक

समय बीतनेकी ज़रूरत है। मेरे खयालसे यह कहनेमें कोअी हर्ज नहीं है कि सारी लड़ाअीमें अहिंसाका जो पालन हुआ अुसका और अुसके परिणामस्वरूप मिली हुअी सफलताका अधिकांश श्रेय अिन वीरों और वीरांगनाओंको मिलना चाहिये। किसानों, मज़दूरों, स्त्रियों और बच्चोंने जो हिस्सा लिया, अुससे हमारी छाती गर्व और कृतज्ञताके मारे फूल जाती है। अहिंसाकी दृष्टिसे हमारा युद्ध विश्वयुद्ध है और बाहरकी अनेक जातियाँ, खास तौर पर अमेरिकाने जो सहानुभूति दिखाअी है, और हमें वे जो प्रोत्साहन देते रहे हैं, वह कोअी कम संतोषकी बात नहीं है।

संधिका रहस्य

मगर सरकारके साथ हुअी संधिके कारण सार्वजनिक जीवनके अिस वीर युगके बारेमें अधिक विस्तार करनेकी ज़रूरत नहीं रह जाती। आपकी कार्य-समितिने आपकी मंजूरीकी आशासे यह समझौता किया है। आपसे प्रार्थना है कि अब आप अुसे बाकायदा मंजूर करें। कार्यसमितिके सदस्य आपके विश्वासपात्र प्रतिनिधि थे, अिसलिअे आप अुनकी की हुअी संधिको अस्वीकार नहीं कर सकते। मगर आप अुस समितिके प्रति अपना अविश्वास प्रकट कर सकते हैं और ज्यादा विश्वासपात्र समिति मुकर्रर कर सकते हैं। हम अिस समझौतेको स्वीकार नहीं करते, तो हमारा कसूर माना जाता और पिछले वर्षकी सारी तपश्चर्या व्यर्थ जाती। हमें तो सत्याग्रहीकी हैसियतसे हमेशा यह दावा करना चाहिये — और हमने किया है — कि हम सदा शांतिके लिअे न केवल तैयार हैं, बल्कि अुत्सुक भी हैं। अिसलिअे जब शांतिके लिअे दरवाजा खुला दिखाअी दिया, तब हमने अुससे फायदा अुठा लिया। गोलमेज़ परिषदमें जानेवाले हमारे देश-वासियोंने पूरी जिम्मेदार हुकूमतकी माँग की। ब्रिटिश दलोंने अुस माँगको मान लिया और अुसके बाद प्रधानमंत्री, वाअिसरॉय, और हमारे कुछ प्रसिद्ध नेताओंने कांग्रेसके सहयोगकी माँग की। अिससे कांग्रेसकी कार्य-समितिको महसूस हुआ कि अगर सम्मानपूर्वक संधि हो सकती है और किसी भी शर्त या काट-छाँटके बिना पूर्ण स्वराज्यकी माँग करनेका कांग्रेसका हक माना जाता हो, तो कांग्रेस गोलमेज़ परिषदमें जानेका निमंत्रण स्वीकार कर ले और अैसा विधान तैयार करनेके प्रयत्नमें सहयोग दे, जिसे सब दल स्वीकार कर सकें। अगर अिस प्रयत्नमें हम असफल हो जायँ और तपश्चर्याके मार्गके सिवाय दूसरा कोअी रास्ता न रहे, तो अुस पर जानेसे हमें रोकनेवाली कोअी भी शक्ति पृथ्वी पर नहीं है।

आश्वासन

संधिकी धाराके अनुसार हमें पूर्ण स्वराज्य माँगनेका, अपने देशकी सेनाके मामलेमें, विदेशी राज्योंके साथके व्यवहारमें और अर्थनीति व जकात नीति जैसे विषयोंमें पूरा अधिकार माँगनेका हक है। कुछ आश्वासन और

कुछ शर्तें, या जैसा पंडित मोतीलालजी कहते थे, हमारे अपने ही हितकी खातिर अेक दूसरेके लिअे कुछ सुविधायें तो रखनी ही पड़ेंगी। जब सत्ता समझौतेके अनुसार अेकके हाथसे दूसरेके हाथमें जाती है, तब जिस पक्षका नुकसान हुआ हो या जिसे मददकी ज़रूरत हो, अुसके हितमें हमेशा कुछ आश्वासन देनेकी आवश्यकता रहती है।

हिन्दुस्तानको लगभग २०० वर्षसे जिस ढंगसे चूसा गया है, अुसे देखते हुअे बहुतसे मामलोंमें अुसे बाहरकी मददकी ज़रूरत रहेगी। वह मदद हम ज़रूर ब्रिटेनसे लेंगे, बशर्ते कि अुसकी नीयत साफ़ हो। मिसालके तौर पर हमें सैनिक ज्ञानवाले आदमी चाहियें, तो अिंग्लैंडसे अैसी सहायता लेनेमें कोअी रुकावट नहीं होनी चाहिये। अैसी और बहुतसी मिसालें दी जा सकती हैं। अुनमें से यह अेक तो ध्यान खींचने लायक़ है। सेनाके मामलेमें आश्वासन देनेका अर्थ यह है कि कुछ ब्रिटिश अफ़सरोंको या थोड़ी-सी ब्रिटिश सेनाको देशकी भलाअीके लिअे रहने दिया जाय। परन्तु सेनाके सिपाही देशी या गोरे कोअी भी हों, सेनाका नियंत्रण तो हमारे ही हाथमें रहना चाहिये। यानी भूलें करनेका हमें पूरा अधिकार होना चाहिये। अंग्रेज़ोंकी सलाह हम धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करेंगे, मगर ब्रिटिश सरदारी हम कभी नहीं मानेंगे। सच बात तो यह है कि ब्रिटिश सेना हमारे देश पर कब्ज़ा किये हुअे है। यह कहना गलत है कि वह देशकी रक्षाके लिअे है। अगर वह किसी पक्षकी रक्षाके लिअे हो सकती है, तो सिर्फ ब्रिटिश हितोंकी रक्षाके लिअे ही है। देशमें यदि कोअी बलवा हो जाय, तो अुस समय अंग्रेज स्त्री-पुरुषोंकी रक्षाके लिअे यह सेना रखी गअी है। अैसा अेक भी अुदाहरण मुझे याद नहीं आता कि विदेशी सेनाने चढ़ाअी की हो और अुससे हिन्दुस्तानकी रक्षा करनेके लिअे फ़ौजकी ज़रूरत पड़ी हो। सरहद पर लड़ाअियाँ ज़रूर हुअी हैं और अफ़गानिस्तानके साथ भी लड़ाअियाँ हुअी हैं, परन्तु ब्रिटिश अितिहासकारोंने ही हमें सिखाया है कि ये लड़ाअियाँ भक्षणकी थीं, रक्षणकी नहीं। अिसलिअे हमें अिस हौअेसे डरनेकी कोअी ज़रूरत नहीं कि हमारे देश पर सदा विदेशी राज्योंकी आँखें रही हैं। सेनाकी हमें भले ही ज़रूरत हो, परन्तु आज जो राक्षसी युद्ध सामग्री रात-दिन हमारा खून चूस रही है, अुसकी आवश्यकता तो हरगिज़ नहीं है। अगर कांग्रेस अपनी माँगमें सफल हो जाय, तो वर्तमान सेनामें काफ़ी कमी कर देनी होगी।

अिसी तरह अर्थ-नीति और ज़कात नीतिमें भी हम ब्रिटिश सत्ताको हरगिज़ हाथ नहीं डालने देंगे। अिन दोनों मामलोंमें देशको अबाधित अधिकार न हों, तो देशका पूरी तरह विकास असम्भव है।

हमें यह सोचनेकी भी आदत पड़ गअी है कि अगर बड़े-बड़े वेतनवाले ब्रिटिश सिविलियन कअी साल तक हमारा कारोबार न चलायें, तो वह कारोबार पंगु हो जायगा और अुसमें गंदगी घुस जायगी। पिछले कुछ वर्षोंमें हमारी कांग्रेसने काफी प्रबंध शक्ति दिखाअी है और हर साल अुसकी सेवामें अवैतनिक या नाममात्रके वेतन पर अनेक युवक-युवतियाँ आते ही रहे हैं। यह बात अुस वहमको दूर करनेके लिअे काफ़ी है। अितना खर्चीला प्रबंध रखकर यह कहना कि अुसके बिना शासन शुद्ध नहीं रह सकता और रिश्वतखोरी बढ़ जायगी, अिसका अर्थ यह है कि हम रिश्वतखोरीके विरुद्ध बीमेके रूपमें अितना बड़ा प्रीमियम दें कि पूरी तरह बरबाद हो जायँ। अतः हिन्दुस्तानके हाथमें पूरा अधिकार आनेके लिअे सिविल सर्विसके वेतनों और अुसके साथ मिलनेवाले भत्तों वगैरामें खूब ही काट-छाँट करनेकी ज़रूरत रहेगी। और हिन्दुस्तानके नामसे जितना क़र्ज़ निकाला जा रहा है, हमारा दावा है कि अुसमें से ज्यादातर बिलकुल ही अनुचित है। हमने अपने अेक भी ऋणसे अिनकार करनेकी बात कही ही नहीं। परन्तु जिस क़र्ज़के अनुचित होनेका हमारा दावा है, अुस क़र्ज़के विषयमें हमने निष्पक्ष जाँचकी माँग की है और अब भी करते ही रहेंगे।

मगर बहुत तफसीलमें अब हम न जायँ। आपकी तरफसे मैं यह घोषणा कर सकूँ तो काफ़ी है कि हमें अपने लाहोरके पूर्ण स्वराज्यके निश्चयसे पीछे नहीं हटना है। पूर्ण स्वराज्यका अर्थ यह नहीं है कि ब्रिटेन या और किसी सत्ताके साथ कोअी भी सम्बंध न रखनेकी बात हम हमेशाके लिअे पकड़े रहेंगे। अेक दूसरेके हितके लिअे हम दूसरे राज्योंके साथ सहयोग ज़रूर कर सकते हैं और वह सहयोग हम जब चाहें तब तोड़ सकते हैं। अगर हमें सलाह और समझौतेसे स्वराज्य लेना है, तो यह मानना अुचित होगा कि ब्रिटिश राज्यके साथ सम्बन्ध रहेगा। मुझे मालूम है कि देशमें अेक अैसा पक्ष भी प्रबल है, जो कहता है कि सहयोगका विचार करनेसे पहले अेक बार अिनके बंधनसे पूरी तरह छुटकारा मिल जाना चाहिये। मगर मैं अिस पक्षका नहीं हूँ। अिस प्रकारकी मान्यतामें कमज़ोरी है, मनुष्य स्वभावके प्रति अविश्वास है।

फेडरेशन या संघशासन

'फेडरेशन' का विचार मोहक है, मगर अिसमें नये पेचीदे सवाल पैदा होते हैं। अिसमें शरीक होनेवाले राजा अिंग्लैंडके साथ सम्बन्ध तोड़नेकी बात नहीं सुनेंगे, परन्तु अगर वे शुद्ध भावसे शरीक होंगे, तो बड़ा फायदा होगा। अुनके शामिल होनेसे प्रजातंत्रकी प्रगतिमें विघ्न नहीं पड़ना चाहिये। अतः मैं आशा रखता हूँ कि वे अैसा कोअी भी पूर्वग्रह रखकर नहीं बैठ जायँगे, जिसका स्वतंत्रताकी भावनाके साथ मेल न बैठे। वर्तमान युगके साथ साथ चलनेका

वचन देनेका अुनसे बहुत आग्रह न करना पड़े तो अच्छा। जैसे हिन्दुस्तानकी दूसरी जनताको मौलिक अधिकारोंका पट्टा दे दिया जायगा, वैसा ही पट्टा राजा-महाराजाओंको अपनी प्रजाके अधिकारोंका भी कर देना होगा। संघमें शामिल होनेवाले हरअेक भागके निवासियोंके कुछ मौलिक अधिकार होने ही चाहियें और अगर अधिकार हों तो अुनकी रक्षाके लिअे कोअी न कोअी सामान्य अदालत भी होनी चाहिये। और यह आशा रखना अधिक न होगा कि संघकी धारासभामें देशी राज्योंकी प्रजाका पूरा प्रतिनिधित्व होना चाहिये।

यहाँ मुझे महाविपत्तिमें पड़े हुअे ब्रह्मदेशके लिअे अत्यंत खेद प्रकट करना चाहिये। वहाँकी हालत अिस वक्त कैसी है, अिसका पता लगना मुश्किल है। क्योंकि अखबारोंके मुँह पर ताले लगे हैं। ब्रह्मदेश भारतसे अलग हो जाय या स्वतंत्र भारतका अंग रहे, यह तय करना ब्रह्मदेशके निवासियोंके हाथमें है। मगर सब पक्षोंकी बात अच्छी तरह सुनी जाय और अुन्हें अुचित न्याय मिले, यह देखना हमारा और दुनियाका फ़र्ज़ है। ब्रह्मदेशको भारतके साथ अेक रखनेकी माँग करनेवाला अेक दल मौजूद है, यह बात ज़ाहिर है। अलग रहनेकी अिच्छा रखनेवालोंको अपना पक्ष पेश करनेकी जितनी छूट होनी चाहिये, अुतनी ही छूट शामिल रहना चाहनेवालोंको भी होनी चाहिये। अिसलिअे अगर कांग्रेसको मिली यह खबर सच हो कि शामिल रहना चाहनेवालोंके मुँह बंद कर दिये गये हैं, तो अिस अन्यायका विरोध होना चाहिये। सारे ब्रह्मदेशके लोगोंके लोकमतकी जाँच की जाय — अुसे संघशासनमें लिया जाय — यह माँग मुझे बहुत ही अुचित मालूम होती है।

अेकताके बिना परिषदमें जाना व्यर्थ

मगर और सब प्रश्नोंसे ज्यादा ज़रूरी प्रश्न साम्प्रदायिक अेकताका है। अिस मामलेमें कांग्रेसका रुख लाहोर कांग्रेसने अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया था। यह है लाहोरका ठहराव :

"चूँकि नेहरू रिपोर्ट अब टीलमें पड़ गअी है, अिसलिअे साम्प्रदायिक प्रश्नोंके बारेमें कांग्रेसकी नीति घोषित करनेकी ज़रूरत नहीं रही। कारण, कांग्रेस मानती है कि भारतके स्वतंत्र होने पर साम्प्रदायिक सवालोंका फ़ैसला केवल राष्ट्रीय दृष्टिसे होना चाहिये। मगर खास तौर पर सिक्खोंने और आम तौर पर मुसलमानोंने और दूसरी जातियोंने नेहरू रिपोर्टमें प्रगट किये गये निर्णय पर असन्तोष प्रगट किया है। अिसलिअे यह सभा सिक्खों, मुसलमानों और दूसरी छोटी जातियोंको विश्वास दिलाती है कि कांग्रेसके किसी भी भावी विधानमें अिस प्रश्नका अैसा निर्णय स्वीकार नहीं किया जायगा, जिससे सब दलोंको सन्तोष न हो।"

अिस ठहरावके अनुसार कांग्रेस अैसे निर्णयवाला विधान हरगिज़ नहीं मानेगी, जिससे अिन पक्षोंको सन्तोष न हो। हिन्दूके नाते मैं तो अपने पूर्वगामी अध्यक्षका सिद्धान्त स्वीकार करके छोटी जातियोंके हाथमें स्वदेशी क़लम, स्वदेशी कागज़ और स्वदेशी स्याही रख दूँ और अुनसे कहूँ कि अपनी माँगें लिख दीजिये। मैं सब पर हस्ताक्षर कर दूँगा। यह ढंग अत्यन्त जल्दीका है, संक्षिप्त है, मगर अिसके लिअे हिन्दुओंमें बहादुरी चाहिये। हमें अैसी जबानी अेकता नहीं चाहिये, जो ज़रा-सी बात पर टूट जाय; हमें तो दिलोंकी अेकता चाहिये। यह अेकता तभी हो सकती है, जब बड़ी जाति हिम्मत करके छोटी जाति बननेको तैयार हो। अिस सचाअीको समझनेके लिअे बहुत ही अूँचे दर्जेकी समझदारीकी ज़रूरत है। अेकता अिस ढंगसे हो या और किसी ढंगसे, अितना तो दिन-प्रतिदिन स्पष्ट होता जा रहा है कि अेकताके बिना किसी भी परिषदमें जाना व्यर्थ है। परिषद अंग्रेज़ों और हमारे बीच समझौता करा सकती है; मगर हमारी भीतरी अेकता तो करा ही नहीं सकती। अिस अेकताकी रचना हमींको करनी चाहिये। अिस अत्यन्त महत्वकी बातको सिद्ध करनेके लिअे कांग्रेसको अेक भी कोशिश नहीं छोड़नी चाहिये।

हम सबको साफ समझ लेना चाहिये कि पूर्ण स्वराज्यके योग्य बननेके लिअे कांग्रेसको काफ़ी शक्ति जुटानी है। पिछले बारह महीनोंमें अुसने यह शक्ति अिस हद तक जुटा ली है कि किसी भी मनुष्यका ध्यान खींच ले। मगर वह काफी नहीं है और जल्दबाज़ी और अभिमानसे अुसके बरबाद होनेकी सम्भावना रहती है। पूँजी खर्च करके कारोबार करनेवाला आदमी अुड़ाअू कहा जाता है, अिसलिअे हमें तो अपनी शक्तिकी पूँजीमें वृद्धि करनी चाहिये। अिस शक्तिको बढ़ानेका अेक अुपाय समझौतेकी तमाम शर्तोंका अक्षरशः पालन है। दूसरा अुपाय हमें मिली हुअी शक्तिकी रक्षा करनेका है। अिसलिअे अब मैं हमारे रचनात्मक कार्यक्रमके बारेमें कुछ शब्द कहूँगा।

विदेशी वस्त्रका बहिष्कार

विदेशी कपड़ेके बहिष्कारके मामलेमें कहा जायगा कि हमने काफ़ी मंज़िल तय कर ली है। विदेशी वस्त्रोंका बहिष्कार जैसे हमारा हक़ है, वैसे ही फ़र्ज़ भी है। जब तक सस्ता विदेशी कपड़ा भारतके गाँव-गाँवमें बिकता है, तब तक चरखा नहीं गूँजेगा और भारतवर्षके देहातमें बसनेवाले और भुखमरी सहनेवाले लाखों-करोड़ों कंगाल लोग सीधे खड़े नहीं हो सकेंगे। अिसलिअे विदेशी कपड़ेका अिस देशसे बिलकुल ही मुँह काला करना पड़ेगा। हमें यह बात अच्छी तरह समझमें आ जानी चाहिये कि वह मुफ़्त मिले तो भी महँगा है। देशमें जो लाखों लोग भूखों मर रहे हैं, वे अिसलिअे नहीं भूखों मर रहे हैं कि देशमें पैदावार

नहीं होती, बल्कि अिसलिअे कि फ़ुरसतके समय करनेके लिअे अुनके पास सहायक धन्धा नहीं है। अिस प्रकार सहायक धन्धेके अभावमें लोग घरोंमें मजबूरन फाल्तू समय बिताकर भूखों मर रहे हैं। यह बेकारी लोगोंके स्वभावमें यहाँ तक घर कर चुकी है कि अुसे दूर करनेके लिअे अथक परिश्रम करके भारी प्रचार-कार्य करना होगा। सर्वोत्तम प्रचार-कार्य खुद यथार्थ कातकर और खादी पहनकर ही हो सकता है। अखिल भारत चरखा संघने सुन्दर काम किया है। मगर अब कांग्रेस द्वारा देशव्यापी कताअी और खादीके अिस्तेमालका वातावरण पैदा करनेकी ज़रूरत है। मेरी रायमें तो बहिष्कारके लिअे सबसे अच्छे और कारगर प्रचार-कार्यका ढंग यही है।

यह कहा जाता है कि विदेशी कपड़ेके विरुद्ध जो दलील दी जाती है, वह देशी मिलोंके कपड़े पर भी लागू होती है। कुछ हद तक यह बात सही है, परन्तु हमारी देशी मिलें जनताकी ज़रूरतका पूरा कपड़ा अभी पैदा ही कहाँ कर पाती हैं? हिन्दुस्तानकी ज़रूरतका अमुक भाग पूरा करनेमें ही अभी देशी मिलोंको बरसों लगेंगे। वैसे यह सही है कि अगर देशी मिलें खादीकी स्पर्धा करने लगें और अपना माल खपानेकी खातिर चाहे जैसी नीति अख्तियार करें, तो वे ज़रूर बाधक बन सकती हैं। सौभाग्यसे ज़्यादातर मिलें देशाभिमानी हैं, कांग्रेसके साथ मिलकर काम करती हैं और यह समझने लगी हैं कि गरीबोंके हितमें खादी कैसी आशीर्वाद रूप है। फिर भी हमारी मिलें अगर देशाभिमानको ताकमें रखकर खादीको मदद देनेके बजाय नुकसान पहुँचायें, तो अुन्हें भी थोड़ी बहुत मात्रामें विदेशी कपड़ेकी तरह ही सार्वजनिक विरोध मोल लेना पड़ेगा।

विदेशी कपड़ेके व्यापारियोंसे मैं कांग्रेसके अिस रवैयेको ध्यानमें रखनेकी प्रार्थना करता हूँ। विदेशी कपड़ेका बहिष्कार तो स्थायी चीज़ है। और केवल राजनैतिक दृष्टिसे ही नहीं, बल्कि गरीबोंके हितके लिअे आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रोंमें अेक स्थायी अुपयोगके क़ीमती हथियारके रूपमें सोची हुअी चीज़ है। अिसलिअे सबका लाभ अिसीमें है कि देशके भविष्यका विचार करके विदेशी कपड़ेका व्यापार वे बिलकुल छोड़ दें। अिसमें अुनकी भरसक सहायता करनेका प्रयत्न जारी है, मगर सबसे बड़े त्यागकी आशा हम व्यापारियोंकी तरफसे ही रखते हैं।

मैं चाहता हूँ कि विलायती, जापानी और दूसरे देशोंके कपड़ेके व्यापारियोंको कांग्रेसके विदेशी कपड़े सम्बन्धी अिस रवैयेके बारेमें कोअी गलतफ़हमी न हो जाय। अगर देशकी सहायता करना हो, तो अुन्हें अिस देशमें विदेशी कपड़ेका व्यापार छोड़ना ही पड़ेगा। व्यापार और अुनके साहसके लिअे दूसरे धन्धे क्या कम हैं?

धरना देनेका हक

कपड़ेकी बातसे धरनेकी बात पर आता हूँ। पिकेटिंग कांग्रेसने छोड़ा नहीं है, छोड़ भी नहीं सकती। यह रहा सन्धिकी शर्तोंमें धरना सम्बन्धी भाग:

"धरनेमें जबरदस्ती नहीं होगी। अुसमें जब्र, धमकी, रुकावट, विरोधी प्रदर्शन और आम लोगोंके व्यवहारमें दखल या साधारण क़ानूनमें आनेवाला अपराध नहीं होगा। और जहाँ अैसी कोअी बात होने लगेगी, वहाँ अुस हद तक धरनेका काम स्थगित कर दिया जायगा।"

साधारण क़ानूनमें धरनेका हक़ जरूर है; और अुचित मर्यादाओंके साथ वह निर्दोष ही नहीं, बल्कि लोकशिक्षणका अेक बड़ा साधन भी है। अुसका काम लोगोंको समझाना है, रुकावट डालना या व्यक्ति स्वातन्त्र्य पर जबरदस्ती नियंत्रण रखना नहीं है। लोकमतका अंकुश तो होगा ही। यह अंकुश स्वच्छन्दतासे भिन्न व्यक्ति स्वातन्त्र्यके विकासमें मदद देनेवाला है। अहिंसात्मक धरनेकी तहमें लोकमतको शिक्षित करने और अैसा नैतिक वातावरण पैदा करनेकी कल्पना है, जिसके सामने हरअेक व्यक्तिको झुकना पड़े। यह काम तो स्त्रियाँ ही अुत्तम ढंगसे कर सकती हैं। मुझे आशा है कि जो अद्‌भुत कार्य अुन्होंने लड़ाअीके महीनोंमें किया है, अुसे वे जारी रखेंगी और तमाम लोगोंको हमेशाके लिअे अपने ऋणी बना लेनेके सिवाय करोड़ों दरिद्रनारायणोंका आशीर्वाद लेंगी।

स्वदेशीको मजबूत बनाओ

अिसी सिलसिलेमें ब्रिटिश मालके बहिष्कारकी कल्पना तो लगभग कांग्रेसके बराबर ही पुरानी है। गांधीजीके भारतीय राजनीतिमें आनेके बाद सिर्फ ब्रिटिश मालके बहिष्कारकी जगह तमाम विदेशी कपड़ेके बहिष्कारकी बात शुरू हुअी। गांधीजीने हमें समझाया कि विदेशी मालके बहिष्कारकी तहमें देशका आर्थिक और सामाजिक अुद्धार किस तरह छिपा हुआ है और सिर्फ ब्रिटिश मालका बहिष्कार करना राजनैतिक दृष्टिसे किस तरह अेक सजाकी कार्रवाअी है। अिस तरह तमाम विदेशी कपड़ेका बहिष्कार पिछली लड़ाअीके दिनोंमें हमने आजमाया और अुसका ठोस परिणाम भी हमने अपनी आँखों देख लिया। अब फिलहाल लड़ाअी स्थगित हो गअी है और हम समझौतेकी बातचीत चलाकर तथा आपसमें चर्चा करके अपना आदर्श प्राप्त करनेका प्रयत्न कर देखनेवाले हैं। अिस बीच सज़ाके लिअे अुठाया हुआ राजनैतिक हथियार फिलहाल हमें नीचे रख देना पड़ेगा। अेक ओर जब हम मित्रभावसे बातचीत करने बैठें, अुसी समय दूसरी ओरसे ब्रिटिश हितोंको सख्त चोट पहुँचानेवाला कार्यक्रम जारी नहीं रख सकते। अिसलिअे यद्यपि फिलहाल हम ब्रिटिश मालके बहिष्कारको खास तौर पर वापस ले लेते हैं, फिर भी स्वदेशीको तो, जो हरअेक

जातिका जन्मसिद्ध अधिकार है, हम अपनी पूरी ताक़त लगाकर अधिकसे अधिक कड़ी और अुग्र बनायें। जो कुछ हम अपने देशमें पैदा कर सकते हैं, अुसे अपनायें, प्रोत्साहन दें और अुसके बदले विदेशी हरगिज़ न लें। फिर भले ही वह ब्रिटिश हो या और किसी भी मुल्कका बना हुआ हो। अिसीमें जनताकी अुन्नतिकी कुंजी है। अिस प्रकार अवश्य ही हमें अपनी देशी बीमा कम्पनियों, बैन्कों, जहाज़ी कम्पनियों और दूसरे देशी व्यवसायोंको प्रोत्साहन देना चाहिये और अुनके पक्षमें ठोस प्रचार-कार्य होना चाहिये। अैसे देशी व्यवसायों या कम्पनियोंकी व्यवस्था अभी तक दोषपूर्ण है या वे महँगी पड़ती हैं, वगैरा कारणोंसे कोअी अुनकी निन्दा न करें और न अुनकी तरफ़ अुदासीनता दिखायें। अुनका अधिकसे अधिक अुपयोग करके व सहायक आलोचना और सूचनाके द्वारा ही हम अुन्हें सस्ती और निर्दोष बना सकेंगे।

समान दर्जेका अर्थ

समान दर्जे और समान व्यवहारके बारेमें आजकल सब जगह खूब चर्चा की जाती है। मगर क्या दैत्य और बौनेके बीच, हाथी और चींटीके बीच भी बराबरीका दर्जा हो सकता है? कुबेरके बराबर धनवान माने जानेवाले लॉर्ड अिंचकेप अगर स्व० सेठ नरोत्तम मुरारजी जैसेके साथ बराबरीके दर्जेका हक़ माँगें, तो अिसमें समानताकी विडम्बना नहीं तो और क्या हो सकता है? नरोत्तम सेठके वारिस लॉर्ड अिंचकेपके आसपास कहीं खड़े होने लायक दर्जे पर पहुँचें, तब अगर बराबरीके दर्जेकी बात कहें, तो वह शोभा देगी। दो बिलकुल असमान अुदाहरणोंके बीच बराबरी कायम करनेका अुपाय तो अेक ही हो सकता है, और वह यह कि नीचेवालेको अूपर लाकर अूपरवालोंके साथ बिठा दिया जाय। अिस तरह दलित वर्गों और अुच्च वर्णोंमें समानता स्थापित करनी हो, तो कथित अुच्च वर्णी लोगोंको दलितोंके लिअे नुकसान अुठाने, त्याग करने और अुनके सामने झुककर अुन्हें अपने दर्जे पर लाकर बिठानेमें ही अपनी जीत माननी चाहिये। अंग्रेजोंके साथके सम्बन्धमें तो हम आज मुद्दतोंसे दलितोंसे भी बदतर दर्जा भोगते आये हैं। सहयोगकी हुकूमतकी योजनामें भी ब्रिटिश और दूसरे विदेशी अुद्योगोंको नुकसान पहुँचाकर भारतीय अुद्योग और साहसकी रक्षा करनेकी शर्त हमारी राष्ट्रीय हस्तीके लिअे अनिवार्य है। मैं आपसे कह दूँ कि ब्रिटिश राष्ट्रसंघके भीतर भी अैसा संरक्षण-नियम नअी चीज नहीं है। अुपनिवेशोंमें भी ज़रूरी मात्रामें वह सर्वत्र मौजूद है।

शराब-बंदी

हिन्दुस्तानके भूखों मरनेवाले गरीबोंके लिअे जैसे विदेशी कपड़ेका बहिष्कार आर्थिक दृष्टिसे अनिवार्य है, अुसी तरह शराब और नशीली चीज़ोंका बहिष्कार भी जनताके नैतिक हितके खयालसे अुतना ही ज़रूरी है। सारे देशमें शराब बंद

करनेकी कल्पना अुसके राजनैतिक असरके ध्यानमें आनेसे पहलेकी है। कांग्रेसने तो अुसे आत्मशुद्धिका क़दम समझा है; और सरकार कभी शराबकी आमदनीको शराब-बंदीके काममें खर्च करनेको तैयार हो जाय, तो भी शराबकी दुकानोंका धरना तो ज्योंका त्यों जारी ही रहेगा। अलबत्ता, अिस धरने पर भी ज़बरदस्ती वगैराके संबंधमें कपड़ेके बारेमें पहले बताअी हुअी सख्त मर्यादायें तो लागू होती ही हैं। मैं तो अिस संधिकालमें भी सरकारको निमंत्रण देता हूँ कि वह सिर्फ धरनेका काम जारी रहने देनेकी नीति न रखकर, धारासभाके निर्णयकी आगाहीको समझकर अभीसे शराब-बंदीके काममें जनताके साथ हो जाय और अेकरंग बन जाय। मगर सरकार अैसा करे या न करे, हम तो जब तक देशमें अेक गज़ भी विदेशी कपड़ा आता है या अेक भी शराबकी दुकान अुलटे रास्ते लगे हुअे हमारे देशभाअियोंकी खानाखराबी कर रही है, तब तक किसी भी तरह चैन न लें।

नमक कर

नमकके बारेमें भी दो शब्द कह दूँ। नमकके भंडार पर धावे बंद हो जाने चाहियें। केवल कानूनभंगके लिअे नमक कानून तोड़ना बन्द हो जाना चाहिये। परन्तु जहाँ नमक पैदा हो सकता हो, अैसे प्रदेशोंके पड़ोसमें रहनेवाले गरीब लोग नमक बनायें और अपने आसपासके अिलाक़ेमें बेचें। यह सच है कि नमक कर रद्द नहीं हुआ। और गोलमेज़ परिषदमें कांग्रेसके भाग लेनेकी सम्भावनाको ध्यानमें रखकर जब तक नमक कर कुछ महीनेमें रद्द न हो जाय, तब तक अुसे मान लें और अुसे आज ही कानूनकी पुस्तकमेंसे हटवा देनेका आग्रह न रखें। असलमें जिन गरीबोंके हितमें यह लड़ाअी शुरू की गअी थी, अुनके लिअे तो यह कर अभीसे रद्द हो गया। अलबत्ता, गरीब आबादीके सिवाय कोअी व्यापारी मौजूदा रिआयतका अनुचित लाभ नहीं अुठायेगा अैसी आशा है।

कांग्रेस करोड़ों श्रमजीवियोंकी प्रतिनिधि

यहाँ तक मेरी बात सुननेके बाद अब तो आप समझ गये होंगे कि जिन विषयोंमें बुद्धिमानोंको दिलचस्पी होती है, अुनमें मुझे कितनी कम दिलचस्पी है। नौकरियों, ओहदों या धारासभाओंके दर्जोंमें मुझे कोअी दिलचस्पी नहीं होती। किसान अिन सब बातोंमें कुछ नहीं समझते। किसानोंको धारासभाओंकी बैठकों और नौकरियोंसे कोअी वास्ता नहीं। मेरे हिसाबसे तो गांधीजीकी ११ माँगोंमें स्वराज्यका सब सार आ जाता है। जिस योजनामें अिन मुद्दोंकी रक्षा न हो वह स्वराज्य नहीं। राजा-महाराजा, ज़मींदार और दूसरे तमाम मालदारोंके हक मुझे अुस हद तक मंजूर हैं, जिस हद तक अुनके कारण गरीब श्रमजीवियोंको धक्का न पहुँचता हो। मेरी नज़र तो प्रजामें जो लोग कुचले हुअे हैं, अुन्हें खड़े करनेकी

तरफ और देशके बड़ेसे बड़ेके साथ बराबरीमें बैठने लायक बना देनेकी तरफ लगी हुआी है। अीश्वरकी कृपासे अिन कुचले हुअे लोगों तक भी सत्य और अहिंसाका संदेश अब पहुँच गया है और अुसने अुन्हें स्वाभिमान और आत्मशक्तिकी थोड़ी झाँकी दिखा दी है। अभी बहुत रास्ता बाकी है। मगर आज हम यह संकल्प कर लें कि हम अुनके लिअे हैं, वे हमारी गुलामी करनेके लिअे नहीं है। हम अपना ओछापन और अीर्ष्या-द्वेष छोड़ दें, अपने धर्मके झगड़े भूल जायँ और अितना ही याद रखें कि कांग्रेस करोड़ों श्रमजीवियोंकी प्रतिनिधि है और अुन्हींकी खातिर जिन्दा है। अगर हम अितना कर सकें, तो कांग्रेसके स्वार्थके लिअे नहीं, परन्तु मानव-हितके लिअे काम करनेवाली अेक बेजोड़ शक्ति बना सकेंगे।

अस्पृश्यताका कलंक

अस्पृश्यता-निवारणके मुद्दे पर भी मैं दो शब्द कह दूँ। हमारे रचनात्मक कार्यक्रमका यह अंग अितना ज़रूरी है कि अुसके प्रति अूपरा-अूपरी नज़र रखनेसे काम नहीं चलेगा। हिन्दुओंने अस्पृश्यता मिटा दी होती, तो हमारी पिछले १२ महीनेकी लड़ाअी हज़ार गुनी ज्यादा चमक अुठी होती। चमकनेकी बात छोड़ दें, तो भी अितना निश्चित है कि राष्ट्रीय आत्मशुद्धिके अिस बड़े कामको पूरा किये बिना और हिन्दू धर्म परसे अिस कलंकको मिटाये बिना स्वराज्य आ भी गया, तो वह अितना ही थोथा होगा, जितना विदेशी कपड़ेका बहिष्कार सफल किये बिना होगा।

प्रवासी भारतीय

अन्तमें मुझे प्रवासी भारतीय भाअियोंको नहीं भूलना चाहिये। दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका और दूसरे विदेशोंमें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंकी हालत आज कल दयाजनक है। सौभाग्यसे दीनबन्धु अेन्डूज़ दक्षिण अफ्रीकामें हमारे लोगोंकी मदद कर रहे हैं। पंडित हृदयनाथ कुंजरूने पूर्वी अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नका खास तौर पर अध्ययन किया है। कांग्रेस अभी तो अपनी सहानुभूति तक ही सान्त्वना दे सकती है। वे जानते हैं कि जैसे-जैसे हम यहाँ अपने ध्येयके नज़दीक पहुँचते जायेंगे, वैसे-वैसे विदेशोंमें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंकी स्थिति अपने आप सुधरती जायगी। अिस स्थानसे मैं आप सबकी तरफसे अुन देशोंकी सरकारोंसे अर्ज़ करता हूँ कि जो हिन्दुस्तान अब अपना अुत्तराधिकार प्राप्त करनेकी तैयारीमें है, जिसे दुनियाकी किसी जातिके साथ बैर नहीं है, अुस हिन्दुस्तानके लोगोंके साथ वे सद्व्यवहार करें। जब हम स्वाधीन हो जायेंगे, अुस समय हमारे हाथों वे अपने देशवासियोंके प्रति जैसे बरतावकी अपेक्षा रखते हों, वैसा ही बरताव अिस वक्त वे हमारे देशवासियोंके साथ करें, तो अिसमें अनुचित क्या है? अिसमें साधारण विवेकके व्यवहारसे अधिक कोअी माँग नहीं है।

अन्तमें मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि हम आजके अिस गम्भीर अवसर पर शोभा दे अुसी ढंगसे सब बातोंमें काम करें। छोटे-मोटे मतभेद तो हमारे बीच होंगे और हमेशा होते ही हैं। मगर मुझे पूरा विश्वास है कि अिस सभामें बैठा हुआ हर शख्स हमारे ध्येयकी पूर्तिमें सहायक होनेवाले और कांग्रेसके रुतबेको शोभा देनेवाले ढंगसे सारा कारबार चलानेमें सच्चे दिलसे सहयोग देगा।

६२

कराची कांग्रेसके सभापति पदसे – २

[अुपसंहारके भाषणसे]

गांधीजीको ६२ वर्ष पूरे होने आये। हम बूढ़ोंको जल्दी होगी या आप जवानोंको? हमें मरनेसे पहले हिन्दुस्तानको आज़ाद देखना है। हमें आपसे ज्यादा जल्दी है। आप मज़दूरों और किसानोंकी बात करते हैं। मैं दावा करता हूँ कि किसानोंकी सेवा करते हुअे मैं बुड्ढा हो गया, फिर भी आपमें से किसीके साथ भी होड़ लगानेको तैयार हूँ। किसानोंसे जितनी कुरबानी मैंने करायी है, अुतनी शायद ही आपमेंसे किसीने करायी होगी। छः महीने बाद समय आया तो बता दूँगा। आप बेकार क्यों हैरान होते है? छः महीनेमें आप बुड्ढे नहीं हो जायेंगे। सरकारने रोषके कअी मौके दिये है, दे रही है, लेकिन रोष करनेसे हमारा काम नहीं चलेगा। हथियार म्यानमें रखा है, अुसे ज़ंग न लगने देना, अुसे घिस-घिस कर चमकदार रखना। बहिष्कार, खादी और आत्मशुद्धिके कार्यक्रम आपके पास मौजूद हैं। आपने देख लिया कि अिन्हींसे प्रजाकी ताकत बेहद बढ़ती है। अिन्हें अेकाग्रताके साथ कीजिये। कपड़ेके व्यापारियोंको भी आखिरी सूचना देता हूँ कि जिस व्यापारके लिअे हज़ारों आदमी जेलमें गये और हजारोंने सिर फुड़वाये या हाथ-पैर तुड़वाये, वह व्यापार अब हिन्दुस्तानमें नहीं हो सकता। अगर यह मानेंगे कि कांग्रेस अब कमज़ोर हो गअी है, तो भूल करेंगे और रोयेंगे। यह समझिये कि कांग्रेसकी ताक़त हज़ार गुना बढ़ गअी है। गांधीजीने तो दूसरा प्रस्ताव समझाते हुअे कहा है कि स्वराज्यके सबसे बड़े अधिकारी या वाअिसरॉयको ५०० रुपयेसे ज्यादा वेतन नहीं मिलेगा। मैं तो कहता हूँ कि जहाँ करोड़ोंको खानेके लिअे अनाज नहीं मिलता, वहाँ जनताके सार्वजनिक सेवकको वेतन मिलना ही न चाहिये। अैसे अवैतनिक सेवकोंने देश-भरकी तहसीलोंमें सेवाके लिअे अपना जीवन दे दिया और सैकड़ों सेवक आश्रम बनाकर बैठ गये, तभी पिछले १० वर्षमें कांग्रेसने अितनी ताकत दिखाअी है।

अगर अैसी ताकत हमारे पीछे न हो, तो हम पाया हुआ भी खो बैठेंगे, और यदि अैसी ताकत होगी तो गोलमेज़ परिषदमें मन चाहा ले लेंगे। यदि वह हमें नापसन्द होगा, तो वापस आकर लड़ेंगे। लोगोंमें यह शक्ति बढ़े अैसा कीजिये। पंडित जवाहरलाल जब कामका कार्यक्रम पेश करते है, तब बहुतसे लोग भड़क अुठते हैं। अगर अुनके दिलोंमें गरीबोंके प्रति प्रेम है और किसीके प्रति द्वेष नहीं है, तो अुनका डर क्यों होना चाहिये? ज़मींदारोंकी ज़मीनें चली जायँगी, यह कह कर अुन्हें क्यों डराते हो? कहीं बकरीका भी शिकार होता है? ज़मींदार बेचारे पामर हैं। अुन्हें सरकारका सिपाही तक डरा देता है। हम अैसा काम करें कि अुनके हृदयोंमें भी जो अीश्वर निवास करता है वह जाग्रत हो जाय और वे जनताके सुख-दुःखमें साथ हो जायें। अपने पुत्र जैसी प्रजा जब भूखों मरती हो, तब महलोंमे नाच-गान करायें और रुपया अुड़ावें, अैसे ज़मींदार नहीं रह सकते। सर गंगाराम जैसे भले ही रहें।

नवजीवन, ५-४-१९३१

६३

सच्चा व्यापार कीजिये

[१९३१ के जुलाअी महीनेमें मस्कती मार्केटके संघने सरदार वल्लभभाअीको राष्ट्रीय झंडा फहरानेके लिअे निमंत्रित किया था, अुस समय दिया गया भाषण।]

आपने जो संकल्प किया अुसके लिअे आपको मुबारकबाद देता हूँ। आपसे मैंने सेवाके बहुतसे काम लिये हैं। आपका संघ सुन्दर और व्यवस्थित है, अिसीलिअे वे काम हो सके। आपसे मैंने अितने अधिक काम लिये हैं कि आपके बुलाने पर मुझे आना ही पड़ता है। आप तो अपने झगड़े भी संघसे ही निपटा लेते हैं, यह सबसे अच्छी बात है। अैसी संस्थाअें हिन्दुस्तानमें बहुत कम होंगी।

हिन्दुस्तानके संघका अर्थ है हिन्दुस्तानकी कांग्रेस — भंगी-चमार सहित सारे हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी, किसान, मज़दूर, ज़मींदार, मिल-मालिक और व्यापारी, सबका संघ है। कांग्रेसमें शरीक होनेवालोंको आन्दोलनकारी कहा जाता है, क्योंकि अुनके सिर पर लड़ाअीका काम आ पड़ा है। लेकिन रचनात्मक काममें ज्यादा स्थिर लोगोंका काम है। अुसमें विवेक और अनुभवकी ज़रूरत है। अुसे आप पूरा कीजिये।

जब बाढ़ आयी तब मैंने आपसे कहा था कि आज व्यापारका समय नहीं है। जब गुजरात बरबाद हो रहा हो तब व्यापार कैसा? मेरी पुकार

सुनकर आपने १५० नौजवान भेज दिये और गुजरातको बचा लिया, तो आज व्यापार कर रहे हैं। वरना गुजरात रसातलको चला जाता और व्यापार करनेके लिअे कहीं दूसरी जगह जाना पड़ता।

आपने मुझे राष्ट्रीय झंडा फहरानेके लिअे बुलाया, यह अच्छी बात है। ज्यादातर मुल्कोंकी स्वतंत्रता व्यापारी ही बचाते है और व्यापारी ही गँवाते हैं। यह झंडा फहराकर आप आज़ादी लेनेमें ज्यादा मदद दीजिये। आपके पास छः सौ मन हैं। आप हर साल कितने घरोंमें कपड़ा पहुँचाते है, अिसका विचार कीजिये। अिसीलिअे कांग्रेसने विदेशी कपड़ेका व्यापार छोड़नेका निश्चय किया है। अिस जमानेमें तोप-तलवारसे राज्य नहीं चलता, परन्तु व्यापारसे चलता है। हमें क्या अपने यहाँ अपना ही व्यापार करनेकी बात नहीं सूझ पड़ती? अगर विदेशी लोग दूसरे देशोंमें अपना व्यापार करनेके लिअे अितना अधिक त्याग करते है, तो क्या हमें अपने व्यापारके लिअे भी त्याग करना नहीं सूझता? जबसे यह झंडा फहराया, तबसे दुनियाको आपने अपने छिद्र देखनेका हक दे दिया है। यह देखना आपका काम है कि अिस झंडे पर कलंक न लगे। अिस झंडेकी छायाके नीचे जो काम हो और जो व्यापार फले-फूले, वह अैसा ही होना चाहिये जो हिन्दुस्तानकी अिज्ज़त बढ़ाये और स्वतंत्रता लाये।

रुपया तो स्वतंत्रताकी लड़ाअीमें कहीं न कहींसे मिल ही जाता है, मगर आज असली ज़रूरत वफ़ादारीकी है। कांग्रेसके वफादार रहेंगे, तो आप अपने संघके, अपने आपके और कुटुम्बके भी वफादार रहेंगे। विदेशी कपड़ेके व्यापारका विचार करेंगे, तो झंडेकी, मेरी और देशकी लाज चली जायगी। अिस संघमें रहकर विदेशी कपड़ेका अेक धागा भी नहीं लाया जा सकता। जो न माने अुसे संघसे बाहर निकलकर व्यापार करनेके लिअे कहिये।

देशकी सेवा करनेमें जो मिठास है, वह और किसी चीज़में नहीं है। आप कहते हैं कि मैंने खूब त्याग किया है। मैंने कोअी त्याग नहीं किया। जो निकम्मी चीज़ें थीं, भार स्वरूप थीं, अुन्हें छोड़ दिया और असली चीज़को ग्रहण कर लिया। जबसे सच्चा व्यापारी बनिया मुझे मिल गया, मैंने अुसका मंत्र ले लिया, अुसको गुरु बना लिया और तबसे ही मैंने सच्चा व्यापार सीख लिया। आप भी सच्चा व्यापार सीखिये। अहमदाबाद तो गुजरातका हृदय कहलाता है। यहाँसे सारे गुजरातमें शुद्ध खून दौड़ना चाहिये। यहाँसे स्वदेशीकी खुशबू निकलनी चाहिये।

आपने मूक प्राणियोंके लिअे सवा लाख रुपये निकाले, मगर बोलते हुअे मनुष्योंके लिअे क्या किया? अगर हम अपने धर्ममें यहाँ तक पहुँच गये हैं कि मूक प्राणियोंका भी खयाल रखते हैं, तो क्या बोलते हुअे अिन्सानोंको भूखों मरने दिया जायगा?

समझ होते हुअे भी स्वार्थ नहीं छूटता। आप सभी व्यापारी यह क़बूल करेंगे कि विदेशी चीज़का व्यापार नुक़सान करनेवाला है। हम तो सब खादी वाले ठहरे। मगर जहाँ अितनी अधिक मिलें मौजूद हैं और ढेरों कपड़ा निकलता है, वहाँ आपको विदेशोंसे कपड़ा मँगवानेका विचार ही कैसे आता है? कोअी परवाह नहीं यदि मिलोंसे रुपया कमाकर मिलवाले ज़रा ज्यादा मोटे हो जायँ। परन्तु अेक बार हम पत्थरके नीचेसे हमारा हाथ निकाल लें तो काफी है। फिर मिल वाले तो अपने ही हैं न? अुन सबको बेंतकी तरह सीधे कर लेंगे।

अिस वक्त तो कांग्रेस आपसे यह आशा रखती है कि आप देशके दलाल बनें। भगवान आपको वह शक्ति दे।

नवजीवन, ५-७-१९३१

६४

तीन बरस बाद

[१९३२ में देश पर सरकार द्वारा लादी हुअी और देश द्वारा सहर्ष स्वीकार की हुअी सविनय भंगकी लड़ाअीके बाद जेलसे बाहर आकर सरदारने जनवरी १९३५ में गुजरातका दौरा किया। अुसका जो वर्णन श्री प्यारेलालजीने तीन लेखोंमें किया है, वह नीचे दिया जाता है।]

१

तीनसे भी ज्यादा वर्षकी अनिवार्य गैर हाज़रीके बाद गुजरातके देहातोंके दौरेमें सरदार वल्लभभाअी पटेलके साथ घूमनेका मुझे सौभाग्य मिला था। परिणामोंकी या अितिहासकी दृष्टिसे देखते हुअे वह बड़े महत्त्वकी घटना थी। जैसा कि सरदारने बलसाड़के किसानोंकी सभामें समझाया था, अुनके प्रवासका मुख्य अुद्देश्य यह था कि किसानोंके दुःख दर्दकी बात रूबरू सुनें, मौजूदा परिस्थितिका अन्दाजा लगायें और यह जानें कि गांधीजीने जनताको सत्य और अहिंसाका जो संदेश दिया है, अुसपर अुनकी श्रद्धा और कांग्रेसके प्रति अुनकी वफ़ादारी अुनकी हाल की अग्निपरीक्षाके बाद क़ायम है या अुसे खो कर वे पछता रहे हैं। आगे चलकर अुन्होंने कहा: 'और मैं अिसलिअे भी आया हूँ कि आपसे रूबरू मिल कर आपके दुःखोंमें अपनी सहानुभूति दिखाअूँ, दिलासा दूँ और यह देख लूँ कि अुन्हें दूर करनेके लिअे मैं क्या कर सकता हूँ'। व्यक्तिगत दृष्टिसे सरदारके लिअे अिस यात्राका बड़ा महत्त्व था। जन्मसे और परवरिशसे किसान होनेके कारण अुन्हें कारावासके दिनोंमें किसानोंकी यातनाओंके मिलनेवाले

समाचारोंसे खूब चोट लगी थी। बारडोलीमें अुन्होंने श्रोताओंको सम्बोधन करते हुअे कहा : 'मैं ज़रा भी अतिशयोक्तिके बिना कह सकता हूँ कि अपने कारावासके दिनोंमें अैसा अेक भी रोज़ नहीं गया, जब मैंने आपको याद न किया हो और आपकी यातनाओं और तकलीफोंका विचार न किया हो। मुझे कहा गया था कि अपने कष्टोंके कारण आप मुझसे नाराज़ हो गये हैं और मेरे साथ सम्बन्ध रखनेके कारण पश्चात्ताप कर रहे हैं। ये सब खबरें मैंने कभी सच नहीं मानीं। मुझे तो यह आपकी दुष्टतापूर्वक निन्दा करनेके लिअे फैलाअी हुअी गप्पे ही मालूम हुअीं। आपको हज़ारोंकी संख्यामें यहाँ अिकट्ठे हुअे देखकर मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया है कि ज़ाहिरा तौर पर भले ही हमें अेक दूसरेसे अलग कर दिया जाय, परन्तु दुनियाकी कोअी भी ताकत हमारे हृदयोंको अलग नहीं कर सकती और न वह हमारे स्नेहकी गाँठको ही तोड़ सकती है।'

फिर अेकके बाद अेक जिलेमें घूमते हुअे अुनके प्रति प्रजाके प्रेमके जो दृश्य दिखाअी दिये, अुनसे मालूम होता है कि अुनका यह विश्वास निराधार नहीं था। सरदार जहाँ कहीं गये, वहीं स्त्री-पुरुषोंके झुंडके झुंड अुनका स्वागत करनेके लिअे अुमड़ आये और सभाओंमें भी पहलेकी तरह ही बड़ी भीड़ अिकट्ठी हुअी। बारडोलीमें अपने सरदारके आगमनकी घोषणा करनेके लिअे छोटे छोटे बच्चोंने खुशीसे पागल होकर मोहल्लोंमें धूम मचा दी। किसान स्त्रियाँ थालीमें अक्षत और रोली लेकर सरदारको तिलक लगानेके लिअे और साथ ही किफायत करके बचाया हुआ थोड़ा-सा रुपया-पैसा अपनी श्रद्धा और भक्तिभावके चिन्ह स्वरूप भेंट करनेके लिअे अपने-अपने घरोंसे निकल पड़ीं। सभाओंमें पास और दूरसे बड़ी तादादमें आये हुअे किसानोंने अुनका सन्देश मंत्र-मुग्ध होकर सुना और वे अपने हृदयोंमें श्रद्धा और आशाका नया ही प्रकाश लेकर लौटे। सूरत, भड़ौंच, नड़ियाद तथा बड़ोदा और राजपीपला राज्यमें खुले मैदानोंमें विराट सभाअें हुअीं। वीरमगाम जैसे अेक तरफ आये हुअे स्थान पर भी दस हजारसे ज्यादा आदमियोंकी भीड़ अिकट्ठी हुअी। लाअुड स्पीकरकी सुन्दर व्यवस्थाके कारण लोगोंने सरदारका सन्देश बड़ी अुत्सुकतासे सुना। यह अनुभव प्रेरक और अविस्मरणीय था।

अुन लोगोंको सरदारने क्या जीवनदायी सन्देश दिया? अुनमें से बहुतोंने मातृभूमिकी खातिर अपना सब कुछ गँवा दिया था। अुदाहरणके तौर पर सविनयभंगकी लड़ाअीमें भाग लेनेके कारण बारडोली तहसीलके बाबला गाँवके ३२ खातेदारोंकी कुल मिलकर २६० अेकड़ ज़मीन ज़ब्त हुअी है। खेड़ा जिलेके रास और सुणाव गाँवोंके लगभग सभी लोग अिसी कारण बेघरबार, बेजमीन

और बेरोज़गार हो गये हैं और अितने पर भी वे लोग अुतने ही अटल निश्चयी हैं। अुन्हें जरा भी पश्चात्ताप नहीं होता। सुणाव गाँवमें सभाका प्रबन्ध करनेवालोंने सरदारके सामने अेक नौजवानको पेश किया था। कैदके दिनोंमें बीमारीके कारण अुसकी पत्नी और बच्चेकी मृत्यु हो गअी थी और अुसके बाद अुसका घर जब्त कर लिया गया था। अुसने अपनी निजी हानि भूलकर जनताकी सेवा करके आश्वासन प्राप्त किया है। स्यादलामें अेक अच्छी स्थितिवाला जवान कुल साढ़े चार वर्षकी सजामें से दो वर्षकी सज़ा भुगतकर अभी ही जेलसे बाहर आया है। अुसके पीछे अुसकी पत्नी भी जेलमें गअी थी। अुसके पिता अभी हिजरती हैं। अुसके घर और कअी अेकड़ ज़मीनको कुर्क कर लिया गया है। मगर अिन सब चीज़ोंका अुन्होंने अिस रूपमें मिला हुआ अेक धर्म-लाभ समझकर हँसते-हँसते स्वागत किया है और ग्राम-सफाअी व ग्राम-सुधारके कामोंमें पूरे दिलसे लग गये हैं। मगर स्यादलाके अिन मोरारभाअीके बारेमें अधिक दूसरी जगह लिखूँगा।

अिन लोगोंको सरदारने अुनके खोये हुअे घरबार और ज़मीनें तत्काल वापस दिला देनेका वचन नहीं दिया। अुल्टे अुन्हें कहा कि अभी तो ये सब बातें भूल जाओ और अैसे भविष्यमें विश्वास रखो कि किसी दिन भारत स्वतंत्र और स्वाधीन होगा। साथ ही अुन्होंने यह भी कहा कि आपने जो कुछ खोया होगा, वह अुस वक्त अपने आप आपका दरवाज़ा खटखटाता हुआ वापस आ जायगा। तब तक तो यही मान लो कि त्याग ही त्यागका बदला है। बदले और मुआवज़ेकी भावनासे किया गया त्याग, त्याग नहीं है, हलके दर्जेका व्यापारी सौदा है। अुन्होंने अुनसे स्वावलंबन और अुद्योगकी बात कही और किसीके भी सामने भिक्षुक बन कर हाथ पसारनेको धिक्कारनेवाले अुनके किसान स्वभावको अपील की। अुन्होंने कहा कि यह अुनकी सबसे मूल्यवान वस्तु है। अुनकी कमियों, उनकी सुस्ती, अुनकी गंदी और स्वास्थ्यके लिअे हानिकारक आदतों, अुनके आपसी झगड़ों, छोटी-छोटी शिकायतों, अदालतोंमें जानेकी वृत्ति, ग्राम-अुद्योगोंके प्रति लापरवाही और विदेशी चीज़ोंके प्रति अुनके आकर्षण वगैराके लिअे अुन्होंने अुनसे कड़वी बातें कहीं और अुनके जीवनको कुतर कर खानेवाली सामाजिक बुराअियाँ अुनके सामने खोलकर रखीं। बाल-विवाह, मृत्यु-भोज और रोने-पीटनेके रिवाज वगैरा कुरीतियोंको छोड़ देनेके लिअे समझाया।

अपने मित्रोंकी त्रुटियोंकी तरफ अुँगली अुठानेका काम बड़ा मुश्किल होता है और अुसकी कदर होनेकी बहुत कम सम्भावना होती है। मगर सभी जगह किसानोंने प्रेम भरे अिन अुलाहनोंको बड़ी दिलचस्पीसे और कृतज्ञताकी भावनासे सुना। क्योंकि अिन शब्दोंकी तहमें जो सचाअी थी, अुसका सब पर गहरा

असर हुआ था। अुदाहरणके लिअे, अिस तरहकी अपीलकी सचाअीकी प्रतिध्वनि हरअेकके दिलमें जरूर गूँज अुठेगी: 'आपके सामने मैंने साफ शब्दोंमें बात की है। मैंने आपसे बहुतसी कड़वी बातें कही हैं, और जैसा है वैसा स्पष्ट शब्दोंमें कहते हुअे मुझे संकोच नहीं हुआ। आपके साथ जिस तरहके सम्बन्धका मैं हमेशा दावा करता रहा हूँ, अुसके कारण अैसा करना मैं अपना पवित्र कर्त्तव्य समझता हूँ। बहुत सम्भव है पहले किसीने अितने साफ़ शब्दोंमें ये सारी बातें आपसे न कही हों। परन्तु मैं अपना यह अधिकार काममें लेते हुअे नहीं हिचकिचाता, क्योंकि अब मेरी अुम्र खतम होने आअी है और अिसलिअे मैं जीते जी ही अपना सपना सच्चा होते देखने — यानी गुजरातके किसान जिन अनेक प्रकारकी सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक बुराअियोंसे कुचले जा रहे हैं, अुनसे अुन्हें मुक्त हुआ देखने — के लिअे स्वाभाविक रूपमें ही अधीर हो गया हूँ और अिसलिअे आपको आगे बढ़ाना चाहता हूँ।'

अेक बात बता कर मैं अिसे खतम करूँगा। अिस दौरेके दरमियान सभी सुननेवाले लोग सरदारके भाषणोंमें रही हुअी नैतिक लगन और गहरी धार्मिकता देख सके। बारडोलीकी पहली लड़ाअीके समय मुझे अुनके बहुतसे भाषण सुननेका लाभ मिला था। परन्तु अुनके अिस बारके भाषणोंमें जो गहरी अन्तर्मुखता, असली चीज़की मजबूत पकड़, अीश्वरकी दया पर अटल श्रद्धा और दुश्मनके प्रति भी जो क्षमावृत्ति और अहिंसा टपक रही थी, वह तो मेरे लिअे भी नअी चीज़ थी। अिन भाषणोंमें अग्नि-परीक्षामें से गुजरी हुअी आत्माकी छाप और अुनके यरवदा मंदिरमें किये हुअे गीताके अध्ययनकी सार्थकता, जिसका गांधीजीने अपने सार्वजनिक भाषणोंमें अेकसे अधिक बार अुल्लेख किया है, दिखाअी देती थी।

२

गुजरातके चारों जिलोंका दौरा किया। सूरत जिलेमें बलसाड़से शुरू करके बारडोली और चोर्यासी तहसीलोंमें तथा भड़ोंच और खेड़ा जिलेमें होकर अहमदाबाद और वीरमगामका दौरा किया। वहाँसे लौटते हुअे बड़ौदा, डभोअी तहसीलके कारवण और राजपीपला राज्यके चासवाड़ वगैरा स्थानोंमें गये। २४ ता० को बलसाड़से कार्यक्रम शुरू हुआ। वहाँके स्थानीय कार्यकर्ताओंकी अनियमित सभाके बाद हरिजन मोहल्लेमें गये और फिर सार्वजनिक सभामें अुपस्थित हुअे। अिस बीच हरिजनोंके लिअे अेक सार्वजनिक कुआँ खोलनेकी रस्म अदा की।

हरिजन मोहल्लेकी मुलाकातका अनुभव दुःखद था। जिन घरोंमें हरिजन रहते हैं, अुनमें गन्दगी और अँधेरा है, अुनके छप्पर अितने नीचे हैं कि अुनमें हवा और रोशनी नहीं आ सकती। वे अवर्णनीय गन्दगी और दरिद्रताका दृश्य

अुपस्थित करते थे। गांधीजी अपनी हालकी हरिजन यात्रामें यह देखकर दुःखी हो अुठे थे। अुन्होंने यह कोशिश की थी कि वहाँकी म्युनिसिपेलिटी अपनी जड़ता छोड़ दे। मगर मालूम होता है अुन्हें अिसमें सफलता नहीं मिली। अिन घरोंको सूअरोंके रहनेके बाड़ेकी अुपमा देकर, अिस स्थितिके लिअे ज़िम्मेदार बलसाड़ म्युनिसिपेलिटीके आत्म-संतुष्ट सदस्योंको सरदारने कड़ी बातें सुनाओं। सरदारने कहा कि म्युनिसिपेलिटी या जिला लोकल बोर्डके सदस्य-पदको गरीब और दलित वर्गके लोगोंकी सेवाके बजाय व्यक्तिगत लाभका साधन समझनेवालोंने अुनपर किये गये विश्वासका भंग किया है, यह आपको समझ लेना चाहिये। साथ ही अुन्होंने यह भी कहा: 'मगर मुझे भय है कि जहाँ गांधीजीकी अपील व्यर्थ हुअी है, वहाँ मेरी तूती पर भी ध्यान नहीं दिया जायगा। अपने आश्रित हरिजनोंको सूअरोंके रहने योग्य बाड़ेसे भी बुरे स्थानोंमें रखना म्युनिसिपेलिटीके लिअे बड़ी शर्मकी बात है। मैं आशा रखूँगा कि बलसाड़ म्युनिसिपेलिटीके सदस्य अब भी अपने कर्तव्यके प्रति जाग्रत होंगे!'

सार्वजनिक सभामें सिर्फ बलसाड़के लोग ही नहीं, आसपासके गाँवोंसे भी किसानोंके झुंडके झुंड आये थे। सरदारका भाषण साफ, सीधा और जोरदार था। अुसमें कोअी बात छिपाअी नहीं गअी थी। लड़ाअीके परिणाम स्वरूप हमें कुछ नहीं मिला, अिस बातको मानते हुअे भी अुनमें हार न माननेवाले अटल धैर्यके दर्शन हो रहे थे। शुरूमें अुन्होंने वर्तमान परिस्थितिका निरूपण किया:

'पिछले ४ सालसे हम अपनी सारी शक्ति लगाकर यह लड़ाअी लड़ रहे हैं। अुसके कारण जनतामें अभूतपूर्व जाग्रति आअी है। हमें अपनी शक्तिका पता लगा है। यह जाग्रति, आत्माकी शक्तिका हमें प्राप्त हुआ ज्ञान और कष्ट-सहनके हथियारकी सफलता अिस हिसाबका जमा पक्ष है। वह हमारी पूँजी है और अुसके सहारे हम अपनी बाकी रही हुअी मंजिल तय करना चाहते हैं। अश्रद्धालु और अपनी नाककी नोकसे आगे न देख सकनेवाले अल्पदृष्टिके लोग भले ही परिस्थितिको निराशाजनक समझें। परन्तु जो लोग दूर तक देख सकते हैं और परिस्थितिका व्यापक दृष्टिसे अवलोकन कर सकते हैं, वे अूपरी तौर पर दिखाअी देनेवाली असफलता और पीछे हटनेकी बातके होते हुअे भी कष्ट-सहनके अिन वर्षोंमें राष्ट्र द्वारा की गअी प्रगतिको देखकर चकित हुअे बिना नहीं रह सकते। मैं खुद निराशाके लिअे कोअी भी कारण नहीं देखता। सशस्त्र युद्धमें भी लड़ाअीकी थकावट कोअी नअी बात नहीं होती। जहाँ अेक पक्ष केवल कष्ट-सहनको अपनी ढाल बनाकर काम करनेके लिअे प्रतिज्ञाबद्ध हो और विरोधी पक्ष केवल हिंसा पर ही अुतारू हो, वहाँ तो यह चीज़ और भी

समझमें आने लायक़ है। स्वतंत्रताकी पुकार सुनकर अपनी संतानोंके किये हुअे बलिदानों और साथ ही अुनके सहे हुअे बेशुमार कष्टों पर देशके लिअे गर्व करनेका पूरा पूरा कारण है। हमारी परीक्षाने हमें काफी बल दिया है। अुसने हमारी कमजोरियाँ भी बता दी हैं। हमें मालूम हो गया कि हमने अपने सामने जो महान ध्येय रखा था, अुसे प्राप्त करनेके लिअे हमारे पास काफ़ी ताक़त नहीं थी। जब तक हम अपने आदर्शोंके प्रति श्रद्धा न खो बैठें, तब तक हम और हमारा ध्येय सलामत है। अिसका अर्थ यह है कि हमें अपने साधन नये सिरेसे संगठित करने हैं, अपनेमें घुसी हुअी कमज़ोरियोंको निकाल देना है, अपने थके हुअे अंगोंको आराम देना है और बाक़ीकी मंज़िल धीरे-धीरे पूरी करनी है। बदलती हुअी परिस्थितिके अनुसार हमारी व्यूह-रचना बदल सकती है, परन्तु जब तक अेक भी सच्चा कांग्रेसी बाकी रहेगा, तब तक हमारे पूर्ण स्वराज्यके ध्येयसे पीछे क़दम नहीं हटाये जा सकते और न अुसे छोड़ा ही जा सकता है। सत्ताधारी भी जानते हैं कि आज अैसे हज़ारों आदमी हैं, जिन्होंने सर्वस्वका त्याग करके स्वराज्य प्राप्तिको अपने जीवनका ध्येय बनाया है। अितिहास हमें सिखाता है कि जब अेक बार राष्ट्रके अन्तरमें स्वतंत्रताकी अग्नि जल जाती है, तो फिर केवल दमनसे वह कभी नहीं बुझाअी जा सकती। अिससे दूसरे ढंग पर सोचना अितिहासको भूलने और अपने आपको धोखा देनेके बराबर है।'

बादमें कांग्रेसकी अख्तियार की गअी नअी नीतिका अुल्लेख करते हुअे अुन्होंने कहा: 'कांग्रेसने देखा कि हमारे लोगोंने अभी तक सच्चे स्वरूपका सत्याग्रह करनेकी ताकत पैदा नहीं की है। दमनके सामने मज़बूतीसे खड़े रहनेके बजाय वे ढीले पड़ जाते हैं और डरने लगते हैं। अिस कारण सविनय भंगके 'खतरेकी' आड़में आर्डिनेन्स राज्य जारी रख कर देश पर अपनी पकड़ और भी मजबूत बनानेकी सरकारकी चालको अुलट देनेकी ज़रूरत पैदा हो गअी है। अिसी नीतिके अनुसार सविनय भंगकी लड़ाअी मुल्तवी की गअी है और स्वार्थ-साधुओंको निकाल देनेके लिअे चुनाव लड़नेका निश्चय किया गया है। ये लोग धारासभाओंके अपने पदोंका दुरुपयोग करके दुनियाको यह दिखाते थे कि सरकारकी दमन नीतिमें देशका साथ है और अुसने कांग्रेसको छोड़ दिया है। हालमें होनेवाले चुनावोंमें कांग्रेसको जो भारी विजय प्राप्त हुअी है, अुसने अिस सवालका आखिरी फैसला कर दिया है कि देश कांग्रेसके साथ है या सरकारके साथ।' अेक और अवसर पर अुन्होंने बताया: 'सरकार कहती है कि कांग्रेसको मिली हुअी सफलता अुसके वैधानिक तरीकेकी जीत है। अगर चुनावमें कांग्रेस हार गअी होती, तो अिसी बातको अुसे कांग्रेसकी आखिरी हार बतानेमें संकोच नहीं होता। मुझे तो अितना ही कहना है कि 'मैं तेरी आँखोंमें अुँगली डालूँ,

और तू मेरे मुँहमें डाल' वाली सरकारकी अिस नीतिका अितना अधिक भंडाफोड़ हो गया है कि अुससे कोअी धोखा नहीं खा सकता।'

गोलमेज परिषद्की जॉअिंट पार्लियामेन्टरी कमेटीकी रिपोर्टको अुन्होंने, वह ध्यान देने लायक चीज़ नहीं है, कहकर दो ही वाक्योंमें अुड़ा दिया। अुन्होंने कहा : 'अिस खोटे रुपयेको सरकार हो सके तो धोखेबाज़ीसे और ज़रूरत हो तो ज़बरदस्तीसे देशके मत्थे मढ़नेकी कोशिश कर रही है। कांग्रेसने अुसके साथ कोअी सम्बन्ध न रखनेका निश्चय किया है, क्योंकि वह सत्ता छोड़नेका दिखावा मात्र करके रुपयेमें १५ आने जितनी सत्ता विदेशी हुकूमतके लिअे रख लेती है और बाकीके अेक आनेके लिअे अलग-अलग जातियोंको आपसमें लड़ा देती है। स्वराज्य हासिल करनेका अपना जन्मसिद्ध अधिकार पूरी तरह प्राप्त करनेके लिअे कांग्रेसने समझदारीके साथ साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्वके सवालको अलग रखकर अनुचित झगड़ेमें फँसनेसे अिनकार किया है। देशकी रक्षा और अर्थ-व्यवहार पर नियंत्रण और अपने व्यापार-धन्धे और अुद्योगोंका विकास करनेकी स्वतन्त्रता न मिलती हो, तो अैसे स्वराज्यका कोअी अर्थ नहीं है, जब कि सुझाये गये विधानका अुद्देश्य तो स्पष्ट ही अिन सब चीज़ोंको अलग रखना है। अिस कारणसे कांग्रेसने देशको निःसंकोच होकर सलाह दी है कि सुझाये हुअे सुधारोंके बनिस्बत मौजूदा विधानके मातहत रहना ही बेहतर है!'

अब क्या हो? सविनयभंग तो अभी प्रस्तुत नहीं है, अिसलिअे अब अेक-मात्र कांग्रेसका रचनात्मक कार्यक्रम ही बाकी रह जाता है। अुन्होंने कहा कि 'किला जीतनेके दो रास्ते हैं : अेक तपस्याका रास्ता है। अिसमें सविनयभंग और यातनाअें सहनेकी बेहद शक्तिका समावेश होता है। अुसका अेक बड़ा फायदा यह है कि पूर्ण सत्याग्रही अकेला-दुकेला हो, तो भी वह लड़ाअी जीतनेके लिअे काफी है। दूसरा मार्ग श्रद्धा या भक्तिका है। अलग-अलग सब विभागोंमें सम्पूर्ण और स्वेच्छापूर्वक सहयोग अुसका आधार है। अुसमें सबको कमसे कम त्याग करना पड़ता है। चुनावमें कांग्रेसके अुम्मीदवारोंको अपने मत देकर आपने कांग्रेसके प्रति अपनी भक्ति दिखा दी है। परन्तु ये मत गुप्त रूपमें दिये गये थे। अुन्होंने यह दिखा दिया कि कांग्रेसके प्रति लोगोंकी कितनी सहानुभूति है। अब आपको खादी, जो कांग्रेसकी वर्दी है, पहनकर कांग्रेसके प्रति अपनी वफ़ादारी खुले तौर पर बता देनी चाहिये, ताकि हम जान लें और दुनिया भी जान ले कि कौन कहाँ है। कांग्रेसने देशके सामने जो कार्यक्रम रखा है, वह अैसा है कि अुसमें किसीके साथ भी झगड़ेमें नहीं पड़ना पड़ता। अगर कोअी अुलटे रास्ते चलनेवाला अधिकारी ज़रूरतसे ज्यादा अुत्साहमें आकर आपको तंग करे, तो आपको यह बात फौरन अपने कांग्रेसके पदाधिकारियोंके सामने रख देनी चाहिये। कांग्रेस तंग करनेवालेको ठीक करनेकी

बात देख लेगी। कांग्रेस संस्था पर अब प्रतिबंध नहीं है। कहीं प्राणवान बनी हुअी जनता फिरसे किसी दिन सीधी कारवाअीका आश्रय न ले ले, अिसलिअे जीवनदायक शुद्ध रचनात्मक कार्य करनेवाले कांग्रेसियोंको भी तंग करनेकी सरकारकी नीति है या नहीं, यह अभी देखना है। किसी पर भी नाजायज या झूठमूठ मुकदमा चलाया जाय, तो हमें अपने बचावके लिअे सभी कानूनी साधनोंका अुपयोग करना है।'

अुन्होंने कार्यकर्ताओंको भाषण देनेके प्रलोभनसे बचने और दीर्घ-दृष्टि और समझदारीसे सत्ताधारियोंके साथ संघर्षमें आनेकी परिस्थिति पैदा न होने देनेके लिअे कहा। जिस सरकारने जनताके अेक स्वरसे किये हुअे विरोधकी परवाह न करके देश पर प्रतिगामी विधान लाद देनेका अपना निश्चय खुल्लम-खुल्ला घोषित कर दिया है, अुस सरकारके विरुद्ध अप्रीति फैलानेकी ज़रूरत ही नहीं रही। अिसलिअे अुन्होंने कार्यकर्ताओंको जब जीमें आये, तभी भाषण देनेकी मनाही कर दी। 'यह काम धारासभाओंके कांग्रेसी प्रतिनिधियों पर या मेरे जैसे पर छोड़ दो। मैं सब तरकीबें जानता हूँ। ज़रूरत पड़ने पर विरोधी जल अुठें, अैसे कड़े शब्द कहना मुझे आता है। मगर अैसा करनेसे हमारा अुद्देश्य सिद्ध न होता हो, तब चाहे कितने ही सच्चे-झूठे सम्वाददाता और रिपोर्टर बैठे हों, तो भी अुनके जालसे बचना मुझे आता है। और मैं जानता हूँ कि अिस वक्त मेरा और कांग्रेसके हरअेक कार्यकर्ताका स्थान जेलके बाहर लोगोंके बीच है, न कि जेलके सीखचोंमें।'

सरदारने खास तौर पर गुजरातके किसानोंके जिस सहायता-कोषके लिअे यह दौरा शुरू किया था, अुसके सिलसिलेमें बोलते हुअे गुजरातके किसानोंके किये हुअे बलिदानोंका भावपूर्ण शब्दोंमें अुल्लेख किया : 'मातृभूमिकी पुकारका जिन्होंने सुन्दर तरीकेसे जवाब दिया है और जो अिस वक्त अपने परिवारों सहित बेहद कष्ट अुठा रहे हैं, अुन वीर पुरुषोंको मदद देना — खास तौर पर अुन लोगोंका जिन्होंने लड़ाअीमें भाग नहीं लिया — पवित्र कर्तव्य है। अिसमें चूके तो हमारी नालायकी ज़ाहिर होगी। क्योंकि जो जाति वीर पुरुषोंकी कदर करना नहीं जानती, वह अैसा कोअी काम नहीं कर सकती जिसे वीरतापूर्ण कहा जा सके।' अुन्होंने आगे कहा : 'मैं बड़े शहरोंमें व्यापारियोंसे बड़ी-बड़ी रकमें आसानीसे ला सकता हूँ। मगर गुजरातके किसानोंके लिअे मुझे मुट्ठीभर धनिकोंसे दान नहीं चाहिये, परन्तु देशके बहुसंख्यक गरीबोंकी सहानुभूति चाहिये।' मुश्किलमें पड़े हुअे गुजरातके किसानोंके कष्ट-निवारणके लिअे अुन्होंने हर खातेदार पर कमसे कम दस रुपया कर सुझाया। अुन्होंने बताया कि 'अुनकी मदद करके आप अपनी ही मदद कर रहे हैं, क्योंकि अिससे आप लोगोंमें मेल और

अेकताकी भावना पैदा होगी और आपको परस्पर सहायता और सहयोगके आधार पर संगठन करनेका सबक सीखनेको मिलेगा।' अंतमें अुन्होंने यह आशा प्रगट की कि 'गुजरातके किसानोंके मामलेमें आप मुझे पूरी तरह निश्चिन्त कर देंगे ताकि मैं कर्नाटकके किसानोंके लिअे कुछ करनेके लिअे मुक्त हो सकूँ। मेरी सेवा लेनेका अुनका हक़ भी गुजरातके किसानोंके बराबर ही है।'

१

दोपहरको बलसाड़से रेलगाड़ी में रवाना होकर शामको मंडली बारडोली पहुँची। हम जब 'स्वराज-आश्रम' के मकानकी जगह पर पहुंचे, तब मेरे साथके अेक स्थानीय मित्रने कहा, 'अिस जगहसे गुजरते हुअे हम दाहिनी तरफ़ नज़र नहीं डालते। वह दृश्य मनुष्यकी अहिंसावृत्तिकी ज़बरदस्त कसौटी करता है, और हमें यह विश्वास नहीं कि वह काफ़ी मात्रामें हममें है या नहीं।' 'स्वराज आश्रम' की तरफ़ नज़र डालते ही मैं अुनके कहनेका भावार्थ समझ गया। अुसके आगेके हिस्सेमें अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक बड़े-बड़े अक्षरोंमें 'स्पेशल पुलिस हेड क्वार्टर' लिखा था। खुद मकान भी टूटी-फूटी हालतमें पहुँच गया था और निरी लापरवाहीका सबूत दे रहा था। सुन्दर बगीचा बरबाद कर दिया गया था। खिड़कियोंके अूपरके छज्जे टूटी-फूटी हालतमें अुनके सहारे पर लटक रहे थे।

अुस दिन शामकी सार्वजनिक सभामें अिसका ज़िक्र करके सरदारने कहा : 'यह दृश्य देखकर हमारे दिलोंमें दुःख होता है। कांग्रेस द्वारा निश्चित रूपमें अपना सविनयभंगका कार्यक्रम वापस ले लेनेके बाद भी छः छः महीने तक आश्रमके मकानों पर कब्ज़ा रखनेके लिअे किसी भी तरहका अुचित कारण नहीं है। मैंने अधिकारियोंसे पुछवाया है कि बारडोली आश्रमको जल्दीसे जल्दी हमारे सुपुर्द करना संभव है या नहीं। मैं अुनके आखिरी जवाबकी राह देख रहा हूँ। मगर अिस बीच वह जिनके कब्ज़ेमें है, वे और कुछ नहीं तो अुसे ज़रा अच्छी हालतमें तो रखेंगे या नहीं? जिस घरमें रहें अुसीको बिगाड़ें, यह अच्छी बात नहीं है।

'पहलेकी लड़ाअीके समय ये मकान जिस अफ़सरके कब्ज़ेमें थे, वह खानदानी था। अुसने अपने मातहत नौकरोंको हिदायत कर दी थी कि बगीचेमें से अेक भी फूल या पत्ता न तोड़ा जाय। बेपरवाहीमें न कोअी बहादुरी है, न कोअी शराफ़त। मुझे अितना ही कहना है कि जिस ढंगसे अिन मकानोंको रखा और बरता जा रहा है, अुसके लिअे जो लोग ज़िम्मेदार हैं अुनकी शोभा नहीं और न अिससे सरकारकी ही प्रतिष्ठा या शोभा बढ़ेगी।'

सरदारकी यह वाणी सुननेके लिअे अिकट्ठी हुअी भीड़ बलसाड़की सभाकी भीड़से भी बड़ी थी। तीन बरस पहले अिसी जगह अुनके साथ हुअी अपनी मुलाक़ात और अिस अरसेमें जो जो घटनाअें हुअीं, अुनका भावपूर्ण शब्दोंमें अुल्लेख करके अुन्होंने कहा: 'अुस वक्तका मेरा दिया हुआ ज्ञान आप भूल न गये हों, तो आप समझ लेंगे कि आपको किसीके भी आश्वासन या सहानुभूतिकी जरूरत नहीं है। मैं आपसे सदा कहता था कि मेरे साथ पाला पड़ा है, सो कोअी हँसी-खेल नहीं है। आप अगर मेरा नेतृत्व स्वीकार करते हैं, तो आपको बड़े कठिन मार्ग पर चलना पड़ेगा। और अिस रास्ते पर आपको लगानेमें मुझे संकोच नहीं हुआ, क्योंकि मेरा विश्वास है कि हम कष्ट सहन करके ही शान्ति और स्थायी आनंद प्राप्त कर सकते हैं और बलिदान व आत्मशुद्धि द्वारा ही ताक़त हासिल कर सकते हैं।

'मगर बहादुर आदमियोंका स्वेच्छासे किया हुआ कष्ट-सहन ही फलदायक हो सकता है, कायर और लाचार मनुष्योंका मजबूर होकर अुठाया हुआ कष्ट नहीं। साथ ही वह समझपूर्वक होना चाहिये। यों तो हिन्दुस्तानमें करोड़ों लोग तकलीफ बरदाश्त करते हैं और अज्ञानमें मर जाते हैं, मगर अुनके अुस कष्ट-सहनसे न अुनका बोझा हल्का होता है, न और किसीका। जब मनुष्यके सामने अैश-आराम और त्याग, अिन दोके बीच चुनाव करनेका मौका आये और वह विचारपूर्वक अेक को छोड़कर दूसरा स्वीकार करे, तो कहा जायेगा कि अुसने बलिदान दिया या तप किया। समाजकी बुराअियाँ दूर करनेके लिअे अिससे ज़्यादा ताकतवर कोअी और हथियार नहीं है।

'तीन साल पहले काफी विचार करनेके बाद आपने पसन्दगी की थी। अुसके परिणाम स्वरूप आपमें से कुछ लोगोंने अपना सर्वस्व खो दिया है। मैं आपसे कहूँगा कि आपके बलिदानोंकी बात अितहासमें अमर रहेगी।

'सच्चा बलिदान हमेशा पारमार्थिक होता है। अुसमें कोअी नफ़े-नुक़सानका हिसाब नहीं होता। अुसमें किसी बदलेकी अपेक्षा नहीं होती और अुसमें किसी तरहकी निराशा या पछतावेके लिअे भी स्थान नहीं होता। अब अपनी ज़मीन और घरबारकी कुरबानी करनेके बाद आप भीतर ही भीतर अुसकी चिन्ता करते रहेंगे, तो आपका त्याग बेकार हो जायगा और अुसकी सारी शक्ति नष्ट हो जायगी; और किसी मनुष्यके अुपवास करने पर भी अुसका मन अच्छा-अच्छा खानेका ही विचार करता रहता हो, तब जैसा होता है वैसे ही दुनिया आप पर दया करेगी और आपको धिक्कारेगी। अैसा मनुष्य घृणाका पात्र और दंभी माना जाता है और अुसकी कोअी गिनती नहीं रहती। मगर यदि आपके किये हुअे सांसारिक वस्तुओंके त्यागके साथ-साथ अन्दर भी त्यागकी भावना पैदा हुअी होगी, तो दुनियावी चीज़ोंकी आपकी हानि आपको निराश करने या आपकी आत्माको

कुंठित करनेके बजाय आपकी आत्म-शुद्धिका साधन बन जायगी और दूसरोंकी सेवाके लिअे आपको अधिक योग्य और अधिक अच्छे बनायेगी।'

सबके प्रति क्षमावृत्ति और सद्भाव रखनेके लिअे कहकर अुन्होंने अपना भाषण खतम किया। अुन्होंने कहा: 'दुःख अुठानेके कारण अकसर हममें कटुता आ जाती है, हमारी दृष्टि संकुचित हो जाती है और हम स्वार्थी और दूसरोंकी कमियोंके प्रति असहिष्णु बन जाते हैं। छोटे-छोटे झगड़ों और शिकायतोंकी पुरानी याद अपने दिलोंसे मिटा देने और जिन्होंने लड़ाअीके दिनोंमें कमज़ोरी या और किसी कारणसे पीछे क़दम हटाया है या जो विरोधी पक्षमें चले गये हे, अुनके प्रति कटुता न रखनेकी मेरी आप सबसे हार्दिक प्रार्थना है। अपनी आफ़तके समय पुराना वैरभाव रखनेसे हमारा काम नहीं चलेगा। अिसलिअे कलहकी जड़को गहरा गाड़ दीजिये और बीती बातें भूल जाअिये।

'और अल्पदृष्टि रखकर स्वार्थसे अंधे होकर जो दमन नीतिके हथियार बने हैं, मेहरबानी करके अुन्हें अपनेसे दूर न रखें। अुनके प्रति भी ममता रखिये। आखिर वे भी तो हमारे ही भाअी है। अुन्हें पता नहीं था कि वे क्या कर रहे हैं।'

दूसरे दिन कड़ोद, रायम, खोज और स्यादला वगैरा गाँवोंमें गये। अिन सभी जगहों पर अुन गाँवोंके लोगोंने छोटे-छोटे स्वागत समारोहका आयोजन किया था और मण्डपोंको वन्दनवारोंसे अच्छी तरह सजाया था। दोपहरको स्यादला पहुँचे। जिनका मैंने अपने पहले लेखमें ज़िक्र किया है, वे श्री मोरारजी-भाअी यहाँ हमारे यजमान थे। अुनके घर पहुँचनेके थोड़ी देर बाद ही अुनके बाड़ेमें खोदे गये अलग खड्डों और अुनके चारों तरफ़ खड़े किये गये डामर लगाये हुअे पालोंकी तरफ़ हमारा ध्यान खींचा गया। श्री मोरारजीभाअीने हमें बताया कि यह अुनकी ग्राम सफ़ाअीकी योजनाका सामान है। 'हमारे गाँवोंकी गन्दगी और कचरा दूर करके अुन्हें स्वच्छ बनाना और पहलेकी तरह ही सुघड़ और सुन्दर बनाना मेरा मनोरथ है। आज तो वे गन्दगीके कारण कुरूप और मनुष्यके रहनेके लिअे निकम्मे बन गये हैं।' ग्राम सफ़ाअीके आन्दोलनमें ग्रामवासियोंमें सफ़ाअीकी सच्ची आदतें डालना शामिल है। अिसके लिअे मोहल्लोंमें और दूसरे सार्वजनिक स्थानोंमें भी पहरा देनेवाले स्वयंसेवक रखनेकी अुनकी योजना है। वे देहातियोंको मोहल्लों और दूसरी आम जगहोंको गन्दा न करनेके लिअे समझायें और यह सिखायें कि मनुष्यके मैलेसे किस तरह क़ीमती खाद बनाया जाता है। अैसी अुद्देश्यसे देहातोंमें प्रचारक भेजनेकी भी अुनकी योजना है।

मैंने अुनसे पूछा: 'आपको यह विचार कहाँसे आया?' अुन्होंने जवाब दिया: 'यह जेल जीवनका फल है। विसापुर जेलमें अिस तरीक़ेसे मैलेकी खाद

बनाकर बगीचेमें अुसका अुपयोग किया जाता है। वहाँ काम करते हुअे यह खाद देनेसे पैदा होनेवाले पपीतेका आकार देखकर मैं चकित रह गया था। मैंने विचार किया कि हमारे गाँवोंमें मल केवल गन्दगी ही पैदा करता है और रोग फैलाता है। अिसके बजाय अच्छी फ़सल पैदा करनेमें अुसका अुपयोग क्यों न किया जाय? और वहीं मेरे सफ़ाअीके कामकी योजना तैयार हो गअी।' अुन्होंने जरा गर्वसे कहा : 'मेरे गाँवमें आपको लोग पहलेकी तरह सुबह-शाम मोहल्ले गन्दे करते हुअे नहीं दिखाअी देंगे। अिस कुअेंको देखिये। अिसके बाहर पड़नेवाला पानी आसपासके खड्डोंमें अिकट्ठा होकर पीनेके पानीको ज़हरीला नहीं बनाता। अूपरसे ढके हुअे नालेके ज़रिये यह पानी हम मुख्य गटरमें ले जाते हैं। बेशक यह तो छोटे पैमाने पर शुरुआत है, मगर यह भविष्यमें आनेवाली बड़ी चीज़ोंका पूर्व चिन्ह है।'

अिसके बादसे सरदार अपने भाषणोंमें बार-बार ग्राम सफ़ाअीके प्रश्नका अधिकाधिक जोर देकर जिक्र करने लगे। अुस दिन शामको वालोड़की सभामें अुन्होंने बताया : 'हम स्वतन्त्रता चाहिये। मगर स्वतन्त्रता किसलिअे चाहिये? सूअरकी तरह कीचड़के खड्डेमें लोटनेके लिअे? मैं आपसे कहता हूँ कि हमारे देहातियोंको हमने अधिक अच्छी सफ़ाअीकी आदतें न सिखाअीं और अुन्होंने मवेशियोंके रहने जैसी जगह वाले गन्दे और बेढंगे घरोंमें अपने ढोरोंके साथ रहना चालू रखा, तो स्वराज्य आनेसे भी अुनका दारिद्र्य दूर नहीं होगा।'

रातको सरदार बारडोली लौट आये और दूसरे दिन तड़के ही अुन्होंने अपना दौरा शुरू कर दिया। छोटेसे बाबला गाँवके लोग अभी मुश्किलसे बिस्तरसे अुठे थे कि अितनेमें सरदार वहाँ पहुँच गये। अिस गाँवके लोगोंकी लगभग सारी ही ज़मीन ज़ब्त हो गअी थी। अुन लोगोंको कहीं न कहीं और अच्छी जगह बसानेकी योजनाकी चर्चा करनेके लिअे थोड़ी देर वहाँ ठहर कर वे सालेज गाँव पहुँचे। वहाँ गणदेवी तहसीलके बाकी गाँवोंकी तरह गुड़ बनानेका अुद्योग बड़ी मुश्किलोंका सामना करते हुअे किसी न किसी तरह टिका हुआ है। वहाँके गुड़की गिनती हिन्दुस्तानके अच्छेसे अच्छे गुड़में होती है। वहाँ हम जिनके यहाँ ठहरे थे, अुन्होंने बताया कि 'तहसीलमें ४–५ हज़ार अेकड़ ज़मीनमें गन्नेकी फ़सल होती है और मालके लिअे बाज़ार हो, तो यह फ़सल अिससे दुगनी ज़मीनमें आसानीसे बोअी जा सकती है। मगर विदेशी और हिन्दुस्तानमें बनी हुअी शक्करकी दिन-दिन बढ़ती हुअी स्पर्धाके कारण आजकल अिस अुद्योगमें लगे हुअे हज़ारों आदमियोंके सामने बेकारी और गरीबीका डर पैदा हो गया है। क्या अिस करुण परिस्थितिको टालनेके लिअे कुछ नहीं हो सकता?'

सालेजसे मंडली नवसारी पहुँची। कालियावाड़ीमें हुआी सभामें भाषण देकर सरदारने सूरत जानेके लिअे गाड़ी पकड़ी। वहाँ वे अपनी मंडलीके साथ श्री कन्हैयालाल देसाअीके यहाँ ठहरे। शहर जिस भीषण दमन-चक्रसे गुजरा था, अुसका असर अभी तक दिखाअी दे रहा था। मगर सरदारका अुसने जो सत्कार किया, अुस परसे अैसा लगता था कि वह अपनी पुरानी प्रणाली कायम रखनेके लिअे अत्यन्त अुत्सुक है। शामको तिलक मैदानमें हुआी सार्वजनिक सभामें सरदारने जॉअिन्ट पार्लियामेंटरी कमेटीकी रिपोर्टको अस्वीकार कर देनेकी कांग्रेसकी नीतिकी आलोचना करनेवालोंको कड़ा जवाब दिया। किसान सहायक-कोषकी अपीलका भी अिस सभाने बहुत ही अच्छा जवाब दिया।

६५

आठवीं रानीपरज परिषद्

[ता. १९-२-१९३५ को मगरकुअी गाँव (व्यारा) में हुअी आठवीं रानीपरज परिषद्के अध्यक्ष पदसे दिया हुआ भाषण।]

१२ वर्षमें हुअी क्रांति

आपने मुझे अपनी परिषदका अध्यक्ष पद फिर अेक बार सौंपकर सचमुच मुझे आभारी बनाया है। कअी ज़रूरी कामोंमें लगा होने पर भी जब आपका निमंत्रण पहुँचा, तब मैं अुसे अस्वीकार नहीं कर सका। आपके साथ मेरा सम्बन्ध अितना निकटका हो गया है कि जब आपके अूपर कोअी संकटका समय आ जाता है, तब आप कुदरती तौर पर मेरी ही तरफ देखते हैं। अिसीलिअे दिल्ली जानेका आया हुआ बुलावा छोड़कर भी मैं आपके पास आया हूँ।

आज हम अिकट्ठे हुअे हैं, तो अिस अवसर पर मैं आपको १२ साल पहले हुअी आपकी शेखपुरकी परिषदकी याद दिलाता हूँ। अुस समय आप लोग ४० हज़ारकी बड़ी संख्यामें जमा हुअे थे और जंगलोंके गहरे मार्गोंसे और नासिक जिलेकी हदसे भी रानीपरज लोग अुमड़ पड़े थे। अुस दिनकी हमारी दशा और आजकी दशाका मुक़ाबला करें, तो मालूम हो जायगा कि अितने वर्षोंमें हममें कितना परिवर्तन और कैसी क्रांति हुअी है। अिस प्रगतिके लिअे हमें अीश्वरको धन्यवाद देना चाहिये। मगर अितनी तरक्कीके बावजूद अभी हमें बड़ी लम्बी मंज़िल तय करनी है। आज आपके सामने आपकी जातिकी अुन्नतिके लिअे अलग-अलग १८ प्रस्ताव रखे जायँगे और अुन पर चर्चा की जायगी। आप लोग पूरा विचार करके प्रस्ताव पास करना।

रानीपरज और बड़ौदा राज्य

आरम्भमें हम अेक प्रस्ताव द्वारा श्रीमंत महाराजा साहबका आभार मानते हैं कि आखिर अुन्होंने हमारे लिअे लगान संबंधी कानून बनवा दिया। अिस कानूनसे हमारे और साहूकार वर्गके अन्दर बहुत ही अूहापोह हुआ है। कुछ भी हो, मगर अिस बातके लिअे कि हमारे राजाके दिलमें अेक बार तो हमारी बात बैठ गअी और अुन्होंने हमारी स्थितिका विचार करके हमें यह हक्क प्रदान किया है, अुनका आभार मानना हमारा धर्म है।

फिर भी जैसे मैं अिस माँगके सम्बन्धमें राज्यको बधाअी दे सकता हूँ, वैसे ही अपनी अेक और माँगके बारेमें मैं अुसे बधाअी नहीं दे सकता। वह यह कि बड़ौदा राज्यमें हमारे ही देशभाअी और हमारे अपने ही धर्मबन्धु राज्य कर रहे हैं, तो भी वे शराबका व्यापार छोड़कर हमें शराब पीनेसे बचानेके लिअे अभी तक तैयार नहीं हैं। राज्यको आमदनी बढ़ानेकी ज़रूरत हो, तो अुसके लिअे और बहुतसे रास्ते हैं। मगर गरीब, अज्ञान और जंगलमें रहनेवाली जातिको शराब पिलाकर अपनी आमदनी बढ़ानेमें महापाप है। जो प्रजा अज्ञान और गरीब है, जो निर्धन प्रजा राज्यके आश्रय और अुच्च वर्गकी दया पर ही निर्भर ही है, अुसमें शराबका व्यापार करना और अुस प्रजाको शराब वालोंके जुल्मों और तरह-तरहकी मक्कारियोंका शिकार होने देना सचमुच ही अत्याचार है। अुस प्रजा पर श्रीमंत महाराजा साहब अपनी अिस अुम्रमें, जबकि वे कब्रमें पाँव लटकाये बैठे हैं, शराब-बंदीके निषेधके बारेमें हमारी माँग स्वीकार कर लें, तो राजा-प्रजा दोनोंका भला हो।

न अन्याय करें और न सहें

बड़ौदा सरकारकी तरफसे जो लगान संबन्धी क़ानून बना है, अुसमें अनुभवसे कुछ मुश्किलें मालूम हुअी हैं। भाअी कोटलाभाअीके भाषणसे मुझे पता चलता है कि अुन्होंने अुस कानूनका बारीकीसे अध्ययन किया है। यह गर्व करनेकी बात है कि हमारी जातिमें अैसे लोग हैं। हम अिस सम्बन्धमें अेक समिति मुकर्रर करनेका प्रस्ताव करनेवाले हैं। यह समिति सब बातोंकी जाँच करेगी और हमें विचारपूर्वक रिपोर्ट तैयार करके देगी। हम अैसी कोशिश करेंगे कि साहूकारों और बड़े किसानोंके साथ अन्याय न हो और साथ ही साथ हमारा अपना हक्क भी न जाय। मैं नहीं जानता कि अिसमें हम कहाँ तक सफल होंगे। मगर अितना विश्वास हम सभीको दिला देते हैं कि भले हमारी कितनी ही दुर्दशा हो गअी हो, हम पर कितने ही जुल्म हुअे हों, हम ज़मीनें खो बैठे हों और हम पर ब्याजका ढेर चढ़ गया हो, तो भी हम किसीके साथ अन्याय

करना नहीं चाहते। मगर अिसीके साथ यह भी जाहिर करते हैं कि हम अपना हक़ भी गँवाना नहीं चाहते। अिसलिअे जिन-जिन साहूकारोंको हमारे प्रति अविश्वास हो गया हो, अुन्हें भी हम अेक प्रस्ताव द्वारा यकीन दिलायेंगे कि अुनके मनकी शंका और अविश्वास मिथ्या है। परन्तु अगर किसीका अिरादा स्थायी रूपसे हमारे आधार पर ही जीनेका हो, तो हम कहते हैं कि अुस स्थितिमें से हम निकल जाना चाहते हैं। जो दूसरोंको अपने आधार पर जीने देता है, वह मनुष्य नहीं पशु है। अैसी हालतसे हमें मुक्त होना है। मगर अपनी मुक्तिके मार्गमें हम किसीका सच्चा कर्ज़ डुबोना नहीं चाहते। साथ ही हमारा यह भी निश्चय है कि हमें किसीका अन्याय नहीं सहन करना है। शेखुपुरकी परिषदके समयसे अब तक हममें बहुत जाग्रति आ गअी है और हमारे बीच सेवा करनेवाले हमारे ही बहुतसे जवान तैयार हो गये हैं। यह स्वाभाविक है कि अैसी जाति अब किसीका सामाजिक अन्याय हरगिज़ सहन नहीं करेगी।

मैंने सुना है कि बुहारीके साहूकारोंको रानीपरज किसानोंके बारेमें कुछ शिकायतें हैं। दूसरी तरफ आज ही अेक अखबारमें पढ़ा कि लगान संबंधी कानूनके कामके लिअे नियुक्त अधिकारी भाअी रमणलाल देसाअीकी गाड़ीके आगे रुकावटें डाली गअी थीं और कुछ लोग अैसा मानते हैं कि अिस काममें रानीपरज किसानोंका हाथ होगा। यह पढ़कर मुझे दुःख हुआ। मुझे आशा है कि यह बात सच्ची नहीं होगी। सच हो तो हमारे लिअे शर्मकी बात होगी। आपको अिस चीज़की जाँच करनी चाहिये और सचमुच ही अैसी करतूत आपके किसी आदमीकी की हुअी मालूम पड़े, तो अुसे सूबाके सामने पेश करके माफ़ी मँगवानी चाहिये। मैं जानता हूँ कि भाअी रमणलालने हमारी बड़ी सेवा की है और मुझे अुम्मीद है कि आगे भी करेंगे। हममें से भले ही कुछ लोग यह मानें कि अब वे कानूनके अमलमें सख्तीसे काम लेने लगे हैं, परन्तु जहाँ तक मैं जानता हूँ वे रानीपरज कौमकी भलाअीमें दिलचस्पी रखनेवाले और अेक निष्पक्ष अफसर हैं। मुझे विश्वास है कि मेरी तरह भाअी रमणलाल भी यह मानते होंगे कि अिस घटनामें रानीपरजका हाथ हरगिज नहीं हो सकता। मगर अितना तो है ही कि बुहारी वगैराके साहूकारोंके साथ हमारा कुछ भी बेबनाव हो गया हो, तो अुसे ठीक कर लेनेकी हमें भरसक कोशिश करनी चाहिये।

हमारी दो कमजोरियाँ

अिस तरह हमने राज्यसे भिक्षा माँगी और साहूकारोंसे भी अनुनय-विनय की। परन्तु हमें समझ लेना चाहिये कि हमारा अपना कल्याण न राजाके हाथमें है और न साहूकारोंके। हमारी भलाअी हमारे अपने ही हाथमें है। अगर आप

जीवनकी आवश्यकताअें कमसे कम कर डालें और अुन्हें अपनी ज़मीनसे ही पैदा करके पूरी कर लें, तो आप दुनियामें सबसे ज्यादा सुखी हो सकते हैं। गांधीजीने आपको जो संदेश भेजा है, अुसमें वे कहते हैं कि शहरों पर गाँवोंका आधार नहीं है, बल्कि गाँवों पर ही शहरोंका आधार है। अिसी तरह साहूकारों पर आपका आधार नहीं है, परन्तु आपके अूपर ही साहूकारोंका आधार है। असलमें तो राज्यका आधार भी आप पर ही है। परन्तु राज्यकी बात अभी हमें नहीं करनी चाहिये।

परन्तु हमने तो सर्वस्व खो दिया है और अुसके साथ हम बुद्धि भी गँवा बैठे हैं। रोटी और कपड़ेके सिवाय हमारी और क्या ज़रूरत हो सकती है! और ये दो चीज़ें तो हम अपने ही घर पर पैदा कर सकते हैं। अिनके सिवा तीसरी हवा और चौथा पानी भी हमें चाहिये, जो मुफ़्त मिल जाते हैं। हम अनाज पैदा करें फिर भी यदि भूखों मरें, तो हम स्वयं ही मूर्ख माने जायँगे। जो कुछ भी पैदा नहीं करते, वे मिठाअियाँ खायें और हम पैदा करनेवाले ही भूखों मरें, तो हमारे जैसा मूर्ख कौन होगा!

आजकल हम पैदा की हुअी रोटी दो प्रकारसे खो रहे हैं: १. शराबका व्यसन करके। जो शराबमें फँसे हैं अुनका धन कमाना न कमाना बराबर ही है, क्योंकि वे जितना पैदा करेंगे अुतना शाम पड़ने पर शराब या ताड़ीकी दुकान पर दे आयेंगे। अिससे तो वे पैदा ही न करें तो क्या बुरा है! २. हम मिली हुअी रोटी कपड़ेके द्वारा गँवा रहे हैं। आप किसान हैं, आपको कपास पैदा करना आता है, तो आपको अुससे कपड़ा बनाना भी आना चाहिये। आज आपने जो प्रदर्शनी देखी अुसमें क्या है? वहाँ आपके ही लड़के बुन रहे थे और आपकी ही लड़कियाँ कात और पींज रही थीं। आप यह सीख लें, तो आपको कभी साहूकारके घर न जाना पड़े और जो ज़मीनें आपने क़र्ज़में गँवा दी हैं, वे आपका घर पूछती हुअी वापस आपके पास लौट आयँ। साहूकार तो अपंग है। मैंने अैसा अेक भी साहूकार नहीं देखा, जो अपने हाथसे हल पकड़कर खेती कर सकता हो। मगर अुसने आपके हाथ-पैर गिरवी रख छोड़े हैं। यह बात समझ गये हों, तो आप कातना सीख लें और अपने जवान लड़कोंको बुनना सिखा दें। वेड़छी आश्रममें आपके बहुतसे लड़के बुनना सीख गये हैं। आपके ही भाअी और दूसरे सेवक भी आजकल आपके बीचमें मौजूद हैं, और जब ज़रूरत होगी तब और बहुतसे सेवक आपकी मददके लिअे तैयार हैं। मगर आँखें होते हुअे भी जो पट्टी बाँधकर अंधा बने, अुसके जैसा और कौन मूर्ख होगा?

गायकवाड़ सरकारसे हमने यह प्रार्थना तो की है कि हमारे लिअे अैसा सरल कानून बना दीजिये, जिससे हम धोखा न खायें और परेशान न हों। मगर जहाँ मूर्ख रहते हों, वहाँ चाहे जैसे भी सादे कानूनसे फ़ायदा अुठानेवाले बदमाश तो होते ही हैं। जैसे जहाँ लालची रहते हों वहाँ धूर्तोंकी कमी नहीं होती, वैसे ही जहाँ मूर्ख रहते हों वहाँ बदमाशोंकी कमी नहीं रहती। आप भोले हैं यह मुझे अच्छा लगता है, मगर वह अिस अर्थमें कि आप किसीको ठगें नहीं। परन्तु आप किसीके द्वारा ठगे क्यों जायँ? हम अनाज वगैरा जो कुछ भी खेतमें पैदा करें, अुसे बेचनेकी भी हममें अकल होनी चाहिये। खरीदना हो तो खरीदनेकी भी अकल होनी चाहिये। मगर यह अकल शराब पीनेवालेमें हरगिज नहीं आ सकती। कभी-कभी शिकायत सुननेमें आती है कि शराब बन्द कर दी जाय, तो लोग घरमें बना कर पीयेंगे। यह तो दोहरा पाप होगा। अेक तो सरकारका अपराध और दूसरा अीश्वरके दिये हुअे पवित्र शरीरको भ्रष्ट करनेका पाप। अगर शरीर शराब भरनेके लिअे बनाया होता, तो अीश्वर अुसे पीपा ही न बना देता? अिसलिअे मेरी सलाह मानें तो जहाँ शराबकी बू आये वहाँसे भाग जायँ।

आप अनाज पैदा करते हैं, लेकिन साल भरकी अपनी ज़रूरतका अनाज जमा करके रखना नहीं जानते और अुसे अुधार लेनेके लिअे साहूकारके यहाँ दौड़ते हैं; यह तो मूर्खता कही जायगी। अिस तरह अनाज अुधार लेनेका रिवाज बन्द कर दीजिये। मज़दूरी कीजिये और अुसके दामोंमें अनाज खरीदिये।

कर्ज़ करते ही क्यों हैं?

आपमें से बहुतसे सहकारी-समितिकी बात करते हैं। मैं चाहता हूँ कि यह समिति सचमुच बहुत अच्छी हो। अगर आपका यह अनुभव हो कि अुससे आपको सच्चा लाभ होता है, तो भले ही अुसमें शरीक हो जायँ। मगर अिसका अर्थ यह नहीं कि कर्ज़ लेनेकी अनुकूलता हो गअी, तो अनावश्यक और बूतेसे अधिक कर्ज़ कर लिया। मेरा अनुभव तो अैसा है कि समितियाँ साहूकारोंसे ज्यादा कठोर साबित हुअी हैं। साहूकारोंको तो दबाकर शर्मा भी सकते हैं। मगर सरकार तो अत्यन्त कठोर साहूकार है। अिसलिअे लाभ हो तो सहकारी-समितिमें शरीक होना, मगर सम्भल कर काम करना। जिसे कर्ज़ लेनेकी सुविधा मिल जाती है अुसे कअी बुरी आदतें पड़ जाती हैं। मेरी सलाह तो यह है कि आपको कर्ज़ करना ही नहीं चाहिये। जो अपने घरमें अन्न-वस्त्र पैदा कर ले, अुसे कर्ज़ करनेके लिअे क्यों जाना पड़े? यह समझमें आ सकता है कि अैसी कड़ी सर्दीके वर्षमें ज़रूरत हो सकती है। मगर तब भी अितना ही कर्ज़ लेना चाहिये, जो आसानीसे दूसरी फसल पर चुकाया जा सके।

भिखमंगे न रहकर स्वावलम्बी बनिये

आप सब यहाँसे घर जायँ, तब अपने जंगलोंके कोने-कोनेमें मेरा यह सन्देश पहुँचा देना कि १२ वर्ष पहले शेखुपुरमें जो किसान आया था, वह आज आकर फिर यही सन्देश दे रहा है कि शराब और ताड़ी छोड़ो, अगर पीओगे, तो जो थोड़ा-बहुत जमा किया होगा वह भी चला जायगा। मेरा दूसरा सन्देश यह है कि मेहनत-मजदूरीमें चोरी न की जाय। सफाओी रखी जाय और वहम और अज्ञान दूर किया जाय। जो कुछ करें अुसमें अपने ही किसी समझदार सेवककी सलाह लें। हालमें ही मैं पंचमहालके जंगलोंमें रहनेवाले आपके ही जैसे भीलोंकी परिषद्‌में गया था। अुन्हें मैं निर्भयताका सन्देश दे आया हूँ। वही निर्भयताका सन्देश आज मैं आपको भी देता हूँ। यदि कपड़े आपको पहनने ही हों, तो अपने काते हुअे सूतकी खादी पहनिये। नहीं तो सिर्फ लंगोटी ही पहनिये। यह देखिये, आज मुझे जो ढेर-सा सूत मिला है, वह सारा आपके ही भाओी-बहनोंने काता है। फिर आप साहूकारोंके पास कपड़ा माँगने क्यों जाते हैं? अुनके अूपर क्यों निर्भर रहते हैं? आपको तो अुलटा अुन्हें कपड़ा बनाकर देना चाहिये। आप अनाज पैदा करते हैं, तो फिर खानेके लिअे साहूकारसे अुधार लेने क्यों जाते हैं? जिसे रोज दूसरेके यहाँसे खानेको लाना पड़े वह किसान ही नहीं है। वह तो भिखारी है। आप किसान हैं और सब कुछ पैदा करते हैं, फिर भी आपकी स्थिति तो न पैदा करनेवाले जैसी ही है।

ये मरोली आश्रमकी लड़कियाँ, जो अभी गा रही थीं, आपकी ही जातिकी लड़कियाँ हैं। अुनके शरीर पर बेड़ियाँ नहीं हैं। बेड़ी तो सरकार चोरोंको पहनाती है। आप कोओी चोर नहीं हैं। मगर आप तो झूठे गहने पहनते हैं। ओीश्वरने अितनी सुन्दर नाक दी है, तो फिर अुसमें छेद क्यों करते हैं? जब अुसने अैसा शरीर रचा, तो क्या अुसे नाकमें छेद करना नहीं आता था?

आज आपको हाथ जोड़कर अर्ज़ करनी पड़ती है। मगर मैं जो कुछ कहता हूँ अुसपर अमल करेंगे, तो फिर आपको जैसा क़ानून चाहिये वैसा अपने आप मिल जायगा और सब आपके पास दौड़ते हुअे आयेंगे। हम गरीब भले ही हों, पर हम दयापात्र क्यों बनें? दूसरे पर आश्रित रहनेमें कंगालियत है। हमें तो हर बातमें स्वावलम्बी बनना चाहिये।

हरिजनबन्धु, ३-३-१९३५

६६

बोरसद प्लेग-निवारण

[सन १९३५ में बोरसदमें कांग्रेसकी तरफसे प्लेग-निवारणका काम शुरू किया गया था, तब सरकारने जो बयान प्रकाशित किया था, अुसका जवाब।]

बोरसद तहसीलमें प्लेग फूट निकला और अुसमें 'सरकार और स्थानीय अधिकारियोंने जो भाग लिया अुसके बारेमें कुछ गलतफहमियाँ' दूर करनेके लिअे बम्बअी सरकारके प्रकाशन-विभागसे ता० २७ अप्रैलको अेक बयान प्रकाशित किया गया है। गलतफहमी किस तरह हुअी, यह कहनेकी परवाह किये बिना ही वह मान लेती है कि गलतफहमी हुअी है और अुसे दूर करनेके लिअे 'कुछ हकीकतें' पेश करनेका दावा करती है और अुसमें अप्रत्यक्ष आलोचना करके प्लेगको मिटानेके हमारे नम्र प्रयत्नोंकी निन्दा करती है। अभी तक हमने सरकार या स्थानीय अधिकारियोंकी प्रवृत्ति या निष्क्रियताका कोअी ज़िक्र नहीं किया है, परन्तु अर्ध सत्य और निरर्थक आलोचनाओंसे भरे हुअे अुस सार्वजनिक वक्तव्यको देखकर सचाअी प्रकट करना हमारा फर्ज़ हो जाता है।

प्लेग सन १९३२ में शुरू हुआ और, जैसा कि बयानमें कहा गया है, तभीसे हर साल अुग्र होता गया है और अुसका विस्तार भी बढ़ता गया है। परन्तु चार वर्षमें पहली ही बार सरकारको यह बयान प्रकाशित करना अुचित जान पड़ा है।

अिस साल हम अिस महत्त्वके सार्वजनिक कार्यको हाथमें ले सके और अुसे आवश्यक पूरी सावधानीके साथ पूरा किया, अिस कारण सरकारको यह गलतफहमी पैदा हुअी मालूम होती है। अिस तरहके काममें लोगोंके स्वेच्छापूर्वक सहयोगकी अपेक्षा रहती है, अिसलिअे हमें रोज लोगोंको सम्बोधित करके पत्रिकायें प्रकाशित करनी पड़ीं और हर जगह सभाअें करनी पड़ीं। अिससे लोगोंको तन्दुरुस्ती और सफाअीके बारेमें शिक्षा मिली और हम जहाँ-जहाँ गये वहाँ-वहाँ अुन्होंने हमारी मदद की।

झूठा बचाव

स्पष्ट है कि सरकार अिस चीज़की कदर न कर सकी। अुसे डर है कि अुस पर लापरवाहीका आरोप लगेगा, अिसलिअे वह अपना बचाव करने चली है, जो कृत्रिम और अनावश्यक है। जो अिस ढंगसे अपना बचाव करता है, वह अपने आपको अपराधी साबित करता है। सार्वजनिक हितकी खातिर अिस

झूठे बचावकी कलअी खोलना और दुःखद परिस्थितिकी तरफ सभी सम्बन्धित लोगोंका ध्यान खींचना हमारा फर्ज हो जाता है। हम यहाँ जो कुछ कह रहे हैं, अुसका आधार सरकारी लेख हैं और अुनसे साफ साबित होता है कि सरकार अितने वर्ष तक अिस गम्भीर प्रश्नकी अुपेक्षा ही करती रही; और जब लोग खुद वही काम करने लगे, जिसे करना सरकारका फर्ज था, तब वह कुछ करनेको मजबूर हुअी है।

बोलते आँकड़े

ये बोलते आँकड़े देखिये। क्या सरकारको पता है कि तहसीलमें प्लेगके होनेवाले शिकारोंके बढ़ते हुअे जो आँकड़े बयानमें दिये गये हैं, अुनसे सरकार अपने अूपर लगाये गये आरोपको अपने ही बयानसे जाहिर करती है? प्लेगसे होनेवाली मृत्यु संख्या १९३२ में ५८ थी। यह आँकड़ा बढ़कर अिस साल ५८९ तक पहुँच गया है। प्लेगवाले गाँवोंकी संख्या वक्तव्यमें नहीं दी गअी है। लोगोंकी जानकारीके लिअे अुसे हम दे देते हैं। १९३२ में प्लेग अेक ही गाँवमें हुआ था। १९३३ में वह १० गाँवोंमें फैला; १९३४ में १४ गाँवोंमें और अिस साल करीब २७ गाँव प्लेगग्रस्त हैं। अगर प्लेगको रोकनेके लिअे अुचित कदम अुठाये गये होते, तो क्या अैसा हो सकता था?

गम्भीर प्रश्नके साथ खिलवाड़

सरकारने कितनी लापरवाहीसे काम किया है, यह बतानेके लिअे अेक ही गाँवका अुदाहरण काफी है। जब १९३२ में पहले पहल पोरड़ा गाँवमें प्लेग फैला, तब अेक महीने बाद यह खबर अखबारोंमें पहुँची। अुस समय तक अुसकी तरफ कोअी ध्यान नहीं दिया गया। बादमें तहसीलदार वहाँ गये और अिस आशयके बयान लिये कि यहाँ प्लेग नहीं है। मगर साथ ही नोट किया कि चूहे बहे हैं और मक्खियाँ हो गअी हैं। मूल प्रश्नको टालनेवाले अिस जवाबसे कलेक्टरको संतोष नहीं हुआ और अुसने अधिक निश्चित समाचार भेजनेके लिअे दबाव डाला। तब तहसीलदारने तार दिया कि यहाँ प्लेग होनेकी सम्भावना है। लगभग अेक महीनेमें अुसने फिर तार दिया कि "प्लेगके छः केस हुअे और अुनमें से अेक मरा"; जब कि मेडिकल अफसरने रिपोर्ट की कि तहसीलदारकी रिपोर्टसे पहले दो आदमी मर चुके थे। यह अप्रैल महीनेकी बात है। अगस्त महीनेमें मेडिकल अफसरने प्लेग और हैजा फैलनेकी रिपोर्ट की और अपने पास बूतेसे अधिक काम होनेके कारण अिस कामके लिअे विशेष मेडिकल अफसर नियुक्त करनेके लिअे दबाव डाला। सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभागके असिस्टेंट डाअिरेक्टर अगस्तके अन्तमें पहले पहल अिस गाँवमें पहुँचे और अुन्होंने यह खोज निकाला

कि गाँवमें हैजा नहीं था; सारी मौतें प्लेगसे हुअी थीं और अब तक कुल ११ मृत्यु हुअी हैं। अुन्होंने यह भी नोट किया कि अब तक किसीको प्लेगका टीका नहीं लगाया गया और जन्तु-नाशक दवा छिड़ककर प्लेगवाले मकानोंकी सफाअी भी नहीं की गअी। सितम्बरमें विशेष अधिकारी मुकर्रर किया गया। अुसने छूत मिटानेकी दवा, चूहे पकड़नेके पिंजरे और प्लेगके टीके वगैरा साधनोंकी बार बार माँग की, परन्तु अुसकी सुनवाअी नहीं हुअी, अिसलिअे वह कुछ नहीं कर सका। अुसने अैसी रिपोर्ट की कि अिमल्शन बनानेके लिअे घासलेट नहीं मिलनेके कारण प्लेगवाले घरों वगैराको छूत रहित बनानेका काम नहीं हो सका। कुछ दिन बाद पिंजरे आये, मगर वे काम देने लायक नहीं थे और ज़रूरी सामान न होनेके कारण टीके नहीं लगाये जा सके। जो टीके भेजे गये थे, वे बहुत पुराने होनेके कारण अिस्तेमाल करने लायक नहीं थे। जब नये टीके आये तब पिचकारी, सुअी, वगैरा टीका लगानेके साधन काफी नहीं थे, अिसलिअे १५०० आदमियोंकी आबादीमें से सिर्फ २९१ मनुष्योंको टीके लगाये जा सके। यह अुस विशेष अधिकारीकी रोजाना रिपोर्टकी हकीकत है। अिस परसे रोज रोज बढ़ते जानेवाले प्लेगका और अुसके कारण हुअी बरबादीका कारण मालूम हो जाता है।

देर हो गअी

अिस विशेष अधिकारीने थोड़े समय बाद वहाँ काम करना बन्द कर दिया और वीरसदमें काम करनेवाले साधारण अधिकारीको, जिसे गरदन तोड़ बुखारके अिलाजसे लेकर राममें रखी गअी विशेष पुलिसकी देखभाल तकके अनेक काम करने पड़ते थे, यह प्लेगका काम अतिरिक्त कार्यके तौर पर सौंप दिया गया। अेकसे अधिक विशेष मेडिकल अफसर रखना कभी ठीक नहीं समझा गया और अुसकी नियुक्ति भी मौसमके बिलकुल पिछले भागमें की जाती है। अिस प्रकार १९३४ में अेक विशेष अफसर ७ मार्चको मुकर्रर किया गया, यद्यपि प्लेग १९३३ के दिसम्बरमें शुरू हो गया था। १९३५ में विशेष अफसर ३ अप्रैलको नियुक्त किया गया, हालाँकि प्लेग शुरू हो जानेकी रिपोर्ट १९३४ के २१ अक्तूबरको की गअी थी।

टीका

अेक अेक घरको साफ करके व दवा छिड़ककर छूत रहित करने जैसी रोगको रोकनेके लिअे ज़रूरी कार्रवाअी करना सरकारको कभी सूझा नहीं; मगर जिस टीके पर अुसे विश्वास है, अुसे लगानेके लिअे भी जितना काम पड़ोसी बड़ोदा राज्यके गाँवोंमें हुआ, अुतना भी पूरी तरह यहाँ नहीं हुआ। सरकारका दावा है कि देहाती क्षेत्रमें ३ हज़ार और शहरी क्षेत्रमें लगभग ५ हज़ार टीके लगाये गये हैं।

ब्रिटिश देहातोंमें और पासके बड़ोदा राज्यके गाँवोंमें लगाये गये टीकोंका तुलनात्मक नक्शा नीचे दिया गया है, जिसका अध्ययन करने लायक है :

टीकेके तुलनात्मक आँकड़े

ब्रिटिश	आबादी	टीके लगाये	बड़ौदाको	आबादी	टीके लगाये
बोरसद	१३११९१	४८००	पेटलाद	१९२३६	१६०२६
आँकलाव	५०००	१९७	भादरण	५३२८	२७७३
वाछियल	५००	११	भाद्रणिया	७३०	५०६
वेरा	१३६२	७८	बोरिया	१४२५	८८५
रंगीपुरा	६९१	१२४	वटाव	८७१	५००

अिस प्रकार ब्रिटिश राज्यके गाँवोंमें जब ४ फीसदी और शहरोंमें आबादीके ५० फी सदी लोगोंको टीके लगाये गये थे, तब बड़ोदा रियासतमें देहातों और शहरोंमें आबादीके ६० फीसदी लोगोंको टीके लगाये गये थे।

प्लेग रोकनेके अुपायोंमें कमी

अब १९३२ में प्लेग रोकनेके दूसरे जो अुपाय किये गये अुन्हें देखिये। १९३५ में प्लेग रोकनेके जो अुपाय किये गये, अुनमें १९३२ की अपेक्षा कोअी सुधार नहीं हुआ, शायद बिगाड़ ही हुआ होगा। यह याद रखना चाहिये कि १९३२ में प्लेग शुरू होनेको रिपोर्टके बाद फौरन हरअेक गाँवमें अेक अेक विशेष अफसर मुकर्रर किया गया था, जब कि मौजूदा सालमें २७ गाँवोंमें प्लेग शुरू होनेके बाद पाँच महीने तक कोअी अधिकारी नियुक्त नहीं किया गया। अिस सारे समयमें सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभागके असिस्टेंट मेडिकल डाअिरेक्टरने संकट ग्रस्त क्षेत्रमें अेक रात भी नहीं बिताअी। सरकारी बयान बताता है कि भड़ौचके स्वास्थ्य-विभागके और चेचकका टीका लगानेवाले अिंस्पेक्टरको प्लेग निवारणके अुपाय करनेके लिअे अिसराया गाँव जानेकी हिदायत दी गअी थी और स्वास्थ्य-विभागने मकानों और गाँवोंको छूत रहित करने और खाली करनेके अुत्तम तरीकोंके बारेमें सूचनाअें प्रकाशित की थीं। हम बेधड़क कहते हैं कि वह अिंस्पेक्टर अिसरायामें थोड़े दिन रहा और अुसने लोकल बोर्डके प्लेग डिप्टी अिंस्पेक्टरको (यह ओहदा बहुत बड़ा मालूम होता है, मगर वह २० रु० तनख्वाह पाता था।) विशेषज्ञकी हैसियतसे अपनी सलाह देनेके सिवाय और कुछ नहीं किया। लोकल बोर्डके अिस अिंस्पेक्टरने हमसे कहा कि अुसने सारे वर्षमें अेक भी चूहा नहीं मारा था और अुसकी रिपोर्टमें जिन चूहोंको मारनेके आँकड़े दिये गये थे, वे तो प्लेगवाले क्षेत्रमेंसे मरे हुअे चूहोंको हटानेके सम्बन्धमें थे। बोरसदका मेडिकल अफसर, जिसके लिअे बयानमें कहा

गया है कि अुसे 'टीके लगानेका काम सौंपा गया है', वही व्यक्ति है, जिसका हमने अेक पिछले पैरेमें ज़िक्र किया है और जिसके जिम्मे बहुत ज्यादा काम है। सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभागकी तरफसे हरसाल अेक ही प्रकारकी सूचनाअें प्रकाशित की जाती हैं और अुनके भेजनेसे फाल्तू डाक खर्चके सिवाय और कोअी नतीजा नहीं निकलता।

जिस ढंगसे काम हुआ, अुसकी अेक-दो मिसालें लीजिये। २५० की आबादीवाले वाछियल नामके छोटे गाँवमें जनवरीके पहले हफ्तेमें प्लेग शुरू हुआ। अेक महीने तक अुसकी छूत फैलने दी गअी और कोअी रिपोर्ट होनेसे पहले वहाँ प्लेगसे १० आदमी मर गये। अिस बीच गाँवके लोगोंने प्लेगका असर लेकर आसपासके गाँवोंमें भाग-दौड़ शुरू कर दी। बोरसदका मेडिकल अफ़सर छः फरवरीको अिस गावमें पहुँचा। अुसने दो घर छूत रहित किये और ११ आदमियोंको टीके लगाये। अिसके बाद वहाँ कोअी नहीं गया और २६ मौतें और हो गअीं।

बोरसदके मामलेमें यह हुआ कि प्लेग ग्रस्त पेटलादसे २७ आदमी वहाँ आये। तहसीलदारको, जो अपने ओहदेके कारण म्युनिसिपैलिटीके सदस्य हैं, ७ अक्तूबर १९३४ को अिस बारेमें खबर दी गअी। मगर अुन्हें हटाने, अलग रखने या टीके लगानेका प्रयत्न नहीं किया गया, और अुन्होंने रोग फैलाया। नतीजा यह हुआ कि ३२ आदमी मर गये।

समय बीतने पर कारंवाअी

बयानमें कहा गया है कि लोगोंके अपने अपने घर लौटनेके पहले सारे शहरको धुआँ करके और दवा छिड़क कर छूत रहित बनानेके लिअे सरकारने दो हजार रुपये मंजूर किये हैं। मगर डॉ० भास्कर पटेलकी हिदायतोंके अनुसार शहरको साफ करने और धुआँ करके व दवा छिड़क कर अुसे छूत रहित बनानेका काम हमारी स्वयंसेवक मंडलीने कर दिया है। ज्यादतर लोग अपने अपने घरोंको लौट आये हैं। अब सरकारकी अिच्छा हो, तो अुस रकमको बरबाद कर दे। जो बहुतसे लोग लौट आये हैं, अुन्हें दुबारा अिधरसे अुधर घुमाया जायगा, यह मानें तो जिस गतिसे काम होता है अुसे देखते हुअे सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभागको यह काम पूरा करनेमें ४ महीने लगेंगे। यह काम मज़दूरोंसे कराया जाता है और अुन्होंने १५ दिनमें ५०० से ज्यादा घर साफ नहीं किये।

भ्रामक आँकड़े

बयानमें दिये गये कुछ आँकड़ोंका हमने पहले विश्लेषण किया है। आँकड़े कितने भ्रामक हो सकते हैं, यह दिखानेके लिअे अेक और मिसाल लीजिये।

बयानमें कहा गया है कि "मार्चके आखिरमें बोर्डने प्लेग-निवारणके अपायोंमें २५०० रु० खर्च किये थे।" निश्चित रकम २४८६ रु० है। यह रकम भी अिस प्लेग ग्रस्त प्रदेशमें खर्च नहीं की गअी, बल्कि सारे खेड़ा जिलेमें खर्च की गअी है। और अुसमें हैजा-निवारण पर खर्च किये गये ७८७ रु० भी शामिल हैं। यह लापरवाही भरी अनिश्चितता बताती है कि आम तौर पर कितनी लापरवाही और अनाड़ीपनसे काम होता है।

शास्त्रीय पद्धति

बयानमें जाहिरा तौर पर अिस बात पर जोर दिया गया है कि सरकारकी अपनी पद्धति शास्त्रीय है, और अुसमें यह अिशारा किया गया है कि हमारी पद्धति अशास्त्रीय है। और साथ ही चेतावनी दी गअी है कि हम स्वास्थ्य-विभागके अधिकारियोंसे सहयोग करें, तो ही हमारी मदद कुछ लाभदायक हो सकती है। अिस सहयोग करनेके मामलेमें हमें जरा विस्तारसे कहना पड़ेगा। शास्त्रीय पद्धतिके बारेमें अेक-दो हकीकतें बता देते हैं। वर्षके आरम्भमें म्युनिसिपेलिटीके कम वेतनवाले नौकरोंके जिम्मे अिमल्शन बनानेका काम आ पड़ा था। अुन्होंने वह काम अितने अनाड़ीपनसे किया कि अेक तेरह सालकी लड़की लगभग जिन्दा जल गअी और अस्पतालमें ले जानेके बाद तुरन्त मर गअी। अेक लड़का और दो में से अेक अिन्स्पेक्टर बुरी तरह जल गया और दूसरे अिन्स्पेक्टरके गलेमें गरम घासलेटका धुआँ अितना चला गया कि अुसे बेहोश हालतमें अस्पताल ले जाना पड़ा। नतीजा यह हुआ कि म्युनिसिपेलिटीने यह काम बन्द कर दिया। बयान प्रकाशित होनेके थोड़े दिन पहले स्वास्थ्य-विभागके असिस्टेंट डाअिरेक्टर द्वारा अिस कामके लिअे विशेष रूपसे नियुक्त मेडिकल अफसर और सेनिटरी अिन्स्पेक्टरकी देखरेखमें वह काम फिर शुरू किया गया। अिन अधिकारियोंने भी अिसी तरह टीनके बरतनके बारेमें गफलत की और आगका भड़का होते होते बचा।

धुआँ करनेके बारेमें सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभागके असिस्टेंट डाअिरेक्टरने, जो धुआँ करनेके अपने खास तरीके (पॉट मेथड) के लिअे बहुत अुत्साह दिखा रहे थे, अन्तमें खुद स्वीकार किया कि अिस पद्धतिमें काम आने वाले बरतनकी कीमत १० रु० अधिक होनेके कारण गाँवोंके लिअे यह ज़रूरतसे ज्यादा खर्चेकी पद्धति है और अितनी मुश्किल है कि अिसका कारगर अुपयोग नहीं हो सकता। अिसलिअे अुन्होंने अन्तमें हमारी सादी पद्धति अपनानेकी सलाह दी।

सहयोगका तिरस्कार

अब सहयोग सम्बन्धी चेतावनीको लें। यह सारा पैरा निर्दयतापूर्वक लिखा गया है। हमारे जिन स्वयंसेवकोंने अपनी जान जोखिममें डाल कर गाँव-गाँव

और घर-घर जाकर मोहल्ले ही नहीं, परन्तु घरोंके अँधेरेसे अँधेरे कोने तक साफ किये और धुवाँ करके व दवा छिड़क कर छूत रहित किये, अुनके लिअे सरकारको आदरके दो शब्द कहने चाहिये थे। मगर हमने यह काम अिसलिअे हाथमें नहीं लिया था कि सरकार या लोग हमारी तारीफ करें, बल्कि केवल कर्तव्य बुद्धिसे और अिस आशासे कि नम्रतापूर्वक दी गअी मदद स्वीकार की जायगी, हमने यह काम हाथमें लिया था। अब हम थोड़ीसी हकीकतें देकर बता देंगे कि हमारे सहयोगके प्रस्तावको सरकारने किस तरह पग-पग पर ठुकराया था।

मार्चके पहले सप्ताहमें जब हमने देखा कि तहसीलमें प्लेग जोरसे फैलने लगा है, तब हमने बम्बअीके कुशल और अनुभवी डॉ० भास्कर पटेल, अेम० डी०को अिस अिलाकेकी मौजूदा स्थितिके बारेमें खुद जाँच करके रिपोर्ट देनेके लिअे भेजा। वे १३ मार्चको बोरसद आये, प्लेगवाले लगभग सभी गाँवोंमें गये और देखा कि लोग निस्सहाय और भयभीत दशामें हैं। अुनकी रिपोर्ट मिलनेके बाद अपने कार्यकर्ताओंसे सलाह करके हमने प्लेगके अुपद्रवके खिलाफ अुग्र जिहाद करनेके लिअे बोरसदमें कष्ट-निवारण केन्द्र खोलने और बोरसद छावनीके मकानमें प्लेगका अस्पताल खोलनेका निश्चय किया। डॉ० भास्कर पटेल हाफकिन अिन्स्टिट्यूटमें गये, कर्नल सोखे, आअी० अेम० अेस० की सलाह ली और रोगको रोकनेके बारेमें कितने ही अिलाजोंकी चर्चा की, और २३ मार्चको बोरसदमें आकर पड़ाव डाल दिया। अुस दिनसे हमने ५० भाअी-बहनोंके स्वयंसेवक दलके साथ काम शुरू किया।

कलेक्टरकी अुड़ती मुलाकात

जब हम यहाँ आये तो मालूम हुआ कि अिस बार २१ अक्तूबर १९३४ को प्लेग शुरू हुआ, तबसे आज तक अिस अभागे प्रदेशको देखनेके लिअे कोअी जिम्मेदार अधिकारी नहीं आया। कलेक्टर और सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभागके असिस्टेंट डाअिरेक्टरने ३१ मार्चको पहले पहल बोरसदकी अुड़ती मुलाकात ली और प्लेगग्रस्त क्षेत्रके किसी भी भागमें गये बिना अुसी दिन वे वापस चले गये। असिस्टेंट डाअिरेक्टर २ अप्रैलको फिर बोरसद आये। तब यह कहा गया था कि वे आँकलाव गाँव जायँगे, जहाँ प्लेगने अुग्र रूप धारण कर लिया था। अुनका कार्यक्रम आँकलावके लोगोंको बता दिया था और हमने अुस दिन अुनके साथ सलाह-मशविरा करके वहाँ काम शुरू करनेकी सारी तैयारी कर ली थी। मगर हमसे कहा गया कि अुन्हें अपना कार्यक्रम रद्द कर देना पड़ा, क्योंकि आँकलाव जानेका रास्ता बहुत धूलवाला था, अिसलिअे वहाँ जानेसे अुनकी मोटर बिगड़ जाती। मगर अुस दिन वे हमारे अस्पतालमें आये। हमारी छावनी देखी और हमारे साथ तथा डॉ० भास्कर पटेलके साथ प्लेगसे लड़नेकी पद्धतिके बारेमें

बड़ी चर्चा की। हम जो कुछ कर रहे थे और करनेका अिरादा रखते थे, वह सब अुन्हें समझाया और अुन्हें यकीन दिलाया कि आप कोअी काम शुरू करेंगे, तो हमारा पूरा सहयोग रहेगा। अुन्होंने कहा कि मेरे पास ४००० रुपये खर्च करनेको हों, तो मैं थोड़े ही समयमें अिस तहसीलसे प्लेगको निर्मूल कर दूँ।

सरकारी असहयोग

५ अप्रैलको प्लेगके अुपद्रवको काबूमें लेनेके अुपायोंकी चर्चा करके निश्चय करनेके लिअे तहसीलदारने अपने दफ्तरमें सभा की। अुसमें जिला लोकल बोर्ड और तहसील बोर्डके अध्यक्षोंको, बोरसद म्युनिसिपेलिटीके अध्यक्ष और मंत्रीको और वीरसद तथा बोरसदके दो मेडिकल अफसरोंको निमंत्रण दिया गया था। जिला लोकल बोर्डके अध्यक्षकी प्रार्थना पर स्वास्थ्य-विभागके असिस्टेंट डाअि-रेक्टरको विशेष बुलावा दिया था, परन्तु वे सभामें नहीं गये। जिला लोकल बोर्डके अध्यक्षने तहसील बोर्डके अध्यक्षको किरायेसे मोटर भेजनेकी मंजूरी दी, तब वे मोटर लेकर असिस्टेंट डाअिरेक्टर, तहसील लोकल बोर्डके अध्यक्ष और तहसीलदारके साथ पहले पहल कंथारिया और आँकलाव गये। अिन दोनों गाँवोंमें अुस दिन हमारे स्वयंसेवक डॉ० भास्कर पटेलकी देखरेखमें मकानोंको साफ करके छूत रहित बनानेकी तेज कारवाअी कर रहे थे। डॉ० भास्कर पटेल अिन गाँवोंके प्लेगके मरीजोंको देखकर अिलाज भी कर रहे थे। हमारी ओरसे सम्पूर्ण और राजी-खुशीसे सहयोगका आश्वासन देने पर भी असिस्टेंट डाअिरेक्टर और अुनके साथियोंने हमसे मिलना टाल दिया, यह देखकर हमें आश्चर्य हुआ। १२ अप्रैलको जब वे पंडाली गये, तब वहाँ प्लेगके दो नये केस हुअे थे और मरीजोंके सगे-सम्बन्धी अुनकी जाँच और अुपचार करानेकी चिंतामें थे। डॉ० भास्कर पटेल असिस्टेंट डाअिरेक्टरसे मिले और ये दो केस देखनेकी प्रार्थना की, मगर अुन्होंने अुसकी परवाह नहीं की।

हमने जिस हकीक़तकी तरफ अधिकारियोंका ध्यान खींचनेकी कोशिश की, अुस ओर ध्यान देनेसे जानबूझकर अिनकार करने और अत्यन्त लापरवाही दिखानेका अेक अुदाहरण दिये बगैर हम नहीं रह सकते। बोचासणमें २९ मार्चसे पहले प्लेगके केस हुअे थे। हमारे डॉक्टरने दो केसोंकी देखभाल की थी, अिस गंभीर परिस्थितिकी तरफ गाँवके पटेलका ध्यान खींचा था और बीमारीको फैलनेसे रोकनेके अुपाय शुरू कर दिये थे। ६ अप्रैलको हमारी दैनिक पत्रिकामें अिस विषयका अुल्लेख किया गया था, मगर अिन सब बातोंकी अवहेलना करके और हमारे कार्यकर्ताओंके अुनकी आँखोंके सामने काम करने पर भी तहसीलदारने पटेल और कुछ लोगोंसे १२ अप्रैलको अैसा बयान लिया कि गाँवमें प्लेग है ही नहीं और कुछ करनेकी ज़रूरत भी नहीं है। मगर लोगोंकी

शिकायतें आनेसे दूसरे दिन जब मेडिकल अफ़सरने अुसे रिपोर्ट की कि गाँवमें प्लेगके बहुतसे केस हुअे हैं, तब कहीं अुसने ज़िला लोकल बोर्डके अध्यक्षको तार दिया।

सरकारको हमारा सहयोग लेनेकी जरा भी अिच्छा नहीं थी, यह बतानेके लिअे ये हकीकतें काफ़ी हैं। हमने हर क़दम पर देखा है कि स्वास्थ्य-विभागके अधिकारी हमारे साथ सहयोग करनेको तैयार नहीं थे; अितना ही नहीं, बल्कि अुनके रवैयेके कारण अब तक राज़ीखुशीसे सहयोग देनेवाली म्युनिसिपेलिटीने भी अपना सहयोग वापस ले लिया। अिसके अनेक अुदाहरण दिये जा सकते हैं, मगर अुन्हें स्थानाभावके कारण नहीं दिया जा रहा है।

बड़ी देरसे सूचना

स्वास्थ्य-विभागके असिस्टेन्ट डाअिरेक्टरकी तैयार की हुअी ८ अप्रैल १९३५ के नोटकी नकल हमारे पास आअी है। अुसमें बोरसद तहसीलमें प्लेगके शुरू होनेसे आज तकका अितिहास दिया गया है। अुसके साथ ही यह भी बताया गया है कि प्लेगके कारण क्या थे और स्थानीय संस्थाओं और सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभागने प्लेग रोकनेके और सावधानीके क्या क्या अुपाय किये, और भविष्यमें प्लेगके अुपद्रवको मिटानेके लिअे किये जानेवाले अुपायोंकी सिफ़ारिशें भी की गअी है। अुन्होंने रोगको रोकनेके लिअे जिन कार्रवाअियोंके किये जानेका दावा किया है, अुन्हें तो हमने तफसीलके साथ देख लिया है। मगर सारी आबादीके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले अैसे गंभीर मामलेमें अत्यंत लापरवाहीके लिअे स्वास्थ्य-विभागको गुनहगार ठहरानेके लिअे अुस नोटमें की गअी ये सिफ़ारिशें ही काफ़ी हैं। नोटमें असिस्टेन्ट मेडिकल डाअिरेक्टर सूचित करते हैं कि अगले अगस्त, सितम्बर और अक्तूबर महीनेमें सरकारसे दो मेडिकल अफ़सर माँगने चाहियें, क्योंकि वे मानते हैं कि अिस क्षेत्रमें नअी रेलवे लाअिन हो जानेसे मलेरिया बढ़ा है और अुससे लोगोंकी जीवनशक्ति घटी है और प्लेगका मुक़ाबला करनेकी शक्ति कम हुअी है। अिसलिअे वे चाहते हैं कि तहसीलके वायव्यकोणके गाँवोंके लोगोंको अगले नवम्बरसे पहले खूब कुनैन लेने लग जाना चाहिये। वे यह भी कहते हैं कि रोगको रोकनेके लिअे नवम्बर महीनेमें चूहोंका सामूहिक नाश करनेका काम हाथमें लेना चाहिये। आगे चलकर वे कहते हैं कि अिसके लिअे नीचे लिखे अनुसार आदमियों और साधनोंकी ज़रूरत है:

१. तीन मेडिकल अफ़सर। १ नवम्बरसे ३० अप्रैल तक प्लेग सम्बन्धी काम करनेके लिअे। (९० रुपये मासिक वेतन पर)

२. जेलमें बनी हुअी अच्छे किस्मकी ५०० चूहेदानियाँ (रु० २-४-० की दरसे)

३. प्रति अिन्स्पेक्टर अेक दवा छिड़कनेका पंप। (अेक पंपके रु० ३०—०—०)

४. हर गाँवके लिअे दो पौंड बेरियम कारबोनेट। कुल लगभग २०० पौंड। (रु० १—४—० प्रति पौंड)

५. चार अिन्स्पेक्टर (४० रु० मासिक वेतन पर)। हरअेकको २५ से ज्यादा गाँव न दिये जायँ।

६. हर अिन्स्पेक्टरके लिअे २ पॉट (४ रु० प्रति पॉट) और प्लेगके असरवाले हर गाँवके लिअे २०० पौंड गंधक (रु० ३—०—० प्रति पौंड)

७. २००० रुपये प्लेगके टीकोंके लिअे।

कुल लगभग ७००० रुपये होंगे।

वे यह भी सिफ़ारिश करते हैं कि अेक महत्त्वका काम यह करना चाहिये कि तहसीलदार या और किसी योग्य अधिकारीको अैसा अधिकार देना चाहिये कि प्लेगके हमलेकी या चूहे मरनेकी अुस अधिकारीको खबर देना लोगोंके लिअे अनिवार्य हो और अुसे प्लेगवाले घरोंको छूत रहित कराने, प्लेगके खतरेवाले किसी गाँव या शहरकी स्वास्थ्य-रक्षाके अुपाय करने और छूतवाले स्थानोंसे आनेवाले लोगोंके कपड़े, अनाज वगैराको छूत रहित करनेका अधिकार देना चाहिये। वे यह भी कहते हैं कि बोरसद जैसे गाँवमें गाँवके बाहर टीनका अेक अैसा मंडप होना चाहिये, जिसमें हवा न घुस सके और जिसमें योग्य तरीकेसे कपड़े, अनाज वगैरा छूत रहित किये जा सकें।

हम पूछते हैं कि अिस तहसीलमें प्लेगको रोकनेके लिअे असिस्टेन्ट डाअिरेक्टरको आवश्यक मालूम होनेवाली अिस विस्तृत पद्धतिकी स्वास्थ्य-विभागके निष्णात और अधिकारियोंने आज तक सिफ़ारिश क्यों नहीं की? ज़िला लोकल बोर्डके दफ्तरकी टिप्पणीसे मालूम होता है कि प्लेगके हर हमलेके बाद सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभागको यह डर रहता था कि अगली ऋतुमें प्लेग ज्यादा ज़ोरसे फैलेगा। फिर भी ये अुपाय क्यों नहीं किये गये या सुझाये गये? १ नवम्बरसे पहले अनेक विशेष तालीम पाये हुअे मेडिकल अफसर और अिन्स्पेक्टर नियुक्त करना ज़रूरी था, तो स्वास्थ्य-विभागको क्यों नहीं सूझा कि यह सारी जिम्मेदारी अेक अकेले मेडिकल अफ़सरके सिर — जिसके पास तालीम पाये हुअे आदमी नहीं थे और जिसे अपने साधारण कामके अलावा नज़दीककी तहसीलमें ज़रूरी साधनोंके बिना अतिरिक्त काम करना था — डालना पापकृत्य था?

सहयोगसे हम नहीं भड़कते

हमने अपना कहना पूरा कर दिया। यह बयान प्रकाशित करनेमें हमें खुशी नहीं हुआी। परन्तु हमारे खयालसे सरकारने हमें अिसके लिअे मजबूर कर दिया। पहले अुसने प्लेगके सवालके साथ खिलवाड़ किया और जब देखा कि लोग अुससे आगे बढ़ गये हैं, तब झटसे बयान प्रकाशित कर दिया। अिस बयानमें जो सच्ची बातें हैं, वे सरकारको दोषी ठहराती हैं और अुसमें जहाँ स्पष्टीकरण करनेका दावा किया गया है वहाँ वह भ्रामक बन गया है।

हमारा काम अभी चल रहा है, और हम थोड़े ही समयमें अपने कामका विवरण प्रकाशित करनेकी आशा रखते हैं। जब तक हम प्लेग ग्रस्त क्षेत्रका हरअेक गाँव और घर झाड़-बुहार कर छूत रहित न कर देंगे, तब तक हम चैनसे नहीं बैठेंगे। हम नम्रतापूर्वक कह देते हैं कि हममेंसे अेक आदमी बरसों प्रान्तके दूसरे नम्बरके शहरके स्वास्थ्य सम्बंधी कामके अफसर रह चुके हैं, खास तौर पर अुस समय जब वहाँ प्लेगका बहुत ज़ोर था। दूसरे व्यक्ति बरसों तक खेड़ा जिला लोकल बोर्डके अध्यक्ष रहे हैं और अभी फिर अुस पदके लिअे चुने गये हैं। अिस प्रकार हम सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्बंधी कामके अनुभवी होनेका दावा कर सकते हैं। हमें बम्बअीके कुशल और अनुभवी डॉक्टरकी, जो लम्बे अर्से तक कांग्रेसके मुफ्त अस्पतालके अफसर थे, स्वेच्छापूर्ण सेवाका लाभ मिला था। फिर भी हम सरकारी निष्णातोंकी मदद और सहयोगसे पूरा फायदा अुठानेको तैयार थे। मगर वह हमें नहीं दिया गया। भविष्यमें आशा है कि अैसे अवसरों पर वह लाभ हमें मिलेगा। प्लेगके अिस भयंकर और घर कर लेनेवाले अुपद्रवको मिटानेका काम आसान नहीं है। यह काम जितना हमारा है, अुतना ही सरकारका है। सरकारके सहयोगसे हम नहीं भड़कते, और न सरकारको भड़कना चाहिये।

(अंग्रेजीसे)

६७

तीसरी स्थानीय स्वराज्य परिषद्

[ता० २ और ३ नवम्बर १९३५ को भड़ौंचमें हुआी गुजरात विभागकी स्थानीय स्वराज्य संस्थाओंकी तीसरी परिषद्के अध्यक्षपदसे दिया हुआ भाषण ।]

गुजरात प्रांतकी स्थानीय स्वराज्य संस्थाओंकी अिस परिषद्का अध्यक्षपद फिरसे मुझे सौंप कर आपने मेरा जो सम्मान किया है, अुसके लिअे मैं आपको धन्यवाद देता हूँ । सात वर्ष पहले जब सूरत शहरमें हमारी पहली परिषद् की गअी थी, तब अुस परिषद्के अध्यक्षपदसे अैसी परिषदोंकी अुपयोगिताके सम्बन्धमें मैंने अपना अविश्वास प्रगट किया था । अुसके बाद सन् १९३१ के जुलाअी मासमें अहमदाबादमें हुअी दूसरी परिषद्के अवसर पर स्वागत-समितिके अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकर और परिषद्के अध्यक्ष श्री दादूभाअी देसाअीने भी मेरी शंकाका समर्थन किया था । आज हमारी यह तीसरी परिषद् हो रही है । मुझे अफसोसके साथ कहना पड़ता है कि अिस प्रवृत्तिके बारेमें मेरी अश्रद्धा कम होनेके बजाय और भी ज्यादा मज़बूत हो गअी है । आज तक प्रान्तकी आठ परिषद् हुअी हैं । अिनके सिवाय अलग-अलग विभागोंकी भी कितनी ही परिषदें हुअीं, परन्तु अुनसे हम कोअी खास परिणाम निकाल सके हों, अैसा नहीं लगता । आज तककी परिषदोंमें पास हुअे प्रस्तावोंको देखते हुअे अुनमें से अब तक हम सरकारसे अेक भी महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पर अमल नहीं करा सके । स्थानीय स्वराज्य विभागके मंत्री प्रान्तकी परिषद्के स्थायी अध्यक्ष होते हुअे भी, अुन्हींके अधीन विषय सम्बन्धी अेक भी प्रस्ताव पर अमल कराने लायक असर सरकार पर न डाला जा सके, तो अैसी परिषदें करनेसे क्या लाभ, यह हमारे सोचने लायक बात है । अैसी परिस्थितिमें केवल अिस परिषद्के संचालकोंके आग्रहके वश होकर ही मैंने अध्यक्षपद स्वीकार किया है ।

मॉण्टेग्यु-चेम्सफोर्ड सुधारोंके अमलमें आनेके बाद हमारे प्रान्तमें स्थानीय स्वराज्य संस्थाओंकी प्रगति रुक गअी है, और अुन संस्थाओंका विकास होनेके बजाय दिन-दिन अुनका दम घुटता जा रहा है । जबसे यह विभाग मंत्रीके सुपुर्द किया गया है, तभीसे अुसे ग्रहण लग गया है और अिसीलिअे अुसका तेज दिन-दिन क्षीण होता जा रहा है । अिन संस्थाओंकी जिम्मेदारीसे सरकारके मुक्त हो जानेके कारण स्थानीय अधिकारी अुनके काममें सहायक होनेके बजाय कअी जगहों पर बाधक होते मालूम हुअे । कअी वर्षोंसे अिन संस्थाओंको मिलनेवाली आर्थिक सहायता बन्द कर दी गअी, अुनकी आमदनीके अुचित साधनों पर

आक्रमण किया गया और जो कर लगानेकी अिजाजत अुन्हें मिलनी चाहिये, वह अिजाजत देनेसे सरकारने अिनकार कर दिया, और बादमें वे ही कर अुसने खुद लगा कर अपनी आय बढ़ा ली।

कुछ काम सरकारकी तरफसे होते थे। अुनका खर्च सरकारको भुगतना चाहिये और वह भुगतती थी। वे सब अिन संस्थाओं पर डाल दिये गये हैं। जमानेके अनुसार लोग सुख-सुविधाओंकी माँग करने लगे, मगर अुनकी पूर्ति करनेके लिअे आमदनीका अेक भी ज़रिया अिनके पास नहीं रहा। अैसी दिवालिया संस्थाओंका अितज़ाम करनेका काम लोगोंको सौंपे जानेसे स्वराज्यकी तालीमके अखाड़ेमें खेलना अुनके प्रतिनिधियोंके भाग्यमें आ पड़ा है। अिस विकट कामको दूसरी तरहसे भरसक सरल बनानेके बजाय और भी मुश्किल बनानेके लिअे अुनमें साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्वका जहर डाल दिया गया और अिसीसे सन्तोष न मानकर अुनमें मनमाने तौर पर नॉमिनेशन करनेका हलाहल विष घुसेड़ कर खुशामद और प्रपंचके द्वार खोल दिये गये। अिस नॉमिनेशनके अधिकारका यहाँ तक दुरुपयोग किया गया कि म्युनिसिपल शासन सम्बन्धी गम्भीर कुशासनके आरोप पर जिसे दोषी मान कर सारी म्युनिसिपेलिटीको बरखास्त कर दिया गया, अुसी सदस्यको जब चुनावमें मतदाताओंने नापसन्द कर दिया, तब अनिष्ट हेतु सिद्ध करनेके लिअे अुसी म्युनिसिपेलिटीमें अुसे फिर नॉमिनेट करके लोकतंत्रको भ्रष्ट बना देनेमें सरकारको जरा भी संकोच नहीं हुआ। अिस प्रकार अिन संस्थाओंको खुशामद, प्रपंच और दलबन्दीके अखाड़े बनाकर अुनकी आर्थिक कठिनाअियाँ बढ़ा दीं; और जिस काममें स्वयं देवता भी असफल हो जायँ, अुसे सफल बनानेकी ज़िम्मेदारी लोकप्रिय सदस्योंके सिर पर डाल दी। अिससे हमारी स्वराज्यकी योग्यताका अन्दाज लगानेका काम प्रचुर वेतन और अमर्यादित अधिकार भोगनेवाले सहानुभूति हीन हाकिमोंके हाथमें आ गया। संयोगसे अगर अिन हाकिमों और अिन बदकिस्मत लोक-नियुक्त सदस्योंको थोड़े समयके लिअे आपसमें अेक दूसरेकी जगह पर अदल-बदल करनेका अवसर आवे, तो अिन परीक्षकोंकी सच्ची परीक्षा हो जाय। मुझे विश्वास है कि ये हाकिम अेक दिन भी अुस जगह रहना मंजूर नहीं करेंगे।

स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं सम्बन्धी कानूनोंकी धाराओंकी छानबीन करके अुनमें समय-समय पर सुधार करनेसे कुछ होनेवाला नहीं है। जब-जब प्रान्तकी परिषदें होती हैं, तब-तब अैसे कानूनी सुधारोंको बेजा महत्त्व दे दिया जाता है और अन्तमें जब यही सुधरे हुअे कानून निकम्मे साबित होते हैं, तब अिसका दोष जनता पर डाल दिया जाता है।

कानूनमें सुधार करनेसे भूतकालमें बहुत लाभ नहीं हुआ और न भविष्यमें ही होना सम्भव है। अिस चीज़को साबित करनेके लिअे सिर्फ दो ही महत्त्वपूर्ण अुदाहरण देने काफी होंगे। म्युनिसिपल और लोकल बोर्डोंके कानूनमें अुचित परिवर्तन करके सन् १९२३ में प्राथमिक शिक्षाका कानून बनाया गया। अिस कानूनको बनानेके दो अुद्देश्य थे। अेक तो शिक्षाका व्यापक प्रचार और दूसरा अुसकी व्यवस्थामें सुधार। आज १२ वर्षके बाद हिसाब लगानेसे मालूम होता है कि दोनोंमें से अेक भी मकसद पूरा नहीं हुआ। आज भी हमारे प्रान्तमें औसत १० से १२ वर्गमीलके क्षेत्रमें सिर्फ अेक ही प्राथमिक पाठशाला है। शहरों और गाँवोंकी कुल मिलाकर संख्या २६,५८९ है। अिनमें से १६,२०० गाँवोंमें तो आज अेक भी प्राथमिक पाठशाला नहीं है। अिन बिना पाठशाला-वाले गाँवोंमें से २,००० गाँव तो ५०० से अूपरकी आबादीवाले हैं।

अिस कानूनसे शिक्षाकी व्यवस्थामें कुछ भी सुधार नहीं हुआ, यह बात सरकारी शिक्षा-विभागके अधिकारियोंकी रिपोर्टों परसे ही मालूम हो जाती है। अिन रिपोर्टोंमें जगह-जगह पढ़नेमें आता है कि "स्कूल बोर्डोंके प्रबन्धमें कितने ही स्थानोंपर साम्प्रदायिक भेदभाव, दलबन्दी और निजी स्वार्थ दिखाअी देता है। शिक्षकोंकी नियुक्तियाँ और तबदीली करते वक्त और साथ ही अुन्हें ट्रेनिंग कॉलेजमें भेजते वक्त सार्वजनिक हित नहीं देखा जाता। अैसे समय साम्प्रदायिक भावना, जातपाँतके भेदभाव, कुटुम्बोंकी दलबन्दी और निजी स्वार्थकी तरफ ज्यादा ध्यान दिया जाता है।" शिक्षाका कानून तैयार करनेवालोंने अगर अिसके सिवाय किसी और परिणामकी आशा रखी हो, तो वे बिलकुल मूर्ख होने चाहियें। जैसा बीज बोया था वैसा फल मिला है, अिसमें आश्चर्य करनेका क्या कारण हो सकता है!

दूसरा अुदाहरण ग्रामपंचायतके कानूनका लीजिये। यह कानून पहले पहल सन् १९२० में बना। १३ वर्ष तक अुसका परिणाम शून्य रहा और गाँव-वालोंको यह मालूम ही न हुआ कि अैसा भी कोअी कानून सरकारकी पुस्तकमें है; तब आखिर सन् १९३३ में यह कानून सुधारकर नया बनाया गया। थोड़े ही समयमें मालूम हो जायगा कि यह नया कानून गाँव-गाँवमें खुशामद, लुच्चाअी, फूट, क्लेश और झगड़े-टंटे पैदा करनेका जबरदस्त साधन बन जायगा, क्योंकि अुसकी सारी बनावट ही अिस तरहकी है। पिछली प्रान्तीय परिषदके समय अिस कानूनका अुत्साहसे अमल करनेके लिअे आपकी पीठ थपथपाअी गअी है।

गये मार्च महीनेमें प्रान्तकी पिछली परिषदके समय मन्त्री महोदयने खुद ही अध्यक्ष स्थानसे अपने भाषणमें कहा था कि "कानूनकी खामियाँ, अधिकारोंकी कमी और रुपयेकी तंगी, ये तीन कठिनाअियाँ अिन संस्थाओंके प्रति फर्ज़ अदा

करनेमें बड़ी बाधक होती हैं यह दलील दी जाती थी, मगर सरकारने अब अिनमेंसे सिर्फ़ अेक अन्तिम कठिनाअीको छोड़कर और सब असुविधाअें अधिकतर दूर कर दी हैं।" अिस विचित्र भाषणको सुननेवालोंमें से कितनोंको अुससे सन्तोष हुआ होगा, यह मैं नहीं जानता। मेरी नम्र राय यह है कि सरकारने और सब अड़चनें कायम रहने दी होतीं, लेकिन अन्तिम रुकावट यानी रुपयेकी तंगी ही सिर्फ़ दूर कर दी होती, तो आज जो अनेक लोकल बोर्ड और म्युनिसिपेलिटियाँ निष्प्राण और साधनहीन हो गअी हैं, अुसके बजाय वे सब जीती-जागती लोक-सेवा करनेवाली और प्रामाणिक लोकसेवकोंको आकर्षित करनेवाली बन गअी होतीं। सरकार अपने विभाग चलानेके लिअे तो रुपयेकी खूब सुविधा करके रखती है और अुनका प्रबन्ध करनेके लिअे तालीम पाये हुअे, कसे हुअे और जिन्हें अप्रत्यक्ष प्रलोभनोंमें पड़नेकी जरा भी ज़रूरत न पड़े अैसे अुदार हाथों संतुष्ट किये गये अुच्च वेतनवाले अधिकारी रखती है और अुनके हाथमें निरंकुश सत्ता होती है। स्थानीय स्वराज्य संस्थाओंके पास अिनमेंसे कोअी भी साधन नहीं है। अुनके कअी मालिक और रोज़-रोज़ अुनके काममें दखल देकर अुनसे जवाब माँगनेवाले होते हैं।

म्युनिसिपेलिटीका काम संतोषजनक रीतिसे न चलता हो या क़ानूनकी मर्यादा तोड़कर कोअी काम हो रहा हो, तो सरकारको अुसके काम पर अंकुश लगानेकी व्यापक सत्ता दे दी गअी है। फिर भी अितनेसे सरकारको संतोष नहीं होता, अिसलिअे जिन अधिकारोंका क़ानूनमें सीधा समावेश नहीं होता अैसे व्यापक और विस्तृत अधिकारोंका जाल आर्डिनेन्स द्वारा फैलाकर अिन संस्थाओंको लाचार बनानेके खुले प्रयत्न होते हैं। प्राथमिक शिक्षा-विभागमें सरकारसे जो आर्थिक सहायता अब तक मिलती थी और जिसके पानेका अिन संस्थाओंको हक था, अुस पर अब नये-नये अंकुश और शर्तें लगाकर कानूनसे मिली हुअी अिन संस्थाओंकी स्वतन्त्रता अप्रत्यक्ष ढंगसे छीन ली जाती है। अिस सम्बन्धमें अेक ही अुदाहरण दे देना काफी होगा।

बम्बअी शहरको छोड़ दें, तो अहमदाबाद शहरकी म्युनिसिपेलिटी प्रान्तमें सबसे बड़ी मानी जाती है। अुसके प्रबंधमें सरकारको कोअी खराबी नज़र नहीं आती। अुसकी वार्षिक रिपोर्टोंकी समालोचनाओंमें अुसके अिन्तज़ामकी बार-बार तारीफ़ की गअी है। कानूनकी मर्यादाओंका अुल्लंघन करनेका दोष अुस पर नहीं लगाया जा सकता। मगर अिस मर्यादाकी हदमें रहकर वह जो थोड़ी-बहुत स्वतंत्रता भोग सकती है, अुसका तेज भी तंग विचारवाले तेजोद्वेषी अधिकारियोंसे सहन नहीं हो सकता। सन १९३० के *सत्याग्रह* संग्राममें अिस म्युनिसिपेलिटीके अध्यक्ष, अुपाध्यक्ष और भूतपूर्व अध्यक्षको जेल भेजा गया, तब अुन दिनों म्युनिसिपल स्कूलोंमें

छुट्टी रखी गअी थी। अुसके अिस कथित अपराधके लिअे कानूनमें सजा देनेका कोअी अुपाय न मिला, तो अन्तमें अुसे झुकानेके लिअे अुसकी शिक्षाकी ग्रांट बन्द कर दी गअी। शिक्षा-विभागके डाअिरेक्टरने यह मदद बन्द करनेके बारेमें अपनी रिपोर्टमें कहा था कि आम तौर पर तो अेक मूली चुरानेवाले चोरको मुक्केकी सजा हो सकती है, मगर यह तो फाँसीकी सजा देनेके बराबर होगा। परन्तु अिस म्युनिसिपेलिटीको, जो सबको रास्ता दिखाती है, ठीक करनेके लिअे और दूसरी म्युनिसिपेलिटियाँ अुसके कदमों पर न चलें अिसलिअे अुन्हें डरा देनेके लिअे भी अिस साधन-सम्पन्न म्युनिसिपेलिटीको अैसी सजा देनी होगी। अुसके बाद गांधी-अिरविन संधिकालमें स्थानीय अधिकारियोंका रवैया कुछ समयके लिअे बदला और जिलेके हाकिमने खुद म्युनिसिपल स्कूलोंको देखकर अुनकी जाँच की और सरकारको यह रोकी हुअी सहायता दे देनेकी सिफारिश की। साथ ही अिस आशयका पत्र लिख कर म्युनिसिपेलिटीके अध्यक्षको भी खबर दे दी। अुसके बादसे अभी तक म्युनिसिपेलिटीका अेक भी कसूर नहीं हुआ, फिर भी सिर्फ अपमान करनेके लिअे अुससे अनुचित बात लिखवा लेनेकी माँग करके अब तक यह ग्रांट रोक रखी है। अिस प्रकार प्रति वर्ष अुसके हककी डेढ़-दो लाख रुपयेकी बड़ी रकम ५–५ सालसे रोक रखी है। जब अितनी बड़ी म्युनिसिपेलिटीको अिस तरह तंग करके अुसके काममें रुकावट डालनेमें जरा भी संकोच नहीं होता, तब छोटी-छोटी साधन हीन म्युनिसिपेलिटियों और लोकल बोर्डोंकी तो क्या दशा की जाती होगी, यह सहज ही समझमें आ सकता है। स्वार्थी और पराधीन मंत्रियोंकी हुकूमतमें स्थानीय स्वराज्य संस्थाओंकी मर्यादित स्वतंत्रताका भी अिस प्रकार बुरा हाल हो रहा है।

सरकारकी लगान-नीति अन्याय और अनीतिसे भरी हुअी है और वह अिन संस्थाओंके हित या हक्की परवाह किये बगैर केवल स्वार्थसाधनकी दृष्टिसे बरती जाती है। अपने पाससे लाखों रुपये खर्च करके रास्ते, रोशनी, बाग-बगीचे, नगर-रचना, पानी और गटर वगैराके साधन मुहैया करके कितने ही छोटे-मोटे शहरोंकी म्युनिसिपेलिटियाँ अपने करदाताओंको शहरकी तंगीसे मुक्त होनेकी सुविधा कर देती हैं, जिसके परिणाम स्वरूप अिन तमाम नअी बस्तियोंकी और अुनके आसपासकी ज़मीनकी कीमत तेजीसे बढ़ती जा रही है। लोगोंको अिन तंग गलियों और मोहल्लोंसे बाहर निकलनेमें प्रोत्साहन देनेके लिअे अिन नअी बस्तियोंकी ज़मीन पर खेतीके सिवाय दूसरे कामोंके लिअे विशेष कर नहीं लेना चाहिये, अुसके बजाय पराये खर्चसे बढ़नेवाली कीमतका फी अेकड़ ५० रुपयेसे १ हज़ार रुपये तकका विशेष कर लेकर सरकार बाकायदा लूट मचा रही है। अगर अिस विशेष करको लेनेका कोअी हकदार है तो ये संस्थाअें हैं, जिनके

रुपयेसे अिस ज़मीनकी कीमत अितनी ज्यादा बढ़ गअी है। मगर आज तो नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज़ कौन सुनता है?

सरकारने अब लाज-मर्यादा छोड़ दी है। अितने वर्षोंके अिन्तजामके बाद अब म्युनिसिपल हदके अन्दरकी ज़मीनका स्वामित्व म्युनिसिपेलिटीका होने पर भी, किसी म्युनिसिपेलिटीको अपने रास्ते या गलीमें मैले पानीकी कुंडी या खड्डा बनानेकी किसीको मंजूरी देनी हो, तो कहा जाता है कि अुसमें भी सरकारकी अिजाज़त चाहिये। अैसा दावा किया जाता है कि ज़मीनके अन्दरका यानी सब-सॉअिलका स्वामित्व सरकारका होनेके कारण अिन ज़मीनोंके भाड़े वगैरामें सरकारको हिस्सा मिलना चाहिये और अुसके अिकरारनामेमें सरकारको शामिल करना चाहिये। अिन संयोगोंमें अब प्रत्येक म्युनिसिपेलिटीके लिअे अपनी ही हदकी अपनी ही ज़मीनमें कोअी भी काम आसानीसे करना असम्भव हो गया है।

तंग और घनी बस्तीवाले शहरोंमें, जहाँ साँस लेनेको भी जगह नहीं होती, जितनी सम्भव हो अुतनी जगह खुली रखनी चाहिये। अिसके बजाय सरकारकी तरफसे दो-दो पाँच-पाँच गजके टुकड़े जितनी जगह भी, खाली न रखकर, केवल सरकारी आमदनी बढ़ानेकी दृष्टिसे म्युनिसिपेलिटीके हित या सार्वजनिक स्वास्थ्यकी ज़रा भी परवाह किये बिना लोगोंको किरायेसे दे दी जाती है या बेच दी जाती है; और अिसमें म्युनिसिपेलिटीका कितना ही विरोध क्यों न हो, अुसकी ज़रा भी परवाह नहीं की जाती। अेक तरफ लोगोंके पास अपनी गाड़ियाँ या मोटरें रखनेके लिअे रास्तोंमें बिलकुल जगह न हो और दूसरी तरफ पुलिस आम रास्तोंमें गाड़ियाँ रखकर रास्ता रोकनेके कारण चालान करती हो, वहाँ थोड़ी थोड़ी जगहोंको, जो अैसे अुपयोगमें आ सकती हैं और जिनसे लोगोंको राहत मिल सकती है, लोगोंकी सुविधा-असुविधाकी बिलकुल परवाह न करके खानगी अुपयोगके लिअे किराये पर दे दिया जाता है। व्यक्तिगत स्वामित्वकी ज़मीन सार्वजनिक अुपयोगके लिअे लेनी हो, तो अुसके लेनेमें लैंड अेक्विज़िशन अेक्टकी मदद सीधी तरह मिलनी चाहिये। मगर अुसमें भी कअी प्रकारका हस्तक्षेप करके वर्षों तक कागज़ोंका तूमार बाँध दिया जाता है और ज़रूरी काम करनेमें ढील होती है। कभी कभी तो यह मदद देनेसे बिना कारण अिनकार कर दिया जाता है।

नगर-रचना, गटर और पानी वगैरा सार्वजनिक हितके कामोंमें जो आर्थिक सहायता दी जाती थी, अुसे अब सरकारने बन्द कर दिया है। अब तो यह निश्चय हुआ है कि अिन कामोंके लिअे जो योजना तैयार की जाय, अुसे सरकारी अधिकारी जाँच कर देख लें और अुस जाँचका खर्च सरकारके मुकर्रर किये हुअे हिसाबसे देना चाहिये; और अगर अिस हिसाबसे खर्च न दें,

तो अिस कामके लिअे ज़रूरी कर्ज़ लेनेकी मंज़ूरी सरकार नहीं देगी। आश्चर्यकी बात तो यह है कि म्युनिसिपेलिटी सरकारके अपने अधिकारी जैसे ही अिम्पीरियल सर्विसके अधिकारीको, सरकारसे अुसकी नौकरी अुधार लेकर, अपनी नौकरीमें रखे, सरकार जितना ठहरा दे अुतना बड़ा वेतन अुसे दे और अिसके सिवाय अुसके वेतनका चौथा हिस्सा अुसकी पेंशनके खातेमें सरकारके यहाँ जमा कराये, तो भी अुस अधिकारीकी तैयार की हुअी योजनाका सरकारके पास जाँचके लिअे भेजा जाना अनिवार्य कर दिया जाता है। और अुस योजनाके अन्दाज पर मुक़र्रर किया हुआ जाँचका खर्च देना ही पड़ता है। अिस तरह लाखों रुपयोंकी बड़ी योजनाओंमें से हजारों रुपये कुतर कर खा लेनेकी सरकारकी रीतिका किसी भी तरह बचाव नहीं हो सकता।

म्युनिसिपेलिटी सरकारकी अिजाज़तके बिना कर्ज़ नहीं ले सकती। अिजाज़त देनेसे पहले सरकार म्युनिसिपेलिटीके आय-व्ययकी जाँच करके अुसकी कर्ज़ अदा करनेकी शक्ति, अुसके साधनों और अुसकी साखकी खातिरी करके ही अिजाज़त देती है। और अुसकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाय, तो अुसे तंग करके ठीक करानेका अधिकार सदा सरकारके पास रहता है। फिर भी म्युनिसिपेलिटी अपना फालतू रुपया अपने ही अैसे कर्ज़में नहीं लगा सकती, सरकारी ऑडिटरकी अिस रायको मानकर सरकारने अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीके नौकरोंके प्रोविडेंट फंडकी पाँच लाख रुपयेसे अधिककी रकमको, जो म्युनिसिपेलिटीके डिबेन्चरोंमें लगी हुअी थी, वहाँसे निकालकर सरकारी कर्ज़में रोकनेको मजबूर कर दिया है। अिसके परिणाम स्वरूप लगभग पचास हजार रुपयेका जो नुकसान हुआ और अुसके सिवाय जो भारी ब्याज भुगतना पड़ा, अुसे म्युनिसिपेलिटीके नौकर भुगतें या म्युनिसिपेलिटी भुगते, अिस बारेमें अब झगडा चल रहा है। अिस प्रकार म्युनिसिपेलिटीको बिना कारण नुकसानमें डाल दिया गया है।

सन् १९२३ में अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीने प्राथमिक पाठशालाओंके शिक्षकोंके वेतनकी दर तय करके सरकारके पास भेज दी थी और सरकारने अुसे मंजूरी दी थी। अुस हिसाबसे अितने वर्ष तक शिक्षकोंको तनख्वाह देनेके बाद सरकार अब अपनी रुपयेकी तंगीके कारण अपनी तरफसे दिया जानेवाला हिस्सा कम करनेके लिअे अुस दरको बदलकर सारे प्रान्तकी दर घटाना चाहती है, और अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीको भी अुसी तरह करनेके लिअे मजबूर कर रही है। अिससे शहरमें भारी असंतोष होनेकी सम्भावना है और शिक्षाके कामको धक्का लगनेका डर है, फिर भी सरकार अपना आग्रह नहीं छोड़ रही है। हजारों रुपये वेतन पानेवालोंके वेतनमें सस्ताअीके कारण की गअी थोड़ी-सी कमी सरकारने वापस जोड़ दी है। मगर अिन गरीब छोटी तनख्वाह पानेवाले शिक्षकोंका

वेतन कम करनेका आग्रह सरकार नहीं छोड़ सकती। पर जिस म्युनिसिपेलिटीकी शिक्षा सम्बन्धी ग्रांट ५-५ सालसे बन्द कर दी गअी है, अुस म्युनिसिपेलिटीके शिक्षकोंके वेतनके साथ सरकारका क्या वास्ता हो सकता है? और जिस काममें अुसकी अपनी ही करतूतसे अुसका कोअी लेना-देना नहीं रहता, अुसमें अुसका अितना आग्रह रखनेका क्या कारण होगा, यह किसी भी तरह समझा नहीं जा सकता।

सरकारका अिन संस्थाओंके प्रति अैसा विरोधी रवैया देख कर अुसके दूसरे विभाग भी अब अिन संस्थाओंको तंग करनेमें स्पर्धा करने लग गये मालूम होते हैं। सरकारी ऑडिट विभाग अब अपनी मर्यादा छोड़ बैठा है और अिन संस्थाओंकी फजूल गलतियाँ निकाल कर अुन्हें परेशान करता है। कोअी म्युनिसिपेलिटी अपना बाजार स्वदेशी माल बेचनेकी ही शर्त करनेवालेको विदेशी माल बेचनेवाले व्यापारियोंसे कुछ कम किराये पर दे दे, तो अुसमें ऑडिट विभाग यह नुकसान सदस्योंसे वसूल करनेके लिअे आग्रह करता है। अिन ऑडिटरोंकी चालाकीका अेक ही अुदाहरण देना काफ़ी होगा। म्युनिसिपल स्कूलका अेक शिक्षक अपना वर्ग ले रहा था। अुसी वक़्त अचानक दिलकी धड़कन बन्द हो जानेसे वह अेकदम अपनी कुरसी पर ही मर गया। अुसके अफ़सरको अिस बारेमें रिपोर्ट मिलने पर अुसने स्कूलमें जाकर डॉक्टरको बुलवाया और अुसकी जाँच कराअी। जब यह यक़ीन हो गया कि अुसके प्राण निकल गये हैं, तो पुलिसकी अिजाजत लेकर अुस अभागे शिक्षककी लाशको मोटर लारीमें अुसके घर पहुँचा दिया गया। अिस काममें लारीके किरायेका जो रु० ३-१४-० खर्च हुआ, ऑडिटरने अुसका हिसाब ऑडिट करके यह रकम शिक्षकके परिवारसे वसूल करने और अुससे वसूल न हो तो अुस अफ़सरसे वसूल करनेकी सिफ़ारिश कर दी। अिस तरहके अुदाहरण अिकट्ठे करके ऑडिट-नोट बनाये जाते हैं और अुनके आधार पर सरकारके प्रकाशन-विभागके अफसर म्युनिसिपेलिटियोंके प्रबन्धकी अखबारोंमें निन्दा कर डालते हैं। यही ऑडिटर अगर सरकार और म्युनिसिपेलिटीके बीचके प्रश्नोंके बारेमें निष्पक्ष तरीक़ेसे ऑडिट करनेकी हिम्मत करें, तो वे अिन संस्थाओंको लाखों रुपयेके नुक़सानसे बचा सकते हैं। मगर अैसे मौकों पर वे या तो अुपेक्षा करते हैं या सरकारका पक्ष लेते हैं। अिस बारेमें अेक दो अुदाहरण दे देना बे-मौक़ा नहीं होगा। सरकारी छावनी (केन्टोनमेंट) के लिअे म्युनिसिपेलिटी और छावनीके बीच अिकरारनामा हो चुकनेके बहाने २५-२५ साल तक लगभग मुफ़्त और म्युनिसिपेलिटीकी हदके बाहर क़ानूनके विरुद्ध पानी दिया गया और अहमदाबाद शहरका लाखों रुपयेका नुक़सान किया गया। तब किसी ऑडिटरको ऑडिट-नोट लगानेकी नहीं सूझी। थोड़े वर्ष पहले अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीको मिली हुअी ग्रान्ट खर्च करते वक्त सरकारकी

गलतीसे अुन कामोंके लिअे आवश्यक ज़मीन मिलनेमें देर हो गअी, तो अुतने समयमें अुस रकमका ब्याज पैदा हो गया। अुसे ऑडिटरके ऑडिट-नोटसे सरकारने म्युनिसिपेलिटीसे अुसकी अिच्छाके विरुद्ध जबरन वसूल कर लिया। अिसके बाद म्युनिसिपेलिटीने वह सारी रकम वापस मिलनेके लिअे सरकार पर दावा कर दिया। अिसमें सरकार हार गअी और अिन ऑडिटरोंकी सलाहसे गलत खर्चके खड्डेमें पड़ गअी। म्युनिसिपेलिटीको लगभग पचास हजार रुपया वापस मिला। अुस ऑडिटरके न्यायके अनुसार तो अुसकी भूलसे होने वाला सारा खर्च सरकारको अुसीसे वसूल करना चाहिये न?

गुजरातमें ३–४ शहरोंको छोड़ दें, तो बाकीकी सारी म्युनिसिपेलिटियाँ अपने रोज़मर्राके साधारण प्रबंधका खर्च मुश्किलसे चला सकती हैं। लोकल बोर्डोंकी स्थिति तो अिससे भी बुरी है। अैसी कंगाल संस्थाओं पर अुनके साधारण प्रबंधके सिवाय प्लेग, हैज़ा और चेचक वगैरा जो रोग बार-बार फैलते रहते हैं, अुनकी ज़िम्मेदारी भी डाल दी जाती है। सरकारका स्वास्थ्य-विभाग केवल दूर बैठकर सलाह देनेका काम करता है; और ज़्यादातर जो सलाह वर्षों पहले अेक कागज पर छपवा कर रखी होती है, वही हरअेक मौके पर भेज दी जाती है। अगर किसी कारणसे बीमारीका अुपद्रव बन्द हो जाता है, तो अुसका यश सरकार खुद लूट लेती है और बन्द न हो तो अुसकी जिम्मेदारी अिन संस्थाओं पर या लोगों पर थोप दी जाती है। बोरसदका प्लेग कांड अभी ताज़ा ही है। चार चार वर्षसे हर साल वहाँ प्लेगका ज़ोर और विस्तार बढ़ता गया, फिर भी वहाँ कोअी काम नहीं किया गया। बोरसद शहर या तहसील बोर्डको कोअी मदद नहीं दी गअी और अन्तमें जब लोक-सेवकोंने जाकर प्लेगसे टक्कर लेना शुरू किया, और आखिरमें दौड़धूप करके जब प्लेग बंद होने आया, तब थोड़ीसी ग्रांट अपने ही स्वास्थ्य-विभागको दी। बादमें अपने प्रकाशन-विभाग द्वारा अपनी तारीफें शुरू करके जन-सेवकोंको गिरानेकी कोशिश की गअी। जिम्मेदार कमेटीके द्वारा अिस कांडकी छान-बीन होकर अुसका विस्तृत विवरण हालमें ही प्रकाशित हो चुका है। अिसलिअे अिस सम्बंधमें मुझे अधिक कहनेकी ज़रूरत नहीं मालूम होती। अैसे सब मामलोंमें हमारे प्रान्तकी परिषदें यदि सरकार पर कुछ भी असर न डाल सकें, तो अिस अिंस्टिट्यूट और अुसके कामकी प्रतिष्ठाको सिर्फ ४–५ हज़ारकी ग्रांटकी खातिर सरकारको सौंपकर, अुसके मारे अैबोंको ढाँकनेका साधन बननेके बजाय प्रान्तकी बड़ी बड़ी संस्थाओंको अुतनी रकम चन्दा करके खुद ही चुका देनी चाहिये और अिंस्टिट्यूटको स्वतंत्र बना देना चाहिये। बम्बअी कॉरपोरेशन आज तक अलग रहा है, अिसका कारण आसानीसे समझमें आ सकता है।

सरकारकी नीतिका अिस प्रकार विश्लेषण करनेमें मुझे आनंद नहीं होता। मैं आजकल अन्तरदृष्टि रखने और अपने खुदके धर्मका ही विचार करनेमें विश्वास रखता हूँ। परन्तु आपने मुझे अिस परिषदका अध्यक्षपद दिया है, अिसलिअे अगर मैं अिन सारी बातों पर चुप रहूँ, तो अुन संस्थाओं और अुनमें निःस्वार्थ सेवा करनेवाले अनेक लोकसेवकोंके साथ मेरा यह अन्याय कहा जायगा; अिसलिअे विवश होकर मुझे अिन सब बातोंका अुल्लेख करना पड़ा है।

मुझे बताया गया है कि डिस्ट्रिक्ट म्युनिसिपल अेक्टमें सुधार करनेका अेक बिल धारासभाकी अगली बैठकमें सरकारकी तरफसे पेश होनेवाला है और अुसका मसौदा प्रकाशित हो चुका है। मैं खुद तो यह मानता हूँ कि मौजूदा परिस्थितिमें सरकारको कुछ भी कहना व्यर्थ है। असलमें तो जब प्रान्तीय शासन-तंत्र बदलनेवाला है, तब अैसे कानूनोंका सुधार अुसी पर छोड़ देना चाहिये। फिर भी जब सरकार जल्दी करके अपनी मेहरबानी पर जीनेवाली धारासभासे अपनी अिच्छानुसार कानून बनवा लेना चाहती है, तब अुसमें संशोधन-परिवर्धन सुझाना मुझे तो पानीको बिलोने जैसा लगता है। सरकार तो वही करेगी जो अुसने सोच रखा होगा।

लोगोंको भी सरकारके रुखका पता चल गया है, अिसलिअे कुछ लोग मौजूदा प्रान्तीय शासन-तंत्र बदलनेसे पहले अपना स्वार्थ साधनेके लिअे आकाश-पाताल अेक कर रहे हैं। आप सबको मालूम है कि सारे गुजरातको बिजली मुहैया करनेका ५० वर्षका ठेका लेनेके लिअे अेक कम्पनीने हाल ही में अर्जी दी है। गुजरातकी बहुतसी संस्थाओंने अुसके विरुद्ध अपनी आपत्तियाँ भेजी हैं। फिर भी आजकल सरकार हर तरहसे लोकमतको ठुकराकर मनचाही बात ही करती है, यह विश्वास जब हो गया हो, तो विदेशी कंपनियाँ अिस डूबती हुअी सरकारके जरिये अपना स्वार्थ साध लेनेका मौका क्यों चूकें? सरकार भले ही आज न सुने, फिर भी अिन कम्पनियोंको हमें अभीसे नोटिस देकर सावधान कर देना चाहिये कि अिस तरहसे मिले हुअे ठेके अन्तमें महँगे पड़ेंगे और अिसके लिअे बादमें कठिनाअीमें पड़ना पड़े, तो अुस वक्त हमें दोष नहीं दिया जा सकेगा।

अनेक कठिनाअियोंके बीच काम करना पड़ता है, अिसलिअे निराश होनेके बजाय हमारे लिअे यही अुत्तम मार्ग है कि हम अपनी कमजोरियाँ दूर करके आत्म-विश्वास पैदा करें और स्वावलम्बी बननेका दृढ़ प्रयत्न करें। सरकारसे सहायताकी आशा रखना फ़जूल है। अुसके पास अपना शासन चलानेके लिअे ही रुपया नहीं है। यह शासन अब नये सुधारोंके नाम पर और भी महँगा हो जानेवाला है। अुसके लिअे होनेवाला भारी अतिरिक्त खर्च जनताको ही

अुठाना पड़ेगा। सरकारके खर्चीले प्रबंध पर अंकुश लगानेकी शक्ति किसीमें नहीं है। अिसलिअे जो थोड़े-बहुत साधन हैं, अुनका भरसक सदुपयोग करके हमें जनताको अधिकसे अधिक लाभ पहुँचानेका प्रयत्न करना चाहिये।

अपनी खुदकी ही जिम्मेदारियों और कर्तव्योंके बारेमें पहली परिषदके भाषणमें मैंने जो कुछ कहा था, अुसमें मुझे और कुछ जोड़ने या अुसका पिष्ट-पेषण करनेकी ज़रूरत मालूम नहीं पड़ती। हमारा मार्ग कठिन है। अेक ओर सरकारकी सहानुभूति नहीं, निर्बल मंत्रियोंके राज्यमें अिन संस्थाओंका कोअी रक्षक नहीं, छोटे-बड़े अधिकारी अिनके प्रबंधमें बाधा डालते रहते हैं; तब दूसरी ओर जनता सदियोंसे अज्ञान और आलस्यमें पड़ी हुअी है। जबकि देहातके लोग शौचादि जैसी क्रियाओंमें भी लगभग पशुओंकी-सी अवस्थामें हैं, तब अुनसे स्वास्थ्यके नियमोंका पालन करवाना कितना ज्यादा मुश्किल है? हमारी अैसी परिस्थितिमें महात्मा गांधी और अुनके साथी दूसरा काम छोड़कर वर्धाके पासके अेक गाँवमें आज कितने महीनोंसे वहाँके अज्ञान और जड़वत् निवासियोंको अुनका मल-मूत्र अुठाकर शौचादिके नियमोंका पालन और अुस मल-मूत्रका सदुपयोग करनेका कठिन काम सिखा रहे हैं। छोटे-मोटे गाँवोंकी साधनहीन संस्थाओंके लिअे यह अेक अमूल्य दृष्टांत है।

म्युनिसिपेलिटी और लोकल बोर्डके सदस्यकी जगह पर मान-सम्मानकी या स्वार्थ साधनेकी आशासे जाना पाप है। वह सेवा-धर्मका स्थान है। गरीब और अज्ञान करदाताओंके रुपयेकी व्यवस्थाका ट्रस्टी बन जाना बड़ी जिम्मेदारीका काम है। परमात्मा आपको अिस जिम्मेदारीको पूरा करनेकी बुद्धि और शक्ति दे।

६८

ग्रामसेवक सम्मेलन

[ता० २०–२–१९३६ को बारडोलीमे हुअे गुजरातके ग्रामसेवकोंके सम्मेलनके सभापति पदसे दिया हुआ भाषण।]

अेक समय यह विचार था कि जब गांधीजी गुजरातका दौरा करें, तब गुजरातके कार्यकर्ताओंका सम्मेलन बुलाया जाय। लेकिन चूँकि सारे देशको शोकमें डुबा देनेवाले अुनकी बीमारीके समाचार मिल गये, अिसलिअे वह विचार छोड़ देना पड़ा। अिसलिअे अन्तमें यह तय हुआ कि बारडोलीमें गांधीजीको दो दिनका आराम मिल जाय और मैं सबसे मिल लूँ तो ठीक रहे। ग्रामसेवकोंके अलावा देहातके लोगोंसे भी मिलनेकी मेरी अिच्छा थी। आज यह सेवकोंका सम्मेलन असलमें सर्व-सम्मेलन बन गया है। यहाँ जो भाअी-बहन आये हैं, वे सेवकोंको पहचानें, अुनकी मुश्किलें जानें और अुनके कामको समझें, अिस दृष्टिसे अुनका अिस सम्मेलनमें मौजूद रहना स्वागतके योग्य ही माना जा सकता है।

मूक सेवा

ग्रामसेवकोंको अेक बात समझ लेनी चाहिये। सेवकको मूक रहकर काम करना चाहिये। बोलना आता हो तो भी वह ज़बान बन्द रखे। भाषणोंकी चाट लगाये हुअे सेवक गाँवोंके लिअे अयोग्य माने जायँगे। जिसका काम ही बोलता है, वही सच्चा सेवक हो सकता है। वह मूक होगा तो भी अुसका काम अन्तमें अुसे प्रकट कर देता है। सेवक अवसरके बिना बोलनेका प्रयत्न न करे। मौके पर बोलना शोभा देता है। परन्तु प्रसंगके बिना बोलना माघ महीनेकी बारिशकी तरह बेकार है। अिसलिअे ग्रामसेवकोंका मुख्य धर्म मूक सेवा है।

स्वराज्यका द्विविध कार्य

लड़ाअी जैसे अुत्तेजनाके समयमें बहुतसे सिपाही मिल जाते हे। जैसे बरसातमें बहुतसे जीव-जन्तु, कीड़े-मकोड़े पैदा हो जाते हैं, वैसे ही लड़ाअीके वक्त सब खिंचे चले आते हैं। अुस महासागरके मन्थनमें अच्छे-बुरे सभी होते हैं। जब जोश ठंढा हो जाता है, तब दूसरे लोग ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलते, मगर सच्चा ग्रामसेवक चुपचाप काम करता ही रहता है। लड़ाअी अनिवार्य हो जाने पर वह अुसका बोझा अुठा लेता है। तब तक वह श्रद्धापूर्वक मूक सेवा करता रहता है। ग्रामसेवाके बदलेमें अुसे कोअी माला पहनानेवाला, अुसका

जुलूस निकालनेवाला, प्रशंसा करनेवाला या मंचपर बैठानेवाला नहीं मिलेगा। अुल्टे अुसे तो रोटी जुटाना भी मुश्किल पड़ता है। और हरिजन-सेवा करता हो, तब तो पानीका भी टोटा हो सकता है। जो आदमी अिन सब प्रतिकूलताओंमें अटल रहे, वही ग्रामसेवक बन सकता है, वही सच्चा सिपाही है। अिस प्रकार स्वराज्यका काम दो तरहका है। मगर बहुतसे अिस चीज़को नहीं समझते और लड़ाअी शांत हो तब भी अधीर हो अुठते हैं। भूतकी तरह वे हर किसीके साथ लड़ना ही चाहते हैं। सरकारके साथ लड़ना बन्द हुआ, तो वे आपसमें लड़ने लगते हैं। अैसे मनुष्य ग्रामसेवक नहीं हो सकते।

हमारा आदर्श ग्रामसेवक

ग्रामसेवकको दो बातें जान लेनी चाहिये। पहली यह कि वह बिना कारण न बोले। दूसरी बात यह है कि वह कभी यह अिच्छा न रखे कि अुसके कामकी प्रसिद्धि हो। प्रसिद्धि अकसर कठिनाअी पैदा करती है, जबकि कोनेमें छिपे रहनेवालेका काम शोभायमान और प्रसिद्ध हो जाता है। आज आपको स्वामी आनन्द और रविशंकर अिन दो ग्रामसेवकोंके अनुभव सुननेको मिलेंगे। वे दोनों आज तो मशहूर आदमी हैं; परन्तु दोनों अपनी वर्षोंकी लम्बी सेवाओंसे मशहूर हुअे हैं। रविशंकरको आपने जब बारडोलीमें देखा था, अुससे वर्षों पहलेसे वे काम कर रहे थे। जो लोग चोरी और डाका डालनेवाले थे, अुन्हें वे सुधारनेका काम करते थे। मगर अुनका नाम अखबारोंमें कभी नहीं देखा गया। अुन्हें लेख लिखना तो आवे ही कहाँसे? वे भाषण देने खड़े होंगे, तब आपको पता चलेगा कि ये कोअी साहित्य परिषद्में जाने लायक आदमी नहीं है, देहातमें शोभा देनेवाले ग्रामसेवक है।

अिस सम्मेलनमें आप आपसमें अनुभवोंका आदान-प्रदान तो करेंगे ही। आपका काम अत्यन्त कठिन है। आपके काममें अटूट धीरज और श्रद्धाकी ज़रूरत है। वह काम अैसा नहीं है, जिसका हिसाब जल्दीसे लगाया जा सके। वह अैसा नहीं है, जो अेकदम आँखोंको दिखाअी दे जाय। जिसे तुरन्त फल चाहिये, अुससे ग्रामसेवाका काम नहीं हो सकता। फल मिले या न मिले, परन्तु धर्म बुद्धिसे जो अिस काममें लगा रहता है, अुसका काम समय आनेपर ज़रूर बोलेगा।

ग्रामसेवकका कार्यक्षेत्र

हमारे काममें ग्राम सफ़ाअीका कार्य मुख्य है। लोगोंकी सदियोंकी आदतें देखते हुअे अिसके लिअे हमें भगीरथ प्रयत्न करना पड़ेगा। स्वच्छताका पाठ हमारे लोगोंको न स्कूलमें पढ़ाया जाता और न घरमें मिलता है। स्वराज्यकी अिच्छा रखनेवालोंको अपने शरीर, घर-बार और कपड़े वगैरा साफ़ रखनेकी आदत डाल

कर दुनियाके सामने स्वराज्यके योग्य प्रजाके रूपमें खड़े रहना चाहिये। अुन्हें ग्राम सफ़ाअीका अपना कर्तव्य पालन करना भी सीखना चाहिये। गाँववाले अगर यह मानें कि यह अच्छा बिना तनख्वाहका भंगी मिल गया है, तो भी हमें अपना काम जारी रखना चाहिये। ग्रामसेवकको चाहिये कि वह अुसमें गाँवके लोगों या गाँवके नौजवानों और बहनोंकी दिलचस्पी पैदा करे। गाँवोंमें पाखानोंका प्रश्न कठिन होते हुअे भी सूरत जिलेमें, जहाँ घर-घरमें बाड़े हैं, वह आसान माना जायगा। खेड़ामें बालिश्त भर जगहके लिअे लोग हाअीकोर्ट तक पहुँचते हैं। अितनी तंगीमें और जहाँ गाँव यहाँकी तरह छोटे नहीं बल्कि ५–७ हज़ारकी आबादी वाले होते हैं, वहाँ यह काम मुश्किल है। फिर भी अुसका अुपाय ढूँढ़नेमें ही हमारी स्वराज्यकी योग्यता रही हुअी है।

स्वच्छताके सिवाय अेक बड़ी बात हमारी आर्थिक दुर्दशा की है। यह बड़ा विकट प्रश्न है। राजनैतिक गुलामी तो हमारे सिर पर है ही, मगर यह सवाल भी बड़ा मुश्किल है। किसी भी तरह हमारी आर्थिक स्थिति सुधरे, अैसा रास्ता ढूँढ़ना चाहिये। अिसी अुद्देश्यसे ग्राम अुद्योगकी बात निकली है। देशके सारे धन्धे बरबाद हो गये हैं। मज़दूरी देनेवाले बहुतसे पेशे हम खो बैठे हैं। जिस पर सब निर्भर हैं, वह धन्धा खेतीका है। अिस धन्धेकी हालत बहुत बुरी हो गअी है। अुससे सम्बन्धित धन्धे भी नष्ट हो गये हैं। भाव अितने गिर गये हैं कि किसान हैरान हो गया है। किसान पसीना बहाकर जो पैदा करता है, अुसमें से अुसे पेट भर खानेको भी नहीं मिलता। अठारहों वर्णके अलग अलग धन्धोंके नियम टूट गये हैं। हरअेक चीज़ विदेशोंसे आने लगी है या मशीनसे बनने लगी है; और वह भी अिस हद तक कि हम निराधार हो गये हैं। अैसे संयोगोंमें गांधीजीने ग्राम अुद्योगकी कल्पना की है। जब अेक बार चीज़ें आसानीसे मिलने लग जाती हैं, तो काम करनेमें आलस्य आने लगता है। अिसी तरह कातने, पींजने और बुननेका घर-घरमें चलनेवाला काम बंद हो गया। अैसी स्थितिमें हमारा काम बड़ा कठिन है। जब तक हम लोगोंके हृदयोंमें प्रवेश करके सारे वातावरणको बदल न देंगे, तब तक कुछ नहीं हो सकेगा। यह परिवर्तन करनेका काम ग्रामसेवकका है। जितनी बन सकें अुतनी चीज़ें गाँवोंमें ही बनवानी चाहियें और अुन्हीं चीज़ोंका अुपयोग बढ़ाना चाहिये।

अन्तमें लोगों पर छाप तो हमारे चरित्रकी ही पड़ेगी। गाँववालों पर अिस बातकी छाप पड़ती है कि सेवक कितना त्यागी, संयमी, सेवाभावी और धीरजवाला है। अनेक अुतार-चढ़ाव आ जायँ, तो भी ग्रामसेवक अिन गुणोंसे अुन लोगोंके हृदयोंमें स्थान प्राप्त कर सकेगा।

हरिजनबन्धु, ८–३–१९३६

६९

किसान सभामें

[सन १९३६ में संयुक्त प्रान्तके किसान सम्मेलनमें अध्यक्षपदसे दिया हुआ भाषण ।]

संयुक्त प्रान्तके किसान भाअियोंकी अिस विराट सभाका अध्यक्ष पद मुझे देकर आपने मेरा जो सम्मान किया है, अुसके लिअे मैं आप सबका अन्तःकरणसे आभार मानता हूँ। लोक सेवा संघके वार्षिक अुत्सव पर मेरठमें जब मैं स्वागताध्यक्ष श्री टंडनजीसे मिला था, तब अुन्होंने मुझसे अिस प्रान्तीय किसान सम्मेलनका अध्यक्षपद स्वीकार करनेका आग्रह किया था। पहले तो मुझे बड़ा संकोच हुआ, क्योंकि अिस प्रान्तके किसानोंकी मैंने कोअी अैसी सेवा नहीं की, जिससे अितनी जिम्मेदारीका ओहदा स्वीकार करनेका मुझे अधिकार प्राप्त हो। दूसरे, मेरे मनमें भीतर ही भीतर यह डर भी था कि जो स्थानीय कार्यकर्ता अपनी पूरी शक्ति और तमाम साधनोंके साथ अथक परिश्रम करके रात-दिन आपकी सेवा कर रहे हैं, यदि अुनके साथ कार्यपद्धतिमें मेरा मतभेद हो गया तो मैं अुनके लिअे सहायक होनेके बजाय बाधक बनूँगा। अितने पर भी किसानोंके प्राण-स्वरूप पं० जवाहरलालजीकी अनुपस्थितिमें श्री टंडनजी और अिस सम्मेलनके प्रधानमंत्री श्री मोहनलाल गौतम — जो जवाहरलालजीके दाहिने हाथ हैं — अिन दोनोंने जब मुझसे आग्रह किया तो मैं मजबूर हो गया और अुनकी व आप सबकी अुदारता पर भरोसा करके और अपनी अयोग्यताका खयाल छोड़कर अिस भारी जिम्मेदारीका बोझा अुठानेको तैयार हो गया। पं० जवाहरलालजी की गैर-मौजूदगीमें मैं आपकी जरा भी सेवा कर सका, तो अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझूँगा।

सम्मेलनका कामकाज शुरू करनेसे पहले हमारे अेक बड़े नेता श्री टी० के० शेरवानीके, जिन्होंने अनेक मुसीबतोंका सामना करके देशकी और खास तौर पर अिस प्रान्तके किसानोंकी बड़ी सेवा की है, दुःखद अवसान पर हार्दिक शोक प्रकट करना हमारा धर्म है। पिछले चार-पाँच वर्षोंमें हमें जो मुसीबतें और यातनाअें सहनी पड़ीं, अुन सबमें वे हमारे साथ थे। अुनकी अकाल मृत्युसे देशकी और विशेषतः अिस प्रान्तकी बड़ी हानि हुअी है। हमने हिन्दू-मुस्लिम अैक्यके अेक सच्चे और जबरदस्त हिमायतीको खो दिया है। प्रभु अुनकी आत्माको शांति दे।

पं० जवाहरलालजीकी गैर-मौजूदगीसे यह परिषद बिना नाविककी नाव जैसी मालूम होती है। किसानोंके दुःखों, अुनकी हालतों और मुसीबतोंका अुन्हें पूरा खयाल है। अुन्होंने और अुनकी बीमार पत्नीने हमारे किसानोंकी जितनी सेवा की है, अुतनी अभी तक किसीने नहीं की। हमारे भलेके लिअे अुन्होंने अपना बादशाही ठाट-बाट छोड़ दिया और दोनोंने बाग-बगीचा, घरबार, कुटुम्ब-कबीला और अपने आपको भी बरबाद कर दिया है। जो रात-दिन हमारे दुःखसे दुःखी हो रहे हैं, हमारी गरीबी देखकर जिनका हृदय जल रहा है और जिन्होंने हमारी खातिर अमीरी छोड़कर फकीरी धारण की है, अैसे सहायकके बिना हम अेक कदम भी कैसे आगे रख सकते है? गैर-हाजिर होते हुअे भी अुनका आशीर्वाद हम पर बरस रहा है। हम अीश्वरसे यह शक्ति माँगते हैं कि अुनकी सिखाअी हुअी बातें न भूलें और प्रार्थना करते हैं कि वे दोनों हमारी डूबती हुअी नावके कर्णधार बन कर अुसे किनारे लगायें।

किसानोंकी कंगाली

हमारे देशमें ८० प्रतिशत लोग किसान हैं। अिस देशके किसानोंकी जैसी कंगाल और दुःखद स्थिति है, वैसी दुनियाके दूसरे किसी देशके किसानोंकी नहीं है। करोड़ों किसानोंको अेक जून पेटभर रूखी-सूखी रोटी तक नहीं मिलती। आधे पेट रहना तो किसानके लिअे मामूली बात हो गअी है। अुसकी हड्डियों और चमड़ीके बीचमें न खून है और न मांस। खोपड़ीके दोनों ओरके दो खड्डोंमें सिर्फ अुसकी दो निस्तेज आँखें दिखाअी देती हैं। अुसके चेहरे पर नूर तो नामको भी नहीं है। अुसमें न तो अुत्साह रह गया है और न अुमंग। अुसे अक्षरज्ञानसे भी वंचित रखा गया है। भूख और अज्ञानके भारसे दबे हुअे अिन भोले-भाले किसानोंमें कअी प्रकारके वहमों और सामाजिक बुराअियोंने घर कर लिया है। अुन्हें सफाअीके साधारण नियम पालनेकी तालीम भी नहीं मिली है। प्लेग, हैज़ा, पेचिश और मलेरिया तो अुनके हमेशाके साथी बन गये हैं। अनेक रोगोंसे पीड़ित, लाखों गाँवोंमें बसनेवाले अिन किसानोंके लिअे अिलाजकी कोअी सुविधा नहीं है। कड़ाकेकी ठंडमें काँपनेवाले अिन किसानोंके पास पहनने-ओढ़नेके लिअे काफी कपड़े भी नहीं हैं। अुनके रहनेके खंडहर और झोंपड़े अिन्सानके रहने लायक नहीं हैं। अुनके गाँवोंके चारों ओर गंदगी और बदबू फैलानेवाले मवेशियोंके गोबरके ढेर पड़े हुअे दिखाअी देते हैं। अुनकी अुम्र घटती जा रही है। भरी जवानीमें अुनके चेहरों पर बुढ़ापा नज़र आता है। वे करोड़ोंके कर्ज़में डूबे हुअे हैं। अुन्हें अुससे छूटनेका कोअी रास्ता नहीं सूझता। सरदी, गरमी और बरसात सहकर महीनों अथक परिश्रम करके अुनका पैदा किया हुआ अनाज खलिहानमें आनेसे पहले ही दाँत किटकिटानेवाले कअी

शिकारियोंका शिकार बन जाता है। फसल पूरी पैदा हुअी हो या न हुअी हो, अतिवृष्टि या अनावृष्टिकी आफत झेलनी पड़ी हो, पाला पड़ जानेसे फसल जल गअी हो, टिड्डी-दलने अनाजका सफाया कर डाला हो या अनाजके भावोंकी अुथल-पुथलसे भाव अितने अधिक गिर गये हों कि किसानोंको रुपयेके आठ आने ही पड़ते हों, तो भी सरकारी लगान तो चुकाना ही पड़ता है। पिछली बाकी या तकाबीका बोझ तो सिर पर सवार ही रहता है। अिसके सिवाय साहूकार अपना कर्ज़ और ब्याज वसूल करनेके लिअे फसल पर ही घात लगाये बैठे होते हैं। अिस प्रकार किसान और अुनके बाल-बच्चे भूखसे तड़पते रहते हैं और अुनका पैदा किया हुआ अनाज घर पहुँचनेसे पहले ही गायब हो जाता है। किसानोंकी यह दरिद्र दशा साबित करनेके लिअे आँकड़ों या प्रमाणोंकी कोअी ज़रूरत नहीं है। खुली आँखों रेलवेमें सफर करनेवाले किसी भी आदमीको दोनों तरफ हज़ारों मील तक अनेक खेतों और खंडहरोंमें कंगाल किसान नजर आते हैं। अिससे बड़ा सबूत और क्या चाहिये? जो चीज़ जहाँ-तहाँ आँखोंके सामने स्पष्ट दिखाअी देती है, अुसके लिअे सबूतकी जरूरत ही क्या है?

किसानोंकी दुर्दशाके कारण

किसानोंकी अिस दुर्दशाके लिअे ज्यादातर सरकारकी शासन नीति ही ज़िम्मेदार है। अूपरी तौर पर देखनेवाले बहुतोंको अैसा लगता है कि हमारे तमाम दुःखोंका मूल कारण ज़मींदार या ज़मींदारी प्रथा ही है। मगर काफी विचार करने पर समझमें आ जायगा कि अिस कथनमें अर्धसत्य है। मैं खुद भी किसान हूँ, किसानके घर पैदा हुआ हूं और अुसीमें पलकर बड़ा हुआ हूं। किसान परिवारोंकी गरीबीका मैंने खासा अनुभव किया है। मैं अपने ही परिश्रमसे अँधेरे कुअेंसे निकल कर जगतका प्रकाश देख सका हूँ। किसानोंके दुःखोंकी छोटी-छोटी बातें मैं अच्छी तरह जानता हूँ। ज़मींदारोंके प्रति मुझे जरा भी पक्षपात नहीं है। अगर किसानोंके कन्धों परसे आज ज़मींदारी प्रथाका बोझा अुतर जाय और अिससे अुनका कल्याण हो जाय, तो मुझसे ज्यादा खुशी और किसीको नहीं होगी। फिर भी मेरे विचार दूसरोंसे जरा अलग हैं। मेरा तो दृढ़ मत है कि हमारे दुःखोंके लिअे ज्यादातर सरकारकी शासन नीति ही जिम्मेदार है।

कुछ समय पहले मैंने आपके प्रान्तके गवर्नर सर हेरी हेगका अेक भाषण अखबारमें पढ़ा था। अुसमें अुन्होंने ज़मींदारोंको सलाह दी है कि ज़मींदार किसानोंका स्वाभाविक प्रतिनिधि है और अुसे अपना खोया हुआ स्थान फिरसे प्राप्त कर लेना चाहिये। पहली बात यह है कि यह सलाह बहुत देरसे दी गअी है और दूसरी बात यह है कि अिसका कोअी सबूत नहीं कि वह सच्चे

दिलसे दी गअी है। १५० सालसे भी ज्यादा लम्बे अरसेसे अिस राज्यकी लगातार अखंड हुकूमत जारी है। कुछ बड़े-बड़े ज़मींदार निरंकुश अधिकार और बेहद वैभव भोग रहे हैं। अिस अधिकार और वैभवने कितने ही किसानोंकी कमर तोड़कर अुनका कचूमर निकाल डाला है। न तो अिस तरफ हुकूमतका ध्यान गया है और न अुसने अिन भाग्यशाली ज़मींदारोंके सिवाय और किसी ज़मींदारका खयाल किया है। अिस बातका असली कारण यह है कि ज़मींदार केवल हुकूमतके ठाट-बाटकी नकल करनेमें ही अपनी कुलीनता समझते हैं और सत्ताधारियोंका रुख देखकर रैयत पर रुआब गाँठनेमें ही अपनी सलामती समझते हैं। अिस हुकूमतके बराबर खर्चीली और फजूल खर्च करनेवाली हुकूमत दुनियामें और किसी जगह नहीं है। हमारी अिस हुकूमतको लोकमतकी कोअी परवाह नहीं है। अिसे लोकमतको ठुकरानेकी आदत ही पड़ गअी है। यह हुकूमत लोगोंकी भूखका जरा भी विचार किये बिना करोड़ों रुपया फौज पर खर्च करके अपने आदमियोंको पाल रही है। जो अूँचे वेतन किसी भी धनाढ्य देशमें न होंगे, अुनसे भी अधिक वेतन अिस गरीब देशमें अूँचे सरकारी नौकरों (आअी० सी० अेस०)को देकर, अुसने अपने आदमी देश भरमें फैला दिये हैं। साथ ही साथ अिन सबको बड़े-बड़े मुगल बादशाहों जैसे अधिकार दे दिये गये हैं।

देशमें जगह-जगह अनेक मनुष्य लगातार भूखों मरनेके कारण अधमरे पड़े हैं। अिन भूखे किसानोंके बीच अुन्हींके करोड़ों रुपये पानीकी तरह बहाकर दबदबा और ठाट-बाट दिखानेके लिअे ही दिल्लीकी राजधानी बनाअी गअी है और वह भी अैसी जगह जो वर्षमें सिर्फ छः महीने ही काम आती है। अेक तरफ वैभवपूर्ण और दबदबेवाले आलीशान राजमहल खड़े हों और दूसरी तरफ किसानोंकी दरिद्रताभरी झोपड़ियाँ हों, अैसी ज़मीन-आसमानके फ़र्कवाली गैरज़िम्मेदार और निष्ठुर राजसत्ताका अिस युगमें तो कहीं भी अस्तित्व नहीं हो सकता। अिन राजप्रासादोंमें, प्रांतीय गवर्नरोंके महलोंमें और बड़े-बड़े ओहदेदारोंके बंगलोंमें दरबार होते हैं, पार्टियाँ दी जाती हैं, भोज, नाच-गान और शराबके दौर चलते हैं। अैसे अवसरों पर हमारे ज़मींदारोंको भाव भरे निमंत्रण मिलते हैं। अिन निमंत्रणोंके बदलेमें अिनसे ज्यादा खर्च करके अैसे ही जलसे करनेमें सभ्यता मानी जाती है। अिन जलसोंमें किसीको खयाल तक नहीं होता कि अिस खुशहाली और ठाटबाटके पीछे अनेकों गरीब किसानोंका बलिदान दिया जा रहा है। अिस तरहकी तालीम पाये हुअे अिन ज़मींदारोंसे, जो वर्तमान राजसत्ताकी धुँधली परछाअीं मात्र हैं, क्या आशा रखी जा सकती है? पाश्चात्य संस्कृतिकी तमाम बुराअियोंकी नकल करनेवाले ज़मींदारों परसे ज़मींदारी प्रथाकी

परीक्षा नहीं हो सकती। अुनमेंसे कुछकी स्थिति दयाजनक है। कुछ तो किसानोंमें पैदा हुअी जाग्रतिसे और कुछ कार्यकर्त्ताओंके विचारोंको सुनकर भड़क अुठते हैं। कुछ ये समझानेकी भी कोशिश कर रहे हैं कि अिस हुकूमतके कायम रहनेमें ही अुनकी सलामती है। अेक प्रकारसे यह बात सच है। अैसे ज़मींदारोंका निभाव अैसी निरंकुश और लोकमतको ठुकरानेवाली राजसत्तामें ही हो सकता है। जब राजसत्ता लोकमतको ही अपनी नीति समझने लगेगी यानी जब जनताका राज होगा, तब ये ही ज़मींदार किसानोंका प्रेम संपादन करनेकी अिच्छावाले और अुनके सुख-दुःखके साथी ही नहीं, बल्कि अुनके प्रति सेवाभावी बन जायँगे। आजकलके ज़मींदार और जागीरदार हमारे देशकी संस्कृतिकी विशेषताके प्रतिनिधि नहीं हैं। अिस पुण्यभूमिमें धनवानों और ज़मींदारों या सत्ताधारियोंकी पूजा कभी नहीं हुअी। त्यागियों और तपस्वियोंके चरणोंमें धनवान, जागीरदार और सत्ताधारी सिर झुकाते रहे हैं। त्यागियों और तपस्वियोंके नाम अमर हो गये हैं और गाँव-गाँव व घर-घर अुनके गुणगान हो रहे हैं। आज अिस कलिकालमें भी पश्चिमी सभ्यताकी अग्रणी सत्ताके तेज प्रवाहमें बहे बिना और अुसकी तड़क-भड़कसे चौंधियाये बिना, हिम्मत और दृढ़तासे अपनी जागीर और गाँवको जोखममें डाल कर, हुकूमतकी नाराज़ी सहकर और तरह-तरहके संकटोंका सामना करके किसी-किसी जागीरदार या ज़मींदारने हमारी सेवा की और आर्य संस्कृतिका आदर्श अुपस्थित किया है। राजसत्ताका आदर्श बदलते ही हमारे ये ज़मींदार अपने जीवनका आदर्श बदल कर, करोड़ों भूखों मरनेवालों और झोंपड़ोंमें रहनेवालोंके बीचमें रह कर, भोगविलासको पाप समझेंगे और हमारी सेवा करने लगेंगे। आज भी ज़मींदारोंको अपने स्वाभाविक प्रतिनिधि बननेकी सलाह देनेवाली सरकार अपनी नीति बदल दे, करोड़ोंके बजटमें किसानोंकी भुखमरी, अुनकी शिक्षा और तन्दुरुस्तीके लिअे ज़रूरी साधनोंका समावेश करने लगे और लोकमतको ही अपनी नीति समझने लगे, तो ये ही ज़मींदार समझ जायँगे कि किसानोंके सुख-दुःखका खयाल रखना और अुनकी सेवा करना हमारा पहला फर्ज़ है। मगर मैं यहाँ अिस बारेमें अपना मत सिद्ध करनेके लिअे नहीं आया हूँ। अिस महत्वपूर्ण सवालके सम्बन्धमें अिस प्रांतके सच्चे नेता पं० जवाहरलालजीकी सलाह ही सच्ची मार्ग-दर्शक साबित होगी। मैं तो सिर्फ़ अुनकी ग़ैर-मौजूदगीमें अुनके प्रतिनिधिकी तरह अपनी अल्प शक्तिके अनुसार अुनके लौटने तक आपको अपना कर्तव्य समझा सकूँ, तो अपना फर्ज़ पूरा हुआ समझूँगा। अन्तमें तो अुनके अनुभवोंका निचोड़ ही आपके लिअे सर्वमान्य होना चाहिये, क्योंकि अुन्होंने आपके लिअे जो स्वार्थ-त्याग किया है, जो दुःख अुठाये हैं और जो भगीरथ प्रयत्न किया

है, वह किसीने नहीं किया। अुनकी सत्यनिष्ठा और गरीबोंके लिअे अुनके दिलमें जलनेवाली आगके बारेमें दुश्मनको भी शक नहीं है।

राजतंत्रमें किसानोंका स्थान

आजकलके राजतंत्रमें किसानोंकी आवाज़ ही नहीं है। सच पूछा जाय तो हमारे देशमें किसी भी वर्गकी आवाज़ नहीं है। विदेशी अिच्छानुसार कारोबार चलाते हैं। निरंकुश शासन नीतिके फलस्वरूप आज हमारी यह दशा हो गअी है। जब तक शासनमें किसानोंकी पूरी आवाज़ नहीं होगी, यानी किसानोंकी आबादी और देश व राज्यके लिअे अुस आबादीकी अुपयोगिताके खयालसे किसानोंको हुकूमतमें अुचित स्थान नहीं दिया जायगा, तब तक किसानोंके साथ पूरा न्याय होनेकी कम सम्भावना है। हमारे देशमें किसानोंकी आबादी ८० प्रतिशतसे भी ज्यादा है। अकेला किसान ही रात-दिन मेहनत करता है। सरदी, गरमी और बरसातकी झड़ियाँ सहन करता है; ढोरके साथ ढोर बनकर भूखे पेट मज़दूरी करता है; पसीना बहाकर धन पैदा करता है; और ज़मींदार, साहूकार और राज्यका पोषण करता है। जगतको पालनेवाले किसानको तो जगतका अन्नदाता मानना चाहिये। अुसका स्थान सबसे पहला समझना चाहिये। अिसके बजाय दूसरोंका पोषण करनेवाले अिस किसानको अपना पेट भरनेके लिअे तरसना पड़ता है। अिस राज्यमें अुसे सभी बेचारा, गरीब, कंगाल और मूर्ख कहकर ठुकराते हैं। अिस राज्यमें अुसकी गिनती मनुष्योंमें नहीं होती। अुसके दुःखोंकी फ़रियाद भी कोअी नहीं सुनता, और न अुसकी बात ही कोअी सच मानता है। हमारे किसानोंको जब स्वाभिमानका खयाल होगा और राजतंत्रमें अुचित स्थान मिलेगा, तभी अुनके अिन दुःखोंका अन्त होगा।

नया विधान

शासन-सुधारके नामसे नया विधान तैयार हो रहा है। अिस विधानका देशभरमें अेक स्वरसे विरोध हुआ है। अिस नये विधानसे तो किसानोंकी दशा आजसे भी ज्यादा खराब हो जायगी। मौजूदा खर्च और अनावश्यक खर्चवाले प्रबन्धमें सुधारके नामपर करोड़ों रुपयोंका खर्च बढ़ जानेवाला है। मौजूदा असह्य भार कम होनेकी अिच्छा रखनेवाले किसानोंका बोझा अुलटा बढ़ जानेका खतरा पैदा हो गया है। अिस विधानमें दोषका बोझ देशी लोगोंके मत्थे मढ़ा जा सके, अैसी चालाकी करके सरकारने असली सत्ताकी सभी कुंजियाँ अपने हाथमें रखी हैं। अिसमें राजा-महाराजाओं, ज़मींदारों और जागीरदारोंको अपने हथियार बनाकर, अुनके द्वारा मनमानी शासन नीति काममें लानेकी योजना की गअी है। अिसमें भिन्न-भिन्न जातियोंके बीच स्थायी झगड़ेके बीज बोकर अपनी मुराद पूरी करनेकी चालबाजी है। अिस विधानमें रोजमर्रा

होनेवाली शोषण नीतिको अनुकूल और स्थायी रूप देनेकी प्रचुर सामग्री अिकट्ठी कर दी गअी है। देशका प्रतिनिधित्व करनेवाली हमारी राष्ट्रीय कांग्रेसने, जिसने हममें जाग्रति और चेतना पैदा की है, जिसने अनेक अवसरोंपर दुःखमें हमारा साथ दिया है और भविष्यमें भी देगी, अपनी स्पष्ट राय प्रकट कर दी है कि यह विधान देशका अहित करनेवाला और देशको पीछे ले जाने वाला होनेके कारण रद्द कर देने लायक है। अिसलिअे अिस मामलेमें अब हमें नअी राय देनेकी ज़रूरत नहीं रहती। आज तो लगभग सारा ही देश कांग्रेसकी रायसे सहमत है। परन्तु हमारी मौजूदा हालतमें हम पर यह विधान लाद देनेका बड़ा प्रयत्न हो रहा है और आज तो अिस प्रयत्नके सफल होनेके पूरे चिन्ह दिखाअी देते हैं। आज तक हम जिन दुःखोंकी पुकार करते रहे हैं, अुनके कम होनेकी जरा भी आशा नहीं दिखाअी देती। हम वर्षोंसे चिल्ला रहे हैं कि लगानकी दर घटाकर हमारे बूतेके अनुसार कर देना चाहिये। पिछले बाकी रहे हुअे लगान और तकावीके बोझको रद्द कर देना चाहिये। लम्बे अरसेसे चले आनेवाले कर्ज़के भारसे किसानोंको अब किसी भी तरह मुक्त करना चाहिये। खेतोंमें पिलानेके पानीकी दर कम करके अुसका टैक्स किसानोंके बूतेके अनुसार ही रखना चाहिये। अुनके अधिकार छीनना बन्द हो जाना चाहिये। अगर छोटे किसानोंका गुजारा होना मुश्किल हो जाय, तो अुनका लगान माफ करना चाहिये। जो ज़मींदार किसानोंसे नज़राने और भेंट लेते हैं, अुनसे बेगार कराते हैं और छिपे तौर पर लागबाग लेते हैं, अुन्हें क़ानूनके अनुसार सज़ा होनी चाहिये। मगर अिन सभी मुश्किलोंमें से अेकाधके लिअे भी सरकारकी तरफसे सीधे तौर पर रिआयत होनेकी ज़रा भी आशा नहीं है।

गांधी-अिरविन समझौतेके दिनोंमें और अुसके बादके अेक-दो वर्षोंमें हम पर जो विपत्तियाँ आअीं, अुनका वर्णन करनेकी यहाँ कोअी ज़रूरत नहीं है। अनाज और खेतीकी पैदावारकी हरअेक चीज़के भाव अितने घट गये हैं कि किसानोंके लिअे यह सवाल पैदा हो गया है कि लगान कैसे अदा किया जाय। प्रांतीय कांग्रेस कमेटीने सरकारके सामने अपनी शिकायत पेश की और वाजिब राहत मिलनेके लिअे सभी संभव प्रयत्न किये। पं० जवाहरलालजीने भी सरकारको सच्ची हालत समझानेकी कोशिश की। महात्माजी भी अिस प्रान्तके अुस वक्तके गवर्नरसे मिले, अपनी माँग समझानेकी कोशिश की और किसान कितना लगान दे सकते हैं, अिस सिलसिलेमें सलाह दी। जब महात्माजीका विलायत जाना तय हो गया, तब अुन्होंने अपनी तरफसे वाअिसरॉय साहबको अिस प्रान्तके कांग्रेस कार्यकर्ताओंकी कठिनाअियाँ समझाअीं। यहाँसे रवाना होते समय महात्माजीको अुम्मीद थी कि अुनके साथ अुचित न्याय किया जायगा। परन्तु अुनकी रवानगीके

साथ ही विलायतकी सरकारका ढाँचा बदल गया और भारत-सरकारकी नीति भी बदल गअी । अूँचे सरकारी नौकरोंमें से कुछको तो यह समझौता पहलेसे ही पसंद नहीं था । अिन सबको मनचाही चीज़ मिल गअी । विलायतमें मज़दूर-दलके हारते ही देशभरमें चारों ओर समझौतेका खुल्लम खुल्ला भंग होना शुरू हो गया । अंतमें गांधीजी विलायतसे लौटे, तब तक तो समझौतेके टुकड़े-टुकड़े करके किसानोंको पूरी तरह कुचल डालने और कांग्रेसको दबा देनेकी योजना तैयार हो चुकी थी । अुस वक्त कांग्रेसकी लगाम मेरे हाथमें थी । जब और कोअी अुपाय न रहा, तो आपकी तरफसे आपके प्रांतकी कांग्रेस कमेटीने किसानोंकी माँग मंजूर न होनेके कारण अुन्हें लगान न भरनेकी सलाह देनेके लिअे मुझसे मंजूरी माँगी । अिस सिलसिलेमें कहीं-कहीं पं० जवाहरलालजी और अिस प्रान्तके मुख्य कार्यकर्ताओंके मत्थे दोष मढ़ा गया था । अिस मौक़े पर अुस कार्रवाअीका खुला समर्थन करना मैं अपना धर्म समझता हूँ । मेरी पक्की राय है कि अुस वक्त पं० जवाहरलालजी, हमारे स्वागताध्यक्ष श्री टंडनजी और अिस प्रान्तके दूसरे कांग्रेस कार्यकर्ताओंने आपको वह सलाह न दी होती, तो वे अपने कर्त्तव्यमें चूकते । मुझे ज़रा भी शंका होती तो अिस कदमके लिअे कभी मंजूरी न देता । अुस अवसर पर यहाँकी कांग्रेस कमेटीने आपकी मदद की, आपके दुःखोंमें शरीक हुअी और पूरी ताक़तसे आपकी और प्रान्तकी अमूल्य सेवा की । अिसके बाद आपको और कांग्रेसको बरबाद करनेके लिअे सरकारने जो कुछ किया, अुसकी तफसीलमें जानेकी ज़रूरत मालूम नहीं होती । अुससे सरकारको और हमें अच्छा अनुभव हुआ । हिन्दुस्तानके अितिहासमें यह कांड अमर रहेगा । हमने ये मुसीबतें बरदाश्त न की होतीं, तो हमारा अस्तित्व हमेशाके लिअे खतरेमें पड़ जाता । अिसके बाद जो भी रिआयतें मिलीं, अुनका यश अुन्हीं लोगोंको मिलना चाहिये, जिन्होंने अपनी ज़मीन-जायदाद खोकर अनेक मुसीबतें सहन की हैं । अुनका अुपकार हमें कभी न भूलना चाहिये । अिस मौक़े पर हम अुन सबको मुबारकबाद दें ।

निराशाका कोअी कारण नहीं

निराश होनेका कोअी कारण नहीं है । हमारे पीछे सारा देश स्वतंत्रताके संग्राममें कूद पड़ा । लाखों आदमियोंने तरह तरहके बलिदान दिये । निःसत्व और निःशस्त्र लोगोंमें यकायक आत्मविश्वास आ गया । जनताने दुनियाकी सबसे बड़ी ताकतका मुकाबला करनेकी हिम्मत दिखाअी । यह हमारी महान विजय है । सत्याग्रहकी लड़ाअीमें कभी हार तो होती ही नहीं । हमारे स्वार्थ-त्यागके अनुसार ही हमें फल मिला है । राष्ट्रमें जो जाग्रति और आत्मश्रद्धा प्रगट हुअी, वह अिस अवसरका सबसे बड़ा परिणाम है । अिस पूँजीके ज़ोरसे हम

आगे व्यापार कर सकते हैं। यह क़बूल करना होगा कि हमें जो कुछ चाहिये, अुसे प्राप्त करनेके लिअे जितना और जैसा त्याग करना चाहिये था, अुतना करनेमें जनता असमर्थ साबित हुअी। अुसमें थकावट मालूम हुअी। नेताओंने जनताकी शक्तिका अन्दाज लगाकर सत्याग्रहकी लड़ाअी रोक दी। लड़ाअीका ढंग बदल गया। असेम्बलीमें हमारे प्रतिनिधि भेजना तय हुआ। अिस मौके पर हमने कांग्रेसके प्रति वफ़ादारी और प्रेम दिखा कर संसारको बता दिया कि हम थक भले ही गये हों, परंतु हमारे दिलकी भावनायें तो जैसीकी तैसी प्रबल और जाग्रत हैं। अितनी बड़ी लड़ाअीमें अुतार-चढ़ाव तो आते ही रहेंगे। देश-कालकी मर्यादाके अनुसार लड़ाअीके ढंग भले ही बदलते रहें, परन्तु अेक बार स्वतंत्रताकी लड़ाअी छिड़ जानेके बाद वह किसी भी देशमें आज़ादी पाये बिना रुकती नहीं। हमारे देशमें भी नहीं रुकेगी। हिंसक युद्धोंमें भी अैसी या अिससे भी अधिक मुश्किल हार-जीत कअी बार हुअी है। हमारे सामने वर्तमान युगके युरोपीय युद्धकी ताजा मिसाल है। हमारी आँखोंके सामने ही अेक बार युद्ध शुरू होते ही जर्मन सेना अेकके बाद अेक अनसोची जीत पाती हुअी, सारे फ्रांसको चीरकर पेरिसके दरवाजे तक जा पहुँची। अैसी भविष्यवाणी होने लगी कि थोड़े समयमें जर्मन सम्राट कैसर सारे युरोपका पहला राजा बन जायगा। परंतु कालचक्रको घूमते देर न लगी। और वही जर्मन सेना हार खाकर पीछे हटती हुअी अपने देशमें घुस गअी। अन्तमें जर्मनी हार गया और अुसे शर्मभरी शर्तें मान कर सुलह करनी पड़ी। अितने पर भी जर्मन जाति निराश न हुअी और अुसने हिम्मत न छोड़ी। थोड़े ही समयमें फिर अेक होकर और मजबूत संगठन करके वह अितनी बलवान बन रही है कि तमाम युरोपकी जातियोंको सावधान रहना पड़ता है, और दुनिया चिन्तामें पड़ गअी है कि कल क्या होगा! तो जिसने कोअी सुलहकी शर्तें नहीं कीं और जिसने हिंसा पर आधार नहीं रखा, अुसे निराश होनेका क्या कारण है?

दो प्रकारकी लड़ाअी

सत्याग्रहकी लड़ाअी हमेशा दो प्रकारकी होती है: अेक जुल्मोंके विरुद्ध और दूसरी अपनी दुर्बलताओंके विरुद्ध। हमने सरकारके जुल्मों या सरकारकी आड़में होनेवाले ज़मीदारोंके अत्याचारोंके विरुद्ध लड़ाअी मुलतवी कर दी है। हम थक गये हैं, अिसलिअे हमें विश्राम लेनेका अधिकार और धर्म प्राप्त हुआ है। थका हुआ मनुष्य दौड़ने लगे, तो स्थान पर पहुँचनेके बजाय जान गँवा बैठता है। अैसे समयमें विश्राम लेना और आगे बढ़नेकी ताक़त जुटाना अुसका धर्म हो जाता है। अिसके लिअे जुल्म सहते सहते आराम लेने और शक्ति प्राप्त करनेका दोहरा प्रयत्न करना चाहिये। जुल्मोंके खिलाफ लड़ाअी मुल्तवी करनेका

यह अर्थ नहीं है कि हमारी कमज़ोरियोंके खिलाफ भी लड़ाअी बन्द हो गअी। अिस विश्रान्तिकालमें हमें अपनी खामियोंके विरुद्ध सतत आन्दोलन करके शुद्ध सत्याग्रहके लिअे शक्ति प्राप्त करनेकी कोशिश करनी चाहिये। सत्याग्रह कायरोंका हथियार नहीं है। कमज़ोर किसानोंकी न सरकार दाद देती है और न अुन्हें सत्याग्रह करना ही आता है। ताक़तवर किसानों पर अुनकी मरज़ीके खिलाफ कोअी राज्य नहीं कर सकता। यह भी हो सकता है कि ताक़तवर बन जाने पर अुन्हें सत्याग्रह करनेकी ज़रूरत ही न पड़े।

किसानोंकी शक्ति

किसानोंको अपनी शक्तिका खयाल ही नहीं है। जब जब मैं यह सुनता हूँ कि संसारका पालन करनेवाला किसान पामर है, कंगाल है और रंक है, तब तब मुझे अपार दुःख होता है। परन्तु किसान अपनी शक्ति भूलकर खुद यही मानने लगा है, यह जानकर तो मुझे और भी दुःख होता है। करोड़ोंकी संख्या ही अुसका सबसे बडा बल है और अिससे भी बडा बल अुसकी मेहनत करनेकी अटूट शक्ति है। जब किसानोंको अपनी अिन दो शक्तियोंका ज्ञान हो जायगा, अुस दिन अुनके सामने कोअी टिक नहीं सकेगा, ज़ालिमके हाथ कमज़ोर हो जायँगे और राज्यकी लगाम किसानोंके हाथमें आ जायगी। किसानोंको अुनकी अिस शक्तिका भान कौन कराये? आजकल किसान कार्यकर्ता अच्छा काम करते नज़र आ रहे हैं। सब अपनी अपनी शक्ति और बुद्धिके अनुसार काम कर रहे हैं और अुन सबको धन्यवाद देना हमारा धर्म है। अितने पर भी मेरी नम्र राय यह है कि किसानोंका भला तो खुद किसान ही कर सकेंगे। आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता। किसान अीश्वरकी दी हुअी दो आँखों पर पट्टी बाँधकर चलेंगे तो खड्डेमें ही गिरेंगे, अिसमें आश्चर्य ही क्या है! आँखें होते हुअे अन्धा बननेवालेको कोअी रास्ते नहीं लगा सकता। अिसलिअे किसानोंको अपना कल्याण करना हो, तो अुन्हें अपनी अनेक दुर्बलताओंके विरुद्ध ज़बरदस्त लड़ाअी करनी पड़ेगी। सरकार या ज़मींदारोंके खिलाफ लड़नेसे यह काम ज्यादा कठिन है। परन्तु अिस काममें वे जितने सफल होंगे, अुतनी ही अुनकी ताक़त बढ़ेगी और अुन पर होनेवाले जुल्म बन्द होंगे।

संगठन

संगठनके बिना संख्या-बल बेकार है। सूतके बारीक तार जब अलग-अलग होते हैं, तो अितने कमज़ोर होते हैं कि हवाके झोंकेसे भी टूट जाते हैं। परन्तु जब अधिक संख्यामें अिकट्ठे होकर मुहब्बत करते हैं और ताने-बानेमें बुने जाकर कपड़ेका रूप लेते हैं, तब अुनकी मज़बूती, सुन्दरता और अुपयोगिता अद्भुत

बन जाती है। किसान जब सूतके तारोंकी तरह परस्पर प्रेमसे अेक संगठन क़ायम कर लेंगे, तब अुन्हें अपनी शक्तिका पता लगेगा और अुसका अंदाज़ होगा। अकेला-दुकेला किसान सबकी ठोकरें खाता रहा है और खाता रहेगा। अिसलिअे किसान अपना भला चाहते हों, तो अुन्हें अपना मज़बूत संगठन बनाना चाहिये और अेक दूसरेके प्रति प्रेम और विश्वास पैदा करना चाहिये। अुन्हें यह समझ लेना चाहिये कि सब किसान अेक ही पिताकी सन्तान हैं। मैं 'किसान' की अिस व्याख्यामें अिस प्रान्तके अनेक छोटे ज़मींदारों और हमारे साथ रात-दिन खेतोंमे मेहनत करने-वाले मज़दूरोंका भी समावेश करता हूँ। हमारी यह सभा अिस प्रान्तके हरअेक किसानका संगठन करनेके अिरादेसे की गअी है। अिस संगठनको 'केन्द्रीय किसान संघ' का नाम देनेका विचार है। सच्चा संघ-बल पैदा करके अपने आपका भला चाहते हों, तो प्रान्तभरके सभी वयस्क किसान भाअी-बहनोंको अिस संघके सदस्य बन जाना चाहिये। अितने ही से काम नहीं चलेगा, अिस संगठनको जीता-जागता रखने और शक्तिशाली बनानेके लिअे अच्छी तरह प्रयत्न करना चाहिये।

किसानोंका स्वाभिमान

किसानोंमें स्वाभिमानकी भावना जाग्रत हुअे बिना अुनका कभी कल्याण नहीं होगा। किसानोंमें अिस मान्यताने घर कर लिया है कि दूसरे लोग अुनसे ज्यादा भाग्यशाली और बड़े हैं और वे खुद कमनसीब और दुर्बल हैं। जो किसान कमसे कम पाप करता है, पसीना बहाकर अपना पेट भरता है, जिसे दूसरे पर निर्भर रहनेकी जरा भी ज़रूरत नहीं, अुल्टे जिस पर सबका आधार है, वह अपनेको निराधार और हलका मानने लग गया है। अिसलिअे अुसकी शक्ति दिन प्रतिदिन घटती जा रही है। जितना कष्ट किसान सहता है, अुतना कोअी नहीं सहता। मगर अुसका सहन किया हुआ सब कुछ मिट्टीमें मिल जाता है। अूपरसे अुसके भाग्यको दोष दिया जाता है और वह दया, तिरस्कार और मज़ाकका पात्र माना जाता है। जितना दुःख वह बिना समझे अुठाता है, अुससे आधा भी अपने हक़ोंकी रक्षाके लिअे या न्याय प्राप्त करनेकी अिच्छासे बुद्धिपूर्वक अुठाये, तो अुसके अुठाये हुअे दुःख तपस्याके रूपमें फलदायक साबित हों और अुसमें रही हुअी अिन्सानियतको जगाकर अुसे स्वाभिमानका भान करायें। किसानोंको न्याय माँगनेके लिअे अर्ज़ी या आजिज़ी करनेकी आदत छोड़ देनी चाहिये। अुन्हें अितना तो जान ही लेना चाहिये कि अपना हक़ और अिन्साफ किस तरह लिया जाता है। अुन्हें अपनी रक्षाके लिअे शक्ति प्राप्त कर ही लेनी चाहिये। किसानोंको न्याय माँगनेमें बात जरा भी बढ़ाकर नहीं कहनी चाहिये। दया माँगनेवाला किसान किसान नहीं, भिखारी है; और भिखारीको तो

औरोंकी दया पर ही जीना पड़ता है । अैसे किसानोंको स्वराज्यका सपना छोड़ देना चाहिये । मैं किसानोंको भिखारी बनते नहीं देखना चाहता । दूसरोंकी मेहरबानीसे जो कुछ मिल जाय, अुसे लेकर जीनेकी अिच्छाकी अपेक्षा अपने हक़के लिअे मर मिटना मैं ज्यादा पसंद करता हूँ । किसानोंको राजदरबार, साहूकार या ज़मींदार वर्ग परसे अपनी पामरता और लबारीपनकी छाप मिटा देनी चाहिये । अैसा करनेमें कुछ समयके लिअे अुनके मौजूदा दुःखोंमें थोड़ी वृद्धि हो जाय, तो अुसे सह लेनेकी हिम्मत दिखानी चाहिये । अिस तरह समझ-बूझकर दुःख सहन किये बिना स्थायी सुख मिल ही नहीं सकता ।

अदालतोंका त्याग

किसानोंको आपसमें झगड़े-टंटे करके मुकदमेबाजी करनेकी चाट छोड़ देनी चाहिये । लड़ाअी-झगड़ोंका निपटारा आपसमें समझकर पंचायतसे करा लेना चाहिये । गाँवके प्रमुख किसानोंको अैसा विश्वास संपादन करना चाहिये, जिससे गाँववाले अुनकी न्यायबुद्धि पर भरोसा कर सकें । हजारों किसान अदालतोंमें जाकर रोज़ रुपया और समय बरबाद करते हैं । नतीजा यह होता है कि न्याय प्राप्त करनेके बजाय वे अपना सर्वस्व खोते हैं और हमेशाके लिअे दुश्मनीके बीज बोते हैं । किसानोंको अेक दूसरेके प्रति अुदारता दिखाना सीखना चाहिये । ज़रा ज़रा सी बातोंमें आपसमें झगड़ने या अीर्ष्या-द्वेष रखनेके बजाय अेक दूसरेसे माया-ममता रखना और मदद देना सीखना चाहिये । संगठन शक्ति पैदा करनेवाले किसानोंको अेक दूसरेके खिलाफ दावा करके कभी अदालतमें नहीं जाना चाहिये ।

सहायक अुद्योग

बहुतसे किसानोंके साथ निकट संपर्कमें आनेके बाद अनुभवसे मैं कह सकता हूँ कि किसी भी किसानका अकेली खेतीसे गुज़र नहीं हो सकता । अुनकी मेहनत-मजदूरीके बावजूद भी थोड़ी बहुत तंगी रही जाती है । अैसा भी अेक समय था जब खेती-बाड़ीसे बचनेवाले समयमें किसानोंको मेहनत-मजदूरी करके अपनी कमी पूरी करनेके लिअे हर गाँवमें कोअी न कोअी गृहअुद्योग मिल जाता था । अुनका मुख्य गृहअुद्योग कपड़ेका था । करोड़ों किसानोंकी झोंपड़ियोंमें चरखा गूँजता था और सूत काता जाता था । लाखों जुलाहे गाँव-गाँवमें कपड़ा बुनते थे । लाखों किसान अपने ही घरोंमें कपास ओटते थे । अिस अुद्योगसे करोड़ों किसानोंके घरमें फुरसतके समय रोज़ दो-चार पैसे पैदा हो जाते थे, लाखों जुलाहोंकी रोज़ी चलती थी । अितने चरखे, ओटनी और करघे वगैरा बनानेमें गाँवके कारीगरों और मजदूरोंको भी रोजी मिलती थी । विदेशी सरकारने कअी आड़े-टेढ़े तरीकोंसे अपने देशके व्यापारको प्रोत्साहन देकर अिस देशके करोड़ों किसानों और मज़दूरोंकी रोज़ी अेक साथ छीन ली और अुन्हें हमेशाके

लिअे निरुद्यमी बना दिया। पश्चिमी सभ्यताके अिस युगमें, यंत्र शक्तिके अुपासकोंने हमारी रोज़मर्राकी ज़रूरतकी चीज़ोंका अवलोकन करके जो जो चीज़ें देहातमें बनती थीं, अुन सबको यंत्र शक्तिसे तैयार करके ग्रामअुद्योगोंका सत्यानाश कर दिया। अिससे आज हमारे किसानोंको खेतीका मौसम पूरा होने पर सालमें छः महीने आकाशकी तरफ़ ताकते हुअे काम-धन्धेके बिना बैठे रहना पड़ता है। अिस ज़बरदस्तीकी फ़ुरसतने हमारी रोज़ी नष्ट कर दी और अुससे भी अधिक हमें सदाके लिअे बेकार और आलसी बना दिया। अिस हुकूमतका यह सबसे बड़ा पाप है। किसानोंके पीछे देहातके लाखों कारीगरों और मज़दूरोंका रोजगार भी नष्ट हो गया और हमारे देहात निस्तेज और प्राणहीन खंडहर बन गये। अिन नष्ट हुअे अुद्योगोंको फिरसे ज़िंदा करने और नाशके किनारे पहुँचे हुअे अुद्योगोंको बचा लेनेके भगीरथ काममें महात्माजीका साथ देकर बुद्धिमान किसानोंको अपने कल्याणका मार्ग अपनाना चाहिये। जहाँ हो सके वहाँ हरअेक किसानका धर्म है कि वह अपने ज़रूरी कपड़ेके लिअे आवश्यक सूत घर पर ही कात लेनेकी व्यवस्था कर ले। किसान अगर ध्यान दे तो अपने कपड़ेके लिअे आवश्यक कपास घरके बाड़ेमें, चौकमें या खेतकी बाड़ोंमें कपासके पेड़ अुगाकर पैदा कर सकता है। अगर किसान काते हुअे सूतका कपड़ा घरमें ही बुन ले, तो अपनी आमदनीकी कमी पूरी कर सकता है। साथ ही साथ किसानको अपनी ज़रूरतकी हरअेक चीज़के लिअे शहरमें दौड़नेके बजाय गाँवमें तैयार होनेवाली वस्तुओंका अुपयोग करना सीखना चाहिये। अिस प्रकार हमारे बरबाद होते हुअे गाँवोंको कुछ न कुछ मदद मिल जायगी। शहरोंका अन्धा अनुकरण करके चाय और सिगरेट जैसी अनावश्यक, शरीरको नुक़सान पहुँचानेवाली और गाँवको भिखारी बनानेवाली चीज़ोंका शहरोंसे गाँवोंमें आना रोकना चाहिये। सच्चा संगठन बनाकर अैसे हरअेक मामलेमें किसानोंको सही रास्ता बताना और अुनकी रक्षा करनी चाहिये।

गैरज़रूरी खर्च

किसानोंको मृत्युके बाद भोज देनेका व्यर्थ खर्च नहीं करना चाहिये। कुटुम्बमें कोअी मर जाय, तो शोक मनाना चाहिये। अुसके बजाय अुल्टे हम मिथ्याभिमान और अज्ञानके मारे कर्ज करके कुटुम्बियों और स्नेहियोंको खिला कर खुशी ज़ाहिर करते हैं। अिससे तो हमारी गिनती जंगलियोंमें होगी। मृत्यु-भोज खाने और खिलानेवाले दोनोंको नुकसान होता है। दोनों मूर्खोंमें गिने जाते हैं। खर्च करनेवाला ऋणभारसे दबकर अपनेको और कुटुम्बियोंको पायमाल करता है। हम अपने अैसे कामसे मूर्ख माने जाते हैं। हमारे पास रुपया हो और हम मरनेवालेका कल्याण चाहते हों, या यह चाहते हों कि अुसका नाम

सदाके लिअे बना रहे, तो वह रुपया बच्चोंकी पढ़ाओीमें या गाँवकी सफ़ाओी जैसे सार्वजनिक काममें लगाना ठीक है। लेकिन अेक वक्तके भोजन पर अितना खर्च करनेकी बेवकूफ़ी कभी नहीं करनी चाहिये।

अिसी तरह शादी वगैराके मौकेपर भी अपने बूतेके अनुसार ही खर्च करना चाहिये। अपनी मर्यादासे बाहर जाकर, क़र्ज़ करके खर्च न करना चाहिये।

बाल-विवाह

किसानोंमें अेक सबसे बड़ा दोष यह है कि वे बच्चोंका विवाह बहुत ही कम अुम्रमें कर देते हैं। बचपनमें बच्चोंकी शादी करके, कच्ची अुम्रमें अुन पर गृहस्थीका बोझा लाद देना अपने बच्चोंकी हत्या करनेके बराबर है। अिस कुरीतिसे किसानोंकी औलाद दिनोंदिन कमजोर होती जा रही है। यह हमारे लिअे शर्मकी बात है कि सरकारको बाल-विवाह-निषेध क़ानून बनाना पड़ा। स्वराज्यके लिअे हमारी योग्यताके विरुद्ध यह अेक बड़ा कारण बताया जाता है। हमारी अिस खामीसे दुनिया भरमें हमारी बदनामी होती है। दुश्मन हमारी अिस खामीको सामने रखकर सारे संसारमे हमें बदनाम करते हैं। प्रकृतिके नियमोंका तो पशु भी पालन करते हैं। लेकिन हम पशुओंकी मर्यादाका भी अुल्लंघन कर दें, तो किसान कहलानेका हमें क्या अधिकार है? समझदार किसानोंका धर्म है कि वे अपनी कमज़ोरियाँ मिटाकर और माथे परका यह कलंक धोकर अपने बच्चोंको अिस बड़ी आफ़तसे बचा लें।

सफ़ाओी

किसानोंको गाँवके गली-कूँचों, रास्तों, मोहल्लों, कुओं, तालाबों और गोचरोंको साफ़ रखना चाहिये। रास्ते साफ रखने चाहियें। गाँवके चारों ओर गोबरके ढेर और गाँवके भीतर जगह जगह कूड़ा-करकट और गन्दगीका तो पूछना ही क्या! हम अपने घरके आँगन तक साफ़ नहीं रखते। अिस गन्दगीके कारण मक्खी, मच्छर, खटमल, डाँस वगैरा जीव-जन्तु हमें रात-दिन परेशान करते हैं और तरह तरहकी बीमारियाँ फैलाते हैं। अिन सब मामलोंमें सरकारसे हमारी जिम्मेदारी ज्यादा है। गाँवके आसपास कहीं भी शौच जाना सफ़ाओी और सभ्यताके नियमके विरुद्ध तो है ही, साथ ही केवल अज्ञानके कारण अैसी क़ीमती खाद नष्ट होनेसे किसानोंका बेहद नुकसान होता है। मनुष्यके मलसे बढ़कर दूसरी कोओी खाद नहीं, यह बात वैज्ञानिक तौर पर साबित हो चुकी है। अगर किसान अपने बाड़ों या खेतोंमें खड्डे खोद कर अुनमें मल त्याग करें और अुसे मिट्टीसे ढक दें, तो थोड़े ही दिनोंमें सूरजकी गरमीसे और मिट्टीके साथ मिल जानेसे क़ीमती और खुशबूदार खाद बन जाती है। वर्धाके आसपासके गाँवोंके लोग, गाँवके नज़दीक आम रास्तों पर शौच जाते थे। अुनका मैला खुद अुठा

कर महात्मा गांधी और अुनके साथी अुन अज्ञान किसानोंको स्वच्छता और मुफ़्त मुन्दर खाद बनानेका पदार्थपाठ आज कितने ही दिनोंसे पढ़ा रहे हैं। किसानोंको आलस्य छोड़कर घर और गाँवोंको साफ़ रखना सीख लेना चाहिये। अगर हमारा संगठन और संघ जीता-जागता हो, तो वह हमें अैसा जानवरोंका-सा जीवन बिताने ही न दे।

छुआछूत

किसानोंमें धर्मके नाम पर कअी तरहके वहम और पाखंड घुस गये हैं। हमारे ही गाँवमें रहनेवाले हमारे जिन हरिजन भाअी-बहनोंकी खेती-बाड़ीके काम-धन्धेमें हमें बार-बार ज़रूरत होती है और कुछ कामोंमें जिनके बिना हमारी गाड़ी आगे चलती ही नहीं, अुनका धर्मके नाम पर तिरस्कार करके हम जी दुखाते हैं। यह अेक पाप है। जिसे हम अछूत मानते हैं, वह अगर हमारा समाज छोड़कर दूसरा धर्म अपना ले, तो अुसी वक्तसे अुसे छुआ जा सकता है! हम रोज़ अपनी आँखों अैसा होते देखते हैं। हिन्दू धर्म परसे अिस कलंकको मिटा देनेके लिअे महात्माजीने अनेक दुःख सहन किये। अुपवास करके शरीरको नष्ट करने तककी तैयारी की और देशके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सालभर दौरा करके सबको समझानेके लिअे अथक परिश्रम किया। अखिल भारत हरिजन-सेवक संघकी स्थापना करके हरअेक प्रान्त, ज़िले, तहसील और गाँवमें अुसकी शाखाअें खोलीं। किसीको भी अछूत न मानना हरअेक किसानका धर्म है। हुकूमतकी बागडोर अपने हाथमें लेनेकी अिच्छावाले किसानोंको किसीको भी अपनेसे नीचा या अछूत नहीं मानना चाहिये। अूँच-नीचका भेदभाव माननेवालेको राजसत्ता प्राप्त करनेका अधिकार ही नहीं है। जो दूसरों पर सवारी गाँठता है, अुसके कन्धे पर चढ़ बैठनेवाला अिस जगतमें कोअी न कोअी मिल ही जाता है। अिसलिअे हमारे अिस संगठनमें छुआछूतकी जरा भी गुंजाअिश नहीं होनी चाहिये।

कौमी भाअीचारा

किसानोंमें हिन्दू-मुसलमान या जात-पाँतका भेदभाव हो ही नहीं सकता। ज़मीन जोतकर मेहनतसे धन पैदा करनेवाले अनेक छोटे ज़मींदार, किसान या खेतीके काममें मदद देनेवाले मज़दूर, किसी भी धर्म या जातिके हों तो भी सब किसान ही हैं। सब अेक ही नावमें बैठे हैं; सब साथ ही पार लगेंगे या डूबेंगे। कुदरतमें कभी जात-पाँत या धर्मका भेदभाव नहीं पाया गया और न पाया जायगा। कुदरती आपत्तियाँ — दैवी संकट — या अुसकी कृपा सब पर अेकसी आती हैं। सब किसानोंकी अेकसी ही आर्थिक दुर्दशा है। हम सब अपने-अपने धर्म या सम्प्रदाय पर

क़ायम रहकर, भेदभाव छोड़कर और क़ौमी झगड़े मिटा कर अेक साथ आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक अुन्नतिके काममें लग जायँगे, तभी हमारा अुद्धार होगा।

अुपसंहार

अपने भाषणमें मैंने सरकार या ज़मींदारोंके खिलाफ़ हमारी जो शिकायतें हैं या किसान संघ स्थापित करके अुसके द्वारा हमें जो अुद्देश्य प्राप्त करने हैं, अुन पर बहुत ज़ोर नहीं दिया है। मगर हमारी अपनी कमजोरियोंका विश्लेषण करके अुन्हें दूर करनेका अधिक आग्रह किया है। हो सकता है कि अिससे हममेंसे किसीको या कार्यकर्ताओंमें से किसीको निराशा हुअी हो। फिर भी जैसे माँ बच्चेको कड़वी दवा प्रेमपूर्वक पिलाती है, अुसी तरह कड़वी होने पर भी हितकर बातें आपसे कहना मेरा फर्ज़ है। मैं किसानोंके सब दुःखोंसे जितना परिचित हूँ, अुतना ही अुनकी दुर्बलतायें भी जानता हूँ। अिन खामियों और कमज़ोरियोंको छिपाकर दूसरों पर गुस्सा करनेसे हमें कोअी लाभ नहीं होगा। ज़मींदारोंकी दुष्टताकी कड़वी बातें सुनना आपको अच्छा लगेगा। मगर कंगाल और दुर्बल किसानोंको ज़मींदारो या सरकारके विरुद्ध लड़ना सिखानेमें मुझे मज़ा नहीं आता। गली-गलीमें भौंकते फिरनेवाले कुत्तोंकी कौन सुनता है? अुनसे कोअी डरता भी नहीं। मगर जंगलमें रहनेवाले सिंहकी गर्जना सुन कर कअियोंके छक्के छूट जाते हैं। दुर्बल किसानोंकी बात कौन सुने? हुकूमतकी बागडोर हाथमें लेनेकी अिच्छा रखनेवाले किसान रोनेवाले नहीं होने चाहियें। अिसीलिअे किसानोंकी कमजोरियों पर अधिक ज़ोर देकर मैं कहता हूँ कि अिन कमजोरियोंको दूर करना हमारा पहला फर्ज़ है। यह बात समझानेमें, किसानोंमें स्वमानकी भावना जाग्रत करनेमें मुझे दिलचस्पी होती है, मज़ा आता है। किसानोंको रोनेवाले बनाने या ज़ालिमोंके खिलाफ अनावश्यक क्रोध करना सिखानेमें मुझे शर्म आती है। जब कोअी किसान दुःखसे अुत्तेजित होकर, क्रोधके पागलपनमें किसी ज़ालिम ज़मींदार या अुसके आदमी पर हमला करता है, मारपीट करता है या अुसकी हत्या कर डालता है, तब मुझे अपार दुःख होता है। आम तौर पर अैसे अवसर पर हमारे दिलमें भीतर ही भीतर खुशीकी अुमंग पायी जाती है। यह हमारी कमसमझीका परिणाम है। अैसे कामोंमें लाभके बजाय हानि ही होती है। निर्बल और बेसमझ लोगोंके अैसे अुलटे कामोंसे हमारी ताक़त घटती है, हमारी अिज्जतको बट्टा लगता है और हम हुकूमतके गुस्सेके शिकार बनते हैं। संगठित और समझकर दुःख बरदाश्त करनेके लिअे तैयार रहनेवाले बहादुर किसानोंको अपने पर लादे गये लगानके असह्य भारको हलका करानेमें, कर्ज़ अथवा लगानकी पिछली बाक़ीका भार हटवानेमें या अैसे ही दूसरे वाजिब हक़ और न्याय प्राप्त करनेमें कोअी भी दिक्कत नहीं होती। अिस राज्यमें बीबी,

तमाखू और विदेशी कपड़ेकी दुकानें या चायके होटल खोलकर देशको लाभके बजाय हानि पहुँचानेवाले आलसी व्यापारियोंको अेक हज़ार रुपयेकी वार्षिक आय तक अेक पाअी भी कर नहीं देना पड़ता है। परन्तु रात-दिन मेहनत करके धन पैदा करनेवाले जिन किसानोंकी पैदावार पर राज्यका और सबका गुज़ारा निर्भर है, अुनके खेतोंमें फ़सल पैदा हुअी हो या न हुअी हो, अुनके बाल-बच्चोंको खानेके लिअे रोटी मिले या न मिले, तो भी अुन्हें लगान तो चुकाना ही पड़ता है। अगर वे न चुकायें तो खेतों परसे अुनका अधिकार छीन लिया जाता है, अुनका माल ज़ब्त करके बेच दिया जाता है, अुन्हें जेलमें डाल दिया जाता है। अैसे प्रत्यक्ष घोर अन्यायके सामने पागल क्रोध करने या रोनेसे क्या लाभ हो सकता है! आजकल तो नियत लगानके सिवाय गुप्त लगान लिया जाता है। कितने ही सरकारी नौकर रिश्वत लेते हैं, कहीं कहीं नज़राने लिये जाते हैं, कहीं जानवरोंकी तरह किसानोंसे बेगार ली जाती है। अिन सब अन्यायोंके विरुद्ध ज़रूर लड़ना है। जहाँ अिस हद तक मनुष्यका अधिकार छीन लिया गया है, वहाँ यदि हम ज़मींदारी प्रथाको मिटा देनेकी बात पर ज़ोर दें, तो वह छोटे मुँह बड़ी बात करना होगा। जो काम कल करनेका है, अुसकी बातोंमें ही आजका काम बिगड़ जायगा। और आजके कामके बिना कलका काम नहीं होगा। हम अपने फ़र्ज़से चूकेंगे। आजका काम कीजिये, तो कलका काम अपने आप हो जायगा। अिसलिअे अेक किसानके नाते, आपके सगे भाअीके नाते, आपके सच्चे सेवकके नाते मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप अपना सच्चा और मज़बूत संगठन पैदा कीजिये। अिसके अलावा मैंने जो कमजोरियाँ बतलाअी हैं, अुन्हें दूर कीजिये। विश्वास रख कर आलस्य छोड़ दीजिये, वहम मिटा दीजिये, डर छोड़िये, फूटका त्याग कीजिये, कायरता निकाल डालिये, हिम्मत रखिये, बहादुर बन जाअिये और आत्म-विश्वास रखना सीखिये। अितना कर लेंगे तो आप जो चाहेंगे सो अपने आप आ मिलेगा। दुनियामें जो जिसके योग्य है, वह अुसे मिलता ही है। हमारी आशाअें बड़ी हैं। हम गुलामीकी बेड़ियाँ तोड़कर, स्वतंत्रता लेकर, राजसत्ताकी बागडोर अपने हाथोंमें लेना चाहते हैं। यह बड़ी आशा रखनेका हमें अधिकार है। अितने बड़े अधिकारको प्राप्त करनेके लिअे हमें भगीरथ प्रयत्न करना चाहिये। प्रयत्न करने वालेको भगवान मदद देते हैं। अीश्वर आपका भला करे।

७०

रियासती कार्यकर्ताओंसे

[ता० २५-६-१९३९ को बम्बओमें हुअे सिरोही प्रजामंडलके वार्षिक अधिवेशनमें अध्यक्षपदसे दिया हुआ भाषण ।]

मैंने आजका अध्यक्षपद स्वीकार करनेसे अिनकार कर दिया था, क्योंकि मेरे विचार बहुतोंको पसन्द नहीं आते । और पसन्द न आनेवाली बात बार-बार कहना मुझे अच्छा नहीं लगता, तथापि आग्रहवश मैं आ गया हूँ ।

मैं आपको पसन्द आनेवाली बात ही नहीं कहूँगा, परन्तु जो मुझे सूझेगा सो कहूँगा । आप यह न मानिये कि आप पर होनेवाला जुल्म कोअी नया आविष्कार है । आज अनेक देशी राज्य हिन्दुस्तानमें अैसे हैं, जिनकी बातें अरेबियन नािअट्सको भी भुला देती हैं । मगर कोअी समझदार आदमी अपनी पीठ जानबूझकर नहीं अुघाड़ता । अिसलिअे कैसा भी राजा क्यों न हो, अुसकी निन्दा करनेसे हमारा काम नहीं बनता । अुससे हमारी नामर्दी ही जाहिर होती है ।

देशी राजाओंकी हालत

कोअी यह न माने कि हमें रियासती प्रजाके दुःखोंकी परवाह नहीं, या कांग्रेस अिस तरफसे अुदासीन है । महात्मा गांधी जैसा रियासती प्रजाके दुःखोंको जाननेवाला मैंने दूसरा नहीं देखा । मगर आजकल राजा कौन हैं? नाट्य-शालामें तलवारें लटकाकर चलनेवाले गवैयोंके छोकरोंको जितनी स्वतंत्रता होती है, अुतनी भी आजकल देशी राजाओंको नहीं है ।

देशी राजाओंकी कलअी खोलनेसे हमें लाभ नहीं होता, अुल्टी हमारी लाज जाती है । मैंने सार्वजनिक कार्य करना सीखा हो, तो महात्मा गांधीसे सीखा है । जो तलवार चलाना जानते हुअे भी तलवारको म्यानमें रखता है, अुसीकी अहिंसा सच्ची कही जायगी । कायरोंकी अहिंसाका मूल्य ही क्या? राजाओंके दोष देखनेसे पहले हमें अपनी नामर्दी नहीं भूलनी चाहिये । आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता! आपके सिवाय आपका अुद्धार और कोअी नहीं करेगा । यहाँ कुछ मित्रोंने जो मार्ग पकड़ा है, वह अुलटा मार्ग है । मैं कहता हूँ कि यह छीछालेदर करना छोड़ दीजिये । जिसको कोअी लाज नहीं, अुसकी लाज क्या जायगी? जो अपनी लाज नहीं बचाता, अुसकी लाज और कौन बचा सकता है?

आपमें से कुछ यह कहते हैं कि व्यक्तिगत शासनके स्थान पर प्रजातंत्र हो जाय, तो जुल्म सहज ही मिट जायँ। राज्यमें तो जमादार, थानदार वगैराका सारा संगठन है। अिसके सिवाय हमारी नामर्दी है। जबतक प्रजा सच्चा बल संगठित नहीं कर लेती, तब तक ये ग्रहण लगे हुअे राजा केवल अन्धकार ही फैलाते हैं।

रियासती प्रजाकी मुसीबत

रियासती प्रजाके दुःखोंके बारेमें मतभेद नहीं, मगर मतभेद अिस विषयमें है कि अुन्हें दूर कैसे किया जाय। दुःख तो पुराने ही थे, परन्तु ब्रिटिश भारतकी लड़ाअीके कारण सब जगह जाग्रति होने लगी है, अिस कारण ये दुःख अब मालूम होने लगे हैं। प्रजाको कुचल डालनेके लिअे ब्रिटिश सरकार दमनके जो अुपाय काममें ले रही है, अुनकी भद्दी नकल आज राजा लोग कर रहे हैं। ब्रिटिश भारतमें राज्य और प्रजाके बीच आज गहरी ठनी हुअी है। प्रजाने आज़ाद होनेका फैसला कर लिया है, और अितिहास बताता है कि अिसका परिणाम प्रजाकी स्वतंत्रतामें आये बिना रहेगा ही नहीं।

अगर मैं आपका दुखड़ा रोने बैठ जाअूँ और राजाओंको गालियाँ दूँ, तो आपको मीठा लगे, क्योंकि आपमें दूसरी ताक़त तो है नहीं। अगर अखबारोंमें छपी हुअी खबर सच हो, तो आपको जल अुठना चाहिये। वह खबर आपके लिअे गाली-रूप है।

अगर आज अेक भी रियासतमें जाग्रत लोकमत होगा, तो वह भाग सारे हिन्दुस्तानको पदार्थपाठ सिखायेगा। जैसा आप चाहते हैं, वैसा प्रस्ताव कदाचित कांग्रेस पास कर भी दे, तो आपकी स्थितिमें अुससे तिलभर भी फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। प्रस्ताव पास हो या न हो, प्रजामें जितनी शक्ति होगी, अुतना ही काम होगा। प्रजाकी तपस्यासे यदि राज्यकी शुद्धि हुअी होगी, तो सारे हिन्दुस्तानका आकर्षण अुसकी तरफ होगा। चिल्लानेसे या गालियोंसे यह नहीं होगा। अगर लोकमत जाग्रत हो, तो यह बात बहुत आसान है। कांग्रेसके प्रस्तावसे आपकी अुन्नति नहीं होगी। सिरोही राज्यका कल्याण यहाँके दो प्रस्तावोंसे या कड़े भाषणोंसे नहीं होगा।

ठोस कार्यकी ज़रूरत

प्रजाकी सम्मति और समर्थनके बिना राज्य नहीं चल सकता। अभी ज्यादा बोलनेमें हमारी शोभा नहीं है। ३५ करोड़ पर दो लाख आदमी राज्य कर रहे हैं, अैसी बात अरेबियन नाअिट्समें भी नहीं है। आपने देख लिया कि राष्ट्रसंघ भी अन्तमें चोरोंकी पंचायत ही निकला। आखिर अेबिसीनिया हज़म हो गया और सब लोग आरामसे घर बैठ गये। अगर वह सफल हो गया होता, तो सारी दुनिया अेबिसीनियाको पूजती।

ताकतके बिना बोलनेसे फायदा नहीं है। गोला-बारूदके बिना बत्ती लगानेसे धड़ाका नहीं होगा। राजाओंकी निंदा करने या अुन्हें गालियाँ देनेसे कुछ नहीं होगा। हमारी अिज्ज़त नहीं बढ़ेगी। दुनिया कहेगी कि यह छोटा-सा ठाकुर अिन लाख दो लाख नामर्दोंको सता रहा है। अुसके लिअे तो फजीहत होनेकी कोअी बात नहीं है। जिसे शर्म-हया नहीं अुसे क्या परवाह है? दुःख आपको अुठाना पड़ेगा। यहाँ जो भाषण देते हैं, अुन्हें नहीं अुठाना पड़ेगा।

अगर आप यह मानते हों कि यहाँ बम्बअीमें बैठ कर लिखने या बोलनेसे कुछ हो जायगा, तो यह आपकी भूल है। हमारी मेहनत व्यर्थ जाती है। अिस भूलमें न रहिये कि अिस तरहके होहल्लेसे कुछ हो जायगा। जितना करें अुसके जोर पर बोलिये। अिज्ज़त खोनी हो तो चार लकीरोंसे खोअी जा सकती है, चार कॉलम भरनेसे कुछ नहीं होगा। आज ब्रिटिश भारत और देशी राज्योंकी प्रजाकी लाज अेक ही है।

बड़े-बड़े जुलूसों या भाषणों और अखबारोंसे कोअी प्रजा या राज्य मात नहीं हुआ। ठोस और असली कामसे ही अिस विदेशी हुकूमतको मात किया जा सकेगा।

७१

मुक्तिके लिअे मत दीजिये

[ता० १४-१०-१९३६ को मद्रासमें श्री सी० अेन० मुथुरंग मुदलियारके सभापतित्वमें हुअी सभामें दिया हुआ भाषण।]

मैं अेक खास अुद्देश्यसे यहाँ आया हूँ और अुसे पूरा करनेके लिअे अपना सारा ही समय देना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि १९२१ में, खिलाफतके अुन प्रख्यात और आवेशमय दिनोंमें, कांग्रेसने धारासभाओंका बहिष्कार करनेका निर्णय किया था। विद्यार्थियोंको स्कूल-कॉलेज छोड़ने, पदवीधारियोंको अपनी पदवियाँ लौटा देने, वकीलोंको वकालत छोड़ने और धारासभाओंके सदस्योंको धारासभाअें छोड़नेका आदेश दिया गया था। कोअी यह न माने कि वह निर्णय करनेमें हमने भूल की थी। वह निर्णय बिलकुल ठीक था और अुसके अद्‌भुत परिणाम हुअे हैं। मनुष्योंकी याददाश्त छोटी होती है और संभव है वे यह भूल जायँ कि हमने आज तक क्या-क्या किया है? अिसलिअे जिन घटनाओंमें हमने खास भाग लिया है, अुन सबकी आपको याद दिला दूँ। चौरी-चौरामें हुअी कुछ घटनाओंके कारण महात्मा गांधीने

सत्याग्रहकी लड़ाअी मुल्तवी कर दी, तो भी अुन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जिन घटनाओंके परिणाम-स्वरूप अुन्हें पकड़ा गया, वे आपको मालूम हैं। बम्बअीका अुस समयका गवर्नर लिख गया है कि यह आन्दोलन सफल होते-होते रह गया। महात्मा गांधीको जेलमें डाल देनेके बाद घटनाओंने दूसरा ही रुख पकड़ा।

दाँडी कूच

[अिसके बाद सरदार पटेलने स्वराज पार्टीकी स्थापना और धारासभाओंमें अुसके किये हुअे कामोंके बारेमें और अैतिहासिक लाहौर कांग्रेसके सम्बंधमें बात करते हुअे दाँडी कूच, गांधी-अिरविन समझौते और ब्रिटिश प्रधान मंत्रीके साम्प्रदायिक निर्णयमें फेरबदल करानेके लिअे गांधीजीके किये हुअे अैतिहासिक अुपवासकी याद दिलाकर कहा:]

ये सब घटनाअें हम कैसे भूल सकते है और कैसे कह सकते हैं कि धारासभाओंके बहिष्कारसे कोअी लाभ नहीं हुआ? हमने धारासभाओंका बहिष्कार किया, तो दूसरे लोग अुनमें घुस गये और अुन्होंने हमारी छेड़ी हुअी सुन्दर और गौरवपूर्ण लड़ाअीको कुचल देनेके लिअे सरकारने जो कुछ किया अुसमें मदद दी। अुन्होंने अैसे-अैसे हुक्म जारी करनेमें सहायता दी, जिनसे अुनके प्रति सारे देशमें क्रोधकी भावना पैदा हो गअी। ये लोग हमें कहते हैं कि हमने धारासभाओंका बहिष्कार करके भूल की। हमने कोअी भूल नहीं की, और भूल करेंगे भी नहीं। दस-पंद्रह सालके थोड़े अरसेमें हमने बहुत कुछ प्राप्त किया है। सरकारको भी पता चल गया है कि लोगोंको लड़नेके लिअे अुचित हथियार मिल गया है। अिसलिअे सरकारने हमें अुल्टे रास्ते लगानेका नया साधन ढूँढ़ निकाला। अुसने नअी व्यवस्था पैदा कर दी। हिन्दुस्तानको सुधार देनेका यह कानून हमारी स्वाभाविक और राष्ट्रीय आकांक्षाओंको कुचल डालनेके लिअे बनाया गया है। पिछले पंद्रह वर्षोंसे हमने सरकारको बेढब स्थितिमें डाल दिया है और हम अुसे मात कर रहे हैं। यह देखकर अुसे राष्ट्रमें फूट डालना ज़रूरी जान पड़ा। अुसे विश्वास हो गया है कि राष्ट्रमें अैसी अेकता है कि अुसे असहयोगके सिवाय और किसी हथियारकी ज़रूरत नहीं है। अिस अेकताको भंग करनेके लिअे वह तरकीब कर रही है।

मुक्तिके लिअे मत दीजिये

सरकारने पहले तो हममें फूट डाली। दूसरी बात अुसने यह की कि तीन करोड़को मताधिकार दे दिया। यह अधिकार हमें अिसीलिअे दिया गया है कि हम दुनिया और सरकारको बता सकें कि हम अपना मत आज़ादीके लिअे देते हैं या गुलामीके लिअे? यह मताधिकार हमें पहले पहल दिया गया है। अगर सरकार कोअी दावपेंच लगा कर यह दिखा सके कि लोग कांग्रेसके साथ

नहीं हैं, तो अुसका मकसद पूरा हो जाय। हम अिन तीन करोड़ मतदाताओंसे संपर्क न साधें, तो जन-सम्पर्कके कितने ही प्रस्ताव क्यों न करें, वे काम नहीं आयेंगे। सरकारकी यह बड़ी चालाकीभरी युक्ति है। यह हो सकता है कि धारासभाओंमें जाकर हम देखें कि हमारे हाथमें कोअी सत्ता नहीं है और हमारे रास्तेमें हर तरहकी रुकावटें डाली जाती हैं। लेकिन अगर हम अिस मताधिकारका सदुपयोग नहीं करते हैं, तो सरकार दुनियाके सामने घोषणा करेगी कि लोग अुसके साथ हैं। हाँ, तीन करोड़ मतदाता मत न दें और असहयोग करें तो दूसरी बात है। और वे अैसा करें, तो अिससे बढ़कर क्या हो सकता है! परन्तु हम सम्पूर्ण असहयोगके लिअे तैयार नहीं हैं। लोग मत देनेके लिअे तो जायेंगे ही। अैसी हालतमें हमें देखना चाहिये कि वे आज़ादीके लिअे मत दें, गुलामीके लिअे नहीं दें। कांग्रेसके खिलाफ दिया गया प्रत्येक मत स्वतंत्रताकी लड़ाअीके विरुद्ध दिया गया माना जायगा।

हमें संपूर्ण आज़ादी चाहिये। मगर मध्यममार्गी और दूसरे लोग कहते हैं कि हमें ग्रेट ब्रिटेनके साथका सम्बंध नहीं तोड़ना चाहिये। वे कहते हैं कि हम दोनोंके बीचका सम्बन्ध अीश्वर-निर्मित है। वे कहते हैं, 'हमें औपनिवेशिक स्वराज्य चाहिये।' मुझे खयाल नहीं कि अुन्हें कैसा औपनिवेशिक स्वराज्य चाहिये। परंतु नया विधान तैयार करनेवालोंने अुसमें से वे शब्द जानबूझ कर निकाल डाले हैं। विधान तैयार करनेवाले हमारे साथ, जिन्हें स्वतंत्रता चाहिये अुनके साथ, सहमत हैं, मगर जिन्हें औपनिवेशिक स्वराज्य चाहिये अुनके साथ सहमत नहीं हैं। वे जानते हैं कि औपनिवेशिक स्वराज्य तो अेक मज़ाक है। फिर भी हमारे लोगोंका अुसमें विश्वास है। अंग्रेज़ अपने कामको अच्छी तरह समझते हैं। परन्तु हममें से कुछ लोगोंका मानस मेरी समझमें नहीं आता।

नये विधानमें अुसका अमल करनेवालोंके हाथमें, जिससे हमें नुकसान हो अैसी गड़बड़ करनेकी अधिक सत्ता दे दी गअी है। और हम जेलमें बैठे हों अुस बीच धारासभामें बैठे हुअे सदस्य अिन अधिकारोंका अुपयोग करने दें, तो नतीजा यह होगा कि हमारी गुलामी स्थायी बन जायगी, और स्वतंत्रताके मार्गमें हमेशाके लिअे रुकावट पैदा हो जायगी। अिसलिअे हमें पहले अिन लोगोंको हटाना चाहिये। अिन लोगोंने दमनका कानून पास किया और देशके शोषणमें मदद देनेके लिअे जो कुछ हो सकता था, वह सब किया। अिसलिअे पहली चीज़ हमें यह करनी पड़ेगी कि अिन लोगोंको अधिकारके स्थानोंसे हटा दिया जाय। जस्टिस पार्टीवाले लोग कितने ही मालदार हों, कोअी भी हों, राजा हों या ज़मींदार हों, अब आपके मतके बिना वे धारासभाओंमें नहीं घुस सकते। अिन लोगोंके हुक्मसे हमारे सिर फोड़े गये थे, अिन लोगोंके हुक्मसे

हमारे युवक-युवतियोंको जेलमें बन्द किया गया था। और अब वे हमसे मत माँगते हैं। यह तो हमारी हँसी होगी, हमारी बुद्धिका अपमान होगा। अुन्हें हमारे मतोंकी आशा क्यों रखनी चाहिये?

गुजरातमें अेक भाअी थे, वे धारासभामें गुजरातके प्रतिनिधि होनेका दावा करते थे। कांग्रेसी तो अुस समय जेलमें थे। ये भाअी लगभग यह मानते थे कि गुजरातमें अेक वे ही महत्त्वके और बड़े आदमी हैं। वे मेन्चेस्टर और लंकाशायर गये और वहाँ अुन्होंने लोगोंसे कहा कि लोग गांधीजीको भूल गये हैं और वल्लभभाअी नामका कोअी आदमी गुजरातमें नहीं है। अैसे लोगोंने वाअिसरॉयके पास जाकर कहा कि धारासभाओंके चुनाव अमुक वक्त किये जायँ, तो कांग्रेसी अपनी जमानतें खो बैठेंगे। अैसी बातें माननेवाले मूर्ख भी थे। कांग्रेसवालोंके पास व्यवस्थित ढंगसे काम करनेका समय शायद ही रह गया था। सरकारने जानबूझ कर सबसे पहले चुनाव मद्रास प्रान्तमें ही रखे, क्योंकि अुसने बड़े ज़िम्मेदार लोगोंसे, अपने विश्वासपात्र लोगोंसे, सुना था कि पहले मद्रासमें चुनाव रखे जायँगे, तो मद्रास सारे देशको रास्ता दिखा देगा। मद्रासने रास्ता ज़रूर दिखा दिया, मगर वैसा नहीं जैसी अुन्हें आशा थी। अिन चुनावोंको हुअे लम्बा अरसा बीत गया है, फिर भी अुसमें मद्रासके बताये हुअे मार्गके लिअे मैं अुसे मुबारकबाद देता हूँ। क्या अब मद्रास अपना वचन भंग कर देगा? पिछले चुनावोंमें जिस दलको आपने हराया था, वही दल आज कांग्रेसके विरुद्ध आपके मत माँगता है। क्या मतदाता धोखा खायेंगे? अगर अब अुन्हींको मत देना है, तो पिछले चुनावमें अुन्हें क्यों फेंक दिया था? क्या आप यह कहेंगे कि पिछले चुनावमें भूल की थी? अैसा नहीं है तो अपने कर्तव्यके प्रति जाग्रत होअिये। पिछले चुनावकी अपेक्षा अिस बारके चुनावमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी, क्योंकि पिछले चुनावके बनिस्बत अिस बार मतदाताओंकी ज्यादा बड़ी संख्यासे मिलना है। अिसलिअे अच्छी व्यवस्था करनेकी ज़रूरत है। कोअी यह न मान बैठे कि कांग्रेसके अुम्मीदवार अपना काम खुद कर लेंगे।

पद स्वीकार

लखनअू कांग्रेसमें धारासभाओंपर कब्ज़ा करनेका प्रस्ताव लगभग सर्वसम्मतिसे पास हुआ था। जब वह पास हुआ तब विवादास्पद विषय केवल अेक ही था कि मंत्रि-पद ग्रहण किये जायें या नहीं। अिस सवालने अुत्तरके प्रान्तोंके बजाय दक्षिणी प्रान्तोंमें ज्यादा चिन्ता पैदा कर दी है; क्योंकि पिछले पन्द्रह बरससे यहाँ अेक दल अधिकारारूढ़ है। अुसने आपको अितना नाराज़ कर दिया है कि आप अुससे बदला लेना चाहते हैं और अुसी तरह अुसे तंग करना चाहते हैं। मगर हमारे पास अिससे अधिक अुदात्त ध्येय है। हमने अधिक अुदात्त अुद्देश्यसे धारासभाओंमें जानेका निश्चय

किया है। अिसलिअे अुनका विचार मत कीजिये, अुन्हें भूल जाअिये। आखिर वे भी हमारे देशभाअी हैं। हम अुनके प्रति अुदार रह सकते हैं। आज अुन्हें अपने पिछले बरताव पर शर्म आ रही है। और न आती हो तो भी जब अुन्हें सत्ताके स्थानसे हटा दिया जायगा और धारासभाओंमें जानेका मौका नहीं मिलेगा, तब आप अुन्हें सबके सामने आते-जाते नहीं देखेंगे। आप जानते हैं कि वे पुरानी धारासभामें क्या करते थे। आज वे कहाँ हैं? आप अपने मताधिकारको ठीक तरहसे काममें लें और अपना फर्ज ठीक ठीक अदा करें, तो आपको अिन लोगोंका विचार करनेकी कोअी ज़रूरत नहीं।

ओहदे स्वीकार करने या न करनेके मामलेमें कांग्रेसने लगभग सर्व-सम्मतिसे यह निर्णय किया है कि अभी अिसकी चर्चामें न पड़ें। अभी तो चुनावमें अधिकसे अधिक बहुमत प्राप्त करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। मैं तो हमेशा तुरन्त अुठाये जानेवाले अगले क़दमका विचार करना पसन्द करता हूँ। व्यावहारिक आदमी अपने आजके कर्तव्यका विचार करेगा, कलका विचार नहीं करेगा। क्योंकि वह आजकी चिन्ता कर लेगा, तो कलका विचार अपने आप हो जायगा। अिसलिअे आपको अपनी सारी शक्ति और प्रभावका अुपयोग अिस तात्कालिक परिणामके लिअे यानी चुनावमें कांग्रेसकी जीत होनेके बारेमें करना है। अितना कर लेनेके बाद मन्त्रि-मंडल बनाये जायँ या नहीं, अिस पर विचार करनेके लिअे काफी समय मिलेगा।

कांग्रेसका घोषणापत्र

कांग्रेसका घोषणापत्र प्रकाशित हो गया है और कांग्रेसकी तरफ़से चुनकर धारासभाओंमें जानेवाले सभीको अुसकी प्रतियाँ दी जायँगी। अिस घोषणा-पत्रमें बताये गये अुद्देश्यके लिअे हम धारासभाओंमें जा रहे हैं। अिस अुद्देश्यको आगे बढ़ानेके लिअे पद स्वीकार करना ज़रूरी हो जाय, तो पद स्वीकार करेंगे। पद कोअी अस्पृश्य चीज नहीं हैं। हमें अुनसे क्यों डरना चाहिये? क्या वे कोअी अैसी डरावनी चीज़ हैं?

कुछ लोग कहते हैं कि मतदाताओंके सामने अभीसे कांग्रेसका अिरादा स्पष्ट नहीं कर दिया गया, तो कुछ लोग अैसे हो सकते हैं जो यह मानकर धारासभाओंमें जायँगे कि कांग्रेस पद स्वीकार करेगी, और बादमें कांग्रेस पद स्वीकार न करे तो अुन्हें निराशा होगी। मैं अभीसे कह देता हूँ कि कांग्रेस अैसे लोगोंको सन्तोष देनेके लिअे ही कभी पद स्वीकार नहीं करेगी। सरकारके साथ सहयोग करनेके अिरादेसे कांग्रेस पद स्वीकार करेगी, यह मानकर जो कांग्रेसमें आते हों अुन्हें मैं अब भी न आनेकी और वापस चले जानेकी

चेतावनी देता हूँ। जो सच्चे दिलसे कांग्रेसमें आकर हमारे साथ सहयोग करना चाहते हों, अुन्हें न आने देकर मैं कांग्रेसका दायरा तंग कर डालना नहीं चाहता। मैं यह भी नहीं मानता हूं कि कांग्रेसका मंच जिन्हें जेल जानेका परवाना मिला हो, अुन्हीं तक सीमित रहे। दूसरे अीमानदार लोग अपने मत परिवर्तन और पश्चात्तापके बाद आना चाहते हों तो भले ही आवें। हम तो सारे राष्ट्रको हमारे विचारका बनाना चाहते हैं और आशा रखते हैं कि जस्टिस पार्टीवाले हमारे साथ किसी दिन जस्टिस (न्याय) करेंगे, क्योंकि वे अभीसे विचार करने लगे हैं कि जब थोड़े समयमें 'सरकार' यानी 'कांग्रेस सरकार' बन जाना संभव है तो वे क्या करें? कांग्रेसका बहुमत हो तो दूसरा कोअी मंत्रि-मंडल काम नहीं कर सकता। करके देखना हो तो देख ले। कांग्रेसके कार्यकर्ताओंकी अुस समय परीक्षा होगी। बेशक, अिस मार्गमें लालच बहुत हैं। हम अेक समर्थ सरकारके साथ लड़ रहे हैं। क्या आपने कूच करनेवाली अैसी कोअी सेना देखी है, जिसमें कोअी कर्तव्यमें चूक या वापस लौटनेकी कोशिश करे, तो अुसे वहीं गोलीसे अुड़ा न दिया जाता हो? मद्रासकी धारासभामें दो तीन सौ सदस्योंमेंसे कोअी अिस परिस्थितिसे अपने स्वार्थके लिअे लाभ अुठाना चाहेगा, तो अुसकी तुरन्त कलअी खुल जायगी। मगर मैं आशा रखता हूँ कि अैसे कोअी आदमी नहीं हैं।

धारासभाके सदस्योंकी बैठक

(आगे चलकर सरदार पटेलने तमाम धारासभाओंके सदस्योंकी बैठक करनेके प्रस्तावका अुल्लेख करके कहा:)

वह बैठक कांग्रेसके घोषणापत्र पर अमल करनेकी पद्धति और साधन तय करेगी। चुनाव होनेमें अब सिर्फ दो ही महीने बाकी हैं। अितने थोड़े समयमें हमें लोकमत अिस तरह तैयार करना चाहिये कि बहुतसी बैठकोंके लिअे तो जहाँ तक हो सके विरोधमें कोअी खड़ा ही न हो। कांग्रेसको हरानेकी आशामें कोअी रुपया खर्च करनेको तैयार हों तो भले ही करें। अुनके पास धन हो तो अुसे भले ही बाँट दें। मगर मैं कहता हूँ कि सिर्फ रुपया बाँटनेसे कोअी अुम्मीदवार नहीं चुना जा सकेगा। मत-पेटी सिक्कों या नोटोंसे नहीं, बल्कि मतपत्रोंसे भरनी पड़ती है।

हमारे सामनेका काम

यह काम आसान नहीं है। अिसमें पैसेकी और बड़े धीरजकी ज़रूरत होगी। कांग्रेस गरीबोंकी संस्था है और अुसके ज्यादातर कार्यकर्ताओंने पिछले पंद्रह-बीस बरसमें सब कुछ कुरबान कर दिया है। कुछ लोग धारासभाओंमें जानेके लिअे बड़े आतुर हैं, मगर दूसरे अैसे हैं जो रजामंद नहीं हैं; अुन्हें

जानेको मजबूर किया गया है। असे लोगोंके लिअे ज़रूरी चंदा आपको देना चाहिये। मतदाताओंको चुनाव केन्द्रों पर ले जानेकी ठीक व्यवस्था नहीं करेंगे और प्रचारकार्यका प्रबन्ध कुशलतापूर्वक नहीं करेंगे, तो लोगोंके यह चाहते हुअे भी कि चुनावमें आप सफल हों आपको सफलता नहीं मिल सकेगी। यह आशा रखना कि मतदाता अपने आप चुनाव केन्द्रों पर जाकर मत दे आयेंगे दुराशा मात्र है। क्योंकि अभी अुन्हें अितनी तालीम नहीं मिली है। अिस देशमें हमें अभी संगठन खड़े करने हैं। कांग्रेसने महात्मा गांधीके आनेके बाद संगठन किया है। अुसने अिस समर्थ ब्रिटिश सरकारसे खूब लोहा लिया है। सरकारका अिंतज़ाम छोटे छोटे गांवों तक फैला हुआ है। अेक भी गांव अैसा नहीं है, जहां सरकारका नौकर न हो। कांग्रेसके साथ लोगोंकी सहानुभूति है, मगर वह सहानुभूति सब जगह सक्रिय नहीं है। अगले दो महीनोंमें आपको अच्छी तरह व्यवस्थित हो जाना चाहिये और ज़रूरी चंदा अिकट्ठा कर लेना चाहिये। जस्टिस पार्टीने कुछ समय पहले अपने दलके कामके लिअे अेक करोड़ रुपया अिकट्ठा करनेका अिरादा घोषित किया था। स्पष्ट है कि वह चंदा अेक हफ्तेसे भी कम समयमें पूरा हो गया होगा! क्योंकि अुसके बाद अुस चंदेके बारेमें कुछ सुना नहीं गया। अिस बड़ी रकमके ब्याजसे वे चुनाव लड़ सकेंगे। मगर हमे करोड़ों रुपयेकी ज़रूरत नहीं। हमारी आवश्यकतायें बहुत थोड़ी हैं। अेक दो लाख रुपयेसे हमारा काम चल जायगा। और मुझे अुम्मीद है कि अितनी रकम आसानीसे जमा हो जायगी।

कांग्रेस कार्यकर्ताओंको चेतावनी

(कांग्रेस कार्यकर्ताओंको सम्बोधन करते हुअे अुन्होंने कहा:)

हमारे विरोधियोंका मुझे डर नहीं है। अिस समर्थ सरकारसे भी मैं नहीं डरता। परन्तु मैं हमारी अपनी कमजोरियोंका विचार करता हूँ। यदि हम अवसरको देखकर नहीं चलेंगे और अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओंको देशके सर्वसामान्य हितोंके आगे गौण नहीं समझेंगे, तो हम यह जीतकी बाज़ी हार जायँगे और अिससे हमारी संस्थाकी सदाके लिअे बेअिज़्ज़ती और बदनामी होगी। अिसलिअे मैं आशा रखता हूँ कि तामिलनाड और आंध्रके कार्यकर्ता समयको पहचान कर चलेंगे। भूतकालमें आपने अैसे काम किये हैं, जिन पर आप अुचित गर्व कर सकते हैं। आपने अैसी कुरबानियाँ की हैं, जिनसे आपकी प्रशंसा हुअी है; और आपने बता दिया है कि व्यवस्थित लड़ाअियाँ और चुनाव कैसे लड़े जाते हैं। पिछले चुनावोंमें आपने देशको रास्ता दिखाया है। आज आपको फिर रास्ता दिखाना है, और अिसी तरह दिखाना है कि आप अेक मजबूत और अखंड जमात बन कर खड़े हैं।

पार्लियामेण्टरी बोर्डके अध्यक्षके नाते अपने अनुभवमें अेक दो बातें मेरे देखनेमें आअी हैं। मैंने देखा है कि जब कुछ कांग्रेसियोंको अुम्मीदवार नहीं चुना जाता, तब अुन्हें अैसा लगता है कि अुनकी अुपेक्षा की गअी है। कुछको तो अैसा महसूस होने लगा है कि अुम्मीदवार चुने जानेका अुनका वंश-परम्परागत अधिकार है। कुछ यह मानते हैं कि अगर अिस मौके पर अुन्हें अुम्मीदवार नहीं चुना गया, तो अुन्हें कांग्रेसके खिलाफ बलवा करनेका अधिकार है। मुझे आपको कहना चाहिये कि कांग्रेसकी ताक़तका आधार केवल लोगोंकी मरज़ी पर नहीं है, बल्कि अिस बात पर है कि कांग्रेसके तमाम सदस्य और खास तौर पर कार्यकर्ता कांग्रेसके आदेशों और प्रस्तावोंका खुशीसे स्वीकार करें और अुनका पालन करें। हम लोगोंमें अनुशासन न हो तो हमें धारासभाओंमें जानेका हक़ नहीं है। हममें आत्म-त्यागकी भावना न हो, हम निजी महत्वाकांक्षाओंको देशके व्यापक हितके सामने गौण समझनेको तैयार न हों, तो हमारा धारासभाओंमें जाना बेकार है। अगर हम अूँचे दरजेकी हिम्मत, अूँचे प्रकारकी शक्ति और अूँचे दरजेकी बलिदानकी भावना नहीं दिखा सकते, तो हम देशके साथ और हमें मत देनेवाले लोगोंके साथ न्याय नहीं करेंगे।

लाखों स्त्री-पुरुषोंके बलिदानसे खड़ी हुअी महान संस्थाके नाम पर हम धारासभाओंमें जा रहे हैं; लोगोंके विश्वासपात्र प्रतिनिधियोंके नाते जा रहे हैं। हम शासन हाथमें लेंगे, तो हमारे शासनकी पहलेके शासनसे तुलना होगी। और अैसी तुलना हो यह अुचित ही है। हमें अपना कर्तव्य पूरा करना हो, तो हम लोगोंमें अेकता होनी चाहिये।

मतभेद भुला दीजिये

(कार्यकर्ताओंसे आपसके मतभेद और क्षुद्र अीर्ष्या द्वेष भूल जानेकी अपील करते हुअे अुन्होंने कहा :)

अब आप जिन आदमियोंको अपना नेता मुक़र्रर करें, अुनका अभीसे विश्वास करना सीखिये। धारासभाओंमें लड़ाअीकी व्यवस्था करनी हो तो अुसका अेक ही तरीक़ा है। पसन्द किये हुअे अुम्मीदवारोंके नाम घोषित हो जानेके बाद, जिन्हें न चुना गया हो अुन्हें भी अुतने ही अुत्साह और शक्तिके साथ काम करना चाहिये, जितना वे चुने जानेकी हालतमें करते।

मैं यहाँ यह समझाने आया हूँ कि हमें अिस समय क्या करना है। दूसरी बातें रोकी जा सकती है, मगर अिस अवसर पर हम चूक जायेंगे, अपना फ़र्ज़ अदा नहीं करेंगे, तो पाँच साल बाद जब फिर चुनाव होंगे, तब तक हमें अपनी लड़ाअीमें भयंकर कठिनाअियोंका सामना करना पड़ेगा। धारासभाओं में और

लोग चले जायँगे, तो भी स्वतंत्रताकी लड़ाअी तो कभी बन्द होगी ही नहीं। मगर हमें याद रखना चाहिये कि अुस सूरतमें हमारे लिअे वह अेक मुश्किल काम हो जायगा। हमारे मार्गमें जानबूझ कर डाली गअी रुकावटें दूर करनेके लिअे कांग्रेसके अुम्मीदवार चुनावमें जीतें, यह देखना हमारा काम है।

७२

धारासभाका चुनाव

[ता० ६-११-१९३६ को सूरतकी जनताको धारासभाके अगले चुनावोंमें कांग्रेसका साथ देनेका आदेश देते हुअे किया गया भाषण।]

जब मैं पिछली बार आया था, तब मैंने आपको अुस प्रस्तावकी खबर दी थी, जो लखनअू कांग्रेसने धारासभाओं पर कब्जा करनेके लिअे पास किया था। अुस प्रकारका निश्चय करनेके कारणोंका अितिहास भी मैंने संक्षेपमें आपको सुनाया था।

(अिस सभामें अुसी अितिहासको थोड़े शब्दोंमें स्मरण करा कर देशकी वर्तमान परिस्थितिमें लोगोंको अपने फर्जका भान कराते हुअे अिस प्रकार बोले:)

सूरत जिलेके अुम्मीदवार

ये नअी धारासभाअें पहलेसे भी ज्यादा खतरनाक हैं। अिनकी रचना अैसी है कि हम आपसमें लड़कर देशको अपने ही हाथों डुबा दें और सरकार दूर बैठे-बैठे तमाशा देखा करे। अिसीलिअे लखनअू कांग्रेसने निश्चय किया है कि अिन नये तंत्रोंको हमारी स्वतंत्रताकी लड़ाअीमें बाधक बननेसे रोकनेके लिअे अुनके भीतर कांग्रेसके वफादार सिपाहियोंका पहरा लगवा दिया जाय। आपके जिलेसे नीचेकी धारासभामें पाँच सदस्य भेजने हैं।

(फिर कांग्रेसके पसन्द किये हुअे पाँच अुम्मीदवारोंका परिचय देकर आगे कहा:)

कुछ लोगोंको डर है कि अुम्मीदवार अेक बार धारासभामें पहुँच जाते हैं, तो पद लेकर बैठ जाते हैं और वफादार नहीं रहते। हमारे अुम्मीदवारोंमें अैसा कोअी भी नहीं है। सभी कांग्रेसके पूरे वफादार सिपाही हैं। जिन्हें लम्बे भाषण देना आता हो, अुन्हींको धारासभामें बैठनेका हक हो सो बात नहीं है। अैसे ज्यादा बोलनेवालोंमें से बहुतोंका भरोसा कम रहता है। जहाँ पक्की वफादारी ही मुख्य वस्तु है, वहाँ बहुत बोलनेवालोंकी ही हमें जरूरत नहीं है।

अूपरकी सभाकी रचना

अब यह देखिये कि अिन नअी धारासभाओंकी रचना कैसी की गअी है। अेकके बजाय दो सभायें बनाअी गअी हैं। अेक सौ पचहत्तर की सभा

नीचे बैठे और दूसरी तीस वाली सभा अूपर बैठे। यानी अेक तहखानेमें बैठे और दूसरी अूँची अटारीपर बैठे, यह नहीं समझना चाहिये। यों तो दोनों अलग-अलग मकानोंमें बैठेंगी। मगर अिन्तज़ाम अैसा है कि नीचेवालोंमें कांग्रेसवाले भर जायँ और कुछ अच्छा काम कर दें, तो अूपरवाले अुसे बिगाड़ सकते हैं। अिन अूपरवालोंका निर्वाचक मंडल अिसी अुद्देश्यसे बहुत ही संकुचित रखा गया है। साढ़े तीन सौ रुपया ज़मीनका लगान जो अदा कर सके, अुसीको अुसमें मताधिकार दिया गया है। पहले अेक सौ पचहत्तर रुपयेकी मर्यादा थी, मगर जब देखा कि कांग्रेसने तो सभीको थका दिया, तब भीतर घुसे हुअोंने यह सलाह दी होगी कि मर्यादाकी रक़म बढ़ा दो। लेकिन अिस परिस्थितिमें भी हमने बहुमत करनेका संकल्प किया है। अिस अूपरकी सभाकी तीस बैठकोंमेंसे पाँच मुसलमानोंके लिअे और अेक अंग्रेज़ोंके लिअे सुरक्षित रखी गअी है। अिसके सिवाय चार सदस्य सरकार द्वारा नियुक्त होंगे। नीचेकी सभासे तो अब सरकारके पिट्ठू निकाल दिये गये हैं, मगर यहाँ अभी थोड़ेसे बाकी हैं। अिस प्रकार बीस बैठकें बाकी बचती हैं। अुनमेंसे अगर हम सोलह जीत सके, तो हमारा बहुमत हो जायगा। अुनमें चार बैठकें गुजरातके हिस्सेमें आती हैं। वे सब हमें ले लेनी हैं।

कांग्रेसका पहरा

धारासभाओंमें स्वराज्य नहीं मिलेगा, यह हम अच्छी तरह जानते हैं। अिसीलिअे तो कानजीभाअी वहाँ नहीं जाते, डॉक्टर चन्दूलाल भी नहीं जाते। वहाँसे स्वराज्य मिलनेकी आशा हो, तो मैं खुद वहाँ न जाअूँ? वहाँ तो अिस बातकी चौकीदारी करनेके लिअे ही जाना है कि दूसरे लोग जाकर गड़बड़ न मचायें और देशका अहित न करें। वहाँ जानेका मतलब स्वराज्यकी लड़ाअी छोड़ देना नहीं है। अधूरी रही हुअी दाँडी कूचको पूरा करना तो बाकी ही है। वह कोअी धारासभामें जाकर थोड़े ही होनेवाला है? वहाँ तो अूँचे पदों पर रहकर और सरकारके साथ मिलकर प्रजा पर ज़ुल्म करानेवाले हरामखोरोंको निकालनेके लिअे सिपाही रखने हैं।

मताधिकारका महँगा मूल्य

आप जानते हैं कि सारे देशमें तीन करोड़को मताधिकार मिला है। हमें अुन सब तक पहुँचना है। यह मताधिकार कोअी धारासभाओंमें बैठकर खुशामद करनेवालोंके कारण नहीं मिला है। लाखोंने जेलके कष्ट सहन किये, लाठियोंसे सिर फुड़वाये, फाँसियों और गोलियोंकी यातनायें सहीं, तब कहीं यह मिला है। अितने महँगे दामों मिले हुअे मताधिकारका किस तरह अुपयोग किया जाय, यह सारे देशमें घूमकर समझाना है। अिस विशाल कार्यके लिअे कांग्रेस

द्वारा नियुक्त पार्लियामेंटरी कमेटीका अध्यक्ष मुझे क्यों बनाया गया, अिसका कारण आप जानते हैं? कांग्रेसकी कार्यसमितिने मान लिया कि गुजरातमें सब काम आसान है, अिसलिअे मुझे अपने प्रान्तमें दौरा करनेके लिअे रुकना नहीं पड़ेगा। अतः जहाँ ज़रूरत होगी वहाँ जानेके लिअे मैं स्वतंत्र रहूँगा। अिसी-लिअे तो जब राष्ट्रपति मद्रास गये, तब मुझे अुन्होंने अपने संयुक्तप्रान्तमें जानेकी आज्ञा दी। अभी तो मुझे सरहद प्रान्तसे ठेठ कन्याकुमारी तकका दौरा करना है। अिस पर अगर आप मुझे यह कहें कि बलसाड़ आअिये, यहाँके कुछ अनाविल नहीं मानते हैं, या मांडवीमें बुलायें या पारडीमें मेरी आशा रखें, तो मैं अपना काम कैसे कर सकता हूँ? जिसने अितिहासमें दाँडी कूचके अद्भुत पृष्ठ जोड़े हैं, क्या मेरे अुसी प्रान्तको समझानेके लिअे मुझे दौरा करना पड़ेगा?

गुजरातमें तो चुनाव हो नहीं

मैं तो यह मानता हूँ कि हमें गुजरातमें कहीं चुनाव करना ही नहीं पड़ेगा। अभी जब तक हवामें ठंढक है, तब तक किसी-किसीको खड़े होनेका लालच पैदा होगा। जब अच्छी तरह गरमी आ जायगी, तब सभी समझ जायँगे और अपनी-अपनी जगह बैठ जायँगे। सब समझ लेंगे कि रुपयाका रुपया जाय और देशद्रोही बनकर माथे पर काला टीका लगे, अैसे दोहरे नुकसानका धन्धा कौन करे? सूरतमें अभी तक किसी किसीके मनमें शंका बाकी है और वे कहते हैं कि अमुक भाअीकी जड़ें तो गहरी हैं। गहरी होंगी तो घबराअिये नहीं, हम ट्रैक्टर चला देंगे। मगर जड़ें अुखाड़े बिना नहीं रहेंगे। शंका करनेवाले चेतावनी देते हैं, "देखिये लँगड़ी बिल्ली और कुछ नहीं करेगी, तो अपशुकन तो कर ही देगी।" मगर अैसा अपशकुन करनेवालोंको अब किसके पास जाना है? वहाँ जायगे तो अब कोअी बड़े विदेशी हाकिम थोड़े ही बैठे होंगे? अब तो वहाँ किसी न किसी तरहका कांग्रेसका राज्य होनेवाला है। अब वहाँ खिताब मिलनेकी आशा नहीं रही यह समझ लीजिये। और लँगड़ी बिल्ली आयेगी तो बुरका ओढ़कर थोड़े ही आयेगी? मौजूदा धारासभामें ४४ सरकारी पिट्ठुओंकी टोली देखी जाती है। मगर अब तो अुन्हें खादीकी टोपीवाले कांग्रेसके सिपाहियोंके पास खड़े होना है। अुन्हें मदद देनेके लिअे वहाँ अेक भी पिट्ठू दिखाअी नहीं देगा। वे कांग्रेसवाले अुसे फौरन पहचान लेंगे। असली गरमी तो अब आनेवाली है।

देशके लोकमतके विरुद्ध होने और भारतवर्षकी अिज्ज़त पर हाथ डालनेका क्या मतलब समझते हैं? कांग्रेस कौन है? लाखोंने जेलें भरीं और ज़मीन-जायदाद कुरबान की, तो क्या यह सब चाहे जैसे स्वार्थसाधक लोगोंको

घुस जाने देनेके लिअे किया ? जो कोअी कांग्रेसकी अिज्ज़त पर हाथ डालनेको तैयार होगा, अुसे लोग अच्छी तरह पहचान लेंगे ।

सरकारी नौकरोंके मत भी कांग्रेसको

कुछ लोग मुझे कहते हैं कि अिस ज़िलेमें अब भी कुछ लोग अैसे हैं, जो रुपया देने पर मत बेचनेको तैयार हो जायेंगे। रिश्वत लेकर मत देना महापाप है। देनेवालेको भी समझ लेना चाहिये कि अैसे लोग रुपया लेकर भी मत तो कांग्रेसको ही देंगे। लोकल बोर्डके स्कूलोंके शिक्षक भी मुँहसे भले हाँ-हाँ कह दें, मगर मत तो कांग्रेसके अुम्मीदवारोंको ही दे आवेंगे। ज़िला बोर्ड, स्कूल बोर्ड या म्युनिसिपैलिटियोंमें भी अूपरकी धारासभाओं पर कांग्रेसका कब्ज़ा होते ही शिक्षकों और दूसरे नौकरोंकी गुलामी मिट जायगी। सरकारी नौकर भी कांग्रेसको ही मत देंगे, क्योंकि वे जानते हैं कि अुन्हें थोड़े वेतनमें गुज़ारा करके गुलामी करनी है और पाँच हज़ार रुपये पानेवाले अफसर बंगलोंमें मौज अुड़ाते हैं। ये जो जेलें भुगती गअीं, लाठियाँ सही गअीं और गोलियाँ खाअी गअीं, सो सब किसके लिअे? यह सब किसानों, मज़दूरों, गरीबों और देशके अैसे छोटे-छोटे नौकरोंके भलेके लिअे ही तो था। समझनेवाले तो समझ गये हैं कि अिस चुनावके बाद मौजूदा शासन नहीं रहेगा, कांग्रेसका राज्य हो जायगा।

और मैं कहता हूँ कि चुनावमें दबाव डालनेकी किसी अधिकारीको सत्ता नहीं है। अगर कोअी भी अधिकारी, शिक्षक या और कोअी अुसमें दखल दे या दबाव डालता हुआ पाया जाय, तो अुसका नाम लिख लीजिये। अुसे मारना या गाली नहीं देना है। मगर जब वह निकलेगा तब लोग यह कहकर कि "यह सूतकी जा रहा है" अुसकी तरफ टेढ़ी नज़रसे देखेंगे। किसीको अब निराशाकी आवाज़ नहीं निकालनी चाहिये।

चुनावके लिअे जवाहर नहीं

कुछ लोग पं० जवाहरलालजीको गुजरातमें बुलानेकी बात सुझा रहे हैं। अुन्हें किसलिअे बुलाया जाय? चुनावके लिअे? तब क्या आपकी और मेरी लाज नहीं जायगी? अितना कष्ट सहन किया, अितनी कुरबानी की, अुस सब पर कालिख नहीं पुत जायगी? जिस दिन गुजरात अिस चुनाव आन्दोलनमें विजयी बनकर कांग्रेसके प्रति अपनी वफ़ादारी साबित करके दिखा देगा, अुस दिन हम राष्ट्रपतिका फूलोंसे स्वागत करेंगे और हृदय बिछाकर अुनकी अगवानी करेंगे। लेकिन अगर मतोंकी भीख माँगनेके लिअे अुन्हें बुलाया जाय, तब तो हमारी लाज जाती है।

हज़ारों पर पानी मत फेरिये

बहुतोंको अैसी आदत होती है कि दोनोंको हाँ कहकर राजी रखते हैं। वे कहते हैं कि मत तो हमें कांग्रेसको ही देना है, मगर किसीका जबानसे क्यों नाराज़ किया जाय? यह नीति गलत है। किसीको अच्छा लगे, अिसीलिअे हज़ारों मतदाताओंको नाहक तकलीफ़ देना क्या अुचित है? साफ़-साफ़ न कहनेसे जैसे आप मतदाताओंको कष्टमें डालते हैं, वैसे ही अुनका नुकसान भी करेंगे, क्योंकि आपकी आशामें वे हज़ारों रुपया फूँक देंगे। अिसलिअे कांग्रेसकी खातिर नहीं, तो कमसे कम अुन लोगों पर दया करके ही आपको साफ़ कह देना चाहिये। अब दो अर्थवाली बातें करनेकी आदत छोड़कर साफ़-साफ़ कहना सीखिये।

जबरदस्ती सेवा करनी है?

मगर मुझे कोअी बताये तो सही कि अितने वर्ष तक कुरसियोंपर बैठनेका मौका मिलने पर भी अभी तक वे क्यों नहीं छोड़ी जातीं? सेवा करनेका अितना अधिक अुत्साह कहाँसे पैदा हो गया? लोग सेवा लेना नहीं चाहते, तो भी वे सेवा करनेका अितना ज्यादा हठ क्यों कर रहे हैं? अैसी कौनसी सेवाकी लगन पैदा हो गअी है कि पचास-पचास हज़ार पर पानी फेर कर भी सेवा करनी है! अितना बड़ा देशसेवक तो कोअी नहीं देखा! अिसे तो महात्मा गांधीसे भी बड़ा तपस्वी कहना पड़ेगा, क्योंकि गांधीजी भी जब लोगोंने अुनकी शर्त पर सेवा लेनेकी असमर्थता या अनिच्छा दिखाअी, तो छोटेसे गाँवमें जा कर बैठ गये हैं। धारासभामें जाकर स्वार्थ साध लेनेके दिन अब नहीं रहे, यह समझ लेना चाहिये। कांग्रेस अिस काममें पड़ रही है, सो तो देशकी बिगड़ी हुअी हवाको सुधारनेके लिअे ही पड़ रही है। अुसे भयका वातावरण मिटाना है, खुशामदका वातावरण दूर करना है, देशमें सर्वत्र आज़ादीकी फ़िज़ा पैदा करनी है और स्वतंत्रताकी लड़ाअीके रास्तेमें जो यह बड़ा पत्थर आ पड़ा है अुसे हटाना है।

हाथ अुठाओ!

अब मैं चेतावनी देना चाहता हूँ कि कोअी ढीली आवाज़ न निकाले। जो अैसा करते हैं, वे वातावरणको बिगाड़ते हैं। मैं जहाँ जाता हूँ, वहाँ अब लोगोंसे सीधे ही पूछ लेता हूँ। आज आप जिन्हें मत देंगे, वे पाँच वर्षके लिअे धारासभाओंमें जायेंगे। पाँच साल तक वे देशके हितोंका रक्षण करेंगे या भक्षण करेंगे। अिसलिअे पूरी तरह विचार करके काम कीजिये। अब आपसे पूछता हूँ कि अगर आपको विश्वास हो कि मैं जो कहता हूँ वह सच है, तो अिस चुनावमें कांग्रेसके पक्षमें जो लोग मत देंगे और वातावरण शुद्ध रखनेमें मदद करेंगे, वे अपने हाथ अुठा दें। (सभामें सब हाथ अुठ गये।)

अब किसीके मनमें यह खयाल हो कि बहुत वर्षोंका सम्बन्ध है अिसलिअे लिहाज़ रखना पड़ता है, किसीको अैसा लगता हो कि तेज आज़ादीसे ठंढी गुलामी ही अच्छी है, तो वे लोग हाथ अुठा दें। (अेक भी हाथ अुठता हुआ न देखकर)

कोअी भी नहीं! कोअी सरकारी नौकर तक हाथ नहीं अुठाता! अच्छा तो अब कोअी दोनोंको राजी रखनेवाले, दोनों तरफ मीठा बोलनेवाले और दोनों घोड़ोंकी सवारी करनेकी आशा रखनेवाले हों, तो वे भी अपने हाथ अुठा दें। (कोअी नहीं।)

७३

सातवाँ स्नातक सम्मेलन

[ता० ७-३-१९३७ को गुजरात विद्यापीठके सातवें स्नातक सम्मेलनमें सभापति पदसे दिया हुआ भाषण।]

तुममेंसे जो सार्वजनिक जीवनमें पड़ गये हैं, वे तो किसी न किसी अलग अवसर पर मुझसे परिचित हो गये हैं और अप्रत्यक्ष रूपसे अेक दूसरेका संबंध बना ही रहता है। असलमें तो स्नातकोंसे ही मेरा काम चलता है। मेरे साथ दुनियाके बिना डिग्रीके स्नातक भी हैं, जिनके बल पर मैं गुजरातकी नाव खे रहा हूँ। अिसलिअे तुम सब क्या करनेवाले हो, अिसकी थोड़ी बहुत कल्पना तो मुझे रहती ही है। तुम्हें जो बात चुभ रही है, अुसका भी मुझे पता लग गया। मगर वह तो तुच्छ है और अेक तरहसे गंभीर भी है। मैं जब यहाँकी म्युनिसिपैलिटीका अध्यक्ष था, तब यह प्रश्न मेरे सामने आ गया था। असलमें अिन स्थानीय संस्थाओंमें स्वराज्यकी गंध भी नहीं है। वे तो साम्राज्यकी सत्ताको मज़बूत करनेकी शाखाअें हैं। और अुनपर सरकारका पूरी तरह नियंत्रण है। जिन सदस्योंका बोर्ड चुना जाता है, अुनके पास मर्यादित अधिकार है और वे म्युनिसिपल नौकरोंके कानून-कायदे स्वतंत्र रूपसे नहीं बना सकते। अुनके लिअे सरकारकी मंजूरी निहायत ज़रूरी होती है। अुनमें अेक धारा अैसी है कि अमुक स्थान पर बंबअी युनिवर्सिटीके ग्रेज्युअेटके सिवाय और किसीको नहीं रखा जा सकता। मुझे अुस वक्त मौका मिला। मैं तो मानता ही था कि विद्यापीठके स्नातक औरोंसे बढ़कर हैं। अितना ही नहीं, अुनका स्थान कमसे कम युनिवर्सिटीके ग्रेज्युअेटके बराबर तो होना ही चाहिये। अिसलिअे अुस धाराकी परवाह किये बगैर अेक स्नातकको मैंने नौकर रखा और अुसके कारण झगड़ा

पैदा हुआ। अिसलिअे हमने अिस नियमको सुधारनेकी सरकारसे सिफारिश की और विनीत तथा मैट्रिक्युलेटको बराबर समझनेकी मंजूरी माँगी। सरकारको लगा कि अिस वक्त छेड़ना अच्छा नहीं, क्योंकि वह जानती थी कि हमारे पीछे कितनी ताकत है। अिस तरह हम बहुत लड़े और अंतमें सरकारने वह प्रस्ताव मंजूर किया।

सच्चा स्नातक क्या करे?

मगर जहाँ अपमान होता हो वहाँसे तुम्हें हट जाना है। सच्चा स्नातक आज तो रविशंकर है, जिससे अच्छे अच्छे शिक्षक यह पूछने आते हैं कि देहातमें शिक्षा किस तरह दी जाय। जिन लोगोंके पास रुपया नहीं है या पहननेको कपड़ा या खानेको अन्न नहीं है और जहाँ हजारों लोग चोरी करते हैं, अुनके बच्चोंको बचा लेना आसान नहीं है। संसारका वह सच्चा स्नातक क्या कर रहा है, यह देखनेके लिअे तुम १५ दिन अुसके पास जाओ। अुसकी अेक ही डिग्री है और वह है चरित्रकी। यह चरित्र तो विद्यापीठकी जड़में ही मौजूद है। अुसका माथा बाँध लिया हो तो डरका कोअी कारण नहीं। जो यह मानते हों कि दुकानों पर या अैसी ही जगहों पर अुनकी कदर नहीं होती, अुन्हें जान लेना चाहिये कि अुनकी अपनी ही कीमत किसी न किसी कारणसे थोड़ी है। कोअी दुर्भाग्य पूर्ण घटना हो गअी हो, तो अुसके कारण दूसरी डिग्री लेनेके लिअे जानेवाला अपना मूल्य घटा देता है और विद्यापीठका मूल्य भी घटा देता है।

स्नातकोंके तीन वर्ग

आजकल मैं देख रहा हूँ कि स्नातकोंमें तीन वर्ग हो गये हैं। अेक वर्ग अैसा है, जो अपनी गृहस्थी चलानेमें ही पड़ जाता है। दूसरे वर्ग वाले सार्वजनिक जीवनमें आ गये हैं और कमाअी छोड़कर बड़ी कमाअी करनेको निकल पड़े हैं, जिसके लिअे विद्यापीठ खोला गया था। तीसरा वर्ग अिन दोनोंके बीचमें झूलता रहता है। अुसे कमाअीका भी मोह है और साथ ही सार्वजनिक जीवनमें भी आगे आना है। पहली पुकार हुअी और अुसी पर जो चले आये, वे बहादुर थे, तेजस्वी थे। जब विद्यापीठकी बाढ़ कम हुअी, तब वातावरण भी बदल गया; और अुसमें अैसे लोग भी आ गये, जिनके लिअे और कहीं स्थान नहीं था। अेकाध निकम्मा दाना हो तो क्या किया जाय? सौ मन लकड़ीसे भी दाल अुबाली जाय, तो भी वह नहीं सीझता।

पलटती हालत

ये सब बातें मैं विद्यापीठके स्नातकोंकी दृष्टिसे कह रहा हूँ। आजकल किसी संस्थामें स्वतंत्रता नहीं है। अिसका कारण या तो अुसकी शक्तिकी कमी है, या

अुस संस्था पर सरकारका दबाव है। जितनी स्वतंत्रता पहले थी, अुतनी बनाये रखनेसे सरकारका तेज भी घटता है और अुसके लिअे संघर्ष होता ही रहता है। जब सरकार अपने पैर मजबूत करनेकी कोशिश करती हो, तब संस्थाअें अपनी रक्षा कहाँ तक कर सकती हैं, यह तो काम करनेवालोंको ही मालूम होता है।

अब मैं तुम्हें दूसरी दृष्टिसे देखनेके लिअे कहता हूँ। अब तो हमने धारासभाओं पर कब्जा कर लिया है, जिससे बहुत कुछ परिवर्तन हो जायगा। पद स्वीकार किये जायँ या नहीं, यह तो अलग बात है। फिर भी बहुमतका प्रभाव तो ज़रूर पड़ेगा। युनिवर्सिटीका नियंत्रण सरकारके पास नहीं रहेगा। मंत्री भी हिन्दुस्तानी होगा, अिसलिअे बहुत स्वतंत्रता हो जायगी। मेरा अनुभव यह है कि आम तौर पर कुछ लोग तो जेल गये हुओंको नौकर रखनेमें भी डरते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि अैसे लोगोंकी प्रतिष्ठा सरकारमें भी है। मगर यह प्रतिष्ठा तो अब बढ़नेवाली है। कौनसा मंत्री और कौनसा कुलपति जेलमें नहीं गया, अुसकी भी सरकारको अब गिनती रखनी पड़ेगी।

विद्यापीठकी शिक्षा बतानेका मौका

हर साल हिन्दुस्तानमें बड़ा परिवर्तन हो रहा है। अिसलिअे अगले साल क्या होगा, यह कहना मुश्किल है; फिर भी तुम्हारे सिर पर अभी अेक काम तो है ही। तुमने कांग्रेसका अधिवेशन करनेका निमंत्रण दिया है और अुसे पूरी तरह सुशोभित करना है। विद्यापीठकी शिक्षाकी शक्ति बतानेका यह सबसे बड़ा मौका है। आज तो न करना हो तो भी अलग-अलग ज़िलोंकी तरफसे कांग्रेसके अधिवेशनके लिअे निमंत्रण आये हैं। परन्तु गुजरातको अेक ही गाँव समझकर सबको काम करनेकी ज़रूरत है। स्वराज्यकी रचना करनेका यह अेक विशाल क्षेत्र है और अुसमें तुम्हें अपना स्थान निश्चित करना है। जो आज तुममें निर्बल दिखाअी देते हों, अुन्हें निभा लेना भी स्नातक-संघका काम है। अब अैसा समय आ गया है, जब विद्यापीठका विकास करनेका विचार करना पड़ेगा। अब अेक अैसा समय आ रहा है, जब विद्यापीठके सिद्धांत दूसरोंके मुकाबलेमें स्वीकार कराने हैं; और शिक्षा मातृभाषामें ही हो, यह स्वीकार करानेका समय तो नज़दीक ही है।

प्रजाबन्धु, १४-३-१९३७

७४

बम्बअीके व्यापारियोंसे

[ता० ७-९-१९३७ को बम्बअीकी अलग-अलग व्यापारी संस्थाओं द्वारा कांग्रेस मंत्रि-मंडलके सम्मानमें मांडवीमें आयोजित समारोहमें दिया हुआ भाषण ।]

व्यापारी वर्गकी तरफसे मंत्रियोंका जो स्वागत हो रहा है, अुसका मैं साक्षी बन रहा हूँ । हमें पहले यह समझ लेनेकी ज़रूरत है कि अिस सारे स्वागतका अर्थ क्या है । क्योंकि कांग्रेसका अुद्देश्य अिसीसे पूरा हो जाता हो, तब तो अितना अधिक स्वागत शोभा दे सकता है । मंत्रि-मण्डलका समय लेना भी अेक दृष्टिसे लाभदायक नहीं है । परन्तु अिसके पीछे जो भावना है, अुसे न रोकनेके लिअे ही अिसे मजबूर होकर स्वीकार करना पड़ता है ।

स्वागतके अर्थमें अेक चीज़ यह है कि बम्बअीकी व्यापारी जनताका अिस मंत्रि-मंडलको पूरा-पूरा साथ है और अिसमें अुसका पूरा विश्वास है । अगर किसीको अिस बारेमें जरा भी अँदेशा हो, किसीको शक हो या किसीका यह खयाल हो कि अिस पसंदगीमें भूल हुअी है, तो अुसकी यह शंका दूर करनेके लिअे ये सब स्वागत काफी हैं और बाला साहब भी यह विश्वास कर लेनेके लिअे ही ये सब स्वागत स्वीकार कर रहे हैं ।

दूसरी चीज़ यह है कि यह कोअी व्यक्तिका प्रश्न नहीं है । मंत्रि-मंडलमें कोअी भी हो सकता है । कांग्रेस किसी व्यक्तिकी पूजा नहीं करती । कांग्रेस व्यक्तिके बजाय सिद्धान्तको मानती है; और ये जो स्वागत हो रहे हैं वे व्यक्तिके नहीं, कांग्रेसके हैं । अगर आज कोअी यह कहे कि अिन ७ मंत्रियोंसे थोड़ा भी ज्यादा काम कोअी दूसरे कर सकते हैं, तो ये स्वाभिमानवाले भाअी कांग्रेसका हुक्म होते ही राजी-खुशीसे कुर्सियाँ छोड़कर चले जायेंगे; जरा भी हिचकिचाहट नहीं करेंगे ।

मंत्रियोंके हाथ मजबूत कीजिये

अब अेक दो बातें जो आपसे मुझे कहनी हैं, कहता हूँ । ३ करोड़को मिले हुअे मताधिकारसे लाभ अुठानेका कांग्रेसने बीड़ा अुठाया और अुसका परिणाम यह हुआ कि ७ विशाल प्रान्तोंमें कांग्रेसको सत्ता मिल गअी । अिस मर्यादित सत्तामें अगर फाल्तू आदमी घुस जायँ, तो मुल्कको नुकसान पहुँचे । कांग्रेस संकुचित सत्ताको विशाल बनानेका अिरादा रखती है, और यह काम बुद्धिशाली पुरुषोंका है ।

अपराधोंको पकड़नेके लिअे पुलिसकी मदद लेनेके बजाय अपराधोंको रोकनेमें हमारी ज्यादा शोभा है। अैसा करनेसे ही मंत्रियोंका दीपक जोरसे जलेगा, वर्ना डब्बा गुल हो जायगा। अिसीलिअे व्यापारी वर्गसे मुझे कहना पड़ता है कि अेक बार मार्ग सरल बना दीजिये और मंत्रियोंके हाथ मजबूत कीजिये। मैं तो कहता हूँ कि व्यापारियोंको अिसके लिअे कांग्रेस कमेटी पर कब्जा करना चाहिये। कांग्रेसके सदस्य बनिये और अपने सच्चे आदमियोंको बम्बअी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीमें भेजिये। योग्य आदमियोंको भेजिये, जनताकी सेवा करनेवालोंको भेजिये। अैसे आदमियोंको भेजिये जो सच्चे हों, स्वार्थी न हों और जिन्हें देशके हितका खयाल हो।

गुजरातमें जैसी व्यवस्था है, वैसी सारे प्रान्तमें हो तो मैं कहता हूँ कि अिस विधानके टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दूँ। मगर यह काम बातें करनेसे नहीं होता। यह तो कठिन काम है। गुजरातमें व्यवस्थित कार्य है। बहुतोंने अपने जीवन ज़मीन, जायदाद और पढ़ाअी छोड़कर देशके लिअे समर्पित कर दिये हैं।

आप समझदार हैं, सयाने हैं। आपको समझ लेना चाहिये कि जिस दिन कांग्रेसमें मुख्य आदमी नालायक होंगे, अुस दिन भारतके भाग्य सो जायेंगे। मगर अिन मंत्रियोंमें प्रपंच नहीं, खट-पट नहीं, स्वार्थ नहीं और अीर्ष्या नहीं। वैसे हाथीके पीछे कुत्ते कितने ही भौंकें, तो अुसका कोअी असर नहीं होनेवाला है।

मंत्री करोड़ों लोगोंकी तरह रहें

आपका कर्तव्य है कि मंत्रियोंका मार्ग सरल बनायें और बादमें अुनसे पूरी तरह हिसाब लें। पूनामें धारासभाअें चल रही हैं। मंत्री रात-दिन अुनमें लगे रहते हैं। मैं तो वहाँ गया नहीं हूँ। मुझसे कौंसिल-हॉलके रंग नहीं देखे जा सकते। ये विदेशियोंके ढंग हैं। मेरा बस चले तो मंडपकी तरह दुकानोंमें चादर डालकर जैसे बैठकें होती हैं वैसा कर दूँ। कहाँ सेक्रेटरियेट, कहाँ मंत्रियोंके बँगले और कहाँ गवर्नरका निवास? यह सब क्या है? पूनामें तो सच्ची कचहरी शनिवारपेठ या गायकवाड़ वाड़ेमें ही हो सकती है; और वहीं खेर साहब रहें।

हमें तो मलाबार हिलके बँगले बेच डालने हैं, अुनका रुपया बना लेना है और सेक्रेटरियेटके सामने गुमास्तोंके जैसे मकान बना देने हैं। अिसीमें शोभा है। मुल्कमें करोड़ों लोग जिस ढंगसे रहते हैं, अुसी ढंगसे मंत्रियोंको भी रहना चाहिये। मंत्रियोंने ५०० रुपया वेतन स्वीकार किया है। गांधीजी तो अब भी ७५ रुपयेके लिअे ही कह रहे हैं और मोटरके बजाय साअिकिलकी बात करते हैं। यह सब सच है। मगर आजकलका वातावरण दूसरा है। अब

वातावरण धीरे-धीरे बदल तो रहा है। सात प्रान्तोंके साथ-साथ दूसरे प्रान्त भी शराबबन्दीका काम शुरू करेंगे, यह अच्छा रास्ता है। शराबके रास्ते बह जानेवाला रुपया बचेगा। यह काम तीन वर्षमें पूरा करना है और किसानोंको मदद देनी है। अिन सब बातोंके लिअे रुपयेकी ज़रूरत तो होगी ही।

यह हम दो तरहसे कर सकते हैं: १. लड़नेकी शक्तिसे; २. अिस तरह शासन चलाकर कि भारत मंत्रीको भी मानना पड़े कि ये लोग अच्छा काम कर रहे हैं। फिर तो अिन लोगोंको चले ही जाना पड़ेगा।

आपने समझ कर अिस मंत्रि-मंडलको सम्मति दी है। अगर किसान या मज़दूर यह कहें कि ये आदमी ठीक नहीं हैं, तो मैं अिन्हें अुठाकर दूसरोंको बैठा दूँगा। मगर जो हों अुनका समर्थन करना सबका फ़र्ज़ है। आपके मनमें यह खयाल हो कि अिस प्रान्तमें युक्ति-प्रयुक्तिसे काम लिया गया है, प्रपच हुआ है, तो ये सब बातें मनसे निकाल दीजिये।

७५

हलपतियोंको अुपदेश*

[ता० १५–१२–१९३७ को बारडोली तहसीलके वराड गाँवमें हलपतियोंके सम्मेलनमें दिया हुआ भाषण।]

तुम २८ गाँवोंके लोग आज दूर-दूरसे आकर यहाँ अिकट्ठे हुअे हो। सबसे मिलकर मुझे बड़ा ही आनन्द हुआ है। तुममें अेक प्रकारकी जाग्रति आ गअी है, यह खुशीकी बात है। अब अुसका सदुपयोग करना तुम्हारा धर्म है। अगर अैसा न करोगे तो अिससे कोअी परिणाम नहीं निकाल सकोगे।

गुलामीकी प्रथा

तुमको मालूम है कि ताप्तीके किनारे हरिपुराके पास थोड़े ही दिनोंमें राष्ट्रीय कांग्रेस होनेवाली है। यह कांग्रेस अैसी है जो सारे देशकी गुलामीको मिटानेके लिअे पिछले ५० वर्षसे भगीरथ प्रयत्न कर रही है। अैसे समय और जहाँ कांग्रेस होगी वहाँ गुजरातके बीचोंबीच, जो कांग्रेस गुलामी मिटानेका काम कर रही है, अुस कांग्रेसके आँगनमें ही गुलामी मौजूद है। अखबारोंमें आजकल अुसकी बातें आ रही हैं। अिस जमानेमें संसारमें कोअी बात छिपी नहीं रहती। हमारे यहाँ यह गुलामी किसी भी कारणसे आअी हो, परन्तु आज अुसका बचाव

* सूरत जिलेकी तरफ दुबला नामसे पुकारी जानेवाली जातिके लोग।

नहीं हो सकता। अिस गुलामीके लिअे गुजरातकी आलोचना होती है। आलोचना होना अुचित है। हमें खुद सोच लेना चाहिये कि गुलामीकी जो प्रथा चली आ रही है, अुसका अब क्या अिलाज हो? अेक आदमी दूसरेको गुलाम रखे, यह अेक अपराध है। रखनेवाला तो अपराधी है ही, रहनेवाला भी अपराधी है। जो लोग गुलामीको पसन्द करने लगे हैं, अुनसे गुलामी छुड़ाना कठिन है।

जानवरोंसे भी बुरी हालत

दुबले (गुलाम) की प्रथा हमारे लिअे लज्जाजनक है, क्योंकि हम अिसानियतका हक्क खो बैठे हैं और जानवरोंकी-सी हालतमें जी रहे हैं। पिछली बार जब मैं यहाँ आया था, तब मैंने कहा था कि किसानोंके यहाँ दुबले बननेसे तो तुम अुनके घर ढोर हुअे होते, तो वे तुम्हारे लिअे रहनेको घरका अेक कोना दे देते। हरअेक किसान अपने ढोरोंके लिअे घरका अेक हिस्सा खास तौर पर रखता है। रातके समय ढोर भूखा हो, तो अुसका मालिक या अुसके घरकी स्त्री अुठकर अुसे घास-चारा डालती है, पानी पिलाती है और प्रेमसे अुसके शरीर पर हाथ फेरती है। किसान जब ढोरके लिअे भी घरमें जगह निकालते हैं, तो मनुष्य जैसे मनुष्यको वे गुलामीमें रखें, यह भयंकर पाप है। मगर अिसान होते हुअे भी हमारे अिसानके हक्क जाते रहे, अरे जानवर जैसे हक्क भी जाते रहे। तुम्हारा रहनेका स्थान कैसा है! घासके जिस झोंपड़ेमें तुम रहते हो, अुसमें जानवर भी नहीं रहेगा। झोंपड़े घासके हों तो अुसका दुःख नहीं, परन्तु वे बहुत बुरी हालतमें हैं। और ढोरोंको जिस प्रेमसे घास-चारा दिया जाता या खिलाया जाता है, अुस प्रेमसे तुम्हें रोटी कौन दे? रोटी दी ज़रूर जाती है, परन्तु वह तुम्हारे मुँह पर फेंक दी जाती है, क्योंकि वह प्रेमसे नहीं, तिरस्कारसे दी जाती है। अिसीलिअे तुम्हारी अिस हालतको मैं जानवरोंसे भी बुरी हालत कहता हूँ।

शादीके लिअे गुलामी

तुम्हें तो अितना भी पता नहीं कि जो आदमी विवाह करता है, अुसमें घर बसाने और चलानेकी शक्ति होनी चाहिये। जो गृहस्थी बसाता है, अुसके सिर पर जिम्मेदारी आ जाती है। अपने स्त्री और कुटुम्बकी रक्षा और भरण-पोषण करनेकी जिसमें शक्ति हो, अुसीको अिस दुनियामें शादी करनेका हक्क है। जिसमें शक्ति न हो, अुसे कुँवारा रहना चाहिये। परन्तु कुँवारा रहनेवालेको भी स्वतंत्र तो रहना ही चाहिये। यह सब तुम्हारी समझमें नहीं आयेगा। जो पक्षी पिंजरेमें रहनेका आदी हो, अुसे अगर पालनेवाला मुक्त करे तो वह घबराता है और वापस पिंजरेमें ही आता है। अिसी तरह किसान अगर हलपतियोंको छोड़

दें, तो वे भी वापस आ जायँ। क्योंकि गुलामीके प्रति अुनमें अरुचि पैदा नहीं हुअी।

अिसलिअे तुम हलपतियोंको काफी शिक्षा देनेकी ज़रूरत है। अिसी तरह किसानोंको भी शिक्षा देनेकी ज़रूरत है। अगर हम खुद समझकर अिस गुलामीकी प्रथाको नहीं मिटायेंगे, तो कानून तो मिटाने ही वाला है। कांग्रेसके राज्यमें कोअी किसीको गुलाम नहीं रख सकेगा। मज़दूर तो रखे जा सकेंगे, मगर रोजी या वेतन देकर। परन्तु गुलामीमें किसीको बाँधा नहीं जा सकता। किसान तुम्हें मुक्त कर दें, तो भी तुम्हें घबराना क्यों चाहिये? घरमें चूल्हा बनाकर राँध खाओ। तुम्हें अीश्वरने हाथ-पैर दिये हैं और तुम मेहनत कर सकते हो। तुम जितनी मेहनत करते हो अुतनीका फल भोगना जानो, तो तुम्हारे जैसा सुखी जगतमें दूसरा कोअी नहीं हो सकता। क्योंकि तुम्हारी ज़रूरतें बहुत ही कम हैं। तुम्हें नाटक नहीं चाहियें, सिनेमा नहीं चाहियें या अैसे दूसरे कोअी मौज-शौक नहीं चाहियें। पेट भर कर रोटी मिल जाय, खुलेमें रहनेको मिल जाय और सादे कपड़े पहननेको मिल जायँ, तो तुम्हारी सब आवश्यकताअें पूरी हो जायँगी। अितना-सा मिल जाना तुम्हारे जैसे मेहनती लोगोंके लिअे कठिन नहीं है। तो फिर तुम्हें स्वतंत्रता बेचकर गुलाम क्यों बनना पड़ता है? तुम स्त्री लानेके लिअे अपनी जिन्दगी बेचते हो, खुद गुलाम बनते हो। जिस स्त्रीसे शादी करते हो अुसे गुलाम बनाते हो और जो बच्चे पैदा करते हो अुन्हें भी गुलाम बनाते हो। तुम्हें अैसा नहीं करना चाहिये। दुनियामें जो सब करते हैं वही तुम करो। रुपया कमाओ और शादी करो। स्वतंत्र घर-गृहस्थी बसाओ। तुम्हें यह सीखना है। ये संस्कार तुम्हें सिखानेके लिअे लोकशालाअें खोली गअी हैं और आश्रमके जो लोग तुम्हारे बीचमें रहते हैं, वे भी यही सिखानेके लिअे रहते हैं।

पुरुषका स्वामी पुरुष!

अेक समय अैसा था, जब यह बात सुनकर किसान भड़कते थे। अब वे अपना फर्ज़ समझने लगे हैं। सभी समझ सकते हैं कि जो देशका स्वराज्य लेने चले हैं, वे किसीको गुलाम तो हरगिज़ नहीं रहने देंगे। जहाँ अीश्वरने सबको बराबर बनाया है, वहाँ गुलाम और मालिक कैसे हो सकते हैं? दुनियामें किसीकी तीन आँखें या चार हाथ नहीं होते। सबको दो आँखें और दो हाथ दिये गये हैं। अीश्वरने नख-शिख तक सुन्दर शरीर तो दे दिया, मगर हम अुसकी दी हुअी बुद्धिका अुपयोग न करें, तो दोष अीश्वरका नहीं परन्तु हमारा अपना है। मनुष्य बुद्धिका अुपयोग नहीं करते, आँखें होते हुअे भी नहीं देखते, अिसीलिअे दुःखी होते हैं।

गुलामीकी यह प्रथा सूरत ज़िलेके बाहर गुजरातमें और कहीं नहीं है। सारे हिन्दुस्तानमें भी गुलाम और मालिकका-सा व्यवहार नहीं है। पुरुषका स्वामी कैसा? अुसका तो अेक ही स्वामी हो सकता है और वह है परमेश्वर, जो जगतको पैदा करनेवाला है। अिस स्थितिसे निकलना हो तो पहले ज्ञान चाहिये।

शुद्धिका अुपदेश

हम जैसे अपने हक पहचानें, वैसे हमें अपनी जिम्मेदारियाँ भी जाननी चाहियें। जिसे स्वतन्त्रताका अुपभोग करना है, अुसका चाल-चलन कैसा हो? अुसके मुँहसे गाली और भद्दी भाषा नहीं निकलनी चाहिये। सभ्य वचन ही निकलने चाहियें। वह किसीका अपमान न करे, किसीके साथ तू-तड़ाक न करे और किसीको गालियाँ न दे। पहली पढ़ाअी यही है कि सभ्यतासे बोलना सीखें। तुम्हारे भद्दे नाम रखे जाते हैं, वे भी बदल डालो। कुत्ता, बिल्ली वगैरा नाम भी कहीं मनुष्यको शोभा देते हैं? स्कूलमें जाते ही फौरन शिक्षकसे अच्छे नाम रखवा देने चाहियें। मुँहसे अपशब्द न बोलो, किसीको गाली न दो और सबको अिज्ज़तके साथ बुलाओ।

अिसी तरह शरीर भी साफ रखो। काम करके आते ही तुरन्त नहा लो। जैसे शरीर साफ रखा जाय, वैसे ही मुंह भी साफ रखना चाहिये। जिस सुन्दर मुखसे मधुर वचन और रामका नाम बोलना चाहिये, अुसमें शराब या ताड़ी डालना पाप है। तुम्हारा सबसे अधिक नुकसान अगर किसी चीज़ने किया है, तो अिसीने किया है। तुम्हारा खयाल है कि अुससे थकान दूर होती है, मगर यह गलत है। वह तो शक्ति और धन दोनों हर लेती है।

सरकार खुद शराबखाने बन्द करेगी

अेक समय अैसा था जब शराब और ताड़ी छुड़वानेके लिअे हमें शराब-खानों पर पिकेटिंग करना पड़ता था। अुस समय सरकार और शराबवाले मिल-कर जुल्म करते थे। शराब बन्द करनेके लिअे अनेक स्वयंसेवकोंने जेल काटी है और सिर फुड़वाये हैं, परन्तु अब समय बदल गया है। अब तो सरकारने ही अैसी नीति अपनाअी है, जिससे तीन वर्षमें कोअी भी पीनेवाला न रहेगा। कुछ शराबखाने अिस वर्ष तथा कुछ अगले साल बन्द हो जायंगे और तीन वर्षमें तो शराबखानोंका नाम तक नहीं रहेगा। तो हमें सरकारके कानून बनानेसे पहले ही स्वेच्छासे शराब और ताड़ी छोड़ देनी चाहिये। शराबके ठेकेदारोंका हाल अब कैसा हो गया है, यह तो तुम देखते ही होगे। अब अुनकी आँखोंका नशा चला गया है, क्योंकि राज्यकी नीति ही बदल गअी है। अब तो कांग्रेसका राज्य है। अिसलिअे अब राज्य जुल्मका नहीं, परन्तु नीतिका होगा। बड़ी सख्त लड़ाअीके बाद राज्यने अब स्वीकार किया है कि कांग्रेस जो कहती थी

वही नीति सच्ची है। सरकारने अब कांग्रेसके हाथमें सत्ता सौंप दी है और कह दिया है कि अपनी नीतिके अनुसार अमल कर सको तो भले ही करो। अिस महान प्रयोगका साहसपूर्ण प्रारम्भ भी हो चुका है। अहमदाबादमें डेढ़ लाख मज़दूर रहते हैं। वे सब कारखानोंमें काम करके अच्छा कमाते हैं, परन्तु जितना कमाते हैं, वह सब शराबखानोंमें दे आते हैं। प्रान्तमें सबसे ज्यादा शराब वहीं पी जाती है। अैसे शहरमें शराबकी दुकानें बन्द करनेका सरकारने निश्चय किया है। हम कोअी शहरके मज़दूर नहीं हैं, परन्तु देहातमें रहनेवाले किसान हैं। हमारे लिअे अिस पापसे छूटना शहरके मज़दूरों जैसा कठिन नहीं होना चाहिये। हमने अुससे छूटनेकी कअी बार कोशिश की, परन्तु पिछड़ गये; क्योंकि आज तक कोअी न कोअी झगड़ा करा देते और हमारा काम सीधा नहीं चलने देते थे। अब कोअी झगड़ा नहीं करा सकता। अब ज़रा भी शंका न रखकर तुम गाँव-गाँवमें बन्दोबस्त कर लो, ताकि शराब और ताड़ी पीनेवाला कोअी न रहे।

किसानोंसे बात कब हो?

मेरी सलाहके अनुसार चलो, तो किसानोंके साथ बात की जाय। वे कोअी तुम्हारे दुश्मन नहीं हैं। दोनोंके बीच कोअी बैर नहीं है। समझदार आदमीका यह काम है कि वह अैसा रास्ता निकाले, जिससे तुम भी सुखी हो और वे भी सुखी हों। तुम स्वतन्त्रताको समझने लगो। लड़कोंकी जिन्दगी न बेचकर अुन्हें किसानोंके लड़कोंकी तरह पढ़ाओ, ताकि वे अपनी अिज्ज़तको समझें, और तुम्हारे और अपने बच्चोंमें कोअी भेद न समझें। अिन लोकशालाओंके खोलनेका यही हेतु है।

दुःखका अन्त नजदीक है

अगर देशसे गुलामी मिटानी है, तो जो सबसे ज्यादा गुलाम हैं, अुन्हींको पहले सुखी करना पड़ेगा। शरीरमें फोड़ा हो जाय, तो पहले अुसे काटकर निकाल दिया जाय तभी शरीर सुखी हो सकता है।

तुम गाँव-गाँव मेरा यह सन्देश ले जाओ; अब दुःखका अन्त नजदीक आ गया है। परन्तु पहली सीढ़ीके तौर पर शराब और ताड़ी खतम हो जानी चाहिये। कहीं भी झगड़े न होने चाहियें। अगर तुम नहीं समझोगे, गुस्सा करोगे, लाठी चलाओगे और दंगा मचाओगे, तो तुम पीछे रह जाओगे; क्योंकि जो अपराध करता है, वह रंक बन जाता है। अपराध करनेवाले पर दूसरे लोग चढ़ बैठते हैं। तुममें से कुछ लोग मर्यादा छोड़ दें और फसाद करें, तो वे पिछड़ जायँगे। अिसलिअे क्रोधमें आकर कोअी दंगा मत करना। अिस पाठशालासे तुम्हें अनेक प्रकारके लाभ होंगे। मगर वे तभी होंगे, जब तुम शराब और ताड़ी

छोड़ दोगे, क्योंकि अुसके बिना तुम्हारा अज्ञान कैसे दूर होगा! हमें तो अैसा करना है कि तहसीलमें कोअी अनपढ़ ही न रहे। तहसीलमें से ही नहीं, बल्कि सारे जिले और प्रान्तमें से अज्ञानको निकाल देना है।

कानून बननेसे पहले ही

यह गुलामी तो हमें खुद फेंक देनी है। कानून बननेसे पहले ही हमें मुक्त हो जाना है। यह भी याद रखो कि मेहनत मनुष्यको अीश्वरकी दी हुअी सबसे बड़ी शक्ति है। मेहनत मनुष्यकी शोभा है। जो मेहनत करता है, वह अुत्तम मनुष्य है। जो परिश्रम नहीं करता और सिर्फ जबान हिलाकर खाता है, वह अीश्वरका चोर है। अीश्वरने तुम्हें मेहनत करनेकी शक्ति दी है। अुसका सच्चा अुपयोग करोगे, तो जितने सुखी तुम हो सकते हो अुतना और कोअी नहीं हो सकता।

शुभ मुहूर्त

सुखी होना तुम्हारे ही हाथमें है। जिसे सुखी होना है, अुसे अीश्वर सहायता देता है। और दूसरे लोग भी मदद देते हैं। अिस समय कांग्रेस और सरकार दोनों तुम्हें सहायता देना चाहती हैं। यह शुभ मुहूर्त आया है। अिसलिअे तुम सचेत हो जाओ, मैं जो सलाह दे रहा हूँ अुस पर विचार करो और गाँव-गाँवमें शराब और ताड़ी छोड़नेके प्रस्ताव करो। अितना करोगे तो ज़रूर तुम्हारा कल्याण होगा।

७६

राजपीपलाकी लोकसभा — १

[ता० २५-१२-१९३७ को राजपीपलाकी लोकसभाके ११ वें अधिवेशनके अध्यक्षपदसे दिये गये भाषणका मुख्य भाग ।]

गुलामी जायगी तो सभीकी जायगी

स्वागत-समितिके अध्यक्ष महोदयने कहा कि अिस सभाका अध्यक्ष पद राज्यके आदमीको लेना चाहिये । यह सोलह आने सही बात है । मेरा भी प्रथम अुद्गार यही निकलनेवाला था । मैं दो दिनके लिअे यहाँ आअूं और आपकी कमरमें कितना जोर है, अिसे देखे बिना आप पर बोझा डाल दूँ, तो अुसका दुःख आपको अुठाना पड़े । आप अपनी शक्तिके अनुसार मर्यादा बनाअिये । यह काम राज्यके जानकार और कुशल मनुष्योंका है । परन्तु देशी राज्योंमें काम करनेवालोंकी विषम स्थिति है । बहुत-सी जगहों पर राज्यके आदमी अैसे काम करनेको तैयार नहीं होते । अुसके अनेक कारण हैं । देशी राज्योंमें भी बहुतसे होशियार आदमी मौजूद हैं । मगर रियासतकी नाराज़ीके डरसे बहुतसे आगे नहीं आते । जिन्हें खुशामद प्रिय होती है, अुन्हें सच्ची बात मीठी भाषामें कही जाय तो भी कड़वी लगती है । बहुतसे देशी राज्योंकी स्थिति अैसी ही है । अिसमें अपवाद भी हैं । कुछ अच्छे भी हैं । मगर स्वागताध्यक्षने जो यह कहा कि ब्रिटिश भारतमें गुलामी है और यहाँ तो स्वराज्य है, यह सुननेके लिअे मैं तैयार नहीं हूँ । अैसा होता तो मैं आपके यहाँ झोंपड़ी बनवाकर रहता । क्योंकि मैंने अपना जीवन गुलामी मिटानेके लिअे अर्पण किया है । परन्तु हिन्दुस्तान भरमें अेक बालिश्त जगह भी अैसी नहीं है, जहाँ स्वतंत्र राज्य हो या गुलामी न हो । हम ब्रिटिश भारतमें रहनेवाले गुलाम हैं, परन्तु आप रियासतोंके रहनेवाले दोहरे गुलाम हैं । आप तो गुलामोंके गुलाम हैं । अिसलिअे आपकी स्थिति ज्यादा खराब है । दोहरी गुलामी मिटानेमें अधिक कुशलता और अधिक प्रयत्नोंकी ज़रूरत है । वह न किया जाय तो चुपचाप दुःख सहन करना पड़ेगा । परन्तु जब ब्रिटिश भारतमें आज़ादी मिल जायगी, तब रियासतोंमें भी गुलामी नहीं रहेगी । राष्ट्रीय कांग्रेस विराट संस्था है । वह सिर्फ २५ करोड़ लोगोंके लिअे स्वतंत्रता ढूँढ़ रही है, सो बात नहीं । वह ३५ करोड़के लिअे — हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी सबके लिअे — कोशिश कर रही

है। अुसकी मर्यादामें रंगभेद नहीं है। अुसने सारे भारतवर्षके लोगोंकी आज़ादीके लिअे रूपरेखा बना रखी है। फिर भी मर्यादा कायम करते समय अुसने अपनी शक्तिका हिसाब लगाकर अपना क्षेत्र चुन लिया है। कांग्रेसने कअी बार आश्वासन दिया है और मैं भी यहाँ फिरसे यकीन दिलाता हूँ कि अगर हिन्दुस्तानका अेक भाग स्वतंत्र हो जायगा, तो दूसरा कभी गुलाम नहीं रहेगा। और दूसरा गुलाम होगा, तो अेक भी स्वतंत्र नहीं रहेगा। हिन्दुस्तानके किसी कोनेमें गुलामी मौजूद होगी, तो अुसकी दुर्गन्ध सब जगह फैलेगी। कांग्रेसने अपना कार्यक्रम सत्य और अहिंसाके आधार पर तैयार किया है। वह अिन दोनों पर, भारतकी संस्कृति पर, भारतकी स्वतंत्रताकी अिमारत तैयार करनेकी महत्त्वाकांक्षा रखती है। अिसलिअे वह राजा-महाराजाओंकी भी मर्यादा रखती है। वह तमाम वर्गोंके वाजिब हक्कोंकी और हरअेक कौमके हितोंकी संभाल रखती है और अुससे भी ज्यादा वह रात-दिन अिस बातकी कोशिश करती है कि किसानों, श्रमजीवियों और मजदूरों आदि जिन ८०% लोगों पर हमारा आधार है, अुनकी किसी भी तरह रक्षा हो और अुनका भक्षण होना बन्द हो।

निरंकुश सत्ता कहाँ तक टिकेगी?

हिन्दुस्तानके सात प्रांतोंमें जनता कांग्रेसके पीछे है, अिसलिअे वहाँ कांग्रेसी मंत्रि-मंडल काम कर रहे हैं। आपको अितना तो मालूम है कि आपके आसपास लोकसत्ता या लोकमतसे शासन हो रहा है।

मगर आपके यहाँ प्रजाका शासन नहीं है। अधिकांश बड़ी-बड़ी रियासतोंमें भी नहीं है। यह ठीक नहीं है। कोअी राजा शासनका भार खुद अकेला नहीं अुठा सकता। अुसमें प्रजाको हिस्सा माँगना चाहिये। भाड़ेके आदमियोंसे होनेवाला शासन लोकमतकी परवाह नहीं करता। अिसमें अधिकारियोंका दोष नहीं होता, क्योंकि अुनकी अुँगलियाँ प्रजाकी नब्ज़ पर नहीं रहतीं। देशी राज्योंमें जो अन्याय होते हैं, अुनमें राजाओंसे अधिक वर्तमान प्रथाका दोष है। अुन पर अँकुश नहीं होता और सर्वोपरि सत्ताके रक्षणकी गरमी होती है। वे अुस बड़ी सत्ताके संरक्षणसे टिके हुअे हैं। जिस ब्रिटेनके प्रतिनिधि यहाँ राज्य कर रहे हैं, वहाँकी प्रजा कैसी है अिसकी कल्पना कीजिये। वह बहादुर प्रजा है। वह खुद अपनी पार्लियामेन्ट और अपने नौकरोंके द्वारा अपना शासन करती है। जिस चक्रवर्ती राजाकी वफ़ादारीकी सौगंध हमारे राजा लेते हैं, अुस राजाको अपने मुल्कमें घूमनेके लिअे भी प्रधानमंत्री यानी प्रजाके प्रतिनिधिसे पूछना पड़ता है।

अिस युगमें शासनमें निरंकुश सत्ता कहाँ तक टिकेगी? जिस प्रजा पर वह सत्ता चलती है, अुसका थोड़ा बहुत हिस्सा अुसमें होना ही चाहिये। स्वेच्छाचारी

शासनमें सयानापन नहीं होता। राजाओंमें कुछ समझदार आदमी भी होंगे, परन्तु समझदार भी भूल करते हैं। निरंकुश सत्तामें नशा रहता है। कुछ लोग यह कहते हैं कि हिन्दुस्तानमें देशी राज्योंका अस्तित्व ही नहीं होना चाहिये। फिर भी कांग्रेसके मुख्य आदमी अभी तक यही सलाह देते हैं कि हमें अपनी संस्कृतिके अनुसार काम करना चाहिये। युरोपकी हालत देखिये। वहाँ गृहयुद्धकी तैयारियाँ हो रही हैं और ज्यादासे ज्यादा तेजीसे मनुष्यों और देशोंका संहार और नाश करनेकी खोजबीनके लिअे रात-दिन प्रयत्न हो रहे हैं। अिस प्रकार प्रलयकाल नज़दीक आता जा रहा है। दुनियामें अिस समय सिर्फ हिन्दुस्तान ही अैसा देश है, जो अपनी मूल संस्कृति पर, सत्य और अहिंसाके आधार पर, अिस समस्याको हल करनेकी कोशिश कर रहा है। अुसके तरीकेमें राजा अपनी मर्यादा समझें, किसान मर्यादामें रह कर न्याय प्राप्त करनेकी कोशिश करें और व्यापारी भी वाजिब मुनाफ़ा लें।

किसान मनुष्य बनें

मैं किसान हूँ, किसानोंके दुःख दूर करनेके लिअे रात-दिन कोशिश करता हूँ, लेकिन मैं किसानोंको अनीतिका पाठ नहीं पढ़ाता। जो राज्य किसानोंको कर्ज़से मुक्त करना चाहे, अुसे लगान घटाना चाहिये और जितना किसान सह सके अुतना ही रखना चाहिये। अैसा राज्य किसानको शराब नहीं पिलायेगा। शराबसे किसानका अितना पतन होता है कि अुसकी आयका बड़ा भाग वह अिसीमें बरबाद कर देता है। अिसमें राज्यकी शोभा नहीं है। मैं चाहता हूँ कि किसान ऋणमुक्त हो जाय। मगर अुससे भी ज्यादा यह चाहता हूँ कि किसान किसान बने, मनुष्य बने और जानवरोंकी हालतसे मुक्त हो जाय। किसानों पर साहूकारके कर्ज़का ढेर लग गया है। बहुतसे साहूकारोंने नीति-न्याय छोड़कर न करने जैसे काम किये हैं। मद्रासमें जैसा कानून बननेवाला है, वैसा आपके यहाँ भी बन जाय तो आश्चर्य नहीं। साहूकारकी जगह राज्यको ले लेनी चाहिये। जिस ब्याज पर राज्य औरोंसे अुधार दिलवाना चाहता है, अुसी ब्याज पर अुसे खुद किसानोंको रुपया अुधार देना चाहिये। किसानोंको कर्ज़से छुड़ाना राज्यका धर्म है। अुसका विरोध न करना साहूकारोंका धर्म है। यह जमाना श्रमजीवियोंका है, बैठे-बैठे खानेवालोंका नहीं है। बुद्धिवादका युग खतम हो गया है। आजकल तो साहूकारोंके कुटुंबोंमें भी अैसे लड़के पैदा हो गये हैं, जो अिस स्थितिको बरदाश्त नहीं करते। जो मेहनत करता है, अुसका हक पहला है। लोकसभा और राज्यको अैसा काम करना है, जिससे किसान और साहूकारके बीच प्रेम बढ़े। जहाँ किसान सुखी नहीं है, वहाँ राज्य भी सुखी नहीं है और साहूकार भी सुखी नहीं है।

प्रजाका धर्म

अब प्रजाके धर्मके बारेमें भी दो शब्द कह दूँ। प्रजा राज्यकी ही भूलें देखती रहे, तो अिससे कुछ नहीं होगा। अुसे अपना धर्म भी पालन करना चाहिये। राजपीपलामें जो पढ़े-लिखे हों, अुन्हें राज्य छोड़कर भागनेके बजाय यहीं रहकर प्रजाकी सेवा करनी चाहिये। सभी ओहदे तलाश करेंगे, तो प्रजाकी सेवाका काम कौन करेगा? आज लोगोंके धन्धे नष्ट हो गये हैं, हज़ारों बेकार हैं। अिस राज्यमें अितनी अधिक कपास पैदा होती है और बाहर चली जाती है। लोग अुसका कपड़ा न बनायें और विदेशोंसे कपड़ा आये, तो आपकी बेकारी कैसे दूर होगी? ग्राम-अुद्योगोंका अुद्धार करनेके लिअे कांग्रेस जैसे प्रयत्न कर रही है, वैसे लोकसभा और राज्यको भी करने चाहियें। किसान कर्ज़से मुक्त हो जायँ, मगर अुन्हें पूरा पोषण न मिले, तो अुन पर फिर कर्ज़ हुअे बिना नहीं रहेगा। किसानको खेतीके सिवाय दूसरे सहायक धन्धेकी आमदनी नहीं होगी, तो अुसकी परवरिश नहीं होगी। राजपीपलामें ताड़के वृक्ष खूब हैं। क्या आपको मालूम है कि ताड़से बढ़िया गुड़ बनता है? अैसे किसी सहायक धन्धेके बिना आपका — किसानोंका — अुद्धार नहीं होगा। किसान अपना कपड़ा खुद बना लें। और किसान गायें न रखें और बैल खरीदें, तो यह कैसे पुसा सकता है? हम अपनेको गायको माता माननेवाले कहते हैं, मगर हमारे यहाँ गायकी सच्ची पूजा नहीं होती। अिसके सिवाय छुआछूतका पाप मिटाना बाकी है। यह और अैसे दूसरे काम प्रजाको और लोकसभाको करने हैं।

अिस तरहकी रचनात्मक प्रवृत्तियाँ करनेमें अधिकांश राज्योंमें बाधा नहीं आती। हम अिस प्रकारके कार्य न करें और सिर्फ धाँधलीवाले काम करें, अपना कर्तव्य न करके सिर्फ़ राज्यकी टीका-टिप्पणी ही करते रहें, तो वह ठीक नहीं है। अैसा काम करना चाहिये, जिससे राजा-प्रजाके बीच मीठा संबंध रहे और फिर भी लोकसभाकी शक्ति बढ़े। जो छोटी-छोटी तकलीफें यहाँ बताअी गअीं, वे दूर होनी चाहियें। आपका राज्य छोटा होने पर भी अुसे आदर्श राज्य बनाया जा सकता है। निरंकुश शासन पर तो आक्रमण होते ही रहेंगे। कोअी अुसे बरदाश्त नहीं करेगा। अिसलिअे समयका विचार करके चलनेवाला राज्य प्रजाको साथ लेकर ही चलेगा।

नौजवानोंसे

अब दो शब्द नौजवानोंसे कहता हूँ। नौजवान यहाँ अच्छी संख्यामें अुपस्थित हैं। अुनमें प्रजाकी सेवाका अुत्साह है। परन्तु वे केवल तमाशा देखने न आयें, भाषण देना सीखनेके लिअे न आयें। अुनमें सेवाके लिअे सेवा

करना सीखनेकी लगन होनी चाहिये। सेवाधर्म कठिन है, काँटोंकी सेज पर सोने जैसा है। सत्तामें जितना मोह है, गिरनेका खतरा है, अुतना सेवाकी सत्तामें भी मौजूद है। थोड़ासा त्याग करनेवालेको भी हिन्दुस्तानमें लोग पूजते हैं। अिसी-लिअे तो लाखों पाखंडियोंकी पूजा होती है। भगवा वस्त्र पहन लेनेसे ही भोला हिन्दू साधु मान लेता है। सभी भगवाधारी साधु नहीं होते। अिसी तरह सफेद टोपी और सफेद कुरता पहन लेनेसे ही कोअी गांधीका आदमी नहीं बन जाता। थोड़ा भाषण देना आ जाने और अखबारोंमें लिखना सीख जानेसे ही नेता बन जानेकी नौजवानोंमें कल्पना हो तो वह गलत है। सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ना चाहिये। राजपीपलाके नवयुवक बढ़िया शारीरिक तालीम पा रहे हैं और स्वयंसेवकोंका काम कर रहे हैं। वे पढ़ाअी पूरी होने पर नौकरी ही क्यों तलाश करें? गिनतीके सेवकोंमें वृद्धि ही न हो, तो जिम्मेदार हुकूमत कैसे मिलेगी? सैकड़ों काम करनेवाले युवक निकलने चाहियें। हर तहसीलमें छावनी और स्थायी काम करनेवाले आदमी रखने चाहियें। लोकसभाका संगठन अिस तरह जीता-जागता हो सकता है। जैसे हम अपने घरके कामकाजकी जिम्मेदारी अुठाते हैं, वैसे ही यह समझना चाहिये कि अपने शहर और राज्यके कारोबारकी जिम्मेदारी भी हमारे सिर पर है। अुसके लिअे परिश्रम भी करना चाहिये। यह काम कोअी गरीब भीलोंका नहीं, साहूकारोंका नहीं, आपका है। लोकसभा प्राणवान बन जाय तो राज्य झुक जायगा। हरअेक प्रजाको अधिकार है कि वह अपना शासन खुद करे। भगवान आपको वह अधिकार प्राप्त करनेकी शक्ति दे।

हरिजनबन्धु, ९-१-१९३८

७७
हलपति परिषद

[ता० २१-४-१९३८ को बारडोली स्वराज्य आश्रममें हुआी हलपति परिषदमें दिया गया भाषण ।]

गुलामोंके गुलाम

अितनी बड़ी संख्यामें दूर दूरके गाँवोंसे आकर तुम सब यहाँ अिकट्ठे हुअे हो और अपनी यह पहली परिषद कर सके हो, अिसके लिअे मैं तुम्हें बधाअी देता हूँ। अिस देशमें कुचले हुअे वर्ग तो अनेक हैं। वे अनेक प्रकारकी आपत्तियोंसे पीड़ित हैं। किसीको कुछ और किसीको कुछ तकलीफ है। परन्तु तुम्हारा दुःख अुन सबसे अलग ही प्रकारका है। यों तो भंगी-चमारोंको भी दुःख है। मनुष्य होते हुअे भी अुन्हें अछूत माना जाता है। लेकिन अछूत माने जाने पर भी अपने क्षेत्रमें वे स्वतंत्र हैं। तुम अछूत न होते हुअे भी परतंत्रताके घोर रोगसे पीड़ित हो। यह माना जाता है कि तुम्हारा मालिक कोअी दूसरा आदमी है। अिस संसारमें अिसके बराबर दूसरा कोअी दुःख नहीं। जैसे जानवरका मालिक अिन्सान होता है, वैसे अेक अिन्सानका दूसरा अिन्सान मालिक बन बैठा है। मनुष्योंका मालिक तो अेक अीश्वर ही है, जिसने अुन्हें जन्म देकर अिस जगतमें पैदा किया है। जिसने अैसा सुन्दर शरीर दिया है और अुसमें जीव डाला है, वही हमारा सच्चा मालिक हो सकता है। जानवरोंके मालिक आदमी होते हैं, परन्तु जब अेक मनुष्य दूसरे मनुष्यके नाथ डालता है और अुसका मालिक बन बैठता है, तो यह भयंकर चीज़ हो जाती है। अुस समय मालिक बननेवाला और अुसे मालिक मान लेनेवाला दोनों पापमें पड़ते हैं और दोनोंकी दुर्दशा हो जाती है।

अिस देशमें ३५ करोड़ आदमी हैं, परन्तु अुनके मालिक दो लाख विदेशी हैं, जो हजारों मील दूरसे यहाँ आये हैं। हमारा देश अुनसे आज़ाद होनेकी कोशिश कर रहा है। ५१ वर्षसे वह यह मेहनत कर रहा है। तुमने हालमें ही देख लिया है कि ५१वें वर्षमें हरिपुरा गाँवमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ था। सारे देशके नेता वहाँ जमा हुअे थे और यही झंडा हरिपुराके झंडा चौकमें लहरा रहा था। वह कोअी तमाशा, यात्रा या मेला नहीं था। देश पर विदेशी मालिक बने बैठे हैं। अुनसे सत्ता कैसे ली जाय और हम खुद मालिक कैसे

बनें, अिसका विचार करनेके लिअे सब वहाँ अिकट्ठे हुअे थे। यह तो अेक राष्ट्रके दूसरे राष्ट्रको गुलाम बना रखनेकी बात हुअी। परन्तु अिस देशमें तो हम लोग अपने ही भाअियोंको गुलाम रखते हैं। अिस सूरत जिलेके किसान स्वयं गुलाम हैं। फिर भी अुन्होंने तुम्हें गुलाम बना रखा है, यह बड़े आश्चर्यकी बात है। अिस प्रकार तुम तो गुलामोंके गुलाम हो।

अुत्तेजित न होना

परन्तु तुम्हें अब तक अपनी गुलामीकी दशाका भान नहीं था, क्योंकि तुम गुलामीके नशेमें चूर हो गये थे। आज जब तुम्हें यह ज्ञान हो गया है, तब तुम अुत्तेजित हो अुठे हो। तुम अिस गुलामीसे मुक्त होनेके लिअे अधीर हो गये हो। किसान भी तुम्हारे बिना अपंग हो गये हैं। अुनके भी तुम्हारे बिना हाथ-पैर नहीं हिल सकते। अुन्हें डर लग रहा है कि तुम भाग जाओगे। अिसलिअे वे भी अुत्तेजित हो गये हैं; और कोअी अुनसे तुम्हारी बात कहता है, तो वे आगबबूला हो जाते हैं। तुम ज़रा ज़ोर दिखाते हो, तो वे आँखें दिखाते है, गालियाँ देते हैं और मारनेको भी तैयार हो जाते हैं। अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं है। जब बच्चेका जन्म होता है, तब माताको बहुत दुःख होता है। परन्तु जब बालक पैदा हो जाता है, तब माताके हृदयसे प्रेमका झरना फूटता है। अुसी तरह जब अेक कौम मुक्त होनेकी कोशिश करती है, तब अुस पर अत्यन्त दुःख आ पड़ता है। परन्तु जब वह मुक्त हो जाती है, तब अुसे शांति मिल जाती है। जब बरसात आनेको होती है, तब बहुत गरमी पड़ती है, बादल गरजते हैं और बिजली कड़कती है। परन्तु जब बरसात हो जाती है तब ठंडक हो जाती है। अिसी तरह तुम्हें और किसानोंको अुत्तेजना हो रही है, क्योंकि तुम्हारा गुलामीसे छूटनेका वक्त आया है। परन्तु तुम्हें धीरज रखना पड़ेगा। बच्चा चलना सीखनेसे पहले दौड़ने लग जाय, तो गिर जाता है, चोट खाता है और पैर तोड़ बैठता है। हम अैसी भूल न करें। मैं तुम्हें यह बात समझानेके लिअे आया हूँ।

स्वतंत्र पंचायतका मार्ग

शादीके लिअे रुपये अुधार लेनेकी प्रथा तुममें थी और अब भी जारी है। शादीके लिअे रुपये अुधार लेना और अुसके बदलेमें नौकरी करना यह रास्ता ही गलत है। किसान कहते हैं कि हज़ारों दुबलोंने शादीके लिअे रुपया अुधार ले रखा है, सो क्या हम छोड़ दें? हमें अुनसे कह देना चाहिये कि न्यायसे तुम्हारा जितना लेना निकले, वह हम हाथ जोड़कर देनेको तैयार हैं। परन्तु वह न्याय कैसा हो, यह समझ लेना चाहिये। बहुत वर्षों तक तुमने जो नौकरी की, अुसका हिसाब किया जायगा और अुसका रुपया काटा जायगा। अुन वर्षोंमें जो कोअी

लेन-देन हुआ हो, अुसका हिसाब भी कर लिया जायगा। अुसके बाद अगर हिसाब साफ हो जाता हो, तो तुम्हें मुक्त कर देना चाहिये; मगर आअिन्दा तुम्हारा सम्बन्ध मालिक और गुलामका हरगिज़ नहीं रहना चाहिये। सूरत ज़िलेको छोड़कर बाहर जाअिये। वहाँ भी लोग खेती करते हैं और नौकर रखते हैं। मगर अुनका सम्बन्ध गुलाम और मालिकका नहीं है। तो फिर यहीं यह प्रथा क्यों रहनी चाहिये? कर्ज़का फैसला करनेके लिअे हम स्वतंत्र पंच नियुक्त कर दें। वे हिसाब करके बता दें कि अिसे अितना रुपया देना है और अितने समयमें देना है। किसानोंने साहूकारोंसे ब्याज पर रुपया लेकर कर्ज़ कर रखा है। वे कहते हैं कि साहूकारका जितना वाजिब लेना हो, वह कानूनसे तय करा दो। अुसी कानूनका लाभ तुम्हें भी मिलेगा।

किसान और हलपतिकी जोड़ी

तुम सब अिसी अेक धरतीसे गुज़र करते हो। किसानोंका और तुम्हारा दोनोंका पोषण यही ज़मीन करती है। तुम दोनोंके बीच दुश्मनी हो जाय, तो खेतीका अुद्योग नष्ट हो जायगा और दोनोंका अभी जो पेट भरता है, अुसमें रुकावट पैदा हो जायगी। अैसा अिन्साफ होना चाहिये, जिससे दोनों ज़िन्दा रहें। कोअी आदमी भूखा नहीं रहना चाहिये। मगर साथ ही यह बात स्वीकार करनी चाहिये कि तुम स्वतंत्र हो और तुम्हें स्वतंत्र रहनेका अधिकार है। जैसे अेक गाड़ीमें दो बैल जुते हुअे रहते हैं, वैसे किसान और हलपति दोनोंकी जोड़ी है। ये दोनों जिस दिन लड़ने लगेंगे, अुस दिन खेती नष्ट हो जायगी और दोनों के भूखों मरनेकी नौबत आ जायगी। अिसलिअे यह आन्दोलन अैसे ढंगसे नहीं करना है। मेरी तुम्हें सलाह है कि तुम धीरज रखो। अब किसानोंकी परिषद हो, तब वह जो प्रस्ताव पास करे, अुस पर भी विचार करना चाहिये। मैं अुन्हें भी सलाह दूँगा कि अिन लोगोंके साथ न्याय तो होना ही चाहिये।

बन्धन दुर्बलताका है

तुममें से बहुतसे लोग कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिये। मैं कहता हूँ कि तुम्हें किसीने बाँधकर नहीं रखा है। तुम्हारा अगर कोअी बन्धन हो, तो वह तुम्हारी दुर्बलताका ही है। तुम्हें अिसका खयाल होता है कि छूटकर कहाँ जायेंगे? तुम्हारे ज़मीन नहीं, ढोर-डंगर नहीं, दूसरा कोअी धन्धा नहीं, और बाहर जानेकी आदत नहीं। तुम भाग जाओ, तो किसान कुछ नहीं कर सकता। परन्तु तुम्हें यही डर लगा रहता है कि बादमें तुम क्या खाओगे। तुम अेक जगहसे दूसरी जगह जाओ, तो किसान संगठन करके यह निश्चय कर लें कि अेकके छोड़े हुअेको दूसरा न रखे। अिसके सिवाय तुम्हारे कोअी बन्धन नहीं हैं।

आजकलका कानून यह है कि कर्ज़के लिअे किसीको जेलमें नहीं डाला जा सकता। अदालतमें जाकर हुक्मनामा तो ले आवें, परन्तु अुसकी तामील किसकी जायदाद पर करायें ? कर्ज़के लिअे आदमीकी चमड़ी तो अुधेड़ी ही नहीं जा सकती। बम्बअीके सटोरिये हज़ारों और लाखोंका सट्टा करते हैं और बादमें दिवाला निकाल देते हैं। अुन्हें भी कोअी बाँध कर नहीं मारता। परन्तु तुम्हारी नीयत तो अैसी है ही नहीं कि किसानोंको कुछ भी न दिया जाय। किसानोंका जितना सच्चा कर्ज़ है, वह अीमानदारीसे हाथ जोड़कर देना है। परन्तु अब तुम्हारा सम्बन्ध तो बदल ही डालना है।

तुम्हारे हाथकी बात

जितना करना तुम्हारे हाथमें है, वह तो तुरन्त करने लग जाओ। अपने बच्चोंको अक्षर ज्ञान कराओ। अुन्हें नये रास्ते ले जाओ। तुम सब जगह-जगह जातिके पंचोंको बुलाओ और निश्चय कराओ कि आअिन्दा शादी या मौतके अवसर पर कर्ज़ न किया जाय। तुम्हारे जैसी गरीब जातिको विवाहके समयमें रुपया लेना-देना बन्द कर देना चाहिये। परन्तु जाति अिसे बिलकुल न माने, तो अिसके लिअे १५–२० रु० की हद बाँध दो। मैं अिसके लिअे भी कर्ज़ करनेकी सलाह नहीं दूँगा। चावल कटाअी या घास कटाअी वगैराके समय जो मज़दूरी करो, अुससे चार छः आने कर करके साल भरमें ५-१० रुपये बचा लो। तुम्हारा बचतका रुपया रखनेके लिअे अेक बैंक भी खोला जा सकता है। जब तुम्हारी शादी होगी तब यह रुपया काम आ जायगा और तुम्हें कर्ज़ नहीं लेना पड़ेगा। अुधार लेने गये तो समझ लेना कि बहुत नुकसान होगा।

किसानोंको भी तुम्हारी अुन्नतिमें मदद देनी चाहिये। समझदार किसान तो यही माने कि अुसके मज़दूरको संतोष हो और अुसका कलेजा ठंढा रहे, अितना तो अुसे मिलना ही चाहिये। जो किसान अपने बैलोंको और मवेशियोंको सुखी रखता है, वह अपने नौकरोंको दुःख दे तो वह मूर्ख है।

परन्तु आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता। तुम लोगोंने शराब और ताड़ी छोड़ दी, अिससे मैं खुश हूँ। तुम्हारी स्त्रियाँ और भी प्रसन्न हुअी होंगी, क्योंकि अब तुम घर जाकर गालियाँ नहीं देते। तुम सब जल्दी ही शराब और ताड़ी छोड़ कर अुसके हिस्सेका रुपया बचाओ, ताकि तुम्हें कर्ज़ न करना पड़े। तुम अितनी बात कर लो, तो ५ वर्षमें अिस जिलेमें कोअी पहचान नहीं सकेगा कि कौन गुलाम है और कौन मालिक है। और जैसे आश्रमवासी अपने कपड़े खुद ही कात कर बना लेते हैं, वैसे तुम भी बनाओ। अेक कुरता और अेक छोटी धोतीसे ज्यादा तुम्हें क्या चाहिये ? जो कपास तुम्हारे खेतमें से अुग

कर चली जाती है, अुतनीसे भी तुम अपने कपड़े बना सकते हो। यह विद्या कठिन भी नहीं है।

आज जो प्रस्ताव यहाँ पास हों, अुन पर शांतिसे विचार करो। अुत्तेजित मत होओ। कोअी कदम जल्दबाजीमें नहीं अुठाना चाहिये। कोअी किसान गुस्सेमें आकर तुम्हे थप्पड़ मार दे, तो भी बदलेमें तुम हाथ मत अुठाओ। अैसा करोगे तो नतीजा यह होगा कि तुम दब जाओगे। मुझे अुम्मीद तो है कि मैं बारडोली तहसीलके किसानोंको समझा सकूँगा। मैं तो अुनका मित्र हूँ। वे सयाने हैं और जानते हैं कि अुनकी खातिर मैंने थोड़ा-सा दुःख अुठाया है।

हरिजनबन्धु, १-५-१९३८

७८

दक्षिणी रियासती सम्मेलन

[ता० २२-५-१९३८ को सांगलीमें हुअे बारहवें दक्षिणी रियासती सम्मेलनके अध्यक्षपदसे दिया गया भाषण।]

आप सबने मुझे अिस बारहवें दक्षिणी रियासती सम्मेलनका अध्यक्षपद प्रदान किया, अिसके लिअे मैं आपका आभारी हूँ। मगर साथ ही मुझे कहना चाहिये कि मैं अिस योग्य नहीं हूँ। आपकी भाषा जाने बिना मैं आपके हृदयोंमें प्रवेश नहीं कर सकता। टूटी-फूटी हिन्दुस्तानीसे काम चलाता हूँ। देशी राज्योंके बारेमें मुझे साधारण ज्ञान जरूर है, परन्तु दक्षिणी रियासतोंके विषयमें मैं विशेष ज्ञान नहीं रखता। यह दूसरी मुश्किल भी है।

भाअी शंकरराव देव और गंगाधररावके आग्रहको मान कर मैंने यह निमंत्रण स्वीकार किया है। मुझसे कोअी भूल हो जाय, तो निभा लीजिये।

मैं यहाँ बातें करने नहीं आया हूँ। मैं तो सीधा-सादा आदमी हूँ। मुझे अैसा काम सौंपा गया है, जिसमें गालियाँ खानी पड़ें। अिसलिअे किसीको दो अच्छी तो किसीको दो कड़वी बातें कहनी पड़ती हैं। मैंने 'अहिंसा परमो धर्मः' को माननेवाले सन्तके चरणोंमें बैठ कर राजनैतिक शिक्षा ली है।

हिन्दुस्तानमें छः सौ देशी राज्य हैं। दुनियामें अैसा कोअी मुल्क नहीं, जिसमें छः सौ राज्य हों। कुछ तो अितने छोटे हैं कि छः सात गाँवोंका मालिक भी अपनेको राजा कहता है! अच्छे-अच्छे साम्राज्य खतम हो गये। राजा ताज पहन लेनेसे कोअी आजाद नहीं हो जाते। वे भी गुलाम ही हैं। और

अुनके नीचे हम लोग तो गुलामोंके भी गुलाम हैं। अैसी विकट स्थितिमें साफ़ रास्ता कौन दिखाये? अितने देशी राज्य होते हुअे भी हिन्दुस्तान अेक अविभाज्य देश है। आबोहवामें, व्यापार-धंधेमें, किसी चीज़में फ़र्क़ नहीं है। विदेशी हुकूमतने अपनी सत्ता कायम रखनेके लिअे ये सब भेद कर दिये हैं।

यह छोटा-सा रामदुर्ग राज्य भी कोअी राज्य है! बिहार और संयुक्त प्रान्तमें अिससे बड़े तो ज़मींदार हैं। अैसे राज्य अपनी शक्ति पर निर्भर नहीं हैं, बड़ी शक्तिके आधार पर टिके हुअे हैं। जब तक पैंतीस करोड़को गुलामीमें रखनेवाली शक्ति नष्ट नहीं हो जाती, तब तक ये क़ायम रहेंगे।

पचास वर्ष पूर्व तिलक महाराजने हमें अेक मंत्र दिया है कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। वही आपके हमारे सबके लिअे सही रास्ता है। जो हिन्दुस्तानके जेलखानोंमें बैठे थे, वे अब मंत्री बन गये हैं और अुनको जेलमें डालनेवाले लोग अुन्हें सलाम करते हैं। आपके दिलों पर अिसका प्रभाव पड़ा है। अिसकी जाग्रति सारे राज्योंमें दिखाअी दे रही है।

हमने हरिपुरामें निश्चय किया है कि जब तक प्रान्तोंकी तरह देशी राज्योंको भी स्वराज्य न मिले, तब तक संघशासन नहीं चाहिये। आपकी दौड़ कहाँ तक है, यह देखकर हम कदम अुठाते हैं। हमारा अेक पैर देशी राज्योंमें और दूसरा ब्रिटिशभारतमें है। हमने सारे भारतकी आज़ादीके लिअे प्रस्ताव किया है।

हमारे पास कौनसी ताकत है, यह समझ लेना चाहिये। सत्य और अहिंसा हमारी ताकत है। अेक दो छोटे राजाओंको मारनेकी सलाह देनेसे हमारा काम नहीं बनेगा। कांग्रेसमें भी कुछ लोग यह माननेवाले मौजूद हैं कि देशी राज्योंकी ज़रूरत ही नहीं है। जिस ढंगसे रजवाड़े आजकल चल रहे हैं, अुसे देखते हुअे अैसा माननेके लिअे कारण भी मिल जाता है।

आपसमें झगड़नेसे शक्ति नष्ट होती है। हमारी संस्कृति भी समझ-बूझकर शान्ति पर रची गअी है। मरना होगा तो वे अपने पापोंसे मरेंगे। जो काम प्रेमसे होता है, वह वैरभावसे नहीं होता।

कांग्रेसके पास जो शक्ति है, वह यह है कि जहाँ जुल्म हो वहाँ अुसे सहन न करके अुसका सामना करे, और वह भी सत्य और अहिंसासे करे।

आपमें ताकत पैदा करनी है। बारडोलीके किसानोंकी लड़ाअीमें भाग लेनेके लिअे हिन्दुस्तान भर से कुछ लोगोंने तार दिये थे। मैंने अुन सबको रोक दिया और कह दिया कि अिससे बाज़ी बिगड़ जायगी। हरिपुराके प्रस्तावसे आप नाराज हुअे हैं कि ब्रिटिश भारत और देशी राज्योंकी प्रजामें भेदभाव क्यों किया गया? मगर अैसा आपके भलेके लिअे ही किया गया है। देशी राज्योंमें लड़ाअी छेड़कर बादमें आप कांग्रेसके पास आयें, तो जिस मोर्चे पर दुश्मनके

खिलाफ़ लड़ना चाहिये, अुसे छोड़कर कांग्रेसको आपके साथ होना पड़े। अिससे तो कांग्रेसकी शक्ति क्षीण हो जायगी। सूर्यको ग्रहण लग जानेसे सारी दुनियामें अँधेरा छा जाता है। कांग्रेसको ग्रहण लग जायगा, तो सारा देश कमजोर बन जायगा।

जाने-अनजाने राजा जो जुल्म करते हैं, वे अिस खयालसे करते हैं कि हमारी पीठ पर साम्राज्य खड़ा है। मगर अैसा राज्य तो मुर्दों पर किया जा सकता है। हरअेक जगह ज़ालिम राजाको अुखाड़ फेंका जाता है। तो आपको कौन रोकता है? ताकत हो तो कीजिये। आप अैसी शंका क्यों रखते हैं! जिस रास्ते कांग्रेस अपनी शक्ति बढ़ा रही है, अुस रास्ते आप मैदानमें आयेंगे, तो ज़रूरत पड़ने पर कांग्रेस आपको कैसे छोड़ देगी! हरिपुराका प्रस्ताव आपके भलेके लिअे ही है। अेक भी किसान लगान न चुकाये, तो मैं खुश होअूँगा। मगर मैं जानता हूँ कि आज आपमें कमजोरी है। अैसी कमज़ोरीवालोंको लड़ाअीकी बात नहीं करनी चाहिये।

देशी राज्योंमें किसीको रचनात्मक काममें दिलचस्पी है, अैसा मैं नहीं देखता। ब्रिटिश भारतमें जिन प्रान्तोंमें रचनात्मक कार्य हो रहा है, वहाँ दूसरी ही शक्ति पैदा हो गअी है। आपके बदन पर खादीके सिवाय दूसरा कपड़ा न होना चाहिये। गाँवोंमें बननेवाली चीज़ोंको प्रोत्साहन देना चाहिये। चावल, आटा, कुछ भी मशीनमें नहीं पिसवाना चाहिये। तमाम ग्राम-अुद्योगोंको पुनर्जीवित कीजिये। जातियोंमें आपसमें प्रेम रखिये। आपसमें झगड़े-टंटे करके अदालतोंमें न जाअिये। अिससे शक्ति घटती है। अछूतपन मिटा डालिये। महात्माजीने हमें रचनात्मक काम सुझाया है। अुससे हमारी शक्ति बढ़ी है। कांग्रेस अुसे नहीं अपनायेगी, तो सत्याग्रहकी शक्ति नहीं आयेगी। बारह महीनेमें अेक बार अधिवेशन कर लेनेसे शक्ति नहीं आती। अिससे ज्यादा कुछ कहना नहीं है। लम्बी-चौड़ी बातोंसे क्या फायदा? मेरा तो कम बोलने और ज्यादा करनेमें विश्वास है। अधिक प्रस्तावोंसे कुछ नहीं होगा। काम करके दिखाना चाहिये। कमजोर आदमी कुछ नहीं कर सकता।

यह शरीर पंचमहाभूतका बना हुआ है। अिसके भीतर जो शक्ति निवास करती है, अुससे परिचय करना चाहिये। जबसे दुनिया पैदा हुअी, तबसे कोअी अमर नहीं हुआ। गरीब किसान और बादशाहकी आखिरमें तो अेक ही हालत होगी। वहाँ बड़े-बड़े तीसमारखाँओंकी तोप-बन्दूकें भी काम नहीं आतीं। कौन जाने यमराज कहाँसे घुस आता है! अिस प्रकार अगर अेक बार मरना ही है, तो फिर कुत्तेकी मौत क्यों मरा जाय? जब तक यह बात नहीं जान ली जाती, तब तक डर रहता है।

जगतकी सबसे बड़ी विभूति महात्मा गांधी हैं। वे हमें मार्ग बता रहे हैं। अुन पर अविश्वास करना महापाप है।

हम सब अेक ही नावमें बैठे हैं। आपने मेरा जो स्वागत किया है, वह सच्चा तो तब कहा जायगा, जब मैंने जो कुछ कहा है, अुसे आप करके दिखायेंगे। गांधीजीने जब देखा कि हिन्दुस्तानका कल्याण पैंतीस करोड़को जाग्रत करनेसे होगा, तो वे सत्याग्रह आश्रममें अकेले न बैठकर चल पड़े।

आपने जिस प्रेम और शांतिसे मेरी बात सुनी, अुसके लिअे मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। अभी मेरे पास कम समय है। मैं आशा रखता हूँ कि आपसे फिर मिलनेका कभी मौका मिलेगा।

७९

विदेशी मिशनरी और हमारे डॉक्टर

[ता० ६-६-१९३८ को सूरतमें डॉक्टर फड़ियाके मिशन अस्पतालका अुद्घाटन करते समय दिये गये भाषणसे।]

हमारे देशमें विदेशी मिशनरी आ कर सेवा कर रहे हैं, यह हमारे लिअे शर्मकी और अुनके लिअे गर्वकी बात है। अुनका अुद्देश्य कुछ भी हो मगर जिस ढंगसे और जिस प्रेमसे वे सेवा करते हैं, वह अनुकरणीय है।

अुनका अपने धन्धेके जरिये सेवा करना ही अुद्देश्य नहीं है। अुन्हें साथ-साथ अपने धर्मका प्रचार भी करना है। हम आँखोंसे देखते हैं कि बहुतसे लोग सेवाके अुपकारको मानकर धर्म परिवर्तन कर लेते हैं, मगर हमें लोगोंकी सेवा करनेका खयाल नहीं आता।

*　　*　　*

हमारे डॉक्टर बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ लेकर आते हैं। अुन्हें बम्बअी, कलकत्ता और मद्रास जैसे बड़े शहरोंके बिना अच्छा नहीं लगता। अुन्हें धनका लोभ हो जाता है।

डिग्री लेनेके बाद तुरन्त कोअी अच्छे डॉक्टर नहीं बन जाते हैं। वे किताबी जवाब तुरन्त दे सकते हैं, मगर अुन्हें अच्छी तरह अिलाज करना या अच्छी तरह औजार काममें लेना नहीं आता। नये डॉक्टर कुछ मरीजोंका अुलटा-सीधा अिलाज करके ही अच्छे डॉक्टर बनते हैं। नये वकील भी कुछ मुवक्किलोंको ठिकाने लगाकर ही वकालत सीखते हैं।

*　　*　　*

सूरतकी गलियाँ और मैले पानीके हौज मुझसे बरदाश्त नहीं हो सकते। सूरतमें गटरका न होना शर्मकी बात है। मोहल्लेमें दोनों तरफ खुली नालियाँ और चबूतरे पर पाखाना, यह यहाँकी हालत है! यहाँके लोग मौजी माने जाते हैं। मगर तन्दुरुस्तीके लिअे लापरवाही करते हैं।

आप सबको शहरकी सफाअीके काममें दिलचस्पी लेनी चाहिये। शहरमें दवाखाने बढ़नेसे शहरका सुधार हुआ नहीं कहा जा सकता। ये डॉक्टर तो दवा देते हैं, मगर हमें तो यह करना चाहिये कि लोग बीमार ही न पड़ें और डॉक्टरोंकी ज़रूरत ही न पड़े। हर शहरीको लगना चाहिये कि यह मेरा शहर है। यह शहर समुद्र तटके संसारके दूसरे शहरोंकी बराबरीका बनना चाहिये। बम्बअी मछलीमारोंका गाँव था। अुससे अब वह कैसा शहर बन गया है! रुपयेकी तंगी हो तो सिनेमा, नाटक, और जाति-भोजोंका खर्च ५ सालके लिअे बन्द कीजिये, मगर पहले गटर बनाअिये। अुसका लाभ ५ सालमें आपको मालूम हो जायगा। लोगोंकी तन्दुरुस्ती सुधर जायगी। अभी तो आपके शहरमें मनुष्योंकी जिंदगी छोटी होती जा रही है और वे दुःखी हो कर मरते हैं।

बरसात होते ही कीचड़, गंदगी, मच्छर और मक्खियाँ हो जायँगी। अिसमें डॉक्टर भी क्या करेगा? वह तो बाहर बँगला बनायेगा और दवा पिलाता रहेगा, और वह भी रुपयेवालोंको। हमें तो अैसा करना चाहिये कि साधारण खर्चसे मामूली आदमियोंकी भी देखभाल हो जाय और गरीबोंकी मुफ्तमें हो जाय।

मिशनवाले ‘मेरा देश, मेरा धर्म’ अिस भावनासे काम करते हैं। हम भी अपने देशको, अपने लोगोंको और अपने धर्मको कैसे भूल सकते हैं!

८०

स्त्रियोंकी शक्ति

[ता० १५-६-१९३८ को अहमदाबादके ज्योति संघमें दिये गये भाषणसे।]

यह खयाल ठीक नहीं है कि स्वराज्य होगा, तब स्त्रियोंका प्रश्न हल हो जायगा। असल बात तो यह है कि स्त्रियोंको पदभ्रष्ट कर दिया गया है। अुन्हें अुचित स्थान पर बिठाया जायगा तब स्वराज्य मिलेगा।

यह ज़रूरी है कि स्त्रियोंको अपने पर आत्मविश्वास हो और वे अपना अुचित स्थान प्राप्त करें। अैसे सुधार कानूनसे न हुअे हैं और न होंगे।

दुनियामें किसी जगह अितनी स्त्रियोंको धारासभाओंमें बैठनेका अधिकार नहीं मिला, जितना हमारे देशमें मिला है। मगर यह तो खोखला है। नाटकके राजाके साफा पहनकर बैठने जैसी बात है। ब्रिटिश पार्लियामेंटमें ४-५ सौ सदस्योंमें जितनी संख्या स्त्रियोंकी है, अुससे ज्यादा बम्बअीकी धारासभामें है।

१०-१५ बरसमें स्त्रियोंमें जो जाग्रति हुअी है, अुसका श्रेय महात्मा गांधीको मिलना चाहिये।

* * *

हरिपुरामें ७००-८०० बहनें कितनी निर्भयतासे काम करती थीं! वहाँ अुन्हें अैसा नहीं लगता था कि अुनका स्थान नीचा है। हमें अैसे दृश्य पैदा करके अपने प्रश्नोंको हल करना है।

* * *

अगर हममें हजारों मृदुलाअें पैदा हो जायँ, तो यह प्रश्न हल हो जाय। जैसे-जैसे हम अैसी बहनें पैदा करेंगे, वैसे-वैसे यह प्रश्न हल होता जायगा।

८१

राजकोटके रंग

[ता० १८-८-१९३८ को राजकोटमें होनेवाले जुल्मोंका विरोध करनेके लिअे बम्बअीमें हुअी सभाके अध्यक्षपदसे दिया गया भाषण।]

कल शामके अखबारोंसे आपको मालूम तो हुआ होगा कि राजकोटमें अकल्पित घटनाअें हो रही हैं। काठियावाड़ राजनैतिक परिषदके मंत्री ढेबरभाअी और कुछ अन्य कार्यकर्ताओंको कैद कर दिया गया है। अिस घटनाके पहले राजकोटकी अेक सार्वजनिक सभा पर निर्दय लाठी-प्रहार हुआ था और बहुतसे आदमियोंको सख्त चोटें आअी थीं। अिन सब घटनाओंका हाल आपने कल जान लिया होगा। मेरे नाम आनेवाले बहुतसे पत्रोंसे वहाँकी वस्तुस्थितिकी कल्पना होती है। अिन सब जुल्मोंका विरोध करनेके लिअे यह सभा की गअी है। अैसी कल्पना नहीं थी कि राजकोटमें अैसे जुल्म होंगे। मगर आजकल दुनियामें अैसा वक्त आ गया है कि अकल्पित घटनाअें ही होती रहती हैं। राजकोटकी घटना भी अुन अकल्पित घटनाओंमें से ही है।

आप सब श्री अुछरंगराय ढेबरको तो जानते होंगे। यह कहा जाय तो गलत नहीं कि सारे काठियावाड़के राजनैतिक क्षेत्रमें अुनके जैसा सज्जन और कोअी नहीं है। वे बड़े संयमी पुरुष हैं। अुनके मुँहसे कभी कड़े शब्द नहीं निकलते। १५-१५ सालसे काठियावाड़ राजनैतिक परिषदके पिछड़े हुअे कामको श्री ढेबरने ही वेग दिया है। अुनके विवेक और विनयपूर्ण प्रयत्नोंके कारण ही काठियावाड़ राजनैतिक परिषदका सम्मेलन राजकोटमें करनेकी मंजूरी मिली। अुनके जैसे आदमीको लाठियाँ खानी पड़ें और जेल जाना पड़े, यह कल्पनातीत था। परन्तु राजकोटकी जेलमें अैसा अुत्तम पुरुष भी भेज दिया गया है।

श्री अुछरंगराय ढेबरके राजकोटके बारेमें लिखे हुअे ५ लेख आपने 'जन्मभूमि' में पढ़े होंगे। मुझे अैसा नहीं लगा कि अुन लेखोंमें कोअी अैसी बात हो, जिससे यह सारी अशांति हो जाय। मुझे श्री ढेबरके ये लेख राज्यकी मित्र भावनासे की गअी आलोचना मालूम हुअे।

हिन्दुस्तानमें देशी राज्य असंख्य हैं और अुनमें अंधाधुंधी मची हुअी है। राजकोटमें होनेवाली यह अंधाधुंधी वहाँकी प्रजाके लिअे असह्य हो गअी है। राजकोटमें लाखाजीराज नामी महाराजा हो गये हैं। राजकोटके मौजूदा राजाको तो क्या कहा जाय? आगसे कोयला पैदा हुआ है! राजकोटके

स्व० श्री लाखाजीराज तो खुल्लमखुल्ला गांधीजीको बुलाते, अुन्हें अपने सिंहासन पर बैठाते और मानपत्र देते थे। मुझे भी अेक बार वहाँ ले गये थे। युवकोंने पं० जवाहरलालको जब राजकोट बुलाया, तो लाखाजीराजने अुनका सम्मान किया। और कोअी राजा होता तो अुन्हें जेलमें डाल देता। अुस समय अुन्होंने अैसे आदमियोंको अपना मेहमान बनाया था। मगर आज तो राजकोटकी स्थिति 'अंधेर नगरी, चौपट राजा' जैसी है, और अुससे राजकोटकी प्रजा त्रस्त हो गअी है।

कानूनका भंग करने या 'गद्दीसे अुतर जाओ' कहनेके लिअे प्रजाजन अिकट्ठे हुअे हों और लाठी-प्रहार हुआ हो, तो वह कुछ समझमें आ सकता है। परन्तु राजकोटमें हुअी सभाका अुद्देश्य सिर्फ़ अितना ही था कि रियासतमें जुआ जारी नहीं रहना चाहिये। ढेबरभाअीने प्रजाके सामने यही आवाज अुठाअी थी कि फलाँ त्योहारके दिनोंमें जुआ न हो। अुस सभामें अैसा कोअी प्रस्ताव नहीं था कि 'राज्य न करो'। अुसमें अैसी भी कोअी बात नहीं थी कि 'प्रजाको जिम्मेदार हुकूमत सौंप दो'। अिस प्रकार जुअेकी बुराअी बन्द करवानेमें प्रजाजनोंको लाठियाँ खानी पड़ें, यह अेक आश्चर्यकी बात है।

आजकल दुनियामें क्रांति हो रही है। राजाओंके कानोंमें भी अुस क्रांतिकी आवाज गूँज रही है। वे जान गये हैं कि अब सब कुछ चला जाने वाला है। अिसलिअे वे भरसक आखिरी जुल्म करनेको तैयार हो गये दीखते हैं। अैसे समय राजकोटकी मौजूदा हालतसे किसे दुःख नहीं होगा? जब श्री ढेबर जैसे सज्जनको लाठी-प्रहार सहना पड़ा, तब मुझे महसूस हुआ कि राजकोटकी प्रजामें अदम्य जाग्रति पैदा हो गअी है और जिम्मेदार हुकूमत करनेकी राजकोटकी प्रजाकी योग्यता कअी गुनी बढ़ गअी है। हरिपुरा कांग्रेसका प्रस्ताव रियासती लोगोंसे यही कहता है कि जाग्रत हो जाओ, तैयार हो जाओ, सिर फुड़वाओ, जेलखाने भर दो, अपना खून बहा दो, सारा हिन्दुस्तान आपकी पीठ पर है। हरिपुरा कांग्रेसके प्रस्तावोंका मर्म रियासतोंकी प्रजा समझ गअी है। अिसके दृष्टांत अब हम अनेक राज्योंमें देख रहे हैं।

हरिपुरा कांग्रेसके प्रस्तावोंमें संघशासनका विरोध है। प्रस्तावित संघ-शासनको हिन्दुस्तान मंजूर नहीं करेगा। किसी दिन हिन्दुस्तान संघशासनको स्वीकार करेगा, तो वह संघशासन अैसा होगा जिसमें राजाओंके नामजद प्रतिनिधि नहीं होंगे। कांग्रेसके प्रतिनिधि राजाओंके अैसे प्रतिनिधियोंके साथ नहीं बैठेंगे। कांग्रेसने अपने प्रस्तावों द्वारा देशी रियासतोंकी प्रजासे माँग की है कि वह केन्द्रीय सरकारमें बैठनेकी योग्यता प्राप्त करे। देशी राज्योंकी प्रजामें

पैदा होनेवाली अिस योग्यताको राजा और केन्द्रीय सरकार भी जान गअी है। तो फिर राजकोटमें यह क्या हो रहा है?

राजकोटकी परीक्षा करनेवाली घटनाअें हुअी हैं। नहीं, आज तो सारे काठियावाड़की परीक्षाका समय है। काठियावाड़को अैसा काम करना चाहिये कि ढेबरभाअी राजकोटकी जेलमें बन्द न रह सकें और अुनके जैसे पवित्र मनुष्यको राजकोटकी जेलमें बन्द रखना कच्चा पारा हजम करने जैसा कठिन हो जाय। ढेबरभाअी जेलमें बन्द रहें, तो समझ लीजिये कि काठियावाड़ स्वतंत्रताके लिअे योग्य नहीं बना। काठियावाड़की प्रजाको तो अितना ही संदेश दिया जा सकता है कि हम और सारा हिन्दुस्तान तुम्हारी मददके लिअे तैयार हैं। परन्तु तुम अपना जौहर बता दो। राजकोट और अुसके आसपासकी प्रजाको जाग्रत कर दो। अुसे बता दो कि अंधेर नगरी और चौपट राजाके शासनके दिन लद गये हैं। राजाओंको अलग बैठा कर, अुन्हें वार्षिक जेबखर्च देकर हमें खुद राज्य करना चाहिये। दीवान मुकर्रर करनेका प्रजाको अधिकार है। दीवानका लड़का, मित्र या रिश्तेदार ही दीवान हो सकता है, यह चीज़ अब नहीं चल सकती। प्रजाका क्या धर्म है, यह समझनेका वक्त आ गया है। काठियावाड़ अपनी ताकत दिखायेगा, तो सारा हिन्दुस्तान अुसके साथ ही है।

बम्बअी निवासियोंको मैं बता देता हूँ कि राजकोटके अुत्तम मनुष्य जेलमें बन्द कर दिये गये हैं। अिससे ज्यादा अच्छी कुरबानी लड़ाअीके लिअे और क्या हो सकती है?

अेजेंसीकी हदमें सभा हुअी। लाठीचार्जके बाद पुलिस अधिकारीने घोषणा की कि मेरे आदमियोंसे भूल हुअी और अुसके लिअे माफी माँगी। अिस तरह किसीके हुक्मके बिना लाठी-प्रहार हुआ हो तब तो गुण्डापन ही हुआ। राज्यमें अन्धेर ही कहा जायगा। अैसे अपराध फिरसे न होनेके लिअे राज्यकी प्रजाको राज्यसे साफ तौर पर कह देना चाहिये कि 'जिम्मेदार हुकूमत न मिले तब तक लड़ाअी बन्द नहीं हो सकती।' बम्बअीमें रहनेवाले काठियावाड़ियोंको सोचना चाहिये कि आधा घर काठियावाड़में और आधा बम्बअीमें, यह कब तक चलेगा? हमें अैसी स्थिति पैदा करनी चाहिये, जिससे शरीफ आदमी अिज्ज़तके साथ काठियावाड़में रह सकें। जिस राजकोटमें काठियावाड़ राजनैतिक परिषद हुअी थी, अुसी राजकोटमें परिषदका मंत्री कैद हो, तो अुसे छुड़वानेके लिअे हर तरहके बलिदानकी पूरी तैयारी कर लेनी चाहिये।

जन्मभूमि, १९-८-१९३८

८२

मज़दूरोंसे

[ता० २५-८-१९३८ को कराचीके रामबागमें मज़दूरोंमें दिया गया भाषण ।]

कराची कांग्रेसके अधिवेशनके बाद सात-आठ बरसमें बड़ी अुथल-पुथल हो गअी । अिसमें से शक्ति खूब बढ़ी । जो हरिपुरा गये होंगे, अुन्हें अुस शक्तिके विराट स्वरूपका परिचय मिला होगा । दो सालसे कांग्रेस देहातोंमें की जा रही है । हरिपुरामें जंगलमें नगर बसाया गया था । अुस नगरमें अेक भी पुलिसवाला नहीं मिल सकता था । व्यवस्थाके लिअे कांग्रेसके स्वयंसेवकोंके सिवाय कोअी नहीं था और किसीकी सत्ता या आज्ञा नहीं चलती थी । फिर भी कोअी दुर्घटना नहीं हुअी । विदेशियोंने भी देख लिया कि लाखों आदमी शान्तिसे काम चला सकते हैं ।

अिस सारी अिमारतका आधार क्या है ? अिस पर बहुतसे लोगोंने अपनेको कुरबान कर दिया है । लाठियाँ खाअीं, ज़मीनें खोअीं, फाँसी पर चढ़े और बहन-बेटियोंका अपमान सहा । अिन सबका अिकट्ठा तप ही कांग्रेसकी शक्ति है । अिस संसारमें कोअी अैसी संस्था नहीं है, जिसके साधन अितने शुद्ध और स्वच्छ हों । शुद्ध और शान्तिमय साधनों द्वारा प्रयत्न करना अुसका ध्येय है । अिसीलिअे तो कांग्रेस पर यह आशा लगी हुअी है कि वह गुलामीके दुःख मिटायेगी । जबसे गांधीजी आये हैं और कांग्रेसमें यह बल प्रविष्ट किया है, तबसे कांग्रेसकी शक्ति बढ़ती रही है । देशमें नब्बे फ़ीसदी आबादी गाँवोंमें खेती पर गुजर करनेवाली है । शहरोंमें लाखोंकी संख्यामें मज़दूर हैं, मगर देहातमें तो करोड़ोंकी तादादमें अैसे लोग हैं, जिनके रहनेको टूटी-फूटी झोंपड़ी और खानेको भरपेट रोटी तक नहीं है । सब कांग्रेस पर आशा लगाये बैठे हैं । अुन्हें विश्वास हो गया है कि हमारा अुद्धार करनेवाली, मदद देनेवाली अेक कांग्रेस ही है ।

बम्बअी प्रान्तमें जब कांग्रेसके हाथमें सत्ता आअी, तब अुसने सबसे पहले बम्बअी शहर और प्रान्तके मिल-मज़दूरोंके वेतनमें अैसी वृद्धि कराअी, जिससे अुन्हें लाभ हो । हड़ताल किये बिना कभी तनखाहें नहीं बढ़ी थीं । कांग्रेसी मंत्रि-मंडलने अेक सपाटेमें बारह फ़ीसदी वृद्धि बिना हड़तालके ही कर दी । कअी बार बहुतसे लोगोंने कष्ट सहन किया, जेलमें गये, कारखाने खतरेमें पड़े, मज़दूरोंका नुकसान हुआ, मगर अुन्हें कुछ नहीं मिला । कांग्रेस मज़दूरोंके प्रति कैसा भाव रखती है,

यह वृद्धि अुसका सबूत है। अिसी तरह अपनी अिच्छासे हर किसी किसानको रखने और निकालनेके बारेमें जो कानून बन रहा है, अुससे ज़मींदार नाराज हो गये हैं। फिर भी कांग्रेस करोड़ों किसानोंके लिअे भी यथाशक्ति काम कर रही है। कांग्रेसके प्रति मज़दूरों या किसानोंमें कुछ भी गलत प्रचार हो रहा हो तो वह कितना झूठा है, यह दिखानेके लिअे मैंने ये बातें कही हैं। दुनियाके मज़दूर अेक हों, यह अेक सुन्दर आदर्श है। मुझे अच्छा तो ज़रूर लगता है, मगर सपने मुझे कुछ अच्छे नहीं लगते। जब जाग्रत अवस्थामें आते हैं, तब सपने झूठे मालूम होते हैं।

अिसलिअे मुझे तो अेक बात पसन्द आती है। आज हमारा क्या धर्म है? कल हमें कोअी मदद देनेवाला है, अिसलिअे आज बैठे रहें, तो आज भी बिगड़ जायगा और कल तो बिगड़ेगा ही। आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता।

अेक नौजवान भाअीने गर्वके साथ कहा है कि मैं कम्युनिस्ट हूँ। अगर कम्युनिज़्ममें से हिंसाकी भावना निकाल दी जाय, तो साम्यवाद और गांधीवादमें फर्क नहीं है।

आज कांग्रेसमें कोअी भी शक्ति हो, तो वह अहिंसाकी है। आज कांग्रेस जबरदस्त संस्था बन गअी है, तो अुसने हमें जो मंत्र दिया है, अुसके प्रति मामूली श्रद्धासे और अुसके पालनसे वैसी बनी है। अगर अुसका पूरी तरह पालन हो, तो वह कितनी शक्तिशाली हो जाय! हमारे पास तोप, बन्दूक और पुलिस नहीं है। हमारी जो भी शक्ति है, वह अिस नैतिक सिद्धान्त पर आस्था और अुस पर चलनेके प्रयत्नके कारण है। आज छः सालकी लड़ाअीमें कुछ भी पैदा किया है, तो वह है लोगोंके दिलोंको जीतना। जो सरकार लाठियाँ चलाकर जेलमें बन्द कर देती थी, अुसकी शक्ति अितनी घट गअी और मार खाते थे अुनकी बढ़ गअी, अिसका कारण क्या है? टूटी-फूटी अहिंसाका पालन। मनुष्य जंगली भेड़ियोंकी तरह अेक दूसरेको फाड़ खानेको तैयार हैं। अिस बातकी खोजबीन हो रही है कि अपने-अपने मुल्कमें अैसी शक्ति पैदा की जाय, जिससे अनेक शहरोंका हवाअी जहाज़ोंमें से नाश हो सके। जिस ढंगसे ये शक्तियाँ काम कर रही हैं, अुससे वे किसी दिन टकरा जायँगी। अैसे समय हिन्दुस्तान ही अेक अैसा देश है, जो संसारके सामने दूसरा ही सबक रख रहा है कि मनुष्यको मनुष्यकी तरह रहना चाहिये। कांग्रेसका आदर्श अिसी संस्कृति पर बना है। फिर भी अुसमें कअी आदमी अैसे हैं जो यह मानते हैं कि हमारे पास कोअी अुपाय नहीं, हम लाचार हैं। अिसीलिअे हमारी अहिंसा संसारके सामने शोभा नहीं देती।

मैं तो चाहता हूँ कि श्रमजीवियोंका कल्याण हो। मगर हमें अुन्हें सही रास्ते लगाना है। और सही मार्ग तो यही है कि हम अपने पैरों पर खड़े हों।

अुन्हें संयबल, सत्य, और अहिंसा वगैरा कांग्रेसके सिद्धान्तोंका पालन करना चाहिये। आज हमारे मज़दूर हिंसाके मार्ग पर अपनी संगठन-शक्तिका अुपयोग करने लगें, तो अेक ही दिनमें कचूमर निकल जाय। जिन-जिन आदमियोंने अहमदाबादमें गांधीजीके संगठनका अध्ययन किया है, अुन्होंने देखा है और वे स्वीकार करते हैं कि वह अनोखा है। बीस बरससे अहमदाबादमें मज़दूरोंका काम हो रहा है। पाँच सौ तो अुनके प्रतिनिधि हैं और चालीस हज़ार स्थायी सदस्य। अुनके दवाखाने, स्कूल और सामाजिक कार्य अच्छी तरह चल रहे हैं। अैसा संगठन दुनिया भरमें नहीं है।

आज कांग्रेसके पास जो व्यवस्थित शक्ति है, वह अुसके संगठन की है। हर प्रान्तमें कांग्रेसमें झगड़े हैं। किसीको मंत्रि-मंडलमें, और किसीको कौंसिलमें या म्युनिसिपेलिटीमें जाना है। अितनी खींचतान होने पर भी अितनी शक्ति है। तब यदि सच्चा स्वार्थ त्याग होता, तो कितनी शक्ति होती!

विदेशी सरकारको खयाल हो गया है कि आअिन्दा शासनकी रचना करनेमें कांग्रेसको छोड़कर कुछ करेंगे तो धोखा खायेंगे। बहुतसे लोग यह कहते थे कि हमें पद नहीं लेने चाहियें, क्योंकि प्रलोभनमें पड़ जायेंगे। यह जानते हुअे भी अुन्हें स्वीकार किया गया है। स्वराज्यका कार्य चलाना तो पड़ेगा न।

गोलमेज़ परिषदमें गये तब सल्तनतके आदमी कहते थे कि कांग्रेसवालोंसे शासन-कार्य थोड़े ही हो सकेगा, यह तो राजनीतिज्ञोंका काम है। तुम तो जेलमें जा सकते हो, लाठियाँ खा सकते हो और पिकेटिंग कर सकते हो। कांग्रेसको कुछ भी सत्ता मिले, तो वह नहीं चला सकेगी और अेक दूसरेके हक्कोंपर वार करेगी। अब कांग्रेसने १२ महीनेसे ७ प्रान्तोंमें शासन करके दिखा दिया, तो वही सल्तनत आज दूसरा सुर निकाल रही है और स्वीकार करती है कि हम नहीं जानते थे कि कांग्रेस अितनी अच्छी तरह शासन चला सकती है। बहुतसे ताने मारते हैं कि ये लोग तो पद लेकर फिसल गये। मगर कोअी फिसला नहीं। किसीने नहीं सोचा था कि हम अेक वर्षमें अितना काम कर सकेंगे। अेक वर्षमें प्रजाके लिअे ७ प्रान्तोंमें कअी कानून बन गये। पिछले सौ वर्षमें जितने नहीं बने, अुतने कानून कुचरी हुअी प्रजाके लिअे बन रहे हैं। अिससे कांग्रेसको संतोष हो, सो बात भी नहीं है। जब तक पूरा अधिकार नहीं मिल जाता, तब तक किसीको आरामसे नहीं बैठना चाहिये। अगर अिस तरह काम करते हुअे सल्तनतको यह मालूम हो जाय कि लड़नेके बजाय दे देना अच्छा है तो ठीक है।

सम्भव है कि लड़ाअीमें न भी अुतरना पड़े। परन्तु यदि लड़ाअी हुअी, तो अिसमें हिन्दुस्तानका आखिरी फैसला हो जायगा। और वह पूर्ण स्वराज्य ही हो सकता है। परन्तु अगर हम 'दुनियाके मज़दूरो अेक हो जाओ' के सूत्र पर बैठे रहे, तो वह मृगतृष्णाके समान है। रंग, प्रान्त और देशका भेद भुला देने पर अैसा हो सकता है। आज अगर कोअी यह कहता हो कि जर्मनीके मज़दूर हिन्दुस्तानके मज़दूरोंके लिअे लड़ेंगे, तो मुझे अुसका मुँह देखना है।

जो अपनेको कम्युनिस्ट कहते हैं, अुनके प्रति मुझे प्रेम है, आदर है। मगर अुनमें खुदमें ताकत होगी, तब अुन्हें दुनियाके मज़दूरोंका आदर प्राप्त होगा।

संसारका अन्नदाता किसान है। वह पैदा न करे तो हम शहरोंमें रहनेवाले भूखों मर जायँ। जो दुनियाका पालन करता है, वही कायर गिना जाता है। अुसे अपनी शक्तिका भान कराना चाहिये। अिसी प्रकार मज़दूरोंको भी स्वावलम्बनका पाठ पढ़ाना चाहिये। कारखानोंके मज़दूर भले ही ट्रेड युनियनमें शरीक हों। परन्तु अुनके ध्येय और साधनोंमें किसीको शंका न रहनी चाहिये। 'शुद्ध और शांतिमय' — अिसके लिअे अपने मनमें कुछ छिपाकर रखा जाय, यह ठीक नहीं है। किसी समय कोअी मज़दूर बिगड़ जायँ, तो कारखानेके मैनेजर या मालिकको मार सकते हैं। मगर अिससे अुन्हें जो कुछ सहना पड़ता है, अुसे तो वही जानता है जिसे अुसका अनुभव हुआ हो। अहिंसक संगठनमें हमारी असली शक्ति है। शहरोंमें कारखानोंके सिवाय भी बहुतसे मज़दूर होते हैं। वे अलग-अलग छोटे-छोटे संगठन करके क्या करेंगे? अुन्हें तो कांग्रेसमें शामिल हो जाना चाहिये। कांग्रेस हमारी माता है, हमारा कल्याण करनेवाली है, अैसा वातावरण पैदा करना हमारा कर्तव्य है।

कांग्रेस सबके हितोंकी रक्षा करती है। भले ही अलग-अलग संस्थाअें बनाअिये, परन्तु कांग्रेसकी विरोधी नहीं, पोषक बनाअिये। अिसके सिवाय कांग्रेसके पास साधारण कार्यक्रम मौजूद है। अुसका पूरी तरहसे अमल करना चाहिये। जो देशसे प्रेम रखते हों, अुन्हें कांग्रेसके साधारण कार्यक्रम पर नज़र रखनी चाहिये। अपने मुल्कके कपड़े पहननेका यह मतलब नहीं कि मिलोंके कपड़े पहने जायँ। बहुतसे गरीब लोग जो कपड़ा बनाते हैं, वह पहनना चाहिये। शुद्ध खादीकी पोशाक पहननी चाहिये। और राष्ट्रभाषा अेक होनी चाहिये। जहाँ शराबखाने चलते हों, वहाँसे अुन्हें हटा देना चाहिये। शराब न पीनेसे अहमदाबादके मज़दूरोंको ६० लाखका फायदा हुआ और अुन्हें बाल-बच्चोंका और जीवनका अनुभव हुआ। दुनियाके मज़दूर न छोड़ें, तो भी आप तो शराब छोड़ ही दीजिये। आपको वह नहीं पुसा सकती। अूँच-नीचके भेद और अछूतपन वगैरा नहीं मानने चाहियें। कभी-कभी हमारे सनातनी भाअी

अवश्य नाराज़ हो जाते हैं। स्वराज्यकी जिन्हें ज्यादा ज़रूरत है, अुन्हें वह पहले मिलना चाहिये। अिस कार्यक्रमके लिअे गांधीजीने अलग संस्थाअें बना दी है। अिसी तरह खादी, हरिजनों, ग्रामोद्योग और हिन्दी प्रचारके लिअे अलग-अलग संस्थाअें खोल दी हैं। वे लोग अपना काम करते रहते हैं। कांग्रेसमें अनेक त्यागी और निःस्वार्थ लोग मौजूद हैं। मैं मज़दूर, व्यापारी और किसान हरअेकको सलाह देता हूँ कि वे अुसमें शामिल हों। आप सबकी ज़िम्मेदारीका अुसमें हिस्सा होना चाहिये। रचनात्मक काममें भाग लेना चाहिये। अिस पर कुछ न कुछ अमल करनेकी कोशिश कीजिये।

८३

कराची कारपोरेशनके मानपत्रका जवाब

[ता० २७-८-१९३८ को कराची कारपोरेशनने मौलाना आज़ाद, आचार्य कृपलानी और सरदार वल्लभभाओको मानपत्र दिया, अुस अवसर पर दिये गये भाषणसे।]

यह मानपत्र व्यक्तियोंको नहीं परन्तु कांग्रेसको, जो राष्ट्रकी महान संस्था है और जिसने हिन्दुस्तानके दिल पर कब्ज़ा कर लिया है, दिया जा रहा है।

मेहमानोंके गुणगान करना हिन्दुस्तानकी खासियत है। हम मानते हैं कि यह बड़ाअी करके आप हम पर ज़िम्मेदारी डाल रहे हैं। हम तो जब तक दममें दम है, यही काम करेंगे। हमें अुम्मीद है कि हम प्राण निकलनेसे पहले आज़ाद हो जायँगे। हमने कुछ भी त्याग किया हो, तो अुसके लिअे हमारे दिलमें अफ़सोस नहीं है। यही खयाल है कि जो किया सो अच्छा किया। परन्तु हमारे दिये हुअे छोटे-छोटे बलिदानोंको भी आप बड़ा बताते हैं।

आपने अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीकी बात लिखी है। मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे अुस काममें ज्यादा दिलचस्पी है। अुस काममें मनको जितनी शांति रहती है, अुतनी राजनैतिक काममें नहीं रहती; क्योंकि राजनीतिमें तो गन्दे पानीमें तैरना पड़ता है।

जो म्युनिसिपेलिटीका काम आदर्श रूपमें करके दिखा सकता है, वह स्वराज्यका चित्र अुपस्थित कर सकता है।

मैंने बहुतसे शहर देखे हैं। कराची सफ़ाअीमें सबसे बढ़िया माना जाता है। अिसमें प्रकृतिकी अनुकूलता भी है और आपकी काम करनेकी कुशलता भी।

अहमदाबाद शहरका काम करना पड़ा, तब मैं अकसर निराश हो जाता था। कअी बार अैसा खयाल होता था कि सुधार होनेकी कोअी आशा नहीं

है। शहरके चारों तरफ दीवार, औद्योगिक शहरमें मिलोंकी बड़ी-बड़ी चिमनियाँ, और कपड़ेकी लगभग ७५ मिलें। लोगोंके लिअे शहर जब नरकके समान हो गया, तब जीमें आया कि हमें यह काम करना है। मैंने विचार किया कि सुधार करना हो, तो म्युनिसिपेलिटिमें अनुशासनबद्ध दल होना चाहिये।

आज १५ सालके बाद जाकर देखें तो पता चलेगा कि कितना सुधार हुआ है। अलबत्ता आपके शहरके मुकाबलेमें तो कुछ भी नहीं हुआ। आपके यहाँ अैसे रास्ते हैं, जैसे बम्बअी शहरमें भी नहीं हैं। मैं आपको बधाअी देता हूँ।

मैं जिस कामके लिअे आया हूँ, वह अेक अटपटी समस्या है। आसान मामला होता तो बुलाते भी किसलिअे? मगर आप ही अिसमें से रास्ता निकाल सकते हैं। अन्तमें निर्णय तो आपको करना है। मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि वह हम सबको सच्चा मार्ग दिखाये।

८४

करांचीमें पाटीदारोंसे

[ता० २८-८-१९३८ को करांचीमें पाटीदारोंके दिये हुअे मानपत्रका जवाब।]

आपको पता है कि मैं जाति-पाँतिकी चारदीवारीसे बाहर निकला हुआ आदमी हूँ। अिसलिअे आप मेरा बिरादरीके आदमीकी हैसियतसे स्वागत नहीं कर सकते। मुल्कके बंधन तोड़नेके लिअे जातिके बन्धनोंसे बाहर निकलना चाहिये।

यह जानकर मुझे खुशी हुअी है कि आप अिस प्रान्तमें देशके कार्यमें अपना हाथ बँटाते हैं। हमें जहाँसे खानेको मिलता हो, अुस स्थानके प्रति भी हमारा कुछ कर्तव्य है। जिस माताके स्तनोंका दूध पीते हैं, अुसके प्रति अपना धर्म पालन करना चाहिये।

आप सब छोटे-बड़े रोजगारोंमें लगे हुअे हैं। यह अच्छी बात है कि नौकरी पसन्द नहीं की; क्योंकि हिन्दुस्तानमें कहावत है कि अुत्तम खेती, मध्यम व्यापार, कनिष्ठ नौकरी। बड़े-बड़े अधिकारी भी आखिर नौकर ही हैं। आपने नौकरका पद नहीं लिया और नौकरीका मोह छोड़कर छोटे-बड़े व्यापारमें लगे हैं, अिससे कुछ खोया नहीं है।

कनिष्ठ मानी जानेवाली नौकरीको आजकल हिन्दुस्तानमें अुत्तम माना गया है, जबकि खेतीको जो अुत्तम है, अधम माना जाता है; क्योंकि किसान अज्ञान अवस्थामें है। सब अुसे तिरस्कारकी नज़रसे देखते हैं।

आप सब बाहरसे आये हुअे हैं। आप सबको अेकता रखकर अेक कुटुम्बकी तरह रहना चाहिये। जो पैसेदार हैं, अुन्हें अपनेसे कमज़ोरोंको दो पैसे देकर सहारा देना चाहिये। मनुष्य विपत्तिके मारे या किसी न किसी मजबूरीसे अपना प्रान्त या घर छोड़ता है।

कितना ही धन बुद्धिसे प्राप्त कर लें, परन्तु अेक पाअी भी साथ नहीं जाती। मनुष्य जब जन्म लेता है तब मुट्ठी बंद करके आता है, परन्तु जब जाता है, तब खाली हाथ जाता है। अगर कोअी अच्छा काम करके जाता है, तो पीछे सुगंध छोड़ जाता है। गरीब लोगोंकी सहायता करके जाता है, तो अुसे कोअी न कोअी याद करता है। जगत अनादि कालसे चला आ रहा है। हमारे जीवनके ५०–७५ वर्ष तो किसी गिनतीमें नहीं हैं। परन्तु जो मनुष्य जीना जानता है, अुसीने जन्म सफल किया है।

मनुष्यमें अनेक अिन्द्रियोंका ज्ञान है। जानवरोंमें अेक ही अिन्द्रियका ज्ञान है। जो अपनी आँखमें मैल नहीं रखता, कुदृष्टि नहीं डालता और जिसने संयम रखा है, अुसकी आत्मा अन्तमें अीश्वरमें मिल जाती है।

आज महात्मा गांधीको सभी नमस्कार करते हैं, क्योंकि वे अिन्द्रियोंका संयम और धर्मका पालन करके संसारको धर्मका पालन करना बताते हैं।

हमें हरअेक काम समझकर करना चाहिये। राष्ट्रके कामोंमें सहानुभूति दिखाना ही काफ़ी नहीं है, अुनमें बुद्धिपूर्वक भाग लेना चाहिये। हमारी भाषा कुछ भी हो, मगर जिस प्रान्तमें रहें वहाँकी भाषा हमें सीख लेनी चाहिये।

अगर आप सब कांग्रेसके प्रति प्रेम रखते हों तो आपको कांग्रेस जो कहे, वही करना चाहिये। अिसलिअे आपको शुद्ध खादीके कपड़े पहनने चाहियें। किसीको अछूत न मानना चाहिये और कोअी शराब पीते हों तो अुन्हें समझाना चाहिये।

मेलसे रहेंगे तो सुखी होंगे।

८५

राजकोट राज्य प्रजा परिषद्

राजकोटमें हुअे राजकोट राज्य प्रजा परिषदके प्रथम अधिवेशनमें किया गया प्रवचन।

बहुतसे कामोंको छोड़ कर भटकता हुआ हवामें अुड़कर भी मैं आपके पास आ पहुँचा हूँ। मैं समझ गया हूँ कि आपका कितना आकर्षण है। और जिस भावसे आपने मेरा स्वागत किया है, अुसके लिअे मैं आपका आभार मानता हूँ। कराचीसे हवाअी रास्तेसे तुरन्त वर्धा पहुँचकर व कल रातको वर्धासे रवाना होकर आज आपके पास आया हूँ। मुझे लगा कि किसी भी कीमत पर मुझे यहाँ आना ही चाहिये। अिसीलिअे मजबूर होकर परिषद दो दिन मुलतवी रखनी पड़ी। परन्तु दो दिन तो बहुत होते है। मेरे सामने अैसे कारण पैदा हो गये कि मैं मजबूर हो गया।

कुछ महीने पहले हमने यहीं राजनैतिक परिषद की थी। अुस समय दरबार साहब अध्यक्ष थे। वे खुद तो अिस तरहका बोझा अुठानेको तैयार न थे, परन्तु मैंने अुन्हें अुनके साथ रहनेका वचन दिया था। जब तक वे अध्यक्षपद पर रहेंगे, तब तक मैंने और गांधीजीने अुन्हें साथ देनेका वचन दिया है। जिस शहरमें परिषद हुअी थी वहाँ आज अितनी लोक-जाग्रति हो गअी है, तब मुझे बाहर रहना अच्छा नहीं लगा। आपके शहरमें जो घटना हो गअी, अुसे मैं पहले तो माननेको ही तैयार न था। राजकोटमें लाठीचार्ज हो, यह बात ही मुझे सच नहीं मालूम होती थी। परन्तु दुःखके साथ मैंने जाना कि ये सब बातें सच थीं।

अुस दिन बम्बअीमें जो सार्वजनिक सभा हुअी, अुसमें मैं गया था। यों तो मैं अैसी सभाओंमें जाता ही नहीं हूँ, लेकिन जब मैंने यह समाचार सुने कि जाने-अनजाने श्री ढेबरके मर्मस्थल पर प्रहार हुआ है और अुनको जेलमें भेज दिया गया है, तब मुझसे नहीं रहा गया।

लेकिन आप जानते हैं कि हरिपुरा कांग्रेसने देशी राज्योंको अपने पैरों पर खड़े होनेका आदेश दिया है। यह स्वावलम्बन सीखनेका सिद्धांत विश्व-विदित है। जैसे पड़ोसीके मरनेसे हम स्वर्गमें नहीं जा सकते, वही बात स्वतंत्रताकी है। अगर हमें आजादी चाहिये, तो हमें अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये।

दोहरी गुलामी हमेशा रहनेवाली नहीं है। अेक समय अैसा भी था, जब हमारी माँगें हलकी थीं। अब हमारी ताकत बढ़ चुकी है। यही ज़बान अब बदल गअी है और अब हम माँगोंका नाटक नहीं कर रहे हैं, बल्कि ठोस माँगें कर रहे हैं। आज यहाँ होनेवाली यह सभा केवल अखबारी रिपोर्टके लिअे ही होनेवाली सार्वजनिक सभा नहीं है। अैसी सभाओंमें मैं जाता भी नहीं हूँ। आजकी सभा तो अिसलिअे है कि आपको जिम्मेदार हुकूमत चाहिये। आप लोग अिस सभामें अितने आकर्षित होकर आये हैं, अिसीसे आप अपनी आकांक्षाओंका सबूत दे रहे हैं। जिम्मेदार हुकूमतका सिद्धांत कांग्रेसने भी सामने रखा है और ब्रिटिश भारतमें वह थोड़ी बहुत मात्रामें स्वीकार हुआ है।

सारे हिन्दुस्तानमें आजकल नवीन चेतना प्रकट हो रही है। अिस चेतनाका असर आप पर भी हुआ है और होना ही चाहिये। जिस तरह ब्रिटिश भारतमें अिस हथियारका अुपयोग हो रहा है, अुसी तरह आप भी अपनी स्थिति समझ लीजिये और अुस हथियारको काममें लीजिये।

राजा कैसा भी हो, हम अुसे पदभ्रष्ट करना नहीं चाहते। अुसे गद्दीसे अुतारनेका तो हम विचार भी नहीं करते। हम जो कुछ माँगते हैं, वह तो सत्ताकी मर्यादा है। नाच-गान और वेश्याओंके नखरों पर राजा अगर पानीकी तरह पैसा खर्च करे और किसान भूखों मरें, तो वह राज्य जिन्दा नहीं रह सकता। अिसलिअे प्रजा जिम्मेदार हुकूमतकी माँग करे, तो अिसमें आश्चर्य नहीं है।

राजाओंके वे दिन जाते रहे। देशी राज्योंमें सब जगह जाग्रति फैल रही है। कांग्रेसने अपने पैरों पर खड़ा होनेके लिअे कह दिया है, अतः सभी जगह प्रवृत्तियाँ चल रही हैं। आप किसी पर निर्भर मत रहिये।

कांग्रेस तो अिसी बातका विचार करती है कि वह अपना हथियार कहाँ अुठाये। राज्य छोटा हो तो भी वहाँ कांग्रेसके नेता पहुँच जाते हैं और प्रजाको, राज्यको और सार्वभौम सत्ताको — सभीको अुचित सलाह देते हैं।

परन्तु अिसका अर्थ यह नहीं है कि प्रजाकी तैयारी नहीं है, प्रजामें भावना नहीं है, भूख नहीं है या दुःख नहीं है। माँग तो बाहरके आन्दोलनकारी करते हैं, अैसी पागल आलोचनाको आप मौका मत दीजिये।

(अिसके बाद सरदार साहबने राज्यके सम्बन्धियोंकी तरफसे प्रजाके नाम पर अुन्हें दिये गये तारोंका अुल्लेख किया और बताया कि पहले दो तारोंसे वे जरा भी विचारमें नहीं पड़े। देहातके किसानोंके नामसे दिये गये तीसरे तारका अुल्लेख करके अुन्होंने कहा :)

अिस तरहका तार तो मुझे अपनी जिन्दगीमें कभी नहीं मिला। तार देखकर मुझे आश्चर्य हुआ और मुझे लगा कि अिन सुखी किसानोंके दर्शन तो करने ही चाहियें, क्योंकि हिन्दुस्तान भरमें कहीं भी किसान सुखी नहीं हैं। मैं

किसानोंकी स्थिति जानता हूँ, क्योंकि मैं खुद भी किसान हूँ। सचमुच देशी राज्योंके किसान बड़े भोले होते हैं। कुछ तो राजाओंको अीश्वरका अवतार मानते हैं। तब प्रश्न यह होता है कि राजा पापी है या अीश्वर पापी है। असलमें तो राजा ट्रस्टी है। चूँकि वह बाप-दादाओंका हक भोगता है, अिस-लिअे जब राजा नालायक हो जाय, तब अुसे गद्दीसे अुतार देनेका हरअेक देशमें प्रजाको अधिकार होता है। परन्तु हमारे देशमें तो हमारे बाप-दादाओंने हमें बहुत ज्यादा वफ़ादार बना दिया है, अिसलिअे हम अभी तक पीसे जा रहे हैं।

राजाओंके पास तो बगैर मेहनतकी दौलत होती है। अिसलिअे वे जल्दी ही बिगड़ जाते हैं। अैसा आदमी दयाका पात्र है। अिस दुनियामें सत्ताके पीछे लगा हुआ सबसे बड़ा रोग कोअी हो सकता है, तो वह खुशामद है। राजाओंको मीठी-मीठी बातें सुनना है, परन्तु वह तो राजद्रोह है। और कड़वी होने पर भी सच्ची बातें कहना ही वफ़ादारी है। मगर आजकल सब अुलटा ही चल रहा है। अिसलिअे 'वफ़ादारों' की तरफसे मिले हुअे तारों पर बैठा रहता, तो मैं प्रजाका द्रोही होता; क्योंकि अधिकांश प्रजा अैसा नहीं चाहती थी। यदि मैं न आया होता तो आप निराश होते और आपको दुःख भी होता। यहाँ आकर मैंने आपका अुत्साह देखा है और आज आप जो मत प्रकट कर रहे हैं, अुससे भी मैं समझ गया हूँ।

अेक भाअीने यह राय दी कि सब लाठियाँ खानेके लिअे तैयार हैं। तब मैंने अुन्हें जवाब दिया कि 'मैं पागल नहीं हूँ कि आप जो कहते हैं, सो ही मान लूँ। अगर सभी लाठियाँ खानेको तैयार होते तो देर कहाँ थी!' मैं समझता हूँ कि हम सभी अिस तरह तैयार नहीं हैं और सब तैयार हो भी नहीं सकते। लोक जाग्रति थोड़े आदमियोंके भारी बलिदानोंसे होती है। अिन बलिदान करनेवालोंका मनाही हुक्म अगर मुझे मिल जाय, तो मैं वापस नहीं आअूँगा।

मैं तो यहाँ यह जाँच करने आया हूँ कि प्रजा सचमुच क्या चाहती है। मैंने देखा है कि प्रजा शासनतंत्रमें तबदीली चाहती है। यह कौन कहता है कि प्रजा शासनकी जिम्मेदारी सँभालने योग्य नहीं है? जो कहते हों अुन्हें अपने दिलसे पूछना चाहिये कि अुनकी खुदकी योग्यता कितनी है? पहले ब्रिटिश भारतमें भी यही कहा जाता था। परन्तु लोगोंने अपने सिर फुड़वाये और आज सिर फुड़वानेवाले ही मंत्री बन गये हैं।

(अिसके बाद सरदार साहबने ब्रिटिश भारतके प्रान्तोंमें नया विधान जारी होने और केन्द्रीय विधान भी लागू करनेके लिअे होनेवाली व्यवस्थाके बारेमें विवेचन किया और दलीलोंके साथ समझाया कि स्वशासनका मुख्य प्रश्न यह है कि राजाओंको किस तरह वशमें किया जाय। ब्रिटिश भारतमें चुनावका तरीका और देशी राज्योंमें नियुक्ति करनेका

तरीका, दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। अिसलिअे देशी राज्योंमें भी ब्रिटिश भारतकी तरह ही चुनावोंकी व्यवस्था होनी चाहिये, यह आग्रह रखना जरूरी मालूम होनेकी बात भी अुन्होंने समझाअी। अुसके बाद राजकोटकी प्रजाको सम्बोधन करके अुन्होंने कहा :)

राजकोटकी प्रजा यह अुम्मीद न रखे कि कांग्रेसकी हुकूमतसे अुसे हुकूमत मिल जायगी। अुसके लिअे तो अुसीको कुरबानी करनेके लिअे तैयार होना पड़ेगा। अगर आपका निश्चय होगा, तो आपकी प्रगतिको कोअी नहीं रोक सकेगा। सारे राजा मिल जायँ, तो भी वे कुछ नहीं कर सकेंगे।

दूसरे राज्य आपसे खराब हों तो आप भी खराब रहें, यह कोअी बात नहीं। अगर आपको सुधरना है, तो तमाम राजा और ब्रिटेश हुकूमत भी आपको नहीं दबा सकेंगे; क्योंकि हमारा निश्चय-बल और त्याग करनेकी तैयारी ही हमारे हथियार हैं। ये हथियार हमको सूझ गये, यह अीश्वरी संकेत है; क्योंकि अगर हम सच्चे हथियारोंसे लड़ाअी लड़ेंगे, तो विरोधी ज़रूर हार जायेंगे। अुसने आज़ाद होनेका संकेत दिया। अिसलिअे अुसने हमें अैसा हथियार सुझाया, जो दुश्मनके पास भी नहीं था। अगर अिस हथियारका अुपयोग अच्छी तरह किया जाय, तो सिर्फ २०-२५ आदमी ही राजकोटको ज़िम्मेदार हुकूमत दिला सकते हैं।

हम अेक अुद्देश्यसे लड़ते हैं और जब हमारा अुद्देश्य शुद्ध होता है, तब हमें सदा अपनी त्रुटियाँ सुधारनेका प्रयत्न करना चाहिये।

अगर अिस ढंगसे काम हो सकता हो कि राज्यके साथ लड़ना न पड़े, तो नहीं लड़ना चाहिये। अगर स्वाभिमानपूर्वक जो चाहते हैं सो मिलता हो, तो अुसे ले लेनेमें कोअी हर्ज़ नहीं है। मैं तो पैरोंमें भी पड़ सकता हूँ। हमारा किसी अधिकारीके विरुद्ध कोअी अेतराज़ नहीं है। हमें हिन्दुस्तानीको निकाल कर किसी अंग्रेज़को भी नहीं लाना है। अंग्रेज़को लानेका मुझे शौक नहीं है। क्योंकि जानबूझकर अंग्रेज़को बुलाना आत्म-हत्या ही है। हमारा किसी व्यक्तिसे वैरभाव नहीं है। हमारा झगड़ा संस्थासे है, प्रथासे है। हमारी माँग यही है कि वह नष्ट हो। हमें निरंकुश सत्तावाले राजाको अुसकी मर्यादा बता देनी चाहिये। देवता और राजा दोनों अेकसे ही हैं। ये जब तक मन्दिरके बाहर न निकलें, तभी तक पूजा करने लायक हैं। मगर यह तो प्रथा ही अैसी है कि कोअी भी व्यक्ति अुसमें अपने आप ही बिगड़ जाता है।

हमारी लड़ाअीमें हम भूलें न करें। यह हो सकता है कि राज्य न माने; क्योंकि अुसका घमंड जल्दी नहीं मिटेगा। हम राजा हैं, हमें कौन कहनेवाला है, यह खयाल अुनके मनसे जल्दी नहीं निकल सकता। अंग्रेज हो तो राजाको झट

कह सकता है मगर प्रजा नहीं कह सकती, अैसा मामला है। ये ही घमंडी राजा अंग्रेजोंके दरवाजे पर चपरासियोंको रिश्वत देकर अन्दर जाते हैं, परन्तु किसानोंकी झोंपड़ीमें अिनसे नहीं जाया जाता!

जब राजा ही अैसे हों, तब लड़ना भी पड़ता है। फैसला हो जाय तब तो सौभाग्यकी बात है। परन्तु यह कोअी मामूली बात नहीं है। दीवान शायद अच्छा आ जाय, परन्तु राजा न माने तो? हाथ पकड़कर हस्ताक्षर करानेवाला कोअी दीवान हो सकता है? दीवानको अितना अधिकार हो अैसा मैंने कहीं नहीं देखा। मुझे दीवानोंकी या खटपटकी बात बहुत समझमें नहीं आती। मगर थोड़े ही समयमें मैंने समझ लिया कि वह कोअी जिम्मेदार आदमी नहीं है। अुसका दिल ठिकाने नहीं है। अुसका अिलाज रेज़िडेंट कर सकता है। अुसे यह अधिकार है और वह अुसे गद्दी परसे अुतार भी सकता है। अगर यही हाल रहा तो अन्तमें यही होगा, या ज्यादा हुआ तो कोअी अंग्रेज आ जायेगा। मगर अिससे हमारी तकदीर नहीं खुलेगी। अिसलिअे अिसका फैसला तो राजकोटकी प्रजा ही कर सकती है। मेरी आपको यह सलाह है कि आप लड़िये। ज़रूरत पड़ने पर मैं आपके साथ ही हूँ। मैं तो लड़ाकू वृत्तिका हूँ। लड़ाअीका मुझे शौक है।

अिसलिअे हमें अिस ढंगसे तैयार होना चाहिये। यह सच है कि पानीमें तैरनेवाले ही डूबते हैं, किनारे खड़े रहनेवाले नहीं। मगर अैसे लोग तैरना भी नहीं सीखते। प्रजा लड़े और हार जाय तो दुःख नहीं। आप अगर जीत जायेंगे, तो मैं और सारा हिन्दुस्तान खुश होगा। लेकिन बदनामी लेंगे तो अुससे आपको ही नुकसान होगा।

हमें अपना हथियार सोच लेना है, सोच लिया है। गालियाँ हमारा हथियार नहीं है। संयम रखनेवाले ही प्रजाको जिता सकते हैं, तिरस्कार करनेवाले नहीं। हमारी अिस पवित्र लड़ाअीमें जो भी शरीक हुअे हैं अुनमें अगर हिंसा, वैरभाव, या और कोअी अैसी बात पैदा हो जायगी, तो वह हमारी दुश्मन बन जायगी और हमारी बदनामी होगी। आपके कारभारी या आपको लाठी मारनेवाली पुलिसके प्रति भी आप वैर न रखें। अुनका तो अुल्टे आपको अहसान मानना चाहिये कि अुन्होंने ही आपको जल्दी जाग्रत कर दिया। नहीं तो आप कब जागनेवाले थे?

राज्यने प्रजा पर लाठी चलाकर अपने हाथों दुःखको न्यौता दिया है। परन्तु हमारी यह लड़ाअी तो अैसी है कि अिसमें दूसरोंको दुःख पहुँचाये बिना हम स्वयं जितना अधिक दुःख अुठायेंगे, अुतना ही हमारा काम जल्दी बनेगा। अिसलिअे आप किसीसे वैर न रखें। किसी पर रोष न करें। अुसके दिलमें भी परिवर्तन हो जायगा और वह किसी न किसी दिन सुधर जायगा।

नापाक तो वह कहलाता है जिसे देशका दर्द न हो और जो स्वतंत्रता न चाहता हो। परन्तु प्रजा मर्द बन जायगी, तो ये सब बातें नहीं रहेंगी।

स्वर्गीय लाखाजीराज तो बहादुर राजा थे। राजकोटकी प्रजा पर अुनका ऋण बहुत है। अुन्होंने अपना राजाका धर्म पालन करनेकी बड़ी कोशिश की थी।

परन्तु आजकलके राजा तो राजकुमार कॉलेजकी पैदावार ठहरे! और राजकुमार कॉलेजकी पैदावार यानी सड़े हुअे फल! अिस कॉलेजसे थोड़े ही राजा लायक निकले होंगे। नालायक बनानेके लिअे ही तो वहाँ नहीं भेजे जाते हों! राजकुमार यानी जिसमें विचार करनेकी शक्ति नहीं और जिसके आचार-विचार भ्रष्ट हों। अब तो यह भावना ही नहीं रही कि राजा लोग प्रजाकी ओर हमदर्दीकी, सम्मानकी और प्रेमकी दृष्टिसे देखें।

अिंग्लैण्डका राजा कहलाता तो सम्राट है, मगर आखिर तो वह प्रजाका सेवक ही है। असलमें प्रजा ही अुस राज्यकी मालिक है। अिसीलिअे तो आठवें अेडवर्डको गद्दीसे हटा दिया गया। और यहाँ तो बाहरसे नाचनेवालियोंको लाकर नचायें, तो भी आप कुछ नहीं बोल सकते। परन्तु राजाकी नालायकी हमारी अपनी नालायकी है। अिसलिअे प्रजाको तो राजाका पहरेदार बन जाना चाहिये। जब तक हम पहरा देते रहेंगे, तब तक राजा अच्छा ही रहेगा।

आपने जिम्मेदार हुकूमतका जो मुख्य प्रस्ताव किया है. अुसमें मुझे पूरा विश्वास है कि आपका लड़नेका पूरा तरह निश्चय है। मगर यह जोश ठंढा न हो जाय, यह ध्यान रखिये। कोअी बीचमें नहीं पड़ेगा, तो फैसला जल्दी हो जायगा।

राजाओंको तो विश्वास है कि ... जैसी अुनकी पीठ पर है ही। वे देखते हैं कि कहीं कांग्रेसकी शक्ति न बढ़ जाय। वे अैसा नहीं होने देना चाहते। मगर अितने वर्षसे जब अुसमें ताकत आ गअी है, तब अुससे अीर्षा करनेसे क्या होगा? कांग्रेस कोअी भीतरी व्यवस्थामें तो दखल देगी ही नहीं। मगर जब राज्यकी प्रजा शिकायत लेकर आये, तब हमसे यह नहीं कहा जा सकता कि 'अपने घर जाओ'; बल्कि हिसाब लगाकर कहा जायगा कि संयम रखो और लड़ो। हम क्या करें, अैसा हमसे नहीं कहा जायगा।

हमें तो यही चाहिये कि वैधानिक शासककी तरह राजा रखे जायँ। लेकिन अगर अुन्हें निरंकुश ही रहनेकी अिच्छा हो, तो विलायत भेज देना चाहिये और यह देखनेको कहना चाहिये कि वहाँकी प्रजामें अैसा चलता है या नहीं।

सारी दुनियामें अुत्तरदायी शासन है और यहाँ हमारी क्या दशा है! देशी राज्य तो अैसे बन रहे हैं, जैसे प्रजाके शरीर पर फोड़े हों और अुनसे मवाद बह रहा हो।

कांग्रेसका जोर बढ़ रहा है, अिस बातसे ये लोग जलते-भुनते हैं। मगर जोर तो बढ़ेगा ही। सूर्यका प्रकाश सर्वत्र फैलेगा। किसी भागमें अँधेरा नहीं रह सकता। कांग्रेसके सिद्धान्त सारी जनताकी भलाअीके लिअे हैं। अिसीलिअे वह अपनी तरफ सबका दिल खींच लेती है।

यहाँ तो आप सबकी दशा त्रिशंकु जैसी ही है। मगर अब जाग्रति आ चुकी है, अतः आपका छुटकारा भी नजदीक ही है। और राजकोटका शासन करनेमें रखा भी क्या है? यह तो छोटासा राज्य है। अेक छोटीसी म्युनिसिपेलिटीके बराबर अुसका कारोबार है। अुसमें करने जैसा क्या है? अहमदाबादमें ५ लाखकी आबादी और आधे करोड़से अधिक आमदनी है। वहाँका अिन्तजाम जनता ही तो कर रही है न? शासन करनेमें बुद्धिकी ज़रूरत होगी, तो वकील और दूसरे सलाह देनेवाले क्या नहीं मिलते?

आप काठियावाड़के सिरके मुकुट कहलाते हैं। परन्तु सिरके मुकुट — पगड़ीसे दुर्गन्ध आती हो, तो अुसे फेंक दीजिये। अैसी गन्दी पगड़ीसे नंगा सिर क्या बुरा है? हमें अपने हक़ोंकी रक्षा करनेके लिअे तैयार हो जाना चाहिये। और यह अुदारवाद और अुग्रवाद सब क्या है? देशी राज्योंमें तो अेक ही वाद हो सकता है यानी राजा अपने हाथमें आ जाय। अुसके बाद वादोंकी बात करेंगे। अभी तो ये वादकी बातें दोनों ही वादोंके लिअे घातक है। सत्ता आ जायगी तब अिस पर विचार करेंगे। राज्यके खर्चके मामलेमें साधनोंके प्रमाणमें खर्च करेंगे। प्रजाके प्रतिनिधि बजट बनायेंगे और अिन्तजाम भी खुद ही करेंगे। अिसलिअे साथ मिलकर ही काम करना चाहिये। दलबन्दीके लिअे अभी गुंजाअिश नहीं है।

राजकोटकी अेक लाख प्रजाके प्रतिनिधिकी जिम्मेदारियाँ भारी हैं। मैं या दूसरे लोग आपको पानी चढ़ाने नहीं आये हैं। यह तो चारण-भाटोंका काम है। समय आने पर अपने आप परीक्षा हो जायगी। दस दिनके बाद तो लड़ाअीमें परीक्षा हो जानेवाली ही है।

आप राजकोटके लोग अेक आवाजसे जो माँग कर रहे हैं, अुसे याद रखकर ठेठ तक शुद्ध लड़ाअी लड़िये और अपनी सारी ताकत लगा दीजिये। सबकी आँखें आप पर लगी हुअी हैं। बहुतसे देशी राज्य, आप क्या करते हैं यह देख रहे हैं। अिसलिअे आप जो कुछ करें, वह अैसा कीजिये कि जिससे अिज्ज़त बढ़े। आप हार जायँ तो कोअी हर्ज़ नहीं। परन्तु अैसा काम कभी न करना, जिससे किसी तरहकी बदनामी हो। मेरी माँग अितनी ही है।

गुजरात समाचार, ८-९-१९३८

८६

बड़ौदाकी प्रजाको संदेश

[ता० २९-१०-१९३८ को भादरणकी आम जनताके सामने दिया गया भाषण ।]

आज आप दूर दूरके गाँवोंसे आकर और तकलीफ अुठाकर घंटों कड़ी धूपमें बैठे हैं। अिससे आपका परिषदके प्रति प्रेम जाहिर होता है। मैं जबसे यहाँ आया हूँ तबसे अब तक भादरण गाँव और तहसीलकी प्रजाने और प्रतिनिधियोंने जो प्रेम दिखाया है, अुसके लिअे मुझे सबका आभार मानना चाहिये।

स्वागताध्यक्षके पदको जिस वृद्ध पुरुष श्री तुलसीभाअीने साहस करके स्वीकार किया है, अुसके लिअे अुनका भी आभार मानना चाहिये। क्योंकि अिस राज्यमें अैसे बहुत कम लोग हैं, जो जायदादवाले होने पर भी अैसी हिम्मत दिखा सकें। जायदादवालेको हिम्मत दिखानेमें राज्यकी तरफसे जो मुश्किलें आती हैं, अुन्हें सहन करनेके लिअे तैयार रहना पड़ता है। आज यह हालत है कि देशी राज्योंमें जिस प्रकारका जुल्म हो सकता है, वैसा जुल्म अंग्रेजी अिलाकेमें नहीं हो सकता। फिर भी मुझे विश्वास है कि अगर हमें जुल्म बरदाश्त करना आ जाय, तो देशी राज्य तो प्रजाके सामने गरीब बन जायँ। हिन्दुस्तानमें अिस समय अेक भी अैसा राज्य नहीं, जो अपने अधिकार लेनेकी कला जाननेवाली प्रजाके वशमें न रहे।

क्या राजा अयोग्य नहीं हैं?

कहीं कहींसे यह आवाज़ आती है कि बड़ौदाकी प्रजा अुत्तरदायी शासनके लिअे योग्य नहीं है।

हमारे राजा तो अधिकसे अधिक प्रगतिशील कहे जाते हैं, अधिक अनुभवी कहे जाते हैं; क्योंकि वर्षका अधिक भाग तो वे विदेशोंमें ही बिताते हैं। अुत्तरदायी शासनकी भूख तो अुन्होंने खुद ही जगाअी है। सारे हिन्दुस्तानमें अगर किसी देशी राजाने हिम्मत की हो, तो वह हमारे महाराजाने की है। और अुसके लिअे हमें गर्व हो सकता है। अितना करनेके बाद जब प्रजामें अुत्तरदायी शासनकी माँग करनेकी हिम्मत आ जाय और अुसके लिअे वह माँग करे, तब अुससे यदि यह कहा जाय कि वह लायक नहीं है, तो मैं कहता हूँ कि अयोग्य प्रजाको भी अपनी अिच्छानुसार राज्य करनेका अधिकार है और वह अपनी अिच्छानुसार राज्य कर सकती है।

हिन्दुस्तानके लिअे अब अपना दिल टटोल कर देख लेनेका समय आ गया है। बड़े-बड़े राज्य आजकल केन्द्रिय सरकारमें भागीदार बननेके लिअे दौड़-धूप कर रहे हैं। अगर वे अपनी रियासतोंमें अिस तरहकी स्वतंत्रता देनेको तैयार न हों, तो अुन्हें ब्रिटिश भारतको स्वतंत्रता मिलनेके बाद केन्द्रिय शासनमें भागीदार बननेका कोअी हक नहीं है। यह नोटिस तो कांग्रेसने देशी राज्योंको और अंग्रेज सरकारको भी दे दिया है।

भारतकी जनता अविभाज्य है

आज हम बड़ौदा राज्यको भी वही नोटिस दे रहे हैं। संघशासनमें शरीक तो होना है, मगर प्रजाके प्रति जिम्मेदार नहीं रहना है, अैसा साझा अब नहीं निभ सकता। भारतवर्षकी प्रजा अेक और अविभाज्य है। वह अेक ही राष्ट्रकी प्रजा है। अगर यह समान अधिकार मंजूर हो, तो भले ही महाराजाका राज्य अमर रहे। और अुसमें किसीको अेतराज भी नहीं है।

देशमें आजकल बहुतसे लोग यह चाहते हैं कि देशी राज्य अब बिलकुल नष्ट हो जाने चाहियें। मैं और गांधीजी जैसे कुछ लोग अब भी पुराने जमानेके सपने देख रहे हैं और यह आशा लगाये बैठे हैं कि राजा फिर प्राचीन कालके रामराज्यके सपने सच्चे करेंगे। कांग्रेसकी भी यही नीति है; और अैसा हो तो वह भी राजाओंके साथ मित्रता रखेगी।

बड़ौदा आज कहाँ है?

यह राज्य तो अेक अनोखा राज्य है। अिस राज्यके साथ हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैसे काठियावाड़की रियासतें हिन्दुस्तानका कचरा है, घूरा है, और मध्यभारतकी रियासतें नालियोंकी तरह हैं, वैसी बात यहाँ नहीं है। अुन सबकी तुलनामें यह राज्य अच्छा है। मगर अिससे क्या हुआ? सिर्फ अिसीसे काम नहीं चलेगा।

अगर बड़ौदाको कोअी अुदाहरण लेना हो, तो मुझे आशा है कि वह दुनियाके स्वतंत्र राज्योंका अुदाहरण लेगा। जब दुनिया क्रांतिके मार्ग पर बिजलीकी रफ्तारसे आगे बढ़ रही है, तब आज बड़ौदाकी क्या हालत है? आज अुसकी जो हालत है अुसका चित्र तो परिषदमें जो भाषण हुअे अुनसे आप देख सके होंगे।

अब तो जबसे अिस राज्यकी प्रजामें चेतना आ गअी है, तबसे राज्यकी नीयत बिगड़नेके सबूत मिल रहे हैं। बहुतोंको सत्ताका नशा छोड़ना अच्छा नहीं लगता। अिस राज्यमें अेक सबसे बड़ी गन्दगी यह घुस गअी है कि यहाँ राज्यके आदमियोंको छोड़कर बाहरके आदमियोंको नौकरी दी जाती है। अपनी

प्रजाके आदमियों पर मानो अितना अधिक अविश्वास पैदा हो गया है कि अुनको रखनेसे राज्य अपने हाथसे निकल जायगा।

अिस राज्यने अंग्रेजोंकी यह नीति ग्रहण कर ली है, अिससे मुझे बहुत चोट पहुँची है। अगर मुझे अिस परिषद्का अध्यक्षपद स्वीकार करनेका प्रलोभन हुआ हो, तो अुसका मुख्य कारण यही है कि यह राज्य अब देशी न रहकर विदेशी बनता जा रहा है या विदेशीमय होता जा रहा है।

अिस राज्यमें बहुतसे बुरे काम बिना आज्ञाके हो रहे हैं। मुझे तो यह राज्य अिन्द्रवारुणिका* नामके फल जैसा लगता है। अूपरसे सुन्दर दिखाअी देता है, मगर मुझे अैसी बदबू आ रही है कि भीतरसे वह सड़ा हुआ है। यह दुर्गन्ध और सड़ाँध मिटानी है और अिस काममें मैंने आपके सहयोगकी बड़ी आशा रखी है।

आपने जब औरोंके लिअे भी जान जोखममें डाली है, तो यह तो अब अपना ही सवाल है। जिस राज्यको आज आप निभा रहे हैं और जिसके साथ अनेक सम्बन्ध रखे हुअे हैं, अुसे अगर आप अेक हो जायँ तो अेक ही धक्केमें समझा सकते हैं। अिस राज्यसे अपना जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करनेमें मुझे जरा भी मुश्किल मालूम नहीं होती।

सार्वभौम सत्ताका बहाना नहीं रहा

अब तक बहुतसे राजा कहते थे कि हम जिम्मेदार हुकूमत देनेको तैयार हैं, मगर हमारे सिर पर जो बड़ी सल्तनत बैठी है वह बाधक होती है। त्रावणकोरके दीवानने तो हाल ही में साफ तौर पर यह कह भी दिया कि सार्वभौम सत्ता अिस किस्मकी हुकूमत देनेके खिलाफ़ है। अुनके अिस स्पष्टीकरण परसे पार्लियामेण्टमें प्रश्न पूछा गया, तो वहाँ स्पष्ट रूपमें अुत्तर दे दिया गया कि सार्वभौम सत्ताको कोअी अेतराज़ नहीं और अगर प्रजाको जिम्मेदार हुकूमत देना हो, तो राजा खुशीसे दे सकते हैं।

ब्रिटिश राज्यमें कोअी भी यह बात खुले रूपमें नहीं कह सकते। आज-कल ब्रिटिश सरकारमें बड़े बड़े रेज़िडेण्ट हैं। अुनके विभागोंमें जितनी गन्दगी है, जितना पाप है, अुतना और कहीं भी नहीं है। अिस सरकारके राजनैतिक विभागमें जितनी पोल है, अुसे दुनिया भी जान सकती है। फिर भी कोअी पोलिटिकल अेजेण्ट आज खुल्लमखुल्ला नहीं कह सकता कि प्रजाको जिम्मेदार हुकूमत नहीं दी जा सकती।

---

* अेक जातिका फल जो देखनेमें जितना सुन्दर होता है, स्वादमें अुतना ही कड़ुवा होता है।

राजकोटकी प्रजासे भी आज मैं खुले रूपमें कह रहा हूँ कि आपकी माँगें सही हैं और अुन्हें प्राप्त करनेका आपको अधिकार है। आपका राजा तो अेक खिलौना है। अभी तो अुसने भी हठ पकड़ ली है कि मुझे गोरा दीवान नहीं चाहिये।

नया राजा चुन लीजिये

पिछले १५ दिनसे राजकोटमें किसीका राज्य नहीं है। राजाने दीवानको निकाल दिया है; और दीवान जा नहीं रहा है, क्योंकि वह गोरा है। प्रजाको भी समझमें नहीं आता कि वह किसका कहना माने। दीवान राजासे कहता है कि मैं न जाअूँ, तो आप क्या करेंगे? अिस तरह अगर राजाको कठपुतली बना दिया हो और अुसे दीवानको निकालनेका अधिकार न हो, तो राजा किस कामका?

अिसलिअे अब मैं राजकोटकी प्रजाको संदेश दूँगा और दस दिनका नोटिस देकर कहनेवाला हूँ कि अगर आपके यहाँ किसीकी सत्ता न हो, तो आपमें से किसीको नया राजा चुन लीजिये।

अगर राजाको दीवानको निकालनेका भी अधिकार न हो, तो वह प्रजाको क्या दे सकेगा? दीवान भी खूब चिपटा है। वह कहता है कि मुझे तो भारत सरकार वेतन पर लाअी है। अिसलिअे मुझे सरकारकी भी परीक्षा लेनी है। राजा कहता है कि भाअी, छः महीनेकी तनख्वाह ले लो, मगर चले जाओ। फिर भी वह कहता है कि मैं नहीं जाअूँगा।

जिम्मेदार हुकूमत मिलनी ही चाहिये

सार्वभौम सत्ता भी अितनी कमजोर हो गअी है कि वह यह नहीं कह सकती कि ज़िम्मेदार हुकूमत न दी जाय। कहे भी कैसे? बटलर कमेटी द्वारा प्रकाशित रिपोर्टके ४०-४१ वें पैरेमें साफ़ लिखा है कि अगर किसी रियासतकी प्रजा बहुमतसे जिम्मेदार हुकूमत माँगे, तो अुसे वह मिलनी ही चाहिये। और अिसके लिअे प्रजाको लड़नेकी, त्याग करनेकी, या बलिदान करनेकी कुछ भी ज़रूरत नहीं। अितना ही नहीं, अगर अिस प्रकार वह न मिले, तो सार्वभौम सत्ताको दिलवाना चाहिये।

मैंने तो अब दूसरी बात भी कह दी है। ब्रिटिश सरकारको अब निश्चय कर लेना है कि राज्यमें कोअी झगड़ा हो, तो वह राज्यको मदद नहीं देगी। अैसी घोषणा वह कर दे। अब सरकारकी भी यह पोल नहीं चल सकेगी।

आज मैं यहाँ आपका बन कर आया हूँ। कुछ देशी राजा अैसी बातें करते हैं कि बाहरवाले आकर हमारे यहाँ झगड़ा करते हैं। मगर अुन्हें कांग्रेसकी नीति समझ लेनी चाहिये। कांग्रेसने तो यह भी दावा किया है कि अगर किसी

राज्यकी प्रजा आज़ादीके लिअे लड़ेगी और अुस पर जुल्म होंगे, तो वह चुपचाप देखती नहीं रहेगी। अुस समय कांग्रेस अुसकी मदद ही करेगी। वे समझ लें कि ब्रिटिश भारत और देशी राज्योंकी प्रजाके बीच अब कोअी भी भेद नहीं कर सकता।

बाहरका कहनेवाला कौन है?

बड़ोदा राज्य और अुसकी भलाअीके साथ तथा अपने अनेक सम्बंधियोंके साथ मेरे अैसे सम्बन्ध हैं कि मुझे बाहरका कहनेवाला कौन है? आज सबको गलत ढंगसे शिक्षा दी जा रही है। मैं तो यह कहनेसे कभी नहीं चूकता कि आपकी अिच्छाके विरुद्ध कुछ भी कराना या खटपट पैदा करना कांग्रेसकी नीति नहीं है। लेकिन अगर देशी राज्योंमें प्रजा दुःखी हो और प्रजा खुद लड़ाअी छेड़ दे, तो कांग्रेस भरसक नम्रतासे काम लेकर राज्य और प्रजाके बीच मेल करा देगी।

आज मैं आपका सेवक बन कर आया हूँ। राज्यके सामने आपका मामला पेश करने आया हूँ और अपनी सारी शक्तिके साथ मैं अुसे राज्यके सामने रखूँगा। मगर मेरी शक्ति आपकी शक्ति पर निर्भर है। आपको यह भी याद रखना चाहिये कि मैं कोअी कमजोर मामला हाथमें नहीं लेता। मैं मानता हूँ कि जो प्रजा थप्पड़ खाकर बैठी रहती है, वह हिन्दुस्तानके लिअे अेक बोझा है।

कायरतासे काम नहीं चलेगा

बाहर तो बड़ोदा राज्य अेक अच्छा राज्य कहलाता है और कहा जाता है कि अुसकी प्रजा संतुष्ट है। अगर अुन्हें यह मालूम हो कि प्रजाके असंतोषकी बात सच है, तो वे यही पूछेंगे कि लोग जागते क्यों नहीं? वे यही समझेंगे कि बड़ोदाकी प्रजा कायर है। आप यह बात याद रखिये कि आपकी कायरताका बोझा दूसरे पड़ोसियों पर भी पड़ता है और अुसका असर दूसरों पर भी होता है। अिसलिअे आपको मजबूत बनना चाहिये। और अैसा हो तो पड़ोसियोंका काम सरल बन जायगा। यह समझ लेना चाहिये कि अब कायरतासे काम नहीं चलेगा।

लड़ना पड़े तो अुसके लिअे आपमें दृढ़ता होनी चाहिये। आपमें शक्ति न हो तो याद रखिये कि मैं अपमानको बरदाश्त कर लेने के लिअे तैयार नहीं हूँ। मैं आपका हूँ, मगर साथ ही कांग्रेसका भी अेक अदना सिपाही हूँ। कांग्रेसमें मेरा जो स्थान है, अुसे मैं भूल नहीं सकता। अिसलिअे मेरा अपमान हिन्दुस्तानका अपमान है, कांग्रेसका अपमान है। आपका किया हुआ निश्चय अेक अैसा निश्चय है, जो आपके दिलकी दृढ़ता माँगता है।

परिषदमें यह कहा गया था कि आपको और धनिकोंको त्याग भी करना पड़ेगा। मगर मैं पूछता हूँ कि आपके पास है क्या? आपके पास क्या

मकरपुराके महल-वहल हैं, जिन्हें कोअी ले जायगा? शायद दो-चार धनवान होंगे, पर वे तो बम्बअीमें जा छिपे हैं। समय आने पर मैं अुन्हें भी वहाँसे निकाल लाअूँगा।

भादरणमें बड़ी अिमारतें हैं, अिसलिअे यह भी न मान लीजिये कि यहाँ धन है। यहाँ धन होगा भी तो वह कहाँसे आया है? ये तो बाहरसे लाये हुअे रुपयेकी अिमारतें हैं। बड़ौदामें क्या खाक रखा है? और ये अिमारतें भी किसलिअे हैं? ये तो बच्चोंकी शादियोंमें, सामने वाला अिमारतें देखकर अच्छा रुपया दे जाय, अिसलिअे खड़ी की गअी हैं। मैंने तो अैसे लोग भी देखे हैं, जो अिसीका व्यापार कर रहे हैं!

मैंने अनुभव करके देखा है कि लोगोंको सीधी-सच्ची बात कहनेकी आदत नहीं। अुन्हें खुशामदकी बहुत आदत पड़ गअी है।

काठियावाड़ जाता हूँ तब मुझे यह समझना मुश्किल हो जाता है कि वे क्या कहना चाहते हैं। मगर यहाँ आप कुछ कहनेमें फेर-बदल करें तो वह मैं समझ जाता हूँ।

काठियावाड़में चमत्कार

राजकोटमें भले ही अिस समय कुछ लोग लड़ाअीमें शरीक न होते हों, मगर आज अेक भी आदमी अैसा नहीं है, जो लड़ाअीके विरुद्ध बोलता हो या विरोधमें कुछ करता हो। काठियावाड़में जहाँ यह कहा जाता था कि दो काठियावाड़ी सीधी तरह अिकट्ठा नहीं हो सकते, वहाँ भी आज चमत्कार हो गया है। राज्यको अच्छा कहनेवाला अेक भी आदमी नहीं है। जो परिषदका अध्यक्ष है, वही प्रजाका प्रतिनिधि है। राजकोटके वृद्ध मनुष्योंने और पुराने दीवानगिरी किये हुअे लोगोंने भी राज्यको साफ साफ बात सुना दी है; और वे कहते हैं कि हम मानते हैं कि अिन ५–७ वर्षोंमें राज्यका जैसा प्रबंध रहा, अुससे राज्यका न होना ज्यादा अच्छा है। आज काठियावाड़में जो अेकता हो गअी है, वह तो अेक चमत्कार माना जाता है।

खुशामदका मार्ग छोड़ दीजिये

बड़ौदामें अगर देशके प्रति प्रेम और लगन पैदा हो जाय, तो सब काम आसानीसे हो सकता है। अगर अैसा हो तो सूबाकी क्या ताकत कि वह आपको तंग कर सके? अगर आप बिलकुल सच्ची बात कहें और खुशामद छोड़ दें, तो बहुत कुछ काम हो जाय। अगर सामने कुछ कहें और पीछे कुछ और कहें, तो कुछ नहीं हो सकता। अिस तरह तो आत्माकी अधोगति होती है और वह बहुत बुरी बात है।

जिम्मेदार हुकूमतके लिअे आपको दूसरा और क्या त्याग करना पड़ेगा? अगर राज्य न माने तो लड़ना भी पड़ेगा। और मैं यह भी नहीं मानता कि झटपट सीधी तरहसे काम बन जायगा। अिसके लिअे राज्यको पछाड़ना पड़ेगा। अिस दुनियामें पछाड़े बगैर कोअी नहीं मानता। जिसके पास सत्ता, है वह अुसे प्रार्थना करनेसे नहीं छोड़ता। अुससे तो कान पकड़ कर ले लेनी चाहिये; क्योंकि वह हमारी सम्पत्ति है। आप खुशामद छोड़ दीजिये। अुसके बराबर कोअी ज़हरीला रोग नहीं है। खुशामद राजद्रोह है।

अगर राज्यकी प्रजाको दुःखी बनानेवाले कोअी हैं, तो वे खुशामदी लोग ही हैं। जहाँ राजा सालमें दस महीने विदेशोंमें रहता हो, वहाँ अुस बेचारेको सच्चा हाल कहाँसे मालूम हो? अिस राज्यमें जो अधिकारी हैं, वे भी बाहरके हैं; अिसलिअे अुन्हें सच्ची बात कहे भी कौन? कहते हैं कि महाराजा साहबकी तन्दुरुस्ती अच्छी नहीं रहती और अिस देशमें अुन्हें अनुकूल वायु नहीं मिलती। दुनियामें अैसा कोअी देश नहीं देखा गया, जहाँका राजा १५–२० वर्ष विदेशोंमें पड़ा रहे और प्रजा अुसे बरदाश्त करे।

और कोअी मार्ग नहीं

आजकल हरअेक अधिकारी अिस तरह काम कर रहा है मानो वही गायकवाड़ हो। क्या यह कहीं सुना है कि किसी राज्यकी कचहरीमें सरकारी नौकर अेक जिम्मेदार आदमीको तमाचा मार दे? अिन सब बातोंसे हमें छुटकारा पा लेना चाहिये; नहीं तो हमारी अिज़्ज़त चली जायगी और राज्यकी भी अिज़्ज़त चली जायगी। आजकल राज्यमें चारों तरफ किसानों पर दुःखके पहाड़ टूट रहे हैं। अगर किसानोंको बचाना हो, गाँवोंका पुनरुद्धार करना हो, चोरी, बदमाशी और लूट मिटा देनी हो, तो जिम्मेदार हुकूमतके सिवाय और कोअी मार्ग नहीं है। प्रजाका दुःख मिटाना हो तो दूसरा अुपाय ही नहीं।

अिस समय आसपासके ब्रिटिश अिलाके पर तो नज़र डालिये। वहाँ तो पुलिस भी आजकल रिश्वत लेनेसे डरती है। वहाँ कलेक्टरोंने भी तहसीलदारोंको हुक्म दिये हैं कि कोअी फसलका गलत अन्दाज़ न लगायें। अुस राज्यमें अगर अैसे हुक्म निकले हैं, तो वे पहली ही बार निकले हैं। आपके यहाँ तो पैदावार हुअी हो या न हुअी हो, मगर खज़ाना भरो, यही चल रहा है। पहले अंग्रेजी अिलाकेमें भी यही हाल था।

बुरी नीयतका सबूत

अिससे पहले कठोरमें हुअी परिषदने प्रस्ताव किया था कि किसानोंकी स्थितिके सम्बन्धमें जाँच करके रिपोर्ट करनेके लिअे कार्यकर्ता देहातमें जायँ। अिस पर अिस राज्यके अधिकारियोंने हुक्म जारी कर दिया कि देहातमें कोअी

न जाय। तो कहाँ जायँ? बड़ौदा? वहाँ तो बहुतसे लोग बेकार बैठे रहते हैं। अुनके साथ क्या करना है! जब राज्यने यह हुक्म जारी किया, तो अुसकी बुरी नीयतका सच्चा सबूत मिल गया।

अब आपके सामने यह सवाल खड़ा होता है कि प्रजामंडलको कायम रखा जाय या राज्यको। अधिकारी कहते हैं, ये तो सब बाहरवाले हैं और अिसलिअे अिनकी नहीं सुनना चाहिये। हम कहते हैं कि न सुनना हो, तो कानोंमें डाट लगाकर बैठे रहो। बारडोलीमें भी पहले हम सबको बाहरके बतानेवाले खुद भी बाहरके ही थे। पहले वे हमारा कहा हुआ न सुनते थे और न मानते थे, क्योंकि सरकार अुनकी पीठ पर थी। परन्तु जब हुकूमत झुकी तब हमारी बात सच्ची साबित हुअी और मालूम हुआ कि दूसरोंको बाहरके बतानेवाले खुद ही बाहरके थे।

बारडोली जैसा कीजिये

और वह बारडोलीका प्रदेश तो बड़ौदाके आसपास ही मौजूद है। वहाँके लोगोंने हिजरत की और आपके यहाँ आये, यह तो बड़ौदा, नवसारी और पल्साना वगैराके लोगोंने देखा है। ये लोग अब क्या करें, यह मुझे कहनेकी जरूरत क्यों होनी चाहिये? फिर भी मैं कहता हूँ कि आप भी बारडोली जैसा कीजिये।

नाटकिया राजाको क्या अधिकार?

अिंग्लैण्डका राजा तो अेक वैधानिक राजा है। अुसके पैरों पड़नेवाले, अुसके चरण चूमनेवाले ये राजा कहते हैं कि हम किसीके प्रति जिम्मेदार नहीं! आप तो सब नाटकिया राजा हैं। जब असली राजा अैसा नहीं कह सकता, तो आप जैसे नाटकिया राजाओंको अैसा कहनेका अधिकार ही क्या है?

अैसा कहा जाता है कि राजा तो अग्निकी संतान हैं। मगर आज तो अग्निकी संतान कोयले जैसी निकलती है। अग्निमें पड़े और कोयला न बने तो मानूँगा कि अग्निकी सच्ची संतान है। अैसा करने लगें तब तो कोयलेका अेक टुकड़ा भी हाथ नहीं आयेगा।

यहाँ संखेड़ा मेवासके कुछ किसान आये हैं। अेक छोटेसे संखेड़ामें छोटे-छोटे सत्ताअीस जागीरदार हैं। मैं अुनसे कहता हूँ कि वे आपके मालिक कैसे! आप अेका करके अुन्हींके मालिक बन जाअिये न!

संगठन कीजिये

आजसे दस वर्ष पहले रास और बारडोलीके लोगोंसे भी मैं यही कहता था कि आप डरिये नहीं। आपमें अेकता होगी तो द्वार खटखटाती हुअी आपकी ज़मीनें वापस आ जायँगी। फिर भी अुनमें से कुछ लोग सीधे नहीं

रहे। अगर सीधे रहे होते तो दस महीनेमें ही अुन्हें ज़मीनें वापस मिल जातीं। आज वही ज़मीनें दरवाज़ा खटखटाती हुअी अुनके पास आकर कह रही हैं कि हमें ले लो।

बड़ा कहलानेवाला गारडा भी मन्त्रीके पास अर्ज़ी दे आया। चार-पाँच महीने पहिले अुसे अिस ज़मीनके ३ लाख ५५ हज़ार रुपये चाहिये थे। महीने भर पहले समझौता करके ३० हज़ारमें देनेकी तैयारी दिखाअी और अब क्या लेगा? ७ हज़ारमें सारी ज़मीन लौटा रहा है। अिनकार करता तो अितना भी न मिलता। यह तो गांधीजीकी लड़ाअी है, अिसलिअे अितना भी मिल गया। नहीं तो बरबाद नहीं हो गया होता? अिसलिअे मैं औरोंसे भी कहता हूँ कि देखो, अब हमारे बीचमें मत पड़ना।

अिस तरह बाधक बननेवाले लोग दूसरे देशोंमें होते, तो लोगोंने कभीसे गोलीके शिकार बना दिये होते। अभी तक ज्यादातर राजद्रोह करनेवालोंमें किसीने स्वार्थके लिअे राजद्रोह नहीं किया। स्वार्थकी खातिर राजद्रोह करनेवालोंने नरक-कुंड भरा है। आप याद रखिये कि अगर प्रजामें संगठन होगा, तो छीनी हुअी जायदाद वापस दिये बिना राज्यका छुटकारा नहीं।

परिषद्‌में आपका दूसरा प्रस्ताव धनीआवीके शिकारगाहके बारेमें हुआ है। साठ-साठ बरससे वहाँकी प्रजा दुःख सहन कर रही है। धनीआवीके शिकारगाहसे ज़ोरकी आवाज लगाअी जाय, तो मकरपुराके महलोंमें सुनाअी देती है; फिर भी मानो कोअी सुनता ही नहीं! जानवर रखना और फ़सल बरबाद कराना, यह कैसे हो सकता है? महाराजा साहब भी अब तो बूढ़े हो गये हैं। अुन्हें अब कोअी शिकार नहीं करना है। अगर यह जगह वाअिसरॉय और गवर्नरोंके शिकारके लिअे रखनी हो, तो हम वाअिसरॉयसे भी कह दें कि अुसके कारण अितना अधिक पाप हो रहा है। अैसी आवाज़ अुठायें कि सारी दुनिया अुसे सुन ले। किसानोंकी स्थितिकी जाँच करनेका हमारा पहला हक़ है। वह हक़ हम कैसे छोड़ दें?

हमने दूसरे प्रस्ताव नहीं किये; क्योंकि बहुतसे प्रस्ताव करनेमें कोअी सार नहीं है। प्रजामंडल प्रजाकी संस्था है और राज्यको भी अुसके साथ सभ्यताका बरताव करना चाहिये। अगर हम अपनी शक्तिका सच्चा प्रदर्शन करके दिखायेंगे, तो गाड़ी सीधी तरह आगे चलती रहेगी।

आप अितने अधिक लोग यहाँ आये हैं, अिसलिअे आपको देखनेका मौका मिला, तालीम भी मिली और राज्यमें जो असंतोष फैला हुआ है, अुसकी भी जानकारी मिली। आप सब गाँव-गाँव घूमकर परिषदका संदेश पहुँचाअिये और सबको प्रजामंडलके सदस्य बनाअिये। अगर आप सदस्य नहीं बनायेंगे, तो

प्रजामंडल भी क्या कर सकता है? आज आठ प्रांतोंकी बागडोर कांग्रेसके हाथमें है, अिसका कारण यही है कि लोगोंका अुसके प्रति विश्वास और प्रेम है।

महाराज जीवन-संध्याको अुज्ज्वल करेंगे?

मुझे अुम्मीद है कि आप सब परिषदका संदेश गाँव-गाँव पहुँचायेंगे। मुझे अुम्मीद है कि हमारे महाराजा, जिन्होंने अेक समय पुराने जमानेकी याद दिलाअी थी, और हिन्दुस्तान भरके राजाओंमें पहली बार प्रजाको जिम्मेदार हुकूमत देनेकी ओर कदम अुठाया था, अब अपनी जीवन-संध्याके समय भी अुसी कीर्ति और अुसी सुगंधको अपने साथ ले जायँगे। जिन्होंने अेक बार अुत्तम व्यवस्थासे प्रजामें आशा जगाअी थी, वे अपने अंत समयमें दुनियाको यह कहनेका मौका न देंगे कि प्रजा और महाराजा आपसमें लड़े। हम अीश्वरसे अिसके लिअे प्रार्थना करें।

आजकल आसपासके राज्यके अधिकारी राज्यकी प्रतिष्ठा खो रहे हैं। अब वे समझ लें कि वे दिन चले गये है, जब प्रजाकी अिच्छाके विरुद्ध कुछ भी हो सकता था। जैसे ब्रिटिश भारतमें अधिकारी लोग सेवककी भावनावाले बनते जा रहे हैं, वैसे ही अिस राज्यके अधिकारी भी हो जायँ। आजकल कुछ अधिकारी अिसे गुजराती-मराठोंके बीचकी बात बताते हैं। मगर यह तो आपसमें लड़ा देनेकी चालबाज़ी है। प्रजाके अुत्तरदायी शासनमें भले ही सारे नौकर मराठे रहें!

कड़े कर

पुराने जमानेमें भाट-चारण होते थे, मगर आजकल वे नहीं हैं। अुनकी जगह आजकलके कुछ अखबारोंने ले ली है। अुदाहरणके लिअे बड़ौदाके 'सयाजीविजय' ने छापा कि सरदारने माणसा राज्यसे बड़ौदाकी तरह प्रति बीघेके हिसाबसे लगानकी पद्धति जारी कराअी। अिस बातसे लोगोंमें गलतफ़हमी पैदा हो गअी। अिसका अर्थ यह नहीं है कि बड़ौदेमें ज़मीनका लगान ज्यादा नहीं है। जिसे हक़ न हो, सत्ता न हो और जो मनमाने ढंगसे रुपया वसूल करके खाता हो, अैसे किसी रजवाड़ेसे बड़ौदाका अुदाहरण देकर प्रति बीघा लगानकी दर मंजूर करानेसे, यदि अुस रजवाड़ेकी प्रजा खुश हो और मैंने अैसा कराया हो, तो अिसमें बड़ौदा राज्यकी तारीफ नहीं है। मैं तो कहता हूँ कि अंग्रेजी अिलाकेसे आपके यहाँ लगान ज्यादा है। आज तो ब्रिटिश भारतके किसानोंकी भी यह माँग है कि लगानमें ५० फ़ीसदी कमी की जाय। बड़ौदा राज्यको तो अिससे सबक लेना चाहिये।

अब सबको यह समझ लेना चाहिये कि मौजूदा श्रमजीवी युगमें यह नहीं हो सकेगा कि मेहनत कोअी करे और खाये दूसरा ही। अिस राज्यकी आमदनी

भी ज्यादा है; फिर भी ७५० रुपये पर आयकर लिया जाता है। अंग्रेजी अिलाकेमें दो हजार तक कुछ लिया ही नहीं जाता। बड़ौदाको तो वहाँका अुदाहरण लेना चाहिये। जहाँ अितना कर लिया जाता हो, वहाँ व्यापार करने भी कौन आवेगा?

शराबकी दुकानें बंद कराअिये

अहमदाबादमें शराबबंदी शुरू करनेके बाद मंत्रियोंने बड़ौदा राज्यको सरहदके शराबखाने बंद करनेके लिअे लिखा। मगर मंत्री मुझे बताते हैं कि बड़ौदा राज्यमें कोअी नहीं सुनता। जब हमने ब्रिटिश हदमें शराबबंदीका आंदोलन शुरू किया, तब हमने यह माना था कि बड़ौदा अुसमें मदद करेगा। मगर आजकल तो लोगोंको बड़ौदेकी हदमें मुफ्त मोटरमें ले जाकर शराब पिलाअी जाती है। बंबअी सरकारने जब बीस लाखकी आमदनी छोड़ दी, तब बड़ौदा अुसका व्यापार करना चाहे, यह कैसे हो सकता है? वहाँ झगड़े होते हैं, फिर भी राज्य कुछ नहीं करता।

अिस स्थितिमें बड़ौदाकी प्रजाका भी यह फर्ज है कि अुसे अिन शराबखानों पर पहरा लगाकर अुन्हें बन्द कराना चाहिये।

राज्योंकी सुरक्षा किसमें?

आजकल कुछ राज्य अपनी सुरक्षाके लिअे अितने चौकन्ने हो गये हैं कि अुन्होंने अमेरिका और अिंग्लैंड जैसे युरोपके देशोंमें अपनी अिमारतें रख छोड़ी हैं। मगर पिछले भगदड़के जमानेमें अुनकी ये जायदादें भी चली गअी हैं। अुन्हें समझना चाहिये कि अुनकी सुरक्षा भागदौड़ करनेमें नहीं, बल्कि प्रजाके प्रेम और विश्वासमें है; और अिसका सही अुपाय प्रजाको जिम्मेदार हुकूमत देना है। राज्य कितना ही अच्छा क्यों न हो, तो भी अब अुसके गुणगान या निंदा करनेका अवकाश नहीं है। अब प्रजाको किसी भी तरह शासन करनेकी भूख लगी है। आप सब यहाँसे निश्चय करके जाअिये कि हमें प्रजामंडलकी माँग स्वीकार करानी है, अुस पर अमल कराना है। आप यह प्रार्थना कीजिये कि महाराजा और हमारे बीचका संबंध जैसा था वैसा ही रहे।

राज्यकी सुरक्षा प्रजाके विश्वास पर है। हमें मताधिकार मिल जायगा, तो अिससे राजपरिवारकी वफ़ादारीमें कोअी कमी नहीं आयेगी, न आअी है और न आनेवाली है। मैं भगवानसे प्रार्थना करता हूँ कि वह महाराजाको वृद्धावस्थामें सद्बुद्धि दे और आखिरी अवस्थामें वे प्रजाका प्रेम संपादन करें।

८७

राजकोट कांड

१

[बबओमें काठियावाड़ प्रजामंडलकी तरफसे हुओ सभाके सभापति पदसे दिया गया भाषण ।]

पिछली बार जब हम यहाँ दाना बंदर पर मिले थे, तब श्री ढेबरभाओी, जो आजके राजकोटके राजा माने जाते हैं और जिन्होंने राजकोटकी प्रजाके हृदय पर साम्राज्य जमा लिया है, कुछ समयके लिअे हमारे बीच रह गये थे। जिस दिन वे छूटे, अुसी दिन वे हवाओी जहाजसे यहाँ आ गये थे और राजकोटकी हकीक़त हमें सुनाओी थी। अुसके बादकी घटनाओें आपने अखबारोंसे जान ली होंगी।

राजकोटकी कल तककी घटनाओंमें कोओी खास जानने लायक बात नहीं थी। यह अनिश्चित था कि राजकोटमें सत्ता किसकी है — ठाकुरकी, गोरे दीवान केडलकी या पुराने दीवान वीरावालाकी! अब तक अिन तीनोंमें यह देखनेके लिअे दावपेंच चलते रहे कि सत्ता किसकी है। कल पुराने दीवानको तीन महीनेकी छुट्टी दे दी गओी है और यह हुक्म हो गया है कि वह फिरसे दीवानगिरी न करे।

और सरकारका अेजेंट रेज़ीडेंट किसके पक्षमें है — गोरे दीवान केडलके, पुराने दीवान वीरावालाके या ठाकुर साहबके — अिसका भी किसीको पता नहीं लगता। अितना मालूम हुआ है कि ठाकुर और पुराने दीवानका अेक ही दल है और अेक ही रहेगा।

जब तक राजकोटकी प्रजाको राजा पर अितना अधिकार न मिल जाय कि प्रजाको पूछे बिना राज्य कुछ भी न कर सके, तब तक राजकोटमें अंधेरगर्दी ही रहेगी।

भारत सरकारका पोलिटिकल विभाग सारी दुनियामें सबसे गंदा महकमा है। परन्तु अुस विभागकी बातें बाहर नहीं आतीं। दैवयोगसे कभी कोओी बात बाहर आती भी है, तो वह गलत ही होती है। रेज़ीडेण्ट गिब्सनको चौबीस घंटेमें तबादलेका हुक्म मिला है और अुसका सेक्रेटरी हवाओी जहाज़से शिमला गया है, यह तो गप्प ही समझिये। अैसी बातें मत मानिये।

अिसमें फायदा नहीं है। अुसने कितना ही घोटाला किया हो, तो भी सरकार तो अुस पर परदा ही डालेगी।

हमें तो यह जानना है कि राजकोटकी प्रजामें स्वयं कितनी और कैसी ताकत है! अुसमें ताकत होगी तो सभी देखते रह जायँगे। प्रजाकी ताकतके सामने दुनियाकी जबरदस्त सल्तनतको सिर झुकाना पड़ा, तो बेचारे राजकोटके ठाकुरकी क्या बिसात है! मगर अुसे अैसा खयाल हो गया दीखता है कि प्रजा राज्यमें जो हिस्सा माँग रही है, अुसे देनेकी अपेक्षा फकीरी लेना ज्यादा अच्छा है। अुसने फकीरी ली होती तो अच्छा होता, ताकि वह कोअी साधु-महाराज बनता।

जब मौजूदा राजकोट ठाकुर अेक छोटा बच्चा था, अुस वक्त अुसके दिलमें राजकोटकी प्रजाके लिअे कुछ करनेकी अुमंग और भावना थी। अुसके पिता लाखाजीराजने तमाम प्रजाजनोंको मताधिकार दिया था, जो किसी राजाने अपनी प्रजाको नहीं दिया था। राजकोटमें धारासभा थी। अुस धारासभामें मज़दूर दल था। राजकोटका ठाकुर और अुस समयका बालक तब अुस मज़दूर दलके बीच बैठना चाहता था। अैसे सोने जैसे लड़केको चारों तरफसे घेरे हुअे कुछ व्यक्तियोंने अुल्टी शिक्षा देकर काले कोयले जैसा बना दिया और अुसकी दुर्दशा कर दी है।

यह नहीं मानना चाहिये कि राजकुटुम्बमें पैदा होनेसे ही कोअी राजा हो जाता है। वातावरण अच्छा हो, सच्ची शिक्षा मिली हो और राजधर्म सिखाया गया हो, तो ही वह 'राजा' होता है। लेकिन राजकोटका ठाकुर तो प्रजाका मुँह ही नहीं देखता। जब प्रजाने खूब शोर मचाया कि 'ठाकुरके तो दर्शन ही नहीं होते', तब अभी-अभी अुसने प्रजाको देखना सीखा है।

दीवान अपने लड़केको दीवानका पद सुपुर्द कर देता है और खाटमें पड़े-पड़े शासन चलाता है। अेकके बाद अेक ठेके दिये जा रहे हैं। अुन सबके खिलाफ़ आवाज़ अुठानेके लिअे ढेबरभाअी पैदा हुअे और अुन्होंने शोर मचाया, तो अुन्हें पकड़ लिया गया। अुनके पकड़े जानेके साथ ही राजकोटने निश्चय किया कि अैसा काम करना है, जिससे दुबारा ये सब बातें न होने पायें। मैंने सलाह दी कि अन्धेर और जुल्म दूर करनेके लिअे ठाकुरके आसपासके अधिकारी हों, अेजेन्सी हो, कोअी बड़ी सल्तनत हो, या कोअी भी हो, अुनके साथ किसी भी कीमत पर दो-दो हाथ करने ही पड़ेंगे। दूसरे किसी राज्यको भी यदि प्रजाका विरोध करनेकी चटपटी लगी हो, तो वह भी भले ही आ जाय। अैसा निश्चय करके ही यह काम हाथमें लिया है कि अन्धेर और जुल्म कितनी भी कुरबानी करके भी मिटाना है और अिसमें मीनमेख नहीं हो सकती।

ढेबरभाअीके जानेके बाद तो वीरावाला, केडल और ठाकुर अपनी सत्ताका पता न होनेसे आपसमें दावपेंच लड़ाते रहे। वे जानते थे कि प्रजा परिषदके अध्यक्ष ढेबरभाअी हैं, परन्तु अुनको छोड़कर दूसरोंको मंत्रणा करनेके लिअे बुलाया। अुन्होंने साफ-साफ कह दिया कि हम तो अंकरहित शून्य हैं। तब ढेबरभाअीको बुलाया और सिर्फ बातें ही कीं। मैंने ढेबरभाअीसे कहा कि अभी तक वे तीनों हवामें अुड़ रहे हैं, अुनके पैरोंके नीचे ज़मीन नहीं है। जिस दिन अुन तीनोंका कुछ तय हो जायगा, अुस दिन आप जेलमें होंगे। राजकोटमें अितनेसे त्यागसे स्वतन्त्रता मिल जाय, तो वह टिकेगी नहीं। अैसी स्वतन्त्रताका क्या मूल्य! हमें तो अैसा काम करना है कि कोअी भी राजा अपनी प्रजाके सामने कभी सिर न अुठा सके।

थोड़े दिन झगड़े चलते रहे और अुन तीनोंका फैसला हो गया। पुराने दीवानको निकाल दिया गया। पुराने दीवानको निकालनेके बारेमें प्रजा परिषदमें प्रस्ताव आनेवाला था, मगर यह तो मरे हुअेको मारनेकी बात थी। मैंने कहा कि यह सोचिये कि राजा कौन है और यह देखिये कि राज्य प्रजाकी सम्मतिसे चलता है या नहीं।

राजकोटके पुराने दीवानने अैसा कहा बताते हैं कि राजकोट छोड़नेसे पहले राजकोटको तहस-नहस कर डालूँगा। अैसे घमण्डी तो रावणसे लेकर आज तक कितने ही हो गये। अैसे मच्छरोंकी गिनती ही क्या है! राजकोटके तहस-नहस होनेसे पहले कअी राज्य तहस-नहस हो चुके होंगे।

वह गोरा गुलाम छः महीनेके १५ हज़ार रुपयोंके लिअे अितना दमन क्यों कर रहा है? ठाकुर को तो अुसका मुँह देखना भी अच्छा नहीं लगता। वह तो ठाकुर पर जबरन लाद दिया गया है।

पुराने दीवानके दो प्यादे राजकोटकी चार आदमियोंकी कौंसिलमें रख दिय गये। अुन सबने ढेबरभाअीको पत्र लिखा कि आप कौंसिलके पास आअिये। ढेबरभाअीने सूचित कर दिया कि हम तो राजासे बात करेंगे, कौंसिलको हम नहीं जानते। परसों जब अुनका टेलीफोन मिला, तब मैंने कह दिया कि अब अपना बिस्तर बाँध लीजिये और कल सुबह ही अुनकी गिरफ्तारी हो गअी। कल हुक्म हो गया कि सभाअें न की जायँ, प्रदर्शन न किये जायँ। राजकोट जैसे छोटेसे राज्यमें १४४ वीं धारा घोषित कर दी गअी — मानो कोअी बड़ी सल्तनत चलानी है। राज्यका बहिष्कार करनेके लिअे सवेरेसे ही राजमहलके सामने पिकेटिंग शुरू हो गया।

जेलखानोंमें मौतकी सजा पाये हुअे कैदियोंको फाँसी देनेके लिअे कैदियोंमें से जल्लाद चुने जाते हैं। फाँसी देनेके लिअे अुन्हें ५ रुपये मिलते हैं और कुछ

दिनकी सजा माफ कर दी जाती है। मालूम होता है कि राजकोट राज्यने कुछ आदमी रखे हैं, जिन्हें ठीक अैसा ही समझना चाहिये। अुन्होंने १२ घंटेमें राजकोटके लोगोंकी पीठ पर ११–११ बार लाठीके प्रहार किये, बहुतसी बहनोंके सिर फोड़ दिये, बहुतसे लोग बेहोश हो गये, अनेकों घायल हुअे और खूनकी धाराअें बह निकलीं।

कल राजकोटमें राक्षसोंका राज्य था। अुस राक्षस राज्यका प्रजाने सामना किया। अुसमें राजकोटकी प्रजा सीधे मार्गसे हिली नहीं और डरी नहीं। अिसीलिअे आप अुसे बधाअी देनेके लिअे अैसी विराट सभामें अिकट्ठे हुअे हैं।

अगर देशी राज्योंकी प्रजा अिसी तरह लड़ेगी, तो अुसे हरा सकें अितने राक्षस भारतमें हैं ही नहीं। राजकोटमें राक्षसी अवतार पैदा हुआ है, परन्तु राजकोटकी प्रजा मनमें रोष रखे बिना अपना काम शांति और अहिंसासे करती रहेगी, तो वह थोड़े ही दिनका है।

मैं जब राजकोट परिषदमें गया था, तब तो कामके लिअे थोड़ेसे आदमी भी मुश्किलसे मिलते थे। परन्तु आजकल तो राजकोट पर अीश्वरकी अैसी कृपा हुअी है कि कल सुबह तक पकड़े गये ग्यारह डिक्टेटरोंमें हरअेक नाम अैसा है, जिसे सुनकर खुशी होती है।

मुझे बहुतसे लोग पूछते थे कि बैरिस्टर चूड़गर कभी जेलमें जायेंगे? लेकिन चूड़गर जैसे भी जेलमें चले गये। कोअी कहे कि मैं जेलमें नहीं जाअूँगा, तो अुसे भी जाना पड़ता है।

राजकोटमें अेक भी आदमी राज्यकी तरफ नहीं है। कितने दिन तक लाठियाँ मारेंगे? अेक दिन, दो दिन . . . मगर तीसरे दिन तो राक्षसोंके हाथ ही टूट जायेंगे। लाठी मारनेवालोंको कोअी सामनेसे पत्थर मारे, लाठी मारे और गाली दे, तब अुनके भीतरका राक्षस अुत्तेजित होता है। लेकिन सामना किये बिना मार खाते रहें, तो अुनमें अीश्वरी भाव पैदा होता है। यही सत्याग्रहका रहस्य है।

राजकोटके अिन अत्याचारोंसे सिर्फ राजकोटकी ही नहीं, परन्तु सारे काठियावाड़की समस्या तेजीसे हल हो रही है। राजकोटके प्रजाजनों पर पड़ी हुअी लाठियाँ राजकोटके सिंहासन पर ही पड़ी हैं। अेक दिन अैसा आयेगा, जब राजकोटका राजा प्रजाके सामने झुकेगा और आँसू बहायेगा। आज राजकोटकी बहनों पर जिसने लाठियाँ बरसाअी हैं, वह रास्ते लग गया होगा। और अेक दिन अैसा आयेगा, जब प्रजाके पास सत्ता आयेगी और अुस वक्त अुसे राजकोटकी हदमें घुसनेका भी अधिकार नहीं रहेगा। केडलने जो बयान प्रकाशित किया था, अुसका अर्थ मैं स्पष्ट करता हूँ। अुसने कहा था कि 'अेक सज्जन

सहमत नहीं थे।' वे सज्जन जेलमें बैठे हैं, क्योंकि वे अेकका अंक थे और दूसरे शून्य थे। 'बाहरसे डोर हिलानेवाले' से मतलब मुझसे था। मगर मैं अुससे कह देता हूँ कि मेरे बिना राजकोटकी समस्या कभी हल नहीं होगी। मैं बता दूँगा कि मैं क्या क्या करनेवाला हूँ। मैं तो बाहरका नहीं हूँ, मगर तुम ५ हजार मील दूरसे आये हुअे हो। तुम्हें ही अन्तमें जाना पड़ेगा। राजकोटका क्या अर्थ? राजकोटमें तो लाखाजीराजने राज किया है और कबा गांधीने दीवानगिरी की है। अुस राजकोटसे तुम्हें अिज्जत खोकर वापस भागना पड़ेगा! मुट्ठी भर राजकोट सारे हिन्दुस्तानको हिला डालेगा और ठाकुरकी अक़ल ठिकाने ला देगा। हिन्दुस्तानके राजा सावधान हो जायँ। अगर वे सार्वभौम सत्ताके जोर पर कूदते हों, तो वे जान लें कि सार्वभौम सत्ता बीचमें पड़ेगी तो अुसकी भी हड्डियाँ ढीली हो जायँगी।

कल सवेरे राजकोटके समाचार पढ़कर मैं नाच अुठा। कल सुबहसे मैं तो रसके घूँट पीने लगा हूँ। राजकोटमें जो कुछ हुआ अुससे मुझे लगा कि सच्ची लड़ाअी अब शुरू हुअी है। अधिकार हजम करनेके लिअे जब तक पूरी कीमत न चुकाअी जाय, तब तक अगर अधिकार मिल भी जाय, तो अुसे गँवा बैठेंगे। राजकोटकी प्रजा आज थोड़ा सा लेकर खुश हो जाय, तो राजकोटके किसानोंने जो आशाअें बाँधी है, वे कैसे पूरी होंगी?

कअी झगड़ोंके बाद राजकोटके सत्ताधारी जिम्मेदार हुकूमतके बजाय प्रजाको सिर्फ म्युनिसिपेलिटीकी सत्ता देना चाहते थे। प्रजाको अुन्हें कह देना चाहिये कि गलियाँ और पाखाने आप ही साफ कराअिये न! हम क्या अैसी सत्ताको आग लगायें? प्रजाको तो राजकोटका राज्य करना है। अगर यह खयाल रखते हों कि राजकुटुम्बमें पैदा होनेवालोंको ही यावच्चन्द्रदिवाकरौ राज्य करनेका हक़ है, तो अितिहास पढ़कर देख लीजिये। राजा लोग प्रजाकी सम्मति प्राप्त करके, प्रजाको खुश रख कर रहें, तो हिन्दुस्तानके लोग राजाओंका जड़मूलसे नाश करना नहीं चाहते। मगर राजाओंको अितना तो समझ ही लेना चाहिये कि प्रजा 'बापजी! बापजी!' करती थी, वह जमाना कभीका चला गया।

राजकोटकी प्रजाने जो संकट सहन किये हैं, अुनसे मुझे खुशी होती है। मगर हमारा धर्म क्या है? अिसका क्या सबूत है कि हम राजकोटकी मदद पर हैं! पिछली बार मैंने राजकोटकी मदद पर खड़े रहनेकी तैयारी रखने और अुस बारेमें विचार कर लेनेकी बात कही थी। मगर आज तो फैसला कर डालना है। जिन्हें माताकी अिज्जत प्यारी हो, अुन्हें तो तैयार हो ही जाना चाहिये। मुझे अैसे आदमियोंकी ज़रूरत है, जो अुसी गाड़ीसे राजकोट जानेके

लिअे तैयार हों, जिस गाड़ीमें जानेके लिअे मैं कहूँ। राजकोटके अधिकारी तो दो ही काम करते हैं, अेक जेल भरनेका और दूसरा लाठी चार्ज करानेका। जेल तो भर गअी है। अब यह देखना है कि लाठी कब बन्द होती है।

राजकोटकी प्रजाको मेरी तो यही सलाह है कि वह राज्यके अेक भी अधिकारीके साथ, राज्यके किसी भी नौकरके साथ या राजाके साथ किसी भी तरहका थोड़ा भी सम्बन्ध न रखे। दरबारगढ़में मुकदमे चल रहे हों या राज्यके साथ कोअी भी सम्बन्ध हो, तो वह सब छोड़ दीजिये। राजकोटका ग्रहण मिटा कर व स्नान करके जब हम राजकोटमें प्रवेश करेंगे, सब अिन सबका फैसला निश्चिन्ततासे करेंगे। खुद राजकोटका ठाकुर केडलको लेकर शहरकी गलियोंमें मोटरमें गश्त लगाये या सवारी निकाले, तो भी आप अुसे देखने न जाअिये। घरोंके दरवाजे बन्द करके बैठ जाअिये। राजकोटकी प्रजाके पास यही अेक महान मंत्र है। दरबारगढ़ पर पिकेटिंग करना पड़े, तो अुसमें राजकोटकी प्रजाकी शोभा नहीं है।

राजकोटको मुझे जो संदेश भेजना है, वह तो मैं भेज ही दूँगा। भावनगर और ध्रांगध्राकी प्रजाअें भी तिलमिला रही हैं। अुनसे मैंने कहा है कि अभी आप अपना पाट न बिछाअिये। राजकोटकी दावत पूरी हो जाने दीजिये। राजकोट पर नज़र रखिये और सारी शक्ति अभी राजकोटमें लगा दीजिये।

सब भाअियोंको अपनी शक्तिके अनुसार धन और मनुष्योंसे राजकोटको मदद देनी है। राजकोट मिल तो बन्द हो गयी है। बिजली-घरकी भी लगभग यही हालत है। और अिजारे भी मर-से गये हैं। अिस प्रकार राजकोटके सत्ताधारी यदि प्रजाकी बात नहीं मानेंगे, तो राज्यको दिवाला निकालना पड़ेगा।

प्रजाके बिना राजाकी कोअी हस्ती नहीं है। राजकोटके राजाके सलाहकार समझ लें कि अब प्रजाकी लड़ाअी बच्चोंका खेल नहीं रही। राजकोटमें बहे हुअे खूनकी अेक अेक बूँदसे अनेक शहीद पैदा होंगे और प्रजाजनोंके अेक अेक बूँद खूनका हिसाब माँगेंगे।

काठियावाड़ियोंसे मेरी अेक प्रार्थना यह है कि अभी और किसी तरफ़ भी ध्यान न बटाअिये। पहले राजकोटकी समस्या हल हो जाने दीजिये, बादमें आपकी समस्यायें ज़्यादा आसानीसे हल हो जायँगी। अिस संग्रामका फैसला तभी होगा, जब हमारी सारी माँगें पूरी हो जायेंगी। राजकोटके अिस संग्रामने सारे हिन्दुस्तानका ध्यान खींचा है।

राजकोट काठियावाड़का केन्द्र है। राजकोटमें काठियावाड़का सत्व है, वह काठियावाड़की नाक है। राजकोटके संग्राममें काठियावाड़की अिज़्ज़तका सवाल

है। आठ करोड़की गुलामीकी लड़ाअी वहाँ लड़ी जा रही है। अेक अेक लाठीसे राजकोटकी गुलामी टूटती जा रही है।

आज राजकोटमें वफ़ादारी हो, तो वह अेक ही आदमीके प्रति है; और वह आदमी ढेबरभाअी है। और किसी भी आदमीके लिअे राजकोटमें वफ़ादारी नहीं है।

राजकोट प्रजा परिषदकी बम्बअीकी समितिको रुपया अिकट्ठा करनेका काम शुरू कर देना चाहिये और अुसमें सभीको खुशी और अुदारतासे अपना चन्दा देना चाहिये।

मैं काठियावाड़की अिज्जतको सुशोभित करनेवाले राजकोटके प्रजाजनोंको मुबारकबाद देकर अीश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि वह राजकोटको जो चाहिये, वह जल्दी दे और आपको अपना धर्म समझावे।

जन्मभूमि, १२-११-१९३८

२

[ता० २१-११-१९३८ को अहमदाबादमें दिया गया भाषण।]

आप सब आज मुझसे राजकोटका अितिहास सुननेके लिअे अिकट्ठे हुअे होंगे। मैं बहुत वर्षोंसे काठियावाड़की समस्या हल करनेकी कोशिश कर रहा था, और कअी बार निराशा भी मालूम होती थी। यह सूझ नहीं पड़ता था कि कहाँ पैर रखा जाय। मेरी तो अेक आदत पड़ गअी है कि जहाँ पैर रख दिया वहाँसे पीछे न हटाया जाय। जहाँ पैर रखनेके बाद वापस लौटना पड़े, वहाँ पैर रखनेकी मुझे आदत नहीं। अँधेरेमें कूद पड़नेका मेरा स्वभाव नहीं है। मैं कुछ समयसे देख रहा था कि राजकोट या काठियावाड़में कोअी अैसा आदमी मिले, जिस पर मेरी निगाह टिके और जिसके भरोसे मैं काम शुरू कर सकूँ। वैसे राजकोट तो वह राज्य है, जहाँ कबा गांधीने दीवानगिरी की है, जिनके पुत्रने दुनियाभर में हिन्दुस्तानको मशहूर कर दिया है और स्वाभिमानका पाठ पढ़ाया है। अुस काठियावाड़का ऋण कैसे चुकाया जाय? अुस ऋणके लिअे तो चिन्तामें बहुतसे जागरण भी करने पड़े हैं, और अन्तमें अीश्वरकी कृपा हुअी और अीश्वरने वह ऋण अुतारनेका रास्ता बताया है।

मुझे लाखाजीराजके राजकोटकी वह बात याद आती है, जब लाखाजीराजने गांधीजीको निमंत्रण देकर मेरे और गांधीजीके बीचमें बैठकर भाषण दिया था। अुन्होंने तो यहाँ तक कहा था कि जब दूसरे लोग गांधीजीके शिष्य हो सकते हैं, तो वह सम्मान मुझे क्यों न मिले! अितने साफ दिलवाला और स्वतंत्रता प्रेमी वह राजा था।

मगर कालचक्र कुछ अैसा घूमा कि लाखाजीराज चल बसे और अिस राजाको मूर्खोंके राजकुमार कॉलेजमें भेज दिया गया। अुस कॉलेजमें तो अिन्सानको हैवान बनाया जाता है। वहाँ जिसे हर तरहकी शराबके नाम आते हों और पीना भी आता हो, वह होशियार माना जाता है। वहाँ यह सिखाया जाता है कि रैयतसे कैसे अलग रहा जाय।

मगर अब सब समझ गये हैं कि यह झूठा तमाशा आगे नहीं चलेगा। और अिसलिअे अुसे बन्द करनेका विचार हो रहा है। मगर अिससे भी बुरी जो बात है, वह अभी बन्द नहीं हो रही है। यहाँ जानवर जैसे बनानेके बाद अुन्हें अिंग्लैण्ड ले जाया जाता है। मैंने तो देखा है कि वहाँसे कितने ही राजा तो निरे गँवार बनकर यहाँ आते हैं। और अुन्होंने देशका बेहद नुकसान किया है। वहाँ ये लोग खूब धन खर्च करते हैं, अिसलिअे वहाँके लोगोंका तो फ़ायदा ही है। अिस प्रकार शिकारी यहाँ आते हैं और शिकारको अुठा कर ले जाते हैं।

राजकोटके राजाके पीछे तो आजकल अैसी चंडाल चौकड़ी लगी हुअी है कि राजाको दिशा ही नहीं सूझती, अुसे यह पता ही नहीं चलता कि अुसका मालिक कौन है? अुसे यह मालूम नहीं है कि अिस समय संसार किधर जा रहा है, हिन्दुस्तानकी जनता आज कहाँ है, आजका युग कैसा है, और अुसकी अपनी प्रजा कहाँ जा रही है। हिन्दुस्तानके अनेक राजाओंको आज यह पता नहीं है कि ब्रिटिश भारत और देशी राज्योंकी प्रजाके बीच अलग अलग क्या सम्बंध है। वे तो यही समझ बैठे हैं कि हम अीश्वरीय अंश हैं। ‘जी हुजूर’, ‘खम्मा बापू’ करनेवाले भी अितने ज्यादा बढ़ गये हैं कि बापूको छींक आये तो कपड़ा पसारते हैं कि कहीं नाक ज़मीन पर न गिर जाय!

यह तो लाखाजीराजका राजकोट है। कबा गांधीकी दीवानगिरी वाला राजकोट है, जहाँ गांधीजी पले-पुसे हैं। वह अेक पवित्र स्थान है। वहाँ हममेंसे किसी पर दोषका छींटा नहीं लग सकता। जैसे किसानोंके लिअे बारडोलीने पदार्थपाठके रूपमें हमारे सामने अेक आदर्श रखा है, वैसे रियासतोंकी प्रजाके लिअे राजकोट वही पदार्थपाठ रखना चाहता है। रियासतोंकी प्रजाकी मुक्ति किस तरह होगी, राजकोट आज यही बता रहा है। वहाँ तो अेक अद्‌भुत लड़ाअी चल रही है।

जब वर्तमान राजा गद्दीपर बैठा, तब रियासतके खज़ानेमें ४८ लाख रुपये थे; और हालमें जब राज्यमें परिषद हुअी तब आठ हज़ार रुपये रह गये! बीस लाखकी तो ज़मीनें भी बेच दी गअीं!

मौजूदा राजा बिलकुल निर्दोष था। लेकिन अब अुसे रुपया और बोतल चाहिये। अुसके अपने ही लोगोंने अुसका बुरा हाल किया है। परिषदके मंत्री श्री ढेबरभाअीने 'जन्मभूमि' में पाँच लेख लिख कर भेजे थे और मुझसे कहा कि रास्ता बताअिये। मैंने अुनसे कहा कि अब लेख लिखनेसे भाग्योदय नहीं होगा। मैंने पूछा कि आपने प्रजाकी नब्ज़ पहचानी है? वैसे मैं अेजेन्सीको अर्ज़ियाँ देनेमें विश्वास नहीं करता। आजकल सभी राजा मानते हैं कि हम सार्वभौम सत्तासे मिलें तो कुछ होगा। आज न सब अुस सत्ताकी तरफ देख रहे हैं कि अब क्या किया जाय? किया क्या जाय? अपने तक़दीरको रोओ।

असली सार्वभौम सत्ता कोअी अूपरकी सरकार नहीं है। असली सार्वभौम सत्ता तो आपकी प्रजा है। आप और कोअी आशा रखते हों, तो आपको निराश होना पड़ेगा। अभी बम्बअीमें कुछ राजा अिकट्ठे हुअे और सार्वभौम सत्तासे दखल देनेके लिअे कहा। मगर वह सत्ता राजकोटमें क्या करे? क्या राजकोटमें सेना भेजे? कोअी शादी कराने वाला पुरोहित किसीकी गृहस्थी चला सकता है? वह तो शादी ही करा देता है। रेज़ीडेंट हो, तो वह गद्दी पर बैठा कर सिर पर मुकुट रख देगा। परन्तु राज्य कैसे चला देगा! राजकोटको तो अुसके दीवान भी वफादार नहीं मिले। आजकल तो अिन राजगद्दियोंका सारा आधार ही खतम हो गया है।

(अिसके बाद अुनकी सूचनासे राजकोटमें परिषद किस तरह हुअी, अिसका अुल्लेख करते हुअे सरदारने कहा:)

यह मालूम होने पर कि मैं राजकोट आनेवाला हूँ, अैसे पत्र और तार गांधीजीको मिले कि 'भाअीसाहब, आप अिन्हें राजकोट न आने दीजिये'। गांधीजीने मुझसे पूछा कि यह सब क्या मामला है? तब मैंने कहा कि मैंने राजकोटकी प्रजाको वचन दिया है और श्री ढेबरभाअी परिषदके मंत्री हैं; और काठियावाड़ प्रजा परिषदके नेतृत्वके लिअे मुझे भेजनेवाले भी आप ही थे। मेरे मंत्री पर प्रहार हो तो वह मुझ पर प्रहार होनेके बराबर है। यह मेरी अिज़्ज़त और आबरू पर हाथ डालनेकी बात है, जिसे मैं बरदाश्त करनेको तैयार नहीं हूँ।

मुझे गांधीजीने कहा कि तुम वहाँ जाओगे और मनाहीका हुक्म मिलेगा तो क्या करोगे? मैंने कहा कि मुझे हज़म करने लायक जगह ही राजकोटकी जेलमें नहीं है; और यदि हज़म कर ले तो अिससे राजकोटकी और काठियावाड़की समस्या हल हो जायगी। मुझे तो आप आशीर्वाद दे दें, यह काफी है।

राजकोटमें सभा होनेसे पहले पुराने दीवानने मुझे बुलाया था। वह अुस वक्त बीमार था और बिस्तरेमें पड़ा था। मैंने अुससे कहा था कि मैं यहाँ किसी मुर्देको मारने नहीं आया हूँ। हमें काले हाथीको निकालकर सफेद हाथी नहीं रखना है। परन्तु मैं यह देखने आया हूँ कि राज्य अच्छा कैसे बने।

प्रजासे भी मैं यही कहता था कि हमें यह अधिकार प्राप्त करना है कि दीवान किसे मुकर्रर किया जाय। यह बात तो अनादि कालसे चली आ रही है कि राजाको राज्य करना न आता हो, तो अुसे पदच्युत कर दिया जाय। बादमें भी मैंने यही बात कही थी। जब नये दीवान आये और वे तमाम धींगामस्ती मचाने लगे, तब मैंने भादरणमें कहा था कि अब प्रजाको अपना राजा चुन लेना पड़ेगा। जब यह बात कही, तब राज्यमें अेक कमेटी बनाअी गअी। कांग्रेसका यह प्रस्ताव है कि वह राजाओंके साथ दोस्तीका सम्बंध रखना चाहती है। लेकिन अगर राज्यमें अंधेरगर्दी मचती हो, तो कांग्रेस अुसे चुपचाप देखनेवाली साक्षी नहीं बनेगी, क्योंकि ब्रिटिश भारतकी जनता और देशी राज्योंकी जनता अेक और अविभाज्य है।

यह समझ लीजिये कि अिस वक्त राजकोट ही हिन्दुस्तान है। वहाँकी प्रजासे भी मैं यही कहता हूँ कि निर्भय होकर लड़ते रहो। आदमियोंकी या रुपयेकी कमी नहीं रहेगी। याद रखिये यह लड़ाअी जितनी लम्बी चलेगी, अुतनी ही काठियावाड़के राजाओंके सिंहासनोंकी जड़ें हिलने लगेंगी।

अिस मामलेमें किसी भी तरह समझौता नहीं हो सकता। अुसका फैसला तो अिसी तरह होगा कि जैसा राज्य प्रजा माँगे वैसा आपको देना ही पड़ेगा। राज्य कैसा हो, किस तरह किया जाय और कानून किस तरह बनाये जायँ या न बनाये जायँ, यह काम किसी केडल या गिब्सनका नहीं है। अैसा करनेका अुन्हें अधिकार नहीं। राज्य किस तरह किया जाय, अिसके लिअे तो राजकोटकी प्रजासे पूछना पड़ेगा। प्रजाके जो प्रतिनिधि आज जेलमें पड़े हैं, अुनसे पूछना होगा।

आज 'टाअिम्स' में अेक समझदारीसे भरा हुआ लेख आया है। वह लिखता है कि यह तो केवल झूठी लड़ाअी है और रुपया बरबाद हो रहा है। आज अचानक 'टाअिम्स' को दया आ गअी है। जब सात सात वर्ष तक अंधेरगर्दीमें प्रजा कुचली जा रही थी, तब अुसे कुछ न सूझा। मगर जब नाक पकड़ी गअी, तब अुसकी यह सारी समझदारीकी सलाह शुरू हुअी। अब अैसी दया करनेकी क्या ज़रूरत पैदा हो गअी है? ५०० रुपयेके दीवानकी जगह २५०० रुपयेका दीवान बुलवाया, तब क्यों कुछ नहीं लिखा? सारे बम्बअी

प्रान्तका शासन करनेके लिअे ५०० रुपयेका मंत्री है, लेकिन ज़रासे राजकोटका शासन चलानेके लिअे २५०० के वेतन पर जब ७२ वर्षके बूढ़ेको बुलाया जाता है, तब क्यों नहीं कुछ बोला जाता ? हमें अैसे बूढ़े बैलको गाड़ी नहीं सौंपनी है। हमें तो मौजूदा शासनकी अंधेरगर्दीको मिटा देना है और अुसकी पुनर्रचना करके अुसका अुद्धार करना है। राजकोटको हमें अेक नमूना बना कर दुनियाको दिखा देना है। दूसरे राजाओंसे भी मैं यही कहता हूँ कि अगर वे नहीं समझेंगे, तो अुनका भी यही हाल होगा।

जब राजकोटमें परिषद हुअी, तब खानगीमें अेक योजना बनाअी गअी कि कोअी अैसा कसाअी लाया जाय जो कत्ल कर सके। वह कान्फरेन्स रेज़ीडेंट मिस्टर गिब्सनके यहाँ हुअी और अुन सबको अैसा लगा कि यह काम कोअी बड़ी तनखाह वाला गोरा दीवान कर सकेगा। अुसके लिअे अेकदम हस्ताक्षर हो गये और नया दीवान आ भी गया।

मुझे जब पुराना दीवान मिला, तब अुसने यह बात मुझसे छिपाअी। अुससे भी मैंने यह कहा था कि यह लड़ाअी किसी व्यक्तिके खिलाफ नहीं है, परन्तु वर्तमान पद्धतिके खिलाफ है। ये सब बातें हो रही थीं कि अितनेमें अिंग्लैंडसे दो दिनमें हवामें अुड़कर ७२ वर्षका बूढ़ा अेकदम यहाँ आ पहुँचा और पुराने दीवान अुसके मंत्री हो गये।

ये नये दीवान भी अिस देशमें बहुत रह चुके हैं। बड़ा नाम कमाया है! अिनका नाम 'वेटिंग लिस्ट' पर पड़ा होगा। भारत सरकारके पास अैसी अेक बड़ी सूची रहती है। पहले तो आते ही वे देहातमें गये और किसानोंसे कहने लगे कि आअिन्दा सीधी अर्ज़ी दिया करो। देहाती किसान पहले तो समझे नहीं कि यह और कौन आ गया। अुन्होंने कहा कि अर्ज़ी तो सीधी ही होती है; टेढ़ी अर्ज़ी कैसी होती है? हमें ढेबरभाअी कहेंगे वही करेंगे। तब अुन्होंने किसानोंसे कहा कि ढेबरभाअी तो गैर वफादार आदमी है और तुम्हारे तो बाप-दादाओंने भी राजाकी वफादारी की है और तुम्हें भी अुसी तरह वफादारी करनी चाहिये। मगर दीवानको पता नहीं होगा कि सबको मालूम है कि अुसके बापदादे भी यहाँ लूटने आये थे और वह भी लूटने आया है।

वह जबसे आया है अुसने आर्डिनेन्स पर आर्डिनेन्स निकालने शुरू कर दिये हैं। परन्तु लोगोंने अुन्हें तोड़ना शुरू कर दिया है। जब अुसे अन्तमें सभाबन्दीका हुक्म वापस लेना पड़ा, तब लोग भी समझ गये कि यह तो पोला ढोल है। जब अुसने सारी पैंतरेबाजी आज़मा ली और प्रजा नहीं दबी, तब राजाको भी महसूस हुआ कि यह कुछ नहीं कर सकता। और प्रजा दबी नहीं, अिसलिअे अुसने कहा कि मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं। जो हज्जाम हजामत

करता हो, अुसके पास हजामतका अच्छा सामान न हो, तो वह किस कामका ? मगर दीवान कहता है कि मैं नहीं जाअूँगा, क्योंकि मुझे तो भारत सरकारने बुलाया है । अेजेन्सीवाले भी बीचमें थे, परन्तु अुनकी स्थिति सरोतेके बीच सुपारी जैसी थी ।

अुसने राज्यके नये नेताओंको भी बुलाया और साहबका बुलावा था अिसलिअे वे गये भी ज़रूर । मगर अुन सबने ढेबरभाअीको बुलवानेका आग्रह किया, अिसलिअे अिच्छा न होने पर भी अुन्हें बुलवाना पड़ा ।

(नये दीवानके दाँवपेंचका अितिहास बताते हुअे सरदारने कहा :)

अुसके प्रकाशित किये हुये आखिरी बयानका अर्थ यह था कि सारे मामलेमें मैं ही डोर हिला रहा हूँ । मगर मैं अब भी कहता हूँ कि चाहे जितनी कोशिश की जाय, मेरे बिना यह समस्या हल नहीं होगी । यह कोअी बच्चोंका खेल नहीं है । अगर गोरा दीवान प्रजामें फूट डालनेकी नीति पर या कड़ी दमन नीति पर आशायें बाँधेगा, तो वह अपनी ७२ वर्षकी सारी अिज़्ज़त खोकर घर जायगा । यह दीवान अिस देशमें बड़ी कूटनीतिक चालें चल चुका है । मगर मैं तो अेक भोला भाला किसान हूँ । मेरे पास अिनकार करनेका ही अेक अिलाज है । मैं कोअी कूटनीतिज्ञ नहीं हूँ ।

नया दीवान कहता है कि हम शासन-तंत्रमें अधिक हिस्सा देनेको तैयार हैं । मगर हम अिस गन्दगीमें हिस्सा क्यों लें ? हमें तो ज़मीन साफ़ करनी है । हमें तो अिस आगको अितनी तेज करके दिखा देना है कि जिससे यह गन्दगी जल जाय ।

मैंने कहा था कि समझौता मुझसे पूछे बिना नहीं हो सकता । राजकोटमें त्रावणकोर जैसा नहीं होने दूँगा । अिसलिअे मुझे कुछ लोग स्वेच्छाचारी कहते हैं । भले ही कहें, मगर मुझे तो अपना जो काम करना है, वह करूँगा ही ।

यह लड़ाअी तो राजाका हृदय-परिवर्तन करनेकी है । और वह तब होगा जब चुनिंदा आदमी आहुति देनेको तैयार होंगे । राजकोटका बाल-वृद्ध हरअेक प्रजा-जन आज समझ गया है कि अिस रियासतमें रैयत बनकर रहनेसे मर जाना ज्यादा अच्छा है । राजकोटकी आवाज तो अिस समय हिन्दुस्तानसे बाहर भी पहुँचने लगी है ।

किसी दीवानकी यह ताक़त नहीं कि वह प्रजाकी अिच्छाके विरुद्ध कुछ कर सके । अिस वक्त समझौता भी कौन करे ? मुझे कोअी भी तिलक लगाने लायक दिखाअी नहीं देता । मुझे अिस राजाको कुमकुमका तिलक लगाना है । मगर अुसे काजलका टीका चाहिये तो मैं क्या करूँ ? मैं तो अुसे अिज़्ज़त

देने आया हूँ। वैसे बाहरवाले तो बाहरवाले ही रहेंगे। सन् १९१७ से आज तक की तमाम लड़ाअियोंमें अधिकारीवर्ग मुझे बाहरवाला ही कहते थे। मगर वे सब चले गये और यह भी अिसी तरह चला जायगा।

नये दीवानको मुझसे मिलना तो पड़ेगा ही। अिसके सिवाय असके लिअे और कोअी अुपाय ही नहीं है। अुस वक्त अुससे कहूँगा कि तुम्हारे देशमें राजाको रानी लानी हो, तो प्रजाकी मंजूरी ली जाती है। तब यहाँ राजा अीश्वरीय अवतार है, यह कहाँकी खोज है?

अगर राजा या दूसरे लोग राज्योंके साथ की 'ट्रीटी' (संधिकी शर्तों) की बात करते हों, तो मैं कहूँगा कि अुनका राजाओंने अनेक बार भंग किया है। और संधि भी किनके बीच हो सकती है? संधि तो दो अिज्ज़तवालोंके बीच ही हो सकती है।

हमें तो आज राजकोटकी प्रजाका अभिनन्दन करना चाहिये और अीश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिये कि अुसे जल्दी विजय प्रदान करे।

गुजरात समाचार, २२–११–१९३८

८८

विद्याविहारके विद्यार्थियोंसे

[ता० ५–१२–१९३८ को अहमदाबादके विद्याविहारमें दिया गया प्रवचन।]

आज तुमसे मिलकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। अिस भव्य संस्थाको देखकर मुझे यह महसूस हो रहा है कि मैं अहमदाबाद — गुजरातमें रहते हुअे भी यहाँ नहीं आ सका यह दुःखकी बात है, और अिसलिअे मेरे हृदयमें अपराधी होने जैसी भावना पैदा हो रही है। मगर मेरी यहाँ आनेकी अिच्छा होते हुअे भी मैं विवश था और आज भी मैं बड़ी मुश्किलसे समय निकाल सका हूँ। मेरा समय हमेशा कामसे भरा रहता है। अिस शिक्षण-संस्थाकी अुड़ती मुलाकात मात्रसे मैं क्या जान सकता हूँ और क्या दे सकता हूँ? जीवनका पाथेय तो तुम्हें तुम्हारे आचार्य और शिक्षक ही दे सकते हैं, क्योंकि वे तुम्हारे सतत सहवासमें रहते हैं।

यह संस्था गुजरातमें है और मैं गुजरातका नम्र सेवक होनेका दावा करता हूँ, अिसलिअे मुझे यहाँ पहले आना चाहिये था। मगर देश भरमें भटकते हुअे मैं कितना समय निकाल सकता हूँ? मैं पूज्य गांधीजीसे प्रार्थना

करता हूँ कि आपने तो गुजरातको बिलकुल छोड़ दिया है। अुन्हें मुश्किलसे गुजरातमें अेक महीनेके लिअे आनेको समझा सका हूँ। वे ७० वर्षके हो गये —अुन्होंने शिक्षाके क्षेत्रमें अेक प्रकारकी क्रांति पैदा करनेके लिअे भरसक प्रयत्न किया है। अुनकी वर्धा-योजना अुनका नवीन सर्जन है। मगर अिस अभागे देशमें डिग्रियोंका मोह अभी तक नहीं मिट रहा है। अिस मोहको कम करनेके लिअे गांधीजीने यथाशक्ति कोशिश की है।

यहाँ तो मैंने अपनी आँखों अैसे आदमी देखे हैं, जो फेरीका धंधा करते थे और अतलस, रेशम और किमखाब और लोहका गज़ लेकर घर-घर और गाँव-गाँव फिरते थे। लेकिन आज वे करोड़पति बन गये हैं। वे डिग्रीधारी नहीं थे। अुन्होंने संसारकी डिग्री ली थी; परिश्रम किया था। प्रकृतिने हरअेक मनुष्यमें चेतनका अंश रख दिया है। अुसका विकास करके मनुष्य अुन्नति कर सकता है। सच्चा गृहस्थ वह कहलाता है, जो अेक विषयमें पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त कर ले। हरअेक विद्यार्थीको भी किसी अेक विषयमें संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। बाकीके विषयोंमें अपूर्ण हो, तो काम चल सकता है। परन्तु सभी विषयोंमें अपूर्ण रह जाय, तो अुसका अिस दुनियामें काम नहीं चल सकता। हाथ-पैरोंका अुपयोग ज्यादा होना चाहिये। मस्तिष्क और हाथ-पैरोंके बीच कोअी अंतर नहीं होना चाहिये।

अिस मुल्कका शासन जबसे विदेशियोंके हाथमें आया, तबसे अुन्होंने हमारे हाथ-पैर तोड़ डाले, हमारे पंख काट डाले। अिसलिअे हम अुड़ नहीं सकते और पिंजड़ेमें बंद हो गये हैं। गांधीजी हमें अिस पिंजड़ेसे निकालनेकी कोशिश कर रहे हैं। कोअी-कोअी निकल भी गये हैं और जो नौजवान कॉलेजोंकी डिग्रियोंका मोह छोड़कर निकले हैं, वे महासागरमें सैर करते हैं और दूसरे खड्डेमें डूबे हुअे हैं। तुम अिस मोहमें मत पड़ना। तुम्हें जगतमें तैरना हो तो हाथ-पैरों पर भरोसा रखो; मेहनतसे मुहब्बत करो। जिसके शरीरको तालीम मिलती है, अुसके दिमागका भी साथ-साथ विकास होता है। केवल बुद्धिका विकास निकम्मा है। अुससे संसारको फायदा नहीं है। बुद्धिके साथ शारीरिक श्रमके प्रेमका विकास करना चाहिये। अुद्योग और विद्याका सामंजस्य होनेसे अद्भुत शक्ति अुत्पन्न होती है। जन्मसे हरअेक को कुदरती शक्ति मिली होती है। अुसके विकाससे वह तैर या डूब सकता है।

अितनी सुंदर संस्था, अैसी स्वच्छ हवा, विशाल वातावरण शायद ही और कहीं दिखाअी देगा। तुममें से बहुतसे अैसे हैं, जिनकी पढ़ाअीका बोझा माँ-बाप पर नहीं पड़ता। यह तो अच्छी बात है। मगर मुफ्त चीज़ मिलती है, तो अुसकी कीमत कम हो जाती है। परिश्रमसे पायी हुअी चीज़की कीमत ठीक-

ठीक लगाअी जाती है। तुम दूसरी संस्थाअें देखोगे, तो तुम्हें अिसकी कल्पना अच्छी तरह हो जायगी। तुम्हें यहाँ जो अनुकूलता है, वह बाहर बहुतसे लड़कोंको नहीं मिलती। तुम्हें अपने जीवनके लिअे तो स्वयंपूर्ण बन ही जाना चाहिये, परन्तु दूसरे दुःखी और अज्ञान बच्चोंको भी तुम यहाँसे मिली हुअी पूँजीका लाभ देना। आजकल चारों ओर शिक्षाके क्षेत्रमें फेरबदल हो रहे हैं और अुसमें अुद्योगको स्थान मिला है। तुम्हें अुद्योगका गर्व हो, यह ठीक है। अुद्योग हमारे सिर पर लाद दिया गया है, यह अज्ञान वर्धा-योजनाके बाद दूर हो गया। यह तुम्हारा सौभाग्य है। बहुतसे विद्यार्थी मैट्रिक पास करके स्कूलसे अपंग बनकर निकलते हैं। स्कूलमें अुनके हाथ-पैर टूट जाते हैं। अुनकी दशा पर मुझे दया आती है। अुनके लिअे पींजरापोल खोलना चाहिये। द्वारकाकी छापके बिना कोअी भक्त नहीं कहलाते। मगर अुनकी कौड़ीकी भी कीमत नहीं होती।

तुम्हे जिस अुद्योगकी (मेकेनिकल और अेलेक्ट्रिकल) शिक्षा मिलती है, अुसमें हज़ारों आदमी खप सकते हैं। जो अेक विषयमें पारंगत हो जाता है, वह सबसे बढ़ जाता है। शुरूमें मुश्किलें तो आती हैं, परन्तु तुम्हें निराश न होना चाहिये। तुम अुन्हें पार कर सकोगे। सरकार तो हमारी ही है। अुसकी मदद ली जा सकती है। जिस मददकी ज़रूरत होगी, वह सरकार देगी। परन्तु सफलताका आधार तुम्हारी मेहनत और समझ पर रहेगा।

डिग्री पाये हुअे मेरे पास बहुतसे लोग आते हैं। मुझे अुन पर दया आती है। डिग्री और बिना डिग्रीवाले दोनों भटकते हैं, क्योंकि दुनियाकी डिग्रीके बगैर सब बेकार है। तुम्हारी बुद्धिका झुकाव किस तरफ है, यह ढूँढ़ लेनेका काम तुम्हारे शिक्षकोंका है, और तुम खुद भी अुसे जान सकते हो। दुनियाके साथ भिड़ना हो, तो अपंग होनेसे काम नहीं चल सकता। पंगु बनकर तो हिन्दुस्तान पर भार हो जाओगे। अितना काफ़ी नहीं है कि तुम अपने लिअे ही यहाँसे ज्ञान लेकर जाओ। तुम्हें जो कुछ मिला है, अुसे दूसरोंको देनेके लिअे तैयार रहना चाहिये। नहीं तो यह नहीं माना जायगा कि तुमने यहाँ पूरा-पूरा लाभ अुठाया है। आज मुझे ज्यादा समय नहीं है। खादी और तुम्हारी पोशाक आकर्षक है। परन्तु तुम्हारा दिल कितना खादीमय है, यह मुझे अभी देखना है।

मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी यह संस्था गुजरातमें फले-फूले और विकसित हो और गुजरातको अुसका लाभ मिले।

८९

हलपतियोंकी मुक्ति

[ता० २६-१-१९३९ के स्वतंत्रता दिवस पर — हलपति-मुक्तिके दिन बारडोलीमें हलपतियों और किसानोंकी सभामें दिये गये भाषणसे ।]

२६ जनवरी १९३० से आजका दिन हम हर साल स्वतंत्रता दिवसके रूपमें मनाते आये हैं। अिस अैतिहासिक दिनको आज हम जिस तरह मना रहे हैं, अुससे अधिक सुन्दर ढंग अिसे मनानेका कोअी नहीं है। हम आज अिसलिअे अिकट्ठे हुअे हैं कि अपने यहाँ चली आ रही गुलामीकी पुरानी प्रथाको मिटा कर दुबलों (हलपतियों) को अपना हिस्सेदार बनायें, अपने साथ बराबरीका हिस्सा दें।

*　　　*　　　*

गुलामी अैसी चीज़ है, जो लम्बे अरसेके बाद मीठी लगने लगती है। गुलामको छूटना अच्छा नहीं लगता। पिंजड़ेके पक्षीकी तरह अुसमें से स्वतंत्रताकी भावना चली जाती है। परन्तु गुलामीमें रखनेवालेको अिसका कलंक और दोष लगता है।

*　　　*　　　*

किसानों और दुबलोंकी पंचायत मुक़र्रर की गअी और यह प्रथा किस तरह मिटाअी जाय, अिसे तय करनेका निश्चय किया गया।

किसानोंके लिअे तो यह आसान है। दुबलोंके लिअे स्वतंत्र होना कठिन काम है। सारे हिन्दुस्तानमें और दुनियामें कहीं भी यह रिवाज नहीं है। दुबले भी जब तक शराब और ताड़ी नहीं छोड़ेंगे, तब तक दुबले (कमजोर) ही रहेंगे।

*　　　*　　　*

पेट ही बेगार कराता है और पेट ही बाजे बजवाता है। अिसलिअे हमारा पेट न भरे, तो गुलामी करनी पड़ती है। पेट भरनेका अिन्तज़ाम कर लें तो गुलामी मिट जाय। वह चोरी करनेसे नहीं होगा, मेहनत-मज़दूरीसे होगा। मेहनतमें गर्व माना गया है और मानना चाहिये।

अिस परगनेमें अैसी हालत है कि जितनी मज़दूरीकी ज़रूरत है, अुससे मज़दूर ज्यादा हैं। अिसलिअे किसान और मज़दूर दोनोंकी अिस ज़मीनसे परवरिश नहीं हो रही है। अिसलिअे आपको दूसरा धंधा सीख लेना चाहिये।

कातने-बुननेका धंधा सीख लें, तो घर बैठे दो-चार आने मिल जायँगे। आपको यह धंधा सीख लेना चाहिये, नहीं तो तकलीफ़ अुठायेंगे।

* * *

किसान और मज़दूरमें वैरभाव बढ़नेसे अिस ज़मीनकी पैदावार बढ़नेके बजाय घट जायगी। किसान और मज़दूरके बीच मीठा संबंध होना चाहिये। मज़दूरको जानवर नहीं समझना चाहिये।

* * *

आज आप यह काम दबावसे नहीं, बल्कि स्वेच्छासे और समझके साथ कर रहे हैं, अिसके लिअे मैं आपको बधाअी देता हूँ।

आज आप मज़दूरीकी जो दर तय कर रहे हैं, वह स्थायी नहीं रह सकती। समय और संयोगोंके अनुसार अुसे बदलना पड़ेगा। आपका और अिनका (मज़दूरोंका) संबंध मीठा नहीं रखेंगे, तो आपका नुक़सान होगा।

* * *

हलपति भाअियोंको मेहनतकी चोरी नहीं करनी चाहिये; पेटकी खातिर कभी चोरी नहीं करनी चाहिये। खेतोंकी रखवालीके लिअे किसान बाहरके रखवाले लाये हैं, यह ठीक नहीं है। असलमें आपको ही रखवाली करनी चाहिये। बाहरके आदमी लानेसे झगड़े और मारपीट होगी और अदालतोंमें जाना पड़ेगा।

आप आज मुक्त हो रहे हैं, अिससे सबको खुशी है। आपके पास कोअी संपत्ति नहीं है। आपकी पूँजी तो हाथ-पैर ही हैं।

मेहनत करके रोटी पैदा करनी चाहिये। विवाहके खर्च बंद कर देने चाहियें। अब तक आप विवाहकी खातिर सारी जिन्दगीके लिअे बिकते रहे।

मैं किसानोंसे और आपसे कहता हूँ कि कानूनसे तो बंधन है ही नहीं। आप स्वतंत्र ही हैं। मगर हम नैतिक बंधनोंसे नहीं छूट सकते। किसीके पसीनेकी कमाअी खराब करेंगे, तो अीश्वर हमारा बुरा करेगा।

खानेके समय पंगु बनकर किसानोंके कुटुंब पर न बैठ जाना चाहिये। आपको अपना घर बसाना चाहिये और झोंपड़ीमें खाना पका कर खाना चाहिये।

कोअी झगड़ा-टंटा हो जाय, तो अुसे निपटानेके लिअे पंचायत मुक़र्रर करनी है। अुसमें तहसीलके प्रतिष्ठित लोग पंच होंगे।

हम अेक महान पुरुषकी मौजूदगीमें अुनके आशीर्वादसे यह प्रस्ताव पास कर रहे हैं। अीश्वर हमें अुसका पालन करनेकी शक्ति दे।

९०

सत्याग्रहीकी टेक

[बारडोली सत्याग्रहके अवसर पर अपना जागीरका गाँव (वराड) छोड़कर टेककी खातिर सात-सात वर्ष तक बरबादी सहकर गायकवाड़ी जिलाकेमें बसनेवाले वीर किसान छीताभाअीको अुनको जागीरमें वापस लानेके लिअे ता० २८-१-१९३९ के दिन किये गये अुत्सवके मौके पर प्रकट किये गये बधाअीके अुद्गार।]

मेरे जीवनमें अैसा अवसर कभी नहीं आया था। कोअी टेकवाला पुरुष टेक पूरी करके अपने गाँवमें आता हो, अुसका अभिनंदन करनेका यह अेक अपूर्व प्रसंग है। आज दो प्रतिज्ञाओंका पालन हो रहा है। अेक प्रतिज्ञाका बंधन अुन्हें था। अपनी जागीर वापस न मिले, तब तक अपने गाँवमें पैर न रखनेकी अुनकी प्रतिज्ञाका पालन सात वर्ष बाद हो रहा है। अुन्होंने जब यह प्रतिज्ञा ली, तब वे और अुनका भगवान ही अिस बारेमें जानते थे, दूसरा कोअी नहीं जानता था। मगर अुन्हें तो अुसका पालन करना था, अिसलिअे किया। मेरी प्रतिज्ञा तो सार्वजनिक थी कि जब तक यह ज़मीन वापस नहीं मिलेगी, तब तक लड़ाअी बंद न होगी। लड़ाअी तो अभी जारी है, परन्तु लड़ाअीके चलते हुअे भी ज़मीन वापस मिल गअी।

अिस देशमें प्रतिज्ञाकी महिमा अनादि कालसे चली आअी है। वचनकी खातिर ही रामचंद्रजी राजपाट छोड़ कर निकले थे। छीताभाअीके पास राजपाट नहीं था, परन्तु किसानको ज़मीन छोड़ना राजपाट छोड़नेसे ज़्यादा कठिन होता है। ये दो बड़ी प्रतिज्ञाअें पूरी हुअीं, अिसके लिअे अीश्वरका जितना आभार माना जाय अुतना थोड़ा है। अिस टेकको पूरी करनेमें छीताभाअीकी भक्ति और श्रद्धा काम आयी है। अुन्होंने कांग्रेससे अेक कौड़ीकी भी सहायता लेनेसे अिनकार कर दिया और आपके गाँवमें आकर अुन्होंने आपके हृदय पर साम्राज्य जमा लिया। अैसे आदमी जहाँ रहते हैं, वहाँ भगवानका निवास होता है। अैसे कठोर प्रतिज्ञापालन करनेवाले मनुष्य ही हमें स्वराज्य दिलवायेंगे। अैसे लोगोंकी तपश्चर्यासे ही हमारी शक्ति बढ़ी है। जब स्वराज्यका अितिहास लिखा जायगा, तब राष्ट्रपतिका रथ हाँकनेवाले और सात-सात वर्षका देशनिकाला लेनेवाले छीता पटेलका नाम सुनहरी अक्षरोंमें लिखा जायगा। छीता पटेलने हमको, आपको, सबको राजमार्ग दिखा दिया है। आपका गाँव बड़ोदा राज्यमें है। आप सब प्रजामंडलमें शरीक होअिये और छीताभाअीके कदमों पर चलिये। आज

यह गाया गया : 'सबमे अूँची प्रेम सगाअी'। छीताभाअीने आपके साथ प्रेम सगाअी कर ली थी। अुनके जानेसे आपको दुःख हो, यह समझमें आ सकता है। परन्तु यह दुःख सच्चा तब माना जायगा, जब आप अुनके कदमों पर चलें।

हरिजनबन्धु, २६–२–१९३९

९१

स्नातकोंसे

[ता० १२–२–१९३९ को गुजरात विद्यापीठमें आठवें स्नातक सम्मेलनमें किया हुआ प्रवचन।]

आज कुछ लोग अैसे हैं जो मेहनती हैं, दिलकी लगनवाले हैं, त्याग कर सकते हैं और कष्ट भी सहन कर सकते हैं; मगर ये सब अुल्टे रास्ते लग गये हैं। अगर हम अुन्हें अुल्टे रास्तेसे न मोड़ेंगे, तो अुससे स्नातक संघको नुकसान ही होगा। अेक वर्ग अैसा है, जो पुरानी लकीरके अनुसार रचनात्मक कार्य ही कर रहा है। अिनक़लाब तो किया जा सकता है, मगर अुस अिनक़लाबसे समाजको आघात नहीं पहुँचना चाहिये। अुससे हिंसा न हो। आज विद्यापीठका ध्येय यह साबित कर दिखाना है कि नअी रचनासे यह अिनक़लाब ज्यादा प्रगति कर सकता है।

* * *

गुजरातमें तो लड़ाअीके साथ-साथ रचनात्मक काम भी चलता रहता है। यह बात और कहीं नहीं है। प्रधानमंत्री श्री खेर अुसकी तारीफ तो करते हैं, मगर अेक दोष भी निकालते हैं। वे कहते हैं कि अब मैं वापस गुजरातमें नहीं जाअूँगा, क्योंकि वहाँ बड़ा भक्ति-भाव है, लोगोंको पैरोंमें पड़नेकी आदत है। यह हमें छोड़ देना चाहिये। अुसके भीतरकी भावनाको कायम रखते हुअे भी अैसा नहीं करना चाहिये कि जिन्हें नमस्कार करें अुनके दिलको चोट पहुँचे। नम्रता, श्रद्धा और भक्तिकी साधना ज़रूर करनी चाहिये, क्योंकि अुसमें विवेक भी है। अुन्होंने जो दूसरी बात कही, वह मुझे बहुत पसंद आअी। अुन्होंने कहा कि मैंने रचनात्मक काम करनेवाली जितनी संस्थाअें गुजरातमें देखीं, अुतनी और कहीं नहीं देखीं। यह तो अेक स्नातकोंकी तैयार की हुअी चीज़ है। यह विद्यापीठके आन्दोलनों और वातावरणका परिणाम है। हमें अुसे विशाल बनाना है।

* * *

थामणामें आजकल अेक छोटासा प्रयोग चल रहा है। वहाँ अैसी बात हो रही है, जिससे लोगोंमें श्रद्धा पैदा हो। फिर भी लोगोंको यह ज़रूर दिखा

देना चाहिये कि जो चीज़ पूरी करके दिखाअी गअी वह स्वाभाविक है । युनिवर्सिटी पर कब्ज़ा करना कोअी बड़ी बात नहीं है । जो देशी राज्यों और ब्रिटिश भारतके लोगोंके लिअे स्वतंत्रता चाहते हैं, अुनके लिअे वह बड़ी बात नहीं है । फिर भी हम चींटीकी चालसे सब काम करें, तो काम नहीं चल सकता । अगर हमें घोड़ेकी रफ्तारसे काम करना हो, तो चरित्रवाले आदमी चाहियें । जब मैं युनिवर्सिटीसे निकले हुअे कुछ लोगोंको अर्ज़ियाँ देते देखता हूँ, तब मुझे मालूम होता है कि अुनमें तेज नहीं है, दिलमें हिम्मत और साहस नहीं है। अिन गुणोंके अभावसे मुझे बड़ा दुःख होता है । युनिवर्सिटीसे निकले हुअे युवक अितने निकम्मे क्यों होते हैं ? अुनमें तेज क्यों नहीं होता ? अुनमें स्वराज्य भोगनेका अुत्साह क्यों नहीं होता ? जो तेज अनपढ़ लोगोंमें पाया जाता है, वह भी अुनमें क्यों नहीं दीखता ? अगर दिलमें साहस और कुशलता हो, तो यह चीज़ मुश्किल नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि आप नये आदमी क्यों नहीं लेते ? मगर मैं तो अपने साथियोंसे हर रोज़ कहता रहता हूँ कि आदमी लाओ । आजकल यहाँ नये युगके अनुसार मजूर महाजन चल रहा है । अिस ढंगसे सेवा भी की जा सकती है । अगर कोअी आदमी बहुत समय तक अिस दिशामें काम करे, तो वह सीधे रास्ते लग जाय ।

* * *

हमें किसीकी सत्ता या अधिकार नही लेना है । लेकिन यह निश्चित है कि अगर हिन्दुस्तानके मज़दूर अुल्टे रास्ते चलेंगे, तो हिन्दुस्तानका ही नुकसान होगा । सही रास्ता तो धीरे-धीरे काम करके आगे बढ़नेका है । जब तक दूसरा पैर जम न जाय, आगे कदम अुठायेंगे तो ज़रूर गिर जायँगे। जम जानेके बाद ही आगे पैर रखा जा सकता है । अैसा तो कोअी भाग्यशाली ही होगा, जो पैर अस्थिर होने पर भी आगे बढ़े और न गिरे । अिससे स्नातकोंको अपने साथी बढ़ाने चाहियें । आप कोअी यह शंका न करना कि अूपर बैठे हुअे अधिकार नहीं छोड़ेंगे । अूपर बैठनेवालोंको तो 'बादमें क्या होगा ?' अिसी चिन्तामें रातको नींद तक नहीं आती । वे तो अपना बोझा हल्का करनेका रास्ता ढूँढ़ रहे हैं । अिस बोझेको अुठानेवालोंको आगे लाओ, नहीं तो सारा बोझा नीचे गिर जायगा ।

* * *

बदकिस्मतीसे अेक वर्ग आजकल यह मानने लगा है कि अखबारोंमें लेख लिखनेसे शीघ्र नेता बन सकते हैं, पब्लिसिटी करनेसे आगे बढ़ सकते हैं, प्लेटफार्म पर चढ़कर भाषण देनेसे महान नेता बन सकते हैं और कोअी भी संस्था खोलकर अुसके मंत्री या अध्यक्ष बन जानेसे बड़ी कुरसी पर बैठ सकते

हैं। मगर ये सब पतनके मार्ग हैं। जो आदमी सिपाहीगिरी करना नहीं जानता, वह सेनापति नहीं बन सकता। जो आदमी हवामें अुड़ता है, अुसे गिरनेका भी डर रहता है। परन्तु जो ज़मीन पर चलता है, अुसे गिरनेका डर नहीं होता। तात्कालिक नेता बन जानेके लिअे कोअी स्थान नहीं है। परन्तु सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़नेवालेके लिअे बड़ी गुंजाअिश है।

*　　　*　　　*

दूसरी बात मेरे स्वार्थकी है। आपको अिस विद्यापीठ सम्बन्धी खर्चका भार अब मुझ पर न डालना चाहिये। स्नातकोंको खुद चन्दा करके खर्च पूरा करनेकी कोशिश करनी चाहिये। अगर कामका बोझ ज्यादा ही ज्यादा बढ़ता रहे, तो साल दो साल पहले ही कूच कर देना पड़े। अगर आज हम बापूको पूरा आराम दे सकें, तो वे बहुत समय तक जिंदा रह सकते हैं, परन्तु वैसा नहीं कर सकते। आपमें से कुछ लोग अैसे हैं जो मिल भी चला सकते हैं। अिसलिअे विद्यापीठके कामके प्रति तो आपकी ममता विशेष होनी चाहिये। वैसे मैं तो हमेशा साथ ही हूँ।

प्रजाबन्धु, १९–२–१९३९

९२

लींबड़ीके अत्याचार

[अखबारोंमें प्रकाशित किया हुआ वक्तव्य ।]

काठियावाड़के लींबड़ी राज्यसे अत्यन्त आघात पहुँचानेवाले समाचार मिले हैं। मेरे भेजे हुअे प्रजामण्डलके विश्वासपात्र कार्यकर्ताओंने काफ़ी जाँच करनेके बाद ये समाचार भेजे हैं, अिसलिअे यह माननेका मेरे लिअे कोअी कारण नहीं कि वे गलत होंगे। राजकोटकी संधि, जो रेज़ीडेंटको अच्छी नहीं लगी थी और जिसका बादमें भंग हुआ था, होनेके बाद थोड़े ही दिनोंमें काठियावाड़के तमाम राजा रेज़ीडेंटके बुलावे पर राजकोट रेज़ीडेंसीमें जमा हुअे थे और अैसा मालूम होता है कि यहाँ अुन्होंने अपने-अपने राज्योंमें प्रजामण्डलोंको कुचल डालनेकी अेक-सी नीति अख्तियार करनेका निश्चय किया था। अुस समयसे कअी रियासतोंमें भिन्न-भिन्न प्रकारकी सख्तीकी कार्रवाअियाँ की गअी हैं। मुसलमान, जागीरदार और अुमराव वगैरा छोटे-छोटे वर्गोंको प्रजामण्डलके विरुद्ध खड़ा किया गया है और प्रजाके जिम्मेदार हुकूमतके आन्दोलनमें रुकावट डालकर अुसे खतम कर देनेके लिअे अिन लोगोंको भड़का दिया गया है।

जबसे राजकोटके ठाकुर साहबने गंभीर समझौता भंग कर दिया, तबसे रेज़ीडेंटकी अुत्तेजनासे सचमुच मारपीट और दमन नीतिका दौर शुरू हो गया है। परन्तु लींबड़ीने तो राजकोटके जंगलीपन और हैवानियतके तरीकोंको भी मात कर दिया है। बंदूक, तलवार, हँसिया और छुरी वगैरासे सुसज्जित अस्सी आदमी कअी गाँवोंमें प्रजामंडलके कार्यकर्ताओं पर टूट पड़े और अुन्होंने कुछ लोगों पर घातक हमले किये, कुछ घरोंको आग लगा दी, हज़ारों रुपयोंका माल लूट लिया और साथमें लाअी हुअी कअी मोटरोंमें भरकर ले गये। लोगोंने पहचान लिया कि अिन हमलावरोंमें कुछ राज्यके नौकर थे। और अुनके पास मोटरोंका अितना बड़ा काफिला था, अुससे भी समझा जा सकता है कि अुन्हें यह मदद कहाँसे मिली होगी।

मेरे पास आयी हुअी खबरें सच हों, तो आजकल लींबड़ी राज्यमें जान-मालकी ज़रा भी सलामती नहीं रही। अिस मामलेमें न तो अभी तक कोअी कार्रवाअी की गअी और न ठाकुर साहब पर अिसका कोअी असर हुआ। ठाकुरके अिस रवैयेके प्रति विरोध प्रकट करनेके लिअे कोअी तीन हज़ार प्रजाजनोंने महलके सामने अड़तालीस घंटेका अुपवास शुरू किया है। लोगोंने वाअिसरॉय और गांधीजीके पास तार भेजे हैं। अिन खबरोंमें कुछ भी सत्यका अंश मान लिया जाय, तो साफ दिखाअी देता है कि और जगह होनेवाले सख्तीके तरीके प्रजामंडल पर आज़माकर अुसे कुचल डालनेका संगठित प्रयत्न किया जा रहा है। जो ब्रिटिश रेज़ीडेंट जंगली ज़मानेके अिन निरंकुश अवशेषोंकी रक्षा करनेके लिअे अितना अधिक आतुर है, अुसे अिन निर्दोष और निःशस्त्र प्रजाजनोंकी रक्षा करनेकी अपनी ज़िम्मेदारी ज़रा भी महसूस नहीं होती! जिसे गांधीजी संगठित गुंडापन कहते हैं, क्या यह अुसीका प्रदर्शन नहीं है? यह आशा कैसे रखी जा सकती है कि पड़ोसी प्रांतकी कांग्रेसी सरकार यह सब कुछ चुपचाप देखती रहे?

हरिजनबन्धु, १२–२–१९३९

९३
भावनगर प्रजा-परिषद्

[ता० १४–५–१९३९ को भावनगर प्रजा-परिषद्के पाँचवें अधिवेशनके अध्यक्षपदसे दिये गये भाषणसे ।]

भावनगर प्रजा-परिषदके अिस पाँचवें अधिवेशनके अध्यक्षपदको सुशोभित करने और अुसकी जिम्मेदारी अुठानेकी योग्यता और शक्ति रखनेवाले आपमें कअी लोग हैं, फिर भी अिसका भार मुझ पर डालनेका निर्णय करके आप सबने अेक स्वरसे मुझ पर जो विश्वास प्रगट किया है और मुझे जो सम्मान दिया है, अुसके लिअे मैं आपका आभार मानता हूँ ।

दावानलके चिन्ह

आज दुनियामें चारों ओर दावानल जल रहा है । अिससे हमारा देश अकेला कैसे बच सकता है? और हमारा देश पराधीन है, अिसलिअे किसी भी कारणसे महायुद्ध शुरू हो जाय (और जिसके छिड़ जानेके चिन्ह अिस वक्त नज़र आ रहे है), तो अुसमें शरीक होने या अुससे अलग रहनेमें हमारा हित है या अहित है, अिसका निर्णय करनेकी भी हमें आज़ादी नहीं है ।

ब्रिटिश भारतमें विस्तृत मताधिकार वाला, प्रांतीय स्वशासनके सिद्धांतके अनुसार, नया विधान अमलमें आ चुका है । अिस मर्यादित लोकशासनके अमलमें भी पड़ोसी ब्रिटिश प्रांतोंकी जनता जिस आत्म-विश्वास और चेतनाके नये-नये सुखका अनुभव कर रही है, अुसका असर देशी राज्योंकी प्रजा पर रोज़-रोज़ पड़ता जा रहा है । अनेक त्रुटियोंवाला होने पर भी अिस नये विधानका विवेकपूर्वक अुपयोग करके भारतवर्षकी सर्वमान्य संस्था कांग्रेसने देशकी शक्ति और प्रतिष्ठा बढ़ाअी है । साथ ही नये विधानकी कअी खामियों और लोक-शासनके पहले अनुभवसे पैदा होनेवाली कुदरती मुश्किलोंने जो नअी-नअी कठिन समस्याअें पैदा की हैं, अुनको सफलतापूर्वक हल करनेके लिअे बहुतसे लोकनिर्वाचित सेवक और संगठित संस्थाअें रात-दिन काम कर रही हैं । लोक कल्याणके नये-नये काम और कानून अेकके बाद अेक लगातार हाथमें लिये गये हैं ।

ब्रिटिश भारतमें चारों ओर प्रचंड जाग्रति और क्रांतिके सॉय-सॉय करते वर्तुल अुठ रहे हैं । अिस नव चेतनका स्पर्श देशी राज्योंकी प्रजाको हुआ है और साथ ही अुसमें नअी नअी आशाअें पैदा होने लगी हैं, और ब्रिटिश

भारतसे पीछे रह जानेका स्वाभाविक भय होनेके कारण वह अुसके साथ-साथ दौड़नेका निश्चय और प्रयत्न कर रही है ।

कांग्रेस अपना निर्णय बार-बार घोषित कर चुकी है । अगर लोकशासनके मार्गमें दौड़नेवाले ब्रिटिश भारतके गलेमें निरंकुश शासनवाले देशी राज्योंकी भारस्वरूप हँसली, अुसकी अिच्छाके विरुद्ध, डालनेकी कोशिश की जायगी, तो अिस देशमें भयंकर अशांति होनेकी चेतावनी कांग्रेस दे चुकी है ।

हरिपुरा कांग्रेससे पहले रियासती प्रजाके दिलमें कांग्रेसकी नीतिके बारेमें कुछ न कुछ अँदेशा था । हरिपुरामें कांग्रेसने देशी राज्यों संबंधी अपनी नीतिके बारेमें सफ़ाअी दी । अुस नीति पर कांग्रेस आज भी कायम है । कांग्रेस राजाओंका नाश नहीं चाहती और न अुनसे दुश्मनी चाहती है । अब भी वह तो देशी राज्योंके साथ मित्रता रखनेकी बड़ी कोशिश कर रही है । मगर कांग्रेस सारे भारतकी संस्था है, अुसके किसी अेक भागकी नहीं । सारे देशकी आज़ादी हासिल करना अुसका ध्येय है । अुसकी दृष्टि और नीतिमें तमाम भारतवर्ष अेक और अविभाज्य है । अुसका अेक भाग स्वतंत्र और दूसरा परतंत्र नहीं रह सकता; और अैसा होगा तो दोनोंके बीच भयंकर संघर्ष हुअे बिना नहीं रहेगा । अिसलिअे हरिपुरा कांग्रेसमें यह स्पष्टीकरण किया गया था कि जब तक रियासतोंमें लोकतंत्रकी पद्धति जारी नहीं की जायगी, तब तक कांग्रेस अुनके साथ शामिल होनेकी संघशासनकी योजना पर विचार ही नहीं कर सकती ।

मेरी तो राजा-महाराजाओंसे अत्यंत नम्र प्रार्थना है कि वे अुचित नियंत्रणके साथ शासनका भार प्रजाके कंधों पर डालकर प्रजाकी प्रगतिका मार्ग प्रशस्त कर दें, प्रजाके सच्चे रक्षक बनकर अुसे आगे बढ़ायें और खुद सम्राटके कदमों पर चलकर राजा-प्रजा के बीचके संघर्षके खतरेसे सदाके लिअे निकल जानेकी योजना बनाकर निर्भय हो जायँ ।

मगर अब तो राजा लोग अुत्तरदायी शासनके नामसे ही बिदकने लगे हैं । कुछ प्रजामंडलोंके विधानोंमें शुरूसे ही जिम्मेदार हुकूमत प्राप्त करनेका ध्येय रखा गया है । कअी बार कितनी ही परिषदोंमें अलग-अलग राज्योंमें जिम्मेदार हुकूमतकी माँगके प्रस्ताव किये गये हैं । अितने दिन तक अैसी माँग अनुचित नहीं समझी जाती थी, परन्तु आजकल तो यह कहा जाता है कि देशी राज्योंके विधानमें जिम्मेदार हुकूमतका नाम भी नहीं लिया जा सकता ।

यह अेक राजनीतिक दावपेंच खेलनेवालोंका खड़ा किया हुआ व्यर्थका विवाद है । असलमें महत्वका सवाल तो यही है कि प्रजाको कोअी सत्ता सौंपनी है या नहीं । और सौंपनी है तो क्या और कितनी ? या कितनी

वास्तविक सत्ता प्रजाको सौंपनी है? यदि प्रजाको सच्ची सत्ता सौंप दी जाय, तो फिर अुस शासनका कुछ भी नाम रख लिया जाय। अुसके व्यर्थके विवादमें पड़नेकी कोअी ज़रूरत नहीं है। और जब तक सच्ची सत्ता प्रजाके हाथमें नहीं आ जाती, तब तक अिसमें भी शक नहीं कि प्रजाको कभी संतोष नहीं होगा।

विदेशियोंकी फूट डालकर हुकूमत करनेकी नीतिका अनुकरण करनेमें ही राजा लोग अपनी सत्ताकी सलामती मान बैठे हैं। अैसे प्रतिकूल वायुमंडलमें सत्याग्रहको स्थगित करके अन्तर्दृष्टि द्वारा आत्म-निरीक्षण करनेमें और अपनी त्रुटियोंकी जाँच करके अुन्हें सुधार लेनेमें थोड़ा समय बिता देनेसे देशी राज्योंकी प्रजाको लाभ ही होगा। जिन्हें प्रजाकी शक्ति और अपने साधनोंके बारेमें पूर्ण विश्वास है, अुनके लिअे निराश होनेका कोअी कारण नहीं।

अेक तरफ़ प्रजाको निर्दय, अमानुषिक और जंगली ढंगसे दबानेके सारे प्रयत्न किये जा रहे हैं और डाँट-डपट वग़ैरा अनुचित अुपाय काममें लेकर वफ़ादारीके पत्रों पर ज़बरदस्ती हस्ताक्षर कराये जा रहे हैं और दूसरी तरफ़ नाममात्रके और नक़ली सुधार जारी करके दुनियाकी आँखोंमें धूल झोंक कर, किसी भी प्रकारकी असली सत्ता न छोड़ते हुअे, प्रचलित गंदे शासनको नया जामा पहनाकर जो अभी तक चला आया है अुसीको लोकतंत्रके झूठे नामसे क़ायम रखा जा रहा है। पुरानी प्रथाके पक्षपातियोंमें से कुछ तो यहाँ तक कह रहे हैं कि प्रजा लायक़ नहीं, अिसलिअे और अुपाय ही क्या है?

अनादि कालसे प्राप्त अधिकार

प्रजाकी योग्यताकी बातें करनेवालोंने कभी यह भी विचार किया है कि अिस देशमें जो ६०० रजवाड़े हैं, अुनमेंसे कितनोंके राजा अपनी प्रजासे ज़्यादा योग्यता रखनेवाले हैं? क्या राजकुटुंबमें जन्म लेनेवाले सभी योग्यताकी विरासत लेकर ही पैदा होते हैं? और राजाओंमें से कुछ तो राज्य करनेके लिअे ज़रूर अयोग्य होते हैं, यह बात मंजूर हो तो अैसी सूरतमें प्रजाको क्या करना चाहिये, अिसका भी कोअी अुपाय बतायेंगे? ज़ालिम राजाको पदच्युत करनेका प्रजाका अधिकार अनादि कालसे माना गया है। अितिहास अिस बातका साक्षी है। अिसलिअे राजा-प्रजाकी योग्यताकी बहसमें पड़े बिना आधुनिक युगको पहचान कर अुसके अनुकूल बननेमें ही दोनोंका हित है।

प्रजाका दमन

मगर आज तो कुछ राजा अेक होकर संगठित रूपसे प्रजाको दबानेमें ही अपना श्रेय मानते दिखाअी देते हैं; और कमसे कम सत्ता भी छोड़े बिना

शासनमें अूपरी फेरबदल करनेकी जो बड़ी आडम्बरपूर्ण योजना तैयार की है, अुससे आगे कोअी राज्य बढ़े ही नहीं, अैसी व्यवस्था रचनेमें अपनी सारी शक्ति खर्च कर रहे हैं।

वे यह विचार नहीं करते कि अलग अलग राज्योंकी अलग अलग परिस्थिति होने पर भी संगठन या सत्ताकी नाराजीके डरसे सबको अेक ही अुस्तरेसे मूँड़ने लगेंगे तो काम बिगड़ जायगा। जब तक असली सत्ता प्रजाके हाथमें नहीं आयेगी, तब तक प्रजाको संतोष नहीं होगा, यह जानते हुअे भी अिस निश्चित वस्तुको किसी भी तरह टालनेका व्यर्थ प्रयत्न किया जाता है। आखिर तो अिस तरह बालूमेंसे तेल निकालना छोड़कर प्रजाको खुश करके ही काम करना पड़ेगा।

भावनगरके स्वर्गीय राजनीतिज्ञ

अब हम भावनगरका विचार करें। भावनगरमें घुसते ही हमें सबसे पहले स्वर्गीय सर प्रभाशंकर पटणीकी याद आती है। अुस महान राजनीतिज्ञका अभाव काठियावाड़में आज पग-पग पर मालूम हो रहा है। अुनके गुजर जानेके बाद काठियावाड़में कोअी अैसा राजनीतिज्ञ नहीं रहा, जिसका असर सारे काठियावाड़में दिखाअी देता हो। सर प्रभाशंकर ज़िन्दा होते, तो घरमें ही गांधीजीके अनशन करनेकी नौबत हरगिज़ न आने देते। अिस समय काठियावाड़की जो बेअिज्जती हो रही है, अुसे वे कभी सहन न करते।

अुत्तरदायी शासन

अब तो समय आ गया है, जब हमें असली मुद्देकी बात पर अेक ही प्रस्ताव पास करना चाहिये। और अुस प्रस्ताव पर हम अमल करा सकें — यानी राज्यसे अैसा विधान प्राप्त कर सकें, जिससे प्रजाको अुत्तरदायी शासन मिल जाय — तो फिर दूसरे प्रस्तावोंकी बहुत आवश्यकता नहीं रह जाती।

राज्यकी मुख्य आबादी किसानोंकी है। अधिकांश रियासतोंका भार देहातमें रहनेवाले गरीब किसानोंके कंधों पर ही पड़ता है। शासनमें अुनकी आवाज़ नहीं है। अज्ञान, अपढ़ और भोला होनेके कारण अुसे अपने हक़ोंका कोअी भान भी नहीं है। भगवान पर भरोसा रखकर हरअेक दुःखका दोष केवल भाग्य पर ही डालनेका आदी होनेके कारण अुसमें आत्म-विश्वासका अभाव पैदा हो गया है। ज़िम्मेदार हुकूमत माँगने या लेनेका अगर कुछ अर्थ हो सकता है, तो यही कि अिन भूखे और दुःखसे पीड़ित असंख्य अस्थिपंजर जैसे, झुकी हुअी कमरवाले देशी राज्योंके दुःखी किसानोंके कष्ट दूर हों और अुनमें स्वाभिमान और आत्म-विश्वासके मानवीय तत्त्वोंका संचार किया जाय। यह काम करनेमें राज्य और

प्रजा दोनोंका समान हित समाया हुआ है । अगर अिन किसानोंको शासनकी संस्थाओंमें काफ़ी प्रतिनिधित्व मिले और अुनकी आवाज़ राजदरबारमें सुनी जाय, तो वह शासन ज़िम्मेदार माना जायगा और अुनके दुःखोंका अिलाज हो सकेगा। अिस प्रकार ज़िम्मेदार हुकूमतके बारेमें प्रस्ताव करें, तो फिर किसान, मज़दूर, म्युनिसिपेलिटी, ग्रामपंचायत, ऋणमुक्ति, रिश्वतखोरी, बेगार और शराबबंदी वग़ैराके बारेमें परिषदमें अलग अलग प्रस्ताव करनेकी ज़रूरत नहीं रहेगी ।

आजका अमूल्य अवसर

अिस राज्यमें जो अनुकूलता मिलती है, वह और कहीं शायद ही मिलती होगी। प्रजा परिषदकी स्थापना करने और अुसे चलानेमें प्रधानमन्त्री स्व० पटणी साहबका साथ और आशीर्वाद था । परिषदके प्रति राज्यकी सुदृष्टि रही है । परिषदका ध्येय राज्यसे छिपा नहीं है । राज्य और प्रजाका अत्यन्त मीठा सम्बन्ध रहा है । राज्यमें काफ़ी योग्य आदमी रहते हैं, जो शासनका भार अुठानेमें अुत्साहसे और निःस्वार्थ भावसे मदद देनेको तैयार रहते हैं। राज्य साधन-सम्पन्न हैं, प्रजा वफादार है। महाराजा साहबने देश-विदेशकी यात्रा करके आधुनिक जगत देखा है और स्वयं अुदार वृत्ति और अुदार विचार रखते हैं । दीवान साहबको योग्य पिताका अुत्तराधिकार मिला है । ये सारे अनुकूल संयोग भावनगरको काठियावाड़के वर्तमान अन्धकारमें दीपक बनकर मार्गदर्शन करनेका अमूल्य अवसर प्राप्त करा देते है । और अिसलिअे भावनगर पर अनेक आशाअें लगी हुअी हैं । भगवान ये आशाअें पूरी करे और भावनगरके वैभव, सुख-शान्ति और कीर्तिमें वृद्धि हो!

९४
भावनगरका दंगा

[ता० १६–५-१९३९ को भावनगरमें आम जनताके सामने दिया गया भाषण ।]

आज हम यहाँ जिन कारणोंसे अिकट्ठे हुअे हैं, वे आपको मालूम हैं। जो दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुअी, अुसके कारण बच्चूभाअीका देहान्त हुआ। श्री नानाभाअी वगैरा दूसरे जो लोग घायल हुअे, अुनमें भाअी जादवजीकी स्थिति पहले ही गम्भीर थी। अुनका घाव अितना गहरा था कि अुनके मस्तिष्कका कुछ भाग बाहर निकल आया था। डॉक्टरोंने अुनकी अच्छी देख-भाल की, मेहनत की, परन्तु भाअी जादवजी भावनगरकी सेवा करते हुअे आज चल बसे।

जो खेदजनक घटना हुअी है, अुसका स्मारक बनाना है। अैसे अवसर पर हमारे हृदयोंमें जो भावनाअें अुमड़ती हैं, अुन्हें क्रियात्मक रूप देना हमारा फर्ज़ है। अकसर स्मशान-वैराग्यकी तरह भावनाअें अुमड़ आती हैं, परन्तु बादमें अवसरका महत्त्व भुला दिया जाता है। अिसमें मुझे जोखिम मालूम होता है। अगर समस्याको बुद्धिपूर्वक सावधानीके साथ हल न किया जाय, तो अुसमें बड़ा खतरा है।

हमारे हाथसे बुरा काम कभी न हो। हमें अपने हृदयको भी अच्छी तरह पहचान लेना चाहिये। आपसके झगड़े मिटाकर अैसे फ़सादी तत्त्वोंको अलग करके दबा देनेके लिअे हम कुछ न करें, तो वे सारे समाज पर हावी हो जायँगे।

मैं सब जातियोंकी अेकता चाहता हूँ। लेकिन अगर सच्ची अेकता रखनी हो, तो जिन लोगोंका अिन क्रूर घटनाओंमें हाथ है, अुनका पता लगाना चाहिये। और जब तक अुनके हृदयमें पश्चात्तापकी भावना पैदा न हो, तब तक अिस बातको छोड़ना नहीं चाहिये। अैसा कहनेका मौका न आना चाहिये कि हम मूर्ख हैं, कमज़ोर हैं। कोअी यह कहेंगे कि जो हो गया अुसे भूल जाना चाहिये। मगर यह सलाह रातको दिन और दिनको रात माननेके लिअे तैयार होनेकी बात होगी।

जो लोग हत्यारोंको मदद देते हों, आश्रय देते हों और अुनके प्रति सहानुभूति रखते हों, वे भी अुनके बराबर ही भयंकर हैं। अैसे लोगोंकी ज़िम्मेदारी भी अुतनी ही है। अुनके साथ दोस्ती कब तक रखी जा सकती है, यह हमें सोच लेना है। साँपके बिलमें कब तक सिर रखा जाय, अिसके जोखिम पर विचार कर लेना चाहिये।

मैं कायरताका कट्टर शत्रु हूँ। कायर मनुष्योंका साथ करनेके लिअे मैं कभी तैयार नहीं हो सकता।

राज्यकी और अधिकारियोंकी यह अिच्छा होती है कि अैसे प्रसंग भुला दिये जायँ तो अच्छा। मगर अिस तरह अपराधियोंकी जाँचको छोड़कर मेल करने लगेंगे, तो भविष्यमें ज्यादा गड़बड़ होनेकी संभावना है। अिसलिअे अपराधियोंको पकड़कर षड्यंत्र करनेवालेको ढूँढ़ निकालना चाहिये। अैसी आफतोंको सदाके लिअे मिटा देनेमें राज्यका भला है। राज्य अपना धर्म पालन करे या न करे, मगर हमें तो अपना कर्तव्य पूरा करनेके लिअे तैयार रहना चाहिये। हमें समझकर काम करना है।

यह घटना भावनगरकी प्रजा और राज्यके लिअे अेक ज़बरदस्त चेतावनी है। हमें सूचना मिल गअी है कि आअिन्दा हम विश्वासके साथ नींद नहीं ले सकते। अिस नोटिसकी हम अुपेक्षा नहीं कर सकते।

युगको पहचानकर आत्मरक्षा करना हमारा फर्ज है। यह समय अैसा है कि चारों तरफ गुण्डे घूमते हैं। अगर यह माननेका कारण देंगे कि हम कायर हैं, तो गुण्डे निर्भय होकर घूमेंगे।

यह अराजकताका वातावरण भावनगरमें ही हो सो बात नहीं है। परन्तु अैसा वायुमंडल तमाम हिन्दुस्तानमें है। मुझपर होनेवाले प्रहार कोअी बच्चूभाअी या जादवजीभाअी जैसे भाअी झेल लेते हैं। श्री नानाभाअीको अीश्वरी प्रेरणा हुअी और मुझ पर होनेवाला वार अुन्होंने झेल लिया। मेरे लिअे यह पहला मौका नहीं है। अैसी घटनाअें तो आजकल मेरे अिर्द-गिर्द होती ही रहती हैं; लेकिन अीश्वर मेरी रक्षा करता है।

देशके भीतर ब्रिटिश भारतमें या देशी राज्योंमें प्रगतिशील और लोकतंत्र-वादी तत्त्वोंको मैं पोषण दे रहा हूँ, अिसलिअे यह मेरे विरुद्ध हमला था। परन्तु यह हमला मेरे विरुद्ध व्यक्तिगत नहीं था, बल्कि अुन शक्तियोंके विरुद्ध था, जिन्हें मैं प्रोत्साहन दे रहा हूँ। हमला करनेवाला तो मूर्ख आदमी है, परन्तु अुसके पीछे जिन षड्यंत्रकारियोंका सूत्र संचालन है, अुन्हें खोज निकालना चाहिये।

परिषदके पहले दिन जो घटना हुअी, वह दरगुज़र कर दी जाय और भविष्यमें वैसा ही होनेका डर बना रहे, तो साम्प्रदायिक अेकता बहुत दूर चली जायगी। आज तो प्रश्न आपकी अपनी सलामतीका है। अैसी घटनाअें होती रहें, तो आप अपना काम-धन्धा निश्चिन्त होकर नहीं कर सकते, अपना व्यवहार जारी नहीं रख सकते। अिन सब चीज़ोंके लिअे सलामती और विश्वासका वातावरण पैदा होना चाहिये।

आपको निरंतर सावधान और जाग्रत रहना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि आप कायर बनकर नहीं, बल्कि मर्दोंको शोभा देनेवाले ढंगसे अपने पर होनेवाले वार झेलनेके लिअे तैयार हों और ज़रूरत पड़ने पर शुद्ध बलिदान देनेके लिअे तैयार हों। आपमें से जिन्होंने अिन घटनाओंको अपनी आँखों देखा हो, या जो पुलिसकी जाँचमें प्रमाणों वगैराकी मदद दे सकते हों, अुन्हें हिम्मत करके खुले रूपमें सहायता देनेके लिअे सामने आना चाहिये।

जिन दो निर्दोष युवकोंने आहुति दी है, अुनके विशुद्ध बलिदानका हमें स्मारक बनाना है। जो स्मारक बनाया जाय वह अिन दोनों शहीदोंका संयुक्त स्मारक रहना चाहिये। अुसके टुकड़े नहीं हो सकते।

मुझे विश्वास है कि हरअेक नागरिक अपना चन्दा लिखाकर अिस अवसरको चिरस्थायी बनायेगा और जो दो नौजवान हमें छोड़कर चले गये हैं, अुनका स्मारक बनवानेमें अुचित भाग लेगा।

९५

गाँवोंका ऋण

[ता० १६–५–१९३९ को आंबला (भावनगर) में दिये गये भाषणसे।]

* * *

देहातमें रहनेवाले लोग अेक प्रकारसे भोले और अज्ञान होते हैं। अुनकी भाषामें फर्क़ हो सकता है, भेषमें फर्क़ हो सकता है, परन्तु अुनके हृदयमें प्रेम भरा होता है। अुनके पेटमें खड्डे पड़ गये हैं, परन्तु आँखोंमें तेज है।

आज लाखों गाँवोंमें जो हिन्दुस्तान बसा हुआ है, वह थोड़ेसे शहरोंसे दूर पड़ गया है। देहातका धन शहरोंमें चला गया है। अुनकी दौलत चूस ली गअी है। शहर अुन्हें जोंककी तरह चूस रहे हैं।

बैल गाड़ियोंकी जगह अब मोटरें हो गअी हैं। देहातके दीयोंमें जलानेको तेल नहीं है और शहरोंमें रातके १ बजे तक बिजलीकी बत्तियाँ जलती हैं। चरखे बन्द होकर कारखाने चलने लगे हैं।

* * *

यह सब विदेशियोंके आनेके बाद हुआ। वे पहले सूरतके किनारे पर आये। बम्बअी तो अुस समय था ही नहीं। वह अनेक गाँवोंको नष्ट करके बना है। शहर तो दलालीकी कोठियाँ हैं; विदेशोंको माल भेजनेके गोदाम हैं।

जब विदेशी पहले पहल आये, तब वे हमारे राजा-महाराजाओंके जूतोंके पास बैठते थे। अुन्होंने डेढ़ सौ वर्षमें अैसा सिक्का जमा लिया कि आज राजा-महाराजा अुनकी खुशामद करते हैं, अुनके चपरासीकी खुशामद करते हैं।

हमारे धनकी ख्याति सुनकर व्यापारी आते थे। हीरे, मोती और माणिकके जहाज़ भरकर ले जाते थे। आज हमारे यहाँ खानेको अन्न भी नहीं है।

*　　　*　　　*

हमारे यहाँ जब तरह-तरहके बारीक कपड़े बनते थे, तब अुन्हें कपड़ा पहनना भी नहीं आता था। अुनके वहाँ तो कोयला और लोहा पैदा होता था।

यहाँसे चरखे और करघेका चित्र बनाकर ले गये और जहाज़में रूअी भरकर ले गये; और अब कपड़ा बना कर बम्बअीके बाजारमें लाकर बेचते

अिस देशसे दौलत किस तरह ले जायँ, अिसकी विद्या अुन्होंने खोज निकाली।

हमारे आदमियोंको अंग्रेज़ी पढ़ाकर और क्लर्क बनाकर अुन्होंने हम पर कब्जा जमा लिया।

३५ करोड़ भेड़ोंको रखनेके लिअे लाखों गडरिये चाहियें, परन्तु अुन्होंने ३५ करोड़ मनुष्योंको सँभालनेके लिअे अुन्हींमें से बड़ी-बड़ी भेड़ें ढूँढ़ लीं।

हमें गुलामीका मोह हो गया और हम अुसे ही अच्छी समझने लगे। हमें अैसा लगा कि रामराज्य आ गया है!

*　　　*　　　*

गांधीजीने बताया कि अुनका कारोबार मायासे चलता है, अिसलिअे हमें शहरोंसे वापस गाँवोंमें जाना चाहिये।

*　　　*　　　*

अिसीलिअे नानाभाअी यहाँ आये। अनुभवसे प्रतीत हुआ कि देहातमें शिक्षा देनी चाहिये। शहरवाले तो कहीं भी शिक्षा ले लेंगे।

*　　　*　　　*

खानेको रोटी चाहिये। अुसे हम पैदा करते हैं, शहरके लोग नहीं। लेकिन हम अपनी बेवकूफ़ीसे अुसे खा नहीं पाते।

आप कहते हैं कि अिस गाँवमें सौ चरखे चलते हैं। सवाल यह नहीं है कि यहाँ कितने चरखे चलते हैं, सवाल तो यह है कि क्या वे गाँवको पूरा कपड़ा देते हैं?

हमें चार चीज़ोंकी ज़रूरत है: हवा, पानी, रोटी और कपड़ा। दो चीज़ें भगवानने मुफ्त दी हैं। और जैसे रोटी घरमें तैयार होती है, वैसे ही कपड़ा भी हमारे घरमें बनना चाहिये।

हमारे गाँवमें जो अुद्योग नष्ट हो गये हैं, अुनका पुनरुद्धार करना चाहिये। अुसीके साथ नानाभाअी अक्षर-ज्ञान दें, और अिस प्रकार अीश्वरका ज्ञान मिल जाय।

मनुष्यमें अेक चिनगारी मौजूद है । अुसे जगतका और जगतके सर्जनहारका ज्ञान होना चाहिये । अुसका ज्ञान हो जाय, तो अेक आदमी अूँचा और अेक नीचा मालूम नहीं हो सकता ।

मनुष्यका शरीर मिट्टीका है । अुसके लिअे जाति-भेद नहीं है । अुसमें से आत्मा निकल गअी, तो फिर वह ब्राह्मणका शरीर हो या भंगीका, अछूत बन जाता है । वह मुर्दा हो जाता है ।

ये जो विदेशी आते हैं, क्या सब ब्राह्मणोंके लड़के होते हैं? अुनमें चमारके भी होंगे । परन्तु अुनके सामने सब झुकते हैं ।

जिसने अीश्वरको पहचान लिया, अुसके लिअे तो दुनियामें कोअी अछूत नहीं है । अुसके मनमें अूँच-नीचका भेद नहीं है ।

हिन्दुस्तानमें धर्मके नाम पर कअी तरहके वहम घुस गये हैं । चमारको खानेको दिया जायगा, तो दूरसे टुकड़ा फेंका जायगा । अूँचेसे पानी पिलाया जायगा । अिस प्रकार जो मनुष्य दूसरोंको अछूत मानते हैं और अुनका तिरस्कार करते हैं, अुनका तिरस्कार करनेवाले दुनियामें दूसरे होते हैं ।

हम अेक पिताकी संतान हैं, अीश्वरकी संतान हैं । गाँवके मुख्य मनुष्यको गाँवकी सँभाल रखनी चाहिये । भिखारियोंको अुत्तेजन नहीं देना चाहिये । भिखमंगोंको नहीं पालना चाहिये ।

अिस बातकी कोशिश हो रही है कि बच्चोंको पेट भरकर दूध-दही मिले । अब तक जो शिक्षा दी गअी है, वह अुल्टी दी गअी है । सीधी शिक्षा देनेके लिअे नानाभाअी जैसे प्रखर शिक्षा-शास्त्री आपके यहाँ आकर बस गये हैं ।

भगवान सबसे दुःखी मनुष्योंमें रहता है । वह महलोंमें नहीं जाता ।

*　　*　　*

जैसे हम अपना शरीर और कपड़े साफ़ रखते हैं, वैसे ही अपना गाँव साफ़ रखना हमारा काम है । यह क्या राज्यका काम है? घर साफ़ रखना चाहिये, गाँव साफ़ रखना चाहिये । गन्दगीमें अीश्वर नहीं आता ।

*　　*　　*

भगवानके आगे झुकना चाहिये, दूसरोंके आगे नहीं झुकना चाहिये । हमारा सिर कभी न झुकनेवाला होना चाहिये । देहातमें रहनेवाले लोग निर्भय होने चाहियें, अिसके बजाय अुनमें हमेशा डर होता है ।

जिसने पाप या चोरी न की हो, अुसे डरनेका क्या कारण? मौत किसीको नहीं छोड़ती । अेक समय अैसा आता है कि हम बैठे रह जाते हैं और हमारा नौजवान लड़का चल बसता है । यह भगवानकी माया है । जो चीज़

तकदीरमें लिखी है और जन्मसे साथ है, अुसका डर या भय क्या? वह तो खुशीका दिन है।

जिसकी मौत आ गअी है अुसकी कोअी दवा नहीं, और जिसकी मौत नहीं आअी अुसे कोअी मार नहीं सकता; तो फिर हम गाँवके लोग, जो रात-दिन मेहनत करते हैं, मौतसे क्यों डरें? आपका पेट अितना ताकतवर है कि सूखी रोटियाँ भी अुसमें लकड़ीकी तरह भकभक जल जाती हैं। और मिठाअी खानेवाले धनवानोंको अुन्हें पचानेके लिअे पेटकी मालिश करानी पड़ती है। वे मौतसे डरते हैं। तगड़ेको तो मौत आने पर खुशी होती है कि चलो छुट्टी मिली।

आज दुनियाके लोग अेक दूसरेको फाड़ खानेका प्रयत्न कर रहे हैं। हमारे यहाँ तो 'अहिंसा परमो धर्मः' है। अगर हममें यह सच्ची भावना हो, तो हमारे यहाँ दुःख नहीं होना चाहिये।

गंगा नदी पर जो लोग रहते हैं, वे गंगाके किनारे गंदगी करते हैं। और हमारे यहाँसे लोग गंगामें डुबकी लगाकर पाप धोने जाते हैं। अिसी तरह आपके यहाँ नानाभाअी गंगा बनकर आये हैं। आपने देख लिया कि अुन्होंने मुझ पर पड़नेवाला वार अपने पर झेल लिया और हमलावरसे कहा कि अेकसे संतोष न हो, तो दूसरा वार कर ले। अुनका सदुपयोग कीजिये। अुन्हें पहचान लीजिये। अुन्हें आपसे कुछ लेना नहीं है। अुन्हें तो अिसलिअे काम करना है कि हिन्दुस्तानका भला हो। अुन्हें प्रेरणा मिली है कि देहातके प्रति हमारा ऋण है। वे अुस ऋणको चुकानेके विचारसे यहाँ आये हैं।

मैंने जो कहा है, अुस पर विचार कीजिये। बेकार मत बैठिये। बेकार बैठनेवाला सत्यानाश कर डालता है, अिसलिअे आलस्य छोड़िये। रात-दिन काम करनेवाला अिन्द्रियोंको आसानीसे वशमें कर लेता है।

अितने बड़े देशमें चींटियोंकी तरह आदमी भरे हैं और घोर अज्ञान मौजूद है। अैसे वातावरणमें काम करना है। अीश्वर अुसे करनेकी शक्ति दे।

९६

स्कूलबोर्डके शिक्षकोंसे

[ता० १२-६-१९३९ को गुजरात विद्यापीठमें अहमदाबाद स्कूलबोर्डकी तरफसे शिक्षक तालीम वर्गका अुद्घाटन करते समय दिये गये भाषणसे ।

*   *   *

आजके अवसर पर शिक्षकोंको अुपदेश देना शिक्षाकारोंका काम है। मैं तो दूसरे क्षेत्रमें पड़ा हूँ। दुनिया जबरदस्त विद्यालय है। अिस महाविद्यालयकी डिग्रियाँ जल्दी-जल्दी नहीं मिलतीं।

*   *   *

हरअेक व्यक्ति यह मानता है कि आजकलकी शिक्षामें खामी है। अुसे सुधारना चाहिये। फिर भी हिंदुस्तानमें अितनी दुर्बलता आ गअी है कि नया मार्ग अपनानेको कोअी तैयार नहीं है। हममें कोअी साहस नहीं रहा, हम भीरु बन गये हैं। अिस कारण कुछ लोग नये रास्ते चलनेको तैयार नहीं हैं। आजकलकी शिक्षामें क्रान्ति करनेकी ज़रूरत है। अिसीसे वर्धा-योजनाका जन्म हुआ। चूँकि नये मार्ग पर चलनेका डर है, अिसलिअे अुसका भी विरोध हो रहा है। हरअेक नअी चीज़के शुरू होने पर अुसका विरोध होता है।

*   *   *

आपको यहाँ पर जो शिक्षा दी जाती है, अुसमें आप ओतप्रोत हो जायँ, तो आपमें क्रान्ति हो जानी चाहिये। गाँवोंमें जहाँ गंदगी, मैल, भय और फूट है, वहाँ जाकर आप अिन सबमें क्रान्ति करेंगे अैसी आशा है। वर्धा-योजना सिर्फ़ चरखा चलाना ही नहीं है। अेक समय था कि अपढ़ स्त्रियाँ गाँव-गाँवमें चरखा चलाती थीं। चरखेके पीछे मानसिक क्रान्ति करना है। वह नहीं होगी तो ये सब बातें भुला दी जायँगी। अन्ध-विश्वासी मनुष्य अन्ध-विश्वाससे माला फेरता रहे, पर अुसका फल न मिले यह भी हो सकता है।

अपना शासन शान्तिसे चलता रहे अिसलिअे विदेशी सरकारने शिक्षकको गौण स्थान दिया और कांस्टेबलको गाँवका मालिक बना दिया। पहले शिक्षक ही गाँवके हृदयका स्वामी होता था। वह गाँवके झगड़े निपटाता था। अन्ध-विश्वासियोंका अन्ध-विश्वास दूर करता था। बेकार आदमियोंको रास्ता बताता था। बच्चोंको ज्ञान देता था। वह सम्मान जाता रहा। और अब कांस्टेबलको सम्मान मिला और शिक्षकको गौण स्थान मिला।

*   *   *

पटेल, पटवारी और शिक्षक — ये गाँवके स्तंभ होने चाहियें। असके बजाय वे विदेशी सत्ताके स्तंभ बन गये हैं। आजकल देहातमें विदेशी हुकूमत लगभग खतम हो गअी है। अगर हमें प्रारंभिक शिक्षा देनी आती हो, तो अुसीमें सारी स्वतंत्रता मौजूद है।

* * *

अेक बात सही है कि स्थापित स्वार्थवालोंसे अुनका मार्ग छुड़वाना मुश्किल चीज है। अिसलिअे विश्वविद्यालयकी शिक्षामें परिवर्तन कराना अधिक बहादुर आदमीका काम है। परन्तु प्रारंभिक शिक्षामें आप सब परिवर्तन कर सकते हैं।

* * *

शिक्षकोंको किसी भी तरहका व्यसन नहीं रखना चाहिये। बहुतसे शिक्षक आधी बीड़ी पीकर आधा टुकड़ा कान पर टाँग लेते हैं। व्यसन धनवानोंका पाखण्ड है, दुर्बल मनुष्योंका लक्षण है। जिन्हें घड़े तैयार नहीं करने, बल्कि मनुष्य तैयार करने हैं, अुन्हें किसी भी तरहका व्यसन नहीं होना चाहिये।

* * *

जहाँ आप हों, वहाँ गाँव कुन्दनकी तरह स्वच्छ होना चाहिये। आजकल गाँवोंमें जो आलस्य है, बुराअियाँ हैं, अुन्हें आपको दूर करना है।

बच्चोंको सफाअीकी तालीम दीजिये, अुनके घरोंमें प्रवेश करके अुनके माँ-बापको शिक्षा दीजिये। अच्छे शिक्षकको लोग सिर पर रखकर नाचेंगे। अच्छा शिक्षक गाँवका अितना प्रेम संपादन कर ले कि वह जाय, तब गाँव रोने लगे।

अगर शिक्षक बहादुर हो तो गाँवमें चोरी-डाका कुछ न हो।

आजकल देहातमें अितनी खटपट चलती है कि अकसर गाँवके आदमी डाका डलवाते हैं। शिक्षक अिस बारेमें अुदासीन रहते हैं। बहादुर शिक्षक हो, तो वह डाके डलवानेवालोंको भी पकड़ लेगा।

आजकल जो नअी रचना हो रही है, वह शिक्षाकी ही रचना होती है, सो बात नहीं है। आज तो सारे राष्ट्रका नवनिर्माण हो रहा है।

बालक हाथ-पैर नहीं चलाते, अिसलिअे जब वे पढ़ चुकते हैं, तब अुनसे कुछ नहीं होता। अैसा होना चाहिये कि बच्चोंमें बचपनसे मनुष्यत्वकी भावना जाग्रत हो।

९७

स्वयंसेवकोंसे

[ता० १४--६--१९३९ को अहमदाबाद स्वयंसेवक--स्वयंसेविका दलके सामने दिये गये भाषणसे ।]

*　　　*　　　*

हरअेक युवक और युवतीको स्वयं अितनी तालीम लेनी चाहिये कि वह राष्ट्रकी रचनामें — राष्ट्र-जीवनमें अपना हिस्सा दे सके ।

अगर अिस शहरमें जबरदस्त तालीम पाया हुआ दल तैयार किया हो, तो बहुत काम किया जा सकता है; अुससे अपराध करनेवाले लोग भी डरेंगे । सेवादलकी अितनी साख होनी चाहिये कि अपराध करनेवालोंको यह महसूस हो कि वह अपराध करते देख लेगा तो खैर नहीं है । अगर स्थायी सेवक बनना हो, तो निर्भय बनना चाहिये । स्वयंसेवकोंका प्रथम गुण निर्भयता है । जहाँ जहाँ विपत्ति हो, वहीं कानोंमें आवाज़ पड़ते ही वे पहुँच जायँ ।

*　　　*　　　*

हमारा अुद्देश्य वरदी पहनकर सभामें जाकर खड़े रहना ही नहीं है । अिसकी ज़रूरत नहीं हो, अैसा नहीं है । सभाओंमें व्यवस्था रखनेके लिअे भी कुशलताकी आवश्यकता होती है । मगर स्थायी स्वयंसेवक दलका काम अितना संकुचित नहीं है ।

किसी भी हालतमें तुम्हारे दिलमें डर न घुसना चाहिये । जब मनुष्य भयभीत हो जाता है, तब वह मनुष्य न रहकर पशुकी हालतमें आ जाता है । अिसलिअे स्वयंसेवकोंका पहला गुण निडरता है । दूसरा गुण आज्ञापालनका है । जो आदमी सीधा ही नेता बन जाता है, वह किसी न किसी दिन लुढ़क जाता है । अिसलिअे तुम देखते हो कि अिंग्लैण्डके बड़े-बड़े राजकुटुम्बके और राजसिंहासन पर बैठनेवाले व्यक्ति भी पहले जहाजों पर या खानोंमें काम करके तालीम लेते हैं ।

हममें यह खयाल घुस गया है कि मेहनत या श्रमका काम करनेमें शराफत नहीं है । हममें यह अेक खतरा घुस गया है । यह न हिन्दुस्तानकी संस्कृति है, न पश्चिमकी । अपनी निजी सेवा किसीसे नहीं करानी चाहिये ।

जब तक अपने हाथ-पैर चलते हों, तब तक स्वयंसेवकको दूसरेसे सेवा नहीं लेनी चाहिये।

अफ़सरका हुक्म मानना चाहिये। किसी भी हालतमें विनय नहीं छोड़ना चाहिये। कभी कोअी हुक्म अन्तःकरणके विरुद्ध मालूम हो, तो अफ़सरके हाथोंमें अिस्तीफा रख दो, परन्तु विनय नहीं छोड़ना चाहिये।

* * *

स्वयंसेवक और स्वयंसेविकाको अपना शरीर मज़बूत बनाना चाहिये। जो खुद शरीरसे मज़बूत नहीं है, वह दूसरोंकी सेवा नहीं कर सकता।

सरकार तो बन्दूककी तालीम देती है और जहाँ भेजती है वहीं जान जोखिममें डालकर जाना पड़ता है। जो हुक्मकी ता'मील नहीं करे, अुसे सज़ा होती है। वह भी अिस देशकी खातिर नहीं, बल्कि पेटकी खातिर करना पड़ता है; जब कि तुम सब तो समझ-बूझकर राष्ट्रके लिअे करते हो, अिसलिअे तुम्हें अधिक तैयारी करनी चाहिये।

तालीमका अर्थ ही यह है कि कड़ेसे कड़ा हुक्म अपमान मालूम होने पर भी माना जाय और बादमें विनयपूर्वक जो कहना हो सो कहा जाय।

स्वयंसेवकोंके लिअे जाति-पाँति या सम्प्रदायका भेद नहीं होता। वे समान भावसे सबकी सेवा करते हैं। कांग्रेसका सिपाही अूँच-नीच, जाति-पाँति या सम्प्रदायका भेद नहीं जानता।

कवायद अुपयोगी चीज़ है। जिस आदमीके दोनों पैर सीधे नहीं पड़ते, वह क्या सेवा करेगा? मगर अिसकी तहमें जो शिक्षा है, अुसे समझ लो। वह जीवनका पाथेय है।

* * *

मनुष्य बड़ी अुम्रका हो जाता है, तब अुसे वरदी नहीं पहननी पड़ती। मगर तुमने जो तालीम पाअी है, वह तुम्हारी स्थायी वरदी बन जानी चाहिये।

तुम्हारे दिलमें यह भावना पैदा हो कि तुम सब सगे भाअी-बहन हो, तभी अेक दलके कहलाओगे।

९८

बम्बअीमें शराबबन्दी

[ता० १-८-१९३९ को बम्बअीमें हुअी विराट सभामें दिया गया भाषण।]

बम्बअीका नया जन्म

जिस दिनकी हम सब और सारा हिन्दुस्तान राह देख रहे थे, वह दिन आखिर आ गया। कलका बम्बअी जिसने देखा है, आधी रातको बन्द होनेवाले शराबखानों और रास्ते परके दृश्य जिन्होंने देखे हैं, अुन्हें यकीन हो गया होगा कि कलका बम्बअी रातके बारह बजे खतम हो गया और आज नये बम्बअीका जन्म हुआ है। आजका दिन भारतवर्षके अितिहासमें बम्बअीके लिअे स्वर्णाक्षरोंमें लिखा जायगा। सारी दुनियाकी नज़र अिस वक्त हम पर लगी हुअी है। जिस वक्त दुनियाके अधिकांश देश संहारकी सामग्री जुटानेमें लगे हुअे हैं और अेक दूसरेका गला काटनेकी कोशिशमें है, तब हम अपनी पुरानी सभ्यताके अनुसार और हिन्दू, मुस्लिम सब धर्मोंकी आज्ञा मानकर बम्बअीको शुद्ध कर रहे हैं। आज बम्बअी नवनिर्माण कर रहा है। किसी किसीको शंका थी कि क्या बम्बअी सरकार शराबबन्दी कर सकेगी? आज जिन्होंने यह विराट जुलूस और यह विराट सभा देखी है, जिन्होंने ये दृश्य देखे हैं, अुनकी वह शंका निर्मूल हो गअी होगी। अच्छे-अच्छोंको शक था कि आज सचमुच बम्बअी सरकार बम्बअीमे आम शराबबन्दी शुरू करेगी। अब भी यह शंका करनेवाले मौजूद हैं कि यह कितने दिन चलेगी। मगर मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि आअिंदा कोअी भी सरकार आवे, पर व अिस शराबबन्दीके मामलेमें हमारी खड़ी की हुअी अिमारतकी अेक अींट भी नहीं हिला सकेगी। हमने कच्चा काम नहीं किया है। कांग्रेसके लिअे यह कोअी आजका संकल्प नहीं था। अिसके पीछे कांग्रेसकी और लोकमान्यकी वर्षोंकी तपस्या है। लोकमान्यकी पुण्यतिथिका यह पवित्र दिवस सारा भारतवर्ष हर साल अेक महान पर्वके तौर पर मनाता है। आज हम अुनका स्मरण करके अुनके पवित्र मनोरथकी सिद्धि यत्किंचित् श्रद्धांजलिके रूपमें अुनके चरणोंमें अर्पण कर रहे हैं। लोकमान्यका वचनामृत था कि अगर कभी अीश्वर खुद अवतार लेकर मुझे शराब पीनेको कहे तो भी मैं अिनकार कर दूँगा। लोकमान्यने शराबबन्दीका महान आन्दोलन तीस वर्ष पहले शुरू किया था। अुसी दिन सारी जनताने शराबकी अिस [illegible]ाअीको लोगोंमें से मिटा देनेकी प्रतिज्ञा की थी।

जन्मसिद्ध अधिकारके तौर पर स्वराज्य लेनेकी जिस प्रतिज्ञाकी लोकमान्यने घोषणा की, अुस प्रतिज्ञामें शराबबन्दी मुख्य चीज़ थी ।

कांग्रेसकी आज्ञा

अितने पर भी कुछ अैसे शंकाशील लोग हममें हैं, जिन्होंने अिस महान नैतिक सुधारका विरोध किया है । अैसे लोगोंका सन्देह मिटाना हमारा धर्म है । ये लोग जो कुछ लिख और बोल रहे हैं, आन्दोलन कर रहे हैं, अुसका विरोध न करके हमें अुनके प्रति प्रेम दिखा कर अुनका परिवर्तन करना है । हमने आज यहाँ जो काम किया है, वह बहुत बड़े नैतिक और धार्मिक सुधारका काम है । कांग्रेसकी कार्यसमितिने कांग्रेसकी वर्षोंकी प्रतिज्ञाको याद करके जब आठों कांग्रेसी प्रांतोंमें जल्दी शराबबन्दी अमलमें लानेका निश्चय किया, तभी सब तरफ़से पूरी तरह विचार कर किया था । आलोचना करनेवाले कहते हैं कि बम्बअी सरकारने ही अितनी अुतावल क्यों की? मद्रासकी तरह करना चाहिये था । अिसका जवाब यह है कि बम्बअी सा हिन्दुस्तानकी नाक है । अुसे सबसे आगे होकर पहल करनी ही चाहिये । मगर मैं तो यह कहता हूँ कि अेकाध क़दम आगे या पीछे भले ही हो, परन्तु कोअी भी प्रान्त अिस काममें पीछे नहीं रहेगा । कोअी कांग्रेसकी आज्ञाका अनादर नहीं कर सकता ।

कलंक मिटाना ही होगा

बम्बअी धनवानोंका नगर कहलाता है । जहाँ कुछ धनिक तन्दुरुस्तीको आँच आये बिना शराब पीनेका दावा करते हों, मगर हज़ारों ग़रीब मज़दूर शराबकी लतमें फँसकर बरबाद हो रहे हों, अुनके बाल-बच्चों और स्त्रियोंकी बरबादी हो रही हो, वहाँ अैसे धनसे नगरीकी क्या शोभा है? सच्चा धन तो आप बम्बअीके ग़रीब-अमीर तमाम लोगोंने पहले पहल आज ही संग्रह किया है । अितने दिन तक हमारे यहाँके सुखी लोगोंने कभी भी नहीं सोचा था कि हमारे बच्चे कहाँसे पढ़ते हैं । विदेशी सरकार रैयतके करका रुपया दूसरी जगह बरबाद करके, रैयतको शराब पिलाकर आमदनी करती थी और अुसे बढ़ाती रहती थी और हमारे ग़रीब वर्गोंकी आर्थिक और नैतिक बरबादीके बल पर हमारी शिक्षा चलती थी । ग़रीब और मज़दूर वर्गका ही नहीं, हमारे भंगियों और हरिजनोंकी भी दस दस घंटे कारखानोंमें की हुअी मेहनतकी कमाअीका रुपया शामको शराबखानोंमें चला जाता था और अुस रुपयेसे हमारे बच्चोंको शिक्षा दी जाती थी । सन् १९२० से हम समझ गये थे कि अिस कलंकको मिटाना ही होगा । मगर हमारे पास सत्ता नहीं थी । हमारा शासनतंत्र हमारे हाथमें नहीं था । वह विदेशियोंके हाथमें था और अुनका तो अिससे विरोध ही था । अितने पर भी, यह सब प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष विरोध सह कर भी, संघर्ष और

आपत्तियोंके बीच कांग्रेस अुन्नीस वर्ष तक अपना काम करती रही। ठेठ लोकमान्यके शुरू किये हुअे आन्दोलनके दिनोंसे लेकर आज तक अगणित नौजवानों और कितने ही स्त्री-पुरुषोंने शराबखानों पर धरना दिया, सिर फुड़वाये, मार खाअी और जेलें भुगतीं। अब वह काम लगभग पूरा होने आया है। अिसलिअे अिस वक्त जो यह कहते हैं कि तुमने जल्दबाज़ी की, पूरा नोटिस नहीं दिया और अेकदम अितना बड़ा काम हाथमें ले लिया, अुनकी आलोचनामें कोअी तथ्य नहीं है। अब अिस काममें विवादके लिअे स्थान नहीं रहा। यहाँ आप जो लाखोंकी संख्यामें मौजूद हैं, तमाम रास्तेमें मानव-समूहका जो दृश्य आपने देखा है, बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, गरीब-अमीर और तमाम जनताने जिस तरह आपका स्वागत किया, और जो प्रेम और अुत्साह यहाँ अुमड़ रहा है, वह सब किसी भी शंकाशील आलोचकके लिअे पर्याप्त अुत्तर है। क्या विरोधी और क्या मित्र, आजके चिरस्मरणीय दृश्योंको कोअी कभी भूल नहीं सकेगा। लोकमान्यकी पुण्यतिथिके पवित्र दिन पर अिस पवित्र कार्यको आप बम्बअी निवासियोंने अितनी विराट सफलताके साथ पूरा किया, अिसके लिअे मैं आपको बधाअी देता हूँ और बम्बअीने यह काम पहले पहल हाथमें लिया, अिसके लिअे भी आपको मुबारकबाद देता हूँ।

सरकारका साथ दीजिये

आजकी तरह ही आअिंदा कामकी सफलताका आधार भी जनताकी क्रियात्मक सहानुभूति पर है। वह मिलेगी तो अिस महान नैतिक सुधारके काममें कभी असफलता नहीं होगी। अिसलिअे आप सब भावी कार्यमें वह क्रियात्मक सहानुभूति दिखाअिये और बम्बअी सरकारका साथ दीजिये। अुपनगरोंमें, मुहल्लोंमें, गली-गलीमें और घर-घरमें जो समितियाँ मुकर्रर हुअी हैं, अुनमें शामिल होकर ज़बरदस्त प्रचार कीजिये और अिस कार्यको सफल बना कर ही चैन लीजिये। पड़ोसमें, घरमें, मित्रमंडलीमें छोटा या बड़ा, बुजुर्ग या मुरब्बी, कोअी भी अिस कामके विरुद्ध हो, अलग रहता हो, तो अुससे बिनती कीजिये, हाथ जोड़िये, अुसके पैरों पड़िये और अुसे सीधे रास्ते लाअिये।

जो कहते थे कि अिस काममें जनताका साथ नहीं है, अुनकी आँखें खुल गअी हैं। मैं जानता हूँ कि कुछ लोगों पर कर लगा है, मगर अिसके बदलेमें अिस महान नैतिक सुधारका पुण्य भी अुन्हें मिलेगा। पिछले साल अहमदाबादमें और अिस वर्ष बम्बअीमें, अिस प्रकार दो बड़े शहरोंमें शराबबन्दी हुअी है। अगले साल तो अिस कामको सारे प्रान्तमें पूरा करना है। अुसके लिअे अभी और डेढ़ दो करोड़ रुपये चाहियें। यह समझमें आ सकता है कि अितने रुपये देनेकी बम्बअीकी ताक़त न हो। अिसलिअे अुसके वास्ते हमें केन्द्रीय

सरकारका दरवाजा खटखटाना पड़ेगा। अुससे लड़ना भी पड़ सकता है। जो लगे हुअे करके विरुद्ध चिल्ला रहे हैं, अुनसे मैं कहता हूँ कि यह केन्द्रीय सरकार आय कर, पेट्रोल कर वगैराका रुपया ले जाती है, अुसके खिलाफ़ क्यों नहीं चिल्लाते? असलमें अुन्हें तो अैसे मुद्दों पर केन्द्रीय सरकारसे लड़नेमें कांग्रेसकी प्रांतीय सरकारका साथ देना चाहिये। हमारे सारे प्रांतमें अगले साल पूरी शराब-बंदीका यह कार्यक्रम पूरा करनेके लिअे हमें केन्द्रीय सरकारसे मुक़ाबला करना भी पड़े। अगर हमारी बंबअी सरकारको अिस मुद्दे पर अैसा करना पड़े, तो मुझे अुम्मीद है कि अुसमें आप सबका साथ बंबअी सरकारको मिलेगा। कांग्रेस अपने आठों प्रांतोंमें शराबबंदीका यह कार्यक्रम पूरा करके ही चैन लेगी। कांग्रेस सरकार रहे या जाय, कोअी भी सरकार आये, वह अुसमें से अेक कील भी नहीं हिला सकती। यह काम ही अैसा है। अिसमें हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी, पारसी, हरिजन और दूसरे सबका कल्याण, सबकी बरकत है। आज यहाँ हज़ारों-लाखोंकी संख्यामें मज़दूरों और दूसरे सब वर्गोंकी दुनिया अिकट्ठी हुअी है, सो किसलिअे हुअी है? यही दिखा देनेके लिअे कि कांग्रेसी सरकारके अिस महान नैतिक कार्यको तमाम जनताका हृदयसे समर्थन और पृष्ठबल प्राप्त है।

शराबको आखिरी सलाम

कल रातको १२ बजे तक जिन्होंने बंबअीका तमाशा देखा होगा, शराबको आखिरी सलाम करनेवाले शराबियोंको रास्तेमें गिरते, लड़खड़ाते, बकवाद करते और दिमाग परसे सारा काबू खो बैठते देखा होगा, अुन्होंने शराबियोंका क्या हाल होता है यह आँखोंसे देख लिया है। आज भले ही वे बकते हों, कांग्रेसी सरकारको और आपको गालियाँ देते हों, लेकिन अगर अुनके घरोंमें झाँकेंगे तो आप देखेंगे कि अुनके बाल-बच्चे और स्त्रियाँ आज हज़ारों-लाखोंकी संख्यामें कांग्रेसी सरकार पर और आप पर आशीर्वाद बरसा रहे हैं। आप देखेंगे कि अुनके चेहरों पर कितनी खुशी और कितना अुल्लास है। कल रातके अुस भयानक दृश्यमें और आजके शांति और सुखके अिस नज़ारेमें कितना फ़र्क़ है, यह आप देख सकेंगे।

करोड़ोंकी बरबादी रोकना है

लंकाशायर कपड़ेके द्वारा हमारा जो साठ करोड़ रुपया ले जाता था, वह तो अथक प्रयत्न करके हमने बहुत-कुछ बचा लिया। अब अिस शराबके जरिये प्रजाके जो ७०-७५ करोड़ रुपये बरबाद होते हैं, वह भी बचाये बिना नहीं चलेगा। अिस बुरी चीज़का व्यापार करके सरकार अुससे करीब २५ करोड़की आमदनी करती है। साधारण हिसाबसे भी सरकारकी आमदसे तिगुना रुपया प्रजाकी जेबसे जाता है और अुसकी बरबादी और अधोगति होती है। जो लोग

वह कहते हैं कि अितनी आमदनीको छोड़कर आप बरबादी मोल लेंगे, धंधा-रोज़गार नष्ट हो जायगा और समाजकी आर्थिक व्यवस्था टूट जायगी, अुनसे मैं कहता हूँ कि बंबअीके धंधेवालों और धनिकोंमें बुद्धि है, अुन्हें रोज़गार करना आता है और कोअी बरबादी नहीं होगी। फिर भी अगर धनिकोंका व्यापार-धंधा और गरीबोंकी बरबादी, अिन दोनोंमें से चुनाव ही करना पड़े, तो मैं नम्रताके साथ कहूँगा कि गरीबोंको बरबाद करके हमें किसी रोज़गार-धंधेको नहीं बचाना है। हमें तो गरीबोंकी जेबसे निकल जानेवाले ७०-७५ करोड़ रुपये बचा लेने हैं।

परन्तु मैं तो मानता हूँ कि अिससे कोअी धन्धा-रोज़गार नष्ट नहीं होगा, कोअी आर्थिक व्यवस्था नहीं टूटेगी और किसीकी बरबादी नहीं होगी। गरीबोंके ७०-७५ करोड़ रुपये बचेंगे और समाजमें बँटेंगे, तो अुससे अुलटे सबके धन्धे बढ़ेंगे, विकसित होंगे और सब जगह बरकत ही फैलेगी, सबकी अुन्नति होगी और अमन-चैन छा जायगा।

सबके आशीर्वाद

लोकमान्यकी पुण्यतिथिके अिस पवित्र दिवस पर आपने जो मांगलिक कार्य किया है, अुसके लिअे बधाअी देनेवाले हज़ारों संदेश सारे देशमें से आपके पास आये हैं। सबके आशीर्वाद हैं, महात्माजीके आशीर्वाद हैं और खुद परमेश्वर भी आप पर आशीर्वाद बरसा रहा है।

मैं बम्बअी सरकारको बधाअी देता हूँ कि अुसने अटूट, अविरत और जीतोड़ परिश्रम करके, कुछ लोगोंकी नाराजी मोल लेकर भी अिस महान कार्यको पूरा किया है। मैं खास तौर पर डॉ० गिल्डरको अपने सच्चे दिलसे बधाअी देता हूँ। जो बहादुरी और हिम्मत, जो संयम, जो खामोशी और धीरज अिस कठिन समयमें अुन्होंने दिखाया है, वह बहुत कम लोग दिखा सकेंगे।

आजका यह विराट जलसा अद्‌भुत है। पुरानी सरकारके गुणगान करनेवाले तो अन्त तक कहते रहेंगे कि यह नहीं चलेगा। परन्तु जिसने आजका यह महान समारोह और ये दृश्य देखे हैं, वह अुन्हें अुम्र भर कभी नहीं भूलेगा; और आप सब अन्तमें अनुभव करेंगे कि अगर जिन्दगीमें कोअी बड़ेसे बड़ा कार्य करनेमें आपने भाग लिया है, तो वह आजका कार्य है।

हरिजनबंधु, ६-८-१९३९

९९

युद्धका अुद्देश्य स्पष्ट करो

[ता० २६-१०-१९३९ को बम्बअीके आज़ाद मैदानमें दिये गये भाषणसे ।]

विरोधी भी मानते हैं कि ये लोग शासन करना जानते हैं । ये जंगली गँवार नहीं हैं । वैसे तो राम-राज्यकी भी आलोचना करनेवाले धोबी निकल आये थे ।

* * *

गांधीजी कहते हैं कि जब दुश्मन मुश्किलमें फँस जाय तो अुसका साथ देना चाहिये । मगर हमने कहा कि दुश्मन अैसा हो जो बादमें गला दबाये तो ?

सन् चौदहकी लड़ाअीमें सौ करोड़ रुपये असेम्बलीमें प्रस्ताव करके दिये थे और लड़ाअी खतम होने पर जलियाँवाला बाग मिला ।

ये दोनों अेक दूसरेको चोर और गिरहकट कहते हैं। तो फिर अिनसे पूछें तो सही कि अभी जो लड़ रहे हो, अुसका अपना अुद्देश्य तो स्पष्ट कर दो । अिस पर वे कहते हैं कि अिस वक्त हम संकटमें हैं, तब क्यों पूछते हो ! हमने कहा कि हमारा खयाल था कि कठिनाअीमें तुम सच बोलोगे । तो कहते हैं कि हमें मालूम नहीं कि हम किस लिअे लड़ रहे हैं। तब हम कहते हैं कि हमें मालूम है ।

तुम दोनों जहन्नुममें पड़ो तो भी हमें क्या ! तुम तो कहते थे न कि हम पोलैण्डके साथ हैं। पोलैण्डके साथ हों या न हों, परन्तु पोलैण्ड तो खतम ही हो गया न !

हमें डराते हैं कि हम चले जायँगे तो कौन आयगा यह जानते हो ? हम कहते हैं, हाँ । शायद जर्मनी आ जाय, हिटलर आ जाय। अुसकी बेड़ियाँ लोहेकी होंगी । तुम्हारी चाँदीकी बेड़ियाँ हैं, तो भी हमें वे भारी लगती हैं।

हमें मालूम है कि तुम अुनसे अच्छे हो । लेकिन बादमें हमारा गला दबाना हो तो दोनों ही कुअें में पड़ो । तुम्हारी नीयत खराब हो तो दोनों ही खतम हो जाओ, फिर हम देख लेंगे।

भारत मंत्रीने वाअिसरॉयसे जो बयान दिलवाया है, वह घमण्डसे भरा हुआ और नशेमें चूर है। परन्तु रावणके समयसे ही मदोन्मत्तोंका घमण्ड अिसी तरह चूर हुआ है।

अिस समय अुनका खयाल यह है कि हिन्दुस्तान साथ नहीं देगा तो जबरदस्तीसे लेंगे। तो मैं कहता हूँ कि १९१४-१७ का समय चला गया है। वहाँ लड़ाअी और यहाँ फौजी शासन चलाना पड़ेगा। हिन्दुस्तानका साथ चाहिये तो गांधीजीके आशीर्वाद प्राप्त करो।

* * *

तुम कौन हो? तुम्हें पैंतीस करोड़को बिना पूछे लड़ाअीमें फँसानेका क्या अधिकार है? हमसे दुश्मनी की, तो हिटलर तो जो करेगा सो करेगा, मगर अिन पैंतीस करोड़का शाप लगेगा तो भस्म हो जाओगे।

* * *

हमारे पास नैतिक बल है। अेक-अेक कदम हिसाब लगाकर अुठाया जाता है। हमें अीश्वरका और जगतका साथ है। हमें तैयारी करनी है। हमें तो शराफतसे स्वतंत्रता लेकर दुनियाको बताना है।

विलायतके अखबार अभीसे लिखने लगे हैं कि ये तो हमारी मुसीबतसे फायदा अुठाकर हमसे छीनना चाहते हैं। तब मैं कहता हूँ कि यह तो तुम्हारे बापदादोंका धंधा है। यह पूछनेमें कि तुम्हारी नीयत क्या है, हमने तुम्हारी मुसीबतसे और तुम्हारे संकटसे क्या बेजा फायदा अुठाया?

१००

विश्वयुद्ध

१

[ता० ५-११-१९३९ को अहमदाबादमें गुजरात प्रान्तीय समितिकी सभामें दिये गये भाषणसे।]

*　　　*　　　*

लड़ाअी दो शक्तियोंमें हो रही है। अेक शक्ति, जिसका प्रतिनिधित्व जर्मनी कर रहा है, नाजीवाद है; और दूसरी शक्ति फ्रांस और ब्रिटेनकी साम्राज्यवादकी है। अिन दो शक्तियोंके बीचमें लड़ाअी है। अुसमें हिन्दुस्तानको अुससे पूछे बिना ही फँसा दिया है। हिन्दुस्तान स्वतंत्र होता तो शायद अमेरिकाकी तरह फैसला करता। हिन्दुस्तान पर जो सल्तनत है, अुसने घोषणा की है कि हिन्दुस्तान लड़ाअीमें शामिल है।

यह वांछनीय नहीं है कि जर्मन राज्य या अुस प्रकारकी शक्ति दुनिया पर छा जाय।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद और जर्मन नाजीवाद, अिन दोनोंमें से हिन्दुस्तानके लिअे कुछ पसन्द करने जैसा नहीं है। ये दोनों शक्तियाँ लड़ती हों और अुसमें अपने साम्राज्यकी सत्ता मजबूत करके हिन्दुस्तानकी गुलामी स्थायी बनानी हो, तो अुसमें साथ देनेमें सार नहीं है।

*　　　*　　　*

भारत मंत्रीने कहा कि मेरे कण्ठमें प्राण आ गया है, हम मुश्किलमें हैं, अैसे समय अिस तरहके बेढंगे सवाल मत पूछो। बात सच है। मगर जब कठिनाअीमें नहीं होते, अुस वक्त अैसा सवाल पूछते हैं, तो आँखें दिखाते हैं। और तुम्हारी यह स्थिति कोअी हमारी पैदा की हुअी नहीं है।

*　　　*　　　*

यह लड़ाअी लम्बी चलेगी। अभी अिस नाटकके पूरे परदे नहीं खुले हैं। रूस और जर्मनीकी सुलहके भीतर क्या-क्या दावपेंच हैं, यह हमें पूरी तरह नहीं मालूम है। पूरी बातें सामने आयें तब मालूम हो। अिसलिअे किसीको दौड़धूप करनेकी ज़रूरत नहीं है। सरकारके साथ तुरन्त लड़ बैठनेको कोअी प्रोत्साहन नहीं देता। कांग्रेस अेक-अेक कदम फूँक-फूँक कर रखना चाहती है। हमें पिछले आन्दोलनोंके अनुभव परसे विचार कर लेना चाहिये। पूरी तरह शांतिका

वातावरण नहीं बनायेंगे तो अुसमें खतरे हैं। अुसमें से जो ज़हर पैदा होगा, अुसका भार सहन नहीं किया जा सकेगा। अिसलिअे लड़ाअीकी जल्दी न कीजिये, परन्तु लड़ाअी लड़नेके लिअे अनुकूल वातावरण तैयार कीजिये। कांग्रेसमें कोअी फूट हो, तो अुसे मिटा दीजिये। जातियोंमें आपसी ज़हर हो, तो अुसे मिटा दीजिये। वातावरणको निर्मल बनाअिये, ताकि सत्याग्रहका बीज बोनेके लिअे ज़मीन तैयार हो।

हिन्दुस्तानमें गांधीजीको अलग रख कर सत्याग्रहकी लड़ाअी लड़ सके अैसी कुशलता किसीमें नहीं है। लोगों पर अितना असर किसीका भी नहीं है।

* * *

लड़ाअी चलने पर कौन पार अुतरेगा, यह अभी नहीं कहा जा सकता। पार तो अीश्वर ही लगायेगा। नासिक जेलमें मालूम है न बड़े-बड़े महारथी थे, परन्तु पूणी गाँवके छोकरेने अँगूठा पकड़नेसे अिनकार कर दिया और स्वाभिमानकी रक्षाके लिअे सख्त मार खाअी। हम अीश्वरसे माँगें कि अैसे मौकों पर कष्ट सहन करनेकी अैसी ही शक्ति दे।

हमें यह समझकर काम करना चाहिये कि हम फिर नहीं मिलेंगे। अिस वक्त स्थिति अैसी है कि चिनगारी लगते ही धड़ाका हो जाय।

* * *

सरकारको तंग करनेके लिअे नहीं लड़ना है। सरकार जिस सत्ताके साथ लड़ रही है, वह जीत जाय अिसलिअे भी नहीं लड़ना है। आजकी दुनिया कल नहीं रहेगी। हम अपना कर्तव्य करें और अपना हिस्सा अदा कर दें।

२

[ता० ६-११-१९३९ को अहमदाबाद लोकल बोर्डके मैदानमें सार्वजनिक सभामें दिये गये भाषणसे।]

* * *

हिन्दुस्तान दुनियाका पाँचवाँ हिस्सा है। परन्तु सुबह अुठकर अखबारमें पढ़ा, तब मालूम हुआ कि हमारे देशको युद्धमें सम्मिलित घोषित कर दिया गया है।

हम चटपट निर्णय नहीं कर सकते, क्योंकि ब्रिटिश सल्तनतके साथ जुड़े हुअे हैं। हमारी अिच्छा हो या न हो, परन्तु हमारी राजनैतिक परिस्थिति अैसी है कि हम अुसके सुख-दुःखसे बँधे हुअे हैं। अुस पर आअी हुअी आपत्तिका प्रतिबिम्ब हिन्दुस्तान पर पड़े बिना नहीं रह सकता।

* * *

अंग्लैण्ड अैसा दावा करता है कि वह छोटे-छोटे देशों पर होनेवाले आक्रमणको स्थायी रूपसे रोकनेके लिअे लड़ रहा है। अिसमें चोर कौन और साहूकार कौन, अिसका फैसला कौन करे? अिसका न्याय तो पंच ही कर सकते हैं। मगर हिटलरने पंचायत नामंजूर कर दी।

हम स्वतंत्र हों तो भी हमारा झुकाव पंचसे न्याय करानेवालेके पक्षमें होगा। तलवारसे न्याय करानेवालेके पक्षमें नहीं होगा। अिसलिअे सहानुभूति अंग्लैण्डकी तरफ ही जाती है।

* * *

अंग्लैण्डको ब्रिटिश साम्राज्य कायम रखना होगा। मगर हम जैसे नाज़ी-वादका नाश चाहते हैं, वैसे ही साम्राज्यका भी नाश चाहते हैं। अगर हमसे यह कहा जाय कि ब्रिटिश साम्राज्यकी मदद करके नाज़ीवादका नाश करनेमें सहायता दीजिये, तो हम यही कहेंगे कि अैसी हालतमें तुम दोनों भले ही लड़ कर मर जाओ।

* * *

हमारे देशको लड़ाअीमें शामिल करने के चार दिन बाद वाअिसरॉयने कांग्रेसके प्रतिनिधियोंकी गैर-मौजूदगीमें धारासभामें भाषण दिया। कांग्रेस दलकी अनुपस्थितिका अुल्लेख तो नहीं किया, परन्तु गांधीजीकी बिलाशर्त मददका भी ज़िक्र नहीं किया। यह है अंग्रेज़ोंकी राजनैतिक कुशलता!

बादमें वाअिसरॉय साहबने कांग्रेसके बड़े नेताओंको बुलवाया। मुस्लिम लीगवालोंको भी बुलवाया। यहाँ तक तो ठीक। अुसके बाद तो तेली, तमोली, मोची जिस किसीने मांग की, अुसीको बुलवाने लगे। गोलमेज़ परिषद् जैसा कर दिया। फिर वाअिसरॉय साहबने जब बयान प्रकाशित किया, तब मालूम हुआ कि दुनिया अिधरसे अुधर हो जाय, परन्तु ब्रिटिश साम्राज्यवादका रंग नहीं बदल सकता।

तब कांग्रेसने प्रस्ताव किया कि तुम्हें अपने अुद्देश्य स्पष्ट करनेमें लड़ाअीका बहाना नहीं करना चाहिये। तो कहते हैं कि हिन्दुस्तान तो हमारे लिअे अेक पवित्र ट्रस्ट है। परन्तु यह ट्रस्ट आपको सौंपा किसने? जो रॉबर्ट क्लाअिव और अुनके जैसे लोग आये थे अुन्होंने? जवाबमें कांग्रेस कहती है कि अुसके पास भी भारतकी जनताका पवित्र ट्रस्ट है।

* * *

वाअिसरॉय साहब कहते हैं कि अुन्हें आघात पहुँचा है। थोड़े समयमें यह परिस्थिति बदल जायगी। मगर वे कहते हैं कि हिन्दू-मुसलमान दोनों अेक नहीं होते। परन्तु अिसमें आपके बीच-बचावकी क्या ज़रूरत थी? वाअिसरॉय

साहब कहते हैं कि अभी मेरी कोशिश जारी रहेगी। हाँ, यह तो बालूमें से तेल निकालने जैसा है। अिसलिअे कांग्रेसका हुक्म है कि अैसी भूमिका तैयार की जाय कि जैसे दाँडी-कूच शुरू होते ही सारे हिन्दुस्तानमें आग लग गअी थी, वैसे ही अब भी लग जाय।

* * *

ये राजा लोग अंग्रेजोंसे कहते हैं कि हमारी तमाम साधन-संपत्ति आपकी सेवामें है। वह तो है ही। अिसमें नअी बात क्या कहते हो! परन्तु देशी राज्योंकी प्रजामें से भी क्या कोअी अैसा कहता है?

* * *

सरकार कहती है कि मुसलमान हैं, हरिजन हैं, राजा हैं। और ये सब अेक हो जायँ तो भी हमारे अंग्रेज हैं। अुनका क्या होगा? अिस पर गांधीजी कहते हैं कि अिस आखिरी बातमें तुम्हारी बदनीयत मालूम होती है। अिसलिअे अब तो जो अिन्साफ़ करनेवाला अूपर बैठा है, वही करेगा।

दुनियासे यहाँ अितने लोग आये हैं। किसीको अिनकार नहीं किया। यही कहा कि तुम भी रहो। तो कहते हैं नहीं, हम तो यहाँसे धन ले जानेको रहेंगे।

मान लीजिये कि अंग्रेज चले जायँ और अुनकी सवा लाखकी जो फौज है, वह बंदूक लिये फिरती रहे। जब पोलैंडकी बीस लाख सेनाको पन्द्रह दिनमें खतम कर दिया, तो अिस सवा लाख फौजको तो सवा घंटेमें ही खतम कर देगा।

हमको अैसी स्थितिमें ला पटका है कि कोअी भी प्रांत अपना बचाव नहीं कर सकता। फिर भी यह खयाल नहीं आता कि हमारी हड्डियाँ चूर-चूर हो जायँगी, तब अिन लोगोंका क्या होगा?

परन्तु कांग्रेस कहती है कि हमारे पास बहुत शक्ति है। हमारे पास नैतिक शक्ति है। अुसका हमने खासा परिचय भी दे दिया है।

अब मौजूदा स्थितिमें हमें लड़कपन छोड़ देना चाहिये। कोअी कहता है कि हमारा समाजवादी दल अलग है, कोअी कहता है हमारा फॉरवर्ड ब्लॉक है। रॉयिस्ट कहते हैं कि मंत्रीपद क्यों छोड़े? अिस तरह हल्दीकी गाँठ लेकर पसारी बनना छोड़ देना चाहिये। अैसी अलग-अलग बातें छोड़कर सबको अेक आवाज़से चलनेका वातावरण पैदा करना चाहिये।

३

[ता० ८-११-१९३९ को अहमदाबादके कार्यकर्ताओंके सामने दिये गये भाषणसे ।]

*   *   *

अैसा कहते हैं कि जर्मनी जीत गया, तो दुनियामें कोअी शांतिसे नहीं रह सकेगा । परन्तु हिन्दुस्तानको हमेशाके लिअे गुलाम नहीं रखना हो, तो अिन दोनों शक्तियोंका लड़ मरना ही अच्छा है । बादमें हिन्दुस्तानको भी अपनी स्वतन्त्रताके लिअे लड़नेकी ज़रूरत नहीं रहेगी । जब हम पूछते हैं कि हरअेक देशको अपना आत्मनिर्णय करनेका, अपना विधान बनानेका अधिकार रहेगा या अुसमें दखल दोगे; तो अुसका सीधा जवाब नहीं देते । अभी टालमटोल करते हैं । आशा तो सीधे जवाबकी रखी गअी थी, मगर वे कहते हैं कि तुम्हारे यहाँ कितने दल हैं ! हिन्दू, मुसलमान, पारसी, हरिजन; और वे सब अेक हो जायँ, तो भी हमारे अंग्रेज़ हैं । हम अिन सबके संरक्षक हैं । तुम सबके संरक्षक हो तो फैसला कर लो ।

*   *   *

आखिर तो हरअेक मुल्ककी आज़ादीका आधार अुसकी शक्ति पर है । अंग्रेज़ोंकी कमज़ोरी पर हमारी स्वतन्त्रताका आधार नहीं है । अपनी दुर्बलताअें हमें ही मिटानी चाहियें । गांधीजी मीठी किन्तु कठोर भाषामें हमारी कमजोरियोंको दूर करनेके लिअे कहते हैं ।

*   *   *

कांग्रेस हिन्दुस्तानमें अेक जबरदस्त संस्था है । अुसके पास केवल नैतिक शक्ति है । परन्तु दो-चार आदमियोंके त्याग पर हमारा बहुत दिन गुज़ारा नहीं हो सकता । गांधीजीकी तपस्यासे अेक संगठन बना । अच्छे-बुरे आदमी अंदर आ गये । नदीमें जब बाढ़ आती है, तब अुसमें कूड़ा-करकट भी बहकर आ जाता है; और अुसी तरह आदमी भी अंदर घुस आते हैं । पर बाढ़ अुतरने पर स्थायी काम करनेवाले कितने रह जाते हैं, अुस पर शक्तिका आधार है ।

*   *   *

हिन्दुस्तानकी स्थिति दूसरे देशोंसे भिन्न है । बम्बअीके बन्दरगाहमें आकर दो गोले फेंक दें, तो हमारे पास दो पटाखे भी छोड़नेको हैं ! हिन्दुस्तानमें तो कागज़के घोड़े हैं ।

पोलैण्डके मुक़ाबलेमें हम पर चढ़ाअी करे, तो डेढ़ घंटेमें सफाया कर दे ।

अुन्होंने तो थोड़ेसे जाट, थोड़ेसे गोरखे और थोड़ेसे मुसलमानोंको अेक दूसरेके खिलाफ़ करके हमें दबानेके लिअे रख छोड़ा है। ६०० तो राजा हैं। सारी दुनियामें जितने नहीं अुतने यहाँ हैं।

* * *

सरकार तो अपना खेल खेलती ही जा रही है। अुसके दलाल भी अपना काम करते ही जा रहे हैं। हम आपसमें लड़ें तो यह हमारी कमज़ोरीकी निशानी है। अगर हम समझ लें तो हमारे पास जो शक्ति है, वह दुनियामें किसीके पास नहीं है।

१०१

ठक्कर बापा

[ता० २९-११-१९३९ को बम्बअीमें ठक्कर बापाकी ७०वीं जयन्ती मनानेके लिये राजाजीकी अध्यक्षतामें हुअी सभामें दिये गये भाषणसे।]

* * *

हिन्दुस्तानमें सार्वजनिक जीवनमें काम करनेवालोंकी अुम्र बहुत छोटी होती है। स्व० गोखलेसे लेकर देखेंगे तो पता चलेगा कि शायद ही कोअी अपना शरीर सुरक्षित रख सकता है। ठक्कर बापाने संयमसे अपने शरीरकी रक्षा की है। अितना सफर और दौड़-धूप करते हुअे भी वे शरीरकी कैसे रक्षा करते हैं, यह आश्चर्यकी बात है। अिसी तरह संयम रखेंगे, तो जैसा गांधीजीका आशीर्वाद है वे बाकीके तीस बरस पूरे कर लेंगे।

हम प्रार्थना करते हैं कि अीश्वर अैसे ही और तीस बरस देकर बापाको अिसी तरह सेवा करने दे।

१०२

शोलापुर म्युनिसिपेलिटी

[ता० १-१२-१९३९ को शोलापुर म्युनिसिपेलिटीकी तरफ़से मानपत्र दिया गया था। अुसके जवाबमें दिये गये भाषणसे।]

* * *

हमारे लोगोंको यह तालीम नहीं मिलती कि शहरोंमें कैसे रहना चाहिये। अिस तरह काम नहीं चलेगा। हमारा शहर अेक प्रकारका नरकवास है। आपने पश्चिमके शहर नहीं देखे हैं। वे अपने शहरोंको स्वर्ग बना लेते हैं, हम नरक बना देते हैं।

हम अपने बच्चोंको आँगनमें ही टट्टी बिठा देते हैं, खिड़कीसे कूड़ा फेंकते हैं, पानी भी फेंकते हैं। अुस गंदगी पर मक्खियाँ बैठती हैं। अुनसे बीमारियाँ फैलती हैं।

पश्चिममें देखिये तो अुनके पाखाने अुनके दीवानखानोंसे ज्यादा साफ रहते हैं।

* * *

बचपनमें हम जितनी गंदगी करते हैं, वह माता साफ करती है। अिस तरह ये भंगी हमारी माताका काम करते हैं।

* * *

यहाँकि बराबर मृत्यु-संख्या कहीं नहीं है। अिसके दो कारण हैं: अेक तो खानेको जितना चाहिये अुतना नहीं मिलता; और दूसरे जिस ढंगसे खाना चाहिये अुस ढंगसे हम नहीं खाते।

* * *

गरीब मुहल्लोंमें कैसी स्थिति है, अिस परसे म्युनिसिपेलिटीके अिन्तज़ामकी परीक्षा होती है।

* * *

अेक और अनुभवकी बात कहना चाहता हूँ। अधिकारियोंके काममें रोज़-रोज़ दखल नहीं देना चाहिये। अधिकारीका चुनाव करते समय देख लेना चाहिये कि वह लायक है या नहीं। परन्तु बादमें रोज़ हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।

दूसरे, म्युनिसिपेलिटीमें जितना काम है, अुसमें तीन चौथाअी अिंजीनियरका काम होता है। म्युनिसिपेलिटीको पंद्रह बीस बरस अैसा अच्छा अिंजीनियर रखना चाहिये, जिस पर भरोसा किया जा सके।

अिस ढंगसे काम नहीं करना चाहिये कि छः-छः महीने मंजूरी मिलनेमें ही लग जायँ।

सरकारका सहयोग हो या न हो, हम म्युनिसिपेलिटीकी ज़िम्मेदारीसे नहीं बच सकते।

* * *

मेरा अनुभव है कि ७५ गैलन पानीसे कममें मनुष्यका काम नहीं चलता।

युरोपमें तीस वर्षका विचार करके पानीकी योजना बनाते हैं और तीस वर्षका हिसाब लगाकर क़र्ज लेते हैं और अुसके लिअे कर लगाते हैं।

हमारे यहाँ पहले पानीकी प्याअू लगाते थे, बावड़ियाँ खुदवाते थे। अिसमें पुण्य माना जाता है। ये जो जलाशय बनाये जाते हैं, सो तो लोगोंके रुपयेसे बनाये जाते हैं। हम केवल ट्रस्टी है। अखूट, साफ पानी मुहैया करना हमारा कर्तव्य है।

पानीकी अैसी योजना कर देनेके बाद ज़मीनके नीचे गटर (ड्रेनेज) न बनाना तो बीमारी पैदा करनेकी बात है।

१०३
शोलापुरके व्यापारियोंसे

[ता० १-१२-१९३९ को शोलापुर व्यापारी मंडलके मानपत्रके जवाबमें दिये गये भाषणसे।]

* * *

कुछ लोग कहते हैं कि कांग्रेसने काश्तकारी कानून (टिनेन्सी अेक्ट) बना दिया, ऋण-राहत कानून बना दिया और दूसरे कानून बना दिये, अिसलिअे अब कांग्रेस पर अविश्वास हो गया है। परन्तु मैं जहाँ जाता हूँ वहीं व्यापारियोंकी श्रद्धा ज्योंकी त्यों पाता हूँ। देहातके गरीब किसानोंका फायदा नहीं करेंगे, तो व्यापार किसके आधार पर करेंगे?

* * *

आठ प्रान्तोंका जो काम मुझे सौंपा गया था, वह बड़ा नाज़ुक था। अुसमें कुछ लोगोंने शोर भी मचाया। मुझे देशके हितके लिअे बड़े बड़े आदमियोंको अलग करना पड़ा। अैसा करनेमें मेरे दिलको जो चोट लगी, वह तो मैं ही जानता हूँ। मगर शोर मचानेवालोंने यह नहीं सोचा कि अुन्हें निकाल देना भी मेरे हाथमें थोड़े ही था? वह तो पार्टीका काम था।

* * *

मैं पिछली बार आनेवाला था, परन्तु बीमार पड़ गया। तब अखबारवालोंने लिखा कि यह तो राजनैतिक बीमारी है, अिसलिअे नहीं आये। मुझे राजनैतिक बीमारीका पता नहीं है। शरीर मिट्टीका पुतला है, कभी कभी बीमारी आ जाती है।

* * *

हिन्दुस्तानके तीन तरफ समुद्र है। मगर हमारा न जहाज़ है, न व्यापार; क्योंकि हमारे पास सत्ता नहीं है, हमारा मुल्क हमारे पास नहीं है।

* * *

जो हिंसाके बल पर सारी तैयारी करते हैं, अुनके दिलमें डरके सिवाय और कोअी चीज़ नहीं होती।

* * *

पोलैण्ड न लड़ता और अहिंसासे सामना करता और हार जाता, तो भी दुनिया अुसे याद रखती। मगर आज कोअी पोलैण्डका विचार नहीं करता। क्योंकि वह लड़ते-लड़ते मरा है।

* * *

मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि कांग्रेस किसीका बुरा नहीं करेगी। मगर जो भूखों मर रहे हैं, अुन्हें पहले खानेको देना चाहिये।

१०४

हमारे डॉक्टर

[ता० १३-१२-१९३९ को अहमदाबादमें लाख दरवाजे पर डॉ० मनुभाअी त्रिवेदीके दवाखानेकी अुद्घाटन क्रिया करते समय दिये गये भाषणसे।]

* * *

डॉक्टरी पेशा अख्तियार करनेमें अेक साधारण आकर्षण रहता है कि यहाँ ये मिशनरी हैं तो मैं क्यों न डॉक्टर बन कर सेवा करूँ? मगर लोभ दम घोंट देता है और कुटुम्बका भार दबा देता है।

हमारे पास सत्ता हो तो अैसा कानून बनाना चाहिये कि डॉक्टर बननेके लिअे बाहर न जाने दिया जाय। अिससे करोड़ों रुपया विदेश चला जाता है।

डॉक्टरोंको अिकट्ठे होकर यह सोच लेना चाहिये। अुन्हें अपनी संस्था बनाकर अपने देशमें ही डॉक्टरी विद्याके बड़े-बड़े प्रयोग करने चाहियें।

युरोपमें जो डॉक्टर हैं, अुनमें ज्यादातर शौकके लिअे डॉक्टरी करते हैं, धन कमानेके लिअे नहीं।

अेक मित्रने मुझसे कहा था कि जब अुसका अिलाज हो गया, तो अुसने डॉक्टरको पाँच सौ पौण्डका चेक दिया। मगर डॉक्टरने सौ रख कर बाकी लौटा दिये।

मनुभाअीने जो विचार बताये हैं, अुन पर अमल करनेकी अिच्छा है, तो हम आशीर्वाद दें कि मनुभाअी अहमदाबाद और गुजरातकी सेवा करें और पिताके कदमों पर चल कर अपनी सुगंध फैलायें।

१०५

राजपीपलाकी लोकसभा — २

[ता० २९-१२-१९३९ को राजपीपलाकी लोकसभामें अध्यक्षपदसे दिये गये भाषणसे।]

* * *

मुझे राजपीपलाके प्रति स्वाभाविक आकर्षण रहता है। क्योंकि हज़ारों भील लोगोंके समूह, जो भगवानके लोग है, जिनमें पाप नहीं है, दुःखसे जल रहे हैं, अुसका मुझे बड़ा दुःख होता है। और अिसलिअे मुझे काम होते हुअे भी जब राजपीपला बुलाते हैं, तब मैं अिनकार नहीं कर सकता। जब मैं अिस राज्यकी सरहदमें पहुँचता हूँ, तब अिन लोगोंके झुण्डके झुण्ड अुमड़ आते हैं। वे अेक ही आशासे आते हे कि कोअी अुनकी सुननेवाला है और अुनके दुःख दूर होंगे। अिस भावनासे भगवानके ये सब लोग आते हैं, अिसीलिअे यहाँ आता हूँ। आज भी जब मैं राजपीपलामें आया हूँ और अिस नगरमें भीलोंकी कतार लगी हुअी देखता हूँ, तब मुझे भूतकालकी याद हो आती है।

आज आप सब सफेदपोश बड़ी तादादमें यहाँ सामने बैठे हैं और वे भील भाअी दूर-दूर बैठे हैं, मगर राज्यके महादुःखका भार अुन पर है। अुनमें न अपने दुःख रोनेकी ताकत है और न भाषण देनेकी हिम्मत। मैं अुनकी आँखोंमें वह दुःख देख रहा हूँ। अुनके चेहरोंसे पहचान सकता हूँ कि अुन्हें जितना दुःख है, अुतना और किसीको नहीं है। अिसलिअे वह दुःख दूर करनेकी मेरी अिच्छा है, और अुसे दूर करनेके लिअे हमें जिम्मेदार हुकूमत माँगना चाहिये और अुसे लेना चाहिये।

अगर राजा अच्छी तरह राज्य करता हो, वह प्रजाका सच्चा सेवक हो, तो हमें कुछ भी बोलनेकी ज़रूरत नहीं रहती। परन्तु कितना ही अच्छा राजा होने पर भी वह अपने राज्यमें न रहे, सालमें छः महीने विदेशोंमें रहे और प्रजाके हज़ारों रुपये विदेशोंमें खर्च हों, विदेशोंमें जायदाद बनाअी

जाती हो, और जब छः महीने देशमें आये, तब भी तीन महीने तो दिल्ली और शिमलामें बीत जायँ और बाकी तीन महीने राज्यमें रहे, अुस समय भी महलमें बैठे-बैठे अिन भील लोगोंको हुक्म मिले कि राजा शिकार करेगा, हाँका करनेको तैयार रहो और अगर शेर बीचमें आ जाय और प्राणघातक हमला करे, तब भी राजाके सिवाय अुसे कोअी न मार सके, तो हमारा धर्म है कि हमें राजाको राजधर्म सिखाना चाहिये। न सिखायें तो हम प्रजाधर्म भूलते हैं और राजद्रोही बनते हैं। हमें किसीकी खुशामद नहीं करनी है।

हिन्दुस्तानके राजाओंको किसीने बिगाड़ा है, तो अुनकी प्रजाने ही। रियासतोंमें जो राजाके खुशामदी हैं, अुनको हमें चेतावनी देनी चाहिये। अुन्हें यह समझ लेना चाहिये कि वे प्रजाका और अपना भी द्रोह करते हैं। अिसलिअे वे खुशामद छोड़ दें। राज्यको सच बात कह देनी चाहिये और अैसा करनेमें कुछ भी दुःख या आपत्ति आ पड़े, तो अुसे सहन करनेको तैयार रहना चाहिये। अिसीका नाम सच्चा राजधर्म है। प्रजाका यह सच्चा धर्म है।

* * *

हमें राज्यको साफ़-साफ़ कह देना चाहिये। अगर प्रजामें राज्यको कह देने जितनी ताकत न हो, तो मुझे यहाँ नहीं बुलाना चाहिये। आपकी हिम्मत न हो तो अभी ठहर जाअिये, धीरज रखिये; क्योंकि हिन्दुस्तानके सभी राजाओंके शासनका अब अेक ही बारमें फैसला हो जानेवाला है। हमें राजासे कह देना है कि हम मित्र हैं, दुश्मन नहीं। परन्तु यह मित्रता अैसा कहती हो कि अिस प्रकारका अन्धेर चलने दो, तो यह नहीं हो सकेगा। यदि कोअी यह कहता हो कि साम्राज्य अुनकी पीठ पर है, तो यह बात भी अब स्पष्ट हो गअी है कि अुसने राजाओंसे कह दिया है कि तुम जानो और तुम्हारी प्रजा जाने।

* * *

आपको रियासतके आमद-खर्चका हिसाब देखना चाहिये। राज्यको भी अपना हिसाब छपवा कर किसानोंके सामने, जो कर देते हैं, पेश करना चाहिये। अुस हिसाबकी जाँच होनी चाहिये। राजाके खानगी खर्चमें कितना लगता है, अुसे प्रजाको जानना चाहिये और रैयतकी भलाअीमें कितना खर्च होता है, अिसका भी हिसाब जानना चाहिये। यह जाननेका प्रजाको अधिकार है।

अिस राज्यमें आठ लाख रुपया तो शराबकी आमदनी है। अिसीलिअे तो महुअेके साथ मुहब्बत बढ़ गअी है। अिसमें हम पापके भागीदार बनते हैं। राज्यमें शराबखाने बन्द होने चाहियें। ब्रिटिश भारतमें — सरहदके सूरत जिलेमें — वे बन्द होने लगे हैं। यहाँ भी वैसा ही होना चाहिये और

जल्दी ही होना चाहिये। क्योंकि आसपासके क्षेत्रमें वे बन्द होने लगे हैं। पर अिस क्षेत्रके लोग शराब छोड़ना हो तो भी नहीं छोड़ सकते। जब मैं बारडोली जाता हूँ, तब यहाँके भील लोग मुझसे मिलने आते हैं और कहते हैं कि हम पर शराब छोड़नेका आन्दोलन करनेके कारण जुल्म किया जाता है। यह कैसे सहन हो सकता है? जब मैं यहाँ आता हूँ, तब मेरे सामने अर्जियोंका ढेर लग जाता है। ये अर्जियाँ गरीब भीलोंकी हैं, किसी शहरी या अुच्च वर्णके लोगोंकी नहीं हैं। बहुतसे भील बेचारे स्टाम्प लगाकर मुझे अर्जियाँ देते हैं। अिस राज्यमें अुनकी कोअी सुनता नहीं होगा, अिसलिअे अैसी अर्जियाँ मेरे पास आती हैं।

* * *

मगर ज़िम्मेदार हुकूमतके लिअे तो शांत ताकत पैदा करनी चाहिये। कोने-कोनेमें लोकसेवक खड़े करने चाहियें। आजकल तो गाँवोंमें कोअी मालिक ही नहीं है। रिश्वतखोरीकी बुराअी अितनी गहरी घुस गअी है कि रिश्वत लेनेवालेको कोअी पूछनेवाला ही नहीं है। अुसपर मुकदमा भी नहीं चलता। नौजवानोंको स्थायी रूपसे देहातमें जाना चाहिये। तभी यह बोझा अुठाया जा सकता है।

* * *

आपको ज़िम्मेदार हुकूमतकी माँग करनी हो, तो यह भार राजपीपला, वाघोड़ियाकी शहरी आबादीको अुठाना चाहिये। लड़ाअी लड़ने पर जो दुःख आते हैं, अुन्हें अुठानेको तैयार रहना चाहिये, और अिन भीलोंको भी तैयार रखना चाहिये। तभी यह काम हो सकता है, क्योंकि ये गरीब लोग अभी कुछ समझ नहीं सकते।

* * *

निन्दा करके राज्यकी खुशामद पर जीनेसे मरना अच्छा है। संगठनके सिवाय और कोअी अुपाय नहीं है।

मगर अुसकी तहमें आपके दिलकी सफाअी होनी चाहिये। वह न कर सकें तो कुछ नहीं हो सकता। हमें यह कहनेका अधिकार है कि राज्य सोने जैसा चलता हो, तो भी हमें ज़िम्मेदार हुकूमत चाहिये। हम यह कह सकते हैं कि राज्यमें किसी भी तरहकी भूल न हो, तो भी हमें अपना ही शासन चाहिये। हमारे घरका काम कोअी पड़ोसी नहीं चलाता। अुसी तरह राज्य भी हमींको चलाना चाहिये। हाँ, राजाका अुसमें स्थान है। हम राजाको मिटा नहीं देंगे; यद्यपि कुछ संयोगोंमें प्रजाको वैसा करनेका अधिकार है, यह न भूलना

चाहिये । कोअी राजा नादान साबित हो तो अुसे हटा देनेका प्रजाका हक्क हरअेक राज्यमें माना गया है ।

राजा प्रजाके दुःखमें भाग ले, अिन गरीब और अज्ञान भीलोंमें दौरा करे, अुनकी झोंपड़ियोंमें जाकर देखे कि अुन्हें क्या दुःख है और ज़रूरत होने पर अुन्हें मदद दे, तो हम अैसे राजाको सिर पर चढ़ा कर नाचें। हिन्दुस्तानके प्राचीन राजा तो जब तक अेक भी आदमी भूखा रहता था, तब तक सोते नहीं थे; क्योंकि वे राजा प्रजाके रक्षक थे । आजकलके राजा कहते हैं कि यह हमारा पैतृक अधिकार है । सेवाका हक तो खो बैठे और प्रजा पर जुल्म करनेका पैतृक अधिकार जमाना सीख गये।

* * *

यह अेरोड्रोम, जहाँ मैं आज सुबह आया, लोगोंकी ज़मीन पर बना है। और मैं मानता था कि अुस ज़मीनका रुपया मिल गया होगा। मगर अभी तक लोगोंको वह रुपया नहीं दिया गया । अगर आपको ज़मीन लेनी हो, तो अिन्साफसे लीजिये, कायदेसे लीजिये और जो क़ीमत हो सो दीजिये । फिर गज़टमें जो घोषणा की गअी है, वह कुछ अच्छी नहीं मालूम होती। अतः किसी अेक आदमीकी जायदाद लूटी जाती हो, तो प्रजाको अुसका संगठित विरोध करना चाहिये, अुसमें रुकावट डालनी चाहिये ।

यह भी कह रहे हैं कि अब लैंड अेक्विज़िशन कानून लागू होगा। तो वह ज़मीन किस तरह ली थी ? अुसे पहले दे देना चाहिये और बादमें लेना चाहिये । अुस दिन जो कीमत थी वह और अुसके आज तकके ब्याजके रुपये भी दे देने चाहियें। अिसका नाम अिन्साफ है। और अपील करनेका अधिकार भी होना चाहिये ।

* * *

हिन्दुस्तानके नकशेमें जो लाल और पीले दो रंग हैं, अुनके बजाय अुसे अेक रंगका बनाना है; और अेक हिन्दुस्तान होगा तो ही स्वराज्य मिलेगा । अिसलिअे राजाओंको अपना स्थान समझ लेना चाहिये । मेरी तो राजाओंसे अेक ही अपील है, विनती है कि आप प्रजाको सताना छोड़ दीजिये, जिससे दुनियामें आपकी हँसी न हो। आपको विदेश जाना हो तो प्रजाके प्रतिनिधियोंकी अिजाज़त लेकर जाअिये । अुसके लिअे आपको कितना रुपया चाहिये ? साथमें कौन कौन जायँगे ? — ये सब बातें प्रजाको जाननी चाहियें। हाँ, राजाकी तबीयत ठीक न हो, बीमारी हो तो वह अिलाज कराने भले ही जाय । मगर हर साल विदेश जाना तो अेक दुर्व्यसन है । मैंने सुना है कि जो कुँवर गद्दी पर नहीं बैठेगा, अुसके लिअे ३०–४० लाख रुपयेका बड़ा महल बन रहा है ।

अिस महलकी रक्षा कौन करेगा ? अिसकी हजार खिड़कियाँ और दरवाजे हैं। अुसके झाड़ने-बुहारनेके लिअे कितने आदमी चाहियें और वे कहाँसे आयेंगे ? क्या यह सारा भार राजपीपलाकी प्रजाके सिर पर पड़ेगा ? गद्दी पर न बैठनेवालेके लिअे अैसा लाखों रुपयेका महल चाहिये, तो गद्दी पर बैठनेवाले कुँवरके लिअे कितनेका चाहिये ? अुसका अिन भीलोंकी झोंपड़ियोंके साथ क्या मेल ? यह बात राजाको साफ साफ कह देनी चाहिये। अिसके कहनेमें जरा भी संकोच न होना चाहिये।

मगर अिसके लिअे आप पक्का संगठन बनाअिये। आप सब नौजवान तैयार हों, तो देहातमें जानेकी तालीम लीजिये। आप भीलोंके गाँवोंमें जम जायँ, तो कोअी जुल्म करनेकी हिम्मत नहीं कर सकता। राजाको राज्य करना न आता हो तो हम कर देंगे। हमें बड़े बड़े वेतन नहीं लेने हैं। बिना पैसेके सुन्दर शासन चला लेंगे।

शराबकी बुराअीसे छूटनेमें हमें गरीब प्रजाको मदद देनी चाहिये। अिस काममें नौजवानोंको साथ देना है। अिसी तरह जो अस्पृश्यता है, वह भी मिटनी चाहिये।

*   *   *

अिस देशमें बने हुअे मालका — चीजोंका अुपयोग करना चाहिये। अपने यहाँ बनी हुअी खादीका ही अुपयोग करना चाहिये। राष्ट्रीय भावनावाला मनुष्य खादीके सिवाय और कोअी पोशाक नहीं पहनेगा।

*   *   *

आजकल हिन्दुस्तानमें अुज्ज्वल अितिहास तैयार हो रहा है। अुसमें आपको कुछ हिस्सा बँटानेकी भावना हो, तो अुसका विचार कीजिये। वैसे खुराक खाकर शामको सो जानेका काम तो जानवर भी करते हैं। परन्तु भारतकी स्वतंत्रताका जो यह युग चल रहा है और अितिहासका निर्माण हो रहा है, अुसमें जिसने जन्म लिया वह भाग्यशाली है। आप अुसमें हिस्सा बँटायेंगे, तो आपका भी नाम लिखा जायगा। अीश्वर आपको अैसा करनेकी बुद्धि और शक्ति दे। अीश्वर आप सबका कल्याण करे।

१०६
मतभेद खड़े मत कीजिये

[ता० २०-१-१९४० को रायपुर कांग्रेस भवनकी अुद्घाटन क्रिया और अलग-अलग मानपत्रोंके जवाब ।]

*   *   *

अैसा समय आयेगा जब दुनियाकी आज़ाद कौमोंकी तरह हम भी अूँचा सिर करके चल सकेंगे ।

आप मेरे जैसे सिपाहियोंको अधिक बन्धनमें डालनेके लिअे मानपत्र देते हैं । मानपत्रोंमें आपने मेरी बहुत बड़ाअी की है । अुनमें लिखा हुआ सब कुछ मान लूँ, तो मेरे पैर हवामें अुड़ने लगें । मगर मुझे तो धरती पर पैर रखनेकी आदत है । मैं पक्की ज़मीन पर क़दम रखता हूँ ।

हिन्दुस्तानके लोगोंकी आदत है कि किसीने थोड़ीसी सेवा की कि अुसकी कदर करने लगते हैं । कुछ खास तरहके कपड़े पहननेसे थोड़े ही कोअी साधु बन जाता है ! कांग्रेसमें सभी साधु पुरुष नहीं हैं । मनुष्य जितने सम्मानके लायक हो, अुतना ही अुसका सम्मान करना चाहिये । अुससे अधिक नहीं करना चाहिये, नहीं तो अुसके नीचे गिरनेका डर रहता है ।

*   *   *

जो नेता बन जाता है, अुसे नीचे गिरनेका डर रहता है । मगर मैं तो सिपाही हूँ । हमारे देशमें अेक नेता है । मैं अुसका सिपाही हूँ । अुसकी सेवा करता हूँ और अुसका हुक्म माननेकी भरसक कोशिश करता हूँ ।

तोप-बन्दूकसे मरना आसान है । परन्तु हम कोअी भूल तो नहीं कर रहे हैं, किसीका बुरा तो नहीं चाहते हैं, रोज यह विचार करते रहना और सावधान रहना ज्यादा मुश्किल है ।

मानपत्रमें लिखा है कि मैंने किसानोंकी सेवा की है । परन्तु किसान होकर किसानोंकी सेवा की, तो अिसमें क्या बड़ी बात हो गअी ? किसानोंको मैंने अेक ही पाठ पढ़ाया है कि हम संसारके अन्नदाता हैं । हमें किसीसे डरनेकी ज़रूरत नहीं । डर रखो तो अेक अीश्वरका रखो । अीश्वरके सामने सबको जवाब देना पड़ेगा । परन्तु कड़ी मेहनत करके पसीना बहानेवाले किसानको क्या जवाब देना है ?

आज समय बदल गया है। अैसा समय आया है कि कुछ आदमियोंको कांग्रेसमें जगह नहीं मिली, तो किसान संगठनका तख्ता लगा दिया।

किसानोंकी सच्ची सेवा करनी हो तो मेरी पक्की राय है कि वह सेवा अलग संस्थासे नहीं हो सकती। हमारी सारी वफ़ादारी सारे राष्ट्रकी संस्था कांग्रेसके प्रति होनी चाहिये। हिन्दुस्तान आज़ाद हो जाय, तब अलग-अलग शौक कर सकते हो। अभी अलग-अलग संस्थाओंमें रहनेसे देशको नुक़सान होता है। अिसीलिअे कांग्रेसमें भी समाजवादी जैसे अलग दलोंसे मैं झगड़ता हूँ। मेरी राय है कि राजनैतिक क्षेत्रमें हम सबको अेक होकर अेक ही संस्था चलानी चाहिये। यह पुरानी संस्था है। परन्तु आजकल तो जिसे नेतागिरी न मिली, वह अलग संस्था खोलकर बैठ गया।

* * *

आपके प्रांतमें ६-७ बरससे महात्मा गांधी बैठे हैं। गुजरात छोड़कर यहाँ बैठे हैं। बहुत समय तक कुछ अखबारोंने खूब गालियाँ दीं, परन्तु वे नहीं हटे। वे कहते हैं कि मुझे सबसे मुश्किल जगह पर काम करना चाहिये। यह हमारा अक्षयपात्र है। अुसमेंसे जितना लें अुतना ही थोड़ा है।

* * *

लोग यह मानते थे कि कांग्रेसवालोंको राज करना थोड़े ही आता है? वे तो जेल जाना जानते है।

वाअिसरॉय और गवर्नरका अंकुश लगा हुआ है। हमारे लोग भी आलोचना करेंगे और हमें वहाँ जाकर विधान पर अमल नहीं करना है, बल्कि अुसे तोड़-फोड़कर फेंक देना है। यह सब विचार करके पार्लियामेन्टरी बोर्ड बनाया गया, ताकि कोअी गालियाँ खानी हों तो खा ले। अिस प्रकार वे गालियाँ मैंने खाअीं।

मैंने कौंसिल या असेम्बली नहीं देखी। मैंने वहाँ कभी भी पैर नहीं रखा। हम मानते हैं कि बाहर रहकर हम देशकी ज्यादा सेवा कर सकेंगे।

* * *

नौजवानोंने मुझे जो मानपत्र दिया, अुसमें मुझे वृद्ध कहा है। परन्तु अभी मेरे ३६ साल बाकी हैं।

जो बोझा आज हम पर है, वह नौजवानों पर आनेवाला है।

* * *

अिस शरीरको बनानेवाला मौतके लिअे समय, स्थान और कारण अिन तीनोंकी पुड़िया बाँधकर शरीरमें रख देता है।

* * *

मरना आसान है मगर बोझा अुठाना कठिन है।

हमारे नेताओंके जीवन देखिये । महात्मा गांधी, जवाहरलालजी, राजेन्द्रबाबू कितनी कार्यक्षमतासे काम कर रहे हैं । अिसका विचार करना चाहिये ।

यह शरीर पंचमहाभूतका बना हुआ है । शरीर बूढ़ा होता है; परन्तु अन्दरकी चिनगारी तेज रहनी चाहिये । गांधीजीका शरीर कमज़ोर है, मगर वे दुनियाभरमें सबसे ज्यादा ताकतवाले हैं । हमें अुम्रका नहीं, परन्तु कामका विचार करना चाहिये ।

यह मज़दूरोंका, श्रमजीवियोंका जमाना है । अुनका अुदय हो रहा है । रूसमें धनिकोंको खतम कर दिया गया । गांधीवाद और अुसमें अितना ही फर्क है कि अेक प्रेमसे काम लेता है, तो दूसरा तलवारसे ।

दुनियाके सबसे महान व्यक्ति महात्मा गांधी सलाह देते हैं कि तलवारका रास्ता जानवरोंका है, अिन्सानोंका नहीं । वे कहते हैं कि किसीको मारना-पीटना नहीं चाहिये, कोअी मारे तो शान्तिसे सहन कर लेना चाहिये । यह हिन्दुस्तानकी सभ्यता है, संस्कृति है । मगर अुनकी आवाज़ कहाँ तक पहुँचती है, यह विचार करनेकी बात है ।

तलवारका खेल खेलनेवालोंसे यह खेल ज्यादा बहादुरी भरा है । महात्मा गांधीको अुम्मीद है कि हिन्दुस्तानमें यह शक्ति मौजूद है । मगर हमें वह मालूम नहीं होती ।

* * *

आज हिन्दुस्तानमें कोअी मतभेद है, तो वह यह कि शहरोंका स्वराज्य चाहिये या गाँवोंका ? आज गाँव बरबाद होकर शहर बन रहे हैं । अैसा होगा तो हिन्दुस्तान नहीं रहेगा । अिसलिअे महात्माजी कहते हैं कि हमें गाँवोंका स्वराज्य चाहिये ।

१०७

सत्याग्रहकी तैयारी कीजिये

[ता० १३-२-१९४० को भड़ौंचकी सार्वजनिक सभामें दिये गये भाषणसे।]

बड़े लम्बे अरसेके बाद मैं भड़ौंच आया हूँ। सबसे मिलकर बहुत आनंद हो रहा है। क्योंकि अपने स्वजनोंसे मिलकर आंतरिक भावनाअें अुमड़ आती है।

मैं महीना-पन्द्रह दिन तो रेलगाड़ीमें रहता हूँ, भटकता रहता हूँ, परन्तु आपको नहीं भूलता। क्योंकि गांधीजीने आप पर यानी गुजरात पर आशा लगा रखी है।

* * *

जैसे अंग्रेज़ोंका या फ्रांसीसियोंका राज्य लोगोंकी मरज़ीके मुताबिक चलता है, लोग जैसा चाहते है वैसा विधान बनाते हैं, अुसी तरह हिन्दुस्तानका विधान हिन्दुस्तानके लोगोंको बनानेका अधिकार है। हम सरकारसे कहते है कि अिसे मान लीजिये मगर वह कहती है कि तुम अेक हो कर आओ। अिसलिअे कांग्रेसने साफ-साफ कहा कि हिन्दू-मुसलमानोंका झगड़ा तो हमारा घरका झगड़ा है, अिसमें दूसरेको पड़नेका अधिकार नहीं है। दो भाअी लड़ते हों और पड़ोसी आकर कहे कि जब तक तुम लड़ते हो तब तक यह घर मेरा है, तो यह बात किसी भी मुल्कमें नहीं मानी जायगी। समझदार हों तो अैसे व्यक्तिको कान पकड़ कर बाहर निकाल दें। हम लड़ते ही रहेंगे तो भी अन्तमें हममें से अेक आदमी घरका मालिक होगा, मगर पड़ोसीको तो मालिक हरगिज़ नहीं रहने दिया जायगा।

लिबरल लोग आपके सबसे बड़े समर्थक हैं। फिर भी सर चिमनलाल सितलवाड़ने दो दिन पहले ही जो तोहमतनामा तैयार करके छपवाया है, अुससे भी पता चलता है कि आपने अिस देशका कितना नुकसान किया है। मगर अितना कह कर बादमें वे कहते हैं कि जो देते हों अुसे ले लो। पर यह तो अैसी बात है जैसे सारे दिन गाँवको साफ़ करनेके बाद हरिजनको टुकड़ा डाल दिया जाय और अुसे वह ले ले, या बिरादरीके भोजन कर लेनेके बाद अुसकी जूठन ले ले। माँगनेवालोंकी यही वृत्ति हो जाती है। आप लिबरल भी सारी अुम्र माँगते रहे हैं, अिसलिअे आप यही कह सकते हैं। परन्तु कांग्रेस कहती है कि हिन्दुस्तानको साम्राज्यमें रहनेमें लाभ होगा तो वह वैसा फैसला करेगी और स्वतंत्र रहनेमें लाभ होगा तो वैसा फैसला करेगी।

अिस समय ब्रिटिश सरकारका बोलबाला है। अुसने हिन्दुस्तानको निःशस्त्र बना दिया है, लाचार बना दिया है। सर चिमनलाल कहते हैं कि आप यह मत कहिये कि हम लाचार हैं। मगर कांग्रेस कहती है कि अुनकी नीयत तो देखने दीजिये। अगर सच्चे हों तो कहें कि हमारे यहाँ आग लग रही है, आप अपना विधान तैयार करो और अपनी रक्षाकी तैयारी करो। सच्ची नीयत, साफ़ नीयत हो तो अैसा कहें।

मगर वे तो कहते हैं कि आपको राज्य सौंप दें, तो अिन राजाओंका क्या होगा? सारी दुनियामें जितने राजा नहीं हैं, अुतने हिन्दुस्तानमें हैं। बरसातमें केंचुअे निकलते हैं, अुतने राजा हैं। मगर यह सब आपकी (अंग्रेजोंकी) खड़ी की हुअी बला है।

* * *

तोप-बंदूककी लड़ाअी लड़नेवाले भी अेकमतसे न लड़ें, तो लड़ाअी हार जायँ। तब हमें तो नैतिक बलसे लड़ना है। अिसलिअे कांग्रेसियोंकी अेक ही आवाज़ निकलनी चाहिये।

* * *

क्या दुनियामें हम ही अितने गये बीते हैं कि अपने देशकी आज़ादीके लिअे कुरबानी नहीं करना चाहते, जबकि दूसरे देश पराये मुल्कोंके लिअे भी लड़ रहे हैं?

कुछ लोग कहते हैं कि गांधीजी तो चरखेकी बात करते हैं। लेकिन वे कोअी नअी बात नहीं करते। आये तभीसे कह रहे हैं। बीस वर्षसे हमने झंडेकी पूजा की है। अुसमें किसका चित्र है? तोप-बंदूकका या तलवारका? क्या यह नहीं देखा कि अुसमें चरखा रखा हुआ है? गांधीजीके आनेसे पहले बीसों तरहकी पगड़ियाँ थीं। अुन्होंने सफेद खादीकी टोपी चलाअी। मंत्रि-मंडल बने, तब अुन्हें और अुनकी वरदीको नहीं देखा? जैसे बंदूक धारण करनेवाला सिपाही अपनी पोशाकके पीछे रहनेवाले तत्त्वज्ञानको जानता है, वैसे सत्याग्रहीको भी अपनी खादीके भीतरी तत्त्वज्ञानको समझना चाहिये। खादी पहननेके साथ साथ बिना चरखा चलाये वह समझमें नहीं आता।

* * *

तमाम अल्पसंख्यकों का बहुमत बनानेकी बातें चल रही हैं। मगर अैसा नहीं हो सकता। हिन्दुस्तानमें हिन्दुओंका नहीं, मुसलमानोंका नहीं, परन्तु हिन्दुस्तानियोंका शासन होना चाहिये। अगर अंग्रेज भी यह मानते हों कि हिंदुओंका जो बहुमत है, अुसे अल्पमत बना डाला जाय, तो अैसा कभी

नहीं हो सकेगा। लेकिन हम यह नहीं कहते कि हम कहें वही हो। लोकप्रतिनिधि सभा जो फैसला करे अुसे मंजूर करो। जहाँ तक हो सकेगा अुसमें सर्व सम्मतिसे विधान तैयार होगा। मगर कोअी मतभेद हो जाय, तो स्वतंत्र पंचायतसे फैसला कराना हमें मंजूर है।

* * *

आज तक दुनियामें सब देशोंने तोप-बंदूकसे आज़ादी ली है और कायम रखी है। मगर हमारे पास अैसा कोअी सामान नहीं है। आजकल सरकार चाहे, तो लाठीकी भी मनाही कर सकती है। फिर भी गांधीजी कहते हैं कि हमें दुनियाको यह दिखाना है कि हथियारोंके बिना भी स्वतंत्रता ली जा सकती है। अिसलिअे गांधीजीके पीछे-पीछे चलनेकी तैयारी कीजिये। अब अैसा समय आ गया है कि हिन्दुस्तान आज़ाद न हुआ, तो समझ लीजिये कि हमेशाके लिअे डूब गया। मगर हम डूबनेवाले नहीं हैं। हिन्दुस्तान स्वतंत्र होकर ही रहेगा। परन्तु अुसके लिअे हमें मर मिटनेकी तैयारी कर लेनी चाहिये। भावी संतानें हमसे हिसाब माँगेंगी कि गुलामी मिटानेके लिअे आपने क्या किया था? अगर कुछ नहीं किया होगा तो आपकी बदनामी होगी।

* * *

अिस वक्त मिट्टीका लौंदा चाक पर चढ़ा हुआ है। कुम्हारको भी पता नहीं है कि अुससे घड़ा अुतरेगा या गागर? अभी तो दोनों कह रहे हैं कि हम जीतेंगे। परन्तु कौन जीतेगा, यह तो ओीश्वरको मालूम है। अुसका खेल अजीब है। अुतार-चढ़ाव आते रहते हैं, परन्तु अुनके पीछे भी कारण होते हैं। जिसके पाप अधिक होंगे, वह हारेगा।

* * *

तोप-बंदूककी लड़ाअीमें जो कुरबानी करनी पड़ती है, सत्याग्रहमें अुससे अलग तरहकी कुरबानीकी आवश्यकता होती है। मैं आशा रखता हूँ कि गांधीजी जिस कुरबानीकी तैयारी चाहते हैं, वह आप करेंगे।

१०८

बड़ौदा राज्यकी प्रजासे

[ता० १०-३-१९४० को शामके ६ बजे नवसारीमें 'दूधिया तलाव' पर दिये गये भाषणसे ।

हमारा मुल्क लड़ाओीमें फँस गया है, क्योंकि हमारा राज्य अुसमें फँस गया है। अिसमें हमसे पूछने-ताछनेकी बात ही क्या है ? राज्यने प्रजासे पूछे बिना जितना रुपया लिया जा सकता हो, जबरदस्तीसे लेनेका निर्णय किया है। लड़ाओीमें मुल्क शामिल हो गया, यह तो वाअिसरॉयके सिवाय और सबको अखबारोंसे मालूम हुआ। यह भयंकर स्थिति है। यह तो हिन्दुस्तानका भारी अपमान है।

अिसलिअे देशके मुख्य आदमियोंने अिकट्ठे होकर विचार किया कि अिस युद्धका अुद्देश्य क्या है, यह जान लें। अगर लड़ाओीके परिणामस्वरूप लाभ होता हो, गुलामीसे छूटते हों, तो न पूछने पर भी अिस बातको मंजूर कर लेंगे। जो हिन्दुस्तान पर सवारी किये बैठे हैं, वे लड़ाओीके अंतमें अुतर जानेवाले हों, गुलामीकी बेड़ियाँ तोड़ डालनेवाले हों, तो मदद देनेका विचार करें।

जिसे नाज़ीवाद कहते हैं, जिसने लोकतंत्रका नाश किया है, अुसकी विजय हिन्दुस्तान नहीं चाहता। अिससे साम्राज्यकी पराजय नहीं चाहता। अतः हमने वाअिसरॉयसे पूछनेका फैसला किया। अुसका जवाब अभी तक तो सीधा नहीं मिला। मगर अब मिलने लगा है कि तुम योग्य हो ? जाओ मुसलमानोंके साथ यानी मुस्लिम लीगके साथ फैसला करके आओ। यह हो जाय तो बादमें कहेंगे कि राजाओंसे समझौता करके आओ। अिसके हो जानेके बाद यह विचार किया जायगा कि यहाँ अंग्रेज़ोंके अितने अधिक स्वार्थ हैं, रेलवे है, अितना धन खर्च किया है, अुस सबका क्या होगा ! अिस तरह वे दो बिल्लियोंकी तरह जातियोंको आपसमें लड़ाना चाहते हैं।

हम यह मानते हैं कि यहाँ जितने राजा हैं, अुतने दुनियामें और कहीं नहीं हैं। यह भी मंजूर करेंगे कि हिन्दू-मुसलमानोंमें मेल नहीं है। हाँ, धन यहाँ गड़ा हुआ है, परन्तु वह आपका है या हमारा ? अिस सारे झगड़ेकी जड़ आप लोग हो। हमने अुदाहरण देकर यह बता दिया है कि ये सब आपके पैदा किये हुअे हैं।

साम्प्रदायिकता दाखिल की गअी, तब हमने बहुत विरोध किया था कि यह साम्प्रदायिक बँटवारा जहरका प्याला है। आजकल मुसलमान कह रहे हैं कि

अिसमें तो हमें कुछ नहीं मिलता; हिन्दुओंकी ही चलती है। हम तो पहलेसे ही कहते थे कि अिससे कुछ नहीं मिलेगा। अिससे साम्प्रदायिक विष ही फैलेगा। जब साम्प्रदायिकता दाखिल की गअी, तब कांग्रेसने चिल्लाहट मचाअी थी। मगर किसीने नहीं सुना।

अलाहाबादमें हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अीसाअी, सबने अेक होकर फ़ैसला किया कि हमें साम्प्रदायिक निर्वाचन मंडल नहीं चाहियें और मुसलमान जो माँगें, सो दे दिया जाय। लेकिन तुरन्त ही वहाँसे भारतमंत्रीने मुसलमानोंको तार दिया कि आप अिसमें शरीक न हों, हम ज्यादा देंगे। हमने तो अुदाहरण देकर बता दिया है कि अंग्रेज ही लड़ाते हैं।

अंग्रेज कहते हैं कि हिन्दू-मुसलमान दोनों जब तक लड़ते हैं, तब तक अल्पसंख्यक जातिकी रक्षा करनेका काम अीश्वरने हमारे सुपुर्द किया हुआ है। तो यह लड़ाअी भी अीश्वरने ही आपके सुपुर्द की है। वहीं आपका फ़ैसला होगा।

हमने कहा कि आप घोषणा कीजिये कि लोकप्रतिनिधि सभा जो निर्णय करेगी, वह हम दे देंगे। यह मंजूर कर लीजिये तो हम मुसलमानोंके साथ फ़ैसला करके ही अुठेंगे। और बदकिस्मतीसे मतभेद हो जायगा, तो पंच फ़ैसला करेंगे। जब अुन्हें महसूस हुआ कि अिसमें कुछ नहीं कहा जा सकता, तो अब कहते हैं कि राजाओंका क्या होगा। तब हम कहते हैं कि यह तो आपकी रची हुअी सृष्टि है।

राजाओंके व्यक्तित्वका कोअी सवाल ही नहीं है। हकीक़त यह है कि अिस समय राजाओंकी संस्थाओंका अन्त आ गया है। हिन्दुस्तान कोअी दुनियाका घूरा थोड़े ही है! जहाँ राजा हैं वहाँ भी अुनकी सत्ता प्रजाके ही पास है। आजकल जो सार्वभौम सत्ता है, अुसके सामने प्रजा भी झुकती है और राजा भी। कहते हैं कि हमने तो राजाओंके साथ अिक़रारनामे किये हैं। हमें क्या पता कि किस समय अुन्होंने क्या लिखवा लिया है? कांग्रेस यह मंजूर करनेको तैयार नहीं है कि देशी राज्योंकी प्रजाका अधिकार रत्ती भर भी छिन जाय।

फिर यदि वे यह कहें कि हमारे भारतमें अितने स्वार्थ हैं, अितने सैनिक हित वगैरा हैं, तो अिसका भी निबटारा हो सकता है।

लड़ाअीमें हार गये तो रामनाम सत्य हो जायगा और जीते तो भी खोखले हो जायेंगे। अिस लड़ाअीके बाद कोअी राज्य दूसरेके आधीन नहीं रहेगा। विचारोंमें भी बड़े परिवर्तन होंगे। अैसी हालतमें बड़ौदा राज्यके साथ झगड़ा करना ठीक नहीं है। तमाम राजा अिकट्ठे होकर निर्णय कर लें, तो भी अुन पर पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट है। कोअी राजा स्वतंत्र नहीं है। परन्तु देशी राज्योंकी प्रजामें ताकत होनी चाहिये।

हमें यह साबित करना चाहिये कि प्रजा मंडलको लोगोंका साथ है। यह तो तब साबित हो सकता है, जब धारासभाकी २७ सामान्य बैठकोंमें से सबकी सब हमें मिल जायँ।

बड़ौदा राज्य गुजरातमें फूलोंके गजरेकी तरह गुँथा हुआ है। मुझे और आपको अेक नावमें बैठना है। अिसलिअे आप डूबे तो मैं डूबा और मैं डूबा तो आप डूबे। अिसलिअे देशी राज्योंकी प्रजाको ब्रिटिश भारतकी जनताके साथ रहना चाहिये।

आजकल हिन्दुस्तान और दुनियाकी परिस्थितिको देखते हुअे हमें आपसके लड़ाअी-झगड़ेमें नहीं पड़ना चाहिये। बड़ौदा राज्यकी हस्तीके बाद यह पहला अवसर है, जब प्रजाको अितना विशाल मताधिकार मिला है। अंग्रेज कहते हैं कि आप लायक बन जायँ तभी तो? राजा भी यही कहते हैं; मगर ये तो वैसा ही कहेंगे जैसा वे कहेंगे। क्या यह कहा जायगा कि जलालपुरमें राजनीतिज्ञ रहते हैं और यहाँ बेवकूफ़ हैं? क्या अैसा हो सकता है कि वहाँ शराबबन्दी हो और यहाँ शराबखाने चलते रहें? अिसलिअे हमें महाराजाके दिल पर यह असर डालना चाहिये कि हम अुनसे झगड़ना नहीं चाहते। यह आवाज़ महाराजाके कानों तक पहुँचानी है।

आप अपने मत प्रजा मंडलके आदमियोंको ही दीजिये, नहीं तो यह कहा जायगा कि आपको अुत्तरदायी शासन नहीं चाहिये। धारासभामें प्रजा मंडलके जितने कम आदमी जायेंगे, अुतना ही यह अर्थ होगा कि प्रजाका प्रजा मंडलमें विश्वास नहीं है; प्रजाको अितनेसे ही संतोष है।

अिस मुल्कमें बहुतोंको हरामका माल खानेकी आदत होती है। वे अैसी माला जपते रहते हैं कि किसीका जाय और हमें मिल जाय। अिसीलिअे हम केन्द्रीय धारासभामें किसीको नहीं जाने देंगे। हमने मंत्रीपद छोड़ दिये, परन्तु धारासभा नहीं छोड़ी।

हिन्दुस्तानकी बड़ी समस्या हल हो जाय, तो राजाओंकी और रियासती प्रजाकी छोटी-छोटी समस्यायें जल्दी-जल्दी हल हो जायँगी। अगर हिन्दुस्तानकी जनता घोड़ेकी रफ्तारसे चलती होगी, तो क्या आप चींटीकी चालसे चल सकेंगे? आपको भी घोड़े पर चढ़ना पड़ेगा।

प्रजा मंडल आज जो प्रस्ताव पास कर रहा है, अुसे अपने हृदयमें स्थान दीजिये और अपना मत अुसीको दीजिये। मअीके महीनेमें जब चुनाव होगा, तब आपकी परीक्षा होगी।

आपको मेरी अेक और सलाह है। गुजरातमें हमने अिस युगमें वर्षों तक गांधीजीका अुपदेश सुना है। गांधीजीने गुजरातको दुनियामें प्रसिद्ध किया है।

अुन्होंने सारी दुनियाको हिला देनेवाली दाँडी-कूच की। अेक लँगोटीवाला आदमी साबरमतीसे चलकर सूरतके किनारे नमक बनानेके लिअे निकला। वहाँ नमक बनाने दिया जाता, तो क्या हो जाता? पहले तो अधिकारी हँसते थे कि नमक बनाने चले हैं! मगर वहाँ पहुँचते-पहुँचते तो सारी सल्तनतको हिला दिया। दुनियामें सारे देश आज़ादीको रखने या लेनेके लिअे तलवारसे लड़ाअी करते हैं। हिन्दुस्तान तलवारसे लड़ना नहीं चाहता। दुनियाका अितिहास यह कहता है कि तलवारसे लिया हुआ तलवारसे ही चला जायगा। सत्यसे लिया हुआ नहीं जाता। गांधीजी कहते हैं कि हिन्दुस्तानकी संस्कृति अलग है। अुसे तलवारसे स्वतंत्रता नहीं लेनी है।

हर रोज १० करोड़ रुपये लड़ाअीमें खर्च करते हैं, यह कहाँ तक चलेगा? जंगलमें जैसे शेर और भेड़िये लड़ते हों, वैसे ये लोग लड़ रहे हैं। गांधीजीने अेक ही रास्ता बता दिया कि हमें सत्य और अहिंसासे लड़ना है।

अंग्रेज़ हमसे कहते हैं कि हम चले जायेंगे तो आपका क्या होगा? तो हम कहते हैं कि महाराज आप यहाँसे चले जाअिये। हमारा जो कुछ होना होगा हो जायगा। आपके खिलाफ़ हमारा सबसे बड़ा विरोध यही है कि आपने हमें लाचार बना दिया।

अब हमारी परीक्षा होनेवाली है, अिसलिअे हमें अुसकी तैयारी करनी है। गांधीजी गुजरातसे बड़ी आशा रखते हैं। वे हमसे यहाँ मिलने आनेवाले हैं। वे यहाँ आयें और अितनी सारी बहनोंमें कोअी खादीवाली न हो, तो ठीक नहीं है। अगर हिन्दुस्तानमें रहनेवाले करोड़ों लोगोंके प्रतिनिधि बनना हो, तो खादीके बिना काम नहीं चलेगा। अगर अुनके प्रतिनिधि बनना हो, स्वराज्य लेना हो, तो हाथका बुना और हाथका कता कपड़ा पहनना चाहिये।

हमारे मुसलमान भाअियोंको गलतफ़हमी हो गअी हो, तो अुसे दूर करनेकी कोशिश करनी चाहिये। अस्पृश्यता मिटा देनी चाहिये। पूरी तैयारी करके लड़ाअी करनी चाहिये।

सिपाही यह कहें कि हमें लड़ना तो है, मगर वे हथियार नहीं रखने हैं जो सेनापति बताता है, तो वह लड़ाअी नहीं चल सकती। गांधीजी कहते हैं कि चरखा चलाना चाहिये, खादी पहननी चाहिये। अगर आप यह कहें कि चरखा तो पहले भी था, तो आपको दूसरा सेनापति ढूँढ़ लेना चाहिये। मगर मुझे अुम्मीद है कि आप गांधीजीका ही अनुसरण करेंगे।

१०९

ग्रामसेवकोंसे

[ता० ९-५-१९४० को बारडोलीमें ग्रामसेवा सम्मेलनमें दिये गये भाषणसे।]

जो देहातमें जीवन बितानेका निश्चय करके बैठे हैं, वे सारी जनताको अुठानेके लिअे बैठे हैं। हम वहाँ दान-पुण्य करने नहीं गये है। हमारी स्थिति अैसी होनी चाहिये कि जब देशकी पुकार हो, तब हमारा नाम वहाँ मौजूद ही रहे। मानसिक तैयारी हमारी हमेशा ही रहे। हम कोअी काम छिपकर नहीं करें। पिछली बार हमने कुछ काम छिपकर किये थे। प्रचार करनेके लिअे भेष बदला था। परन्तु वह सत्याग्रहका विकृत स्वरूप है। अिसलिअे अितनी ही कम तैयारी हुअी। ये सब आसान मार्ग ढूँढ़े गये। सत्याग्रही कठिन रास्ता ढूँढ़ता है।

*   *   *

गुजरातमें अितनी कुशलता आ गअी है कि दूसरे प्रांतोंमें जैसा खादी-काम होता है, वैसा हम भी कर सकते हैं। अेक सिद्धान्त तय कर लिया गया है कि देहातमें काम करनेवालेका चरखेके बिना काम नहीं चल सकता। वह चरखा छोड़ कर देहातमें जायगा, तो अुसके पैर वहाँ नहीं टिकेंगे, या बादमें लोग अुसे पहचान लेंगे। अैसी हालतमें अुसे जितनी आती होंगी, अुतनी रामायण और महाभारतकी गप्पें लगानी पड़ेंगी। मगर वे भी अेक खास ऋतुमें ही चलती हैं।

परन्तु जितने शिक्षित मनुष्य हैं — जिनके द्वारा देहातमें सम्बन्ध कायम किया जा सकता है — अुन्हींका चरखे पर विश्वास नहीं है। महात्माजीने पहले पहल चरखेकी बात कही, तब बहुत लोगोंको अैसा लगा कि बड़ा आदमी कह रहा है, तो अिसमें कुछ न कुछ होगा। बहुतोंको अैसा लगा कि कांग्रेसमें रहना हो, तो खादी पहननी चाहिये। कुछ लोगोंको अैसा भी लगा कि अमुक आदमियोंको कांग्रेससे बाहर रखनेका यह अच्छा अुपाय है।

परन्तु गाँवोंमें जानेवाले मनुष्यकी श्रद्धा चरखेमें ढीली होगी, तो अुसका जीवन बेकार हो जायगा।

चरखा संघके जो नियम हैं, बन्धन हैं, अुनका पालन हम न कर सकें, तो बहुत दिन तक हमारा काम नहीं चल सकता। खादीके कामको चरखा संघके ढंग पर करना पड़ेगा।

दो-चार साल काम करनेके बाद आदमीमें अितना आत्म-विश्वास और साहस आ जाना चाहिये कि अुसे किसी संस्था पर आधार न रखना पड़े।

जब तक खादीके कामको सहारा देना पड़ता है, तब तक अुसके गिरनेका डर रहता है। कुछ समय बाद हमारी यह स्थिति नहीं रहनी चाहिये कि हमें गाँव छोड़कर चले जाना पड़े। आपका प्रकाश आसपास अितना पड़ना चाहिये कि लोग ही आपको न जाने दें। वे ही सारा बोझा अुठा लें।

हम जो काम कर रहे हैं, अुससे हमारे दिलको, आत्माको संतोष है या नहीं? अुससे लोगोंको फायदा होता है या नहीं? हमारी मानसिक प्रगति होती है या नहीं? अगर जंग लग रहा हो, तो यह विचार कर लेना चाहिये कि हममें कोअी नैतिक दोष तो नहीं है? स्थानका दोष हो तो वह सोच लेना चाहिये। जैसे कि बापू सेवाग्राममें जाकर बैठे हैं। कअी बार अुनसे कहा कि यहाँ क्या बैठे हो? झगड़ा भी बहुत किया। परन्तु वे कहते हैं कि कठिनसे कठिन जगह पर किसीको तो जाना ही चाहिये न? वहाँ आजकल १७–१८ चेचकके रोगी हैं। वहाँ हर मौसमकी बीमारियाँ होती हैं। गाँवमें बहुत परिवर्तन हो गया, परन्तु अभी बहुत तकलीफ़ है। अितने बड़े आदमी हैं और अुनके पास अितने साधन हैं, फिर भी अुन्हें अितनी दिक्कत हुअी, तो हम तो तुच्छ प्राणी हैं।

हिन्दुस्तानमें २५ करोड़ आदमियोंको क़तल किया जाय, तब रूसका तरीका काम दे। अिसे अुद्योग-प्रधान देश बनाना हो, तो अुतने ही आदमी रहें जितने यंत्रोंके लिअे काफ़ी हों और वे भी तगड़े हों। बादमें यंत्रोंसे निकला हुआ माल न खपे, तो वैसा ही गृह-युद्ध हो जैसा युरोपमें मचा हुआ है। यह सब विचार करनेके बाद हम चरखे पर वापस आ रहे हैं। अिसलिअे अिस पर हमारी श्रद्धा होगी, तो ही हम आगे बढ़ सकेंगे। हम जो देहातमें पड़े हैं, सो पूरी श्रद्धासे पड़े हैं। हममें अपार श्रद्धा होनी चाहिये।

खादीके साथ देहातकी सफ़ाअीका और शिक्षाका काम भी है। बड़ी अुम्रके लोगोंको अक्षर-ज्ञान देनेका काम है। झगड़े मिटाने और सामाजिक बुराअियाँ दूर करनेका काम है। ये सब भगीरथ कार्य हैं। अिसके लिअे लोगोंके जीवनमें प्रवेश करना चाहिये। ये तमाम प्रश्न विचार करनेके हैं। जो प्रश्न खड़े हों अुन पर अेक दूसरेसे मिलकर विचार करें।

११०
स्वतंत्र भारत युद्धमें साथ देगा

१

[ता० १८-७-१९४० को सेठ लालभाओी दलपतभाओी आर्ट्स कॉलेजमें दिये गये भाषणसे।]

भले ही आप अभी अैसी संस्थाके भीतर शांति अनुभव करते हों, परन्तु दुनियामें जो कुछ हो रहा है, अुससे आप अपने आँख-कान बन्द नहीं कर सकते; और करेंगे तो आपकी पढ़ाओी बेकार है।

* * *

दुनियामें अकल्पित गतिसे बड़ी-बड़ी घटनाअें घटी हैं। बड़े-बड़े देशोंका अेक-दो सप्ताहमें पतन हो गया है। फ्रांस जैसा देश, जिससे दूसरे देशोंने स्वतंत्रताकी प्रेरणा प्राप्त की, दो हफ्तेमें अपनी स्वतंत्रता गँवा बैठा। आज अैसी घटनाअें हो रही हैं, जिनके बारेमें न तो कभी अितिहासमें पढ़ा गया और न कल्पना ही की गओी।

* * *

गांधीजी कहते हैं कि कांग्रेसने २० वर्षसे अहिंसाके मार्ग पर काम किया है। वह रास्ता छोड़ देंगे, तो आगे खतरेमें पड़ जायँगे। हमारी स्थिति दूसरी है। वहाँ तक पहुँच सकें तब तो अच्छा ही है, परन्तु भीतरी अव्यवस्था और बाहरके आक्रमणका अहिंसा द्वारा मुकाबला करनेकी ताकत हममें नहीं है। अगर अैसा संभव हो, तो अिससे अच्छा और क्या हो सकता है?

जब प्रान्तीय सत्ता हाथमें थी, तब भी हिंसाका थोड़ा-बहुत अुपयोग करना पड़ा था। अिस समय गुजरातके प्रतिनिधिकी हैसियतसे मैं नहीं कह सकता कि गुजरातमें अहिंसाकी अितनी तैयारी है। देशके लोग हमारी तरफ देख रहे हैं। यहाँ अव्यवस्था हो जाय, दंगे हो जायँ, तो सबकी नज़र केवल अेक कांग्रेसकी तरफ जाती है।

अंग्रेजोंसे हम कहते हैं कि अिस लड़ाओीमें आपका पूरी तरह साथ देनेको हम तैयार हैं। हमारा अहिंसाका प्रयोग आगे न बढ़ा सकें, तो भी आपकी लड़ाओीमें हम साथ देनेको तैयार हैं। नौजवानोंके लिअे फौजी तालीमकी गुंजाअिश चाहिये। कांग्रेसकी असेम्बली पार्टीने बार बार प्रस्ताव किये हैं कि सेनाका भारतीयकरण करना चाहिये।

अिस समय हम अपने बड़े सिद्धान्तका प्रयोग मुल्तवी कर रहे हैं, परन्तु हमारा अुद्देश्य अुस सिद्धान्तको सफल बनाना ही है।

गांधीजी बहुत दूर तक देखते हैं। हमारी नज़र वहाँ तक नहीं पहुँचती। हम गांधीजी पर भारस्वरूप नहीं बनना चाहते। रुकावट नहीं बनना चाहते। वे जितना अुड़ना चाहते हैं, अुतना अुड़नेकी शक्ति हममें नहीं है।

अेक मार्ग तो गांधीजीका बताया हुआ है; दूसरा मार्ग हथियारोंसे मुकाबला करनेका है। परन्तु तीसरा रास्ता आत्म-हत्याका है। पुस्तकें पढ़ते रहो तो अिससे कुछ नहीं होगा। आप नौजवान हैं। आपको अपनी नौजवानीका अुपयोग करनेका पूरा अवकाश है।

विश्व-प्रेमकी भावना रखते हों, तो सिद्धान्तकी दृष्टिसे यह सच है कि हमें अिंग्लैंडकी बिना शर्त मदद करनी चाहिये। परन्तु अैसा करने लगूँ, तो मुझे साधु बन कर बैठ जाना चाहिये। मैं तो अपने कुटुम्बको भी अैसे प्रेमकी प्रेरणा नहीं दे सकता। गांधीजीके सिवाय कांग्रेसमें किसीने भी अितने विश्व-प्रेमका विकास नहीं किया। अिसीलिअे वे विश्ववंद्य हैं।

अीसाने कहा है कि कोअी थप्पड़ मारे, तो दूसरा गाल सामने कर दो। परन्तु हम देख रहे हैं कि युरोपमें अीसाअी अुसका कैसा पालन कर रहे हैं।

यह तो व्यावहारिक वृत्ति है कि अभी वे संकटमें पड़ गये हैं, अिसलिअे वे मान जायँ तो हम गुलामीसे छूट जायँ। जब हम अैसा कहते हैं, तो वे कहते हैं कि आप सौदा करते हैं। मगर बड़े सौदागर तो वे लोग हैं।

हम आपका पिछला सब कुछ भूल जायँगे। परन्तु मैं पूछता हूँ कि आपको मरते-मरते भी कुछ छोड़ना है या नहीं? या वसीयत करके बाद की भी व्यवस्था कर देनी है? हम तो अितना ही विचार करते हैं कि जब हमारे देशकी ही आज़ादी नहीं है, तब विश्वकी आज़ादीको हम क्या करें? जब तक हम गुलाम हैं, तब तक सत्ताके मामलेमें कुछ भी स्पष्टता किये बिना हम जितनी मदद देंगे, अुतनी हमारी गुलामीकी बेड़ियोंको मजबूत बनानेमें ही सहायक होगी। पिछला अनुभव भी अैसा ही है। अिसलिअे हम जो बात कर रहे हैं, वह सौदे की नहीं परन्तु स्पष्टता करनेकी है।

२

[ता० १९–७–१९४० को गुजरात प्रान्तीय समिति, अहमदाबादमें दिये गये भाषणसे।]

* * *

बापूका लेख आपने पढ़ा होगा। अुसमें वे लिखते हैं कि सरदार ज़रूर वापस आयेंगे। लेकिन मैं तो कहीं गया भी नहीं और आया भी नहीं। मैंने

तो गुजरातके और बाहरके प्रतिनिधिकी हैसियतसे कार्य-समितिमें राय दी है। देशके बारेमें मेरा निदान गलत होगा, तो मुझे खुशी होगी, प्रसन्नता होगी।

मैंने तो गांधीजीसे कह दिया है कि आप हुक्म दें कि मेरे पीछे-पीछे चले आओ, तो मुझे आप पर अितनी श्रद्धा है कि आँखें बन्द करके दौड़ूँगा। मगर वे कहते हैं कि मेरे कहनेसे नहीं, तुम्हें खुद सूझता हो तो अिस मार्ग पर चलो। मैं अुनके साथ चल सकूँ, तो मुझे आपसे ज्यादा खुशी होगी। लेकिन जिसमें मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता, अुसमें झूठा अिकरार कैसे करूँ? मुझे या किसीको भी अुनके साथ बेअीमानी नहीं करनी चाहिये।

अुसके बाद गांधी सेवा संघमें चर्चा हुअी और किशोरलालभाअीने लेख लिखा, तो मैंने अिस्तीफा दे दिया। गांधी सेवा संघमें अहिंसाकी कोअी मर्यादा नहीं होनी चाहिये। वहाँ तो अुसका संपूर्ण प्रयोग होना चाहिये। मेरे जैसे अपूर्ण मनुष्यका अुसमें काम नहीं है। मौजूदा हालातमें मैं कांग्रेसको छोड़कर नहीं भाग सकता।

जब मलीकन्दामें अिकट्ठे हुअे, तब भी मैंने यही कहा था कि वर्तमान परिस्थितिमें कांग्रेसमें अहिंसाका संपूर्ण प्रयोग करना सम्भव नहीं है। हमारी शक्तिकी मर्यादा है। देशकी शक्तिके अन्दाज़में हमारे और गांधीजीके बीच मतभेद है। यह अेक व्यक्तिकी बात नहीं है। व्यक्ति कितना ही अूँचा जा सकता है। परन्तु हमारे सामने सारी संस्थाको, सारे देशको साथ ले जानेकी बात है।

समाज पर अत्याचार करनेवालों पर ज़रूरी हिंसाका अुपयोग किये बिना हम काम चला सकेंगे, अिस हद तक मेरी बुद्धि नहीं पहुँचती।

अिस समय दलीलोंकी गुंजाअिश नहीं है, सिद्धान्तोंकी चर्चाका समय नहीं है। आप सबको विचार करना चाहिये कि देशमें अव्यवस्था पैदा हो और बाहरी हमला हो जाय, तो भी क्या लोग हिंसाका अुपयोग नहीं चाहते?

अन्तमें हिंसा व्यर्थ होती है, यह तो हमने अपनी आँखों देख लिया। हिमालय पर्वत जैसी बड़ी मेजीनो-लाअिन बनाकर बैठ गये और मान लिया कि अुसमें पिन भी नहीं घुस सकती। परन्तु अुसमें छेद करनेवाली हिंसा भी निकल आअी।

बापूने अंग्रेज़ोंसे अपील की। मगर यह तो वे ही कर सकते हैं। मैं या आप नहीं कर सकते। आज भी अिंग्लैंडमें अुनके अनेक मित्र हैं। वाअिसरॉय भी अुन्हें मित्रकी हैसियतसे मित्रतापूर्ण चर्चाके लिअे बुलाता है, हमें नहीं बुलाता। वैसे बहुतसे अंग्रेज़ोंको बापूकी अपीलसे रंज भी हुआ है। हिंसाकी व्यर्थताका अितना प्रदर्शन होते हुअे भी अंग्रेज़ोंको और कुछ नहीं सूझता।

फिर भी हम यह नहीं कह सकते कि ये लोग निर्माल्य जैसे हैं। हमारी अहिंसा कमज़ोरोंकी है। अिस समय हम आगे नहीं जा सकते। कार्य-समितिके प्रस्तावका यह अर्थ है कि देशकी सलामती और रक्षाका भार अहिंसाके द्वारा नहीं अुठाया जा सकता। अिसका यह अर्थ नहीं है कि कांग्रेसने अहिंसाका सिद्धान्त छोड़ दिया है। परन्तु अिस मार्ग पर वह आगे नहीं जा सकती।

दो वर्षसे बापू लिख रहे हैं कि देशमें, कांग्रेसमें हिंसाका वातावरण है, गंदगी है, बुराअियाँ हैं। हम भी सोचें तो मालूम होगा कि हममें अेक-दूसरेके लिअे पहले जैसा विश्वास नहीं है।

बापूजीने यह सवाल रखा कि मुझे अपना प्रयोग करनेकी पूरी स्वतंत्रता और गुंजाअिश होनी चाहिये। अर्थात् अुन्होंने हमें छोड़ दिया है। हमने कहा कि आपकी तरह तेजीसे, अितने वेगसे हम आपके पीछे नहीं चल सकें, तो हमें आप पर भार नहीं बनना चाहिये।

आज हमें यह निर्णय करना है कि हमें स्वतंत्रता मिल जाय, पूरी सत्ता मिल जाय, तो क्या हम सेनाके बिना काम चला सकेंगे? अगर हम यह कहें कि हमारे पास हुकूमत आ जायगी, तो हम सेनाको भी बिखेर देंगे, तब तो वे कभी सत्ता नहीं देंगे। ज्यादातर मुसलमान अिसके खिलाफ़ हैं। कांग्रेससे बाहरके मुसलमान तो हिंसा पर ही कायम हैं। अहिंसाको थोड़े समयके लिअे बड़े क्षेत्रमें ले जाना मुल्तवी करना पड़े, तो अुसका यह अर्थ नहीं है कि स्वराज्यकी लड़ाअीके लिअे कांग्रेसके स्वयंसेवकोंकी अहिंसाकी प्रतिज्ञामें परिवर्तन करना है। परन्तु मैं आपके साथ किसी तरहकी बहस करके आपके विचार नहीं बदलना चाहता और श्रद्धा भी कम नहीं करना चाहता।

बाहरके लोग अब तक मुझे अंधा अनुयायी कहते थे। मैं कहता था कि वैसा हो सकूँ तो मुझे गर्व होगा। परन्तु मैं देखता हूँ कि मैं वैसा नहीं हूँ। आज भी गांधीजीसे कहता हूँ कि आप नेतृत्व करें, तो हम आपके पीछे-पीछे चलेंगे। परन्तु वे तो कहते हैं कि आँखें खोलकर अपनी बुद्धिके अनुसार चलो।

हम भी घरबार बरबाद करके आपके साथ लगे हैं। जब यहाँ तक तैरते-तैरते आ गये हैं, तो अन्तमें क्यों अलग हों? मगर यह तो अकल्पित स्थिति आ पहुँची है। यह असम्भव है कि अुसका असर देश पर न पड़े। १०-१२ देश तो अिन दो-तीन सप्ताहमें खतम हो गये।

कार्य समितिका प्रस्ताव आठ लकीरोंका है। अुसमें न सरकारकी आलोचना है और न लोगोंकी या और किसी की। अुसमें लच्छेदार भाषा भी

नहीं है। अुस प्रस्तावका अर्थ यह है कि हिन्दुस्तान भी स्वतंत्र और अिंग्लैंड भी स्वतंत्र, अैसा हो तो हम मदद देंगे।

अगर आपका यह खयाल हो कि बापू जो कहते हैं वही ठीक है, तो वैसा ही प्रस्ताव कीजिये और अुसपर अमल कीजिये। बादमें अुन्हें धोखा न दिया जाय। किसीको अिस ढंगसे विचार नहीं करना चाहिये कि अिसमें बापूकी वफादारीका सवाल है। आपका यह खयाल हो कि वे जिस प्रकारकी अहिंसाकी कल्पना करते हैं, अुसी प्रकारकी अहिंसाका पालन करना है, तो आप वैसा प्रस्ताव पास कीजिये। परन्तु गांधीजी हमसे अंधी वफादारी नहीं चाहते। हमारी शक्ति कितनी है, यह हमें अुनसे साफ-साफ कह देना चाहिये। जो चीज़ कांग्रेसके अन्दर नहीं है, अुसके लिअे 'है' कहनेसे काम नहीं चलेगा। अुससे नुकसान होगा।

जो कायर है अुसे अहिंसा क्या सिखाअूँ? अुसके पास मैं जो हलकी चीज़ रखता हूँ, अुसे वह समझ सकता है। अुसके सामने भारी वस्तु रखता हूँ, तो वह घबरा ही जाता है। अिसलिअे अुसे साधारण आदमीके रास्ते लगा दें तो वह लग सकता है। बादमें वह आगे बढ़ जायगा।

अब तक हमने अहिंसाके प्रयोग किये, यह ठीक किया। मगर लोगोंमें जो कायरता है, — वे जहां खड़े हैं अुससे आगे नहीं चल सकते — अुसका क्या किया जाय? जहाँके तहाँ खड़े रहनेका यह समय नहीं है। हमारे सामने चुनाव करनेका समय आ गया है।

* * *

आपमें से जो केवल रचनात्मक कार्यमें लगे हुअे हैं और हर हालतमें अहिंसा पर कायम रहना चाहते हैं, अुनके सिरपर हमसे ज़्यादा जिम्मेदारी है। आपका यह खयाल हो कि कांग्रेस गलत रास्ते पर जा रही है, तो आपको निःसंकोच अुसका भार अुठा लेना चाहिये। मैं तो ज़रूर आपको सौंप दूँगा।

१११

युद्धका विरोध

[ता० ३-९-१९४० को सूरतमें दिये गये भाषणसे ।]

१

*   *   *

यह अेक अजीब-सी बात है कि दुनियाके पाँचवें हिस्सेकी आबादीवाले देशको अैसे दारुण युद्धमें बिना पूछे फँसा दिया गया है ।

आप कहते हैं कि हमारे अुद्देश्य शुद्ध हैं । आप अुच्च आदर्शोंके लिअे, महान सिद्धान्तोंके लिअे लड़ते हों, तो बताते क्यों नहीं ! हम यही तो जानना चाहते हैं । परन्तु अुन्होंने अिसका सीधा जवाब नहीं दिया । और जो कुछ बोले अुसमें से यह सार निकला कि युरोपकी नअी रचनाके लिअे जर्मनी और हम लड़ रहे हैं। युरोप और अमेरिकाको छोड़कर बाकीके देशों पर सफेद रंगके लोग कैसे काबू रख सकते हैं, अिस बातकी यह लड़ाअी है — अैसी गंध अिसमें से आ रही है ।

*   *   *

हमारी लड़ाअी तो आपके साथ हो रही थी । अब आप पराये देशोंके साथ लड़ते हैं, तो हमारा तो पिंड छोड़िये ।

कहते हैं यहाँ अनेक दल हैं, अनेक जातियाँ हैं, सब अेक नहीं होते, आज़ादीके लायक नहीं हैं । १२ महीने तक अिस तरह टालते रहे । बिल्लियों और बन्दरका खेल खेलने लगे ।

*   *   *

कांग्रेसको तो ३५ करोड़की आज़ादी चाहिये । सारे भारतवर्षकी मुक्ति चाहिये । कांग्रेस अितनी-सी बातके लिअे नहीं लड़ रही है कि अुसके दो-चार आदमियोंको ओहदे मिल जायँ । हमारा यह धंधा नहीं है कि दो-चार को ५ हज़ारका वेतन मिल जाय ।

*   *   *

यह घोषणा कांग्रेसकी अिज़्ज़त पर, हिन्दुस्तानकी अिज़्ज़त पर वार करती है । जब वे कांग्रेसको दबा देना चाहते हैं, तो कांग्रेस यह अुम्मीद रखती है कि करोड़ों लोग हृदयसे अुसका साथ देंगे । यह घोषणा कांग्रेसको लड़ाअीका निमन्त्रण है ।

*   *   *

हम पर अीश्वरकी बड़ी कृपा है। अिस सरकारने गाँवोंकी अैसी हालत कर दी है कि वहाँ बम डालनेसे अेक बम बनानेके खर्चके बराबर भी नुकसान नहीं हो सकता।

* * *

कांग्रेस अिस देशमें से राष्ट्रीयताका नाश कभी नहीं होने देगी। कांग्रेस नीचा सिर नहीं करेगी।

हमारे लिअे अब भोगनेको रह ही क्या गया है! दो सौ वर्ष राज्य करनेके बाद अिस देशमें स्वावलंबी बने रहनेकी स्थिति नहीं है, तो जो होगा हम भुगतेंगे। अुसके पाप तो आपके सिर हैं।

* * *

हमारा अंग्रेजोंसे विरोध नहीं है। यह किसी जाति या व्यक्तिका सवाल नहीं है। यह तो साम्राज्यवादके विरोधका प्रस्ताव है। नाज़ीवादका जन्म होनेके पहलेसे हम साम्राज्यवादसे लड़ते आ रहे हैं। दो लड़ते हों तो हम क्या करें! देखते रहें। दो बलाअें लड़ती हों तो भले ही लड़ें। मगर अेक बला तो घरमें घुसी हुअी है।

* * *

हिन्दुस्तानमें यह बालिश्तभर पुर्तगालका राज्य है। अुसे बंदरगाह किस लिअे चहिये? फ्रांसका भी बंदरगाह है। गोरे लोगोंने आपसमें सलाह-मशविरा करके हिन्दुस्तानमें व्यापार जमाया है।

* * *

अिस वक्त अंग्रेजोंकी भावना कैसी है, यह देखिये। बर्माके भूतपूर्व मंत्री और अुसकी पत्नीको गोलमेज परिषदमें ले गये। अुसे बड़ा बनाकर लौटाया और अब अुसे दो सालकी सख्त सजा दी है।

यहाँ अहमदनगरमें जर्मनोंको पकड़कर रखा है; अुन्हें खेलनेको टेनिस चाहिये। जब हमारे लोगोंको पकड़कर सख्त सजा देते हैं, तब कैसे रखते हैं! अितना रंगभेद तो यहाँ हम देखते हैं।

* * *

१९३०-३२ की लड़ाअीमें हम लड़ाअीकी रचना कर सकते थे। अुस लड़ाअीमें सरकार भी कुछ सभ्यता रखती थी। मगर अिस लड़ाअीमें अैसी आशा मत रखिये। यह लड़ाअी हम पर अेकदम आ पड़ेगी। हमें तो कुछ भी छिपा कर रखना या करना नहीं है। अिसलिअे जिसमें लड़नेकी हिम्मत हो, अुसे खुल्लमखुल्ला रास्ता ढूँढ़ लेना चाहिये।

आज मिल लिये, कल मिलनेका यकीन नहीं। आखिरी राम राम। दुनिया बदलती जा रही है। गुजरातकी लाज रखना।

२

(ता० ७-९-१९४० को अहमदाबादके कांग्रेस भवनमें खड़े सत्याग्रहियोंको* सभामें दिये गये भाषणसे।)

* * *

कांग्रेसमें कितने ही अुग्र स्वभाववालोंके होते हुअे भी अेक वर्ष निकाल दिया। हमारे सेनापतिका यह तरीका है कि कुछ भी गुंजाअिश हो, तो लड़ाअी न की जाय। अब तो लड़ाअी हम पर लाद दी गअी है। अगर लड़ाअी लाद ही दी जाय, तब अुसे टालना तो कायरता होगी।

* * *

जैसे अिमारतका आधार अुसकी नींव पर है, वैसे ही लड़ाअीका दार-मदार सैनिकोंके चरित्र पर है। अुनकी कुरबानी सच्ची होगी तो जाग्रति होगी।

* * *

रचनात्मक कार्य और स्वाभिमान दोनोंमें चुनाव करनेका मौका आये, तो स्वाभिमान पसन्द किया जाय। वैसे अिस बार बात हमारी पसंद पर नहीं रहेगी।

वे सत्याग्रही लड़ाअीमें शामिल न हों, जिन्हें यह आशा हो कि अुनके परिवारको आर्थिक सहायता मिलेगी। किसी भी सत्याग्रहीको अैसी अुम्मीद नहीं रखनी चाहिये और न यह शिकायत ही करनी चाहिये कि कांग्रेसने मुझे अितनी सुविधा नहीं दी।

* * *

ये लोग आपसमें लड़ते हैं, मगर यह मानते हैं कि सफेद चमड़ीवाले सब खुदाके बेटे हैं। अहमदनगर जाकर देखो तो मालूम होगा कि जर्मन कैदियोंको वहाँ खाना, खेलना और बोतल, सब कुछ मिलता है। अैसे रहते हैं जैसे होटलमें रहते हों। अुनका बिल सरकार चुकाती है।

परन्तु अहमदनगरके राजा जैसे प्रतिष्ठित रावसाहब पटवर्धन जैसोंको थाना जेलमें सख्त कैद दी जाती है। बारह महीने पहले अुनकी विवाहिता स्त्री मिलने गअी, तो अुन्हें सींखचोंकी जालीमें से मिलने दिया गया। अुनकी आंखोंमें पानी आ गया।

हम शराफ़तसे पेश आयें, तो बादमें जेलके अधिकारियोंके दिल पिघल जाते हैं। हम अुनके हृदयोंमें परिवर्तन न कर सकें, तो अिसे हमें अपनी कमी समझना चाहिये। स्वाभिमानकी हानि हो तो पिछले अुदाहरण मौजूद हैं। पूणीके अमृतलालकी मिसाल तो है ही। अुसे मरा हुआ समझकर छोड़ दिया गया। परन्तु आखिरमें जेलरको जेल जाना पड़ा।

---

* गत महायुद्धके शुरू होने पर कांग्रेसने मंत्रिमंडल छोड़नेके बाद सत्याग्रहकी तैयारी शुरू की, तब जिन लोगोंने अपने नाम लिखवाये थे वे 'खड़े सत्याग्रही'।

हिंसक लड़ाअीमें जैसे सिपाहीकी बहादुरीकी परीक्षा लड़ाअीके मैदानमें होती है, वैसे सत्याग्रहीकी परीक्षा पूरी तरहसे जेलमें होती है। जेल जानेवाले आदमीको दिलमें चिंता नहीं रखनी चाहिये। बाहर तेज़ी है या मंदी, दूसरे लोग आते हैं या नहीं, लड़ाअी कैसी चल रही है, आदि फिकर नहीं करनी चाहिये। अुसे तो यह सोचना चाहिये कि अुसका अपना असर आसपासके कैदियों पर कैसा पड़ रहा है।

११२

म्युनिसिपल सेवा

[ता० ७-९-१९४० को अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीके मैदानमें म्युनिसिपल कर्मचारी संघके सामने दिये गये भाषणसे।]

* * *

मुझे अिस बात पर गर्व है कि मैंने अपने जीवनका सबसे अच्छा भाग अिस संस्थाके लिअे दिया है। मैंने जितने वर्ष अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीमें विताये हैं, अुन्हें याद करता हूँ तो मुझे अुससे संतोष होता है। मैंने तो यहाँके भंगियोंके हृदयमें भी स्थान प्राप्त किया है। मैंने अुन्हें कुछ खास दिया-लिया नहीं है, फिर भी वे मुझे याद करते हैं। अिसी तरह यहाँके छोटे-बड़े और लोग भी याद करते हैं। अिसका कारण यह है कि यहांकी अपनी कुरसी पर बैठ कर भी मैंने सबके दुःखकी बातें अुस बड़ी कुरसी पर बैठे-बैठे नहीं, बल्कि अुनके साथ बैठ कर सुनी थीं।

* * *

यह जमाना अैसा है कि कोअी संगठन बनाये बिना प्रगति नहीं की जा सकती। समूहमें रहकर ही तरक्की की जा सकती है। अेक दूसरेके दुःख मिटाये न जा सकें, तो भी अेक दूसरेसे मिलकर जी हलका कर सकते हैं। अहमदाबादमें जैसा 'मजूर महाजन' है, वैसा कहीं नहीं है। हमारे देशमें पहला कारखाना रणछोड़भाअी लाये। युरोपमें कारखानोंके मालिक मज़दूरोंका खून चूसते थे, अिसलिअे वहाँ संघ बने। हमारे मुल्कमें संस्कृति भिन्न होनेके कारण मालिक मज़दूरोंको चूसते थे, फिर भी शादी-गमीके मौके पर अुनके यहाँ जाकर बैठते थे। अपने यहाँ विवाह होता, तो मज़दूरोंको खिलाते थे। धीरे-धीरे पश्चिमकी बुराअियाँ मालिकोंमें घुसने लगीं और मज़दूरोंमें भी घुसने लगीं। तब गांधीजीने हमारी संस्कृतिके अनुकूल संघ स्थापित किया।

अेक दूसरेके खिलाफ बक-झक करने और संघर्ष करनेसे फायदा नहीं है।

समझदार आदमी यह स्वीकार करते हैं कि गांधीजीने यह संघ बनाया, जिससे अहमदाबादको बहुत लाभ हुआ।

म्युनिसिपल कर्मचारी संघका संगठन करनेका भी यही अुद्देश्य है। बड़ेसे बड़े और छोटेसे छोटे नौकरमें भेद नहीं है। सभी अिस संघके सदस्य हैं। अिसका हेतु यह है कि छोटेसे छोटे कर्मचारीके हकोंकी रक्षा की जाय। छोटोंके हकोंकी रक्षा करनेमें बड़ोंके हकोंकी रक्षा हो जाती है।

जो आदमी अपने हकोंकी अपेक्षा रखता है, अुसे अपने फर्ज़का भी खयाल रखना चाहिये। फर्ज़का, जिम्मेदारीका अर्थ यह है कि संचालकोंको हमारे कामसे संतोष होना चाहिये। यह काम कठिन है। म्युनिसिपेलिटीके नौकर होनेका अर्थ यह नहीं होना चाहिये कि कोअी न कोअी अड़ंगा खड़ा करें या झगड़ा पैदा करें। परन्तु म्युनिसिपेलिटीका काम करते हुअे लोगोंका प्रेम सम्पादन करना चाहिये और अुन्हें अपने कर्त्तव्योंका भान कराना चाहिये। संचालकोंके और हमारे बीचमें प्रेमकी गाँठ होनी चाहिये। हमें अुनकी मान-मर्यादा रखनी चाहिये।

* * *

संगठनमें दूसरी चीज़ यह है कि आपसमें आवश्यक भाअीचारा रखा जाय। जैसे बीच समुद्रमें अेक नावमें बैठे हुअे लोग प्रेम और मुहब्बत रखते हैं, वैसी ही मुहब्बत और प्रेम रखना चाहिये।

आपको यह भी सावधानी रखनी चाहिये कि संगठनमें शरीक होनेवाले किसीका हक मारकर लाभ न अुठायें, भले ही अूपरसे शह मिलती हो। अेक दूसरेके हक मारकर आगे बढ़ेंगे, तो संगठनसे क्या फायदा?

* * *

आजकल चारों तरफसे दुनियाके अैसे ग्रह अिकट्ठे हुअे हैं कि वह विनाशके मार्ग पर चल रही है। और वह जिस तेजीसे दौड़ रही है, अुसका क्या परिणाम होगा, यह कोअी नहीं कह सकता।

हमें हरअेक जातिकी सेवा समान भावसे करनी चाहिये। अैसा करनेसे ही अिस संघकी स्थापना अुपयोगी होगी।

११३

लींबड़ीके हिजरतियोंसे

[ता० ८-९-१९४० को जोरावरनगरमें लींबड़ीके हिजरतियोंकी सभामें किया गया प्रवचन ।]

आप सबसे मिलनेका अवसर पाकर मैं खुश हुआ हूँ । बहुत दिनोंसे मिलनेकी अिच्छा थी, क्योंकि जबसे आप हिजरत करके निकले हैं, तबसे मैं आपसे अेक बार भी नहीं मिल सका । हिजरत पर कौन-कौन निकले हैं ? कैसे आदमी हैं ? अुनकी श्रद्धा कैसी है ? आदि सब जानना था । परन्तु मैं बड़े काममें लगा हुआ था । पिछले साल काठियावाड़में अकाल पड़ा था, तब जिन सहृदय मनुष्योंने अिस कामको हाथमें लिया था, अुन लोगोंसे मिलनेका कार्यक्रम कल रखा गया था । अुस कामके लिअे यहाँ आता तो आपसे तो मिलना होता ही । अिस प्रकार अेक पंथ दो काज वाली बात हो गअी, अर्थात् मेरा यहाँ आना सार्थक हो गया ।

दरबारसाहबकी शादी जब भक्तिबाके साथ हुअी, तब लींबड़ीके ठाकुर साहबने भक्तिबाको अपनी लड़की मानकर अपने हाथों कन्या-दान देनेका आग्रह किया था । तब अुस वक्तके तत्कालीन दीवान स्वर्गीय झवेरभाअीके और ठाकुर साहबके निमंत्रणके कारण मुझे सीधे लींबड़ी आना पड़ा था । जब मैं तीन साल विदेशमें रहकर हिन्दुस्तान आया, तब बम्बअीसे घर न जाकर सीधा पहली गाड़ीसे लींबड़ी आया था । अिस प्रकार ठाकुर साहबके और तत्कालीन दीवान स्वर्गीय झवेरभाअीके साथ मेरा सम्बंध बहुत पुराना है । अुसके बाद ठाकुर साहबने जिस भक्तिबाको अपनी पुत्री माना, अुसने और दरबारसाहबने खेड़ा जिलेका भार सँभाला, अुस समय मुझे स्वप्नमें भी खयाल नहीं था कि राजधानीमें राज्यके आदमी राजाकी लड़की या अुसकी मोटर पर हमला करेंगे । डेढ़ वर्ष पहले जब मैंने यह सुना, तब मुझे लगा कि राज्यके दिन फिर गये हैं । यह सुना था कि पुराने जमानेमें राक्षस राजपुत्रियों पर हमला करते थे । परन्तु जब राजधानीमें राज्यके आदमियोंका अैसा करना बरदाश्त कर लिया जाय, तब यही माना जा सकता है कि राज्यकी बुरी दशा आ गअी है ।

प्रजा राज्यसे विनयपूर्वक कुछ माँग करे, अिसके लिअे अुसके घर-बार लूटे जायँ, प्रजामें फूट डाली जाय और अुस पर गुंडोंको छोड़ा जाय, तब या तो प्रजामें अितनी शक्ति होनी चाहिये कि राज्यको अुसके धर्म-पालनका भान कराये, या

ज़रा भी स्वाभिमान हो तो वह जगह छोड़ दे। जहाँ डर होता है, तकलीफ होती है, वहाँ पशु भी नहीं रहते; वे स्थान छोड़कर चले जाते हैं। तब मनुष्यको तो जहाँ मान-मर्यादा या स्वाभिमान न रखा जा सके, वह जगह छोड़ ही देनी चाहिये। आप पर जो जुल्म ढाये गये, अुनका हाल सुनकर गांधीजीने कहा था कि लींबड़ी छोड़ देना चाहिये। फिर भले ही व्यापारी निकलें या किसान।

दो-तीन दिन पहले अहमदाबादमें मेरे मकानके पास अेक आदमी आया था। अुसने अेक कुर्ता पहन रखा था, जिस पर व्यापारियोंके खिलाफ विरोधी वाक्य लिखा हुआ था। वह अपने साथ दो किसानोंको ले आया था। दो महीने पहले अुसने मुझे पत्र लिखा था कि व्यापारी किसानोंके दुःखोंकी तरफ ध्यान नहीं देते, अिसलिअे मैं अुनके दुःख निवारणके लिअे अनशन करूँगा। मैंने सोचा के दुःखियोंके लिअे प्राण देनेवाला कोअी निकला तो सही! अिसलिअे जब वह आदमी मेरे पास आया, तो मैंने पूछा कि कैसे आये? अुसने कहा कि अिन किसानोंके दुःख सुनाने आया हूं। मैंने जवाब दिया कि मैं तो यह मानता था कि तुम किसानोंका दुखड़ा रोनेके लिअे कभीसे अीश्वरके दरबारमें पहुँच गये होगे। मगर तुम तो किसानोंको धमकी-पत्र भेजना सिखाते हो, स्वाभिमान छोड़कर भिखारी बनाते हो और मुझसे भी ज्यादा तगड़े दिखते हो।

मैं तो किसानोंसे हमेशा कहता हूँ कि खुद मेहनत करके स्वाभिमानसे हिजरतमें न रह सको, तो लींबड़ी वापस चले जाओ। मगर यह आशा मत रखो कि व्यापारी तुम्हें सहारा देंगे। व्यापारी व्यापारी ही हैं, और राजा राजा ही। व्यापारियोंसे सहायताकी आशा रखकर भिखारीसे भी बुरे न बनो। लींबड़ी वापस जाकर राजाकी पदरज सिर पर चढ़ाओगे, तो वहाँसे कुछ मिलता रहेगा। मगर अैसा करनेवाले हिजरती नहीं कहला सकते। वे तो भिक्षुकसे भी बुरे हैं।

मैंने अनेक किसानोंसे हिजरत करवाअी है। डेढ़-दो वर्षके लिअे नहीं, बल्कि १०-१० साल तक हिजरत करवाअी है; परन्तु अुन्हें भिखमंगा नहीं बनाया। वह हिजरत लींबड़ी जैसे ठाकुरके विरुद्ध नहीं थी, परन्तु बड़े साम्राज्यके खिलाफ थी। वह हिजरत अुस ब्रिटिश साम्राज्यके विरुद्ध थी, जो आप पर, मुझ पर और राजा-महाराजाओं पर राज्य करता है। अुस साम्राज्यने घोषणा की थी कि जमीनें वापस नहीं दी जायँगी। बड़े-बड़े समृद्ध आदमियोंको ज़ब्त ज़मीनें बेच दी गअी थीं। फिर भी अुस बड़ी सत्ताधारी हुकूमतसे अुसकी घोषणाके बावजूद भी अुसीके रुपयेसे बेची हुअी ज़ब्त ज़मीनें वापस खरीद कर मैंने हिजरत पर गये हुअे किसानोंको दस-दस वर्षके बाद भी वापस दिलवाअी हैं।

किसानोंके लिअे तो धरती ही माता है। जिसमें श्रद्धा है वह तो कहीं भी ज़मीन खोदकर धन पैदा कर लेगा। वही सच्चा हिजरती है। जब जहाज

डूबने लगता है, तब अुसमें जो कूड़ा-करकट होता है, वह पानीमें डाल दिया जाता है। अिसी तरह हिजरत पर निकले हुअे सभी अेक नावमें बैठे हैं। अगर अुसमें कमजोर लोग हों, ढीले-ढाले हों, तो अुन्हें अलग कर देना चाहिये। वे भले ही वापस लौट जायँ। मगर यह ध्यान रखना कि आपके स्वाभिमानका भंग न हो।

व्यापारियोंमें भी मुझे कोअी कोअी कमज़ोर नज़र आते हैं। मगर मैं कहता हूँ कि आप ही नहीं, अपनी भावी संतानोंसे भी कह दीजिये कि अुस प्लेगकी जगह पर न जायँ। हमने राजाका अपराध नहीं किया है। अपराध किया होता तो मैं ही आपको सलाह देता कि माफी माँगकर लौट जाओ। परन्तु राज्यने अपराध किया है।

स्वाभिमानी चारण कहते थे: 'तेरे मंगन बहुत तो मेरे भूप बहुत' — मुझे प्रजा बनकर रहना होगा तो राजाओंकी क्या कमी है। आपको लींबड़ीको भूल जाना चाहिये और अैसी परिस्थिति पैदा कर देनी चाहिये कि लींबड़ीके खाली मकान देखकर ठाकुरकी नींद हराम हो जाय।

लींबड़ीका अेक भी हिजरती सच्चा होगा, तो वह अिस कामको पूरा करेगा। आप तो अितने ज्यादा हैं। परन्तु आपको तपस्या करनेकी तैयारी रखनी चाहिये। वह राजा है अिसलिअे प्रजाको जितनी ठोकर लगाये, अुतनी सहन कर लेनी चाहिये, अिस बातसे मैं अिनकार करता हूँ। अपने हक और स्वाभिमानके लिअे जो कुछ भुगतना पड़े सो भुगतना चाहिये। जहाँ ज़मीन मिल जाय, वहीं पड़े रहना चाहिये।

काठियावाड़में ही नहीं, बल्कि अनेक देशी राज्योंमें रहना खतरनाक समझा गया है; अिसीलिअे वर्षोंसे वहाँसे भागे हुअे साहसी लोग आजकल अलग-अलग स्थानों पर करोड़पति बन गये हैं। कलकत्ता, बम्बअी और दूसरे स्थानोंके मारवाड़ियोंको देखिये। काठियावाड़ियोंकी तरफ़ नज़र डालिये। अिसके लिअे हममें अुतना ही तेज और साहस होना चाहिये। किसी भी राज्यका काम व्यापारीके बग़ैर नहीं चल सकता; परन्तु वह व्यापारी सच्चा होना चाहिये।

आजकल क्रांतिका युग है। हिन्दुस्तानके बाहर नजर डालें तो पता चलेगा कि नकली नहीं परन्तु सच्चे राजाओंको, जो सिंहासन पर बैठे हुअे हैं, यह पता नहीं कि वे कल राजा रहेंगे या नहीं। अेकके बाद अेक राजाको राजपाट खोते हुअे हम देख रहे हैं। यही सवाल है कि भविष्यमें अेक भी राजा रहेगा या नहीं। बड़े राज्य अपने पास-पड़ोसके छोटे राज्योंको निगल जायँगे; तब लींबड़ी किस खेतकी मूली है?

अिस समय दुनियामें अिनकलाब हो रहा है । अुससे संसारका पाप धुल रहा है । प्रजा जिसकी सहायक नहीं है, अुसका बुरा हाल होनेवाला है ।

हम हिजरती हैं, अिसलिअे लींबड़ीकी तरफ़ नजर भी न करें । ठाकुर साहब या अुनके अुत्तराधिकारी जब आपको बुलायें तभी जाना चाहिये । परन्तु आपके मनमें अैसा दृढ़ विश्वास होना चाहिये । हिजरत पर निकलना कठिन है। परन्तु आप पढ़ते हों तो मालूम होगा कि ५ हजार मील दूर अेक हथेलीके बराबर अिंग्लैण्ड नामका टापू है । वह हम पर राज्य कर रहा है । वहाँसे चमार, मोची, तेली, तमोली सब हमारे यहाँ आते हैं । अुनको हमारे राजा भी सलाम करते हैं और हम भी करते हैं । वे हिजरत पर नहीं निकले हैं, मगर आज अुनके यहाँ खतरेकी घंटी बजते ही बूढ़े, बच्चे और नौजवान सब बिलमें चूहेकी तरह तहखानोंमें घुस जाते हैं । वे हिजरत पर नहीं निकले हैं, तब भी अपने घरमें बैठे हुअे अितना दुःख सहन कर रहे हैं ।

राजाओं पर और शासन करनेवालों पर भी दुःख है, तब हमारी क्या बिसात ? आपको तो खानेको रोटी भी मिलती है, मगर वहाँ तो अेक दूसरेको भूखों मारनेकी कोशिश कर रहे हैं । हम पर अभी तक अैसी आफत नहीं आअी, अिसे अीश्वरकी कृपा समझिये । हमने स्वेच्छासे दुःख मोल लिया है । यह तो तपस्या है और अीश्वर तपस्याकी सुनवाअी करता है ।

आप सच्चे हिजरती हों, तो किसी पर भी आधार न रखें । भगवान पर श्रद्धा रखें । किसान सिर्फ अपने हाथ-पैरों पर और भगवान पर श्रद्धा रखें, तब हिजरत शोभा देगी । छोटे व्यापारियोंसे भी मैं कहता हूँ कि अगर आपको यह खयाल होता हो कि बड़े व्यापारी बड़े-बड़े बंगलोंमें रहते हैं और मोटरोंमें सैर करते हैं अिसलिअे अुन्हें हिजरत पुसा सकती है, तो मेरी सलाह है कि आप वापस चले जायँ । सुख और दुःख मनके कारण होते हैं। यदि आदमी अपना दिल मजबूत कर लेता है, तो अुसे दुःख महसूस नहीं होता । वह तप करता है। जब अुसका तप सच्चा होता है, तब सच्चा समय आता है; और अुस वक्त अीश्वर अुसका हाथ पकड़े बिना नहीं रहता ।

गुजरात समाचार, १०-९-१९४०

११४

वढ़वाणकी सार्वजनिक सभा

[ता० ८-९-१९४० को वढ़वाणकी सार्वजनिक सभामें दिया गया भाषण ।]

मेरे अेक साथी जोरावरनगरमें रहते थे, जिन्होंने आपकी बहुत सेवा की थी। वह थे मणिलाल कोठारी। जब यहाँ आता हूँ तो अुनकी मूर्ति मेरे सामने खड़ी हो जाती है। अुन्होंने हर काममें मेरा साथ दिया था। आज काठियावाड़में अुनकी कमी महसूस होती है। बाढ़-संकट, हिम-संकट या अकाल जैसे कामोंमें मणिलाल कोठारी सबसे अधिक काम करनेवाले थे। कहींसे भी रुपया ले आनेमें वे कुशल थे। जब काठियावाड़में अकाल पड़ा, तब अुनका अभाव महसूस हुआ।

अैसे ही यहाँके मेरे दूसरे साथी फूलचन्दभाअी हैं। जबसे मेरा राजनैतिक जीवन शुरू हुआ, तबसे वे मेरे साथी है। अुनकी गैर मौजूदगी भी अिस समय मुझे खटकती है।

सवा वर्षसे मैं काठियावाड़में नहीं आ रहा था। मुख्य कारण यह था कि मेरे यहाँ आनेसे यहाँका काम नहीं हो सकता। अुल्टे मुश्किलें पैदा हो सकती हैं, अतः मुझे नहीं आना चाहिये।

जबसे राजकोटकी संधि हुअी, तबसे रात-दिन मेरा दिल काठियावाड़में भटकता रहता है, और जब तक हमारी मुक्ति नहीं हो जायगी, तब तक भटकता रहेगा। जब काठियावाड़में अकाल पड़ा, तब यहाँसे बहुतसे मवेशी गुजरातकी तरफ जाने लगे। मनुष्य भी चले गये। अैसे अकालसे निपटनेकी हममें शक्ति होनी चाहिये। अब सम्वत् ५६ के अकाल जैसी स्थिति नहीं है। आजकल तो दुनियाके दूसरे सिरेसे भी अनाज ला सकते हैं। मगर हमारे पास सामग्री नहीं थी। अुस शक्तिको हम संगठित भी नहीं कर सकते। क्योंकि यहाँ जितनी हुकूमतें हैं, अुतनी तमाम दुनियाके किसी भी प्रदेशमें नहीं हैं।

हम पहलेसे ही संगठित होकर काम शुरू करते तो अच्छा रहता। मगर मेरी हिम्मत नहीं हुअी; क्योंकि राजकोटके महलमें जब संधि हुअी, तब मैंने समझ लिया था कि आपकी समस्या हल हो गअी है और आपत्ति चली गअी है। परन्तु राजकोटके आन्दोलनका परिणाम यह हुआ कि राजा चौंक गये और संगठित हो गये। मेरे और कांग्रेसके प्रति रोष पैदा हुआ। फलतः राजकोटमें गांधीजी पर आक्रमण किया गया। कुछ जागीरदारोंने प्रार्थनाके समय न करने

लायक काम किया, शोर मचाया। अिससे सारे हिन्दुस्तानको चोट लगी। अैसे कामके लिअे अुन आदमियोंको भी अब पश्चात्ताप होगा या हुआ होगा।

परन्तु राजाओंका यह चौंकना गलत है। असलमें कांग्रेस ही राजाओंकी रक्षा करना चाहती है। कांग्रेस मानती है कि राजाओंका राज्य अमर रहे। मगर जैसे राज्य आज हैं, वैसे हरगिज नहीं रहेंगे। राज्य अैसे होने चाहियें कि प्रजा खुद राजाकी रक्षा करे। अुसे प्रजा जिम्मेदार हुकूमत कहती है। अगर अैसा नहीं होगा तो कांग्रेस मानती है कि संसारकी कोअी शक्ति अुनकी रक्षा नहीं कर सकती। राजकोटमें हमने जो काम किया था वह मित्रताका था। जिन लोगोंने अुस मित्रताके कामको नष्ट करनेका काम किया है, अुन्हें किसी दिन महसूस होगा कि अुसे बिगाड़कर अुन्होंने भूल की है।

कुछ लोग मानते हैं कि वीरावालाने मुझे छकाया और पैट्रिकको निकालनेमें मेरा अुपयोग किया। मगर अैसा कहनेवाले अिसके पीछे काम करनेवाली शक्तियोंको नहीं समझते। वे राजनीतिका ककहरा तक नहीं जानते। वह सब कैसे हुआ, यह तो भविष्यमें परदा अुठनेके बाद ही मालूम होगा। परन्तु राजकोटमें संतको जो अुपवास कराया गया, जिस प्रकार संतको सताया गया, अुसका अिन्साफ तो अीश्वर करेगा ही और कर ही रहा है। कितने ही अिसका जवाब आजकल दे रहे हैं। संतको दुःख देनेवाला कभी सुखी नहीं हुआ।

काठियावाड़में अकाल पड़ने पर जब मनुष्य भी देश छोड़कर जाने लगे तब मुझे बहुत दुःख हुआ। मैंने अपने साथियोंसे सलाह-मशविरा किया। परन्तु राजाओंको अिस कामके पीछे रहा शुद्धभाव — संकट-निवारणका अुद्देश्य समझमें आ जाय, तब तक धीरज रखनेका विचार करते रहे।

अिसी बीच बेचरभाअी आ गये। मैंने अुन्हें हिम्मत दिलाअी। अुन्होंने काम शुरू किया। भरसक मदद दी। फलतः सबको संतोष हुआ। अिस काममें व्यापारियों, जागीरदारों और मुसलमानोंने संगठन करके जो कुछ किया, अुससे मुझे शांति हुअी, दिल ठंडा हुआ।

संकटमें पड़े हुअे लोगोंके पास जाकर बैठने और अुनकी तरफ प्रेमभरी नज़रसे देखने और मीठी बातें करनेसे वे दुःख भूल जाते हैं। यह तो सभी पड़ोसियोंका कर्तव्य है। आज तो अुसी पुण्यसे सब खुशहाल हैं। अुस पुण्यके बिना और कोअी पुण्य नहीं, जिससे बरसात आता।

मगर आअिन्दा क्या किया जाय, अिसका विचार करना चाहिये। पिछला दुखड़ा रोना कायरोंका काम है। हिसाब लगाकर मुकाबलेकी तैयारी करना बहादुरोंका काम है। दुःखके समय हम प्रजाके पास दौड़कर जायें यह ठीक है। परन्तु काम अैसा करना चाहिये कि जिससे आअिन्दा अैसा दुःख पैदा ही न हो।

अैसा काम गांधीजी स्वयं जबसे आये हैं तबसे हिन्दुस्तान और काठियावाड़के लिअे खास तौर पर करके बता रहे हैं। वे कहते हैं कि अकालका बीमा कराना हो, तो चरखे जैसा और कोअी अुपाय नहीं है। 'सूतके धागेसे स्वराज्य लेना है' यह बात सबको मीठी लगती है। मगर गलेसे नीचे नहीं अुतरती, दिलमें नहीं जमती।

अिस समय काठियावाड़ ५० हज़ार रुपये की खादी पैदा कर रहा है। अब पहलेसे बहुत समझपूर्वक पैदा करता है। अब तो अेक लाखकी खादी बन सकती है। मगर अुसे कहाँ बेचा जाय? विचार तो अितना ही करना है कि जिनके पास बहुत दौलत पड़ी है और फिर भी जो अधिक कमाना चाहते हैं, अुन धनवानोंका कपड़ा लिया जाय, या वह कपड़ा लिया जाय जिससे पड़ोसके गरीबोंकी सहायता हो? अगर सारा काठियावाड़ खादी पहननेका निश्चय कर ले, तो राजा नहीं रोक सकते, भुखमरी मिट जाय और कठिनाअियोंका खतरा टल जाय।

दूसरे, छुआछूतका भय हम पर अेक शाप है। हमारे पाप हमारे पीछे लगे हुअे हैं। कांग्रेसकी आलोचना करनेवाले कहते हैं कि तुम खुद क्या कर रहे हो? सर पुरुषोत्तमदासने जनरल स्मट्सको पत्र लिखा कि हिन्दुस्तानियोंने अफ्रीकाको समृद्ध बनाया, अुन्हें आप अिस तरह अलग क्यों कर रहे हैं? अुन्होंने जवाब दिया कि हमें तो जो ठीक लगेगा वही करेंगे, परन्तु आपके यहाँ क्या हो रहा है? अिस प्रकार अपने दुःखोंके लिअे हमारे पाप ज़िम्मेदार हैं।

काठियावाड़में फूट बहुत है। हम अेक दूसरेकी बदनामी और निंदा ही करते हैं। लिखना-पढ़ना आता है तो अखबारोंमें लिखते हैं। काठियावाड़के कुछ कार्यकर्ता यही काम करते हैं। कार्यकर्ताओंको अिस तरह गिरानेसे क्या फायदा? अगर पढ़े-लिखे अिस तरह करें, तो अनपढ़ोंकी क्या हालत होगी?

आजकलका समय भी हमें पहचान लेना चाहिये। अिस समय बड़ी क्रांति, यों कहिये कि अिनकलाब हो रहा है।

संसार विनाशके मार्ग पर अग्रसर हो रहा है, क्योंकि पापका भार बढ़ गया है। जैसा हमारे यहाँ यादवोंका गृहयुद्ध हुआ था, वैसा युरोपमें हो रहा है। अभी तो वह दूर-दूर ही हो रहा है, परन्तु अब नजदीक आता जा रहा है; क्योंकि हमारा देश भी अेक पक्षमें है। हमारे यहाँ यह युद्ध कब शुरू हो जायगा, यह तो नहीं कहा जा सकता। परन्तु यह बात तो सच है कि वह जल्दी जल्दी पास आता जा रहा है। अुसकी परछाअीं दिखाअी देने लगी है। आप व्यापारियोंसे पूछिये — अुनका रोज़गार धन्धा खतम हो गया है। व्यापारी बेकार बैठे हैं। कितने ही घर लौट रहे हैं, कुछ कुटुम्बोंको घर भेजकर अकेले बैठे हैं।

अतः हम सोते हुअे न पकड़े जायँ। लड़ाअीके कारण और परिणाम जान लेने चाहियें। यद्यपि परिणाम जानना मुश्किल है, परन्तु जैसा समझदार लोग कहते हैं, दो और दो चार जैसी बातें सोच ही लेनी चाहियें।

जब लड़ाअी शुरू हुअी तब कांग्रेसने सरकारसे कहा: हमसे पूछे बगैर आपने हमारे स्वार्थ या परमार्थके लिअे युद्धकी घोषणा कर दी सो तो ठीक। परन्तु अब तो हमें वह परमार्थ समझा दीजिये, जिससे हमारा स्वार्थ या परमार्थ — जो भी हो — समझकर हम आगे कदम अुठा सकें। परन्तु हमें सीधा जवाब नहीं मिला। अिस बीच दोनों पक्ष अपना अपना प्रचार करने लगे। जर्मनोंका दावा है कि हम पर अन्याय हुआ है, अुसे मिटानेके लिअे हम लड़ रहे हैं। जर्मन रेडियो रोज़ यही कहा करता है।

परन्तु हमारे सवालका सल्तनतने सीधा जवाब नहीं दिया। मीठी-मीठी बातें बनाअीं। बारह बारह महीने तक सलाह-मशविरा होता रहा। गांधीजी बार बार वाअिसरॉयके घर पर मिलने गये, परन्तु स्वीकार करने लायक कोअी चीज़ नहीं मिली। हमने खूब धीरज रखा, क्योंकि मुश्किलके समय परेशान करनेका हमारा कोअी अिरादा नहीं था।

लेकिन अब धीरजका अन्त आ रहा है। सल्तनत अपना स्वरूप प्रकट करती जा रही है। सरकार अिस समय हममें फूट डाल रही है। फूट डालना हो तो भले ही डाले, परन्तु जो राष्ट्रीयत्व पैदा हो गया है, अुसका कभी नाश नहीं हो सकता। अभी तो वह विरोधी शक्तियोंको अेकत्रित करके कांग्रेसको कुचल डालना चाहती है। परन्तु धीरज रखिये। ता० २५ को महासमितिकी बैठक होगी, तब वह फैसला करेगी। आपत्ति सारे देश पर आयेगी। अुससे कोअी नहीं बचेगा।

अब तक सरकारने जो कुछ किया है, वह जनताको खुश करके किया है या दबा कर किया है? अेक भी विधान सम्बंधी काम खुशीसे नहीं किया गया। मुसीबतमें फँसने पर ही किया है। पिछली लड़ाअीमें मदद देनेके बदलेमें वे रौलट अेक्ट बनानेमें भी नहीं चूके। अिस लड़ाअीके अंतमें क्या करेंगे, वह तो भगवान जाने।

फिर भी हिन्दुस्तानको आज़ादी मिलती हो, तो सारे देशको युद्धमें फँसाकर मदद देनेको तैयार हैं। अुसके कारण गांधीजीका भी विरोध किया। हम अपनी २० वर्षकी नीति छोड़नेको तैयार हो गये। मगर वह तभी हो सकता है, जब वे कोरी ज़बानी बातें न करके कुछ ठोस सबूत दें। अिसके लिअे हमने यह माँग की कि केन्द्रीय शासनमें राष्ट्रीय सरकार बना दी जाय। 'स्टेट्समेन' जैसे अेंग्लो-अिंडियन अखबारने भी कहा कि सरकारमें राजनीतिज्ञ होंगे, तो कांग्रेसका प्रस्ताव मान लेंगे। कांग्रेसने अैसी बात कभी पेश नहीं की थी, न कभी

आअिन्दा ही करेगी। अब तो सब कांग्रेसवादी कहेंगे, 'राअीके भाव तो रातको बीत गये।' 'तेरा तेल गया, तो मेरा खेल गया'।

अब तो बंबअीमें हम गांधीजीको नेतृत्व सौंप देंगे और वे जो कहेंगे सो करेंगे। हम तो शांतिसे देखते रहेंगे। भले ही कामचलाअू सरकार क़ायम कर दें। जब विदेशी भी हमारे दुश्मन नहीं हैं, तब देशी तो हो ही कैसे सकते हैं? अगर सरकारमें असी ताकत हो कि जिन्ना और सावरकरको साथ बैठा सके, तो फिर करनेको बाकी रहा ही क्या? हमें तो बाहर रहकर देखना है कि चूहे-बिल्ली अन्दर क्या करते हैं? वैसे देशमें राष्ट्रीयताकी जो भूख जग चुकी है, अुसे मिटानेकी शक्ति सारी दुनियामें नहीं है।

मौजूदा लड़ाअीकी जड़में किसी न किसीका पाप होगा, तभी तो यह सब होता है न? कांग्रेस कहती है कि अितना पुण्य कर लो तो अच्छा होगा। डेढ़ सौ वर्षसे हमारे कंधों पर चढ़े हुअे हो, सो अुतर जाओ। वे कहते हैं कि हम अुतर जायँगे तो तुम्हारा क्या होगा? अरे भाअी, दो सौ वर्ष तक राज्य करनेके बाद यह पूछते हो, तो अब तक तुमने क्या किया? यह तो अुस चौकीदारकी-सी बात हुअी। चौकीदार मालिकसे पूछता है कि मैं चला जाअूँगा तो तुम्हारा क्या होगा? अरे भाअी, तू तो जा। या तो दूसरा चौकीदार रख लेंगे या पहरा लगाना सीख लेंगे। मगर यह चौकीदार तो जाता भी नहीं है और बार-बार लट्ठ ही दिखाता रहता है।

दूसरे स्वतंत्र मुल्कों जैसी हिन्दुस्तानकी स्थिति कर दी होती, तो आजकल जैसे टापूमें बन्द होकर गोले खाने पड़ते हैं, वैसे क्या खाने पड़ते?

हिटलरवाद चाहे कितना ही खराब हो, मगर जब यह देखने जाते हैं कि वह अुत्पन्न क्यों हुआ, तो बड़े-बड़े लोग भी सिर खुजालकर कहते हैं कि वरसालेमें जबरदस्तीसे हस्ताक्षर कराये थे अिसीलिअे। अगर पिछली लड़ाअीमें जीतने पर भी २० वर्षमें यह नतीजा निकला, तो अब क्या होगा? तब फिर जीतनेमें मज़ा या हारनेमें? अजेय फ्रांस अेक हफ्तेमें गुलाम बन बैठा। अुसने संसारको स्वतंत्रताका पाठ पढ़ाया था, समस्त जगतको क्रांतिकी प्रेरणा दी थी। फ्रांसने बड़ी ज़बरदस्त किलेबन्दी की थी। अुसे अभेद्य किला कहते थे। वह किलेबन्दी अभिमन्युके चक्रव्यूह जैसी थी। वे गाते थे कि 'दुश्मनकी किलेबन्दी पर हमारे पतलून सुखायेंगे'। अुसका फिर क्या हुआ सो तो कहो!

वे अपनेको मित्र कहते थे। मगर आजके मित्र कलके दुश्मन। हमारे यहाँ कुदरतने अकाल कर दिया, अिसलिअे भूखसे मर गये। परन्तु अुनके पास सारी दुनियाको लूट लेनेकी जो सत्ता है, अुसके जोरसे तमाम युरोपको भूखों मारना चाहते हैं। कलका मित्र फ्रांस भी अुसमें आ गया। विरोधी पक्षने भी तय कर लिया है कि अुन्हें टापूसे बाहर न निकलने दिया जाय। अूपरसे बम

फेंक कर सताता रहता है । यह है शिखर पर पहुँची हुअी युरोपियन संस्कृतिका परिणाम । अब तककी तमाम लड़ाअियोंमें मर्यादा थी । लड़ाअी सेनाओंमें ही होती थी । अैसी अेक भी लड़ाअी नहीं थी, जिसमें बच्चे, बूढ़े, स्त्रियाँ और अस्पताल सभी आ जायँ ।

अिस सबका अन्त कब आयेगा ? अिस नाज़ीवादका नाश करनेके लिअे अब अुन्हें ड्योढ़े नाज़ी बनना पड़ेगा ।

हिटलर कहता है कि ये समुद्री डाकू सारे युरोपके समुद्रको कब्ज़ेमें करके बैठे हैं, अिसे मैं बरदाश्त नहीं करूँगा । अिनका नाश करनेके लिअे ही अीश्वरने मुझे पैदा किया है । वे कहते हैं कि हिटलरका नाश करनेके लिअे अीश्वरने हमको पैदा किया है। तो अिनमें से किसका अीश्वर सच्चा है ?

साम्राज्यका गला दबा हुआ है, तो भी हमसे कहते हैं कि तुम अपना स्वतंत्र शासन नहीं चला सकते, तुममें फूट है । हम अपनी नैतिक जिम्मेदारी नहीं छोड़ सकते । अिस नैतिक जिम्मेदारीके परदेके पीछेकी बात भयंकर है । हमारे यहाँ कौन-कौनसे दल और स्वार्थ हैं, अुनका नाम नहीं बताते । परदेमें से अैसा मालूम होता है कि जब अैसी मुश्किलमें फँसी हुअी यह हुकूमत अिस तरह बोलती है, तब अिसमें कुछ न कुछ अीश्वरी संकेत होना चाहिये । हमारे लिअे तो जो परिणाम आये वही देखना अुचित है । हमें निराश नहीं होना है, सावधान ही रहना है । ये लोग अिनकार करते हैं, अिसीमें हमारा लाभ होगा । भगवानकी कुछ अैसी ही अिच्छा होगी ।

अिस स्थितिमें हमें क्या करना चाहिये ? हमें मेलसे रहना चाहिये, अेक हो जाना चाहिये । अभी अैसा कठिन समय आयेगा, जब हम अेक दूसरेसे लड़ेंगे, तो हिन्दुस्तानकी खैर नहीं है । अंग्रेज सरकार भले ही फूट डालनेकी कोशिश करे, मगर हमें तो वैरभाव कम करनेका ही प्रयत्न करना चाहिये । देशी राज्य कोअी लड़ाअीके क्षेत्र थोड़े ही हैं ! लड़ाअीका क्षेत्र तो हिन्दुस्तानमें है । आप तो सिर्फ़ कांग्रेसका कार्यक्रम पूरा कीजिये ।

हम अिस समय किसी राजा-महाराजाके साथ कोअी बात नहीं करते । कुछ माँगते भी नहीं । सब प्रजा-मंडलोंसे कहते हैं कि बैठे रहो । पगड़ीका बल अंतमें निकल जायगा । व्यर्थ झगड़ा खड़ा मत कीजिये । अब यह स्थिति बहुत दिन नहीं रहेगी । जिस तेजीसे विनाश हो रहा है अुसी तरह होता रहा, तो थोड़े ही समयमें हल निकल आयेगा । अिसमें तो बहुतसी पापी शक्तियाँ भस्म हो जायँगी । यह तो दुनियाका भार अुतारनेके लिअे कुदरतका कोप हुआ है । हमारा काम तो अैसा अुपाय करना है, जिससे दुबारा संकट ही न आये ।

फूलछाब, १३-९-१९४०

११५

नाज़ीवाद और साम्राज्यवाद

[ता० ९-९-१९४० को अहमदाबादकी सार्वजनिक सभामें दिये गये व्याख्यानमें से ।]

कांग्रेसने लखनअूकी बैठकके बाद जो प्रस्ताव किये हैं, अुनमें स्पष्ट राय जाहिर की है कि नाज़ीवाद और फासिज़्म दोनों वाद लोकशाहीका — लोकतन्त्रवादका — नाश करनेवाले हैं। अिन वादोंको लोकतन्त्र स्वीकार नहीं करता। कांग्रेस मानती है कि अिन वादोंसे जगतकी हानि होगी। कांग्रेसने यह बात युरोपकी लड़ाअी शुरू होनेके बाद नहीं, परन्तु अुसके पहलेसे घोषित कर दी है। लड़ाअीसे पहले ब्रिटेन अिन दोनों शक्तियोंके साथ चुपके-चुपके समझौतेकी बातें करता था। परन्तु कांग्रेसने अुनका जितना विरोध किया है, अुतना और किसीने नहीं किया। दुनियामें यह शक्ति विजयी हो जाय, तो अिसमें लोकवाद, लोकशाही, प्रजातन्त्रवाद, डेमोक्रेसी सबका नाश है।

१२ महीने पहले जब यह लड़ाअी शुरू हुअी, तब हिन्दुस्तानको अुसमें फँसा दिया गया। अिस मामलेमें किसीको नहीं पूछा गया; न राजाओंसे पूछा, न मुसलमानोंसे, और न जनताके किसी दल या प्रतिनिधिसे ही। कांग्रेसने अिसका विरोध किया और जब भारतीय सेना भारतसे बाहर भेजी गअी, तब केन्द्रीय धारासभाके कांग्रेस प्रतिनिधियोंको वापस बुला लिया गया। यह हम जानते हैं कि जिनसे आपका विरोध है अुनसे हमारा भी विरोध है। आप अिस लड़ाअीमें किसलिअे पड़े, अिसका साफ़-साफ़ और स्पष्ट हेतु हमें समझा दो, तो हम पिछली सब बातें भुलाकर भी मदद देनेको तैयार हैं। हमें लड़ाअीमें फँसानेके बावजूद अगर यह समझा दिया जाय कि लड़ाअीके बाद आपने हिन्दुस्तानका कुछ भला करनेका सोचा है, तो भी हम आपका साथ दे देंगे। हमारी अिस माँगको सरकारकी तरफसे टालनेकी कोशिश की गअी।

यह लड़ाअी तो अकेले युरोपकी नवरचनाके लिअे, अेशिया और अफ्रीकाके काले लोगोंका बँटवारा किस तरह किया जाय और अुन पर शासन किस प्रकार मज़बूत बनाया जाय अिसलिअे है। लड़ाअीका यह अुद्देश्य स्पष्ट और साफ है।

ब्रिटेन कहता था कि हमने यह लड़ाअी छोटे-छोटे मुल्कोंकी स्वतन्त्रताकी रक्षा करनेके लिअे ठानी है; तब अमेरिका और दुनियाके दूसरे मुल्कोंमें यह पूछा जाता था कि हिन्दुस्तानकी आज़ादीका क्या होगा? हिन्दुस्तानका अर्थ है

गांधीजी और कांग्रेस, यह तो ये लोग अच्छी तरह समझते हैं। दुनिया भरके देशोंमें जब अैसा प्रचार होने लगा, तब अिन लोगोंने तरह-तरहके पैंतरे रचे। साम्राज्यके प्रतिनिधिने भारतके प्रतिनिधियोंको बुलाकर कहा: "हम तो हिन्दुस्तानको स्वतन्त्रता दे देना चाहते हैं। हिन्दुस्तान तो हमारे गलेमें बँधा हुआ चक्कीका पाट है, मगर क्या करें? हिन्दुस्तान अभी स्वतन्त्रताके योग्य नहीं है। आज़ादी हासिल करनेके बाद हिन्दुस्तानमें जगह-जगह मारकाट, लूटपाट, वगैरा अंधाधुंधी होती रहे, कोअी जाति सलामत न रहे — यह सब न होने देनेकी हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।" अुन्होंने अिस प्रकारका प्रचार करना शुरू किया और वैसी रचना भी शुरू की। अमेरिकामें प्रचार शुरू कर दिया है। ब्रिटेनके कूटनीतिज्ञ अमेरिका पहुँच गये हैं।

कांग्रेसने कहा था कि अगर सच्चे दिलसे हमारी मदद चाहते हो, तो वाअिसरॉयकी कौंसिलकी बात बन्द करके अुसकी जगह सब दलोंकी अैसी राष्ट्रीय सरकार बना दो, जिसमें कांग्रेस, लीग, मुसलमान, हिन्दू-महासभा और सभी दलोंके प्रतिनिधि हों। भले ही अुसमें अंग्रेज़ भी रहें, और यह शासन जनताके प्रति ज़िम्मेदार रहे। परन्तु आपको अितना ज़रूर कहना चाहिये कि जब लड़ाअी बन्द हो जायगी, तब हिन्दुस्तानके सभी प्रांतोंके चुने हुअे प्रतिनिधि जो विधान तैयार करें अुस पर आप दस्तखत कर देंगे। मगर अुन्होंने तो दोनोंमें से अेक भी बात नहीं मानी और पहलेवाली वही बात फिरसे पकड़ ली। यह तो तीन-चार सिविल सर्वेन्टोंवाली वाअिसरॉयकी कौंसिलको सिर्फ बड़ी बना देनेकी बात है। यह तो वही बात है कि तुम आ जाओ और मदद दो। वाअिसरॉयके तुम सलाहकार माने जाओगे, परन्तु अुन्हें जो कुछ करना होगा सो वे करेंगे। सारी कुंजियाँ वाअिसरॉयके हाथमें ही रहेंगी। अैसे शंभुमेलेमें तुम भी आ बैठो, यही बात है। यह कोअी नअी बात नहीं है। ३–४ बार बातें कीं, पर बार-बार वही बात पेश करते हैं।

अिसमें अिनकी नीयत साफ नहीं है, अिसका सबूत बर्मासे मिल गया है। वहाँके प्रधान मन्त्रीको अेक बार विलायत ले गये और वहाँ अुन्हें खूब पार्टियाँ दी गअीं। और जिन्हें सम्राटसे भी मिलाया और खूब मान-सम्मान किया, अुन्हें अब जेलमें डाल दिया है। और जिसे २५ वर्ष तक राज्यका शत्रु समझकर कैदमें रखा, अुसे २६ वें वर्षमें बीमार पड़ने पर वाअिसरॉय तार देते हैं: 'मुझे आपकी तन्दुरुस्तीकी चिन्ता हो रही है!'

कांग्रेसकी बात स्पष्ट है कि वह अुन्हें अिस लड़ाअीके समयमें परेशान करना नहीं चाहती। मगर कांग्रेसके प्रस्तावका तिरस्कार किया जाता है। वाअिसरॉयकी घोषणा तो कांग्रेस पर अेक हमला है। कांग्रेसकी हस्ती पर अेक

वार है। अुसमें कांग्रेसके लिअे अैसी चुनौती छिपी हुअी है कि तुमसे जो हो सो कर लो। भारत मन्त्रीने जो बात कही है, अुसमें नया कुछ भी नहीं है।

संसार आज प्रलयके रास्ते पर है। अिस लड़ाअीकी जड़ देखें तो यह मालूम होता है कि वरसालेकी सन्धिमें अिन्होंने जर्मनीसे नाक रगड़वायी तभीसे अिस लड़ाअीके बीज बोये गये थे। यह बात तो आज ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ भी मानते हैं।

हॉलेंड, पोलेंड, चेकोस्लोवाकिया, बेल्जियम और दूसरे देशोंको, जो अभी पिछले चार दिनोंसे गुलाम बने हैं, ये वचन दे रहे हैं कि हम अन्त तक लड़कर भी तुम्हें स्वतंत्रता दिलायेंगे। परन्तु जिस हिन्दुस्तानको वे दो सौ वर्षोंसे दबाकर — गुलाम बनाकर — बैठे हैं, अुसकी स्वतंत्रताका क्या होगा! लड़ाअीकी जड़ तो अिसीमें है और आपने ही अिसमें से नाज़ीवादको पैदा किया है।

बम्बअीमें होनेवाली बैठकमें अेक ही काम करना है। महात्माजीसे कहना है कि आप वापस आ जाअिये और आप जैसा कहेंगे वैसा ही हम करेंगे। अब वे जो कुछ कहेंगे वही हमें करना है। और हिन्दुस्तानकी शक्तिकी — कांग्रेसकी शक्तिकी — परीक्षा होनेवाली है। कांग्रेसका अुद्देश्य सच्चा होगा, अुसकी नीयत अच्छी होगी और अुसने मुल्ककी दरअसल सेवा की होगी या अुसके लिअे कुछ भी किया होगा, तो वह सामने आनेवाला है, फिर भले ही सत्ता दूसरोंके पास चली जाय। कांग्रेस अैसे फर्श पर नहीं बैठेगी, जिसमें कीड़े-मकोड़े हों। नाज़ीवाद और साम्राज्यवाद यों तो अेक जैसे ही हैं। अेक प्लेग है और दूसरा हैज़ा है। हैज़ा घरमें है और प्लेग बाहर है।

सरकारने तो यह लड़ाअी हमसे जबरदस्ती शुरू कराअी है, और कांग्रेसके पास अब और कोअी रास्ता नहीं है। आप सबसे अेक आखिरी प्रार्थना है कि यह हमारी अंतिम बाज़ी है। हमें अेक ही चीज़ करनी है और वह यह कि हिंसा न करें, और अैसा काम न करें जिससे किसीको कष्ट हो। परन्तु स्वाभिमानकी रक्षाके लिअे सब तरहके कष्ट सहन करें। आजकल जिन्दगीकी तो कोअी कीमत नहीं है। बहुतसे हवाबाज़ हवाअी जहाज़में गोले भरकर प्राणोंको हथेली पर रखकर जाते हैं। हज़ारों अपनी जिन्दगी हथेली पर लिये फिरते हैं। हम भी — जब हम गुलाम हैं और हमारी हस्ती पर हमला हो तब — क्या जवाब दें!

अिस समय आप कोअी अैसी आशा न रखें कि कांग्रेस बादमें बराबर रास्ता दिखाती रहेगी। हरअेकका अपना यह फर्ज है कि वह लड़ाअीके खुले मैदानमें आ जाये। मुझे तो स्पष्ट चिन्ह दिखाअी दे रहे हैं कि लड़ाअी लादी जा रही है। अब हमारा दुबारा मिलना सम्भव हो या न हो, परन्तु हिन्दुस्तानके आधुनिक अितिहासको बनानेकी जिम्मेदारी हमें पूरी करनी है।

मगर अब तो वे अैसी बात पूछने लगे हैं कि हम हार जायँ और दूसरा आ जाय, तो तुम्हारा क्या होगा ? अब अुन्हें अिसकी चिन्ता हुअी है ! अिसका जवाब देना बड़ा मुश्किल है । अुन्हें दो सौ वर्ष तक यहाँ रहकर भी सवाल पूछना पड़ता है, अिसलिअे हम भी लाचार हैं । हम कहते हैं कि अच्छा अब आप चिन्ता मत कीजिये । दो सौ वर्ष रहकर भी अगर आज यही सवाल पूछना हो, तो हम कहते हैं कि आप कल जाते हों तो अिसी गाड़ीसे चले जाअिये । हम अपना देख लेंगे । लाचार बनाकर अब आप पूछते हैं कि तुम्हारा क्या होगा ? अिसका क्या जवाब हो सकता है ? अूपरसे बम पड़ रहा हो तब नीचे खड़ा रहनेवाला जानता है कि अुसका क्या होनेवाला है । हमारा तो जो कुछ होना होगा हो जायगा, परन्तु आप अपने दिलसे पूछ लीजिये कि दो सौ सालके बाद हिन्दुस्तान आपके हाथसे जाता रहेगा, तो आपका क्या होगा ? असली दर्द तो यहाँ है ।

प्रजाबन्धु, १५–९–१९४०

११६

थामणाकी ग्रामशाला

[ता० ९–१०–१९४० को थामणाकी ग्रामशालाके मकानका अुद्घाटन करते हुअे सार्वजनिक सभामें दिये गये भाषणसे ।]

* * *

गांधीजी हिन्दुस्तानमें आये, तभीसे कह रहे हैं कि आजकलकी शिक्षा कुशिक्षा है । वह हमें पंगु बना देती है । मनको कमजोर बना देती है । सरकारने विदेशी शिक्षा अिसलिअे जारी की थी कि क्लर्क तैयार हों, नौकरी करें और अुसका राज्य चलायें । अिसलिअे न तो हमारी ही शिक्षा रही और न अुसकी शिक्षा ही पूरी आयी ।

गांधीजीने जब स्वराज्यकी पहली लड़ाअी शुरू की, तब पहला नारा यह लगाया कि ये पाठशालाअें गुलामखाने हैं । अुन्होंने स्कूल और कॉलेज खाली कराये । गुजरात विद्यापीठकी स्थापना हुअी । अुन विद्यार्थियोंमें अनेक रत्न थे, अुन्हींमें से अेक वल्लभाअी हैं । अुन्होंने आपके गाँवमें अपनी योग्यता अुँडेलना शुरू किया है । अितनी सुन्दर जगह और अैसी सुविधा किसी भी प्रारम्भिक पाठशालामें नहीं है ।

आजकल जो शिक्षा दी जाती है वह तोतारटन्त है। अुसमें विद्यार्थियोंके ़दल और शरीर अेकरस नहीं होते और न अुनका मानसिक और शारीरिक ़कास ही होता है। शिक्षा अैसी होनी चाहिये, जिससे विद्यार्थीके मनका विकास ़ो, अुसके शरीरका विकास हो और अुसकी आत्माका विकास हो।

अगर घरका वायुमंडल अनुकूल नहीं होगा, तो स्कूलमें जितना पढ़ेगा ़ुतना घर जाकर रातको भूल जायगा।

शिक्षाका अुद्देश्य पाठशाला और गाँवको अेक दूसरेका पूरक बनानेवाला ़ौर दोनोंको अेकरस करनेवाला होना चाहिये।

शारीरिक और मानसिक शिक्षा साथ-साथ दी जाय, अैसी व्यवस्था होनी ़ाहिये। आजकल गाँव जिस प्रकारके हैं वैसे ही रहें, तो न बच्चोंको शिक्षा ़ी जा सकती है और न गाँवके लोगोंको ही

*   *   *

गांधीजी कहते हैं कि अगर रचनात्मक काम करें, तो स्वराज्य आपकी ़ोदमें अपने आप आ जाय। रचनात्मक कामका मतलब है, गाँवकी पुनर्रचना।

पक्के घड़ेको काँठ नहीं बैठ सकते। अिसलिअे हमें गाँवके बच्चोंको पकड़ ़ना चाहिये। छुटपनसे ही अुन्हें आँख, कान, नाक, बरतन, आँगन और ़ली साफ़ करना सिखाना चाहिये।

गाँवके लोगोंको सफ़ाअीकी कदर नहीं होती। अुन्हें यह पता नहीं कि ़न्दगीसे अुनका कितना नुकसान होता है।

हम लोगोंमें कहावत है कि जहाँ गाँव होता है, वहाँ ढेड़वाड़ा होता है। ़गर जहाँ अच्छा गाँव हो वहाँ कोअी वाड़ा नहीं होना चाहिये। ढेड़वाड़ेका ़च्चा अर्थ तो यह है कि जहाँ गाँव होता है, वहाँ कमज़ोर, झूठ बोलने ़ाले और चोरी करनेवाले लोग होते हैं। गाँवमें ढेड़ हो और जुलाहेका ़न्धा करता हो, मजदूरी करता हो, मगर सच बोलता हो तो अुसे अुत्तम ़ाह्मण समझना चाहिये। और ब्राह्मण गन्दा हो, अुसे दो अक्षर भी न आते ़ों और अगड़म-बगड़म पढ़कर विवाह आदि क्रियाअें कराता हो, तो वह ़ाप करता है।

हमें किसीको अूँच-नीच नहीं मानना चाहिये। गाँवमें रहनेवाले सब — अठारहों वर्ण — अेक अीश्वरकी संतान हैं।

*   *   *

बच्चोंको अुद्योग करनेमें प्रोत्साहन देना हो, तो हमें भी अुद्योग करना ़ाहिये। स्त्री और पुरुष सबको अपने हाथ-पैरका अुपयोग करना चाहिये। ़कार बैठनेवाला सत्यानाश करता है। अगर आप अैसी प्रतिज्ञा कर लें कि

हम अपना कपड़ा बाहरसे नहीं लायेंगे, तो आप जितना बनायेंगे अुतना पहनेंगे और अिस तरह गाँवकी पुनर्रचना कर सकेंगे।

अिस समय दुनिया तो अेक प्रकारके प्रलयमें फँसी हुअी है। हिन्दुस्तान भी लड़ाअीमें शामिल कर लिया गया है। अिस सारी लड़ाअीकी असली जड़ ये बड़े-बड़े कारखाने हैं। कारखानोंमें ढेरों सामान पैदा किया जाय और बादमें अुसकी रक्षाके लिअे सेना रखी जाय!

मशीनमें अनाज कुटवाते-पिसवाते हैं, अिससे तो सारा सत्त्व नष्ट हो जाता है। आप तो वह निस्सत्त्व अनाज खाते हैं।

* * *

हमें नये जमानेके अनुकूल बनना चाहिये। लड़कोंको पढ़ायें और लड़कियोंको न पढ़ायें, तो बेजोड़ हो जाता है और दोनों दुःखी होते हैं।

अेक भी झगड़ा कोर्ट-कचहरीमें अुमरेठ या नड़ियाद जाय, तो वह अिस पाठशाला पर दाग लगा समझिये। गाँवमें कोअी चोरी करनेवाला नहीं होना चाहिये। चोरी करें तो फौरन मालूम होना चाहिये और अुसका अुपाय करना चाहिये। आपमें जो कमजोरी होगी, अुसका असर बच्चों पर पड़े बिना नहीं रहेगा।

* * *

गांधीजी जबसे आये हैं तभीसे कह रहे हैं कि मैं जैसा कहता हूँ वैसा काम गाँव करें, तो स्वराज्य तो वहाँ आया हुआ ही रखा है।

शराब पीनेवाला न हो, तो शराबखाना नहीं होगा। चोरी करनेवाला न हो, तो पुलिस या जमादारकी जरूरत नहीं होगी। झगड़ा न करो और अदालत न जाओ, तो मुंसिफ़की कचहरीकी जरूरत नहीं होगी। तुम अपना कपड़ा बना लो, तो तुम्हारे यहाँ स्वराज्य ही है।

मैं अीश्वरसे प्रार्थना करूँगा कि अिस पाठशालाके खोलनेमें जो आशाअें रखी गअी हैं अुन्हें वह पूरी करे।

११७

जयपुर रियासत

[ता० २४–१०–१९४० को बम्बअीके मारवाड़ी चेम्बर्समें देशी राज्य लोक-परिषदकी तरफसे की गअी जयपुर सम्बंधी सभामें दिये गये भाषणसे ।]

*　　　　*　　　　*

जमनालालजीने आपको जयपुरकी परिस्थितिकी कुछ कल्पना करा दी है। लगभग सभी देशी राज्य जयपुर जैसे ही हैं। कुछ अिससे ज्यादा खराब हैं। अिन सबकी जड़ विदेशी राज्य है। जब तक हम अुसे जड़मूलसे नहीं अुखाड़ देते, तब तक रियासतोंमें सुधार होनेकी कोअी गुंजाअिश नहीं है। क्योंकि जैसे हम गुलाम हैं, वैसे राजा-महाराजा भी गुलाम हैं। वे हमसे ज्यादा गुलाम हैं। हम अपने बच्चोंको जैसी चाहें वैसी शिक्षा दे सकते हैं, परन्तु वे तो अपने बालकोंको अपनी अिच्छानुसार शिक्षा भी नहीं दे सकते।

विद्यार्थीको अिन्सानसे जानवर बनाना हो, तो राजकुमार कॉलेजमें भेजना। और जानवरोंमें भी अगर गधा बनाना हो, तो विलायत भेजना। राजकुमार जब बच्चा होता है तभीसे अुसे शिक्षा देनेके लिअे अेक अंग्रेज़ अुसके साथ रख दिया जाता है, यद्यपि राजकुमारको राज्य तो यहीं करना होता है।

राजा-महाराजाओंको अेक बातकी छूट है: कितनी ही शादियाँ करो, शराब पीयो, मौज करो और प्रजा पर जुल्म करो, मगर रेज़ीडेंटकी हाँ में हाँ मिलाते रहो। यहाँ तक कि रेज़ीडेंटके चपरासीको भी राजा सलाम करें।

आप जयपुरसे यहाँ आये हैं। आप बुद्धिमान हैं, साहसी हैं। तो फिर वहाँ ज्ञाननाथको क्यों लाना पड़ा? आजतक तो जैसे पींजरापोलमें बूढ़े मवेशी रखे जाते थे, वैसे रियासतोंमें बूढ़े अंग्रेज़ोंको लाकर रखते थे। राजकोटमें अेक अंग्रेज़को लाकर बैठा दिया। अुसे न सुनाअी देता था और न दिखाअी देता था। तब हमने झगड़ा किया।

जमनालालजी कहते हैं कि ज्ञाननाथको राजाने नहीं देखा। तब अुस अज्ञाननाथको लाया कौन? अूपरसे टपक पड़ा?

*　　　　*　　　　*

बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित करके बैठे हुअे अिस समय आपसमें लड़ रहे हैं।

हमने ब्रिटिश सरकारसे पूछा कि किसलिअे लड़ रहे हो ? महात्माजीने पूछा कि अगर आप हिटलरका जुल्म मिटानेके लिअे लड़ रहे हों, तो हिन्दुस्तानमें जो पाँच सौ साढ़े पाँच सौ हिटलर जैसे हैं, अुनका क्या होगा ?

* * *

लार्ड हेलिफेक्स जब वाअिसरॉय था, तब अुसने अेक सरक्युलर निकाला था। अुसमें लिखा था कि शासनमें प्रजाको हिस्सा दो ।

* * *

आजकल तो पहले दर्जेकी रियासतमें भी अैसा हो गया है कि राजा कुछ न करे । जो कुछ करे सो दीवान करे ; बड़ौदामें मैंने देखा कि दीवानकी जो मरज़ीमें आता है, सो करता है।

अब तो अैसा समय आ गया है कि रजवाड़े अेक दिनमें खतम हो जायँगे । जो राजा-महाराजा प्रजाके लिअे मरनेको तैयार होंगे, वे ही रह सकेंगे ।

११८

शहर सफाअी

[ता० १३-११-१९४० को अहमदाबादमें गांधी पुलके अुद्‌घाटनके समय दिये गये भाषणसे ।]

* * *

हमारे देशमें नागरिक भावना बहुत कम है । हमारी नदियोंको देखिये । अैसे खचाखच भरे हुअे शहरोंकी नदियाँ अैसी नहीं होनी चाहियें। शहरी लोग नदीका जिस ढंगसे अुपयोग करते हैं, वह शोभा नहीं देता । आजकल युरोपमें पुल बनाते हैं और तोड़ देते हैं । भले ही तोड़ देते हों, परन्तु अुन्होंने बनाये कैसी अच्छी भावनासे !

लन्दन सबसे बड़ा शहर है । अस्सी लाखकी आबादी है । आजकल वहाँ गैसके नल और पानीके नल रोज टूटते हैं । अैसे समय जब कि रात-दिन गोले पड़ते हों, शहरको साफ़ रखना और तहखानेमें तात्कालिक व्यवस्था करके शहर बसाना ! कितनी नागरिक भावना है ! हमारे यहाँ तो अेक जाति-भोज करना हो, तो कितने वाद-विवाद होते हैं ? और वहाँ अस्सी लाखकी व्यवस्था शांतिसे होती है । अुनकी बहादुरीके आगे हमारा सिर झुक जाता है ।

हममें अितनी बुराअियाँ कहाँसे आ गयीं, अिसके कारण जानकर हमें अुन्हें दूर करना चाहिये । गुलाम लोगोंका अर्थ ही बुरा होता है । अिसलिअे

गुलामीको पार करनेके लिअे पुल बनाने पड़ेंगे । हम जिस शहरमें रहते हैं अुसे स्वच्छ रखने वगैराका ऋण नहीं चुकायेंगे, तो जो बड़े काम करने हैं वे नहीं कर सकेंगे ।

अहमदाबादमें बहुतसे बुद्धिशाली लोग हैं । अुनकी बुद्धिका अुपयोग केवल कुटुम्बीजनोंके लिअे ही नहीं, बल्कि सारे शहरके लिअे और सारे मुल्कके लिअे होना चाहिये ।

अिस यंत्र-अुद्योगकी जड़में संहारकी वृत्ति है । अुद्योग आज है कल नहीं । यह तो लंकाशायरकी नकल की गअी है । लंकाशायरकी चिमनियाँ टूट कर चूर हो गअीं । जैसे समुद्रमंथनसे विष निकला था, वही हाल अिस पाश्चात्य संस्कृतिका हो रहा है ।

परंतु बुद्धिमान मनुष्योंको दूरदर्शिता रखनी चाहिये । तात्कालिक स्वार्थ न साध कर भविष्यका विचार करना ही कर्तव्य है । हम नये और पुराने अहमदाबादके बीचमे पुल बना रहे हैं, तो भविष्यका भी पुल बनाना चाहिये । महात्माजीने अुद्योग और मज़दूरोंके बीच पुल बनाया है । पहले तो मिल-मालिकोंको वह कड़ा मालूम हुआ, मगर बादमें वे समझ गये । अुस पुलको यदि तोड़ देंगे, अुसे ठुकरायेंगे, तो संघर्ष पैदा होगा और बरबादी होगी ।

* * *

हमारे घरोंके पास गन्दगी पड़ी होती है । म्युनिसिपेलिटीका भंगी आकर अुसे अुठाये, तब तक हम बैठे रहें, तो अुसके अूपरकी मक्खियाँ हमारे घरमें आयेंगी । अिसी तरह हमारे शहरकी प्रगति भी रुकी हुअी है । मैंने जब म्युनिसिपेलिटी छोड़ी तब जैसा पूनामें भांबुरड़ा नगर बसाया गया है, वैसा ही नगर बसानेके लिअे सरकारको अेक योजना भेजी थी ।

* * *

हमें सरकारी सहायताकी आशा नहीं रखनी चाहिये । अैसा नहीं होना चाहिये कि हमारे घरमें पीनेका जो पानी चाहिये वह सरकार मदद दे तो साफ़ पीयें, नहीं तो तालाबका पीयें ।

आप सबका कर्तव्य है कि शहरको साफ़ बनायें । अिसकी जिम्मेदारी म्युनिसिपेलिटी पर न डालकर अुसे हार्दिक सहयोग देना चाहिये ।

* * *

अब तो वह जो सामने बिजलीघरकी चिमनी है, अुसके सामने पुल बनाना चाहिये । अुस चिमनीके साहबोंको पकड़ना चाहिये । वे हमसे कमाते हैं । रेलवेको तंग करना चाहिये । सबको मिलकर पुल बाँधना चाहिये । अिस जमानेमें जाग्रत रहना चाहिये । तंग किये बिना काम नहीं होगा ।

भविष्यमें क्या होगा अिसका किसीको पता नहीं है। मगर हमारे शहरमें अितने बुद्धिशाली लोगोंके मौजूद होने पर और शहरमें अितने अुद्योग लाने पर भी बिजलीका कारखाना ये विदेशी कैसे खोल बैठे? आप क्या सो रहे थे! वे तो सारे गुजरातको गिरवी रखनेवाले थे। मगर मेरे विरोध करने पर रुका है।

पश्चिमकी पशुवृत्ति हमें नहीं लेनी चाहिये। मगर जिस शास्त्रका अुपयोग जनताके लिअे हो अुससे लाभ अुठाना चाहिये। अुनकी अपनाअी हुअी नागरिक वृत्तिका अनुकरण करना चाहिये।

कोअी विदेशी आयेगा तो छावनीमें रहेगा। अुससे हमारे शहरमें नहीं रहा जायगा।

आज हमने बड़ी जिम्मेदारीका काम किया है। गांधीजी तो तपस्या करके दुनियाको संदेश दे गये हैं। अुनकी याद तो जब तक दुनिया रहेगी, तब तक रहेगी। मगर अिस तरहके काम हम अिसलिअे करते हैं कि हमें अुनका स्मरण रहे।

११९

गाँवोंको सँभालिये

[ता० २३-१-१९४२ को बारडोलीमें गुजरात प्रांतीय समितिके सदस्योंके सामने दिया गया भाषण।]

पिछली बैठकमें जब हम यहाँ मिले थे, तब मैंने अेक बात कही थी कि हम हिंसा-अहिंसाकी बात अेक तरफ रख दें और कांग्रेसकी महासमिति जो प्रस्ताव करे, अुस पर भी बहुत चर्चा न करें; परन्तु जो मुख्य चीज़ है और जो बड़ी गम्भीर है, जिस पर कांग्रेसकी हस्तीका सवाल है अुस पर ध्यान दें। देश और प्रांतकी हालत गम्भीर हो रही है। अिस सम्बन्धमें क्या किया जाय यह कठिन सवाल है, परन्तु वह अितना अुपयोगी है कि अुस पर हमें खूब विचार करना पड़ेगा। अिसलिअे वर्धाके बाद मैंने बैठक बुलानेको कहा था। अिस प्रकार हम लोग आज मिले हैं।

पिछली बार जो परिस्थिति थी और अुसके बाद जो परिस्थिति पैदा हुअी, अुससे आप अपरिचित तो हैं ही नहीं; क्योंकि आप देहातमें घूमनेवाले हैं और जानते हैं कि लोगोंके दिलोंमें क्या है। मैं तो बाहरसे आ रहा हूँ, परन्तु गाँवोंकि जो हाल-चाल मिलते हैं अुन परसे मुझे मालूम होता है कि हम आवश्यक

कारंवाओ नहीं करेंगे, तो प्रांतमें अशांति खूब बढ़ जायगी । अिसके लिअे हम सबको जाग्रत रहकर लोगोंमें शांति और साथ ही निर्भयताका वातावरण पैदा करनेको जो कुछ करना पड़े अुसे करनेके लिअे तैयार रहना पड़ेगा । अैसा करते हुअे अगर कोअी कांग्रेसी खप जाय, तो समझना कांग्रेसने अपना काम कर दिया ।

लोगोंको सावधान रहना चाहिये

आज जब यह हुकूमत अपनी जान जोखिममें डालकर प्राणोंसे खेल रही है, तब लोगोंकी अशांति दूर करनेके साधन अुसके पास नहीं हो सकते । वह तो अपनी सलामतीके साधन ढूँढ़ती है; अिसलिअे लोगोंको खुद सावधान रहना पड़ेगा । अभी तो लोग सरकार या कांग्रेसकी तरफ देखते हैं । कांग्रेस जीती-जागती संस्था होगी, तो ही वह लोगोंकी सच्ची सेवा कर सकेगी । कांग्रेस सब जगह नहीं पहुँच सकती, परन्तु लोगोंको अैसा महसूस होना चाहिये कि कांग्रेस हमारी मदद पर है ।

अिसका अर्थ यह नहीं है कि लोगोंके साथ हमें कुछ भी सहन नहीं करना है । कांग्रेस खुद भी जब कष्ट सहन करेगी, तो लोग हँसते-हँसते सह लेंगे ।

पिछले पचास सालसे लोग कृत्रिम शांतिके आदी हो गये हैं । अिसलिअे अुन्हें अशांतिसे निर्भय रहना सिखलाना पड़ेगा । झूठी अफवाहें रोकनी चाहियें और लोगोंको समझाना चाहिये कि अगर सलामती चाहिये, तो गाँव-गाँव अपना ही बन्दोबस्त कर लेना पड़ेगा ।

आपसका वैरभाव भूल जाना चाहिये । अूँच-नीचके भेद और छुआछूत वगैरा अनेक प्रकारके भेद छोड़ देने चाहियें । लोगोंको अब अेक बापकी संतान बनकर रहना चाहिये । हिन्दुस्तानमें पहले जैसा स्वराज्य था — तमाम झगड़े गाँवकी पंचायतसे तय कराते और गाँवके बुजुर्ग गाँवके लोगोंको अपनी छातीसे लगा कर बैठते और अुनकी रक्षा करते थे — वही स्वराज्य अब लाना पड़ेगा । सरकार अपनी युद्धकी तैयारीका काम शांति रखना छोड़ कर भी करेगी । अिसमें हमें सरकारके साथ झगड़ा नहीं करना है । लेकिन आप सरकारकी तरफ मुँह फाड़कर देखते रहेंगे, तो अिससे कुछ नहीं होगा ।

अितने वर्ष हो गये कांग्रेसने अपेक्षाकृत शांतिमय वातावरणमें काम किया है । अब अुसके लिअे भी अशांतिका समय आ गया है । परीक्षाका अवसर है । अुसके लिअे अुसे तैयार होना ही पड़ेगा, नहीं तो अहमदाबाद जैसा हाल होगा । जो लोग सरकारके पास गये और कहा कि पुलिसकी मदद दो, वे बरबाद हो गये, अुनकी संपत्ति नष्ट हो गअी और वे भाग गये । मगर सबसे बड़ा नुकसान तो अिज्जतके जानेका हुआ । कुछ मकान जल गये, कुछ

बाज़ार जल गये। वे सब तो कल खड़े हो जायँगे, या बन जायँगे। कुछ भिखारी भी हो गये। यों तो हिन्दुस्तानमें भिखारियोंकी कमी नहीं है। परन्तु आबरू गअी, अिज़्ज़त गअी, अुसकी क्षति-पूर्ति नहीं हो सकती।

जो झपाटा लगा अुसमेंसे हमें निकलना चाहिये। अेक भूलसे जो सबक सीखते हैं, वे आगे बढ़ते हैं। अिन्सान भूल तो करता ही है। देखिये न, अिस सरकारने कितनी भूल की है, कितनी हार खाती है! फिर भी विश्वासके साथ यह नारा लगाती है कि हम ही जीतेंगे।

हमें अैसी लड़ाअी नहीं लड़नी है। हमें तो जो भीतरी अव्यवस्था होती जा रही है अुसे रोकना है। सारसा गाँवकी बात लीजिये। चार हज़ार आदमियोंकी आबादी है। लोगोंके पास हथियारोंके परवाने हैं और वे अहिंसा-वाले भी नहीं हैं। फिर भी वहाँ दिनदहाड़े लोगोंको मारकर और लूटकर चले जायँ, तो अिसमें सरकार भी क्या करे? अैसी घटनाअें संगठनके अभावमें ही हो सकती हैं। मगर यह तो अभी शुरुआत है। और भी चार-पाँच जगहकी बात आयी है। अगर फसादियोंको मालूम हो जाय कि यह तो बिगड़ा हुआ खेत है और अुसके कोअी बाड़बाड़ नहीं है, तो वे लोग चारों तरफसे घुस जायँगे।

स्वराज्यकी जड़ जमाअिये

यह हमारी परीक्षाका समय आया है। हम किस लिअे जी रहे हैं? हमारे अैसे कहाँ धन्यभाग्य कि अपनी कदर कराकर हँसते-हँसते चले जायँ? आप यह समझिये कि आज तो लक्ष्मी तिलक करने आयी है। अिस समय हिम्मतके साथ गाँव-गाँव घूमकर फर्ज़ अदा करेंगे, तो गुजरातमें स्वराज्यकी जड़ जमेगी। आज ही वक्त आया है जब स्वराज्यकी जड़ पक्की जमानी है। यह बात समझ लेना। और नहीं समझेंगे तो वर्षोंका किया हुआ काम व्यर्थ हो जायगा और प्रान्तकी स्थिति दुःखद हो जायगी।

अिसलिअे आज यहाँसे संकल्प करके जाना है। लोग लड़ाअीकी भरतीमें तो जाते हैं न! यह तो प्रान्तकी सलामतीकी भरती है। वैसे तो जबसे कांग्रेसमें शरीक हुअे, तभीसे भरतीमें आ चुके हैं। मगर जब तक लड़ाअी नहीं होती, तब तक जैसे सेना पड़े-पड़े खाती है और वक्त आने पर लड़ाअीमें जाती है, वैसे ही अब यह समय आ गया है और हमारी सच्ची परीक्षा होनेवाली है। अुसमें पास हो जायँ तो सही। यह सब चीज़ मेरे मनमें थी, अिसीलिअे मुझे आप सबको बुलवाना था।

वर्धाके प्रस्ताव

वर्धाका पहला प्रस्ताव आपको कोअी काम नहीं देगा। कुछ मतभेद थे। अुन पर अिस तरह चर्चा हुअी कि जिसे जो करना हो सो करे। हमें कोअी विरोध नहीं करना है। अुससे फायदा क्या? और वह भी अिस समय? देशकी अैसी स्थिति है तब? जो कोअी भी स्वराज्य ला सकता होगा और ले आयगा, वह हमें बाँट तो देगा न? और न मिले तो भी झगड़ा किसलिअे चाहिये? अिसलिअे मुख्य प्रस्तावका अर्थ ही यह है कि अुससे पैदा होनेवाली चर्चाको सब भूल जायँ। अुसकी चर्चा न किसी कमेटीमें और न किसी अखबारमें होनी चाहिये। वह तो सरकारके लिअे दरवाज़ा खुला रखा गया है। वह अुसे समझाता रहेगा कि अिस रास्ते आ जाओ और हाथ मिला लो।

दूसरा जो प्रस्ताव है अुसके सिलसिलेमें प्रान्तीय समितिको सूचना मिलेगी कि अैसे विपरीत संयोगोंमें क्या क्या किया जाय?

गाँवोंकी फूट मिटाअिये

मगर अिन सब कामोंके लिअे दो बातें खास तौर पर ज़रूरी हैं। अेक तो गाँव-गाँवमें फूट होती है और गाँववालोंको मालूम रहता है कि फूट कहाँ है! अुसे मिटानेका प्रयत्न होना ही चाहिये। लोगोंको समझाना चाहिये कि तुम अगर नहीं समझोगे, तो तुम भी मरोगे और पड़ोसीको भी मारोगे।

सत्तालोलुप कांग्रेसियोंसे

दूसरी बात कांग्रेसियोंके लिअे अधिक आवश्यक है। गाँवोंकी बात करनेसे पहले अिन कांग्रेसियोंकी भीतरी लड़ाअीकी बात कर लेता हूँ। कुछ लोग तो अैसे हैं जो गाँवोंको बेच खायें। कांग्रेसके दो आदमी अेक न हो सकें, तो आप लोग देहातको कैसे अेक कर सकेंगे? कांग्रेसियोंके लिअे अब अपना दिल टटोलनेका समय आ गया है। अैसे लोगोंको कांग्रेस छोड़ देनी चाहिये, जो यह मानते हों कि मुल्कका कुछ भी हो जाय, प्रान्तका कुछ भी हो जाय, मगर मुझे जगह नहीं छोड़नी है। मुझे मंत्री बनना है। अैसा माननेवाले लोग भी हैं कि मुझे म्युनिसिपेलिटीमें जाना चाहिये, लोकल बोर्डमें जाना चाहिये। अैसे भी हैं जो बाहरके गैर-कांग्रेसी गालियाँ दें तो बरदाश्त कर सकते हैं, परन्तु अपने साथियोंका कहा हुआ सहन नहीं कर सकते। यह बात नहीं मिटेगी तो मैं आपसे कहता हूँ कि आप कुछ नहीं कर सकेंगे। अिससे आप प्रतिष्ठा नहीं बढ़ायेंगे, अुल्टे अपने दोष खोल देंगे। अिसलिअे हमारी प्रान्तीय समितिके सदस्योंको अैसा संकल्प कर लेना चाहिये कि हम सब अेक बापके बेटे हैं। सब सगे भाअी-बहन ही हैं, अिस तरह रहनेकी तैयारी करनी है। अिसलिअे आप

यहाँसे जाअिये और बादमें अपनी जिला समितिकी बैठक कीजिये और साथियोंको बुलाअिये। सबको अिकट्ठा कीजिये और प्रतिज्ञा लीजिये कि जब तक देशकी अैसी परिस्थिति है, तब तक तो हम ज़रूर संगठित रहेंगे।

खोटे रुपये निकल जायँ

महीकाँठाके बारैया लोग डाका डालनेके लिअे जानेसे पहले महीसागरका पानी पीकर प्रतिज्ञा लेते हैं। परन्तु हमारे पास तो अैसा पानी भी पीनेको नहीं है, अिसे सोच लीजिये। अपने ज़िलेमें जाकर कार्यकर्ताओंकी बैठक करके निर्णय करना कि अुनमें जो खोटे रुपये हों वे निकल जायँ। भीतरका वातावरण साफ कर लेंगे, तो बाहर अुसका असर ज़रूर होगा। बादमें आप गाँव-गाँवमें मिलें और डर मिटायें। गाँव-गाँव घूमें और निर्भयताका वातावरण पैदा करें। जो सच्चा रुपया होगा वह तो बजेगा ही और जो खोटा होगा वह नहीं बजेगा। अक्सर लोग अखाड़ोंकी बात करते हैं। क्या अहमदाबादमें अखाड़े नहीं थे? परन्तु दुर्बल दिखाअी देनेवाले मनुष्योंकी आत्मा बलवान होगी, तो अुनकी आवाज दुनियाके दूसरे सिरे तक पहुँच जायगी। अिस समय दुनियाकी फौजोंके तमाम सेनापतियोंमें हिन्दुस्तानके सेनापति महात्मा गांधीका शरीर सबसे कमज़ोर है, लेकिन अुनकी आवाज़ दुनियाके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक पहुँचती है।

कुत्तेकी मौत न मरिये

बन्दूकवाला तो बन्दूक ताकता है। अिसमें अुसे निशानेकी चिन्ता होती है। हमें किस बातकी चिन्ता? अगर हम अहिंसात्मक हों तो हम पर निशाना लगानेकी जिम्मेदारी दूसरे पर आ जाती है।

बापूने बहुत बार समझाया है, मगर हम तो हिंसा-अहिंसाकी चर्चामें पड़ जाते हैं। जो मरनेको तैयार हो अुसे मारनेवाला कौन है? बापू तो ठोक-बजा कर कहते हैं कि मरना न आता हो, तो मारना भी आता है या नहीं? और कुछ नहीं तो मारते-मारते ही मरिये। कुत्तेकी मौत मरनेके बजाय तो मारते-मारते मरिये। कांग्रेसियोंको यह बात लोगोंको समझानेकी ज़रूरत है।

समय अैसा आ गया है कि आपको देहातमें जाकर दुबला, चौधरा वगैरा भाअियोंसे मिलना है और अुन्हें तथा गाँववालोंको समझाना है कि आप जो दूसरे रखवाले रखते हैं वे ही आपको लूटेंगे। आपके तमाम अैब ये लोग जानते हैं, अिसलिअे रखवाले वगैरा गाँवके ही चाहिये, बाहरके नहीं। जहाँ-जहाँ झगड़े हों, वहाँ-वहाँ पंच मुकर्रर करके निपटा दीजिये। गाँवमें कोअी भूखों मर रहा हो और अुसके पास कुछ भी साधन न हो, तो गाँवको किसी भी

तरह अुसका बन्दोबस्त कर देना चाहिये, चाहे तो कुछ काम देकर भी। अैसा न हो सके तो यह बात जिलेसे कहनी चाहिये और वहाँसे भी न हो सके, तो प्रान्तसे कहनी चाहिये। मगर अैसी स्थिति न रहनी चाहिये कि कोअी भूखों मरे।

अनुभवकी बात

मैं अपने अनुभवकी अेक बात कहता हूँ। बाबर देवा जब डाकू बनकर निकला, तब आणन्द तहसीलके और आसपासके प्रदेशके हरअेक गाँवके लोग शाम होते ही सब घरमें घुस जाते और दिन अुगने पर बाहर निकलते। वह डाकू ४०-५० आदमियोंको लेकर दिनदहाड़े घूमता था। किसीकी मिठाअी लूटकर बच्चोंको बाँट देता। किसीको मारना हो तो मार जाता। पुलिस खुद भी अुससे डरती थी। वे बाहरसे थानेको ताला लगवा देते और अन्दरसे साँकल लगाकर खाटके नीचे सो जाते। मगर जिस दिन हम गये, अुस दिनसे वह भाग गया। गुजरात प्रान्तीय समितिके सदस्योंको असी तरह घूमना है। क्योंकि लुटेरे डरपोक रैयतमें पनपते हैं; परन्तु रैयत नाराज़ हो तो अुनका गुज़र नहीं हो सकता।

गाँवोंमें पंच स्थापित करके यानी वातावरण साफ करके संगठन कीजिये। गाँवोंमें जो कमज़ोर हों अुन्हें ढूँढ़ निकालिये और समझाअिये। न समझें तो बाहर वालोंको बुलाअिये। अिसके सिवाय और कोअी अुपाय नहीं है। यही चीज़ स्वराज्यकी बुनियाद है। अिसके साथ बापूने रचनात्मक कार्यक्रमकी जो पुस्तक लिखी है, अुसे पढ़कर मनन कीजिये और अुसपर अमल करने लग जाअिये।

१२०

आज़ादीके बिना और कुछ काम नहीं देगा

[ता० २६–१–१९४२ को स्वतंत्रता दिवस पर बारडोली स्वराज्य आश्रममें दिये गये भाषणसे ।]

*　　　*　　　*

सारी दुनिया विग्रहमें फँस जायगी, लगभग फँस गअी है । आप यह न मानिये कि हम लड़ाअीमें शरीक नहीं हैं । जैसे चूल्हेमें जलनेवाली लकड़ीका अंतिम भाग अपनेको न जलनेवाला मान ले, तो भी वह जले बगैर नहीं रहता, वैसी ही यह बात है ।

अिस वक्त सरकारकी अैसी हालत है कि सात जुड़ते हैं और तेरह टूटते हैं । जिस तेज़ीसे लड़ाअी पास आ रही है, अुसे देखते हुअे कांग्रेसके सिपाहियोंकी बाहर ज़रूरत है । अिसलिअे व्यक्तिगत सत्याग्रहकी लड़ाअी मुल्तवी रखी गअी है।

ज्यों-ज्यों लड़ाअीके नगारे नज़दीक बजते जा रहे हैं, त्यों-त्यों सरकारके जोड़ ढीले होते जा रहे हैं और समाजके कमजोर पक्ष जोर पकड़ रहे हैं । लड़ाअीके असरसे सरकारका शासन ढीला पड़ गया है । देशमें फैल रही अंधाधुंधीसे निपटनेके लिअे अुसके पास साधन नहीं, ताकत नहीं । यह लड़खड़ाता राज्य कांग्रेसके कंधों पर पड़नेवाला है, आपको यह स्थिति समझ लेनेकी ज़रूरत है ।

यह लड़ाअी गाँवोंमें नहीं आयेगी, परन्तु अुसका असर तो थोड़ा-थोड़ा आपके जीवनमें होगा ।

*　　　*　　　*

यह लड़ाअी अैसी है कि अिसमें सारी दुनिया भी खतम हो सकती है । यह लड़ाअी आखिरी है या अेक और होगी, अिसका पता नहीं । बादमें दुनियाको अकल आयेगी और गांधीजीका कहा मानेगी तभी लड़ाअियाँ बन्द होंगी । अैसा समय आनेवाला है जबकि बहुतसे लोग यह सोचेंगे और मानेंगे ।

*　　　*　　　*

घटनाअें तो भयंकर भी हो सकती हैं, मगर अुनसे डरना नहीं चाहिये । अभी समय अैसा है कि कांग्रेसवाले गाँव-गाँव घूम कर गलत बातें न फैलने दें । किसी प्रकारकी घबराहट नहीं रखनी चाहिये । हमारे छप्परोंके लिअे कोअी बमका खर्च नहीं करेगा । हम सागभाजी पर जिन्दा रह सकते हैं । रूखी-सूखी रोटी खाकर जी सकते हैं । अनाज अिकट्ठा करके रखिये । कोअी भूखा न रहे । भुखमरी अुद्वेग पैदा करती है । भूखेको काम दीजिये और रोटी दीजिये । हरअेक

गाँव अपनी चौकीदारीकी व्यवस्था करे। गाँवकी पंचायत स्थापित करके गाँवके झगड़े अुससे निपटवाने चाहियें। अिस समय आप सबका कर्तव्य यह है और मेरा संदेश यह है कि चूँकि कठिन समय आनेवाला है, अिसलिअे अूँच-नीचके और जाति-वर्गके भेदभाव भुलाकर पक्का संगठन कीजिये और चौकीदारीकी पूरी तैयारी कीजिये। असाधारण समयमें हम खुद ही अपने पुलिस-चौकीदार हैं। अैसा समय आ सकता है कि बाहरसे चीज़ें आनी बन्द हो जायँ। अहमदाबादमें लाखों मज़दूर हैं। अभी तो रातपाली बन्द हो गअी है, क्योंकि कोयला नहीं मिलता। खल जलाते हैं और लकड़ी जलाते हैं। परन्तु अुसे लानेके साधन भी बन्द हो जायेंगे, तब मिलें बन्द हो जायँगी। अुस समय आप गांधीजीको याद करेंगे कि वे तो २० वर्षसे कह रहे हैं चरखा चलाओ।

हमारे पूर्वजोंने घरमें बैठकर कातनेकी खोज की। यंत्रोंसे तो यह राक्षसी विद्या पैदा हो गअी।

गाँव खुद स्वावलम्बी बन जायँ और रक्षाके लिअे भी दूसरेका मुँह न ताकना पड़े, अिसीका नाम स्वराज्य है।

रचनात्मक कार्यक्रमका केन्द्र चरखा है। अैसी स्थिति नहीं आनी चाहिये कि अितनी अधिक कपास पैदा होने पर भी कपड़ेका शोर मचे। समझदारीकी बात यह है कि प्रत्येक गाँव अपनी ज़रूरतको कपास जमा कर ले।

शुद्ध दूधकी तरह 'हरिजन' से आपको साफ़ बातें मिलेंगी। अकेली खादीकी ही बात नहीं है, परन्तु खादीके आसपास स्वराज्यकी रचना है। देहातकी फूट मिटानी है, झगड़े बन्द करने हैं और गाँवोंके चारों तरफ़ रक्षाकी व्यवस्था करनी है।

सूरत जिलेका शरीर कोमल है, अिसलिअे हमारे यहाँ अुपद्रव नहीं हैं।

बाहरसे आनेवाला अनाज भी बन्द होनेवाला है। सिर्फ़ खेती पर गुज़र करनेकी नौबत आनेवाली है। जुताअी, खाद और पानी सोना पैदा करते हैं। अपने खेतोंको अच्छी तरह जोतिये। अपने पशुओंकी खाद और मैलेका पूरा अुपयोग कीजिये। अिसमें अकल और होशियारीका काम है।

आलस्य करनेवाले, अैश-आराम करनेवालेके लिअे स्वराज्य नहीं है। स्वराज्य वह लाता है, जो अपना पेट भरनेमें ही संतोष नहीं मानता, बल्कि यह देखता है कि अुसके गाँवमें कोअी भूखा नहीं रहता।

कांग्रेस अेक अैसी संस्था है, जिसकी कोअी मिसाल नहीं। करोड़ों आदमी अुसके पीछे हैं, अुसकी आवाज़ सुनते हैं। कोअी भी सत्ता आये अुसके विरुद्ध हमारी लड़ाअी रहेगी। मुल्कको कब्ज़ेमें रखनेवाली किसी भी सत्ताके विरुद्ध कांग्रेसकी लड़ाअी रहेगी। भूत जाय और पलीत आवे, अैसा हमें नहीं करना है। चोर और डाकूमें हमें चुनाव नहीं करना है।

१२१
सफ़ाई सीखिये

[ता० ७-३-१९४२ को हजीरा (जिला सूरत) में दिये गये भाषणसे।]

अेक महीनेसे आपके गाँवमें आराम लेनेके लिअे आया हुआ हूँ। यहाँ मैंने अच्छी तरह शांतिका अनुभव किया। जितनी शांति जिन्दगी भरमें नहीं भोगी अुतनी यहाँ भोगी। आजकल संसारमें जो अुथल-पुथल हो रही है, अुसका यहाँ कोअी पता नहीं चलता। मुझे तो यह जगह खूब पसंद आयी है। यहाँ यह दीपस्तम्भ बन्द हुआ, तब सिंगापुरके पतनकी खबर लगी। सिंगापुरके बन्दरके लिअे हिन्दुस्तानके करोड़ों रुपये खर्च हुअे थे, मगर अुसका पतन होनेमें ८ दिन भी नहीं लगे।

*　　　*　　　*

यहाँ की आबहवा तो अच्छी है, मगर अिसकी क़दर करते आनी चाहिये। हीरेकी कीमत जौहरीको मालूम होती है। बन्दरको दे दिया जाय, तो वह अुसे चबायेगा और अुसके दाँत टूट जायँगे।

आप पिछड़े हुअे हैं। अमावस या ज्वारके समय रास्ता बन्द हो जाता है। दूसरे देशोंमें जाकर देखिये, तो वहाँ अैसी जगह पर बन्दरगाह बनाये होते हैं और बड़े-बड़े जहाज़ होते हैं। यहाँ मछलिया पकड़नेको नावें हैं। बन्दरगाह तो सरकार बना सकती है। आप थोड़े ही बना सकते हैं!

यह छोटा-सा गाँव है, थोड़ी-सी बस्ती है, अुम्दा पानी है और छोटी-सी पाठशाला है। मेरे जैसा कोअी आदमी आये तब झाड़-बुहार कर साफ़ कर दिया जाय, और चला जाय तब फिर टेकड़ी पर पाखाना बना दिया जाय, अैसा नहीं होना चाहिये। पाठशालाके पास तो बगीचा बनाना चाहिये। गुलाबके पेड़ लगाने चाहियें। लड़के-लड़कियोंको अुनमें पानी देना चाहिये। मगर अिसकी चिन्ता शिक्षकको होनी चाहिये।

अुत्तम जीवन बिताना हो तो पहले तो हमें यह विचार करना चाहिये कि जीनेके लिअे सबसे ज़रूरी चीज़ कौनसी है। वह है हवा। अुस पर किसीका अधिकार नहीं है। अुस पर सरकारका काबू भी नहीं चल सकता। समुद्रके किनारे सबसे अच्छी हवा आती है। अितनी हलकी हवा होती है कि अुससे फेफड़े भी अच्छे हो जाते हैं। अिसलिअे अैसी जगहों पर लोग आरोग्य-

भवन बनाते हैं। दूसरी चीज़ पानी है। जहाँ खड्डा खोदिये वहीं पानी मौजूद है। यह भगवानकी देन है। अुस पर किसीका नियंत्रण नहीं है। भगवानका ही नियंत्रण है। अुसका अुपकार मानना चाहिये कि अुसने अितनी अच्छी हवा और पानी दिया है। रूखी-सूखी रोटी मिल जाय तो हिन्दुस्तानके ग्रामीण लोगोंको बहुत संतोष हो। यह अच्छी बात है। जो लोग मछली खानेवाले हैं, अुनक लिअे तो समुद्रमें ढेरों मछली मौजूद है। फिर बाकी रह जाता है पहननेका कपड़ा, सो अुसके लिअे हमें हाथ चलाना चाहिये।

आपको हवा मुफ्त मिल जाती है, पानी मुफ्त मिल जाता है; तो फिर अनाज और कपड़ा पैदा कर लीजिये। ज़रूरतसे ज्यादा चीज़ काममें लेना अच्छा नहीं है। मैं देखता हूँ कि आपकी स्त्रियाँ कमसे कम कपड़ा अिस्तेमाल करती हैं। यह बहुत अच्छी बात है।

गाँवको साफ़ रखना चाहिये। गाँवमें चिथड़े पड़े हुअे नहीं होने चाहियें। मवेशियोंके गोबरके ढेर चाहे जहाँ पड़े हुअे नहीं होने चाहियें। गन्दगी नहीं होनी चाहिये। विदेशियोंसे सबसे बड़ी चीज़ अगर सीखने जैसी है, तो वह स्वच्छता है।

मैंने अेक महीना शांति भोगी। यहाँके लोग अुद्यमी हैं। दरवाज़े खुले रख कर भी सो सकते हैं। चोरी नहीं होती। आप बहुत भले और सज्जन लोग हैं, अिसलिअे थोड़ा बहुत साफ़ रहना भी सीख लीजिये। आप अपनी ज़रूरतकी चीज़ पैदा करना सीख लीजिये। मनुष्य खुद ही अपने चारों तरफ स्वर्ग या नरक बना सकता है।

१२२

गाँवोंकी रक्षा

[ता० ७-३-१९४२ को आणन्दमें दिये गये भाषणसे ।]

*   *   *

हमें परिस्थिति समझ लेनी चाहिये । अिसका किसीको पता नहीं है कि जो आज स्वतंत्र हैं, वे कल रहेंगे या नहीं ।

महाभारतके युद्धकी कथाअें सुनी है । मुलम्मा चढ़ाअी हुअी बातें सुनी हैं । परन्तु महाभारतका युद्ध अिस विश्वयुद्धके आगे कुछ भी नहीं था । महाभारतकी लड़ाअीमें मर्यादित क्षेत्रमें लड़ते थे । आजकलकी लड़ाअीका मैदान, जहाँ लड़ाअियाँ होती हैं वहीं नहीं होता, बल्कि जितने देश अुसमें शरीक होते हैं वे सब लड़ाअीके मैदान हैं । ज़मीन पर ही नहीं, आकाशमें भी लड़ाअी होती है, पातालमें — पानीमें — भी लड़ाअी होती है । लड़नेवालेको यह पता नहीं होता कि परिणाम क्या होगा । लड़नेवाले दोनों ही झूठे हैं । दोनों अीश्वरके नाम पर लड़ते हैं । दोनों अीसाको पूजनेवाले हैं । वे अपनेको सुधारक और जंगली जातियोंको ज्ञान देनेवाले कहते हैं । अन्तमें अितिहासमें लिखा जायगा कि दूसरोंको जंगली कहनेवाले खुद हैवान जैसे थे ।

दुनियामें जब अैसा भयंकर युद्ध हो रहा है, तब अेक आदमी ज़मीन पर पैर रखकर कहता है कि जो मनुष्य तलवारसे लड़ते हैं, अुनका पतन तलवारसे ही होगा, तलवारसे ही अुनके हाथ नीचे गिरेंगे । अन्तमें वे 'अहिंसा परमो धर्मः' को स्वीकार करेंगे ।

सिंगापुरमें करोड़ों रुपये खर्च किये गये । अन्त तक कहते रहे कि हमारी अितनी तैयारी है कि जापानी अुसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे । लेकिन अपनी तैयारीकी जितने दिन तारीफ की, अुतने दिन भी नहीं टिके ।

*   *   *

अब अुलटा क्रम शुरू हुआ है । पहले गाँव नष्ट होकर शहर बने थे । अब लोग शहरोंसे भागकर देहातमें आने लगे हैं ।

हम क्या मदद करेंगे ? साथ बैठकर घूँघट निकालकर रोना-पीटना हो तो ठीक है । कह दें तुम बहुत अच्छे थे । लेकिन अूपरसे गोले बरसें तो हम क्या करें ? कुछ करना सिखाया हो तब न ?

लेकिन जैसे किसी दावानलके फैलने पर, बाढ़ आने पर, हम सब अेक हो जाते हैं, वैसे ही आज भी हमें अेक हो जाना चाहिये ।

* * *

हमारा कहीं कुछ नहीं है । हम भगवानकी शरणमें पड़े हैं । हमारे जैसा कोअी सुखी नहीं है । जिसने किसीका छीना न हो, अुस पर दुःख नहीं आता । अीश्वरके सिवाय हमारा कोअी नहीं । राज्य चला जायगा, तो कपड़े झाड़ देंगे । हमारा क्या जायगा? मगर हमें अेक बात समझ लेनी है । किसी भी तरहकी अव्यवस्था हो जाय, तो कुत्ते-बिल्लीकी मौत नहीं मरना है । गांधीजीसे अेक चीज़ सीखने की है: निर्भयता । अिस जीवनमें आपके लिअे जो अवसर आया है, वह किसी जन्ममें नहीं आयेगा ।

* * *

सुख-दुःख तो कागज़के गोले हैं । गहनोंकी रक्षा करनेमें मत लगे रहना । बारह महीनेका अनाज भर लेना । अगर आप पर दुःख पड़ेगा, तो वह आपकी भीतरी कमज़ोरीके कारण पड़ेगा । लाठियाँ खाकर बहादुरीसे मरना न आये, तो भी कायर बनकर भागना नहीं चाहिये । अहिंसासे या हिंसासे दुश्मनका सामना करना सीखना चाहिये ।

* * *

अपने गाँवोंकी रक्षा खुद कर लीजिये । मौतका भय छोड़ दीजिये । संगठनमें शरीक हो जाअिये । मनमें मेल रखिये । जो दुःखी और भूखे हों, अुन्हें काम दीजिये । और कोअी अपंग हो, तो अुसे खानेको दीजिये । वैरभाव और झगड़े भूलकर कांग्रेसका साथ दीजिये ।

१२३

अेक हो जाअिये

[ता० ९-३-१९४२ को करमसद (जिला खेड़ा) में स्वागत और मानपत्रके जवाबमें दिये गये भाषणसे ।]

* * *

हिन्दुस्तानकी आज़ादी प्रत्यक्ष देखनेकी मेरी अभिलाषा है। जीवन क्षण-भंगुर है। अीश्वरकी माया है। अुसे कोअी समझ नहीं सकता। हम अपनी आँखोंके सामने देख रहे हैं कि बड़े-बड़े साम्राज्य अुलट गये। बड़े-बड़े देशोंका बातकी बातमें सफ़ाया हो गया। गीताके ग्यारहवें अध्यायमें श्रीकृष्णका जैसा विकराल रूप बताया गया है, वैसा हो रहा है।

* * *

महात्मा गांधीने सेवाका मंत्र दिया। अुस सेवाके काममें मैं भी शामिल हो गया और अिस थोड़ेसे जीवनमें जितनी हो सकी अुतनी सेवा की। अुसे आपने अिस मानपत्रमें बढ़ा-चढ़ाकर बता दिया। माताको जैसे अपना काना-कुबड़ा बच्चा भी सुन्दर लगता है, वैसे ही मेरे प्रति आपका प्रेम है।

* * *

जो आखिरी वक्त तक सेवा न करे, वह सच्चा सेवक नहीं। सच्चे राजपूतोंकी कथाअें पढ़नेसे मालूम होता है कि वे सिर अलग हो जाने पर भी लड़ते थे। सिपाहीका धर्म कठोर धर्म है। जो नौजवानोंके लिअे कोअी प्रेरणा छोड़ जाय, वही सच्चा सेवक है। मानपत्रमें वर्णन किये गये गुणोंका पता तो जीवन समाप्त होने पर ही लग सकता है।

* * *

जो मनुष्य सम्मान प्राप्त करने योग्य होता है, वह हर जगह सम्मान प्राप्त कर लेता है। परन्तु अपने जन्म स्थानमें सम्मान प्राप्त करना कठिन है। मैं यहाँकी धूलमें खेला हूँ। यहाँकी मिट्टीसे बना हूँ। यहाँ मेरे कअी बुज़ुर्ग रहते हैं। यहाँ मेरे साथ खेले हुअे विद्यार्थी हैं।

* * *

मैं जात-बिरादरीको भूल चुका हूँ। सारा हिन्दुस्तान मेरा गाँव है। सभी जातियोंके लोग मेरे भाअीबन्द हैं। मैं अिस अभिलाषासे यहाँ आया हूँ कि आपको महासागरके दर्शन कराअूँ। हमारे गुणगान करनेकी ज़रूरत नहीं है।

वे तो अपने आप बोलते हैं। छिपाये छिपते नहीं। परन्तु दोष अधिक बलवान हैं। क्या हम पड़ोसीका छप्पर या हमारी हदमें अुसका निकला हुआ भाग बरदाश्त कर सकते हैं? अुनसे हमारी आँखोंको संतोष होता है या वे खटकते हैं? हमारे अपने सम्बन्धियोंकी, अरे सगे भाअीकी बढ़ती भी हमें खटकती है, यह अिस धरतीका दोष है।

जब हमारे बापदादोंने गाँव बसाये थे, तब वे बादशाह माने जाते थे। आजकल तो साँप चला गया और लकीर रह गअी। अिस समय सब जातियोंको अपनी छत्रछायामें ले लीजिये। बूढ़े लोग न मानें तो भले ही न मानें। अुनके विचार अब नहीं बदल सकते। नौजवानोंको अुनकी अिज्जत करनी चाहिये, अुनका अपमान नहीं करना चाहिये। परन्तु अुनका रास्ता भूलभरा हो, तो विनयपूर्वक अुन्हें समझानेकी कोशिश कीजिये और न मानें तो अुत्तम रास्ता सत्याग्रहका तो है ही।

*　　　*　　　*

कुलीनता बापदादोंके देनेसे नहीं मिलती। जो चरित्रवान, सज्जन और नीतिवान है, वह चाहे जैसे कुलीनको भी वशमें कर सकता है। नीचा खानदान या छोटा खानदान, अूँचा खानदान या बड़ा खानदान, ये सब बातें भूल जाअिये। अिस समय बादशाही धूलमें लोट रही है।

*　　　*　　　*

व्यक्तिगत स्वार्थ भूलकर अच्छा काम होता हो, तो अुसमें भरसक मदद करनेकी वृत्ति रखनी चाहिये। बालिश्तभर ज़मीन दबती हो, तो अुसके लिअे गाँवमें फूट नहीं फैलानी चाहिये।

*　　　*　　　*

मेलका वातावरण पैदा कीजिये। कोर्ट-कचहरियाँ छोड़ दीजिये। गाँवको सीधे रास्ते लगानेकी कोशिश कीजिये। गाँवमें पंचायत हो, तो अुस पर गाँवका प्रेम बरसना चाहिये।

मनुष्य रुपयेसे कुछ नहीं कर सकता। यह तो बम्बअीमें रुपयेवालोंसे पूछिये। क्या करें? सोना लें? ज़मीन लें? नोट लें? अिस प्रकार कअी तरहकी चिन्ताअें अुन्हें सताती हैं।

*　　　*　　　*

सभी जातियाँ अेक पिताकी संतान हैं। मनुष्यके मर जाने पर ब्राह्मणका चोला हो या चमारका, अुसे कोअी नहीं छू सकता। प्राण तो पवनके साथ मिल जाते हैं और यह चोला रह जाता है। अिसलिअे अूँच-नीचका भेद क्यों मानते हैं? और मौतसे भी क्यों डरते हैं? जो पैदा हुअे हैं अुन सभीको मरना

होगा। तो फिर होला पक्षीकी तरह तड़प-तड़प कर क्यों मरें? मर्दोंकी तरह क्यों न मरें? मरना-जीना अीश्वरके हाथकी बात है। तो फिर व्यर्थ वाद-विवाद क्यों करें? अच्छा काम क्यों न करें? पड़ोसीसे अीर्षा क्यों रखें? पड़ोसीसे या सम्बन्धियोंसे बदला लेनेके लिअे दिनको या रातको डाका डलवाने या हमला करवानेके बराबर बुरा काम कोअी नहीं।

* * *

सिंगापुरका पतन हो गया, मलायाका पतन हो गया, सुमात्रा-जावाका पतन हो गया। कल रंगूनका पतन होगा। बादमें कलकत्ते पर बम गिरेंगे। अब कहते हैं कि हमारी मदद करो। मुर्दा अुठानेमें क्या सहायता दी जाय?

चीनको अंग्रेज़ और अमेरिका सहायता देते ही रहते हैं और कहते हैं कि तुम बड़े बहादुर हो। अिस प्रकार दूसरोंको लड़ाकर, चढ़ जा बेटा सूली पर, वाली बात करना हुआ।

* * *

ये सब लुटेरे हैं। अेक कहता है कि हम आर्य हैं। दूसरे कहते हैं कि हम अीश्वरके नाम पर लड़ रहे हैं।

अेक तरफसे मुसलमानोंको भड़काते रहते हैं और फिर हमसे कहेंगे कि अेक होकर आओ। यह सरकार अैसे खेल खेलती रहती है। मगर आसमान फट जाय, तो पैबन्द कहाँ लगाया जाय?

* * *

हमारे यहाँ जब बाढ़ आअी, तब बड़े-बड़े पेड़ोंकी डालियों पर पच्चीस-पच्चीस आदमी बैठ गये थे। जो मिला सो खाया। अुस समय किसीको छूत नहीं लगती थी। अब भी अैसी ही बाढ़ आअी है। अिससे आपको बच निकलना हो, तो अेकता रखिये, निडर बनिये, अेक दूसरेकी सहायता कीजिये और गाँवकी रक्षा करनेकी तैयारी रखिये।

रुपया तो आज है और कल चला जायगा। सट्टेके बाज़ारमें बहुतसे लोग रुपया खो देते हैं, परन्तु सेवाके बाज़ारमें कभी नुकसान नहीं होता। मुझे आशा है कि मेरे दिलकी बातें आप ध्यानमें रखेंगे।

१२४

गाँवका संगठन कीजिये

[ता० ९-३-१९४२ को नड़ियादमें दिये गये भाषणसे ।]

*　　*　　*

अिस सरकारकी तो अेक जगह स्थिति सुधरती है, तो दस जगह बिगड़ती है । मरते समय पुण्य किया जाता है। पिछले पापोंका प्रायश्चित्त किया जाता है। मगर अुसे तो यह भी नहीं सूझता । परन्तु हमें गिरे हुअेको लात नहीं लगानी है । यह सत्याग्रहीका काम नहीं है । अन्तिम समय पर अुसके कानमें राम-नाम बोलते हैं, परन्तु वह बहरी हो तो क्या करें ? अुसके शरीरके जोड़ टूट रहे हैं और अुसकी रग-रग टूटने लगी है । अपने पास बची हुअी शक्ति वह अपने बचावमें लगायेगी। अितनी बात स्वीकार करनी चाहिये कि लगातार हार होनेपर भी वह घबराती नहीं ।

अब हमारे घर पर आयी है । अितनी बड़ी प्रजासे, दुनियाके पाँचवें हिस्सेकी आबादीसे हथियार छीन लिये । दो सौ वर्षसे हमे हथियार नहीं रखने दिये । अिसलिअे हमें भी आदत पड़ गअी है कि कोअी ज़रा सी बात हुअी कि चलो पुलिस थाने पर । मगर अब अुनका पुलिस थाना नहीं रहेगा ।

अैसे अनिश्चित समयमें संभव है कुछ लोग लूटपाट करने लगें । अैसे समय यह न सोचना चाहिये कि दूसरोंके यहाँ लूटपाट हो तो हमें क्या ! आज अुनकी तो कल हमारी बारी आ सकती है । और रक्षाका काम भैयाओंसे, चौकीदारोंसे या पराये आदमियोंसे नहीं होगा । चौकीदार रखेंगे तो वे ही आपको लूटेंगे । हमें अपनी रक्षा आप ही करनी सीख लेना चाहिये । मौतका डर दिलसे निकाले बिना बहादुरी नहीं आयेगी। किसी भी हुकूमतके पास अैसी बन्दूक या तोपका गोला नहीं है, जो जिसकी मौत न आअी हो अुसे मार सके । और जिसकी मौत आ गअी हो, अुसमें प्राण डालनेकी ताकत भी किसीमें नहीं है । अैसी चीज़ न किसीको मिली, न कभी मिलेगी। आजकल शहरोंमें जो धनवान हैं, अुनमें यह डर घुस गया है कि अिस रुपयेका सोना ले लें या ज़मीन ले लें ! जो फक्कड़ हैं, अुनकी तो मौज है । क्योंकि अुन्हें कोअी लूटनेवाला नहीं । अब जात-पाँतके, अूँच-नीचके, सम्प्रदायोंके भेद-भाव भूलकर सब अेक हो जाअिये, मेल रखिये और निडर बनिये । घरमें बैठकर काम करनेका समय नहीं है । बीती हुअी घड़ियाँ ज्योतिषी भी नहीं देखता । गांधीजी जो-जो सूचनाअें दें, अुन पर अमल करते रहिये । अपने गाँवका संगठन पक्का कीजिये ।

हमने दो साल पहले पूनामें सरकारसे कह दिया था कि अैसा काम कीजिये, जिससे जनताको यह लड़ाअी अपनी अनुभव हो। मगर अुन्होंने नहीं सुना। अब अिंग्लैण्डसे बातचीत करनेको आदमी भेज रहे हैं।

आज तो लोगोंको यह परेशानी हो रही है कि रुपये का क्या करेंगे। हमारे पास जो धन है, अुसका सदुपयोग हो सकता है। आपके पास जो रुपया है, अुसका अुपयोग करनेका यही समय है। शहरोंसे घबराकर भागदौड़ करनेकी ज़रूरत नहीं है। अैसा अवसर आ जाय, तो व्यवस्थापूर्वक जाअिये। वैसे आरामसे व्यापार करते रहिये। शहरोंमें कोअी भूखे और बेकार लोग हों, तो वे अुपद्रवकी जड़ हैं। अुन्हें बचाना चाहिये। अैसे लोगोंकी मददके लिअे अुचित हिस्सा दीजिये। गुमाश्तोंके प्रति भी दयाभाव रखकर अुनकी स्थिति सुधारिये।

३

[ता० १५-३-१९४२ को अहमदाबाद कांग्रेस हाअुसमें म्युनिसिपल दलकी बैठकमें दिये गये भाषणसे।]

जो डेमॉक्रेटिक (लोकतंत्री) संस्था होती है, अुसमें विरोधी दलका स्थान होता है। वह टीका-टिप्पणी करता ही रहता है। यह अुसका धर्म है।

* * *

हमें दोहरे जाग्रत रहना चाहिये।

* * *

पहले पहल कुरसी पर आकर बैठे और मालाअें पहनाअीं कि गुप्त अभिमान पैदा हो जाता है।

* * *

हमारे यहाँ साम्प्रदायिक दंगेका डर है। यह शेरके मुँहमें खून लगाने जैसी बात है। हमारी सारी आबरू खतम हो गअी।

* * *

हमें प्रतिज्ञा लेनी चाहिये कि मुझे पुलिसकी मदद माँगनी ही नहीं है। भले ही वह अपना फर्ज अदा करे।

* * *

म्युनिसिपल कर्मचारीवर्ग लापरवाही करता हो, तो अुस पर हमारा अधिकार है। मगर ये काम अधिकारसे — सत्तासे नहीं होते। घोड़ेको चाबुक लगानेसे तेजी नहीं आती। सिर्फ दिखानेसे आती है।

* * *

यह अनुभव न हो कि सेवा कैसे की जाय, तो सेवाके बजाय कुसेवा होती है।

* * *

विभागके अधिकारियोंको छोड़कर अुनके मातहतोंको सीधे बुलवाने लगें, तो वे अधिकारी अुदासीन हो जाते हैं, अुनकी प्रतिष्ठा चली जाती है।

* * *

अिसके सिवाय जो बड़े अफसर हैं, अुनकी मर्यादा-प्रतिष्ठा रखनी चाहिये। अुसे नष्ट कर देंगे तो वे काम नहीं कर सकेंगे। आपको फ़ैसला कर लेना चाहिये कि अुन्हें रखना है या नहीं। मगर रखनेके बाद अुन्हें छेड़ना नहीं चाहिये। अुनके मातहतोंके सामने तो अुनकी अिज्ज़त रखनी ही चाहिये।

* * *

कुछ आदमी निकम्मे भी होते ही हैं। मगर अुनके साथ आपको वास्ता नहीं रखना चाहिये। आपको तो अफसरसे हिसाब लेना चाहिये।

बार-बार अफसरोंको नहीं बुलाना चाहिये। अुनके दफ्तरमें तो जाना ही नहीं चाहिये। अिससे हमारी प्रतिष्ठा घट जाती है। हमारा दफ्तर हमारी कमेटीका कमरा है। हमें अुन्हें बार-बार नहीं बुलाना चाहिये। वे भी थक जाते हैं। बार-बार बुलानेसे अकुला जाते हैं। हमने अुनके द्वारा अपना कुछ भी स्वार्थ पूरा करा लिया, तो हमारी कीमत घट जाती है। मोतीकी आब चली जाती है। म्युनिसिपल सदस्य अैसे लाभ न अुठाकर कुछ न कुछ त्याग करें। आप पचास आदमी यह भाव रखें, तो अिस म्युनिसिपेलिटीकी पूजा होने लगेगी।

* * *

४

[ता० १५-३-१९४२ को अहमदाबाद लोकल बोर्डके मैदानमें सार्वजनिक सभामें दिये गये भाषणसे।]

* * *

डेढ़ वर्षमें जो अितिहास लिखा गया है, वह सदियोंमें नहीं लिखा गया।

* * *

अिस शहरमें दंगा हुआ और बाज़ारमें दिन-दहाड़े अिमारतें जला दी गअीं। दुकानें लुटनेकी आवाज़ मेरे कानमें पड़नेसे मुझे जो दुःख हुआ, अुसका घाव अभी तक भरा नहीं है। अिस दुःखको मैं नहीं पचा सकता। अभी तक अुसका असर मुझ पर बना हुआ है।

* * *

अेकदम क्या सूझा कि अेक-दूसरेके गले काटने लगे!

* * *

परन्तु मुझे अेक बातका दुःख है कि हमारी अिज्ज़त चली गअी। अहमदाबाद शहरको कलंक लग गया। वह कैसे मिटे? अेक ही तरहसे मिट सकता है कि हम अिस प्रकार भगदड़ न मचायें। अैसी कोशिश करनी चाहिये कि आअिंदा अैसा वातावरण पैदा न हो।

* * *

अस्सी-नब्बे निर्दोष आदमी बेमौत मर गये, अिसके बजाय दस आदमी हिम्मतके साथ मर गये होते, तो यह घटना कभी न होती। मुझे आपसे कहना चाहिये कि गांधीजीको अिससे बहुत दुःख हुआ है। दुनियामें अुनकी हँसी हुअी, मज़ाक अुड़ा।

बादमें सब सरकारके पास गये कि जाँच कीजिये कि यह किसने किया? हत्यारा कभी यह जाँच करता है कि किसने हत्या की?

* * *

आप कभी मत भागिये। मुकाबला कीजिये। सारी दुनिया यही करती है। अिससे आगे गांधीजीका सत्याग्रहका मार्ग भी है। हिन्दू हों या मुसलमान, विरोधीकी छुरीसे मरिये। परन्तु अिस अहिंसाके दर्शन हों तब न?

* * *

अहिंसाका बहाना न बनाअिये। अिसमें अहिंसाका तो नाम-निशान भी नहीं था। अहिंसाको हमने अपनी कायरताको छिपानेका साधन बना लिया था।

* * *

दो साल पहले पूनामें प्रस्ताव पास किया था कि तुम्हारा (सरकारका) और हमारा कठिन समय आनेवाला है, अिसलिअे राष्ट्रीय सेना बनाने दो। तो कहने लगे 'हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। छोटी-छोटी जातियोंका दायित्व हमारे सिर पर है।' अुन्होंने तो सारी दुनियाकी जिम्मेदारीका ठेका ले रखा है!

१२६

अहमदाबादके धनिकोंसे

[ता० २५-७-१९४२ को अहमदाबादके वाडीलाल साराभाअी अस्पतालमें दिया गया भाषण।]

मीठी स्मृतियाँ

मैं जब जब अहमदाबाद आता हूँ, तब तब मुझे अहमदाबादमें अिस जगह हुअी राष्ट्रीय कांग्रेसकी मीठी स्मृतियाँ हो आती हैं और अुसके विकासके बीस वर्षका अितिहास मेरी आँखोंके सामने आ जाता है। जब मैं अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीमे था, तब अहमदाबादके श्री चीनाअी सेठ मेरे पास आये और मुझसे कहने लगे कि मुझे थोड़ासा दान करना है। अिस शहरमें प्रसूति-गृह नहीं है, अिसलिअे आप साथ दें तो कुछ करूँ। अुनकी अिच्छा यह थी कि शहरमें ही प्रसूति-गृह बने। मगर मैंने यह कह कर समझाया कि शहरसे बाहर अहमदाबादकी बहनोंकी तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी, अिसलिअे नदीके पार बनवाअिये। अुनका यह खयाल था कि अहमदाबादकी बहनोंको आदत न होनेके कारण वे अितनी दूर कैसे जा सकती हैं? अन्तमें सब-कुछ ठीक हो गया और यहीं रखनेका निश्चय किया गया। अब वह अिस स्थितिमें पहुँच गया है। कल वे फिर मेरे पास आये और कहने लगे कि वह तो छोटा पड़ता है; अगर म्युनिसिपेलिटी मदद दे, तो अुसका विस्तार हो सकता है।

अिसमें अहमदाबादकी शोभा नहीं

अहमदाबाद जैसे शहरमें अैसे गृहमें सिर्फ़ अेक सौ पचहत्तर बिस्तर ही हों, यह हमें शोभा नहीं देता। और वह कोअी अकेले अहमदाबादके लिअे ही नहीं है, देहातके लोगोंके लिअे भी है। और गरीबोंके घरोंमें तो साधन ही कहाँ हो सकते हैं?

दान किया वह कमाया

आजकल अहमदाबादमें धनकी अैसी बाढ़ आ गअी है, जैसी पहले कभी नहीं आअी थी। मगर यह बाढ़ कृत्रिम है। वह लड़ाअीके कारण है। अुसकी तहमें और बहुतसे कारण हैं। अिसलिअे अुसका आप जो अुपयोग कर लेंगे वही रहेगा। आज जो दान-पुण्य होगा, वह कमाया कहा जायगा। वैसे बादमें कुछ नहीं बचेगा।

लोगोंको यह युद्ध जितना दारुण महसूस होना चाहिये, अुतना नहीं हुआ। आजकल महासागरमें जितने जहाज़ डूब रहे हैं, अुन सबका रुपया बराबर बाँट दिया जाय तो कोअी भूखा न रहे। आजकल करोड़ों रुपयेके जो जहाज़ डूबते हैं, सब व्यर्थ जाते हैं। वे मछलियोंके भी काम नहीं आते। दोनों पक्ष कहते हैं कि हम सत्यके लिअे लड़ रहे हैं। अिसमें जो हारेगा अुसका नाश हो जायगा, परन्तु जो जीतेगा अुसका भी नाश हो जायगा! अिन दोनोंका नाश हो जायगा। अिसमें हम सब भी नहीं बचेंगे।

दूसरा मालिक नहीं बनायेंगे

आम तौर पर हिन्दुस्तानमें अेक अैसी प्रथा चल पड़ी है कि मनमें अेक बात होती है और बाहर दूसरी ही कही जाती है। हरअेककी अैसी भावना है कि अिस राज्यका अस्त हो जाय तो अच्छा। लोग अुसे प्रगट नहीं कर सकते, मगर दिलमें अैसा चाहते हैं और विरोधीकी जीत सुनकर खुश होते हैं। यह अच्छा नहीं है। हमें अेक मालिकको बदल कर दूसरा नहीं बनाना है। मालिकके बदलनेसे किसी गुलामका लाभ नहीं होता। मगर हमें स्वतंत्र तो होना ही चाहिये और स्वतंत्र भारत ही युद्धमें मदद दे सकता है।

वाअिसरॉय कहते हैं कि यहाँ नेशनल फ्रण्ट तैयार कीजिये। मगर दूसरी तरफ़ कहते हैं कि हिन्दुस्तानमें अेक राष्ट्र (नेशन) नहीं है, हिन्दू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं। तब किसका नेशनल फ्रण्ट बनायें।

यदि आज़ाद होते तो . . .

आजकल जो लड़ाअी हो रही है, अुसके कारण अैसे शहरोंमें धनका ढेर लग रहा है। आप जो सौ कमाते हैं, अुसमें से अस्सी सरकार ले लेती है। अिसलिअे यह दान करनेका समय है। अैसा समय दुबारा नहीं आयेगा। अहमदाबादमें करोड़पति लोग हैं। सेठ मफ़तलाल चार किताब, मेरे जितना पढ़े हैं, तो भी वे करोड़ों कमाना जानते हैं। यहाँ विदेशी सरकार किसी तरहके अुद्योगोंका विकास नहीं होने देती थी। फिर भी अेक अपढ़ आदमी अपनी दाँव-पेंचकी विद्यासे अितना काम करके दिखाता है। तब अगर हमारा देश आज़ाद होता और हमारा व्यापार-अुद्योग अनुकूल स्थितिमें चलता, तो अुसका कैसा परिणाम निकलता!

अिस भूमिमें अेक बात है। कितने ही अुतार-चढ़ाव आयें, तो भी अिसमें पुण्यशाली आत्माअें पैदा होती हैं। अिस समय संसारमें कोअी सबसे महान व्यक्ति हो सकता है, तो वह महात्मा गांधी हैं। अुनके कारण आज हमारा देश दुनियामें चमक गया है। अगर हम अुनकी सलाहके अनुसार काम न करें, तो हमारे बराबर मूर्ख कोअी नहीं।

स्वतंत्र होना पहला काम

अिस अस्पतालकी तुलना स्वतंत्र देशोंके अस्पतालोंसे की जाय, तो अिसे कोअी अस्पताल कहेगा ही नहीं। अुनमें तो कितने ही साधन, कितने ही सुभीते होते हैं। आजकल वहाँकी अैसी संस्थाओंका सफाया होता जा रहा है। मगर वे दुबारा अिससे भी बड़े पैमाने पर बना लेंगे, क्योंकि वे सभी स्वतंत्र देश हैं। पहला काम तो यह है कि हमें स्वतंत्र होना चाहिये। और अुस कामके लिअे सबको तैयार हो जाना चाहिये।

१२७

युवकोंसे

[ता० २६-७-१९४२ को अहमदाबादमें लोकसेनाकी रेलीके समय दिया गया भाषण।]

हम नहीं भाग सकते

हमारा अनुभव यह है कि हमने या तो खतरेसे भागनेकी तालीम ली है या हमें अुसकी आदत पड़ गअी है। स्वतंत्र देश मैदानसे पीछे हटते हैं, तो भी व्यवस्थित ढंगसे हटते हैं, और कअी बार तो पीछे हटना अैतिहासिक माना जाता है। लेकिन हमारा पीछे हटना नामर्दीका होता है। अैसी नामर्दीसे स्वराज्य चलानेकी हमारी अयोग्यता सिद्ध होती है। जब पूरा-पूरा खतरा आयेगा, तब राज्यके कर्मचारी तो भाग जायँगे, परन्तु जनताके सेवकोंको नहीं भागना चाहिये। राज्यके कर्मचारी भाग सकते हैं, क्योंकि वे तो भागते-भागते ही यहाँ आये हैं। अुनका लड़ाअीका तरीका यह है कि जब दुश्मन थक जाय, तब अुस पर वार किया जाय। और वह राजनीतिज्ञता कहलाती है! मगर हम वैसी लड़ाअी नहीं लड़ सकते। हमें तो भयके विरुद्ध लड़ना चाहिये।

आजाद युवकोंका अुदाहरण लो

मृत्यु अीश्वर निर्मित है। कोअी किसीके प्राण न ले सकता है, न दे सकता है। जनताकी रक्षाके लिअे हम अपने प्राण हथेली पर रख कर चलें, तो ही यह कहा जायगा कि हमने स्वतन्त्रताका पहला पाठ पढ़ लिया। हरअेक स्वतन्त्र देशके नौजवान अपने देशकी रक्षाके लिअे या अपने देशका साम्राज्य बनानेके लिअे जी-तोड़ मेहनत कर रहे हैं — प्राण दे रहे हैं। हमें अुनका अुदाहरण लेना चाहिये। आज़ादीके लिअे वे लोग कितना कर रहे हैं। मगर कुछ गुलामोंको लम्बे समयकी गुलामीके बाद गुलामी ही प्यारी हो जाती है।

स्वतन्त्रताके पहले पाठ

जनताको भय-मुक्त करना हरअेक नौजवानका फर्ज है। अिसलिअे प्रजाकी रक्षा, शहरकी रक्षा और देशकी रक्षा करना सीखना — ये सब स्वतन्त्रताके पहले पाठ हैं। और हमें ये सीख लेने चाहियें। अैसा समझा जाता है कि यह शहर तो युद्धसे दूर है। लेकिन अगर हमें जनताको लूट-खसोट और चोरी वगैरासे बचाना है, तो हमें सचेत रहना चाहिये। बमबारीसे होनेवाली दुर्घटनाअें आज तो हमारे शहरसे दूर हैं। मगर कभी वे आ ही जायँ, तो भागनेकी भी तालीम और तरीका सीखना चाहिये।

जिस आदमीने जनताकी रक्षा करनेकी प्रतिज्ञा ली है, वह जब तक शहरमें दूसरे लोग मौजूद हों, तब तक नहीं भाग सकता। और मैं आशा रखता हूँ कि आप कोअी नहीं भागेंगे। भिन्न-भिन्न जातियोंके भेदभावको भूलकर आपने जो काम शुरू किया है वह सुशोभित हो, अैसी कोशिश करना।

१२८

आखिरी लड़ाअीकी तैयारी

[ता० २६–७–१९४२ को अेक लाख मानव-समूहके सामने अहमदाबादमें लोकल बोर्डके मैदानमें दिये गये भाषणसे।

अुद्देश्य स्पष्ट नहीं हुअे

लड़ाअीके शुरूमें कांग्रेस वर्किंग कमेटीने प्रस्ताव पास किया था कि कांग्रेसकी या हिन्दुस्तानकी मंजूरीके बिना हिन्दुस्तानको युद्धमें शरीक होना पड़ा है, फिर भी पिछली बातोंको भूलकर अिस लड़ाअीके अुद्देश्य स्पष्ट कर दिये जायँ, तो ही हिन्दुस्तान अुसका समर्थन कर सकता है। अिसकी कअी बार माँग की गअी, पार्लियामेण्टमें भी अुसकी चर्चाअें हुअीं, मगर कोअी सुनवाअी नहीं हुअी।

पूनाका प्रस्ताव

अिसके बाद कांग्रेसकी महासमितिकी बैठक पूनामें बुलाअी गअी। कांग्रेस पर यह आरोप लगाया गया था कि वह अहिंसाको मानती है और महात्माजीका नेतृत्व स्वीकार करती है, अिसलिअे अुसके साथका कोअी मूल्य नहीं है। कांग्रेस और खास तौर पर महात्माजी यह मानते थे कि अिस लड़ाअीमें नीति किसके पक्षमें अधिक है यह देखना चाहिये; और यह मानकर कि नीति हमारी सरकारके पक्षमें है, हमें अुसे नैतिक समर्थन देना चाहिये। परन्तु सरकारको नैतिक समर्थनकी नहीं, बल्कि सैनिक साधन-सामग्री और फौजी भरतीकी कदर

। । अिसलिअे महासमितिकी पूनाकी बैठकमें हमने गांधीजीसे अलग हो जानेका
निश्चय करके सरकारके सामने अेक शर्त रखी । सरकारको सैनिक बलकी ज़रूरत
है, तो अुसके लिअे गांधीजीसे अलग होकर भी हम आपका साथ देनेको लोगोंसे
कहेंगे; लेकिन यह तभी हो सकता है, जब लोगोंमें यह भावना पैदा हो जाय
कि यह देश हमारा है। अिसलिअे आप कुछ तो अैसा कीजिये, जिससे लोगोंको
लड़नेके लिअे कहनेको हमारी ज़बान खुल सके । अर्थात् आप अेक राष्ट्रीय मंत्रि-
मंडल बना दें, तो हम आपका साथ दें । परन्तु अिसका कोअी जवाब नहीं
मिला । अिसलिअे कांग्रेस अिस निश्चय पर पहुँची कि अिस तरह चुप होकर
बैठ जानेसे तो कांग्रेसका अस्तित्व मिट जायगा ।

नैतिक विरोधका निर्णय

अिस प्रकार जब कांग्रेसकी अुपेक्षा ही की गअी, तब हमें महसूस हुआ कि अिस सरकारके लिअे हमारा कोअी मूल्य नहीं है । अिसलिअे हमने अुसका अिस ढंगसे नैतिक विरोध करनेका निश्चय किया, जिससे सरकारके युद्ध प्रयत्नोंमें बाधा न पड़े और अुसे परेशानी न हो । और अिस तरहकी लड़ाअी चलानेका गांधीजीको पूरा अधिकार दे दिया । अिसका दुनिया भरमें नैतिक असर पड़ा । बादमें सल्तनतके हाथोंसे अुसके सिंगापुर, मलाया और ब्रह्मदेश जैसे विशाल प्रदेश निकल गये, सीलोन पर हमले हुअे और हिन्दुस्तानमें भी कहीं-कहीं हमलेका खतरा पैदा हो गया। अिस पर यह देखनेके लिअे कि सरकारमें अब भी समझ आअी है या नहीं, हमने फिर अपनी नैतिक लड़ाअी मुल्तवी रखना तय किया ।

क्रिप्सके प्रस्ताव

अुसके बाद ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि सर स्टेफर्ड क्रिप्स हिन्दुस्तानमें आये। वे बहुतसे कांग्रेसी नेताओंके मित्र थे । अिसलिअे अुन नेताओं और दूसरे बहुतसे आदमियोंको अैसा लगा कि वह प्रगतिशील विचारोंके व्यक्ति हैं, अिसलिअे अुन्हें भेजनेमें हिन्दुस्तानके साथ समझौता करनेकी सरकारकी नीयत साफ़ होगी । यह मानकर सर क्रिप्सकी लाअी हुअी चीज़ पर विचार करनेका निर्णय किया गया। और मौलाना आज़ादको अुनके साथ बातचीत करने और ठीक मालूम हो तो अुसे कार्य-समितिके सामने पेश करनेका अधिकार दिया गया । परन्तु सर स्टेफर्डको खयाल हुआ कि कांग्रेसको बादमें बुला लेंगे तो भी काम चल जायगा, परन्तु गांधीजीके बिना गाड़ी आगे नहीं बढ़ेगी । अिसलिअे तार देकर गांधीजीको बुलाया गया। गांधीजीने बताया कि अिसमें मेरा कोअी काम नहीं है । मैं खुद हरअेक हिंसक युद्धका विरोधी हूँ और कांग्रेससे अलग हो गया हूँ । फिर भी आपका आग्रह हो तो मिलने आ जाअूँगा ।

अिस प्रकार गांधीजी दिल्ली गये। परन्तु वहाँ अुन्होंने जो कुछ देखा अुससे अुन्हें घृणा हो गअी और सरकार और अंग्रेजोंके प्रति अुनका जो भाव था, वह बिलकुल जाता रहा। अुन्होंने सर स्टेफर्डको साफ कह दिया कि अेमरी जैसा कोअी नादान आदमी अैसे प्रस्ताव लेकर आया होता, तो समझमें आ सकता था। परन्तु आप तो हिन्दुस्तान और रूसके भी मित्र माने जाते हैं। आप प्रगतिशील विचार रखनेवाले हैं। आपको यह क्या सूझा? यह पाप, यह ज़हर हिन्दुस्तानके गले अुतारनेको आप कैसे चले आये!

फिर गांधीजी तो चले गये। परन्तु कांग्रेसने क्रिप्सके प्रस्तावोंकी स्वतंत्र परीक्षा करने और वे क्या हैं यह जाननेके लिअे अेक, दो या तीन नहीं, पर पन्द्रह दिन तक विचार और बातचीत की। पहले तो सर स्टेफर्डने मीठी-मीठी बातें कीं। यह भी कहा कि जिस ढंगसे अिंग्लैंडमें सम्राट राज्य करता है, हिन्दुस्तानमें वाअिसरॉय भी अुसी तरह करेगा। कांग्रेसने अुनके प्रस्तावोंकी दूसरी बातोंको — जैसे कि हिन्दुस्तानके टुकड़े करने, राजाओंको मिलने न मिलनेके लिअे पूछने, वगैरा मामलोंको — अलग रखनेको कहा। यही जानना चाहा कि अभी आप क्या करना चाहते हैं, क्योंकि भविष्यमें आप स्वतंत्रता देंगे अुसकी बात अभीसे क्या की जाय? भविष्यमें आपके पास आज़ादी देने जैसी कोअी चीज़ रहेगी तभी देंगे न! अुस वक्त अिसकी बात करेंगे। मगर आज क्या देते हैं? 'मर मिटें'की भावना लोगोंमें पैदा कर सकनेवाली कोअी चीज़ आप देते हों तो कहिये! यहाँ तक मीठी-मीठी बातें करके आखिरी दिन अुन्होंने मौलाना आज़ादको पत्र लिखा कि अब तक की हुअी बातोंमें आप बदल गये हैं, क्योंकि आप तो राष्ट्रीय सरकार माँगते हैं। सच बात यह थी कि वे खुद बदल गये थे। फिर भी अुन्होंने कांग्रेस पर झूठा आरोप लगाया।

अिससे गांधीजीको बड़ा गुस्सा आया। अुसके बाद अलाहाबादमें महासमितिकी बैठक हुअी। अिस बीच कुछ कांग्रेसी नेताओंने आनेवाले आक्रमणके लिअे जनताको तैयार होनेके लिअे शुद्ध बुद्धिसे कहा था, अुनके शब्दोंका सरकारने दुरुपयोग किया। जवाहरलालके भाषणोंका भी दुरुपयोग किया। और अुन भाषणोंके कुछ अंश आगे-पीछेके सम्बंधसे अलग करके बम्बअी शहरमें बड़े-बड़े पोस्टरोंमें छापकर दीवारों पर, ट्रामों और रेलोंमें, सिनेमाओंमें और अन्तमें सड़कों पर भी चिपकवा दिये। अलाहाबादमें जो कार्य-समितिकी बैठक हुअी, अुसमें गांधीजीने अपना विचार प्रकट कर दिया कि सरकारकी नीयत अच्छी नहीं मालूम होती, अिसलिअे हमारा धर्म है कि अुससे कह देना चाहिये: 'हमारे और तुम्हारे भलेके लिअे तुम हिन्दुस्तानसे चले जाओ।' परन्तु यह तो अेक नअी बात हुअी।

आसमान फट गया

जब क्रिप्सके आनेकी बातें हो रही थीं, अुस समय मैं यहाँ आया था और हम सब अिस स्थान पर अिकट्ठे हुअे थे। अुस समयमें और अिस समयमें फर्क पड़ गया है। अुस वक्त तो लोग भगदड़ मचा रहे थे। मैंने आपसे कहा था कि भगदड़ मचानेका कोअी कारण नहीं है। जिस दिन हम पर बमबारी होगी, अुस दिन दूसरे देशोंकी तरह हिन्दुस्तान भी अिस सरकारके हाथमें नहीं होगा। अुसके बाद तो स्थिति और भी बिगड़ गअी है। लूटपाट अब भी जारी है। हमने चौकीदल बनाये और अुसमें जहाँ पुलिसका सम्मानपूर्ण सहयोग मिला, वहाँ अुसका सहयोग लिया। लोगोंको राहत पहुँचानेके लिअे सस्ते अनाजकी दुकानें खोलीं। मगर जहाँ आसमान फट गया हो, वहाँ किस-किस जगह पैबन्द लगाये जायँ? मिट्टीके तेलकी दुकानों पर बूँद भर तेल लेनेके लिअे हाथमें बोतल लिये हुअे धक्का-मुक्की सहनी पड़ती है! ये सब लड़ाअी नज़दीक आनेकी निशानियाँ हैं। जब तक हमारी अपनी सरकार नहीं होगी तब तक यही हाल रहेगा।

कलेक्टरसे मिलते हैं तो वह बेचारा कहता है कि लिखूँगा और मीठी-मीठी बातें भी करता है। मगर अुसके अूपर भी कंट्रोलर बैठा है। अुसके तो कान ही पत्थरके हैं। और वहाँ कोअी अिन्साफ नहीं मिलता। यह समझ लीजिये कि भविष्यमें जो समय आने वाला है, अुसकी यह झाँकी है।

अेक छोटा-सा अुदाहरण कपड़ेकी महँगाअीका लीजिये। अिस शहरमें तो ढेरों कपड़ा पैदा होता है। परन्तु यह तो मिठाअी बेचनेवालेके बच्चे भूखों मरे अैसी बात हुअी है! अिसका बन्दोबस्त यहाँके बजाज कर सकते हैं। अुन्हें बाहरसे कपड़ा मँगानेके लिअे वेगनोंकी ज़रूरत नहीं पड़ती। परन्तु मिलोंमें जो कपड़ा पैदा होता है, अुसमें से चालीस फीसदी सरकार ले लेती है और बाकी कपड़ेका अेक बड़ा हिस्सा विदेशोंको भेज दिया जाता है।

कपड़ेके बिना तो काम चल सकता है, पर अनाजके लिअे पेटको पट्टी नहीं बाँधी जा सकती। व्यापारियों और संघोंको मेरी सलाह है कि अुनके पास जो कुछ हो अुसे बाहर निकालें। मौसम पर पैदावार होगी तो संग्रहीत अनाजकी कौड़ी भर भी कीमत नहीं रहेगी। दुश्मन तो ढेरों अनाज जला डालते हैं!

घासलेटका तो नाम ही भूल जाअिये। हमें अब अपनी असली स्थितिमें पहुँच जाना है। तेलका दीया जलाअिये। जिस ब्रह्मदेशसे घासलेट आता था, अुसे जापानने ले लिया है। दूसरी जगहसे आता है अुसे समुद्रमें डुबा दिया जाता है। बूँदभर घासलेटके लिअे दो दो घंटे तक अिंतजार करना ठीक नहीं है।

समाधानकी बातें छोड़िये

मैंने आपको बताया कि किन संयोगोंमें कार्य-समितिने प्रस्ताव किया था। गांधीजी और अहिंसाको अलग रख कर भी कांग्रेस साथ देनेके लिअे तैयार थी। परन्तु जब क्रिप्स-प्रस्ताव आये तब गांधीजीने कह दिया कि सरकारके साथ समाधानकी आशा छोड़ दो। अुन्होंने जो यह बात कही है कि अंग्रेज़ अिस मुल्कको छोड़कर चले जायँ, अिसका अर्थ अच्छी तरह समझ लीजिये। यह तो सभी जानते हैं कि हमला होनेवाला है। अिनके प्रति अितना अधिक ज़हर अिस देशमें फैल गया है कि निन्यानबे नहीं परन्तु पौने सौ (९९।।।) फीसदी मनुष्य यह कहते हैं कि यह भूत चला जाय तो अच्छा है, फिर भले ही दूसरा आ जाय। जब जर्मनी या जापानकी जीत सुनाअी देती है, तब लोग खुश होते हैं। अिनकी जीत तो सुनी ही नहीं जाती। मगर जब जर्मनी या जापानकी जीतमें देर होती है, तब लोग निराश होते हैं और कहते हैं कि अितने दिन कैसे लग गये?

भारत छोड़ो

रूस आज लड़ रहा है। अुसकी हिम्मतकी तारीफ करनी चाहिये। अुसके लड़नेका कारण यह है कि वह जानता है कि अुसे अपने देशकी आज़ादीके लिअे लड़ना है। मगर हिन्दुस्तान किसके लिअे लड़े? हम कहाँ स्वतंत्र हैं? अिसलिअे गांधीजी कहते हैं कि भारतको छोड़ो।

यहाँ रहो तो वह भी अेक ही शर्त पर। तुम्हारी सेना भले ही यहाँ रहे, परन्तु अिस शर्त पर कि हमारी आज़ादी बिल्कुल अछूती रहे। हमारे साथ वैसी ही संधि करके रहो, जैसी अिस समय तुम्हारी अमेरिका और चीनके साथ है। जैसी मुहब्बत तुमने अभी रूसके साथ की है अुस ढंगसे तुम यहाँ रह सकोगे। जैसे वह पुराना अिंग्लैंड था, अुस तरह यहाँ नहीं रह सकते।

अब भी ये लोग कहते हैं कि हम बर्माको वापस लेंगे। अुनसे पूछो तो सही कि बर्मियोंने तुम्हारा साथ क्यों नहीं दिया? भारतवासी जानना चाहते हैं कि जब बर्मामें तुम्हें कोअी अड़चन नहीं थी, तो तुम कैसे भाग गये? क्या तुम गारंटी दे सकते हो कि बर्मा जैसी हालत यहाँ नहीं होगी? वहाँसे तो पीठ दिखाकर व बर्माका कचूमर निकलवा कर भाग आये हो!

भारत आज़ाद होगा तभी लड़ाअी जीतोगे

हिन्दुस्तान हमलेका शिकार बन गया, तो अुसकी क्या स्थिति होगी? तुम कहते हो कि हिन्दुस्तानकी रक्षा करनेकी तुम्हारी जिम्मेदारी है — धर्म है, परन्तु यह बात हमें नहीं जंचती। बर्माको बचानेकी भी तो तुम्हारी अितनी ही

जिम्मेदारी थी? तुम तो अेक ही वाक्य कहते हो कि आखिरमें जीत हमारी होगी। परन्तु वह आखिर कब आयेगा? हमें यही अन्देशा हो रहा है।

अमेरिका भी चिल्ला-चिल्लाकर कहता है कि हिन्दुस्तान आज़ाद नहीं होगा, तो यह लड़ाअी नहीं जीती जा सकेगी। अिस मुल्कको अपने पूर्वीय साम्राज्यके लिअे तुम युद्धभूमि बनाना चाहते हो। युद्धभूमि तो यह तभी बनेगा, जब हम आज़ाद होंगे और दूसरे मुल्कोंको आज़ाद करेंगे। लेकिन जबसे चर्चिल अेटलांटिक चार्टर घोषित करके अमेरिकासे लौटा और हिन्दुस्तानके बारेमें जवाब दिया, तबसे तुम्हारी नीयतका पता हमें चल गया है।

हममें से कुछ लोग यह 'जनताका युद्ध है' अैसा कहते हैं। जनताका युद्ध! परन्तु किसकी जनताका? रूस और चीन यह कह सकते है, परन्तु हिन्दुस्तान अैसा कैसे कह सकता है? यह जनताका युद्ध नहीं था, अिसीलिअे तो तुमको (साम्यवादियोंको) भी पकड़ा था। अब तक तो साम्यवादी पार्टी गैर-कानूनी थी। मगर कांग्रेसके खिलाफ लड़नेके लिअे ही अब कम्युनिस्टोंको जेलसे छोड़ दिया है और अुनकी पार्टीको कानूनी करार दे दिया है।

'टाअिम्स ऑफ अिन्डिया' साम्यवादियोंके स्वदेशाभिमानकी अब प्रशंसा करता है। अुन्हें छुड़वानेके लिअे पहले जब असेम्बलीमें प्रस्ताव आया, तब गृहमंत्री मैक्सवेलने अुनके लिअे जो शब्द कहे थे, वे तो किसी आवाराके लिअे भी काममें नहीं लाये जा सकते। अुस वक्त अिसी 'टाअिम्स' ने अुन शब्दोंका समर्थन किया था।

दूसरा आकर नहीं छुड़ायेगा

वर्धामें कार्य-समितिने अपनी बैठकमें निश्चय किया है कि हमें आक्रमणका सामना करना हो तो आज़ाद होकर ही किया जा सकता है। जापानका रेडियो रोज़ चिल्लाता है कि 'हमें हिन्दुस्तानका अेक टुकड़ा भी नहीं चाहिये, परन्तु हम अिन लोगोंको निकालनेके लिअे ही लड़ रहे है'। हमारे भी कुछ लोग अुनसे मिल गये हैं। ये लोग कहते हैं कि यह स्वदेशाभिमानकी बात है। सुभाषबाबू भी वहीं हैं। लेकिन हमें न जापानके रेडियोकी मानना है, न अिस बात पर भरोसा करना है कि मॉस्को आकर छुड़ायेगा।

आप अब जाअिये

अिसलिअे कांग्रेसने निश्चय किया कि हमें किसीकी मददकी ज़रूरत नहीं है और तुम समझकर यहाँसे चले जाओ। मगर वे नहीं समझेंगे। जबसे यह प्रस्ताव हुआ है, तबसे अुनके अखबार छाती पीटने लगे हैं और ज़मीन-आसमान अेक कर डाला है। वे कहते हैं कि देशकी रक्षा करनी है। मगर यह देश

किसका है? और तुम्हें रक्षा ही करनी थी, तो दुश्मनोंके आक्रमणके लिअे रास्ता किसने खोला? बर्माको नहीं बचा सके, तभी तो हिन्दुस्तान पर खतरा बढ़ा!

जो लोग आज़ादीके दुश्मन बनकर यहाँ पड़े हुअे हैं, वे ही पाँचवीं कतारके हैं। वे ही देशके शत्रु हैं। अमेरिकन अखबार तो धमकी भी दे रहे हैं। और ब्रिटिश मज़दूर दलका मुखपत्र 'डेली हेरल्ड' शिक्षा देता है कि भले मित्रो! तुम कुछ करोगे तो हम तुम्हारा साथ नहीं देंगे। मगर तुमने साथ कब दिया है? ये किसमें साथ देनेवाले हैं? सन् १९३०में गांधीजीको जेल भेजकर जिसने गोलमेज परिषद बुलाअी, वह मज़दूर दल ही तो था न?

जिस साम्प्रदायिक निर्णयने आज साम्प्रदायिक झगड़ा बढ़ा दिया है, अुसका देनेवाला रेमज़े मेकडोनाल्ड भी तो मज़दूर दलका ही था न? अिसलिअे प्यारे मित्रो, हम आपसे कहते हैं कि अब आप चले जाअिये।

हिन्दुस्तान मरना सीख सकेगा

अब भी हिन्दुस्तानका साथ चाहिये तो समझ जाओ। ४० करोड़की आबादीवाले हिन्दुस्तानको ८-९ करोड़की आबादीवाले जापानसे लड़ना आ जायेगा। अुसे मरना भी आ जायेगा। परन्तु आज तो अुसे मरना भी नहीं आता, क्योंकि चारों तरफसे अुसका गला घुट रहा है। अेक बार अुसे खुली हवा मिल जाय, तो वह और कुछ नहीं तो मरना तो सीख सकेगा।

मगर अभी तक अिनकी नीयत तो यही है कि यहाँ भी बर्मा जैसा हाल हो। अिसीलिअे कांग्रेसने तय किया है कि अब तो लड़ ही लेना है। कांग्रेस पर यह आरोप लगाया जाता है कि वह पीठ पीछे वार कर रही है। मगर यह पीठ पीछे वार करनेकी बात नहीं है। यह तो तुम छाती पर चढ़ बैठे हो वहाँसे गिरा देनेकी बात है। परन्तु अब भी तुम शराफतसे पेश आओ तो अुपाय करेंगे।

अब समस्त भारत अिस लड़ाअीमें फँसेगा। कुछ लोग पूछते हैं कि क्या हिन्दुस्तान लड़ाअीका जवाब देगा? जो लोग यह सवाल पूछते हैं, वे दूसरोंसे पूछनेके बजाय अपने आपसे ही पूछें। गांधीजीने तो लिख दिया है। वे कहते हैं: 'यहाँसे चले जाओ, अपने भलेके लिअे चले जाओ, हिन्दुस्तानके भलेके लिअे चले जाओ। मैं तुम्हारे मित्रकी हैसियतसे तुम्हें कहता हूँ'। वे जायँ या न जायँ, हमें अपना बचाव कर लेना है।

जापानियोंके आनेसे पहले स्वतंत्र होना है

गांधीजीने कहा है कि मैं जेल जानेवाला नहीं हूँ और न किसीको भेजनेवाला हूँ। यह लड़ाअी लम्बी नहीं होगी। अिसका जल्दीसे निबटारा करना है। जापानियोंके यहाँ आनेसे पहले हमें स्वतंत्र हो जाना है। ये लोग भाग जायँगे तो भी हर्ज नहीं। पर हम भागकर कहाँ जायँगे? ये लोग बर्मासे

भागते-भागते आ गये। अुसमें हिन्दुस्तानी कितने मारे गये? तुम्हारा रक्षाका दावा कहाँ गया? और कितने बर्मियोंने प्रस्ताव करके तुम्हें वापिस बुलाया? क्या तुम हिन्दुस्तान छोड़ना नहीं चाहते और हिन्दुस्तानियोंको साथ ले जाकर बर्मामें लड़ना है? हम देख रहे हैं कि हिन्दुस्तानमें कितनी वफादारी अुमड़ आअी है। गांधीजी भी अिस मनोवृत्तिको जानते हैं। यह गुलाम मनोवृत्ति है। स्वतंत्र देशकी भावना तो अेक ही हो सकती है कि अिन्हें निकालें और दूसरा आनेकी कोशिश करे तो अुसे न आने दें। अिसीलिअे अब तो गांधीजी लड़ाअीको तेज़ बनायेंगे। अिसकी कल्पना गांधीजीके ही पास है और वे ही अुसे पेश करेंगे। अुस समय अिसकी परीक्षा हो जायगी कि आप क्या करनेवाले है। अगर अुस समय लोग घरमें घुस जायँगे, तो न सिर्फ़ अिज्ज़त ही जायेगी, पर स्वतंत्रता भी चली जायेगी।

आज़ादीकी लड़ाअीमें मरें

जब गांधीजी ७४ वर्षकी अुम्रमें आत्म-बलिदान करनेको तैयार हो गये हैं, तब हम किस मुँहसे बातें करते हुअे बैठे रहेंगे? गांधीजी अिस स्थान पर २० वर्ष तक रहे। साबरमतीके किनारेसे आज़ादीका मंत्र सिखाया और आपने ही 'गांधीजीकी जय' बोली है। अैसा अवसर फिर कब मिलेगा? भारतकी मुक्तिका मंत्र फूँकनेवाला २०० वर्षोंमें कौन पैदा हुआ है? हमें दूसरा कौन मिलेगा? अिस समय गांधीजी मिल गये हैं, तो आप यह मौका मत चूकिये। अनेक प्रकारके दुःख आनेवाले हैं। मगर बरबाद होकर मरनेके बजाय स्वतंत्रताके युद्धमें मरना क्या बुरा है?

लोग पूछते हैं कि लड़ाअी कैसे लड़ी जाय? हरअेक स्त्री-पुरुष अपने आपको स्वतंत्र समझ कर काम करे। अैसा करते अुन्हें आना चाहिये। अिसमें हिम्मतका काम है, और अिसमें जो जोखिम है अुससे आक्रमणका जोखिम अधिक है। अभी युद्ध चल रहा है। युद्धके समय अलग जाकर बैठ जायँगे, तो जो लड़े हैं वे पृथ्वीको बाँट लेंगे। अिस समय हिन्दुस्तान युद्धके प्रवाहको बदल सकता है। हिन्दुस्तानकी मुक्तिके बिना लड़ाअीका कोअी अन्त नहीं है।

गांधीजी बताते हैं वही परिणाम है

अंग्रेज़ और मित्र राज्य कहते हैं कि अन्तमें जीत हमारी है। पिछली लड़ाअीमें भी यही कहते थे। अुसमें जीत गये तो भी क्या परिणाम हुआ? जो हारे थे अुन्होंने आज तुम्हें लोहेके चने चबवाये हैं न? ये लोग जब कहीं हारते हैं, तो कहते हैं कि दुश्मनके पास अेयर कन्डीशन्ड टैंक थे। तो तुम्हारे पास क्या अँगीठियाँ जल रही थीं? तुम जैसा चाहते हो अुसीके अनुसार तुम्हारी

जीत हो गअी तो भी क्या ? क्या नौ करोड़ जर्मनों या नौ करोड़ जापानियोंका तुम नाश कर सकोगे ? अिसका हल गांधीजीके सिवाय कोअी बता ही नहीं सकता । जो ज़हर तुमने फैलाया है अुसका परिणाम गांधीजीके सिवाय और कोअी नहीं बता सकता । तमाम जापानियोंके नाम गांधीजीने जो पत्र लिखा है, अुसे पढ़ लीजिये । गांधीजी पर यह आरोप लगाया जाता है कि वे जापानको निमंत्रण दे रहे हैं । परन्तु निमंत्रण तो तुम दे रहे हो । सब जगहसे भाग कर तुम हिन्दुस्तानमें आ गये हो और अिसका क्या भरोसा कि यहाँसे भी नहीं भागोगे ? अब भी समझ जाओ !

गांधीजीने जो लड़ाअी शुरू की है, अुसमें हरअेकको यथाशक्ति हाथ बँटाना चाहिये । समय बीत जायगा और बात रह जायगी । जिन लोगोंको सरकारकी कार्य-कारिणीमें बैठाया गया है, क्या अुन्हें पता है कि ये स्थान अुन्हें कांग्रेसकी कुरबानीके कारण ही मिले हैं ? हिन्दुस्तानी सिपाहियोंकी बहादुरीके गुणगान होते हैं । परन्तु वे अिसका हिसाब क्यों नहीं लगाते कि अगर गुलाम हिन्दुस्तानके आदमी अितनी बहादुरीसे लड़ते हैं, तो आज़ाद हिन्दुस्तानके आदमी कितनी बहादुरीसे लड़ेंगे ?

कार्यक्रम

अैसा समय अब फिर नहीं आयेगा । आप मनमें भय न रखें । यह प्रसंग फिरसे नहीं आयेगा । अुन्हें यह कहनेको न मिले कि गांधीजी अकेले थे । जब वे ७४ वर्षकी अुम्रमें हिन्दुस्तानकी लड़ाअी लड़नेके लिअे, अुसका भार अुठानेके लिअे निकल पड़े हैं, तब हमें समयका विचार कर लेना चाहिये । आपसे माँग की जाय या न की जाय, समय आये या न आये, परन्तु आपके लिअे कुछ पूछनेकी बात नहीं रह जाती । अब क्या कार्यक्रम है, यह पूछ कर बैठे मत रहिये । १९१९ के रौलट अेक्टके विरोधसे लेकर आज तक जितने भी कार्यक्रम रहे हैं, अुन सबका समावेश अिसमें हो जायेगा । 'टैक्स मत चुकाओ' आन्दोलन, क़ानून भंग और अिसी तरह दूसरी लड़ाअियाँ, जो सीधे रूपमें सरकारी शासनके बन्धन तोड़नेवाली हैं, अुन्हें कांग्रेस अपना लेगी । रेलवेवाले रेलें बन्द करके, तारवाले तार विभाग बन्द करके, डाकवाले डाकका काम छोड़ कर, सरकारी नौकर नौकरियाँ छोड़ कर और स्कूल-कॉलेज बन्द करके सरकारके तमाम यंत्रोंको स्थगित कर दें । यह लड़ाअी अिस किस्मकी होगी । अिसमें आप सब भाअी साथ दीजिये । अिस लड़ाअीमें आपका हार्दिक सहयोग होगा, तो यह लड़ाअी थोड़े ही दिनमें खतम हो जायगी और अंग्रेज़ोंको यहाँसे चला जाना पड़ेगा । काम करनेवालोंको सरकार पकड़ ले, तो भी हरअेक हिन्दुस्तानी अपने आपको कांग्रेसी समझे और अुसी तरह अपना फ़र्ज़ अदा करे, और

पुकार होते ही लड़नेको तैयार हो जाय, तो स्वतंत्रता दरवाज़ा खटखटाती हुआी आकर खड़ी हो जायगी।

वे कहते हैं कि हम किसे सौंपें! आपस-आपसमें कलह है। पर ब्रह्मदेशमें साम्प्रदायिक झगड़े कहाँ थे? और जब वे पिद्दी (जापानी) वहाँ आये, तब तुम यह पूछनेके लिअे ठहरे थे कि किसे सौंपें? किसे क्या सौंपें? मुस्लिम लीगको सौंप दो, रास्ते चलनेवाले काले चोरको सौंप दो, परन्तु हिंदुस्तानको छोड़ दो।

१२९

पत्रकार परिषद् में

[ता० २८-७-१९४२ को अहमदाबादमें पत्रकारोंको दिये गये जवाब।]

लड़ाअीकी मर्यादा नहीं

स० — अिस बारकी लड़ाअी किस तरहकी होगी?

ज० — पहले जो लड़ाअियाँ हुअीं, अुनके अुद्देश्य मर्यादित थे। अिस बारकी लड़ाअीकी कोअी मर्यादा नहीं है। अंग्रेजोंके लिअे जितना द्वेषभाव लोगोंके मनमें अिस बार है, अुतना कभी नहीं था। अिस समय मुल्ककी जो परिस्थिति है, वह विश्वयुद्धके कारण पैदा हुअी है। लोगोंको जो दुःख सहन करना पड़ा है और अभी सहन करना होगा, अुस सबको देखते हुअे यह माना जा सकता है कि अिस लड़ाअीमें लोग पूरी तरह साथ देंगे।

स० — क्या आप मानते हैं कि लोगोंमें दुःख सहन करनेकी शक्ति बढ़ी है?

ज० — लोगोंमें दुःख सहन करनेकी शक्ति तो मौजूद ही है। अिसलिअे जब बहुत दुःख पड़ता है, तब लोग अंतिम प्रयत्न करने और कुछ भी बरदाश्त करनेको तैयार हो जाते हैं।

गिरफ्तारीके बाद क्या?

स० — मान लीजिये सभी नेताओंको अेक साथ गिरफ्तार कर लिया जाय, तो क्या होगा?

ज० — नेताओंके गिरफ्तार हो जानेके बाद लोगोंमें से नेता निकलेंगे। समय और वस्तुस्थिति नेताओंको पैदा करती है। अिग्लैंडमें लड़ाअी शुरू होनेसे पहले जो नेता अिग्लैंडका नेतृत्व कर रहे थे, वे लड़ाअी शुरू होते ही अलग हो गये हैं और नये आ गये हैं। स्वतंत्रताकी लड़ाअियाँ किसी भी मुल्कमें, किसी भी समय नेताओंके बिना रुकी नहीं हैं। हिन्दुस्तानमें भी नहीं रुकेगी।

सभी कार्यक्रम शामिल हैं

स० — दंगेके समय जो लोग सामना नहीं कर सके, वे लड़ाअीमें कर सकेंगे?

ज० — दंगेके समयमें और अिसमें फर्क़ है। दंगेमें लोग थोड़ी देरके लिअे भाग गये हों, तो भी सारे देशके प्रश्नमें अैसा ही होगा, यह माननेके लिअे कोअी कारण नहीं है। और यह माननेका भी कारण नहीं है कि लोग फिर वही भूल करेंगे। मैं तो यह मानता हूँ कि वे लोग भूलोंसे काफ़ी सबक सीखे हैं। दंगा करनेवालोंको भी अच्छा पाठ मिला है। क्योंकि अुससे अुन्हें कुछ लाभ तो हुआ ही नहीं। स्वतंत्रताकी आखिरी लड़ाअीमें अंतिम बलिदान देनेका जो समय होगा, अुसके साथ अिन संयोगोंकी तुलना नहीं की जा सकती।

स० — सिंध जैसी परिस्थिति हो जाय, हूरोंका आतंक और अराजकता यहाँ भी फैल जाय तो?

ज० — हूरों जैसी कट्टर अशिक्षित जातियोंसे हिन्दुस्तान भरा हुआ नहीं है। हिन्दुस्तानमें तीस वर्षसे अहिंसाका सतत अुपदेश और तालीम दी गअी है। अिसलिअे सिंध जैसी अराजकता फैलनेका कोअी डर नहीं है।

स० — भावी लड़ाअीसे देशव्यापी हड़तालें भी हो सकती हैं?

ज० — लड़ाअीसे देशव्यापी हड़तालें होनेकी पूरी सम्भावना है, और वे होनी ही चाहियें। १९१९ से आज तक जितने कार्यक्रम हुअे हैं, वे सब अिस बार शामिल हैं। जब अंग्रेज़ हिन्दुस्तानसे चले जायँगे तभी वे बन्द होंगे।

स० — महात्माजी अंग्रेज़ोंसे कह रहे हैं कि तुम यहाँसे चले जाओ। क्या आपको यह व्यावहारिक लगता है?

ज० — मुझे यह व्यावहारिक लगता है। किसी मुल्कमें विदेशी रह ही नहीं सकते; और अिससे ज्यादा व्यावहारिक कदम और क्या हो सकता है कि अुनसे चले जानेको कहा जाय? जब किसी भी प्रकारकी स्वतन्त्रता नहीं है, और जब हिन्दुस्तान पर आफ़तें आ गअी हैं, अैसे समयमें हिन्दुस्तानके लिअे अपना बचाव कर सकनेकी शक्ति अंग्रेज़ोंके हटनेसे ही आ सकती है।

स० — परन्तु कहने मात्रसे ही क्या अंग्रेज़ हट जायँगे?

ज० — कांग्रेसमें अैसा कोअी मूर्ख नहीं है, जो यह मानता हो कि अैसा कहनेसे ही सरकार हट जायगी। अिसीलिअे तो यह जबरदस्त आंदोलन शुरू करनेकी बात की गअी है। लोग लड़ाअीमें पूरी तरह साथ देंगे, तो पता लगेगा कि वह रहेगी या नहीं।

क्रिप्स-योजना ही जिम्मेदार है

स० — लड़ाअीके बाद हिन्दुस्तानको पूर्ण स्वतन्त्रता देनेकी बात कह रहे हैं, तो क्या प्रतीक्षा करना ठीक नहीं है?

ज० — युद्धके बाद मिलनेवाली वस्तुके बारेमें जो अन्तिम प्रस्ताव आया है, वह क्रिप्स-प्रस्ताव है। अुसके जैसी अप्रामाणिक और धोखेबाज योजना आज तक दूसरी कोअी नहीं आअी। अिस योजनामें लड़ाअीके बाद ब्रिटिश सत्ताके हिन्दुस्तानमें कायम रहनेकी प्रपंचपूर्ण सुविधा रखी गअी है। कांग्रेसके अिस निर्णयके लिअे यह योजना ही जिम्मेदार है। अगर हिन्दुस्तान पर आक्रमणका भय तुरन्त पैदा न होता, तो अभी हम और ठहरते। मगर हिन्दुस्तान पर जो खतरा मँडरा रहा है, अुसे देखते हुअे अुसका सामना करनेके लिअे हिन्दुस्तानके लोगोंको पूरी छूट और पूरी स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये। अंग्रेज हिन्दुस्तानको बचानेके लिअे नहीं, परन्तु अपनी सत्ताको स्थायी बनानेके लिअे लड़ रहे हैं। अगर हिन्दुस्तानको बचानेके लिअे लड़ते हों, तो कांग्रेसकी माँग मंजूर करनेमें कोअी दिक्कत नहीं होनी चाहिये।

स० — अमेरिका अेटलांटिक घोषणामें हिन्दुस्तानको शामिल कर ले, तो क्या यह गुत्थी सुलझ जायेगी?

ज० — अमेरिका हिन्दुस्तानको अिंग्लैंडके चश्मेसे ही देखता है। अगर अुन लोगोंमें अप्रामाणिकता नहीं होती, तो जिस समय चर्चिलने खुल्लम खुल्ला अेलान किया कि यह घोषणा हिन्दुस्तान पर लागू नहीं होती, तब अमेरिकासे अुसके खिलाफ चर्चिलके विरोधमें जिम्मेदार आवाज अुठती। अैसा माननेका कोअी कारण नहीं है कि अब अिंग्लैंडकी अिच्छाके विरुद्ध अमेरिकासे अैसी आवाज़ अुठेगी। अतः अिस प्रश्न पर विचार करना बेकार है।

समझौतेकी गुंजाअिश नहीं

स० — क्या कांग्रेसके साथ समझौतेकी बातचीत चल रही है?

ज० — भविष्यमें स्वतन्त्रताकी आशासे कांग्रेस किसी किस्मका समझौता नहीं कर सकती। अुसे तो हिन्दुस्तानके लोगोंको विदेशी आक्रमणके खिलाफ बचाव करनेके लिअे तैयार करना है। वह भविष्यकी आशाअें दिलानेसे नहीं होगा। अभी तुरन्त हिन्दुस्तानको स्वतन्त्रता मिल जाय, तो ही वह अपनी तैयारी कर सकता है। स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली जाय और हिन्दुस्तानको आज़ाद कर दिया जाय, तो हिन्दुस्तान मित्र राज्योंके साथ संधि करके कंधेसे कंधा मिलाकर जापान और जर्मनीका मुक़ाबला करनेको तैयार हो जाय। मगर हिन्दुस्तानकी स्वतंत्रताके प्रश्न पर किसी प्रकारके समझौतेकी गुंजाअिश नहीं है।

स० — सर तेज बहादुरने गोलमेज़ परिषद बुलानेका जो सुझाव दिया है, अुसके बारेमें आपका क्या खयाल है?

ज० — अैसी गोलमेज परिषदोंसे अैसे प्रश्नोंका निर्णय होता ही नहीं। यह बात स्पष्ट है कि सरकार विरोधी पक्ष खड़े करके अेक दूसरेको लड़ा देनेकी

नीतिसे ही अब तक अपनी सत्ता कायम रख सकी है और आअिंदा भी अिसी तरह कायम रखना चाहती है। अगर सरकार गोलमेज परिषद बुलाये, तो पहले जो गोलमेज परिषदें हुअी हैं, अुनसे भिन्न परिणाम नहीं आयेगा।

स० — आप कहते हैं कि हरअेक आदमी स्वतंत्र रूपमें काम करे। तो वह किस प्रकारसे?

ज० — गुलाम आदमीको पता नहीं चलता कि स्वतंत्र रूपमें कैसे काम किया जाता है। गुलामीका भान हो जाय, तो वह सत्तासे अिनकार कर देगा। हिन्दुस्तानके लोग अैसा करें, तो विदेशी हुकूमतका अंत तुरंत ही हो जाय।

स० — स्वतंत्र हिन्दुस्तान हिंसासे लड़ेगा या अहिंसासे?

ज० — स्वतंत्र हिन्दुस्तान अुसे जो ढंग अनुकूल होगा अुसीसे लड़ेगा। हिन्दुस्तानका बड़ा भाग सेना तैयार करना चाहेगा तो वह कर सकेगा। हिंसासे भी स्वतंत्रता लेनेका हरअेकको अधिकार है। अहिंसावाले अहिंसा द्वारा लड़ेंगे। अलबत्ता, अुनकी सहानुभूति स्वतंत्र हिन्दुस्तानकी सेनाके साथ रहेगी।

स० — दोनों ही साथ-साथ लड़ेंगे तो गड़बड़ नहीं होगी?

ज० — नहीं।

स० — मुस्लिम लीगके सहयोगके बिना लड़ाअी चल सकेगी?

ज० — अिस लड़ाअीमें मुस्लिम लीगका सहयोग होगा या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। मगर यह कहना ठीक नहीं कि मुसलमानोंका सहयोग नहीं है। क्योंकि कांग्रेसमें बहुतसे मुसलमान हैं। अेक ही अुदाहरण देखना हो तो खान अब्दुल गफ्फारखानके बयानसे आप देख सकेंगे कि सरहदी सूबेमें सामूहिक आन्दोलन होगा। और वहाँ तो सारा प्रान्त अधिकतर मुसलमानोंसे ही भरा है।

स० — अितनी बड़ी और महान लड़ाअीके लिअे कांग्रेसने कोअी तैयारियाँ तो नहीं कीं, फिर वह कैसे लड़ सकेगी?

ज० — तीस वर्षसे तो तैयारियाँ कर रहे हैं। अब देशको और क्या तैयारियाँ करनी हैं?

स० — लड़ाअी शुरू हो जाने पर स्थानीय संस्थाओं जैसे म्युनिसिपेलिटी और लोकल बोर्ड वगैराकी क्या स्थिति होगी?

ज० — लड़ाअीकी घोषणा हो जानेके बाद स्थानीय संस्थाओंको लेकर नहीं बैठा जा सकता। जो लोग लड़ाअीमें शरीक नहीं होंगे, वे अिन संस्थाओंको चलायेंगे; और वे नहीं चलेंगी तो बन्द हो जायँगी। अिसका अभी विचार ही क्यों किया जाय?

स० — हिन्दुस्तान विदेशी हमले और सरकार दोनोंके खिलाफ़ अेक साथ कैसे लड़ सकेगा?

ज० — दोनोंके यानी हिन्दुस्तानके लोगोंके साथ और आक्रमण करनेवालेके साथ तो सरकारको लड़ना है, और वह कहती है कि हम दोनोंके साथ लड़ेंगे। अगर सरकारको दोनोंके साथ लड़नेमें फायदा हो तो वह लड़े। मगर सरकारको विदेशी आक्रमणके विरुद्ध लोगोंका साथ चाहिये, तो वह हिन्दुस्तानको स्वतंत्रता दे दे।

स० — अगर हिन्दुस्तानको स्वतंत्र कर दिया जाय, तो स्वतंत्र हिन्दुस्तान लड़ाअीमें सरकारको क्या मदद दे सकता है?

ज० — अगर हिन्दुस्तान स्वतंत्र हो, तो बड़े-बड़े कारखानोंमें लड़ाअीका सामान तैयार करके लड़ाअीमें साथ दे सकता है।

स० — हिन्दुस्तानके पास हथियार तो नहीं हैं। अुसे कौन देगा?

ज० — जैसे चीनको चीनकी सरकार हथियार मुहैया करती है, वैसे हिन्दुस्तानको हिन्दुस्तानकी सरकार करेगी। अगर ये लोग लोकतंत्रके लिअे लड़ते हों, तो हिन्दुस्तानमें लोकतंत्र कायम कर दें, फिर अुन्हें हमारा सहयोग मिल जायगा। अगर हिन्दुस्तान स्वतंत्र हो तो जैसे दूसरे देशोंमें मित्र राज्य सेनाअें रखते हैं, वैसे हिन्दुस्तानके साथ संधि करके यहाँ भी सेना रख सकेंगे। जो सेना यहाँ होगी, वह मालिक नहीं हो सकती। वह सेना देशमें स्वतंत्र रूपमें रहती हो तो झगड़े हों, मगर मित्रोंकी हैसियतसे रहे तो झगड़े न हों। यों तो अिंग्लैण्डमें अमेरिकाकी सेना है, जो मित्रके रूपमें आअी है। अगर वह स्वतंत्र रूपमें आअी होती, तो झगड़ा होता।

स० — सर स्टेफर्डके ताज़ा बयानमें हमारी लड़ाअीके बारेमें जो छिपी हुअी धमकी दी है, अुसके लिअे आपका क्या खयाल है?

ज० — अैसी धमकियाँ तो हरअेक लड़ाअीके समय देते हैं, और फिर भी लड़ाअी तो चलती ही रहती है!

स० — अिस लड़ाअीमें देशी राज्योंकी प्रजा क्या करे, क्योंकि राजाओंकी तो सरकारके साथ संधि है?

ज० — देशी राज्योंकी प्रजामें ताकत होगी तो वह भी लड़ाअी करेगी। कांग्रेसने अुसे मनाही नहीं की है। और राजा कहाँ स्वतंत्र हैं? अुन्हें भी स्वतंत्रता चाहिये। तो फिर अुनका डर क्यों रखा जाय? स्वतंत्र हिन्दुस्तानमें राजाओंका स्थान अुस समय पर देखा जायगा। जैसे दूसरे लोग लड़ेंगे वैसे रियासती प्रजाको भी लड़ना है।

स० — लड़ाअीके दिनोंमें गृहयुद्ध और अराजकता पैदा हो जाय, तो भी लड़ाअी जारी रहेगी?

ज० — लड़ाअीके दरमियान गृहयुद्ध और अराजकता भी पैदा हो सकती है। दुर्भाग्यसे अैसा हुआ, तो भी लड़ाअी तो जारी ही रहेगी। गुलामी और अराजकता दोनोंमें से अराजकताको चुनना अच्छा है। अराजकताके बाद भी स्वतंत्र हिन्दुस्तान खड़ा हो जायगा। मगर हमेशाके लिअे गुलामीको स्वीकार करनेवाला हिन्दुस्तान कभी खड़ा नहीं होगा।

१३०

कॉलेजके विद्यार्थियोंसे

[ता० २८–७–१९४२ को अहमदाबादके अेम. अेल. डी. आर्ट्स कॉलेज और अेच. अेल. कॉमर्स कॉलेजके विद्यार्थियोंके सामने दिये गये भाषणसे।]

* * *

आजकल दुनियामें चार हठ मशहूर हैं: १. राजहठ, २. बालहठ, ३. स्त्रीहठ, और ४. अंग्रेजोंकी पीछेहठ; और अिनमें पाँचवीं तुम्हारी खड़े रहनेकी हठ शामिल हो जाय, तो वह नअी चीज़ होगी। (सभी तुरंत नीचे बैठ गये।)

* * *

सरदार तो सबके लिअे देशमें अेक ही है। अैसी हालतमें अुन्हींका हुक्म मानेंगे। कदाचित वे हमारे पास न हों। वे कहीं भी होंगे, तो भी अुनका काम होगा। सबको पकड़ लेंगे तो क्या होगा? अिसका जवाब यह है कि तुममें से हरअेकको सरदार बनना है। अिस सरदारीके लिअे सैनिक शिक्षा लेनेकी या डॉक्टरी जाँच करानेकी ज़रूरत नहीं है। अिसमें तो हृदयका बल चाहिये। जिसकी शारीरिक निर्बलता अधिक हो, वह भी अिसमें अच्छा काम कर सकता है। गांधीजीके शरीरकी तुलना करो, तो तुममें से कोअी भी अुनसे अधिक कमज़ोर नहीं होगा। मगर अुनके अेक स्वरका असर तमाम विश्वमें होता है। अुनके स्वरसे ही तो हिन्दुस्तान दुनियामें मशहूर हो गया है। अुनका स्वर है कि 'जाओ भाअी, यहाँसे अपने मुल्कमें चले जाओ।'

* * *

क्रिप्स मिशन तो अेक खोटा सिक्का था। अुसे बनानेवालोंकी नीयत खराब थी। अुसमें अप्रामाणिकता और धोखेबाज़ी थी। जाते-जाते क्रिप्स खुद ही मुकर गये और दोष कांग्रेसके मत्थे मढ़ गये। अुनके जानेके बाद कांग्रेसने निश्चय किया और यह कदम अुठाया है। अुस मिशनकी योजना सारे अमेरिकाका लोकमत बदलनेके लिअे ही बनाअी गअी थी।

अिस लड़ाअीका अन्त हिन्दुस्तानके आज़ाद होने पर ही होगा। जिन्होंने हिन्दुस्तानमें जन्म लिया है, अुन सबका अिस लड़ाअीमें शरीक होनेका धर्म है। अिसका क्षेत्र अमर्यादित है। अगर अुसका वांछित अुत्तर मिल गया, तो अितने अधिक लोगोंके लिअे जेल है ही नहीं। हम शरीक होंगे तो सब अिसमें कूद पड़ेंगे, कोअी बाकी नहीं रहेगा। विदेशी आक्रमण हिन्दुस्तानका द्वार खटखटा रहा है। अुसे रोकनेके लिअे स्वतंत्र श्वास लेना सीखना चाहिये, मरते आना चाहिये।

*　　　*　　　*

दुश्मनका आक्रमण बंगाल, आसाम और अुड़ीसा वगैरा प्रांतोंके नज़दीक आ रहा है, अिसलिअे वहाँ थोड़े ही समयमें सैनिक आवश्यकताके लिअे गाँवके गाँव खाली करा दिये गये हैं और लाखों लोगोंको सब कुछ छोड़कर चला जाना पड़ा है। अिसकी कल्पना तुम्हें यहाँ बैठे हुअे कैसे हो सकती है! अगर अैसे समय कोअी कुछ कहे, तो अुसको हिन्दुस्तानकी रक्षाके लिअे जो भारत रक्षा कानून है, अुसके मातहत पकड़ लिया जाता है। हाल ही में नोआखालीमें से प्रसिद्ध खादी सेवक श्री सतीश बाबूको पकड़ कर भारत रक्षा कानूनके मातहत दो सालकी सख्त सज़ा दे दी गअी। हिन्दुस्तानकी रक्षा करनेवाला यह कानून लगा दिया, अतः अब जापानी वहाँ नहीं आयेंगे!

*　　　*　　　*

आजकल जो विश्वयुद्ध हो रहा है, अुसका अंत हिन्दुस्तानके स्वतंत्र होनेपर ही आयेगा। अिस विश्वयुद्धकी जड़ तो तुम जानते ही हो। कहते हैं कि नाज़ी दुष्ट हैं। लेकिन अिन दुष्टोंका बाप कौन है? हिटलर पिछली लड़ाअीमें अेक सिपाही था। जीतने पर अंग्रेज़ोंने वरसालेकी संधि की और जर्मनोंसे नाक रगड़वायी। अिस वरसालेकी संधिको तोड़नेकी हिटलर और अुसके साथियोंने अेक शराबखानेमें बैठकर सौगन्ध खाअी है और अुसमें से यह नाज़ीवाद पैदा हुआ है। ये लोग अुसीकी संतान हैं, अतः अुससे कम तो हरगिज़ नहीं होंगे। अिस युद्धका अंत लानेके लिअे अेशिया और अफ्रीकाकी जनताको अेक होकर मुकाबला करना पड़ेगा। आज नहीं तो बादमें, रंग भेदकी लड़ाअी पैदा होगी ही। हिंद और चीन दोनोंकी महान प्रजा कंधेसे कंधा मिलाये, तो सारी दुनिया अुसके सामने झख मारेगी। अेशिया और अफ्रीका विदेशी सत्ताके पंजेसे छूट जायँ, तो ही अिस युद्धका अंत आयेगा।

*　　　*　　　*

आजकल अधिकसे अधिक बुद्धिशाली वैज्ञानिक यह खोज कर रहे हैं कि थोड़े समयमें अधिक संहार कैसे हो सकता है। अिस स्पर्धाका खातमा तभी

होगा, जब नाश करनेको कोओी चीज़ रह ही नहीं जायगी। दूसरी तरहसे अिसका अन्त अहिंसा द्वारा हो सकता है। अहिंसाके सिवाय दूसरे किसी ढंगसे जीना नहीं हो सकता। नहीं तो जैसे जंगलमें शेर-भेड़िये जानवरोंको चीर कर खाते हैं, वैसे ही मनुष्य भी करने लगेंगे और सृष्टिका अन्त हो जायगा। अैसे समय संभव है कि हिन्दुस्तान दुनियाको दूसरा ही मार्ग दिखा दे। वही मार्ग हमें अख्तियार करना है और अुसमें आप सबको साथ देना है।

१३१

राष्ट्रीय विद्यार्थी मण्डलसे

[ता० २९–७–१९४२ को अहमदाबादमें राष्ट्रीय विद्यार्थी मडलके सामने दिये गये भाषणसे।]

जब तक विदेशी हुकूमत है

हमारे यहाँ साम्प्रदायिक झगड़े हैं। अुनका अितिहास जानना हो तो 'कॉम्यूनल ट्रॅंगल' (साम्प्रदायिक त्रिकोण)* नामकी पुस्तक पढ़ लो। अुससे पता चलेगा कि विदेशी हुकूमत किस तरह साम्प्रदायिक झगड़े कराती रही है और करा रही है। वर्धामें जो प्रस्ताव किया गया है, अुसकी जड़में यह हकीकत है कि जब तक हिन्दुस्तानमें विदेशी हुकूमत है, तब तक ये झगड़े नहीं मिटेंगे। सत्ताधारी कहते हैं कि हमें हिन्दुस्तान छोड़ना है, मगर पहले तुम सब अेक हो जाओ। मैं कहता हूँ कि अैसा कहना तुम्हारे मुँह से शोभा नहीं देता। दो भाअी लड़ते हों, तब अगर तीसरा बाहरवाला आकर यह कहे कि तुम दोनों लड़कर अेक न हो जाओ, तब तक मैं यहाँ तुम्हारे घरमें बैठा हूँ, तो यह कैसे हो सकता है? अुसे थप्पड़ मारकर निकाल देना पड़ता है।

मुसलमान समझ लें कि यह लड़ाअी कांग्रेस या हिन्दुओंके लिअे सत्ता लेनेकी नहीं, परन्तु हिन्दुस्तानकी गुलामी नष्ट करनेकी है। अुसके बाद हम अिकट्ठे बैठकर समझ लेंगे। अैसा होगा तभी गुलामी मिटेगी। मगर यह चाहें कि पहले दोनोंके बीच समझौता हो जाय, तो वह हरगिज़ नहीं होगा। विदेशीकी बन्दूकसे समझौता नहीं होगा। वे चौकीदार जैसे अिसीलिअे तो बैठे हैं कि समझौता न हो।

* लेo अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता, मूल्य रु० १)

वे जितने झगड़े कराना चाहें करा सकते हैं। वे अेक जातिमें भी दो भाग करा सकते हैं। हिन्दुओंमें वे यह कहकर कि तुम हरिजन हो, सवर्णों और हरिजनोंके दो भाग करा सकते हैं।

आश्चर्यकी बात तो यह है कि जब अुन्होंने साम्राज्यका अधिकांश खो दिया है और हिन्दुस्तानको गँवा बैठनेकी नौबत आ गअी है, तब भी दूर बैठे बैठे वे अितनी अकड़ रखते हैं। यह कैसे चल सकता है? आज अगर सब धर्मोवाले समझ जायँ और अेक हो जायँ, तो वे कल कोअी और बहाना ढूँढ़ लेंगे।

विद्यार्थियोंमें झगड़े नहीं हो सकते

विद्यार्थियोंमें झगड़े नहीं होने चाहियें। राष्ट्रीय विद्यार्थी मंडल नाम तो अुत्तम है। राष्ट्रकी सेवा करना, राष्ट्र निर्माण करना और भारतके अुद्धारके लिअे अपना पाथेय तैयार करना अुसका ध्येय है। तुम अेक दूसरेके अनुभवसे सीखने और जितनी शिक्षा ली जा सकती हो, वह अिस समय ले लेनेके अुद्देश्यसे यह मण्डल स्थापित कर रहे हो, अिसके लिअे तुम्हें बधाअी है। अीश्वरसे यही प्रार्थना है कि अिस मंडलकी स्थापनासे विद्यार्थी वर्गके झगड़े मिट जायँ और सब अेक हो जायँ। प्रगतिशील संस्थाओंमें विचारभेद न हो, तो अुन संस्थाओंकी प्रगति नहीं होती। अलग-अलग खोपड़ियोंमें अलग-अलग मति होती है, अिसलिअे विचारभेद तो रहेगा ही। मगर सबके अिकट्ठे होकर अेक तरीका तय कर लेनेमें संस्थाकी समझदारी है। मेरी आकांक्षा है कि सब अिस तरह काम करें। मगर कोअी संस्थाको तोड़नेके लिअे आये, तो अुसके लिअे संस्थामें जगह नहीं होनी चाहिये। वैसे, किसी भी प्रकारके भेदभावके बिना सबके लिअे स्थान होना चाहिये।

अपूर्व युद्ध

‘चले जाओ’ का प्रस्ताव पास हो जानेके बाद हिन्दुस्तान संसार भरमें चर्चाका विषय बन गया है। आजकल विलायत और अमेरिकाके अखबार कालम भर-भर कर गुस्सा निकाल रहे हैं। हज़ारों रुपये देने और बहुत कोशिश करने पर भी अुनके अखबारोंमें जितनी जगह हिन्दुस्ताको नहीं मिल सकती, अुतनी अिस समय मिल रही है। फिर भले ही अुसमें वे गालियाँ ही देते हों।

अिस समय कांग्रेसने यह प्रस्ताव करके अुनके लोकतंत्रवादको कसौटी पर चढ़ा दिया है। हम सबकी भी अिससे परीक्षा हो जायगी कि सचमुच हिन्दुस्तानको आज़ादीकी चाह है या नहीं।

अगर अिस परीक्षामें पास होना हो, तो गांधीजी कहते हैं कि अिस लड़ाअीको छोटी और तेज़ बनाना चाहिये।

देशमें जो अिन्कलाब आनेवाला है, वह अितना अधिक प्रचण्ड और तेज़ होगा कि अुसमें तमाम स्त्री और पुरुष, छोटे और बड़े सक्रिय भाग लेंगे। अगर अुन्होंने भाग लिया तो आजकल विलायती और अमरीकी अखबार जो आलोचनाअें कर रहे हैं, अुनको जवाब मिल जायगा। अगर कांग्रेसके पीछे थोड़ेसे लोग ही हों, तो अितनी अधिक घबराहट, अितना ज्यादा रोष और अितनी सब तड़प क्यों है? अगर थोड़ेसे ही आदमी गांधीजीकी अिस लड़ाअीके पक्षमे हों, तो अुन थोड़ेसे लोगोंके लिअे जेलोंमें जगह है। मगर अुन्हें पता लग गया है कि यह लड़ाअी अैसी होगी, जैसी हिन्दुस्तानमें आज तक कभी नहीं हुअी थी।

पहलेके अनुभव

आजकल कुछ लोग कह रहे हैं कि अिस समय मित्र राज्योंको बिना शर्त मदद दो। बादमें चीन, अमेरिका वगैरा सारे राष्ट्र मिल कर हमें स्वतंत्रता दिला देंगे। बीस साल पहले जब बड़ा विश्वयुद्ध हुआ था, तब अमेरिकाके अुस समयके प्रेसिडेण्ट विल्सनने सलाह दी थी कि जर्मन लोग कंस हैं। अिन लोगोंको हरानेके बाद आत्म-निर्णयका सिद्धांत सभी राष्ट्रों पर लागू किया जायगा। अिस बातसे हिन्दुस्तानकी छाती गज भर फूल गअी और बिना शर्तके अुसने लड़ाअीमें भरसक सहायता दी। अुस समय बड़ी धारासभामें अेक अरब रुपयेकी मंजूरी लड़ाअीके लिअे देनेका प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे अेक ही बारमें पास कर दिया गया। अुस समय अितनी अधिक भावना अुमड़ आअी थी। अंग्रेज़ोंने भी कहा था कि लड़ाअी खतम होने पर हिन्दुस्तानको स्वतंत्र कर देंगे।

लड़ाअी खतम हो गअी। प्रेसिडेण्ट विल्सन अपने घर गये। अिन लोगोंने अुन्हें कह दिया कि तुम भावुक आदमी हो, आत्म-निर्णयका सिद्धांत असंभव है। फिर तो हिन्दुस्तानके लिअे रौलट अेक्ट — काला कानून बनाया। अिस समय मदद करो, बादमें स्वतंत्रता देंगे, अैसा कहनेवालोंको यही मिलेगा।

अुस समय लड़ाअीमें सरकारकी मदद करनेका परिणाम जलियाँवाला बाग हुआ। अमृतसरकी अेक गलीमें लेट कर पेटके बल चलनेका हुक्म मिला।

अिसलिअे हम कहते हैं कि दुबारा हम अैसी धोखेबाजीमें नहीं आयेंगे। सब बातोंका विचार करके, खूब नाप-तौल कर यह प्रस्ताव किया गया है। अब हम अिंग्लैण्ड या अमेरिकाकी माननेवाले नहीं हैं।

क्रिप्स आये तब कहना था

अिस समय जो वािअसरॉयकी कौंसिलमें बैठे हैं, वे कहते हैं कि क्रिप्स-प्रस्ताव मान लेने चाहिये थे। श्री अणे कहते हैं कि मैं अपनी जगह खाली

कर दूँ। मगर अिस कपड़े बिगाड़नेवाली जगह पर कौन बैठे? क्रिप्स आये तब कहना था न? श्री अणेके कहने पर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ, क्योंकि वे तो अखण्ड हिन्दुस्तानवाले हैं। अब पूनामें जाकर सलाह देते हैं कि क्रिप्स-प्रस्ताव मान लेने चाहिये थे। तो क्या अुन्हें पाकिस्तान बनाना है? दोहरी बातें नहीं चल सकतीं। फिरोजखाँ नून कहते हैं कि कांग्रेस हिन्दू राज्य बनाना चाहती है। अुनका यह कहना समझमें आ सकता है। परन्तु कांग्रेस तो अंग्रेजोंसे यह कहती है कि सारा हिन्दुस्तान मुसलमानोंको दे दो, परन्तु आप यहाँसे चले जाअिये। वहीं अुनकी चोरी पकड़ी जाती है। क्योंकि कांग्रेसकी अिस माँगसे मुसलमानोंके लिअे कुछ भी कहनेको नहीं रह जाता। हाँ, वे यह कहते हों कि आप यहाँ रहिये और हमारा सब काम व्यवस्थित कर जाअिये, तो दूसरी बात है। पाकिस्तानकी रक्षाके लिअे अुन्हें रखना हो तो पता नहीं। अगर श्री अणेने क्रिप्स-प्रस्ताव मान लेनेकी बात कही है, तो अुन्हें स्पष्टीकरण कर देना चाहिये कि क्या अुन्हें हिन्दुस्तानके टुकड़े करनेकी बात मंजूर है? अुन्हें साफ-साफ बात कहनी चाहिये।

जो यह कहते हैं कि विद्यार्थी कांग्रेसके साथ नहीं हैं, अुन्हें तुमको जवाब देना है। तुम सब अिसके लिअे प्रस्ताव तो करोगे ही, परन्तु देखना यह है कि तुम सक्रिय सहयोग देते हो या नहीं। वर्धाका प्रस्ताव महासमितिमें पास हो जानेके बाद गांधीजीका जो हुक्म हो, अुसका तुम सबको जवाब देना है। अुस समय अगर तुम बगलें झाँकने लगे, तो हिन्दुस्तानका और तुम्हारे भाग्यका निपटारा हो जायगा। अगर विचार करने बैठे, तो जापानी भाषा और पाठमाला सीखनेकी नौबत आ जायगी। ये लोग रक्षा करनेकी बात कहते हैं। यही बात अिन्होंने सिंगापुर, मलाया और बर्मामें भी कही थी। अिन्होंने जो कुछ किया है, अुसी परसे तो कांग्रेस कहती है कि तुमसे हमारी रक्षा नहीं होगी। जिनमें अकल है, वे सभी यह कहते हैं।

अमेरिकासे जो मिशन आया था, वह भी कह गया है कि जितना माल हिन्दुस्तानमें लड़ाअीसे पहले पैदा होता था अुतना ही आज भी हो रहा है। अुसमें कोअी वृद्धि नहीं हुअी है। यह मनुष्योंकी लड़ाअी नहीं है, मशीनोंकी लड़ाअी है। हिन्दुस्तानमें मशीनें कहाँ हैं? मशीनें क्यों नहीं देते? हिन्दुस्तानके तीन तरफ समुद्र है। अितना बड़ा समुद्र और किनारा होने पर भी हिन्दुस्तानमें अेक जहाज तक नहीं बनता। अिसका क्या कारण है? बहुत हुआ तो समुद्र तट पर मछलियाँ पकड़नेकी नावें नजर आयेंगी। हमें जहाज बनाने दो, हमें आवश्यक सामग्री पैदा करने दो, यह कहते-कहते सिंधिया कंपनीका गला सूख गया, मगर अुसकी कोअी सुनवाअी नहीं करता।

यह लड़ाअी हवामें भी चलती है। अूपर अुड़नेके लिअे हवाअी अड्डे तो यहाँ सैकड़ों बना दिये हैं, मगर विमान बनानेका अेक भी कारखाना नहीं खोला। हममें से अेक आदमीने अमेरिकासे हवाअी जहाज़ोंके तैयार पुरजे लाकर यहाँ बोल्ट कसकर विमान तैयार करनेका कारखाना खोला था। ढाअी वर्षमें अुसे अिजाज़त मिली थी। अुसमें अुसका तीसरा हिस्सा ही था, बाकीके दो हिस्से सरकारके और रियासतके थे। वह भी तीसरे हिस्साका दिवाला निकालकर चला गया। तेलकी टंकियाँ, रेलके डिब्बे और कहीं-कहींसे रेलकी पटरियाँ भी चली गअी हैं।

लड़ाअीमें मदद देनेको कहते हैं, परन्तु मदद देनेके लिअे नौजवानोंको जो हज़ारों रायिफलें चाहियें सो नहीं देते। मदद चाहिये तो दीजिये रायिफल। कौन अिनकार करता है? मगर अुन्हें भरोसा कहाँ है? अुन्हें डर है कि दे देंगे तो अुधर न चलाकर अिधर चला देंगे।

हम निपट लेंगे

सत्ता छोड़ कर हमसे दोस्ती कर लीजिये, फिर देखिये कि हिन्दुस्तान कितनी मदद देता है। यहाँ तो चालीस करोड़ आदमी मौजूद हैं। सात करोड़ जापानियोंसे निपट लेंगे। आप अलग होकर देखते रहना। मगर आप तो कहते हैं कि हम अपनी रक्षा करनेके योग्य नहीं हैं। सिर्फ गुलामी करनेके लायक ही हैं, और वह भी आपकी ही, और किसीकी नहीं। अिससे तो यही जान पड़ता है कि अुनकी नीयत स्याही जैसी काली है।

ट्रिंकोमालीमें बम पड़े, तो वहाँसे भाग गये और वहाँके रहनेवालोंसे भी कह दिया कि तुम भी भागो। आप तो भाग जायेंगे और अुसके लिअे सुविधाअें भी कर रखी हैं, मगर हम कहाँ जायेंगे? वे कहते हैं कि हमें हिन्दुस्तानकी रक्षा करनी है। लेकिन हमें यकीन है कि हिन्दुस्तानकी रक्षा तो स्वतंत्र हिन्दुस्तान ही कर सकता है। अिसीलिअे तो हम कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिये। अैसा भी कहते हैं कि लड़ाअीके बाद छोड़ना है, तो पहले ही क्यों नहीं छोड़ देते?

आज जिन्हें देशकी रीढ़ कह सकते हैं, अैसे कारखाने यहाँ नहीं बनने देते। क्योंकि वे समझते हैं कि बालिश्त भर जापान ही अुद्योग-सम्पन्न बन कर अितनी गड़बड़ मचा रहा है, तो चालीस करोड़का हिन्दुस्तान क्या नहीं करेगा? अगर कारखाने बनाने दें, तो आज जो कच्चा माल ले जा कर पक्का बना कर यहाँ देते हैं वह कैसे हो? और अुनके यहाँ तो आठ हफ्तेकी ही खुराक पैदा होती है। वह खतम हो जाय तो कोयला और लोहा

चबाते रहें। यह हालत है अुनकी। हिन्दुस्तान छोड़ दें, तो अुनका काम कैसे चले? अुन्हें अब भी हिन्दुस्तानको चूसना है।

अिसीलिअे गांधीजी अुनसे कहते हैं, यहाँसे चले जाओ। गांधीजीकी लड़ाअी छिड़ते ही तुरन्त पुस्तकें आल्मारियोंमें रख कर ताले लगा देना। प्रिंसिपल कहे कि पढ़ो, तो कह देना कि लड़ाअी खतम हो जानेके बाद आअिये। अुस समय पढ़नेको कहेंगे, तो हम पढ़ने आ जायँगे।

१३२

बहनोंसे

[ता० ३०–७–१९४२ को अहमदाबादमें स्त्रियोंकी सभामें दिये गये भाषणसे।]

अिस समय दुनियाकी जो हालत है और हमारे हिन्दुस्तानमें जो परिस्थिति है, अुसे समझ लेना चाहिये। क्योंकि शायद आप सबको मालूम न हो कि जिस समयमें हम रह रहे हैं वह कठिन है, और जो समय आनेवाला है वह अिससे भी कठिन होगा। अब तक हम शान्तिसे रह रहे थे और अभी तक निर्भय हैं। मगर यह निर्भयता अब अधिक नहीं रहेगी। और वह शान्ति अच्छी भी नहीं थी, क्योंकि हमें अुस शान्तिकी भारी कीमत चुकानी पड़ी है।

दुनियामें सबसे कंगाल देश हिन्दुस्तान है। अेक समय अैसा था जब हिन्दुस्तान सबसे ज्यादा धनवान था। अुसके व्यापारी जहाज़ भर-भरकर धन लाते थे। हिन्दुस्तानकी यह कीर्ति सुनकर विदेशी यहाँ आये। वे लोग आये तो थे व्यापार करने, मगर बादमें हम पर राज्य करने लगे। अिसमें हमारा भी दोष है।

पहले यहाँ जो विदेशी आये थे, वे देशमें राज्य करते थे, मगर देशको हजम नहीं करते थे। पर अिन लोगोंने तो हिन्दुस्तानको चूसकर बिलकुल भिखारी बना दिया। मगर अब अिनका कोअी जोर नहीं चलेगा। क्योंकि जो विश्वयुद्ध हो रहा है, वह महाभारतके युद्धसे और पानीपतकी लड़ाअीसे भी अधिक भयंकर है। वे लड़ाअियाँ तो सिर्फ कुरुक्षेत्रमें ही होती थीं और अुनमें दोनों पक्षोंकी अठारह अक्षौहिणी सेनाअें ही लड़ती थीं; जबकि यह लड़ाअी तो हज़ारों मीलमें हो रही है। अुसमें लाखों आदमी मर रहे हैं। पहलेकी लड़ाअियोंमें तो जो युद्धमें लड़ते थे, वे ही मरते थे; जबकि अिसमें हज़ारों मील दूरसे हवाअी जहाज़ आते हैं, गोले गिराते हैं और हम सब दब जाते हैं।

ये लोग या तो यह झूठा बहाना बनाते हैं कि हम प्रजातंत्रकी स्थापनाके लिअे लड़ रहे हैं, या अपने पर होनेवाले आक्रमणका मुकाबला करनेका बहाना बनाते हैं। अुनके लड़नेका असली कारण तो यह है कि दुनियामें कालों और गोरोंका भेद हो गया है और गोरोंको कालों पर राज्य करना है। यह लड़ाअी अेशियाके लोगों, अफ्रीकाके लोगों और हिन्दुस्तानके लोगोंको दबा देनेके लिअे है। लड़ाअीके आगे बढ़ते ही अेशियाका अेक देश अंग्रेजोंके विरोधी गुटमें शामिल हो गया और हमला करके मलाया, सिंगापुर और बर्मा वगैरा अंग्रेज़ोंसे छीन लिये। और जर्मनीने सारे युरोप पर अधिकार कर लिया। अब यह लड़ाअी भयंकर हो गअी है, क्योंकि अिसमें रूसका बड़ा देश भी शरीक हो गया है। अब लड़ाअी हिन्दुस्तानके किनारे ज़रूर आ जायगी।

अब लड़ाअी तेज़ हो जायगी। अिसलिअे बहनोंको पुरुषोंके भरोसे नहीं बैठे रहना चाहिये। गुंडोंका भी सामना कीजिये। जैसे आज तक हिन्दुस्तानके लोगोंने सरकार और पुलिसका मुँह ताका है, अुसी तरह स्त्रियोंने पुरुषोंका मुँह ताका है। मगर अिसमें आपकी रक्षा नहीं है।

गांधीजीका सन्देश अपनाअिये

लड़ाअी छिड़ जाय, तब गांधीजी जैसा कहें वैसा आपको करना चाहिये। लड़ाअी हो तब स्त्री-पुरुष सभीको अुसमें ज़रूर शरीक होना है। अुस समय हिन्दुस्तानमें सब लोगोंके सामने यह धर्म अुपस्थित हो जायगा कि सरकारकी सत्ताको न माना जाय। ७४ वर्षके अीश्वरी अवतारके समान गांधीजीको जेलमें ले जायँ और अैसी स्थिति पैदा हो जाय, तब आपको बैठे नहीं रहना चाहिये।

सब कुछ पटापट बन्द हो जायगा

अेक करोड़ मनुष्य खड़े हो जायँ, तो अैसी कोअी जेल नहीं जिसमें वे समा सकें। अिसलिअे अुस समय लाठी-प्रहार या गोलीबार होगा। हमारे ही आदमी हमें गोली मारेंगे। अुस समय अुन्हें समझाना और फिर भी न समझें तो गोलियाँ खा लेना। अुस समय स्कूल, कॉलेज, कचहरियाँ, रेल और डाक सब बन्द हो जायँगे। हरअेक सरकारी संस्था बन्द हो जायगी। अुस समय हमारी असुविधा बढ़ जायगी। फिर भी आपको साथ देना पड़ेगा। हमें जोखिम अुठानी पड़ेगी। सरकार यह समझती है कि ये लोग कुछ नहीं कर सकेंगे। मगर हमें बता देना होगा कि हम सब कुछ कर सकते हैं।

आप यह समझकर बैठी रहीं कि पुरुष रक्षा कर लेंगे, तो पुरुष भागेंगे तब आप क्या करेंगी? परन्तु आपको भी सामना करना चाहिये। आप यह मानती हैं कि स्त्रियोंमें क्या शक्ति हो सकती है? परन्तु जितनी शक्ति

स्त्रियोंमें है, अुतनी पुरुषोंमें भी नहीं है। स्त्रियोंकी सहनशक्ति बहुत ज्यादा होती है। स्त्रियोंने तो पुरुषोंमें भी शक्ति भरी है। अिसलिअे आप अपनी रक्षा करना सीखिये। अुसमें तालीम या कवायदकी ज़रूरत नहीं, परन्तु मौतका डर मिटा देनेकी ज़रूरत है। स्त्रियोंमें धार्मिक भावना अधिक होती है। अिसलिअे वे अच्छी तरह जानती हैं कि मृत्यु निश्चित है। पुण्यात्मा मनुष्य कभी नहीं मरता। राम और कृष्णके नाम अुनके कृत्योंसे ही अब तक अमर हैं। मौत तो जन्मसे ही साथ है और मरनेके बाद दुःख भी क्या होगा? दुःख तो यहाँ भी है। शायद वहाँ अिससे भी कुछ ज्यादा अच्छा हो। अिसलिअे मौतका भय तो छोड़ ही दीजिये। हिम्मत होगी तो भगवान भी मदद करेगा।

१३३

अहमदाबादके व्यापारियोंसे

[ता० ३०-७-१९४२ को अहमदाबादमें मस्कती मारकेटमें दिया गया भाषण।]

हिन्दुस्तानका बचाव

आजकल अिस देश पर विदेशी आक्रमण पास आ रहा है।

हमारी हुकूमत कहती है कि हिन्दुस्तान पर जापान ज़रूर आयेगा। अुसका अिसे बड़ा भय है। अिस मामलेमें हमारा कोअी मतभेद नहीं है।

हुकूमत हिन्दुस्तानकी रक्षा करनेको कहती है। मगर अंग्रेज़ हिन्दुस्तानका बचाव करना चाहें, तो भी अुनसे नहीं हो सकेगा। हिन्दुस्तानका बचाव तभी हो सकेगा, जब हिन्दुस्तान साथ होगा।

हिन्दुस्तानका बचाव हिन्दुस्तानियोंको प्रिय है। हिन्दुस्तान जितना प्रिय हिन्दुस्तानियोंको हो सकता है, अुतना और किसीको नहीं हो सकता। अिसका बचाव तो वे ही कर सकते हैं।

क्या अुन्होंने बर्माका बचाव किया था? आज अुनका गवर्नर अिंग्लैण्डमें बैठे-बैठे कहता है कि अुसका ब्रह्मदेशकी प्रजा पर बहुत प्रेम अुमड़ रहा है। क्यों न अुमड़े? अुसने वहाँके शहरोंका अिस प्रकार नाश कर डाला है कि अेक पर दूसरी साबित अींट नहीं रह गअी है और ब्रह्मदेशके लोगोंको अुसके अिस पराक्रमका फल भोगना है।

हिन्दुस्तानका भी यही हाल हो जाय तो क्या होगा? हिन्दुस्तानके शहरोंका सत्यानाश हो जायगा। वह कहता है कि वहाँ बैठे-बैठे भी अुसका लोगों पर

प्रेम अुमड़ रहा है, जब कि अंग्रेज़ और अमरीकी यहाँसे हवाअी जहाज़ोंमें गोला-बारूद भर कर वहाँ फेंकते हैं और मकानोंको नष्ट कर डालते हैं।

अैसी हालत हिन्दुस्तानकी न हो, अिसलिअे हम अिनसे कहते हैं कि यहाँसे चले जाओ। यह प्रस्ताव अिसलिअे किया गया है कि कहीं अैसा न हो कि अेक जाय और दूसरा आ जाय, और पहला भागते हुअे यहाँका सब कुछ नष्ट कर जाय।

आजकलकी कमाअी यानी कागज़ी नोट

अिस समय व्यापारियोंको समझ लेना चाहिये कि दोनोंको खुश रखनेकी नीतिमें जोखिम है। आखिर तो हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियोंका ही है। यह सारी चालबाजी अब अधिक नहीं चलेगी। आपको व्यापार करना है। हम चाहते हैं कि आपका व्यापार धड़ल्लेसे चले। मगर यह कमाअी झूठी है। यह रुपया तो रोज चौबीसों घंटे नासिकके कारखानेमें छपनेवाले कागज़के नोट हैं।

वे कहते हैं कि अब तक हिन्दुस्तानके सिर पर जितना कर्ज़ था, वह साफ़ हो गया है। लेकिन क्या वह कर्ज़ जायज़ था? अफ़गान युद्ध लड़े तो अुसका कर्ज भी भारतके नाम लिख दिया था। कांग्रेसने तो पहले ही अुस कर्जकी बातको गलत बता दिया था।

जो माल आपसे ले जाते हैं वह अिंग्लैण्डके खातेमें नामे लिख देते हैं और आपके खातेमें जमा कर लेते हैं। अर्थमंत्री अंग्रेज़ है और वह अिस समय अिंग्लैण्ड जा कर बैठा है। वहाँ वह किस लिअे गया है? अुसकी नीयत यह है कि जब लड़ाअी हिन्दुस्तानमें आ रही है, तो अुसका खर्च हिन्दुस्तानके सिर पर थोप दिया जाय। आप व्यापार करते रहते हैं, मानो ठीक भाव आ गया है। मगर अन्तमें तो ये सब कागज़के कागज़ ही रह जायँगे।

कोअी भी समझदार व्यापारी अैसा नहीं होना चाहिये, जो देशकी अिस लड़ाअीमें भाग लिये बिना रहे।

राष्ट्रीय मोर्चा

आजकल कांग्रेसके खिलाफ़ लड़नेके लिअे गाँव-गाँवमें राष्ट्रीय मोर्चे कायम किये गये हैं। वाअिसरॉयने हुक्म दिया कि राष्ट्रीय मोर्चा बनाया जाय। बम्बअीमें अुसके मुखिया मसानी साहब हैं। वे बम्बअी विश्वविद्यालयके अुप-कुलपति हैं। वे थोड़े दिनोंमें अहमदाबाद आनेवाले हैं। पहले तो वे यह कहते थे कि राष्ट्रीय मोर्चा सामाजिक संस्था है, मगर अब अुसका भंडाफोड़ हो गया है। गांधीजीने अुसका जवाब दे दिया है। हिन्दुस्तान गुलाम है। अिसमें यह राष्ट्रीय मोर्चा कैसा? आपमें से जो अिसमें शरीक हुअे हों, अुन्हें अिस्तीफ़ा

दे देना चाहिये और कह देना चाहिये कि हम अिस झंझटमें नहीं फँसना चाहते। साफ बात यह है कि अुनका 'राष्ट्रीय मोर्चा' यहाँ तभी कायम हो सकता है, जब अहमदाबादके लोग अुनका साथ दें। यहाँ आकर मसानी साहब सभा करनेवाले हैं। मगर अुनके आनेसे पहले ही अुन्हें तार दे दीजिये कि यहाँ मत आअिये। जो हुअी सो सब गलत चीज़ है। अिसके सिवाय और कोअी काम हो तो आअिये। आप भी छः गैलन पेट्रोल लेनेके लिअे यह सब क्यों कर रहे हैं? दिलकी बात हिम्मतसे खुल्लमखुल्ला कहनी नहीं आती? मगर वह आनी चाहिये। और यदि आप यह कह देंगे तो वे नहीं आयेंगे।

यह लड़ाअी जबरदस्त है। हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी अिस लड़ाअीमें आप सबको साथ देना चाहिये। बैठे रहेंगे तो अिज्ज़त चली जायगी। अिसलिअे तैयारियाँ करनी हों, तो करके रखिये। गांधीजी पर हाथ डाला जाय तो बैठे न रहिये। कांग्रेसकी तरफसे आनेवाली तमाम आज्ञाओंका चुपचाप पालन कीजिये। मैं यही कहने यहाँ आया हूँ।

गुमाश्तोंके लिअे कुछ कीजिये

अिन बेचारे गुमाश्तोंके लिअे कुछ न कुछ कीजिये। आपने प्रस्ताव पास किया, परन्तु अुस पर अमल नहीं किया। कागज़के ये नोट किस कामके हैं? आप जो कमाते हैं वह रुपया नहीं है, यह समझ रखिये। जितना पुण्य करेंगे, वही कामका है। यह धन रहनेवाला नहीं है, अिसलिअे पुण्य कर लीजिये। आपका नाम रह जायगा। घरमें पड़ा हुआ धन बेकार हो जायगा। गुमाश्ते आपके ही हैं और आपको ही अिनकी रक्षा करनी है।

संभव है कि लम्बे अरसे तक हमारा मिलना न हो। अिस लड़ाअीमें जितने ज्यादा लोग होंगे अुतना ही ठीक होगा। लड़ाअी लम्बी नहीं होगी। हममें दोगले आदमी होंगे तो लड़ाअी लम्बी होगी। मगर अुसे लम्बाना नहीं है। अभी तक देशके लिअे कभी मरनेका समय नहीं आया था। जब वह आ गया है, तो अुसका स्वागत कीजिये।

१३४

गुलामीकी जंजीरें तोड़

[ता० २-८-१९४२ को बम्बअीमें चौपाटी पर दिये गये भाषणसे ।]

*　　*　　*

कांग्रेसने कोअी सबसे अधिक महत्त्वका प्रस्ताव किया हो तो वह यही है। जिस दिन कार्यसमितिने यह प्रस्ताव पास किया, अुस दिनसे देश-विदेशके अखबारोंमें अुसे अद्‌भुत प्रसिद्धि मिली है। जिन देशोंके अखबार हमारे यहाँ नहीं आते, अुनमें जो प्रचार होता है वह भी हमें मालूम नहीं होता। परन्तु रेडियो द्वारा मित्रभाव या शत्रुभावसे प्रचार होता ही रहता है।

हिन्दुस्तानके अखबारोंको भारत रक्षा कानूनकी लटकती हुअी तलवारके सतत भयके नीचे काम करना पड़ता है। कागज़की कमी है तो भी प्रस्तावको जो प्रसिद्धि मिली है, अुससे प्रगट होता है कि प्रस्ताव बहुत ही महत्त्वका है।

७ तारीखको अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी अुस प्रस्तावको मंजूरी देगी। दुनियाकी और खुद ब्रिटिश सरकारकी आँखें महासमितिकी बैठक पर लगी हुअी हैं।

अिस प्रस्तावकी पृष्ठभूमि आपको समझ लेनी चाहिये। जब ब्रिटिश सरकारने हिन्दुस्तानकी धारासभा या किसी भी संस्थासे पूछे बिना भारतीय सेनाको हिन्दुस्तानके बाहर भेजा, तब सबसे पहले कांग्रेसने अुस पर अेतराज़ किया। परन्तु सरकारने किसीकी परवाह नहीं की और देशका अपमान किया।

अुसके बाद प्रान्तोंकी धारासभाओं, लोकप्रिय मंत्रि-मण्डलों या किसीसे भी पूछे बिना हिन्दुस्तानको वर्तमान युद्धमें धकेल दिया गया।

कांग्रेसने अिस लड़ाअीमें सरकारका साथ देनेके लिअे अुसके युद्ध-अुद्देश्य पूछे। अुसे जवाब नहीं दिया गया। अुल्टे, नअी-नअी चालें चली गअीं। अिसके सिवाय, अेक दूसरेको आपसमें लड़ा देनेकी नीति अपनाअी गअी।

कांग्रेसने पूनामें प्रस्ताव किया कि अगर देशमें सच्ची राष्ट्रीय सरकार स्थापित कर दी जाय, तो सरकारको वर्तमान युद्धमें बिना शर्त सब तरहकी मदद दी जायगी। मगर अुस प्रस्तावको भी ठुकरा दिया गया। तब कांग्रेसने निश्चय किया कि यह परिस्थिति लम्बे समय तक नहीं रहने दी जा सकती।

कांग्रेसने सरकारको परेशान न करनेकी नीति अपनाकर अपने विचार जाहिर करनेके लिअे व्यक्तिगत सत्याग्रहकी मीठी लड़ाअी की । मगर अुसका क्या परिणाम हुआ ? अुसके कारण कांग्रेसको कमजोर समझा गया और कुछ गलतफहमी फैलाअी गअी । अिसलिअे व्यक्तिगत सत्याग्रहकी लड़ाअी समेट ली गअी ।

संसारकी परिस्थिति बदलती गअी । लोगोंको मौजूदा लड़ाअीसे होनेवाली तकलीफ़ोंसे बचानेके लिअे कांग्रेसकी तरफसे रक्षा-दल और साथ ही दूसरे प्रकारके प्रयत्न शुरू किये गये ।

अिस बीच अमेरिका और चीनका सरकार पर दबाव बढ़ा और अिस अुद्देश्यसे कि सरकार अिन राज्योंकी दृष्टिसे विषम स्थितिमें न पड़े, सर स्टेफर्ड क्रिप्सको हमारे यहाँ भेजा गया ।

क्रिप्स साहबकी ख्याति तो अच्छी थी । यह माना जाता था कि समझौता हो जायगा । लेकिन क्रिप्स साहब जो कुछ लाये थे, अुसे जब महात्माजीने देखा, तो अुन्हें विश्वास हो गया कि क्रिप्स साहब मित्रभावसे हलाहल ज़हर लाये हैं। अमेरिकाको सन्तुष्ट करनेके लिअे ही क्रिप्स साहबने यह अेक गल्त प्रयत्न किया था ।

क्रिप्स साहबकी योजनाको देशके किसी भी दलने स्वीकार नहीं किया, अुल्टे सभीने अुसका तिरस्कार किया । यहाँसे जानेके बाद क्रिप्स साहबने जो प्रचार किया, अुससे भी ब्रिटिश सरकारकी नीयत साबित हो गअी ।

जब जापानी सेनाने बर्मा पर कब्जा कर लिया, तब राष्ट्रीय कांग्रेसने विचार किया कि हिन्दुस्तानमें अुसकी पुनरावृत्ति हो तो क्या किया जाय ? अुस पुनरावृत्तिको रोकनेके लिअे ही कार्यसमितिने वर्धाका प्रस्ताव पास किया ।

कांग्रेस जो मॉंग कर रही है, वह पूरी कर दी जाय तो ही हिन्दुस्तानका बचाव हो सकेगा । अिस माँगको मंजूर करनेकी नीयत नहीं दिखती ।

अिस हुकूमतकी तरफसे यह दावा किया जाता है कि हिन्दुस्तानकी रक्षा करना हमारा अधिकार है, धर्म है । 'अेक प्रकारसे बात सच है । दो सौ वर्षसे यहाँ आकर बैठे हैं, अिसलिअे हिन्दुस्तानकी रक्षा करना अुनका फर्ज़ तो है ही । परन्तु सवाल यह है कि वे सचमुच अुसकी रक्षा कर सकेंगे या नहीं । वे भी अच्छी तरह समझ गये हैं कि हिन्दुस्तानके हार्दिक सहयोगके बिना वे अुसका बचाव नहीं कर सकेंगे ।

मैं ब्रिटिश सरकारसे पूछता हूँ कि ब्रह्मदेशको बचाना आपका धर्म था या नहीं ? आप अपने कर्तव्यमें कैसे चूके और ब्रह्मदेशको क्यों न बचा सके ? आपने तो कहा था कि जब तक सिंगापुरका अभेद्य किला मौजूद है, तब तक हिन्दुस्तानको कोअी खतरा नहीं है । मगर जो भारतमंत्री कांग्रेसको धमकी देता

है, अुसे मालूम नहीं था कि अुस अभेद्य किलेको सीड़ लग गअी है, दीमक लग गअी है। अुसके बाद मलायाका पतन हुआ। अुसका क्या कारण है? हमारे पास सेना पूरी नहीं थी, अितने अधिक गरीब लोगों पर सेनाका अितना भारी बोझ डालना धर्मिष्ठ मनुष्योंका काम नहीं है! अिसलिअे काफी सेना नहीं रखी!

ब्रह्मदेशका पतन हुआ। वहाँके गवर्नर यहाँ होकर विलायत चले गये। वहाँ भाषणोंमें कहते हैं कि मुझे ब्रह्मदेश पर बड़ा प्रेम है। सही बात है। आप तो मानव-जाति पर प्रेम रखनेवाले ठहरे! वे लोग कहते हैं कि हमने जब ब्रह्मदेशको छोड़ा, तब यह हाल कर दिया कि अेक अींट भी साबित नहीं रखी। अिसलिअे हमें विचार करना है कि क्या हिन्दुस्तानकी भी अैसी ही दशा होनेवाली है? वे तो नष्ट करते हुअे भाग जायँगे। मगर हम कहाँ जायँगे?

हिन्दुस्तान छोड़ना ही पड़ेगा

कहते हैं कि हमें हिन्दुस्तानको बचाना है और लड़ाअी खतम होनेके बाद हिन्दुस्तानको मुक्त कर देंगे। लड़ाअीके बादकी बात क्यों? चार छः महीनेमें ही छोड़ना है, तो अभीसे क्यों नहीं छोड़ देते? अुनकी नीयत साफ हो तभी यों कहें न? हम तो अंग्रेज़ोंको कांग्रेसकी शर्त पर सहायता देना चाहते हैं। वे अिस समय हमारी स्पष्ट बात भी नहीं समझ रहे हैं। आलोचक अिस वक्त कहते हैं कि तुम्हारे कहनेसे अंग्रेज़ भारत छोड़ कर नहीं जायँगे। मैं अुनसे कहता हूँ कि कांग्रेसमें कोअी छोटे बच्चे नहीं बैठे हैं। वे भी जानते हैं कि केवल शब्द-प्रयोगसे ही अंग्रेज़ हिन्दुस्तानको नहीं छोड़ देंगे। मगर हम अैसे कदम अुठायेंगे, जिनसे अंग्रेज़ोंको भारत छोड़नेको मजबूर होना पड़ेगा।

कहा जाता है कि ब्रिटेन और अमेरिका यह लोकतंत्रकी लड़ाअी लड़ रहे हैं। अिस कथित लोकतंत्री युद्धमें हिन्दुस्तानको भी जबरन घसीट लिया गया है। हिन्दुस्तानमें दम नहीं है। अंग्रेज़ जहाँ जायँगे, वहीं अुसे भी जाना होगा। मगर हिन्दुस्तान तो आज यह कह रहा है कि पहले हिन्दुस्तानको लोकतंत्र दे दो, तभी वह लोकतंत्रकी लड़ाअीमें शरीक होगा।

मगर अिनके लोकतंत्रका अर्थ है काले लोगोंको लूटना। यह अिस लूटके बँटवारेकी लड़ाअी है। अफ्रीका और अेशियाको — जापानको छोड़कर — लूटने और आपसमें बाँट लेनेकी बात है।

कांग्रेसके मनमें अैसी भावना नहीं है कि अेक मालिक चला जाय और दूसरा आ जाय। मगर अंग्रेज़, जर्मन या जापानी जो भी हों, अुनका मुकाबला करनेकी बात है। जापान या जर्मनी आये तो यह नहीं हो सकता कि कांग्रेस देखती रहेगी। अिसमें कांग्रेसकी हस्तीका सवाल समाया हुआ है।

सबसे काला अितिहास

क्रिप्स साहब अमेरिकाके लोगोंसे कहते हैं कि कांग्रेस तो यह प्रस्ताव करके जापान और जर्मनीको निमंत्रण दे रही है, अिसलिअे हिन्दुस्तानको कुचलनेमें अमेरिकाको मदद देनी चाहिये। अिंग्लैण्ड अमेरिकाकी सहायता चाहता है, तो हिन्दुस्तान अीश्वरकी मदद माँगता है। सिरसे पैर तक शस्त्रोंसे सुसज्जित लोग हिन्दुस्तानके चालीस करोड़ निहत्थोंको कुचलनेके लिअे अमेरिकाकी मदद माँग रहे हैं !

हमारे कुछ भाअी कहते हैं कि यह कठिन समय है, अभी अिस बातको रहने दीजिये। कांग्रेस यह समझती है कि जिस समय हिन्दुस्तानको लड़ाअीका मैदान बनाया जा रहा है, अुस समय न लड़ें तो ये तो दो सौ वर्षसे बैठे ही हैं, और शायद कोअी दूसरा भी आकर बैठ जायगा।

हिन्दुस्तानमें सबसे काला अितिहास अगर किसीका है तो ब्रिटिश जातिका है। अुसने चालीस करोड़ लोगोंको निःशस्त्र बनाया है।

जनताकी लड़ाअी ?

कुछ लोग कहते हैं कि यह जनताकी लड़ाअी है। अुन्हें विचार करना चाहिये कि यह किस जनताकी लड़ाअी है ? यह लड़ाअी जनताकी होगी, मगर चीन और रूस जैसे आज़ाद मुल्कोंके लिअे। गुलाम हिन्दुस्तानके लिअे यह लड़ाअी जनताकी लड़ाअी कैसे हो सकती है ? हमें अिस समय अिसीलिअे लड़ना है कि हमारी स्थिति ब्रह्मदेश और मलाया जैसी न हो जाय। जब पूनामें महासमितिने प्रस्ताव पास किया, तब आज अिसे जनताकी लड़ाअी बतानेवाले ही कहते थे कि यह तो साम्राज्यवादकी लड़ाअी है, अिसलिअे अुसमें साथ मत दो। अुसके बाद सरकारने अुन्हें जेलमें डाल दिया और अुनके अखबार बंद कर दिये। चार दिन पहले 'टाअिम्स' लिखता है कि अुनके स्वदेशाभिमानके बारेमें कभी शक नहीं था। लेकिन जब केन्द्रीय धारासभामें श्री जोशीने अिन लोगोंको जेलमें कुछ सुविधाअें देनेका प्रस्ताव रखा, तब मैक्सवेलने अैसे शब्द काममें लिये थे जो सबसे हलके मनुष्यके लिअे भी अिस्तेमाल नहीं किये जा सकते। अुस समय भी अिसी 'टाअिम्स' ने अुसके सुरमें सुर मिलाया था। परन्तु मुझे आशा है कि अंतमें लाल झंडेवाले भी समझ जायेंगे और 'राष्ट्रीय मोर्चे' वाले भी समझ जायेंगे। यह प्रस्ताव पास हो जानेके बादसे वाअिसरॉयकी कौंसिलके सदस्योंमें होड़ लगी हुअी है कि कांग्रेसके खिलाफ सबसे सख्त कौन बोलता है। कहते हैं कि नौ करोड़ मुसलमान, दस करोड़ हरिजन, मज़दूर, किसान, विद्यार्थी और लिबरल सभी कांग्रेसके विरुद्ध हैं। अिस प्रकार

हिसाब लगायें तो अंग्रेज़ोंके सिवाय कोअी कांग्रेसके साथ नहीं ! अगर कोअी भी कांग्रेसके साथ, गांधीजीके साथ नहीं है, तो फिर किस लिअे मदद माँगनेको अमेरिका तक जाते हो और क्यों अितनी दौड़-धूप मचाते हो ? यरवदाका दरवाज़ा खोलकर अुसमें बंद कर दो न !

ब्रिटिश हुकूमतका कोअी सबसे सच्चा मित्र हो सकता है, तो वह महात्माजी हैं । महात्माजीने अेक सार्जेंटकी तरह हमेशा ब्रिटिश सरकारकी सेवा की है, परन्तु लगभग ७४ वर्षकी अुम्रमें महात्माजीको लगा कि अब हमें अिन लोगोंसे अलग होना ही पड़ेगा । अिस वक्त ब्रह्मदेशका जो हाल हुआ है, वही आगे चलकर हिन्दुस्तानका हो तो क्या किया जाय ?

मेरी बातें आप जहाँ-जहाँ जायँ, वहाँ-वहाँ पहुँचाअिये । बम्बअीको जो सम्मान मिला है, अुसे हमें सुशोभित करना है । अब तक जितना सुशोभित किया है, अुससे कअी गुना अच्छे ढंगसे सुशोभित करनेका मौका आया है । किसान और मज़दूर, व्यापारी या नौकर सभी अिस जंजालसे छूटना चाहते हैं ।

६ अप्रैल, १९१९ को हड़ताल की गअी थी, अुसी दिन आज़ादीका संदेश समस्त देशमें पहुँच गया था । अुस दिन राष्ट्रका जो विराट दर्शन हुआ, वही दर्शन अब होने वाला है ।

लड़ाअी कब और कैसे शुरू की जाय, अिसकी व्यवस्था महात्माजी करेंगे ।

आपको यही समझकर यह लड़ाअी छेड़नी है कि महात्माजी और नेताओंको पकड़ लेंगे । गांधीजीको पकड़ा जाय, तो आपके हाथमें अैसा करनेकी ताकत है कि २४ घंटेमें ब्रिटिश सरकारका शासन खतम हो जाय । आपको सब कुंजियाँ बता दी गअी हैं । अुनके अनुसार अमल कीजिये । सरकारका शासन चलानेवाले सभी लोग अगर हट जायँ, तो सारा शासन भंग हो जायगा ।

अंग्रेज़ कहते हैं कि तुममें भेदभाव हैं, परन्तु कांग्रेस जानती है कि जब तक ये तीसरे लोग बैठे हैं, तब तक कुछ नहीं होगा । वे कहते हैं कि हम किसको सत्ता सौंप कर जायँ ? अरे, काले चोरको ही सौंप जाओ । बर्मामें पूछने गये थे कि किसे सौंप जायँ ?

जिस दिन हिन्दुस्तान आज़ाद हो जायगा, अुस दिन कांग्रेस अपने आप विसर्जित हो जायगी । अुस दिन कांग्रेसका काम पूरा हो जायगा । कांग्रेस अपने लिअे सत्ता नहीं माँगती, देशके लिअे माँगती है । कांग्रेस और महात्माजीका आदेश पालन करके देशका नाम अुज्ज्वल कीजिये ।

मुम्बअी समाचार, ३-८-१९४२

१३५
अंग्रेजो, चले जाओ

[ता० ७-८-१९४२ को बम्बअीमें हुअी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी बैठकमें 'अंग्रेजो चले जाओ' वाले प्रस्ताव पर दिया गया भाषण ।]

महात्माजी, राष्ट्रपति और जवाहरलालजीके बोल चुकनेके बाद मुझे बहुत ही थोड़ा कहना है । आज तीन सप्ताहसे वर्धाका प्रस्ताव देशके सामने मौजूद है, दुनियाके सामने भी मौजूद है । संसार भरमें अुसकी चर्चा हुअी है । अुस पर आलोचनाअें भी खूब हुअी हैं । अुन चर्चाओं पर भी अिस बार वर्किंग कमेटीने पूरा विचार किया है और अुसके बाद ही आजका यह प्रस्ताव आपके सामने पेश किया गया है ।

१६ जुलाअीके वर्धा-प्रस्तावको दुनियाके दूसरे देशोंमें जितनी प्रसिद्धि मिली है और सरकार व अुसके पिट्ठुओंकी तरफसे अुसका जितना प्रचार किया गया है, अुतना प्रचार हमसे कितना ही रुपया खर्च करने पर भी नहीं होता । अभी तो हमने प्रस्ताव ही पास किया है । कांग्रेसने अभी कोअी कदम तो अुठाया ही नहीं है । अिसलिअे आप समझ लीजिये कि जब हम कदम अुठायेंगे, तब हमारा अिससे कितना अधिक प्रचार होगा । पहले रुपया खर्च करने पर भी जो प्रसिद्धि नहीं मिलती थी, वह अब कांग्रेसको अनायास मिल रही है । काम और कुरबानीकी अैसी महिमा है !

पिछले कुछ दिनोंसे हिन्दुस्तानके साथ असंख्य लोगोंको अेकाअेक मुहब्बत हो गअी है । जिनका हिन्दुस्तानके साथ कुछ भी वास्ता नहीं, कोअी लेना-देना नहीं, वे भी हिन्दुस्तानके प्रश्नोंमें अैसी दिलचस्पी लेने लगे हैं, मानो अुम्रभरसे अुसके साथ मुहब्बत हो ।

हम आज़ादीकी जो आखिरी लड़ाअी छेड़नेवाले हैं, अुसके विरुद्ध कोअी-कोअी आलोचक धमकियाँ दे रहे हैं और कहते हैं कि तुम लड़ाअी छेड़ोगे, तो तुम पर मुसीबतें आ पड़ेंगी । कोअी शिक्षा देकर समझदारी दिखा रहे हैं कि अिससे तो मित्र राज्योंके युद्ध प्रयत्नोंको हानि पहुँचेगी । अिन सब धमकियों और सलाहोंके जवाब हमारे पास हैं । मगर अुन्हें जवाब कैसे दें ? अुन देशोंमें हमारे अखबार नहीं हैं । रेडियो पर हमारा अधिकार नहीं है । सरकारने सेंसरका पहरा लगा दिया है । वह जितनी बात यहाँसे बाहर जाने देगी, अुतनी ही जायगी । हमारे दिलकी सच्ची बात तो दूसरे देशोंमें पहुँच ही नहीं सकती ।

विदेशोंमें सरकार यह प्रचार करती है कि कांग्रेसके साथ है कौन? वह तो मुट्ठीभर मनुष्योंकी बनी हुअी है, जो रोज अुठकर यह सारी धाँधली मचाते हैं। नौ करोड़ मुसलमान कांग्रेसके साथ नहीं हैं, सात करोड़ हरिजन नहीं हैं और सात करोड़ रियासती जनता भी कांग्रेसके साथ नहीं है। रेडीकल, डेमॉक्रेट और कम्युनिस्ट भी अुसके साथ नहीं हैं। समझदार माने जानेवाले लिबरल भी नहीं हैं। मैं कहता हूँ कि हमारे साथ कोअी भी नहीं, परन्तु अपनेको शरीफ कहनेवाले अंग्रेज़ तो हैं न? हमें अुन्हींसे काम है।

अगर देश कांग्रेसके साथ नहीं है, तो फिर आपको अुसका अितना डर क्यों लगता है? जलमें, थलमें, बस्तीमें, जंगलमें, सब जगह वही क्यों दिखाअी देती है? मैं कहता हूँ कि अिस लड़ाअीमें चालीस करोड़ भारतीय जनताका साथ न होने पर भी ब्रिटिश और अमरीकी लोग यह समझते हों कि विजय अुन्हींको मिलेगी, तो वे बेवकूफ हैं। जीत तो तभी हो जब तमाम लोगोंके दिलमें यह बस जाय कि यह अुनकी लड़ाअी है। अपने वतन और आज़ादीके लिअे मर मिटनेकी तमन्ना लोगोंके दिलोंमें जाग्रत होनी चाहिये। जब तक भारतवासियोंके हृदयोंमें यह भावना पैदा नहीं होती, तब तक अखबारोंमें या रेडियो पर कितना ही प्रचार कीजिये, सब बेकार है।

हम तो तीन-तीन साल तक बैठे रहे। गांधीजीने कांग्रेससे कहा कि ब्रिटेन मुसीबतमें फँस गया है, अुसे क्यों तंग किया जाय? अुसके युद्ध प्रयत्नोंमें जरा भी रुकावट पैदा न हो, अिसके लिअे गांधीजीने खूब सावधानी रखी और जी-तोड़ कोशिश की। मगर अब अुनका भी धीरज टूट गया है। लड़ाअी हिन्दुस्तानके दरवाज़े खटखटा रही है। अंग्रेज़ हिन्दुस्तानकी रक्षा करनेका दावा करते हैं। परन्तु क्या हम यह नहीं जानते कि वे ब्रह्मदेशको भी यही कहते थे? वे कितना ही दावा करें, लेकिन सारी हिन्दुस्तानी जनताके हार्दिक सहयोगके बिना अंग्रेज़ हिन्दुस्तानका कोअी बचाव नहीं कर सकते। यह अब दीयेकी तरह स्पष्ट हो गया है। ब्रिटेन क्या बर्माका बचाव करनेके लिअे भी मैदानमें नहीं अुतरा था? परन्तु बर्मा तो चला गया। अिसी तरह हिन्दुस्तान भी जापानियोंके हाथमें न चला जाय, अिसीलिअे हमारी यह लड़ाअी है। बचाव और रक्षाकी बातें तो अुन्होंने हर बार कहाँ नहीं कीं? जब मलायामें मार खा रहे थे, तब कहते थे कि आने तो दो सिंगापुरमें! वहाँ बता देंगे। सिंगापुरका किला तो अभेद्य था। अुस पर करोड़ों पौंड फूँक दिये गये थे। अेमरी साहब समय-समय पर कहते थे कि अुसका बचाव तो हर हालतमें किया जायगा। अुस किलेके बखानोंसे दुनियाके कान थकने लगे थे। परन्तु हुआ यह कि दुनियाके किसी भी किलेसे जल्दी वही सिंगापुरका विलक्षण, अलौकिक और अभेद्य किला ताशके घरकी तरह गिर पड़ा!

जब सिंगापुरमें सफ़ेद झण्डा फहराया गया, तब अिन्हीं अेमरी साहबने मलायाके पतनको महत्त्वहीन घटना घोषित की और कहा कि दुश्मनको बर्मामें तो आने दो, वहाँ अुसकी अच्छी तरह खबर ली जायगी। और कहते हैं कि सिंगापुरके चले जानेमें कोअी आश्चर्यकी बात नहीं, क्योंकि वहाँ दूसरी तरफ तैयारी रखी ही नहीं गअी थी। व्यर्थ खर्च करके गरीब जनता पर करका भार क्यों डाला जाय? सचमुच बड़े दयालु हैं न!

मगर अब तो बर्मा भी ताली बजा कर चला गया और दुश्मन हिन्दुस्तानकी सरहद पर आ खड़ा हुआ है। अैसे संयोगोंमें जब ब्रिटेनको अपने ही बारेमें भरोसा नहीं, तब हम ब्रिटेनका भरोसा कैसे कर सकते हैं? अिस वक्त तो हमारे यहाँ शहरोंमें युद्ध-प्रचारका काम करने निकले हुअे अुन कथित 'राष्ट्रीय युद्ध मोर्चेवालोंमें' भी डर घुस गया है कि अंग्रेज़ हिन्दुस्तानका बचाव नहीं कर सकते, क्योंकि तीन सालसे वे मार ही खाते रहे हैं।

अिस प्रकार अगर अंग्रेज़ हिन्दुस्तानमें भी अैसी ही मार खायें, तो फिर हमारे लिअे दूसरा तैयार ही है। हमारे भाग्यमें तो गुलामी ही बनी रहेगी। अिसलिअे अिस बदनसीबीसे बचनेके लिअे हमें अिस समय खुद आज़ाद होकर खड़े रहनेकी ज़रूरत पैदा हो गअी है।

लड़ाअी खतम होने पर हमें आज़ादी देनेका वचन दिया जाता है, मगर हम अिस वचनको कैसे मानें? अिसका क्या भरोसा कि लड़ाअीके अन्तमें हिन्दुस्तानको आज़ादी देनेके लिअे आप रहेंगे या नहीं, या आपमें वह आज़ादी देनेकी ताक़त बाकी रहेगी या नहीं? लड़ाअीके अन्तमें हिन्दुस्तान ही दूसरेके हाथोंमें पड़ जाय, तो फिर ब्रिटेन अुसे आज़ादी देने कहाँसे आयेगा? फिर अुस समय हम चर्चिल साहबको कहाँ ढूँढ़ने जायेंगे? और मान लीजिये कि आप जीत गये; मगर जब आपके कण्ठमें प्राण हैं, तब आप अैसी हरकतें कर रहे हैं, तो फिर जीतनेके बाद तो हिन्दुस्तान आपके गलेसे क्या छूटनेवाला है? क्या हम अितना भी नहीं समझते? पिछली लड़ाअीके बाद लायड जॉर्जने क्या किया, और अुसको मदद देनेवाले अुस पोथी-पंडित विल्सनको कैसा अुल्टा पटका, यह हमें खूब याद है। और अब ब्रिटेनके वचनों पर किसको विश्वास रह गया है? जब क्रिप्स-प्रस्ताव आये, तब खयाल हुआ कि अुनमें कुछ न कुछ अच्छी बात होगी, मगर अुनमें जो सामग्री भरी थी, वह तो सभीसे रद्दी निकली! तुम आज़ाद हो जाओगे तो भी हिन्दुस्तानके टुकड़े होंगे, विदेशी सेना रहेगी, ये सब बातें अुनमें थीं। फिर भी कहते हैं कि हम सारे संसारकी भलाअीके लिअे लड़ रहे हैं! अिस प्रकार अिनका अेक भी काम भरोसेके लायक नहीं पाया जाता।

हिन्दुस्तानको आज़ादी देनेके विरुद्ध अुन्होंने साम्प्रदायिक झगड़ेका बहाना खड़ा कर दिया है, हमारी घरेलू लड़ाअीको सामने रख दिया है। परन्तु बर्मामें साम्प्रदायिक झगड़े या फूट न होने पर भी अुसको कैसे छोड़ दिया? वहाँ तो यह सवाल पैदा करनेके लिअे भी नहीं रुके कि बर्मा किसे सौंपें! वहाँ तो ब्रह्मदेशको अुसकी किस्मत पर छोड़ कर पीछे देखे बिना ही भाग आये। अुस समय ये सब विचार क्यों नहीं किये? आज अब वह बर्माका बहादुर गवर्नर लंदनमें बैठा-बैठा शेखी बघार रहा है कि हमने बर्मा छोड़ तो दिया, मगर सब कुछ बरबाद करके ही छोड़ा है। बर्माके शहरोंकी अेक-अेक अींट ज़मींदोज़ कर दी। सब कुछ जलती हुअी धरतीके खप्परमें होम कर ही निकले हैं। गेहूँके साथ घुन भी पिस जाता है। हमें यह डर होनेका कारण है कि जैसा बर्मामें हुआ वैसा हिन्दुस्तानमें भी क्या नहीं हो सकता? और यदि अैसा हो तो कष्ट हमारे देशवासियोंको होगा या आप भागनेवालोंको? अिस समय विलायतमें बैठे-बैठे प्रचार कर रहे हैं कि बर्मामें जापानियोंकी स्थापित की हुअी सरकार कठपुतली सरकार है, पिट्ठू सरकार है, देशद्रोही सरकार है! मैं पूछता हूँ कि आपने दिल्लीमें जो भारत सरकार कायम की है, वह कैसी है यह तो बताअिये?

हमारी दलील अेक ही है कि अैसे आपत्तिकालमें हिन्दुस्तानके चालीस करोड़ लोग निष्क्रिय बैठे रहे, तो दुनियाभरमें हमारी निन्दा होगी। हमें यह नहीं चाहिये। हमें अब अंग्रेज़ोंमें यह भरोसा नहीं रहा कि वे हमारा बचाव कर सकेंगे। अिसलिअे हमें अपना बचाव खुद करनेको तैयार होना है और आक्रमण-कारियोंका सामना करके मित्र राज्योंको विजय दिलानी है। अिसीलिअे हम हिन्दुस्तानियोंको सत्ता देनेकी माँग कर रहे हैं। मगर जब हम यह कहते हैं, तब सरकार नाराज होती है। भले ही हो, हम मजबूर हैं।

ब्रिटेनमें कुछ लोग अपनेको हिन्दुस्तानका मित्र कहते हैं, परन्तु वे भी अिस समय हिन्दुस्तानियोंसे नाराज हो रहे हैं। कुछ समय पहले ब्रिटेनके मज़दूर दलके नेता मेजर अेटली हमारे साथ बड़ी मुहब्बत रखते थे। मगर वे ही मेजर साहब सत्तारूढ़ होने पर चर्चिलसे भी ज्यादा संकीर्ण विचारके बन गये हैं। क्रिप्स जैसा प्रसिद्ध समाजवादी भी आज साम्राज्यवादी बन बैठा है। और 'डेली हेरल्ड' जैसा मज़दूर अखबार भी अब हमें डाँट-डपट बता रहा है। मगर हिन्दुस्तानके प्रति जैसी शुभ निष्ठाका वे दावा करते हैं, वैसी सचमुच अुनमें हो, तो हमारा यह प्रस्ताव ब्रिटिश और अमरीकी दोनों जनताओंकी हमारे प्रति रही हुअी अुस शुभ निष्ठाकी कसौटी है। परन्तु यह कहना पड़ेगा कि आज जो रोष और डाँट-फटकारका वातावरण अुनमें फैला हुआ है, फैलाया जा रहा है, वह

अुस शुभ निष्ठाका सूचक नहीं है। यह सब तो अैसा बताता है कि ब्रिटेन हिन्दुस्तानकी रक्षा हिन्दुस्तानियोंके लिअे नहीं करना चाहता, बल्कि अपनी भावी सन्तानोंके हितोंकी रक्षाके लिअे अुसे हमेशा गुलाम रखना चाहता है। अिस-लिअे यह समझ लीजिये कि आपके सामने पेश किया हुआ यह प्रस्ताव हमारी कसौटी करनेवाला है।

हमारे खिलाफ यह आरोप लगाया गया है कि कांग्रेस जापानियोंको निमंत्रण देना चाहती है। यह सरासर झूठ वस्तुस्थितिको बिलकुल अुलटे रूपमें अुपस्थित करता है। यह बात जरा भी सही नहीं है कि हिन्दुस्तानमें कोअी जापानियोंको चाहता है। मगर हरअेक हिन्दुस्तानी दिलसे यह चाहता है कि आप अब यहाँ न रहें, यहाँसे चले जायँ, क्विट अिण्डिया, आप हमें छोड़ दें, यहाँसे हट जायँ, हम अपना देख लेंगे, हम हाथ पर हाथ धरकर बैठे नहीं रहेंगे।

अिसमें हमने अनुचित बात क्या कही? फिर हम तो यह भी कहते हैं कि भले ही रहें, सभी रहें। अैसा कीजिये कि अमरीकी, चीनी, हम सब साथ रहें, साथ रहकर और समान बन कर लड़ें। मगर नहीं, यह भी नहीं करना है। तो फिर आप बताअिये कि क्या करना है? अभी जैसा है वैसा ही रहने देना है?

क्या आप यह चाहते हैं कि हिन्दुस्तान सदाके लिअे अिंग्लैण्डका गुलाम बन कर सलामत रहे? मगर अब अैसा नहीं होगा। बहुत लोग कहते थे — अिंग्लैण्डमें बहुत दोस्त थे — अुन सबकी दोस्तीकी परीक्षाका दिन अब आ गया है। क्रिप्स साहब कहते हैं कि हिन्दुस्तानको दबाना पड़ेगा, और अिस कामके लिअे वे अमेरिकाकी मदद माँग रहे हैं। कितनी शर्मकी बात है! जब आपको निःशस्त्र लोगोंके साथ लड़नेमें रोने रो-रोकर अमेरिकाकी सहायता माँगनी पड़ती है, तब जापान और जर्मनीके सामने क्या बहादुरी दिखा सकते हैं? अमेरिकाको भी अैसी बातें सुन कर शर्म आनी चाहिये। और चीनकी मददका बहाना बताया जाता है। चीनके लोग तो भले हैं, बहादुर हैं। मगर मैं पूछता हूँ कि चीनके प्रति आपके दिलमें आज अचानक अितनी मुहब्बत कहाँसे अुमड़ आअी? पाँच साल तक क्यों नहीं अुमड़ी? पाँच-पाँच वर्ष तक चीनका कचूमर निकालनेमें जापानको हथियार तो अमेरिकाने ही मुहैया किये थे न? जब मंचुकुओ पर जापानी जुल्म ढा रहे थे, तब हमने अुसके खिलाफ आवाज अुठाअी थी। कांग्रेसने अुसका विरोध किया, तो अुसके जवाबमें अुस समय हमारे अेमरी साहब पार्लियामेन्टमें बोले थे कि यह तो जापानकी साम्राज्य-योजनाका अेक कार्यक्रम है। वह अिसी तरह हो सकता है। अिसमें हम कैसे दखल दे सकते हैं! चीनके प्रति अुनकी अैसी

मुहब्बत थी! और रूस जब लड़ाअीमें नहीं पड़ा था, तब रूसके विरुद्ध ब्रिटेनकी कैसी भावनाअें थीं सो कौन नहीं जानता? आज भले ही प्रेम छलक रहा हो। प्रेम तो ज़रूरतके मौके पर अिंग्लैण्डको बड़ी जल्दी अुमड़ आता है। मगर देखना यह है कि अुसकी तहमें क्या छिपा हुआ है?

कुछ लोग जनताके युद्धकी बात कहते हैं। अिस लड़ाअीको रूस और चीनकी जनताका युद्ध बताते हैं। कहते हैं कि गयी गुजरी बातें भूल जाओ। ठीक है, पिछली बातें भूल जायँ, मगर आज जो बीत रही हैं अुन्हें कैसे भूलें? हमने तो लड़ाअीके शुरूमें ही कह दिया था कि अगर आप यह कहते हों कि अिस युद्धकी जड़में लोकतंत्रकी बात है, तो ठीक है, हम आपके साथ हैं। मगर आप अैसी स्पष्ट घोषणा तो कीजिये। तब कहते हैं कि नहीं, यह सब तो बादमें होता रहेगा। अभी तो लड़ो, बस लड़ो और लड़ाअीमें मदद करो। आज स्वातंत्र्य और संस्कृति सब कुछ खतरेमें है। फ्रांसका पतन हुआ, तब भी ब्रिटेनने कहा, लड़ो लड़ो। सबसे लड़नेको ही कहते हैं। फ्रांस और अिंग्लैण्ड रातों-रात अेक प्रजा, अेक हुकूमत, और अेक प्राण बन जानेके लिअे तैयार हो गये, आजिज़ी की। वहाँ समय बीचमें नहीं आता था। लेकिन यहाँ कहते हैं कि चलती लड़ाअीके बीचमें विधान कैसे बदला जा सकता है? अिसके लिअे तो समय चाहिये। ठीक है। बादमें चर्चिल साहब अमेरिका गये। अेटलांटिक चार्टर तैयार हुआ। किसी ने पूछा: 'अुसमें हिन्दुस्तानका स्थान कहाँ है?' तो बोले: 'नहीं, अुसमें हिन्दुस्तानका स्थान नहीं हो सकता। यह चार्टर तो युरोपके देशोंके लिअे है। हिन्दुस्तानका प्रश्न घरेलू है। अैसी बात क्यों पूछते हो?' अमेरिकाकी सहानुभूतिका भी अुस समय पता लग गया! किसीने अिसका विरोध नहीं किया। जो आज शोर मचा रहे हैं, वे भी अुस वक्त कुछ नहीं बोले।

बादमें रूसके साथ बीस वर्षकी संधि हुअी। बेचारा रूस दो बरससे बहादुरीके साथ लड़ रहा है। अुस पर संकट आया, तब अुसने ब्रिटेनके साथ समझौता किया। जब यह पूछा गया कि अिसमें हिन्दुस्तानका स्थान कहाँ है, तब कहने लगे कि यह ब्रिटेनकी आंतरिक — घरेलू — व्यवस्थाका प्रश्न है, अुसमें रूस दखल न दे! मुसीबतका मारा रूस क्या करता? सब कुछ किया-कराया, तो भी अुसे संधिसे कितनी मदद मिली, यह हमने देख लिया। बेचारा दो सालसे अकेला पिट रहा है और अपने ही बल-बूते पर लड़ रहा है। तो फिर यह दुनिया भरकी जनताकी लड़ाअी कहाँ रही? मगर अिसमें रूसका दोष नहीं है। जब अुसकी अपनी आज़ादी खतरेमें पड़ गअी, तब अुसे जो ठीक लगा वह अुसने किया।

अब हमारी आज़ादीकी लड़ाअीके बारेमें कह दूँ । यह कड़ी लड़ाअी होगी । गांधीजीने आपको आज सावधान किया है । अिससे पहले हमने कअी लड़ाअियाँ लड़ी हैं; मगर आनेवाली लड़ाअी दूसरी ही तरहकी होगी । हमें देखना है कि अपने देशकी आज़ादीके लिअे रूस और चीन कैसी कुरबानियाँ कर रहे हैं ? कितने मर रहे हैं ? कितनी बरबादी हो रही है ?

यह न समझिये कि सरकारके साथ हमारा समझौता हो जायगा । अैसा मानेंगे तो धोखा खायेंगे । अिस समय जेलोंकी भी बात नहीं रही । यह तो दूसरी ही बात है । अैसी हलकी कुरबानीकी गिनती लगाकर यह प्रस्ताव तैयार नहीं किया गया है । अगर आप यह समझते हों कि सब कुछ सलामत रहेगा, बहुत हुआ तो जेलोंमें जा बैठेंगे, खायेंगे, पढ़ेंगे और ज्ञान बढ़ायेंगे, तो यह प्रस्ताव पास मत कीजिये ।

यदि आज आपको यह यकीन हो कि अिस लड़ाअीमें आज़ादी लेनेके लिअे मरनेकी नौबत आ सकती है, फना होनेका मौका आ सकता है, तो आगे बढ़िये । और यदि यह मानते हों कि अिससे जो कुछ मिलेगा देशको मिलेगा, हमें कुछ नहीं चाहिये, तो ही अिसमें शामिल होअिये ।

पार्लियामेण्टमें मेरे अेक बयान पर प्रश्नोत्तर हुआ । किसीने पूछा : पटेल कहता है कि कांग्रेसको सत्ता नहीं चाहिये, किसीको भी दे दो, मगर हिन्दुस्तानीको दे दो । क्या यह सच है ? तो बोले कि यह तो अेक व्यक्तिकी कही हुअी बात है, कांग्रेसकी नहीं । मगर बादमें अध्यक्ष महोदयने भी कह दिया कि आप चले जाअिये, किसीको भी अधिकार सौंपकर चले जाअिये, चाहें तो मुस्लिम लीगको सौंप दीजिये । मैं तो कहता हूँ कि अरे, चोर-डाकुओंको सौंपकर ही चले जाअिये । फिर हम आपसमें निपट लेंगे । मगर हिन्दुस्तानीको सौंपिये । आप छोड़कर चले जाअिये । नहीं तो हमें आपके साथ लड़ना ही पड़ेगा । अंग्रेज़ अब दावा करके कह रहे हैं कि हमने हिन्दुस्तानमें शान्ति स्थापित की है । सच है, आपने तो हिन्दुस्तानमें कब्रिस्तान बना दिया । मगर अब हिन्दुस्तानकी आँखें खुल गअी हैं । आपका यह दबदबा और सत्ता थोड़े समयकी है । हमें अपने ही हाथों सब काम करना है । अपनी रक्षा आप करनी है । अपनी आज़ादी हमींको लेनी है । मगर अंग्रेज़ अिस तरह भलमनसाहतसे नहीं छोड़ेंगे । जैसे दूसरी जगह छोड़ा, वैसे ही यहाँ भी छोड़ना पड़ेगा तब छोड़ेंगे ।

मारपीट करके तो हमें छुड़वाना नहीं है । यह हमारा रास्ता नहीं है । हमारा शस्त्र अहिंसाका है । वह हथियार चाहे कैसा ही हो, परन्तु पिछले बीस सालमें अिसीके द्वारा दुनियामें हमारी अिज्ज़त बढ़ी है । फिर अिस लड़ाअीमें

अैसी तो कोअी शर्त नहीं है कि दिलमें भी अहिंसा ही होनी चाहिये। यह तो सिर्फ़ कार्यकी बात है। कार्यमें अहिंसा चाहिये। सब पूछते हैं: 'कार्यक्रम क्या है?' लड़ाअीके समय हमारा कार्यक्रम हमेशा गांधीजीने तैयार किया है। वे बैठे हैं, वे जो हुक्म देंगे वही हम मानेंगे। नरम हो या गरम, जो वे कहें वही करना सिपाहियोंका काम है। हमें बड़ी-बड़ी धमकियाँ दी जा रही हैं। हुकूमतका तरीका सबको मालूम है। वह सबको पकड़ेगी। बहुतसी सूचियाँ और आर्डिनेंस तैयार किये गये हैं और किये जायँगे। वे तो पिछली लड़ाअियोंके समयसे दफ्तरोंमें तैयार ही रखे थे। अिसमें नअी बात क्या है? मगर हमें अपनी जिम्मेदारी सोच लेनी है, समझ लेनी है। जब तक गांधीजी मौजूद हैं, तब तक वे जो हुक्म दें, जो हिदायत जारी करें, अेकके बाद अेक जो कदम अुठानेको कहें, वही अुठाना है। न जल्दबाज़ी की जाय, न पीछे रहा जाय। हरअेक व्यक्तिको आज्ञा और अनुशासनका पालन करना है। लेकिन मान लीजिये कि सरकारने ही कुछ किया, सबको पहलेसे ही पकड़ लिया, तो क्या किया जाय? अैसा हो, अगर सरकार गांधीजीको पकड़ ले, तो अैसे मौके पर कदम-बदमकी बात नहीं हो सकती। फिर तो हरअेक हिन्दुस्तानीका — जिन्होंने अिस देशमें जन्म लिया है अुन सबका — यह फ़र्ज़ होगा कि अिस देशकी आज़ादी तुरन्त हासिल करनेके लिअे अुसे जो सूझे वही कर डाले। दुनियामें आज हमारी परीक्षा हो रही है। अुसमें हिन्दुस्तान कहाँ है, यह दिखाना हममें से हरअेकका कर्तव्य होगा। सन् १९१९ से लेकर आज तक हमने समय-समय पर जिन-जिन कार्यक्रमों पर अमल किया है, यह समझ लीजिये कि वे सभी अिस बारकी लड़ाअीमें आ जाते हैं। सब अेक साथ, अिकट्ठे ही, अलग-अलग नहीं। सबको और हरअेकको आज़ाद हिन्दुस्तानीके नाते काम करना है। अेक अहिंसाकी मर्यादा रखकर सभी कुछ कर गुज़रना है। अेक भी चीज़ बाकी नहीं छोड़नी है। संक्षिप्त और तेज़ लड़ाअी करनी है। यह मौका फिर नहीं आयेगा। यह काम जल्दी खतम करना है। जापानके यहाँ आनेसे पहले ही आज़ाद होकर अुसका मुकाबला करनेको तैयार रहना है। अिसमें अिस समय किसी सलाह-मशविरेकी गुंजाअिश नहीं है। जो यहाँ बैठे हैं, वे सब अितनी बात यहींसे लेते जायँ। जब तक गांधीजी हैं तब तक वे हमारे सेनापति हैं। परन्तु वे पकड़े जायँ, तो किसीकी जिम्मेदारी किसी पर नहीं रहेगी। सारी जिम्मेदारी अंग्रेज़ोंके सिर रहेगी। अराजकताकी जिम्मेदारी भी अुन्हीं पर होगी। अराजकताका डर अब देशको रोक नहीं सकेगा।

दूसरा कोअी मार्ग ही नहीं है। हमें आज़ाद होना है। गुलामी अब अेक क्षण भी हमें बरदाश्त नहीं हो सकती।

*

१३६

नौ अगस्त

[ता० ९-८-१९४५ को अहमदनगरके किलेसे बाहर आनेके बाद बम्बअीमें आम जनताके सामने दिया गया भाषण।]

आज ९ अगस्त है। आज सवेरे जब मैं तड़के ही अुठा और अखबार देखे, तो सबसे पहले मेरी नज़र बिहारके नौजवान श्री महेन्द्र चौधरीकी फाँसीकी खबर पर पड़ी। वेवल साहब कहते हैं कि बीती बातें भूल जाओ। ब्रिटेनके नये भारत मंत्री हिन्दुस्तानके साथ बराबरकी साझेदारी चाहते हैं। तो क्या अिसका यह अर्थ है कि अगर यहाँका अेक युवक फाँसी पर चढ़ाया गया, तो अिंग्लैण्डमें अिसके जैसा दूसरा युवक फाँसी पर लटकाया जाय? मुझे अिन सब बातों पर बड़ा संदेह रहता है। हमारे अध्यक्ष महोदयका आदेश है कि ९ अगस्त अिस प्रकार गौरव और शांतिके साथ मनाया जाय, जिससे कांग्रेसकी प्रतिष्ठा बढ़े। वे चाहते हैं कि अैसी कोअी बात न कही जाय, जिससे देशका वातावरण बिगड़े। हमने अब तक अुनके आदेशका शान्तिपूर्वक अमल किया है। मगर अिस बहादुर जवानकी फाँसीका क्या अर्थ किया जाय? अगर अिस नग्न सत्यका हमें कोअी अुपाय नहीं करना है, तो अब मेरा मुँह कोअी बन्द नहीं कर सकता। स्वराज्य मिले या न मिले, मगर हर बार अिस तरह गम खानेसे तो निश्चित ही स्वराज्य नहीं आयेगा। आज आपसे मुझे कोअी खास बात नहीं कहनी थी, मगर जब यह दिल दहलानेवाली फाँसीकी खबर पढ़ी, तब मुझे लगा कि सचमुच बोलनेका समय आ पहुँचा है।

पिछले तीन सालमें हिन्दुस्तानने बहुतसे फेरबदल देखे। सारी दुनियामें भी फेरबदल हुअे हैं। जेलमें तो हम लोग बिलकुल अँधेरेमें थे। बाहर आने पर कुछ-कुछ मालूम हुआ कि अिस अरसेमें क्या-क्या हुआ। जब हमें गिरफ्तार किया गया, तब यह भी नहीं बताया गया कि हमें कहाँ ले जायेंगे। मगर ये धमकियाँ भी दी गअीं कि मुक़दमा चलेगा। जो वाअिसरॉय चले गये, अुन्होंने तो यह लिखा भी था कि १९४२ के दंगोंके लिअे तुम पर मुक़दमा चलाया जायगा। हमने दो कारणोंसे अिस अवसरका स्वागत किया था। अेक तो अिससे हमारी लड़ाअीका न्याय्य होना दुनियाके सामने साबित किया जा सकेगा; दूसरे, साथ ही साथ असली अपराधियोंका पर्दाफ़ाश करनेका मौका मिलेगा। मगर वे वाअिसरॉय तो चले गये। कअी वाअिसरॉय आये और चले गये, मगर दाँव-पेंच सभीके अेकसे ही

होते हैं। हिन्दुस्तानने भारत-मंत्री भी कभी देखे। मगर पिछले भारत मंत्री जैसा कभी नहीं देखा गया। अेमरी साहबके चले जाने पर किसीकी आँखसे आँसू नहीं गिरे। मेरे खयालसे अुन्हें खुदको अिस बातसे कोअी खास आघात नहीं लगा कि अुन्हें जाना पड़ा।

हमें जब मुक्त किया गया, तब हमसे धीरेसे कहा गया कि 'गअी बीती बातें भूल जाओ। भूलें दोनों तरफसे हुअी हैं।' हमने अुन पर विश्वास किया और यह माना कि अुनकी वृत्तिमें कुछ परिवर्तन हुआ है, क्योंकि भूतकालमें वे कभी अपनी भूल स्वीकार नहीं करते थे। हमें महसूस हुआ कि साफ स्लेट पर शुरू करनेमें कोअी बुराअी नहीं है। परन्तु जब सुबह अुठ कर बिहारके बहादुर जवानकी फाँसीकी बात पढ़ी, तब मेरे मनमें यह शंका हुअी कि 'बीती ताहि बिसार दे' का अुनका नया सूत्र ब्रिटिश कूटनीतिकी चाल है। अगर पिछली बातें भूलनी हों, तो परदा दोनों तरफ पड़ना चाहिये। अगर अेक तरफ परदा पड़े, तो दूसरे पक्षकी हमें पूरी तरह कलअी खोलनी पड़ेगी।

जापानमें अणुबमसे बच्चों, जवानों, बूढ़ों और जानवरों वगैराके साथ पूरेके पूरे शहरोंका नाश कर दिया गया। यह पश्चिमी सभ्यताके अमर्यादित अत्याचारका प्रदर्शन है। कोअी यह कहे कि जापानको अुसका काफी नोटिस दिया गया था, तो अिससे क्या हुआ? और जापानने तो जैसा बोया वैसा काटा; मगर ये लोग अिस प्रकार नाशका मार्ग अपनायेंगे, तो दुनियाके लिअे गांधीजीको याद करनेके सिवाय और कोअी अुपाय नहीं है। क्योंकि अब अितना ही पागलपन बाकी रहा है कि संसारको नष्ट कर दिया जाय।

यह कहा जाता है कि तीन बड़े राष्ट्र अपनी सत्ताका कभी दुरुपयोग नहीं करेंगे और वे नअी समाज रचना करनेवाले हैं।

मगर मानवजाति अुनके अितिहासको जानती हो, तो अुनके अिस दावे पर विश्वास होना मुश्किल है। दूसरे दो की बात जाने दीजिये, मगर अंग्रेज़ोंको तो हम जानते हैं। वे लोग कहते हैं अेक बात और करते हैं अुससे अुलटा ही।

अिस समय अिंग्लैण्डमें मज़दूर दल सत्तारूढ़ हुआ है। रायटरका प्रतिनिधि यह जानने आया था कि मज़दूर-दलकी जीतका मुझ पर क्या असर पड़ा। मैंने कहा कि अुस दलसे ही पूछ लो! क्योंकि जीत अुसकी हुअी है। भूतकालमें हमें अुस दलका पूरी तरह कड़वा अनुभव हुआ है। अिस समय मुझे अुसकी जीतसे न खुशी है और न अफसोस। हम अुसके कामोंसे ही अुसका न्याय करेंगे। कुछ लोग कहते हैं कि हिन्दुस्तानका शासन तो गवर्नरों, सेक्रेटरियों और दूसरे असंख्य नौकरोंसे चलता है, अुसमें ब्रिटिश सरकार अिस फाँसी जैसी छोटी घटना पर कैसे ध्यान दे सकती है? तो मेरा यह जवाब है कि अगर वे अितनी

दूरसे ज़रा भी जिम्मेदारीके बिना चालीस करोड़ लोगों पर राज्य करना चाहते हों, तो अुन्हें यह भार छोड़ देना चाहिये और जो लोग अिस शासनको अच्छी तरह चलानेके लिअे समर्थ हैं, अुन्हें सौंप देना चाहिये। अगर फाँसी शासन तंत्रकी रोज-ब-रोजके कामकी ही बात हो, तो यह साफ़ कह देना चाहिये ताकि पता चले। 'भारत छोड़ो' हमारी लड़ाअीका सूत्र है, और वह तो अन्त तक रहेगा। हिन्दुस्तानने त्यागका रास्ता पसन्द किया है। अब अुसके लिअे विशेष योजनाअें देना बाकी नहीं रहता।

सरकारने १९४२ के दंगोंकी जिम्मेदारी कांग्रेस पर डाली है। अगर कांग्रेसने अैसे दंगोंका कार्यक्रम रखनेका अिरादा किया होता, तो अुसके परिणाम सरकारको अधिक खराब स्थितिमें डाल देते। मगर कांग्रेस तो अब भी अुस रास्ते नहीं ज़ाना चाहती। अुल्टे अुसने तो युवकवर्गको अुस रास्ते जानेसे रोका है। अुसे तो विदेशियोंको निकालना है। दंगोंके रास्ते पर चलनेसे हम अुस अुद्देश्यमें सफल नहीं हो सकते। यह बात सच है कि गांधीजीने अहिंसाका जो मार्ग बताया है, अुसे हिन्दुस्तान पूरी तरह नहीं अपना सका। गांधीजी जैसा अहिंसा पर श्रद्धा रखनेवाला आदमी मैंने अभी तक दूसरा नहीं देखा। आप तलवार न चला सकें, मगर तलवार देख कर डर जायें, अैसे तो आपको हरगिज़ नहीं होना चाहिये। गांधीजीने लोगोंको सरकारसे 'नहीं' कहना सिखा दिया है।

अिस लड़ाअीसे बहुत फायदा हुआ है। बहनोंमें बड़ी जाग्रति हुअी है। लड़ाअीके दिनोंमें देहातकी बहनोंको जो कष्ट सहने पड़े हैं, अुनकी शहरके लोगोंको कल्पना तक नहीं है। कांग्रेस कमजोर नहीं हुअी, बल्कि ज्यादा ताकतवर बनी है। अिसलिअे गांधीजीने जब लोगोंको गौरवपूर्वक सविनयभंग करनेकी सलाह दी, तब सरकारने कानूनको ताकमें रखकर अपनी फौजको लोगोंकी लड़ाअी दबा देनेकी हिदायतें दीं।

अंग्रेज़ हिन्दू-मुसलमानोंके झगड़ेकी बात करते हैं; मगर अिसकी जिम्मेदारी अुनके सिर पर किसने डाली है? अगर वे सच्चे हों तो अुन्हें कांग्रेस या लीगको सत्ता सौंप देनी चाहिये। अगर दुनियामें कोअी प्रामाणिक लोग हों, तो अुनकी निष्पक्ष अन्तरराष्ट्रीय पचायतको यह मामला सौंप देना चाहिये। लेकिन सरकारकी नीति साम्प्रदायिक झगड़ेका निपटारा न हो, तब तक कुछ भी न करनेकी हो, तो कांग्रेसका सरकारके साथ झगड़ा जारी रहेगा।

मुझे अेक सप्ताह ही ब्रिटेन पर राज करने दें, तो मैं ग्रेटब्रिटेनमें अैसे मतभेद खड़े कर दूँ कि अिंग्लैंड, वेल्स और स्कॉटलैंड सदाके लिअे झगड़ते रहें। अिसलिअे अैसे झगड़ों या मतभेदोंका बहाना ढूंढ़ना और सही बात पर परदा डालना ठीक नहीं है।

१३७
चुनावोंमें शक्ति दिखाअिये

[ता० २४-९-१९४५ को शिवाजी पार्क, दादरमें अेकत्र हुअे जनसमूहके सामने दिया गया भाषण ।]

आज हम बहुत समयके बाद किसी भी तरहकी रुकावट या प्रतिबन्धके बिना मिल रहे हैं। पाबन्दियाँ अभी-अभी खतम हुअी हैं, अिसलिअे अैसे विशाल जनसमूहके सामने भाषण हो सकता है। अिन तीन दिनोंमें बम्बअीमें महासमितिकी बैठक हुअी थी और अुसमें देशभरके कार्यकर्ता विचार करनेके लिअे जमा हुअे थे।

आज हम अिस प्रकार सार्वजनिक रूपमें अेकत्र हो सकते हैं, अिससे मुझे बड़ी खुशी हुअी है। आजकी सभामें स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्यामें अुपस्थित हुअी हैं। यह चीज़ हमारी राजनैतिक जाग्रतिको बताती है। अिस समय सब जगह नअी जाग्रति दिखाअी देती है। अिस नअी जाग्रतिका कारण स्पष्ट है। तीन बरस पहले कांग्रेसने अेक प्रस्ताव पास किया था। अुस प्रस्तावमें कांग्रेसने अपना अुद्देश्य और बात साफ-साफ शब्दोंमें कही थी। मगर दूसरे दिन, बहुत रात बीते, हम बारह आदमियोंको पकड़कर सरकारने कांग्रेस पर हमला किया था।

हम बारह आदमी यह मानते थे कि अब नअी मंज़िल आयेगी। लीग या सरकारसे समझौता होगा। कांग्रेस कमज़ोर पड़ती, तो हमें मौत जैसा लगता। हमें चिन्ता होती थी कि सरकारको चुनौती तो दी है, परन्तु क्या जनता अुस चुनौतीको अपनायेगी?

हमारे देशमें हमारा ही राज्य

मगर अुसके बाद अखबारोंमें हमने जो कुछ पढ़ा, अुससे हमें कल्पना हुअी कि लड़ाअी पूरे जोरसे छिड़ गअी थी। हमने साफ-साफ कह दिया था कि अपने देशमें हम अपना राज्य करना चाहते हैं। हमारी अनेक कठिनाअियोंका निपटारा खुद हमींसे होगा, अिसलिअे विदेशी सरकारको अब चले जाना चाहिये।

हमारे अिस आह्वानको जनताने अपना लिया। अुसने जो ताकत और शक्ति दिखाअी, अुसे सारी दुनिया जानती है। वह ताकत आज हिन्दुस्तान भरमें प्रसिद्ध है। जनताकी अुस ताकतने ही हमको जेलसे बाहर बुलवाया। वहाँसे हम शिमला गये और अुसके बाद महासमितिकी यह बैठक हुअी।

महासमितिकी बैठकमें जो प्रस्ताव पास हुअे हैं, अुनको पूरा-पूरा समझानेका मेरा अिरादा नहीं है। अुसके सिलसिलेमें थोड़ी बहुत बातें पंडितजी कहने वाले हैं। कांग्रेसके प्रति वफादारी और श्रद्धा बतानेका समय अब आ गया है। कौन कहता है कि हमारी लड़ाअी खतम हो गअी है! हमारे 'भारत छोड़ो' प्रस्तावमें से अेक भी अक्षर नहीं हटेगा। जब तक हुकूमत खतम न हो जाय, हिन्दुस्तान आज़ाद न हो जाय, तब तक अुसका अमल कायम रहेगा।

हमारी कभी हार नहीं होगी

हमारी अिस लड़ाअीमें कभी हार नहीं हुअी है। हम न कभी हारे और न हारेंगे; क्योंकि हमारी लड़ाअीकी बुनियाद सत्य पर है। हम अपने देशकी आज़ादी चाहते हैं। अगर हम अिंग्लैण्ड पर राज्य करनेकी या और किसी प्रदेशकी माँग करते, तो दूसरी बात थी। हम तो अपना ही हक माँग रहे हैं।

हमारा युद्ध अलग है। अहिंसा अुसकी बुनियाद है। आजकल विज्ञानका विकास हो गया है। अुसके अणुबमकी संहार-शक्ति अितनी अधिक बढ़ गअी है कि अुससे दस लाख आदमी थोड़ीसी देरमें खतम हो जाते हैं। संहार-शक्तिके कारण जीते हुअे देश भी आज घबराहटमें पड़ गये हैं।

हमें डरनेका कोअी कारण नहीं

मगर दुनियामें केवल हिन्दुस्तानको ही डर रखनेका कोअी कारण नहीं है। हम किसीको मारना नहीं चाहते। अिसलिअे किसीसे डरनेकी हमारे लिअे बात ही नहीं है। हिन्दुस्तानको सिर्फ अीश्वरका डर है। लोगोंने सरकारके किये हुअे आक्रमणका जवाब दिया। अिसके लिअे मैंने लोगोंको मुबारकबादी दी है। अिससे मुझे कुछ भी बुरा नहीं लगा।

सरकारकी चुनौतीका जवाब न मिलता, तो मुझे रंज होता। अिस सिलसिलेमें कांग्रेसका निर्णय बिलकुल साफ है। बाकी निर्णय तो जिसे यहाँसे जाना है अुसे करना है। हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी लड़ाअी जारी है और वह जारी ही रहेगी।

ब्रिटेनमें नअी मज़दूर सरकार आअी है। अिस सरकारकी अब तककी नीति स्पष्ट है। मज़दूर दली हो या अनुदार दली, सबकी नीति और दिलचस्पी हिन्दुस्तानको चूसनेकी है। अिसकी परीक्षा हो चुकी है। मगर यह सरकार नया दाव, नया तरीका आजमा रही है। हम अिसी तरीकेसे अिसका जवाब देना चाहते हैं। वे नया चुनाव करना चाहते हैं। अुसमें जनताकी ताकतका हमें परिचय देना है।

आगामी चुनाव

सरकार केन्द्रीय और प्रान्तीय धारासभाओंका चुनाव फिरसे कराना चाहती है। केन्द्रीय धारासभा दस बरस पुरानी है और लोगोंका रास्ता अैसा है, जो अंधेआदमीको भी मालूम हो सकता है। यह स्पष्ट है कि लोग कांग्रेसके पीछे हैं। मगर यही चीज़ अब नये तरीकेसे दुनियाको दिखा देनी है। यह कहा जाता है कि अिस चुनावके बाद लोकप्रतिनिधि सभा बनायी जायगी। अिस चीज़में दाँव-पेंच हैं, मगर फिर भी हमें चुनावमें भाग लेना है।

हमारी लड़ाअी बन्द नहीं हुअी है। वह जारी ही है। हमारे हज़ारों साथी अभी जेलमें हैं। जब तक हजारों नजरबन्द हैं, तब तक लड़ाअी बन्द नहीं होगी।

तरीका बदला है

परन्तु हमारी लड़ाअीका तरीका बदल गया है। जबसे हमें छोड़ा गया है, तबसे हमारी लड़ाअीका स्वरूप बदल गया है। यह हमारे आरामका समय नहीं है, परन्तु काफ़ी तैयारी करनेका, लोगोंको जाग्रत करनेका समय है।

केन्द्रीय धारासभाके मतदाता बहुत थोड़े हैं। हिन्दुस्तानकी आबादीके सिर्फ़ अेक फ़ी सदीको यह मताधिकार प्राप्त है। और सिर्फ़ दस फीसदी जनसंख्याको प्रान्तीय चुनावका मताधिकार है। केन्द्रीय धारासभामें बम्बअीकी दो बैठकें हैं। यह देखना है कि अिन दो बैठकोंके लिअे कोअी विरोधमें खड़ा न हो।

लीगकी अुलटी बात

सरकारने आपसमें लड़ानेकी गरज़से मुसलमानोंको अलग मताधिकार दिया है। आजकल लीगने यह बात फैलाअी है कि कांग्रेस राज्य हिन्दू राज्य है। मुस्लिम लीग शोर मचाती है कि पाकिस्तान चाहिये। मगर वह पाकिस्तान क्या है यह कोअी नहीं कहता। वे तो आसमानका चाँद माँगते हैं। सही बात यह है कि गुलामोंके पास न पाकिस्तान है और न हिन्दुस्तान।

अुत्तर भारतके, जहाँ पाकिस्तान बनेगा, मुसलमान, पंजाब और सरहदके मुसलमान यह चीज़ नहीं चाहते। मगर अिन सबका फैसला तो बादमें होगा। हिन्दुस्तान गुलाम है। अुसे हिन्दू-मुसलमान मिल कर आजाद करें, यही अेक सवाल है। अंग्रेज़ चले जायँ, तो यह सवाल दस दिनका है। अिसका अिसी तरीकेसे निपटारा होगा।

जनताकी ताक़त

आज कांग्रेसके पीछे जनताकी ताक़त है। अिस वक्त अंग्रेजोंके ढंग दूसरे होंगे, मगर अुससे कांग्रेसकी बातमें या ताक़तमें कोअी फ़र्क नहीं पड़ेगा। अेक

बात साफ़ है। जब तक हिन्दुस्तान आज़ाद नहीं होगा, तब तक दुनियामें शांति स्थापित नहीं होगी, तब तक किसीको भी चैन नहीं मिलेगा।

अिन चुनावोंके लिअे हमें तैयारियाँ करनी पड़ेंगी। अैसी हवा पैदा करनी होगी कि देशभरमें कांग्रेसके सामने खड़े रहनेकी कोअी हिम्मत न करे। बम्बअीमें अगस्त-प्रस्ताव और अिस चुनावके संबंधमें प्रस्ताव पास हुआ है। अिसलिअे बम्बअीमें अिस सम्बन्धमें कुछ भी कहनेकी ज़रूरत नहीं हो सकती। मताधिकार संकुचित होने पर भी, हमारी संस्थाओं पर प्रतिबंध होने पर भी और हमारे आदमियोंके जेलमें होनेके बावजूद, अिस चुनावमें हमें संसारको दिखा देना है कि जनता कांग्रेसके पीछे है।

नअी लड़ाअीकी तैयारी

यह समय नअी लड़ाअीकी तैयारीका है। आनेवाली लड़ाअी कैसी होगी, यह तो कौन कह सकता है? परन्तु अिस लड़ाअीकी तैयारियाँ तो आजसे ही करनी हैं। बम्बअीमें मत जुटानेके लिअे और कांग्रेसके मेम्बर बनानेके लिअे मैं आपके पास आनेवाला हूँ। अुसके पहले यह सब स्पष्टीकरण कर देता हूँ।

वन्देमातरम्, २५-९-१९४५

१३८

अेशिया छोड़ो

[ता० ३१-१०-१९४५ को सरदारके सत्तरवें जन्मदिन पर बम्बअीके नागरिकोंकी तरफ़से मानपत्र दिया गया, तब गोवालिया टैंक पर दिये गये भाषणसे।]

आप जानते हैं कि मैं बीमार होकर पूना अस्पतालमें पड़ा हुआ हूँ। गांधीजी मेरे जेलर हैं। खास कामके लिअे मुझे यहाँ आना पड़ा है। मुझे सत्तर वर्ष हो गये, यह मुझे आज पता चला। जेलमें मुझसे पूछते कि 'आपकी कितनी अुम्र हुअी?' तब मैं कहता था कि 'पिछला टिकट देख लीजिये।' किसीने युनिवर्सिटीसे मेरी जन्मतिथि ढूँढ निकाली। अुस परसे मालूम होता है कि सत्तर वर्ष हो गये।

जब मैं अपनी प्रशंसामें यह सब धूमधाम देखता हूँ तो घबराता हूँ। मगर मेरी बुद्धि ठिकाने है। 'साठी बुद्धि नाठी' नहीं हुअी। बीमार तो हूँ, मगर गांधीजीके साथ जानेकी शर्त कर रखी है। मेरा काम अभी बाक़ी है। अभी स्वराज्य नहीं आया। अिसलिअे चला जाअूँ, तो फिर आना पड़े और पंद्रह-बीस वर्ष पहाड़े रटनेमें चले जायँ। अिसलिअे मेरी अुमंग स्वराज्य लेकर

जानेकी है। सारे हिन्दुस्तानसे शुभेच्छाओंके तार-सन्देश आये हैं। सभीको जवाब देना संभव नहीं है। परंतु मैं चाहता हूँ कि आप सबके आशीष सफल हों। आप सबने जो प्रेम बरसाया है, अुससे मेरी ज़बान खुलती नहीं। समय आने पर खुलेगी।

हिन्दुस्तान स्वतंत्रताके किनारे आकर खड़ा है। अैसे समय हमें सँभलकर, और सावधानीसे अुसकी पतवार चलानी पड़ेगी। पिछली बातें भूलनी होंगी। तीन साल तक हमने कस कर लड़ाअी की। हमने प्रान्तोंमें जो मंत्रीपद लिये थे, सो तो अिसीलिअे कि अुनसे कितनी स्वतंत्रता मिलती है अिसका अंदाज़ लगाया जा सके। बादमें लड़ाअी छिड़ जाने पर हमने अिंग्लैण्ड और अमेरिकासे यह जाननेकी माँग की कि लड़ाअीका अुद्देश्य क्या है और कहा कि अिस बार गड़बड़ नहीं होने देनी है। सरकारने अुड़ते जवाब दिये और युद्धके नाम पर देशमें अितने जुल्म शुरू किये कि महात्माजीको 'हिन्द छोड़ो' की लड़ाअी छेड़नी पड़ी। अुसमें जो कुछ हुआ सो आप जानते हैं। अब यह कहा जाता है कि मित्रराज्य लड़ाअीमें जीत गये हैं। मगर कौन जीता और कौन हारा, यह सिर्फ अीश्वर ही जानता है। तीनों ताक़तें अब भी आपसमें अेक दूसरेको घूर रही हैं। फिर भी हमसे कहते हैं कि अेक होकर आओ। मगर अिसमें तुम नया क्या कहते हो? मुझे दस दिन अिंग्लैण्डका राज दे दें, तो अैसा कर दूँ कि बरसों तक अिंग्लैण्ड, वेल्स, स्कॉटलैण्ड सब लड़ें और अेक न हों। मगर यह बहादुरीका काम नहीं है। अभी अणुबमसे भले ही जापान हार गया हो, परन्तु सफेद चमड़ीका घमण्ड तो अुसने अुतार ही दिया है। आजकल सारे अेशियामें आग धधक अुठी है। युरोपियनोंको तमाम अेशिया छोड़ना ही पड़ेगा। जब तक अेशिया नहीं छोड़ेंगे, तब तक जगतमें शान्ति नहीं होगी। मैं 'भारत छोड़ो' से आगे बढ़ कर कहता हूँ कि 'अेशिया छोड़ो'। अेशियाका अेक-अेक देश स्वतंत्र होना चाहिये। अिंडोनेशियामें डच लोग अपनी नैतिक ज़िम्मेदारीकी बात कहते हैं और मज़दूर मंत्रि-मंडल होने पर भी अेटली साहब अुनकी हिमायत करनेकी बात करते हैं। मगर अनीतिका आचरण करनेवाले देशोंपर नैतिक ज़िम्मेदारी कहाँसे आ गअी?

जब मैं 'अेशिया छोड़ो' की बात कहता हूँ, तब अेक आदमी कहता है कि हमारे देशमें दीव, दमण और गोआ मौजूद हैं। लेकिन अेकका अंक मिट जाने पर शून्य अपने आप मिट जायँगे।

मुझे अंग्रेज़ों पर रोष नहीं है। मगर मुझे रोष है हिन्दुस्तानकी कायरता पर। दूसरा रोष अंग्रेज़ोंके साम्राज्यवाद पर और तीसरा रोष है युरोपियनोंके घमण्ड पर। अुनके घमण्डके कारण ही आज दुनियाकी यह हालत हुअी है।

पशु-पक्षी और बाल-बच्चे भी मर जायँ, अिस तरहसे बम मारनेको ये लोग सुधार कहते हैं। रूज़वेल्ट भाग्यवान थे जो चले गये। अुनके वारिस कहते हैं कि हमारे पास अणुबम है। अुसका रहस्य किसीको नहीं बतायेंगे। भाअी, रखो न अिस ज़हरको अपने ही पास। वह तुम्हारे ही कामका है। दूसरोंको मारोगे अुसके साथ ही तुम अपना विनाश भी बुला लोगे। दुनिया नाशके मार्ग पर घसीटी जा रही है। हमें वह मार्ग नहीं लेना है।

हमारी संस्कृति दूसरी है। हमने संसारमें किसी पर हमला नहीं किया। हम अैसे हिन्दुस्तानके अुत्तराधिकारी हैं। गोरखोंका और हमारी दूसरी सेनाओंका दूसरे देशोंकी स्वतंत्रता छीननेमें अुपयोग करके हिन्दुस्तानका नाम बदनाम ज़रूर किया जाता है। मगर मौजूदा भारतीय सेनाको सच्ची हिन्दुस्तानी सेना नहीं कहा जा सकता। अिस सेनाको वे राष्ट्रीय बनानेकी बात करते हैं, मगर अुन्हें हिन्दुस्तानी सेनाको कहाँ राष्ट्रीय बनाना है? कुछ समय पहले प्रधान सेनापतिने कहा था कि हिन्दुस्तानी सेनाको राष्ट्रीय बनाना तो है, परन्तु मुझे यह पता नहीं कि कितने समयमें बनाना है। आपको पता नहीं, तो अब तक क्या सो रहे थे? सुभाष बाबूने बिना सैनिक शिक्षाके ही कितनी जल्दी बहादुर राष्ट्रीय सेना खड़ी कर ली थी? तो आप क्यों नहीं कर सकते? अुस सेनाके चालीस हज़ार आदमी भारतवर्षमें हैं। अुनमेंसे बीस-पच्चीस पर मुक़दमे चलायेंगे और बाकीको छोड़ कर अुनके पीछे खुफिया पुलिस लगा देंगे। वह बढ़िया सेना है। वे अंग्रेज़ों और अमरीकियोंकी तरह बड़ी-बड़ी तनखाहें लेकर सेनामें भरती नहीं हुअे थे। अगर सचमुच ही हिन्दुस्तानी सेनाको राष्ट्रीय बनाना है, तो अिस सेनाको, जो वीर्यवान है, क्यों फेंक देते हो? कोअी कहेगा कि यह अहिंसावादी होकर सेनाकी बात क्यों कर रहा है? बात सच है कि दुनिया जब तक अहिंसाको स्वीकार नहीं करेगी, तब तक दुनियामें शान्ति नहीं होगी। जिसका अहिंसक मार्ग है अुसे कौन रोक सकेगा? परन्तु अहिंसाके नाम पर कायर बनकर घरमें बैठोगे तो काम नहीं चलेगा। गांधीजी तो कहते हैं कि कायर बननेके बजाय बन्दूक ले लो, मगर बहादुरी न छोड़ो। वीरतासे अहिंसाके रास्ते चलें, तो दुनियाको अणुबम भी भुला देंगे। परन्तु हममें कायरता — बुज़दिली — ही आ गअी है। नहीं तो क्या सचमुच चालीस करोड़ आदमियों पर मुट्ठी भर लोग राज्य कर सकते हैं? परन्तु आज यह स्थिति आ गअी है कि अुनकी हुकूमत चल नहीं सकती। वे भी यह बात जान तो गये हैं। मगर अुन्हें यथासंभव समय बिताना है। वे यह मानते हों कि विधान तैयार करनेमें पाँचेक साल निकाल देंगे, तो भूल करते हैं। विधान भले ही तैयार करो, लेकिन दिल्लीकी

गद्दी छोड़नेमें क्या लगता है? कहते हैं कि किसे सौंपें? मैं कहता हूँ कि काले चोरको सौंप दो, मगर हिन्दुस्तानीको सौंपो और तुम चले जाओ।

हमारा अेक ही नारा है। हिन्द छोड़ो और साथ ही अेशिया भी छोड़ो। जहाँ विदेशी सत्ता है, वहाँ स्वाभिमान नहीं है।

१३९

शिक्षाका माध्यम

[ता० ३०-११-१९४६ को नागपुर विश्वविद्यालयके स्नातकोंके सामने दिये गये दीक्षान्त भाषणसे।]

मैं देखता हूँ कि आपकी युनिवर्सिटीने आगेसे सारी शिक्षा देशी भाषा द्वारा देनेका बहुत महत्त्वका निश्चय किया है। पिछले पच्चीस-छब्बीस वर्षसे हमें अनुभव होने लगा है कि विदेशी भाषाके माध्यम द्वारा शिक्षा देनेके तरीकेसे हमारे युवकोंकी बुद्धिके विकासमें बड़ी कठिनाअी पैदा होती है। अुनका बहुतसा समय अुस भाषाको सीखनेमें ही चला जाता है; और अितना समय लगानेके बावजूद यह कहना कठिन होता है कि अुन्हें शब्दोंका ठीक-ठीक अर्थ कितना आ गया। शब्दोंका काम चीज़ोंकी पहचान देना है। बालक पहले चीज़ोंका ज्ञान प्राप्त कर लेता है और अुसके बाद अुनका परिचय दूसरोंको देनेमें काम आनेके लिअे अुनको बतानेवाले शब्द सीखता है। यह क्रिया ठेठ बचपनसे शुरू हो जाती है और जब तक मनुष्य जीता है तब तक होती रहती है। अेक शब्द आ जानेके बाद अुसी चीज़के लिअे काम आनेवाला दूसरा शब्द सीखना पड़ता है। अुसमें भी बालकके मन पर भारी बोझा पड़ता है; और वह शब्द भी बच्चेको अपने खेल-कूदमें और नाचते-कूदते दूसरोंके मुँहसे सहज ही सुननेको नहीं मिलता, तब वह अुसे रटकर याद रखनेको मजबूर हो जाता है। दिमाग पर पड़नेवाले यह बोझा अितना भारी होता है कि ज्यादातर वह शब्द बच्चेको याद रह जाता है। परन्तु अुस शब्दसे पहचानी जानेवाली चीज़का यथार्थ ज्ञान नहीं होता। शिक्षा जब पराअी भाषामें दी जाती है, तब शब्दोंको याद रखनेका बोझा ही विद्यार्थीके दिमाग पर नहीं पड़ता, बल्कि विषयको समझनेमें भी अुसे बड़ी कठिनाअी होती है। यह तो स्पष्ट ही है कि जहाँ रटनेकी शक्ति बढ़ती है, वहाँ समझनेकी शक्ति मंद पड़ जाती है। ये बातें अितनी स्पष्ट हैं कि अिस बारेमें अधिक विचार करनेकी भी ज़रूरत नहीं है।

फिर भी हमारी शिक्षा-प्रणाली अिस ढंगसे तैयार की गअी और हम सब अुसमें अितने रंग गये कि बहुतसे लोगोंके दिमागमें यह सीधी-सादी बात भी अभी तक पूरी तरह नहीं आअी।

आजसे लगभग तीस साल पहले सेडलर कमीशनने शिक्षाका माध्यम देशी भाषाओंको रखनेकी सिफ़ारिश की थी। अुसके बाद जबसे गांधीजी दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तान आये, तबसे वे ज़ोर देकर कहते रहे हैं कि अंग्रेज़ीके द्वारा शिक्षा देने-लेनेसे हमारी बुद्धि मंद हो जाती है, हमारी प्रगति नहीं होती, हमारी शक्तियोंका विकास नहीं होता। असहयोगकी लड़ाअीके दिनोंमें देशके अलग-अलग भागोंमें राष्ट्रीय विद्यापीठ स्थापित हुअे। वे सब सरकारके नियंत्रणमें या अुससे सम्बन्धित न होनेके कारण शिक्षाकी पद्धति और शिक्षाके माध्यमके बारेमें बिलकुल स्वतंत्र थे। अुन सभीने देशी भाषा द्वारा शिक्षा देनेकी कोशिश की और अपने प्रयोग द्वारा साफ दिखा दिया कि अूपरके यानी महाविद्यालयके वर्गोंकी शिक्षा भी देशी भाषाओं द्वारा दी जा सकती है। अिसके सिवाय अुन्होंने अपने प्रयोगसे यह भी साबित कर दिया कि अंग्रेज़ी भाषाके द्वारा शिक्षा देनेमें जितना समय लगता है, अुससे बहुत कम समयमें देशी भाषाके जरिये अुतनी ही शिक्षा दी जा सकती है। अितना ही नहीं, बल्कि अुससे विद्यार्थीका विषयका ज्ञान अधिक गहरा और अधिक पक्का होता है। अितना अनुभव होने पर भी ब्रिटिश भारतकी अेक भी युनिवर्सिटीने अैसा निश्चय नहीं किया कि हम अंग्रेज़ी माध्यम हटाकर शुरूसे आखिर तक देशी भाषाका ही माध्यम रखेंगे और ठेठ नीचेके बालवर्गोंसे लेकर महाविद्यालयकी कक्षाओंमें दी जानेवाली तमाम शिक्षा देशी भाषामें ही देंगे। आपके विश्वविद्यालयने अैसा निश्चय करके देशके बाकी विश्वविद्यालयोंके सामने अुत्तम आदर्श पेश किया है। अिस आदर्शको स्वीकार करके वे सब भी सच्ची शिक्षाके काममें मददगार हो सकते हैं।

मैं जानता हूँ कि अिसमें बहुतसी मुश्किलें हैं और अुन मुश्किलोंके खयालसे डरकर दूसरे विश्वविद्यालयोंने अैसा निश्चय करनेकी हिम्मत नहीं की। परन्तु कठिनाअियाँ दूर करनेका प्रयत्न ही न हो, तो कठिनाअियाँ मिटें कैसे? मुश्किलें दीखते ही हाथ-पैर बाँधकर बैठ जाना और अुन्हें दूर करनेकी कोअी कोशिश न करना निरी कायरता है। पुरुषार्थ कठिनाअियाँ पार करनेमें है। परन्तु मनुष्य ज्यादातर आलसी होता है। और आलस्य शरीरका ही नहीं होता, मनका भी होता है। अभी अिसमें से बहुतसे लोग अिस मानसिक जड़तासे मुक्त नहीं हुअे हैं। जो रिवाज या पद्धति परम्परासे चली आअी है, जिसकी रूढ़ि बन गअी है और जो गाड़ीके पहियोंसे पड़ जानेवाली गहरी लीककी तरह बन गअी है, अुससे बाहर निकलनेके लिअे मेहनत और अुद्यमकी ज़रूरत

होती है। लकीरवाला रास्ता अधिक लम्बा होने पर भी, नहीं, अुलटा होने पर भी साधारण लोगोंका रवैया लकीरसे बाहर निकलनेका नहीं होता। अिसीलिअे मानसिक जड़तामें फँसी हुअी हमारी युनिवर्सिटियाँ पुरानी लकीरको पीटती रहती हैं। नहीं तो अगर यह माना जाता हो कि देशी भाषाओंमें तमाम विषयोंके लिअे ज़रूरी पाठ्य-पुस्तकें न होनेके कारण देशी भाषाओंको शिक्षाका और विशेषतः महाविद्यालयकी अूँची शिक्षाका माध्यम बनानेमें मुश्किलें आती हैं, तो वे पाठ्य-पुस्तकें काफी संख्यामें तैयार करने या करानेमें क्या बाधा आती है? आपके विश्वविद्यालयने अिस प्रकारकी पाठ्य-पुस्तकोंके अभावकी कठिनाअीकी परवाह न करके, माध्यम बदलनेका निश्चय करके, बड़ी दीर्घदृष्टि और साथ ही हिम्मतका काम किया है; और अिस निश्चयके साथ काम शुरू कर देनेके बाद अुसके सिलसिलेमें जैसे-जैसे मुश्किलें सामने आती जायँगी, वैसे-वैसे अुनके निराकरणका प्रयत्न करके अुन्हें हटाते रहेंगे, अैसा निश्चय करके विश्वविद्यालयने अपनी अूँचे दर्जेकी बुद्धिका परिचय दिया है। अिस अेक ही तरीकेसे अिस अटपटे सवालका हल निकल सकता है। और युनिवर्सिटीने यह तरीका अख्तियार करके यह साबित कर दिया है कि जहाँ किसी कामको पार लगानेकी अिच्छा और दृढ़ संकल्प होता है, वहाँ कोअी न कोअी रास्ता या अुपाय कहीं न कहींसे मिल ही जाता है। मैं आशा रखता हूँ कि आप लोग अिस रास्ते पर दृढ़तासे आगे बढ़ेंगे; और जब शुरूसे लेकर ठेठ आखिर तककी सारी शिक्षा देशी भाषामें देंगे, तो आपको मालूम होगा कि अिससे हमारे नौजवानोंका अधिक वक्त बचता है, अुनकी बुद्धिका अधिक विकास होता है और वे सब असाधारण मानसिक शक्तिका पाथेय लेकर संसार-पथ पर अग्रसर होते हैं।

अंग्रेजीका स्थान

देशी भाषाको शिक्षाका माध्यम बनानेका अर्थ यह नहीं होता कि विदेशी भाषाअें हमें सीखनी नहीं हैं या सिखानी नहीं हैं। आधुनिक संसारमें कोअी भी मुल्क अपनी चारदीवारीमें बन्द रहकर अकेला अपनी तमाम ज़रूरतें पूरी करनेमें समर्थ नहीं होता। दूसरे देशोंके साथ सम्पर्क रखे बिना अुसका काम नहीं चल सकता। अैसे सम्पर्कके लिअे विदेशी भाषाअें जानना ज़रूरी है। परन्तु हरअेक देशवासी विदेशोंके सम्पर्कमें नहीं आता। बहुत थोड़े प्रजाजनोंके द्वारा यह सम्पर्क साधा जाता है। अिन थोड़े लोगोंको विदेशी भाषाओंका ज्ञान ज़रूर प्राप्त करना चाहिये। अिसी तरह जो लोग विदेशोंकी विचारसरणियोंके साथ परिचित रहना चाहते हैं, अुन्हें भी विदेशी भाषाअें जान लेनी ज़रूरी हैं, और जो लोग विदेशोंमें सफर करना चाहते हैं या दूसरे देशोंके साथ व्यापार करना चाहते हैं, अुनके लिअे भी विदेशी भाषाका थोड़ा-बहुत ज्ञान ज़रूरी है। मगर यह स्पष्ट है कि अिन सब

प्रकारके लोगोंकी संख्या देशकी आबादीकी संख्याके मुकाबलेमें बहुत थोड़ी होगी; और अुन्हें भी अपने कामके लिअे जितना ज़रूरी हो, अुतना ही विदेशी भाषाओंका ज्ञान चाहिये। अिसके सिवाय, अैसे लोग भी हरअेक देशमें होने चाहियें, जो विदेशोंमें प्रकाशित होनेवाले सभी अूँचे दर्जेके ग्रंथोंका अनुवाद करके अपने देश-बंधुओंको अुनका परिचय करायें। अैसे सब लोगोंको विदेशी भाषा सीख लेनी चाहिये और ज़रूरी मालूम हो, तो अुन्हें विदेशोंमें हो आना चाहिये। जो लोग अिस तरहके कामोंमें पड़ना चाहें, अुन्हें विदेशी भाषाअें सीखनेका पूरा तरह मौका और साथ ही साधन भी मिलने चाहियें। परन्तु हम याद रखें कि आखिर सौ में निन्यानबे मनुष्य देशके अन्दर ही रहनेवाले हैं और अुन्हें विदेशी भाषा सीखनेकी ज़रूरत नहीं होती, और न भविष्यमें ही होगी। अिसलिअे सारे विश्वविद्यालयोंका फ़र्ज़ है कि वे सब सौ में से अेकके लिअे विदेशी भाषा सीखनेका बन्दोबस्त करें, और साथ ही सौ में से निन्यानबेकी शिक्षामें गाफ़िल न रहें। अिस हक़ीक़तको ध्यानमें रख कर अपनी शिक्षाप्रणाली तैयार करनेमें अुचित परिवर्तन करें और अिस प्रकार यह साबित करें कि वे प्रगतिशील हैं।

हरिजनबन्धु, २२-१२-१९४६

१४०

स्वराज्य-भवनकी चार दीवारें

[ता० ३०-१२-१९४६ को गुजरात विद्यापीठमें कांग्रेस कार्यकर्ताओंके सामने दिये गये भाषणका महत्त्वपूर्ण भाग।]

गांधीजी अिस समय ७७ वर्षकी अुम्रमें पूर्वी बंगालके दूर देहातमें, जहाँ रास्तों पर आसानीसे चला भी नहीं जा सकता, अकेले घूम रहे हैं; हिम्मत हारे हुअे मनुष्योंको हिम्मत बँधा रहे हैं; जिनका माल-असबाब लुट गया है, जिनके सगे-सम्बंधी मर गये हैं, अुन्हें आश्वासन दे रहे हैं और हिन्दू-मुसलमान सबको भाओी-भाओीकी तरह रहनेका अुपदेश दे रहे हैं।

गांधीजी जब हिन्दुस्तान आये, तब अुन्होंने चार बातें देशके सामने रखीं। वे अगर हमने अच्छी तरह की होतीं, तो आज हम स्वतंत्र हो गये होते। वह स्वतंत्रता, जैसी तमाम दुनियामें कहीं न हो, अैसी अलग ही प्रकारकी होती। अब भी स्वतंत्रता तो हमें मिलेगी ही, मगर अुसमें मिठास नहीं दिखाओी देती।

जिन चार चीज़ोंकी बुनियाद अुन्होंने डाली, अुनमें से अेककी भी दीवार हम पूरी न बना सके। राष्ट्रीय शिक्षाके लिअे अिस और दूसरे विद्यापीठोंकी स्थापना हुअी। देशभरमें जगह-जगह विद्यालय खुले। विद्यार्थियोंने स्कूल-कॉलेज

छोड़े, डिग्रियोंका मोह छोड़ा और गांधीजीके सामने स्वराज्यकी प्रतिज्ञा ली। अुस वक्त देशमें जो चेतना आ गअी थी, अुसकी कल्पना तो अुन्हींको होगी, जिन्होंने अुसमें हिस्सा लिया होगा। वह खिलाफतका ज़माना था। हिन्दू, मुसलमान और सब जातियाँ अेक हो गअी थीं। वकीलोंने वकालतका धंधा छोड़ कर अुम्र भर सेवा करनेकी प्रतिज्ञा ली थी। अुस वक्तके पुराने तपस्वी आज भी लड़ाअीका अधिकांश बोझा अुठा रहे हैं। गांधीजी अुस वक्त जो कहते थे, वही आज भी कहते हैं। आजकल तो नये-नये कॉलेज खुलते ही जा रहे हैं और अब विद्यार्थियोंको विदेश जानेका मोह लगा है।

दूसरी दीवार हिन्दू-मुस्लिम अेकताकी है। सच्चा स्वराज्य चाहिये तो हिन्दू-मुसलमानोंको अेक होना ही चाहिये। ६ अप्रैल १९१९ को देशभरमें जुलूस निकले थे। अुनमें हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी, यहूदी, अेक भी जाति बाकी नहीं रही थी। स्त्री-पुरुष, गरीब-अमीर, जवान-बूढ़े, सभी अुन जुलूसोंमें शरीक हुअे थे। मगर आज दो मुख्य जातियोंके बीच कितना अधिक अन्तर पड़ गया है!

स्वराज्य-भवनकी तीसरी दीवार स्वदेशी यानी खादीकी थी। किसी भी मनुष्यने अपने सिद्धांतके लिअे अितनी तपस्या की हो, अैसा दूसरा अुदाहरण संसारमें नहीं है। अिस अुम्रमें चाहे कितना ही काम हो, कैसी ही तंदुरुस्ती हो, तो भी गांधीजी आध घंटा नियमित रूपसे कातते हैं। खादीके लिअे अुन्होंने अखिल भारत चरखा संघकी स्थापना करनेका परिश्रम किया। परन्तु यह दीवार भी हम पूरी नहीं चुन सके। खादी पहनने पर भी खादीकी जड़में जो भावना है, वह हममें नहीं आअी। आज मिलवाले शोर मचा रहे हैं कि हिन्दुस्तानमें कपड़ेका अकाल पड़नेवाला है। यह सुनकर मुझे आश्चर्य होता है। अंग्रेजोंके हिन्दुस्तान आनेसे पहले हमारे पास कपड़ेकी विद्या थी। वह हमें वापस लानी चाहिये। हिन्दुस्तानमें रूअी पैदा हो और कपड़ेके लिअे हिन्दुस्तान चिल्लाये, यह कैसी बात है!

स्वराज्य-भवनकी चौथी दीवार अस्पृश्यता-निवारण है। गांधीजी यहाँ आये तब अुन्होंने अेक हरिजन लड़कीको गोद लिया था। अुस वक्त सनातनियोंमें खलबली मच गअी और वे चिल्लाने लगे कि यह तो कोअी धर्मका नाश करनेवाला आ गया है। परन्तु दक्षिण भारतमें, जहाँके सनातनी बहुत कट्टर माने जाते हैं, और जहाँ सबसे ज्यादा छुआछूत थी, हरिजनोंके लिअे बड़े-बड़े मंदिर खुल रहे हैं, लेकिन यहाँ अभी डाकोरका मंदिर भी नहीं खुला है और देहातमें हरिजनों पर मारपीट होती है।

साम्प्रदायिक अेकताके लिअे गांधीजीने अेक बार २१ दिनका अुपवास किया था। अुसी प्रकार अस्पृश्यता-निवारणके लिअे २१ दिनका अुपवास किया। स्वामीनारायण पंथमें अस्पृश्यताको स्थान नहीं है, जैन संप्रदायमें अस्पृश्यताको स्थान नहीं है, मगर लोक-प्रवाहमें बहकर अुनमें भी छुआछूत घुस गअी है। गुजरात अस्पृश्यता-निवारणमें सबसे पीछे है, यह हमारे लिअे शर्मकी बात है। अस्पृश्यता खतम होनेवाली तो है ही। गांधीजीने जो मंत्र फूंका है, अुससे हरिजनोंको भी स्वतंत्रताकी भूख लग गअी है। हमें जिस किस्मकी आज़ादी चाहिये, अुसे गांधीजी जानते हैं। हमें वह अच्छी नहीं लगती। हमे तो गुलामीका शौक लग गया है। अिन सारी बातों पर आप गुजरातके सब कार्यकर्ता खूब विचार कीजिये।

आजकल तो लोगोंको सन्निपात हो गया है। जिसे देखो वही कहता है, मुझे अिंग्लैंड जाना है, अमेरिका जाना है, रूस जाना है। विदेश जानेका मोह हो गया है। ये लोग युरोपकी बड़ी-बड़ी मशीनों और अुद्योगोंकी, और वहाँकी नअी समाज रचनाकी बातें करते हैं। मगर यह गांधीजीका रास्ता नहीं है।

गांधीजीने विदेशोंमें हिन्दुस्तानकी अिज्ज़त खूब बढ़ाअी है। अुनके लिअे हमारे मनमें खूब पूज्यभाव है। परन्तु अुनके पीछे-पीछे चलनेकी वृत्ति जितनी चाहिये अुतनी नहीं है।

रास्ते चलते निर्दोष आदमीको छुरा भोंक देना दूसरे प्रकारका सन्निपात है। बम्बअीमें चार-छः छुरे भोंकनेकी वारदातें होनेकी खबरें रोज सवेरे पढ़ते हैं। अिससे दुनियामें हमारी बेअिज्ज़ती होती है। अिससे तो अच्छा है कि हम दो छावनियोंमें बँटकर खुल्लमखुल्ला पेट भरकर लड़ लें। अेक समय दुनियाभरमें बम्बअीकी कितनी अिज्ज़त थी? वहाँकी पचरंगी प्रजाको भाअीचारेके साथ मेल-जोलसे रहते देखकर देश-विदेशसे आनेवाले लोगोंको आश्चर्य होता था। अुसके बजाय आजकल रोज सुबह यह पढ़ते हैं कि अितनी हत्याअें हुअीं। ये कोअी स्वराज्यके लक्षण नहीं हैं। जैसे हैज़ा फैलता है, वैसे ही साम्प्रदायिक ज़हर देशमें फैल गया है। मगर अब आशा रखते है कि वह ठंडा पड़ने लगा है।

गांधीजीने अंग्रेज़ोंसे कह दिया कि तुम हिन्दुस्तान छोड़कर चले जाओ। अब वे जानेको तैयार हो गये हैं। अगर विदेशियोंको निकाल देना ही स्वराज्यका अर्थ हो, तब तो स्वराज्य नजदीक आ गया है। अंग्रेज तो जायँगे ही। हम अपनी व्यवस्था करें या न करें, अंग्रेज़ तो कहेंगे, लो, हम तो यह चले। अिसलिअे अब जो लड़ाअी लड़नी है, वह हमारी अपनी कमजोरियोंके खिलाफ लड़नी है। हमें स्वराज्य चाहिये तो आपस आपसमें बखेड़ा करनेमें

कोअी लाभ नहीं है। हमें यह देखना चाहिये कि गांधीजी क्या काम कर रहे हैं, किस लिअे कर रहे है और किस ढंगसे कर रहे हैं।

आजकल प्रान्तोंमें कांग्रेसी मंत्रि-मंडल हैं। कांग्रेसी सरकारका अर्थ यह नहीं है कि अकेले कांग्रेसी ही राज्य करें। कांग्रेस चाहती है कि हरअेक जातिको अैसा लगे कि अुसका अपना राज्य है। हिन्दुस्तानी ढंगसे स्वराज्य चलाना न आता हो, तो विदेशी ढंगसे चलानेकी शक्ति प्राप्त करनी चाहिये।

जब अिंग्लैंड हार रहा था — अब गया, अब गया हो रहा था, तब वहाँके लोगोंने चर्चिलको बिठाया और अुसने अिंग्लैंडको फिर खड़ा कर दिया। मगर ज्योंही लड़ाअी खतम हुअी कि तुरन्त अुसे अुखाड़ फेंका। फिर भी वहाँ मारपीट नहीं होती।

मैंने गांधीजीको हर साल अेक महीने बारडोली ले आनेका संकल्प किया था। गुजरातमें अभी तक जो छुआछूत है, अुसके हालचाल अुनके पास पहुँचने लगे। किसीने पत्र लिखा कि आप आते तो हैं, मगर यहाँ तो हरिजनोंको मन्दिरमें ही नहीं घुसने देते। अिससे अुन्हें बड़ा दुःख हुआ। मुझे भी दुःख हुआ। अस्पृश्यता मिटाये बिना हमारा काम नहीं चल सकता। अिस समय थोड़े हरिजन हमारे साथ न हों, तो अिसमें आश्चर्य नहीं। डॉ० आम्बेडकर पर जो बीती है, वैसी थोड़ों पर ही बीती होगी। अुनमें जितनी योग्यता है, अुतनी हममें से थोड़ोंमें ही होगी।

हम केन्द्रीय सरकारमें जाकर बैठे तो हैं, परन्तु हमें वहाँ सुख-चैन नहीं है। हम तो वहाँ लोगोंकी मुसीबतें दूर करने गये थे। अनाज और कपड़ेकी कठिनाअियाँ, रिश्वतकी बुराअी आदि प्रश्नोंका निपटारा करनेके बजाय अुल्टे हम वहाँ झगड़ेमें फँस गये हैं।

सरकारी व्यवस्था ढीली हो गअी है। अब तक यह कहा जाता था कि जब तक सूर्य रहेगा, तब तक अंग्रेज़ोंका राज्य रहेगा। अिसलिअे सिविल सर्विस-वाले अच्छी तरह काम करते थे। मगर अंग्रेज़ोंका राज्य अस्त हो रहा है, यह देख कर सिविल सर्विसवाले भी बेपरवाह हो गये हैं। दिल लगाकर काम नहीं करते। 'सर्विस' में सभी बुरे आदमी हों सो बात नहीं है। परन्तु अुन्हें अैसा लगता है कि हम कहाँ अिस झगड़ेमें पड़ें?

कांग्रेसके आदमियोंको सच्चा सेवाधर्म सीखना है। हम अपना घर अच्छी तरह सँभाल लें, तो स्वराज्य हमारे हाथमें ही है। अंग्रेज़ जायँगे, अिसमें कोअी शक नहीं है। चर्चिल जैसे लोग अभी तक हुकूमतके सपने देखते हैं और बापदादाकी कब्जेमें ली हुअी अिस दुधारू गायको छोड़ना नहीं चाहते। अिसीलिअे वे मुसल्मानों और हरिजनोंको अुकसा रहे हैं। मगर यह बात अब अधिक नहीं

चलेगी। अच्छा हो या न हो, मगर अुन्हें तो जाना ही है। थोड़े-बहुत अंग्रेज भले ही स्वार्थसे कुछ भी कहें। बाकी सब तो ठोक-बजा कर कहते हैं कि तुम्हें अपने आप निपट लेना है, हम तो जानेवाले हैं।

हिन्दुस्तान स्वतंत्र होने आया है, अब ढेरों आदमियोंकी ज़रूरत होगी। अिस समय तो हमारे पास अैसी योग्यतावाले काफी आदमी भी नहीं हैं।

सच्चा स्वराज्य चाहिये तो हमें अपना रास्ता बदलना पड़ेगा। अिस समय जिस रास्ते जा रहे हैं, अुससे तो पाकिस्तान भी नहीं मिलेगा।

(अेक सवालके जवाबमें :)

जयप्रकाश कहते हैं कि छः महीनेमें शासनतंत्र टूट जायगा और लड़ाअी तो करनी ही होगी। मैं अुनसे सहमत नहीं हूँ। लड़ाअी आनेवाली होगी, तब मेरी भाषा दूसरी ही होगी। मगर अैसा कोअी नहीं कहेगा कि चूंकि छः महीने बाद मौत आनेवाली है, अिसलिअे आजसे ही थोड़ा-थोड़ा ज़हर लेना शुरू कर दें। मैंने जो कार्यक्रम आपके सामने रखा है, अुससे लड़ाअीकी तैयारी भी हो सकती है।

वे गवर्नरोंको जेलमें बन्द कर देनेकी बात कहते हैं। मगर गवर्नर कोअी अैसे गये-बीते नहीं हैं। अुन्हें जेलमें क्यों बन्द किया जाय? वे तो कहते ही हैं कि हम जानेवाले हैं।

('तलवारका सामना तलवारसे करो', अिसका अर्थ अेक भाअीने पूछा। अुसके जवाबमें :)

अिसमें समझानेकी क्या बात है? वह तो दीये जैसी स्पष्ट है।

गांधीजीकी मुख्य बात अहिंसाकी है, परन्तु अुसकी तैयारी न हो तो रोते-पीटते भागकर पुलिस चौकी पर मत जाओ, यही अिसका अर्थ है।

हम पर जिन लोगोंकी रक्षाकी जिम्मेदारी हो, अुन पर खतरा आने पर खाटके नीचे छिप जाने या दरवाज़े बन्द कर लेनेके बजाय तो रक्षाके लिअे लड़ते-लड़ते मर जाना अच्छा है। यही अिसका अर्थ है।

अिसका अर्थ यही है कि जब जानवर भी तंग आकर सींग अुठाता है, तब मनुष्य अपनी बहन-बेटी पर खतरा आनेसे भाग जाय, तो वह जानवरसे भी बदतर कहलायेगा। अिसलिअे हमें अपनेमें से कायरता निकाल देनी चाहिये।

अेक हिन्दुस्तानके सिवाय सारी दुनियामें तलवारकी बात है। मगर तलवारके जोरसे झगड़ोंका अन्त नहीं हुआ। यह तो अभिमन्युके व्यूहकी तरह है। अुसे खतम करनेके लिअे गांधीजीने अहिंसाका मंत्र निकाला है।

हरिजनबन्धु, ५-१-१९४७

१४१

प्राथमिक शिक्षकोंसे

[ता० ४-४-१९४७ को बोचासण वल्लभ विद्यालयमें शिक्षक तालीम वर्ग और दूसरे लोगोंके सामने दिया गया भाषण।]

१९३० में जेलमें पड़े-पड़े काकासाहबने अिस विद्यालयकी कल्पना की और सन् '३१ में संधिके दिनोंमें अिसे खोला। अिस जिलेमें जो पिछड़ी हुअी जाति है, अुसके बच्चोंको शिक्षा देंगे तभी अुस जातिकी त्रुटियाँ और बुराअियाँ मिटाअी जा सकती है। अब तक जो काम हुआ है, वह बहुत थोड़ा हुआ है, मगर अच्छा हुआ है। जो लड़के यहाँसे तालीम पाकर गये हैं, वे सांसारिक जीवनमें अिस तरह फँसे हुअे नहीं हैं कि अिस संस्थामें प्राप्त किये हुअे संस्कार मिट जायँ। गांधीजीने स्वराज्यकी लड़ाअी दो तरहसे की। अेक अुग्र प्रकारसे, जिसमें सरकारके साथ संघर्षमें आना पड़ा। दूसरी खादी और रचनात्मक कामोंके द्वारा, जिसमें सरकारके साथ संघर्षमें आये बिना लोगोंको स्वराज्य लेनेकी तालीम दी गअी। जैसे आमके पेड़का फल पक कर गिर पड़ता है, वैसे अिस ढंगसे स्वराज्य गोदमें आ पड़ता है। दोनों तरीकोंसे काम बहुत थोड़ा हुआ है, फिर भी स्वराज्य तो आ ही जायगा। चारों तरफ अविश्वास और अशांतिका वातावरण है, क्योंकि विश्वयुद्धमें दारुण संहार हुआ है और वैर-भाव फैला है। अुसके फल सारी दुनिया भोग रही है। अभी हममें स्वराज्यको हज़म करनेकी शक्ति नहीं आअी है। और हम युद्धके कारण पैदा हुअी आर्थिक अशान्तिके कारण घबरा गये हैं।

जिस जर्मनीने अिस युद्धमें अितना जोर दिखाया, वह आखिर हार गया है और आजकल वहाँ बहुतसे लोग भूखों मर रहे हैं। यह हारा हुआ जर्मनी अिस समय भूखके मारे अुत्तेजित हो गया है।

हमारे यहाँ भी अगर बाहरसे खुराक न मिले, तो जैसे सन् '४३ में बंगालमें ३० लाख आदमी मर गये, वही हाल जगह-जगह हो जाय। कंट्रोलसे जो खुराक दी जाती है, वह काफी नहीं होती। किसान जो कुछ पैदा करते हैं, वह सब खुद नहीं रख सकते। अिसलिअे चारों तरफ असंतोष और अशांति फैली हुअी है।

शिक्षक भी दुःखी वर्गोंमें से अेक है। संभव है, शिक्षकोंका वेतन हिन्दुस्तानमें सबसे कम हो। यह कहा जाता है कि शहरोंमें भंगीको जितना वेतन मिलता है,

शिक्षकको बहुतसी जगहों पर अुतना भी नहीं मिलता। शिक्षकका दर्जा और सम्मान नहीं रहा। समाजमें शिक्षकके धंधेकी कदर घट गअी है।

शिक्षक खुद अुसके धंधेको जो स्थान मिलना चाहिये, वह देनेकी कोशिश न करे तो सरकार कुछ नहीं कर सकती। समाज थोड़ी मदद दे सकता है, मगर मुख्य बात शिक्षकके हाथमें है। मान-सम्मान किसीके देनेसे नहीं मिलते, अपनी योग्यतानुसार मिलते हैं। शुरूके ज़मानेमें शिक्षक अैसे मकानोंमें नहीं पढ़ाते थे, परन्तु अुनकी अिज्ज़त अच्छी थी। आजकल तो शिक्षकोंका ज्यादातर ध्यान अपने पेटकी तरफ खिंचा हुआ है। मैं नहीं कह सकता, यह कहाँ तक अुचित है। परन्तु अितना कह दूँ कि हड़तालें शिक्षकोंको शोभा नहीं देतीं। हड़ताल मज़दूरका काम है। मज़दूर आज हड़ताल कर दें, तो कल अुसका फैसला हो जायगा, क्योंकि मालिकको हर रोज़ नुकसान होता है। जिनकी हमेशाकी सेवाके बिना समाजका काम नहीं चलता, वे हड़ताल करते हैं तो समाजमें खलबली मच जाती है, यद्यपि अैसे काम भी अब लोग खूब करने लगे हैं। परन्तु शिक्षक हड़ताल कर दें और दो तीन मास बच्चे न पढ़ें, तो समाजमें अितनी खलबली नहीं होती। शिक्षक समाजका दिल नहीं हिला सकता। बस-ट्रामवालोंको बंबअीमें जो कुछ मिलता है, वह ठीक मिलता है; फिर भी अुन्होंने हड़ताल कर दी है, क्योंकि शहरमें लोग पैदल चलकर काम-धंधे पर नहीं जा सकते। धंधे जारी रखनेके लिअे अिन साधनोंकी ज़रूरत है। मगर शिक्षकोंकी बात अैसी नहीं है। लड़का अेक साल न पढ़े, तो माँ-बापको लगेगा कि कुछ नहीं। आजकलकी पढ़ाअी परसे भी लोगोंकी श्रद्धा कम हो गअी है। हमें सच्चा स्वराज्य चाहिये तो वह अंग्रेज़ी तरीकेका नहीं, परन्तु हमारी पुरानी पंचायत पद्धतिका होना चाहिये। पहले जब पंचोंका राज्य था, तब गाँव यह बरदाश्त नहीं कर सकता था कि शिक्षक भूखा रहे। शिक्षकको देना अपना फर्ज़ समझा जाता था। यह भावना भी थी कि अुसमें पुण्य है। आजकल शिक्षक मज़दूरकी श्रेणीमें अुतर आया है। समाज पर अुसके त्याग और बलिदानका प्रभाव पड़ना चाहिये।

शिक्षकोंके पूछे हुअे प्रश्नोंके अुत्तरमें

मुझे जो निजी सवाल पूछा है, वह पूछनेवालेके अज्ञानका सूचक है। शिक्षक अितना ही जानता हो तो मुश्किल है। वह कब और क्या ज्ञान दे सकता है? अिसका मैं क्या जवाब दूँ? मेरा अपना घर कहीं है ही नहीं। दिल्लीमें मैं किरायेके मकानमें रहता हूँ। मैं लोगोंका चुना हुआ प्रतिनिधि हूँ। मुझे निकाल देंगे तो मेरी जगह जो दूसरा आयेगा वह अुस मकानमें रहेगा। मुझे जब यहाँ आना होता है, तब हवाअी जहाज़में अिसीलिअे आता हूँ कि मेरे काममें दो दिन बच जायँ। समाजसेवाके हरअेक स्थानके लिअे सेवकको अुस स्थानके

अनुकूल साधन मिलने चाहियें। अलबत्ता, वे ज़रूरतसे ज़्यादा हों, तो अुनमें काट-छाँट करनी चाहिये।

*   *   *

अंतरराष्ट्रीय देशोंमें हिन्दुस्तानका स्थान कितना है, अिसका जवाब भी शिक्षकको जानना चाहिये। अंतरराष्ट्रीय स्थितिमें हमारे देशका स्थान दो तरहसे सामने आया है। पहले साम्राज्यमें हिन्दुस्तान गुलाम था, अिससे अुसकी निन्दा होती थी। अब दुनियाको पता लग गया है कि हिन्दुस्तान आज़ाद होनेवाला है। अगर कुछ बाकी रहा है, तो वह नामका ही बाकी है। हरअेक स्वतंत्र देश हिन्दुस्तानके साथ संबंध जोड़ना चाहता है। तमाम देश भारतको स्वतंत्र माननेके लिअे तैयार हो गये हैं। सब आशा लगाये बैठे हैं कि हिन्दुस्तानके साथ अच्छा संबंध रखनेसे अच्छा लाभ होगा। कुछ समय पहले अेशियाके प्रतिनिधियोंकी जो सभा हुअी, अुससे हिन्दुस्तानकी संसारमें अच्छी तरह प्रसिद्धि हो गअी है। सबको अैसा लगता है कि हिन्दुस्तानमें अशांति होगी, तो दुनियामें अशांति रहेगी। गांधीजीने वहाँ कहा था कि हिन्दुस्तान दुनियाको जो संदेश देना चाहता है, वह अुसे खुद हज़म करना चाहिये।

*   *   *

आसपासकी बारैया आबादीमें खूब अज्ञानता है। हिन्दुस्तानके स्वतंत्र हो जानेकी गरमी हरअेक देशवासीको महसूस होनी चाहिये। हमें पिछड़े हुअे वर्गको भी अपने जैसा ही समझना चाहिये। अुसे अुठाना चाहिये। अब अपना राज्य हो गया है। अब तक लड़कर करना पड़ता था, अब मिलकर करना है।

आप शिक्षक लोग तीन-चार महीनेके लिअे यहाँ आये हैं। शहदकी मक्खीकी तरह जितना मीठा है — सार है, अुसे ले लेनेकी आपको वृत्ति रखनी चाहिये। जिसकी वृत्ति अैसी है कि यह भी खराब है, वह भी खराब है, अुसे कोअी लाभ नहीं होता।

अिस आश्रममें कौन रहता है? अुसका त्याग कितना है? यहाँ जो दवाखाना चल रहा है, वह कैसे चल रहा है? गंगाबहन क्यों आअीं? किस तरह आअीं? बोरसदकी गलियोंमें जिन बहनों पर लाठी चार्ज हुआ, अुनका नेतृत्व अिन्होंने कैसे लिया? आदि सब बातें बारीक नज़र रखकर आपको जान लेनी चाहियें। शिक्षक भले ही थोड़ी शिक्षा दे सके, परन्तु अुसके चरित्रका प्रभाव पड़ता हो, तो वह बहुत कुछ कर सकता है।

अिसलिअे शिक्षकको जहाँ तक हो सके अपना जीवन निर्मल बनाना चाहिये।

१४२

चारुतर ग्रामोद्धार मंडल

[ता० ४-४-१९४७ को आणंद चारुतर ग्रामोद्धार मंडलकी तरफसे स्थापित विठ्ठलभाअी पटेल महाविद्यालयकी अुद्‌घाटन विधिके अवसर पर दिया गया भाषण ।]

यह जो प्रयोग यहाँ हो रहा है, अुसे आँखोंसे देखनेकी मैं बहुत समयसे कोशिश कर रहा था। दो तीन बार विचार किया, परन्तु किसी न किसी कारणसे निश्चय पूरा न कर सका। पिछली बार अहमदाबाद आया तब बीमार हो गया और वापस जाना पड़ा। खास तौर पर मैं श्री भाअीलालभाअीके कामके लिअे आया हूँ। परसों डॉ० मगनभाअीका कृषि कॉलेजका काम है। रास्तेमें अेक किसान आशाभाअीका काम देखने जाना है।

आप जानते हैं कि भाअीलालभाअी अेक कुशल और होशियार अिन्जीनियर हैं। अुम्र भर सिंधमें नौकरी की। अहमदाबादकी म्युनिसिपेलिटीने मुझसे अिन्जीनियर माँगा। आत्मबलके बिना कोअी काम नहीं होता, भले ही अपनी ही सरकार हो। मैं आत्मबलको माननेवाला हूँ। वे भी आत्मबलको माननेवाले हैं। मैंने अुनसे कहा कि बहुत वर्षों तक बाहर नौकरी की, अब थोड़ी प्रांतकी सेवा करो। और वे अहमदाबाद आ गये। अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटी पर अुन्होंने कैसा असर डाला है, यह सब जानते हैं।

१९४२ की लड़ाअी आअी और अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटीके बड़े-बड़े अफसर भाग गये। बहुतसे जेल गये, अिस्तीफे दिये, अिन्होंने भी दिया। मेरे जेलसे आते ही अिन्होंने मुझे अपनी कल्पना समझाअी। मैं कहा करता था कि शहरोंमें बहुतसे अिन्जीनियर मिल जायगे, देहातमें जानेवाला चाहिये। डॉ० मगनभाअीको भी कृषि कॉलेजमें जीवन बितानेके लिअे लाया हूँ। मेरी अिच्छा यह है कि हमारे जिलेमें आप कोअी भी काम करके नमूना पेश करें। वाशिंग्टनने अमेरिकामें जो कुछ किया था, वैसा ही भाअीलालभाअीका यह स्वप्न है।

मैंने कहा कि पहले गांधीजीको समझाअिये। अिन्होंने गांधीजीको कुछ थकाया तो सही। परन्तु गांधीजीको समय नहीं था, अिसलिअे कुमारप्पासे मिलनेको कहा। अिन्होंने कुमारप्पाको वशमें कर लिया है।

आपने आठ सौ नौ सौ अेकड़ ज़मीन दी, अिसके लिअे आपको बधाअी देता हूँ। मुझे याद है कि बचपनमें अिस रास्तेसे जाते वक्त डाकुओंसे सचेत

रहनेके लिअे अिधर-अुधर देखना पड़ता था। अब अिन्होंने अिस रास्तेको अैसा बना दिया है कि कोअी रुकावट नहीं आ सकती।

आपने दान भी किया व्यापार भी किया और फायदा भी किया। परन्तु भाअीलालभाअीने कचरेमें से कंचन बनाया है, जंगलमें मंगल किया है। भाअीलालभाअी यहाँ १४ महीनेसे आकर बैठे हैं। पेड़के नीचे खाट पर पड़ाव डाल रखा है। १३ महीनेमें जो कुछ किया है, अुस परसे कल्पना करें कि ३ वर्ष बाद कितना हो जायगा। कल्पना यह है कि नये ढंगका आदर्श गाँव कैसा हो और नये सिरेसे गाँव किस तरह बसाया जाय।

आजकल देहातमें किसान मकान बनाते हैं, अुनमें से अेकका कोना अिधर जाता है तो दूसरेका अुधर। रास्तोंकी भी कोअी अेकसी रचना नहीं होती। हमें अपने रहनेकी जगह भी साफ रखनी चाहिये। स्वच्छ हवाको बिगाड़ना नहीं चाहिये। गाँवमें धूल न हो, धुँआ न हो, गंदगी न हो। ढोरके साथ हमें ढोर नहीं बनना चाहिये। नहीं तो जैसे ठोकरें खाते रहे हैं, वैसे खाते रहेंगे। जैसा शिवजीका साँड़ होता है, वैसे ही अच्छे हमें अपने गाय-बैल रखने चाहियें, ताकि देखकर आँखें ठंडी हों और दिल खुश हो। आँगनमें गोबर पड़ा हो और वहाँ मक्खी, मच्छर और जुआँ हो जायँ तो वह नरक है। यहाँ गाँवमें जगह जगह शौचके लिअे नहीं बैठना चाहिये। बच्चोंको आँगनमें नहीं बैठाना चाहिये। पाखाने अैसे साफ होने चाहियें कि पाखाने और दीवानखानेमें फर्क न रहे।

खेड़ा जिलेके अिस हिस्सेमें जितने हाअी स्कूल और कॉलेज हैं अुतने कहीं नहीं होंगे। मगर अिसमें जो थोड़ासा मिथ्याभिमान और स्पर्धा होती है, वह मिटनी चाहिये। यहाँ साअिंस कॉलेज हो तो अेक पेटलादमें भी होना चाहिये और अेक नड़ियादमें भी होना चाहिये। अिसका अर्थ यह होता है कि अेक भी संस्था अच्छी या पूरी नहीं होती। अेक संस्थामें काफी संख्यामें अच्छे शिक्षक होनेके बजाय थोड़े-थोड़े सब जगह बँट जाते हैं।

हमें अंग्रेजोंसे कुछ बातें सीख लेनी चाहियें। वे अस्पताल बनायेंगे तो सब अुसीमें दान देंगे और अुसे अुत्तम बनायेंगे।

हमें कॉलेज चलानेके लिअे आदमी मिलने मुश्किल हैं। महाराष्ट्रमें अैसे आदमी मिल जाते हैं। वहाँ शिक्षाका शौक है। गुजरातमें व्यापारिक वृत्ति प्रधान है।

मैं आपसे अेक बात कहना चाहता हूँ। अिस भागमें ज़मीन पर अुसकी गुंजाअिशसे ज्यादा आबादी हो गअी है। जरा-जरासी जमीनके लिअे आपसमें लड़ मरते हैं, और हत्याअें हो जाती हैं, यह अच्छा नहीं है। भगवानने हमें बुद्धि दी है। दक्षिण अफ्रीका या पूर्व अफ्रीकाके द्वार हमारे लिअे बंद हो गये

हों, तो दूसरे रास्ते ढूँढ़ने चाहियें। बापका कुआँ गहरा हो तो अुसमें डूब नहीं मरते। अंग्रेज अेक छोटेसे टापूमें मुट्ठी भर हैं। परन्तु वे दुनिया भरमें फैले हुअे हैं।

कुटुंबके गाँवमें जरा-जरासे टुकड़ेके लिअे नहीं लड़ मरना चाहिये। यहाँके किसानोंमें से अेक वर्गने बुद्धि-कौशल्यसे ज़मीनको अच्छी तरह सुशोभित किया, परन्तु जो दूसरा वर्ग है अुसने ज़मीनको सुशोभित नहीं किया। वे कुछ कामचोर हो गये हैं। वह धाराला वर्ग है। अुन्हें धाराला कहते हैं, तो वे नाराज़ होते हैं। वे अपनेको राजपूत कहते हैं। अुनमें कुछ नौजवान घुस गये हैं, जो अुनमें ज़हर फैला रहे हैं और थोड़ी जायदाद वालोंके साथ अुन्हें लड़ानेकी कोशिश कर रहे हैं। जब तक बड़े बड़े कारखाने वालों या ज़मींदारोंके साथ लड़ाते थे, तब तक तो मैं समझ सकता था। मगर यहाँ बड़े ज़मींदार नहीं हैं, अिसलिअे यहाँ रहकर वैरभाव पैदा करनेके बजाय जहाँ ज़मीन मिले वहाँ चले जायँ। ब्राजील और मारीशस जा सकते हैं। आजकल तो दुनिया छोटी हो गअी है।

यह संस्था किसानोंकी बुद्धि-शक्तिका विकास करनेके लिअे, साहसी वृत्ति बढ़ानेके लिअे है। अिस संस्थामें स्वतंत्र नागरिक पैदा करनेकी कल्पना है। यह कल्पना भाअीलालभाअीकी है। अिसमें मैंने अुनको शुरूसे ही साथ दिया है। मैं आप सबसे प्रार्थना करता हूँ कि अिस संस्थाका हृदयसे साथ दें। भाअीलालभाअीने तो अिस संस्थाके लिअे ही जिन्दगी अर्पण करनेका संकल्प कर लिया है।

मनुष्य रुपया कमाना जानता है, परन्तु सभीको यह मालूम नहीं होता कि कमाअीका सदुपयोग कैसे किया जाय।

हिन्दुस्तानमें किसीको दान करना हो तो वह आँखें बंद करके गांधीजीको दे जाता है, क्योंकि अुसे मालूम है कि अुनको दिया हुआ धन अच्छी तरह खर्च किया जायगा।

व्यक्तियोंके अच्छे जीवनसे ही सामाजिक जीवन अूँचा होता है। जिसके पास कम शक्ति हो, शक्तिवालोंको अुसे अूँचा अुठाना चाहिये। समाजमें से अूँच-नीचके भेद मिटा देने चाहियें। गांधीजी जबसे आये तभीसे कह रहे हैं कि अस्पृश्यता मिटनी चाहिये। कोअी भी अछूत नहीं रहना चाहिये। कोअी धनवान हो तो अुससे अीर्ष्या नहीं करनी चाहिये। गरीब हो तो अुसका तिरस्कार नहीं करना चाहिये। बुराअियाँ दूर किये बिना स्वतंत्र हिन्दुस्तानको सुशोभित नहीं कर सकेंगे।

अिस संस्थाको सुशोभित करना हो, तो दिलोजानसे साथ देना चाहिये। मुझे तो आशा है कि हम हिन्दुस्तानके सामने आदर्श अुपस्थित कर सकेंगे और दिखा सकेंगे कि गाँव कैसे होने चाहियें, अुनके फल, फूल और पेड़ कैसे होने चाहियें, अुनकी खाद कैसी होनी चाहिये।

अंग्रेज़ तो जानेवाले हैं। जब हमारे सिर पर ज़िम्मेदारीका बोझा आ गया है, तो हमें पहल करनी चाहिये। हमें अपने गाँव सँभालने हैं। शहरोंमें साम्यवादियों और सम्प्रदायवादियोंका जो रोग घुस गया है, अुसे निकालना चाहिये और यह देखना चाहिये कि वह गाँवोंमें न घुसने पाये।

अिस संस्थामें प्रयत्न यह है कि हरअेक अपना जीवन सम्मान और स्वाभिमानके साथ बिता सके। अिसीके साथ आदर्श ग्रामकी रचना करनेकी भी कल्पना है। मैं कैसा विद्यालय खोल रहा हूँ, यह तो भाअीलालभाअी कह सकते हैं। संस्था तभी सुशोभित होगी जब हम अुसके पीछे रही भावनाको अमलमें लाकर बता देंगे।

आप सब मेरे साथ अिस प्रार्थनामें शरीक होअिये कि भाअीलालभाअीके मनोरथ पूरे हों और यह संस्था तमाम हिन्दुस्तानमें देखने लायक बने।

जिन्होंने दान दिया है अुन्हें बधाअी देता हूँ। वैसे स्थानीय दाताओंको तो अुनके दानका लाभ भी मिलेगा। अुन्हींके लड़कोंको यहाँ अुत्तम पढ़ाअी करनेका मौका मिलेगा।

१४३

रासके किसानोंमें

[ता० ५–४–१९४७ को रासमें कस्तूरबा प्रसूतिगृहका शिलान्यास करते समय दिया गया भाषण।]

बहुत समयसे आप सबसे मिलनेकी अिच्छा थी। अिस दवाखानेका शिलान्यास करानेके लिअे आशाभाअी बार बार मेरे पास आये। मैंने कोशिश की परन्तु पहले न आ सका, अिसके लिअे माफी माँगता हूँ। अैसा सुन्दर काम मेरे कारण रुका रहे तो मैं अपराधी माना जाअूँ। अेक बार अहमदाबाद तक आया, परन्तु बीमार हो गया।

अिस बार भी कअी मुश्किलें होने पर भी दृढ़ निश्चय करके चला आया। फिर पुरानी स्मृतियाँ ताज़ा हो रही हैं। बहुतसी लड़ाअियाँ लड़ीं, सुख-दुःखके कअी अनुभव किये। रासके बहादुर लोगोंने बहुत वीरता दिखाअी। कभी कभी निराशा भी हुअी, घबरा गये। ज़मीनोंका बेचा जाना किसान कैसे सहन करते? मगर जिन्हें विश्वास था वे शांतिसे सहन करते थे। आप कुशल किसानोंको ज़मीन तो कहीं भी मिल जाय। परन्तु आपकी ही ज़मीन आपको वापस मिल गअी है और आपने अुसे जैसी थी वैसी बना ली है। अब मुझे विश्वास हो

गया है कि जो कहते थे वह सच था। आपको भी मुझ पर विश्वास हो गया और हिन्दुस्तानमें आपकी प्रतिष्ठा बढ़ी।

दाँडी-कूचके समय अुस बड़के नीचे पुलिसने मुझे पकड़ा, बोरसदमें मजिस्ट्रेटने मुझे सज़ा दी और आपने प्रतिज्ञा की कि स्वराज्य मिलने तक लड़ेंगे। आपकी वह प्रतिज्ञा पूरी हो गअी। अंग्रेज़ोंका जाना निश्चित है। अब जो देर हो रही है, वह हमारे आपसके झगड़ोंके कारण। अंग्रेज़ बुद्धिमान और चालाक हैं।

हमने जिस चीज़के लिअे लड़ाअी की, ज़मीनें गँवाअीं, वह मिल गअी। मगर आगेका काम अुससे भी कठिन है। मुझे पकड़ा तो आपको जोश आ गया। जैसे हमारे घर कोअी मेहमान आये और अुसे पकड़ लिया जाय तो बुरा लगता है वैसे ही आपको लगा। आपने आवेशमें — जोशमें आकर बहादुरी दिखाअी। अुसके लिअे बधाअी देता हूँ। मगर अब गरमीका काम नहीं है। ठंढा काम करना है। वह कठिन है। कस्तूरबाने स्वराज्यमें पहला नाम लिखवाया। आपने तो ज़मीनें खोकर वापस ले लीं। परन्तु कस्तूरबा तो आगाखान महलमें ही सो गअीं। महादेवभाअीने भी वहीं समाधि ले ली। वह यात्राका स्थान बन गया। हम गये तब यह प्रतिज्ञा थी कि या तो वहीं सो जायँगे या स्वराज्य लेकर लौटेंगे।

हिन्दुस्तानमें स्त्रियोंको दवादारूका ज्ञान नहीं है। प्रसूतिमें पड़ी हुअी स्त्रीकी क्या स्थिति होनी चाहिये, जन्मे हुअे बालककी देखभाल कैसे करनी चाहिये, अिसका कुछ भी पता हमारी बहनोंको नहीं है। अिस तटीय प्रदेशमें आसपास कोअी बीमार हो जाय तो दवाकी, स्त्रियोंके लिअे प्रसूतिकी सुविधा होनी चाहिये, अिसीलिअे यह शिलान्यास किया है। हमारे पास पहलेवाली होशियार दाअियाँ नहीं रहीं। अिस विषयमें आजके युगके अनुकूल ज्ञान देना चाहिये।

लोगोंने कस्तूरबा स्मारकके लिअे अेक करोड़का चंदा करनेका निश्चय किया। अेकके बजाय सवा-डेढ़ करोड़ तक चंदा पहुँच गया। अिसमें भी आपने साथ दिया। आशाभाअीने यह काम शुरू किया। वे तो बहादुर आदमी हैं। वे भी अेक समय आपसे अधिक परेशानीमें थे। ज़मीनें चली जानेके बाद गांधीजीके साथ मैं आया था। गाँवकी अेक स्त्रीने जाते जाते अेक दो बातें कहीं, वे हमने सुन लीं। मगर आशाभाअीको बहुत बुरा मालूम हुआ। लेकिन आपकी ज़मीनें वापस मिल गअीं, तो अब आपको विश्वास हो गया।

यह विचार कीजिये कि हमने ज़मीनें खोअीं तो किस तरह खोअीं। हममें फूट थी। गाँवमें खटपट हुअी। थोड़े लोग गाँवके भी मिल गये। विदेशी सरकार फूटसे ही राज्य कर सकती है। गोरे साहबने लिख दिया। मगर वह

तो जब तक अुसका राज्य रहे, तभी तक हो सकता है न? हम तो पहलेसे ही कह रहे थे कि हिन्दुस्तानमें हिन्दुस्तानी ही राज्य कर सकते हैं। आप गाँववाले वापस मिल तो गये हैं, परन्तु यह पता नहीं कि दिल अेक हैं या अलग अलग हैं।

पंचायती राज्य ही सच्चा स्वराज्य है। सबको अेक बापकी औलादकी तरह समान बन कर रहना चाहिये। कोअी अूँच-नीच न हो। गाँवमें लड़की जाती हो, तो कोअी बुरी नज़र न डाले, कोअी अपशब्द न कहे। हमने पुलिसकी अपेक्षा नहीं रखी। आजकल तो समय कठिन है। कोअी अेक दूसरेकी निन्दा और अीर्ष्या न करे।

आजकल अेकके पाँच देकर बाहरसे अनाज लाना पड़ता है। किसानोंको पूरी पैदावार नहीं मिलती। दुनियामें खेती-बाड़ीकी व्यवस्था टूट पड़ी है। सभी जगह किसानोंसे अनाज ले लिया जाता है। जर्मनों जैसे बहादुर लोग भी भूखके मारे धड़ाधड़ मर रहे हैं। हमने स्वराज्य ले तो लिया, मगर अुसे अभी तक पहचाना नहीं। गाँवमें कोअी भी मनुष्य भूखा न रहे। भूखा हो तो हम अपनी रोटीमें कमी कर दें, पर कोअी भूखा न रहे। अिसी स्वराज्यके लिअे हम मेहनत कर रहे हैं। अिसमें आपका सहयोग चाहिये। आपसे मैं सदा कहता रहा हूँ कि किसान अदालत कचहरी जाते हैं, स्टाम्प फीस देते हैं, सो क्यों? पंचोंके द्वारा झगड़े निपटा लें तो छोटे, बड़े, गरीब सभीकी रक्षा हो सकती है। हमारी स्वराज्यकी कल्पना यह है कि सबको सेवा और सहायता मिले। यह हमारी अपेक्षा है। आप सबने मेरा जो स्वागत किया, अुसके लिअे आभार मानता हूँ।

आपको फिर चेतावनी देता हूँ कि अेक राज जा रहा है और दूसरा आ रहा है, तब आप मेलसे रहिये। अेक दूसरेकी रक्षा करेंगे तो हमारी कल्पनाका स्वराज्य आयेगा। भगवान हमें अैसा स्वराज्य हज़म करनेकी शक्ति दे।

१४४

करमसदमें मानपत्र

[ता० ६-४-१९४७ को सुबह साढ़े आठ बजे करमसद गाँवके मानपत्रका जवाब ।]

मेरे जिम्मे तीन काम थे। अुन्हें पूरा करनेको मैं दिल्लीसे गुजरातमें आया हूँ। मेरे सिर पर अेक तरहका कर्ज था और मुझे लगता था कि अुस कर्जको अदा न कर दूँ, तो मेरी सद्‌गति नहीं होगी।

अिनमें से मुख्य तो यह था कि जिन भाअीलालभाअीको सवा बरससे मैंने जंगलमें बिठाया था, अुन्हें कोअी प्रोत्साहन न दे सकने, देख तक न सकनेके कारण मुझे कअी बार नींद भी नहीं आती थी। दूसरा कर्ज़ आणंदकी कृषि संस्थाका है। जेलमें जानेसे पहले वह संस्था खोली थी। अुसके खर्चके लिअे सरकारसे रुपया दिलवाया था। वहाँ डॉ० मगनभाअीको बिठाया है। भाअीलालभाअी और मगनभाअीका काम अलग-अलग तरहका है। प्रचलित पद्धतिमें थोड़ी तबदीली करनी है। तीसरा कार्य रासमें बैठे हुअे मेरे अेक स्वयंसेवक आशाभाअीका था। अुसने बहुत कष्ट सहन किया है। मैं जेलमें था तब कस्तूरबा गुज़र गअीं और स्मारकका निश्चय किया गया। अिसमें मैं तो भाग न ले सका, मगर रासने जो स्मारक बनाया है, अुसे देख कर खुशी होनी चाहिये।

आपके गाँवमें अेक भाअी शहीद हो गये। अैसे कअी भाअी शहीद हुअे हैं। अुन्हींका फल अब आया है। अंग्रेज़ जानेवाले हैं। हम स्वतंत्र तो होंगे, मगर यह देखना है कि बादमें गुलामीको याद न करें। स्वतंत्र भारत अधिक सुखी हो, दुनियाको शान्तिका सन्देश दे, तो अुसका स्वतंत्र होना सार्थक माना जायगा।

मुझे किसानोंमें घूमनेकी अिच्छा तो बहुत है, परन्तु शरीर साथ नहीं देता। अहमदाबाद आया और जीवाभाअी मिले। वे मेरे बचपनके दोस्त हैं। अुन्हें मैं कैसे अिनकार कर सकता हूँ? अुन्होंने गाँवके प्रेमकी बात कही। दुनियाभरका प्रेम संपादन किया जा सकता है, मगर गाँवके लोगोंका और अुसमें भी करमसद गाँवके लोगोंका प्रेम संपादन करना कठिन है। जो अैसा कर सके वह भाग्यवान है। वैसे, मैंने तो गाँवके लिअे कुछ नहीं किया है।

जबसे गांधीजी आये तबसे अुनके सहवाससे मैंने अपना जीवन बदल डाला है। गांधीजीके साथ यहाँ आ गया हूँ। आपकी बहादुरीकी तारीफ दूसरे तो कर सकते हैं। लेकिन मैं ठहरा गाँवका, अिसलिअे अुसे सुनकर फूल नहीं सकता।

हमारे चारों ओर गुलामीका जो मैल चढ़ गया है अुसे मिटाना है। स्वतंत्र होनेके बाद भी गुलामीकी दुर्गन्ध आये, तो स्वतंत्रताकी सुगंध नहीं फैलती। मैं जब यहाँ पढ़ता था, तब चबूतरे पर मास्टरजी लाठी लेकर पढ़ाते थे। मगर अब तो दूसरा ही जमाना आ गया है।

आजकल जो लोग अंग मेहनत पर आधार नहीं रखते, वे चकनाचूर हो जायँगे। अंग्रेज़ोंने अब तक अपने स्वार्थकी खातिर कुछ लोगोंके स्थायी हित सुरक्षित कर रखे थे। ज़िम्मेदार राजाओं और बड़े-बड़े कारखानेवालोंको अंग्रेज़ी राज्यका जो सहारा था वह खतम हो गया। अंग्रेज़ोंने अपने स्वार्थके लिअे हमारी बुराअीको पाल-पोसकर कायम रखा। जातियोंमें अनेक प्रकारके बाड़े बन गये। ब्राह्मणोंकी अेक जातिके चोरासी भेद हो गये। कुअेंके मेंढकको कुअेंका अभिमान होता है, अुसे महासागरका पता नहीं होता। यह कोअी हिन्दू धर्मकी संस्कृति नहीं है। कल ही बोचासणसे आया हूँ। वहाँके महाराज मेरे पास आये और कहने लगे कि मन्दिरमें आअिये। आपके कुटुम्बका तो मन्दिरके साथ पुराना सम्बन्ध है। मगर साथ-साथ यह भी कहने लगे की अुसमें हरिजनोंको आने देनेकी हमारी हिम्मत नहीं होती।

दूसरे लोग हमारी बुराअियाँ कुरेद-कुरेदकर देखते हैं और बाहर दिखलाते हैं। यहाँ हम हिन्दू-मुसलमान जानवरोंसे भी बुरी तरह रहें, स्त्रियों तककी मर्यादा न रखें और लड़ मरें, तो यह हमारे लिअे शर्मकी बात है। अिसके कारण बाहर हमारी बदनामी होती है। अगर यह कहा जाय कि कांग्रेसका राज होनेसे क्या फायदा हुआ, तो यह सच बात है। मगर आपको समझना चाहिये कि हमें यह पुरानी हुकूमतकी विरासत मिली है। अुसे साफ करके सुधारना है। अिसलिअे तुरन्त फायदा नहीं दिखाअी दे सकता। अंग्रेज़ोंके जानेके लिअे हमने क्या किया है? जैसे किसान जुवारके खेतमें जाकर तालियाँ बजाकर पक्षियोंको भगाता है, वैसे हमने बातचीत करके अुन्हें भगाया है। स्वतंत्र देशोंने स्वतंत्रता प्राप्त करनेके लिअे जो भारी त्याग किये हैं, अुनके मुकाबले हमने कम कुरबानियाँ की हैं और थोड़े दुःख सहे हैं।

गांधीजीने शुरूसे ही रचनात्मक कामकी बात कही थी।

(अिसके बाद रचनात्मक कार्यकी चार दीवारों — अस्पृश्यता-निवारण, हिन्दू-मुस्लिम अेकता, खादी और राष्ट्रीय शिक्षा — के बारेमें बोलकर आगे कहा:)

लाल झंडेवाले यहाँ बारैया लोगोंमें घुस गये हैं। अुनके साथ अुनकी रोटियाँ खाते और अुन्हें अुकसाते हैं। मैं कहता हूँ कि यहाँ कोअी मिलें नहीं चल रही हैं, जिनमें हड़ताल करा देंगे तो वे बन्द हो जायँगी। मगर आपको अिससे सावधान होना चाहिये। पड़ोसीको भूखा नहीं रखा जा सकता। और

ज़मीनके अनुपातमें आबादी बढ़ गअी है, अुसका अुपाय तो यह है कि कुछ लोगोंको बाहर निकलनेका साहस करना चाहिये। आपको समझना चाहिये कि जो साहसी होगा, वही जी सकेगा। और बाहर भी अिज्ज़तके साथ रहना चाहिये।

गांधीजी जब अफ्रीका गये, तब देखा कि वहाँ गोरे फुटपाथ पर हिन्दुस्तानियोंको चलने नहीं देते थे, रेलमें साथ बैठने नहीं देते थे तथा हमारी विवाह पद्धतिको भी नहीं मानते थे। गांधीजी वहाँ लड़े। और अुन्हें महसूस हुआ कि पहले हिन्दुस्तानको स्वतंत्र करना चाहिये।

अब भारत स्वतंत्र होनेवाला है। अुसकी अिज्ज़त अभीसे बढ़ गअी है। सभी अपने-अपने देशोंके अेलची हमारे यहाँ भेजना चाहते हैं। अैसे समय हमें अपनी भीतरी पोल मिटा देनी चाहिये।

आपने अिस कन्या पाठशालाका मकान मुझसे खुलवाया। अिसमें सब लड़कियोंको सच्ची शिक्षा मिलनी चाहिये। आजकलकी शिक्षा अैसी है कि शिक्षा पाये हुओंको काम करनेमें शर्म आती है। यह सच्ची शिक्षा नहीं है। हम अपनी कन्याओंको सच्ची शिक्षा देंगे, तो हमारे समाजमें से कुछ कुरीतियोंको, जो हमें आगे नहीं बढ़ने देतीं, निकाल डालना आसान हो जायगा।

हम बड़े गाँवके हैं या अूँचे कुलके हैं, यह मिथ्याभिमान हमें छोड़ देना चाहिये। गुलामोंके कुल और कुलीनता कैसी? जिन्होंने सरकारकी खुशामद की थी, अपने समाजका नुकसान करके सरकारको मदद दी थी, अुन्हें देसाअीगिरी मिली थी। अिसका घमण्ड क्या? सच्चे कुल तो अब बनाने हैं। अपनी स्त्रियोंके प्रति भी हमारा व्यवहार बदलना पड़ेगा। हमारी स्त्रियाँ अैसी होनी चाहियें, जो हमारे साथ कदम मिलाकर चल सकें। नौजवान अब भी आशा रखते हों कि स्त्री जेवर लेकर आयेगी, खाना लेकर आयेगी, तो यह सब भूल जाअिये। जो सेवा करें और चरित्रवान हों, वही सच्चे कुलीन हैं।

आपके प्रेमके लिअे आभार मानता हूँ।

१४५

कृषि महाविद्यालय

[ता० ६–४–१९४७ को आणंदमें कृषि महाविद्यालयके मकानके शिलान्यासकी क्रियाके अवसर पर दिया गया भाषण।]

पाटील साहबकी सूचनानुसार आप सबकी मौजूदगीमें अिस कृषि महाविद्यालयके शिलान्यासकी क्रिया की है। अीश्वर अुनका अुद्देश्य सफल करे। अिस संस्थाकी संक्षिप्त कल्पना भाअी मुन्शीने दी है। अब तक अैसी संस्थाअें सरकार बनाती थी। अब तक देश-हितको अुनमें गौण स्थान दिया जाता था। अुनका मुख्य अुद्देश्य सरकारकी जड़ जमाना ही होता था। अब तक सिर्फ पूनामें ही अेक कृषि संस्था थी। परन्तु अुसमें से पास होकर निकलनेवाले शायद ही खेती करते थे, ज्यादातर लोग नौकरी तलाश करते थे।

अब तक हम विदेशी सरकारके साथ लड़ाअियाँ लड़ते रहे। साथ ही लोगोंको स्वराज्यके लायक बनानेके लिअे रचनात्मक कार्यक्रम रखा गया। परन्तु अुसका काम बहुत ही कम हुआ है। जैसे रामनाम जबान पर ही रहे और हृदयमें न पैठे, वैसे ही अिस कामने लोगोंके हृदयोंमें जगह नहीं की है।

पहले सरकारके साथ असहयोग करके लड़े। बादमें सविनयभंगकी लड़ाअी लड़े। अुसके बाद लगाम कुछ ढीली छोड़ी गअी और प्रांतोंमें हमारे मंत्रि-मंडल बने। जब हम वह प्रयोग कर रहे थे, तब यहाँ कृषि कॉलेज खोलनेका विचार हुआ था। अिसका अुद्देश्य किसानोंको यह बताना है कि जानवरोंकी औलाद कैसे सुधारी जाय, अुन्हें खुराक कैसी दी जाय, अुनका दूध किस तरह बढ़ाया जाय और अिस वक्त ज़मीनका कस अुतर गया है, अुसमें बिगाड़ पैदा हो गया है, अुसे कैसे सुधारा जाय। दान तो मिल गया, परन्तु पहला विचार यह हुआ कि संचालक अच्छा न मिले, तो संस्था अच्छी नहीं चल सकती। और मेरी नजर स्व० भाअी त्रिवेदी पर पड़ी। मैंने अुनसे कहा कि पूनामें आपने बहुत वर्ष सेवा कर ली। अब अपने प्रांतमें सेवा करनेका वक्त आ गया है। अुन्होंने वचन दिया और आ गये। संस्थाके लिअे किसानोंसे ज़मीन तो मिल जाती, परन्तु सरकारी काम ठहरा, अिसलिअे अेक्विज़िशनमें पड़ गया। अितनेमें कांग्रेसी मंत्रि-मंडलोंने अिस्तीफे दे दिये। अधिकारियोंको खयाल हुआ कि दानका रुपया है, जितना दिया जा सके किसानोंको दिया जाय। अिस तरह यह सब हुआ।

यह ज़मीन बिलकुल घटिया थी। लेकिन अब अैसी ज़मीन बन गअी है कि अच्छीसे अच्छी ज़मीनको मात करे। मैंने त्रिवेदी साहबसे कहा कि हम अच्छे आदमियोंका समूह जमा नहीं करेंगे, तो संस्थाको अच्छी तरह नहीं चला सकेंगे। अुन्होंने आदमी ढूँढ़ना शुरू किया और मौजूदा डाअिरेक्टर मगनभाअी मिल गये।

बादमें हम तो जेलमें चले गये। त्रिवेदी साहबको अीश्वरने अुठा लिया। सरकारको यह डर था कि अिस संस्थाका अुपयोग सरकारको तोड़नेमें ही होगा। मेरा अैसा विचार था ही नहीं। ट्रस्टका रुपया था। मगर सरकारको मेरा विश्वास नहीं होता था और मुझे अुसका नहीं होता था। अैसा हमारा हाल था, यद्यपि अिस संस्थाका सरकारके साथ लड़नेमें ज़रा भी अुपयोग करनेका मेरा सपनेमें भी विचार नहीं था।

फिर १९४२ में हम दुबारा जेल चले गये और अिस संस्थाको तोड़नेके काफी प्रयत्न हुअे। परन्तु संस्था रह गअी और सरकार अब जा रही है।

मैं मगनभाअीको संस्था सौंप कर कह गया था कि आप गुजरातके हैं, आपका काम यहाँ चमकेगा। आपके दिलको संतोष होगा। अिस समय सरकार अुन्हें दूसरी जगह खींचनेकी कोशिश कर रही है, मगर मौजूदा सरकार मेरी अिजाज़तके बिना अुन्हें नहीं ले जायगी।

हिन्दुस्तानको सच्चे स्वराज्यका अनुभव करना हो, तो देहातकी शकल, किसानकी शकल बदलनी होगी। गुजरातमें या हिन्दुस्तानमें कहीं भी चले जाअिये, गाँवोंके बाहर घूरोंकी बदबू आती है। जहाँ बगीचा होना चाहिये, वहाँ चारों तरफ लोग खुले आम पाखाना जाते हैं। यह दशा सुधारनेमें अिस संस्थाको भाग लेना है।

यहाँ लड़के ज़मीन पर अच्छी तरह मेहनत करते हैं। मैं छूट कर आया और बहुत काममें था, तब मगनभाअीने आकर मुझसे कहा कि हमारे लड़के दुबले हो गये हैं, क्योंकि हमें अच्छी और पूरी खुराक नहीं मिलती। मैंने कहा, आप ही तो पैदा करते हैं। आपके पास गायें हैं, दूध-मक्खन है। तो कहने लगे कि सरकार सब ले जाती है।

अब अिन सब बातोंमें फेरबदल करना है। जुवारके खेतमें तालियाँ पीट कर चिड़ियोंको अुड़ा देनेकी तरह धाँधली करके सरकारको तो भगा दिया है। परन्तु सच्ची मेहनत तो अब करनी है। तभी हमारी स्थिति सुधरेगी।

यह पाँच वर्षकी संस्था है। अिस पर खूब आँधी-तूफान आये, तो भी यह टिकी रही। पास ही में तेरह महीनेकी अेक बच्ची संस्था है। वहाँ दूसरा प्रयोग हो रहा है।

असली हिन्दुस्तान देहातमें है । अुसे अुठाना है । हमारा दुर्भाग्य है कि स्वराज्य अभी आया भी नहीं, अुसके पहले ही स्वराज्यके तेजसे आँखोंमें चकाचौंध होने लगी है । अगर हम स्वराज्यके विचारमें अपना फर्ज़ चूकेंगे, तो जो स्थिति गुलामीमें थी वही बनी रहेगी ।

यहाँ जो विद्यार्थी आयें, वे नये युगके सिद्धान्तोंको पचायें और फैलायें। अभी तो खेतीकी यह अकेली ही संस्था है, जिस पर सरकारी नियंत्रण नहीं है। अब सरकार हमारी है, मगर वह पुरानी लकीर पर चल रही है । यह मुश्किल काम है । कुरसी पर बैठ गये, तो जहाँ निशान लगाया होगा वहीं हस्ताक्षर करने होंगे । काटकर अपने दो अक्षर भी नहीं लिखेंगे । यह परिवर्तन हमें करना है । अिसमें समय लगेगा, क्योंकि हमें सबके सहयोगसे यह काम करना है ।

बम्बअी सरकारके मंत्री शुभ सन्देश लेकर आये हैं । अिन्हें कर्नाटकमें अिसके जैसा ही कॉलेज बनाना है । अिसे बनानेका अुद्देश्य यह है कि यहाँसे विद्यार्थी स्वराज्यका संदेश लेकर जायँ ।

आजकल कारखानेवालोंको भी नये-नये काम करनेमें बड़ी मुश्किल पड़ती है । ज़रूरतकी अेक भी चीज़ नहीं मिलती । वैसे, अब व्यापार-अुद्योगके लिअे बहुत क्षेत्र है । दुनियामें हिन्दुस्तानकी बहुत अिज्जत है । विदेश चाहते हैं कि अुनके यहाँ हमारे दफ़्तर खुलें और हमारे यहाँ अुनके दफ़्तर खुलें ।

सारी दुनियाके अखबारोंके प्रतिनिधि हिन्दुस्तानमें अिकट्ठे हुअे हैं । परन्तु बिहार, बंगाल और पंजाबमें लोगोंने भगदड़ मचा रखी है । मनुष्यताकी सारी मर्यादा छोड़कर जानवरोंसे भी बुरी तरह बच्चों और बूढ़ोंको मारनेके वर्णन आ रहे हैं ।

यह हिन्दुस्तान — प्राचीन हिन्दुस्तान — अहिंसा और प्रेमका सन्देश दुनियाको दे तो अुसका कर्तव्य पूरा हो; यह गांधीजीने पुराने किलेमें अेशियन कान्फरेन्समें कहा । मगर वह सन्देश देनेसे पहले हमें अुसे हज़म करना है ।

देशके सब लोगोंका अैसा खयाल हो गया है कि अपने दलकी सत्ता जमा दें । परन्तु हम अिस लालचमें न फँसे । हम व्यवहारकुशल है । हमें सत्ताके लिअे सत्ता नहीं चाहिये, नअी रचना करनेके लिअे चाहिये । वह नअी रचना हम करके दिखा दें ।

दौलत दो प्रकारकी होती है: अेक ज़मीनकी और दूसरी पशुओंकी । यह अखूट धन है । मगर हमने अुसे सँभालकर बढ़ाना नहीं सीखा । आजकल हम अपनी खेतीसे कमसे कम पैदा करते हैं । संसारमें गायकी पूजा होती है, परन्तु अुसकी दशा सबसे खराब है । जैसे किसानका शरीर अस्थि-पंजर वाला है, वैसी ही हमारी गायें भी हैं । मृत्यु-शय्या पर पड़े हों, तब गाय खरीद कर गोदान करते हैं । बादमें अुस गायका दान लेनेवाला अुसे कसाअीखानेमें बेचकर

अुसके रुपयेसे दूसरी चार गायें खरीद कर वहाँ बेचनेका धंधा करता है । आज तो गायका नाम ही रह गया है । सब कोअी भैंस रखते है । कहते हैं गाय पुसाती नहीं । यहाँ यह प्रयोग करके दिखाना है कि गाय पुसाती है ।

अिसी तरह ज़मीनमें से धन खोद निकालना है। अिसके लिअे नौजवानोंमें जीवट चाहिये । नौजवान फौलादका शरीर बना कर यह काम कर सकेंगे ।

जिन भाअियोंने अिस संस्थाको दान दिया, अुनका हम आभार मानें और बम्बअी सरकारके प्रतिनिधि संदेश लेकर आये हैं, अुनका भी अहसान मानें । मेरा नाम तो अेक निमित्त भर है । मैं अिसकी तरफ कुछ भी ध्यान नहीं दे सकता । मैं तो जेलमें और दूसरी जगह भागता फिरता हूँ । वैसे, काम तो मुन्शी और मगनभाअी करते हैं । हाँ, कोअी पेचीदा काम हो और मुझसे कहें, तो अुसे हल करनेमें मैं मदद कर सकता हूँ ।

जिन भाअियोंने अिस संस्थाका विकास करनेमें मदद दी है, अुन सबका मैं आभार मानता हूँ और सबके आशीर्वाद चाहता हूँ ।

१४६

विट्ठल कन्या विद्यालयमें

[ता० ७-४-१९४७ को श्री मुन्शीने नडियाद विट्ठल कन्या विद्यालयमें माननीय विट्ठलभाअीकी मूर्तिका अुद्घाटन किया, अुस अवसर पर दिया गया भाषण।]

मुन्शी नाटककार हैं । अिनकी कलम कविकी तरह चलती है, और कलमकी तरह ही अिनकी जबान भी चलती है। अिसलिअे अुन्होंने मेरे बारेमें जो कुछ कहा, अुससे आप भुलावेमें मत पड़िये ।

अगर किसीने हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश सरकारके खिलाफ बगावत की हो, तो वह गांधीजीने की । मैं तो अुनकी टोलीमें से अेक था । हम भाग्यशाली हैं कि जीते जी अपना काम लगभग पूरा होता देख सके हैं ।

अिस हुकूमतको अुखाड़ फेंकनेमें हमारे नेता गांधीजी थे। शासन चलानेमें हमारे नेता जवाहरलाल नेहरू है । अुनकी कर्तव्य-परायणता, त्याग और कुशलताकी जोड़ी नहीं है । मैंने जितनी वफादारीसे गांधीजीकी सिपाहीगिरी की, अुतनी ही वफादारीसे पंडित जवाहरलाल नेहरूकी सिपाहीगिरी करने मैं वहाँ गया हूँ। मुझसे जितनी अुनकी सहायता हो सके अुतनी करना मेरा धर्म है, और मैं अुसीके अनुसार कर रहा हूँ ।

मैंने कल कहा था कि जैसे आप जुवारके खेतमें तालियाँ बजाकर चिड़ियोंको अुड़ाते हैं, वैसे सिर्फ शोर मचाकर हमने स्वराज्य लिया है। चूँकि वह मेहनत किये बिना मिल गया है, अिसलिअे हम घबरा गये हैं।

गांधीजीने कहा था कि सच्चा स्वराज्य लेना हो, तो निःस्वार्थ भावसे जनताकी सेवा करनी चाहिये। जैसे हम रामका नाम लेते हैं और माला फेरते हैं, मगर हृदयसे अैसा नहीं करते, वैसे ही अगर स्वराज्यके बारेमें करेंगे तो दुःखी होंगे। हम सच्चे दिलसे काम करेंगे, तो जैसे साँपकी केंचुली अपने आप अुतर जाने पर साँपको कोअी कष्ट नहीं होता, वैसे ही हम भी बिना किसी कष्टके अपनी गुलामी अुतार कर फेंक सकेंगे। मगर केंचुली अुधेड़ कर अुतारने लगें, तो साँपको कष्ट होता है, कभी-कभी वह मर भी जाता है। वही हाल हमारा भी होनेका अँदेशा है।

गांधीजी कहते थे कि अस्पृश्यता पाप है। पर हिन्दू समाज अभी तक अस्पृश्यताको नहीं छोड़ता। दक्षिण अफ्रीकामे अंग्रेज़ और डच लोग हमें अस्पृश्य समझते हैं। अमेरिकामें अन्तरराष्ट्रीय परिषदमें जब दक्षिण अफ्रीकामें प्रचलित रंगभेदका सवाल अुठाया गया, तब स्मट्स साहबने कहा कि हिन्दुस्तानमें हिन्दुस्तानी अपने आदमियोंसे अस्पृश्यता रखते हैं, अुसका क्या?

गांधीजी हमसे अेक हो जानेको कहते हैं। मगर हिन्दू-मुसलमानोंमें जितना अन्तर आज है, अुतना पहले कभी नहीं था। अिसी तरह गांधीजीने हमसे अपना कपड़ा आप बना लेनेको कहा, मगर अिस वक्त कपड़ेके लिअे जितना शोर मच रहा है अुतना पहले कभी नहीं मचा था। फिर भी हमें अपना कपड़ा बना लेनेकी बात नहीं सूझती। अंग्रेज़ तो चले गये। अब हमें अपना कारोबार खुद व्यवस्थित ढंगसे चलाना है, या गुलामीको याद करते रहना है? हमें तो पंचायती राज्य स्थापित करना है। पंचायतका अर्थ है गाँवकी पंचायत। अुसमें हर जातिके लोग बैठें। अुसमें तू-तू मैं-मैं नहीं होना चाहिये। यह तो विदेशी सरकारने क़ानूनमें रख दिया है कि अिस जातिके अितने और अुस जातिके अितने, मगर अुसमें संख्याकी स्पर्धा नहीं होनी चाहिये। पहले हिन्दुस्तानमें अैसी स्पर्धा नहीं होती थी। सेवामें स्पर्धा किस बातकी? हमारे पास सेवा करनेवाले काफ़ी आदमी ही नहीं हैं। अिसलिअे गलत स्पर्धा छोड़कर हम सबको काममें लग जाना है। देशमें शान्ति स्थापित करनी है और लोगोंकी असुविधाअें और तकलीफ़ें दूर करनी हैं।

हमें यह चीज़ जल्दीसे जल्दी करनी चाहिये, तेज़ीसे काम करना चाहिये। सबको यह संकल्प करना है कि हमें गांधीजीकी बताअी हुअी बात करनी है।

पहले हम पुलिसको गालियाँ देते थे, अुसका तिरस्कार करते थे। अुस वक्त वह हाकिम थी, अब सेवक है। मगर आप कहेंगे कि पुलिस तो वही है।

तो मैं कहता हूँ कि आप अुसमें भरती हो जाअिये और अुसे बदलिये। आपको कौन रोकता है? अुसमें कोअी रुकावट नहीं है। थोड़ा भी दंगा-फ़साद होते ही आप पुलिसके पास दौड़ जाते हैं, टेलिफोन करते हैं, यह ठीक नहीं है। अिस प्रकार पुलिस पर आधार रख कर नहीं बैठा जा सकता।

कण्ट्रोलका क्लेश चारों ओर है। कोअी चीज़ नहीं मिलती। हर चीज़ पर नियंत्रण है। आप कहेंगे कि शासनके बदलनेका कोअी चिन्ह दिखाअी नहीं देता। सही बात है। यह पुरानी सरकारके जल्दीसे चले जानेका परिणाम है। यह विरासत हमें पिछली लड़ाअीसे मिली है। और काला बाज़ार करनेवाले हमारे ही आदमी तो हैं? अुन पर हमें क़ाबू पाना चाहिये।

कण्ट्रोल हटानेसे मंत्री घबराते हैं, क्योंकि कोअी अुलटी बात हो जाय तो पुराने अधिकारी कहेंगे कि हम तो कहते ही थे कि मत हटाअिये। जनताके सच्चे सहयोगका विश्वास हो जाय, तो ही मंत्री कण्ट्रोल हटा सकते हैं।

अधिकांश कण्ट्रोल केन्द्रीय सरकारके हाथमें हैं। अिसमें प्रान्तोंको कोअी अधिकार नहीं है। और केन्द्रीय सरकारका काम अभी कुछ जमा नहीं है। अभी स्लेट साफ़ नहीं हुअी है। स्लेट साफ हो तभी तो अुस पर साफ अक्षर आयेंगे न?

जिन्हें केवल सत्ता ही चाहिये, अुन्हें मैं अभी दिला सकता हूँ। अिसके लिअे लोगोंको अुल्टा-सीधा समझानेकी तकलीफ़ क्यों अुठाते हैं? परन्तु सत्ता सेवा करनेके लिअे, लोगोंके दुःख दूर करनेके लिअे लेनी है। कपड़ेकी ही मिसाल लीजिये। अिसमें कअी दाँव-पेंच हैं। कोअी मिलवालोंका दोष बताते हैं, कोअी व्यापारियोंका। मेरे अकेलेके ही हाथमें हो, तो मैं अेक भी कण्ट्रोल न रखूँ। मगर प्रतिनिधि राज्यमें सबको समझाकर काम लेना पड़ता है।

स्वराज्यका अर्थ यह है कि हम आत्मबलके आधार पर खड़े रहें। किसी पर आधार न रखें। पड़ोसी भूखों मर रहा हो, तो अपनी रोटीमें से आधी रोटी अुसे दे दें।

हम सब भले बन जायँ, तो समस्याअें जल्दी हल हो जायँगी। कुछ देश अनाजका व्यापार करने लगे हैं। वे काले बाज़ारसे भी बुरे हैं।

पहले हमारे यहाँ बर्माका चावल आता था। व्यापारी वहाँसे लाते थे। आजकल अुसका व्यापार अंग्रेज़ सरकार करने लगी है। पेटमें भूख है, अिसलिअे मुँह माँगे दाम देने पड़ते हैं। अधिक अनाज पैदा करनेको किसानसे कहते हैं, लेकिन अुसे पैसा चाहिये। अिसलिअे वह तमाखू और कपास बोता है। पहले सरकार अुसे डंडा मारकर अनाज ले जाती थी। अब हमारी सरकार है,

अिसलिअे किसान पके हुअे अनाजमें से नहीं देता। अिसीसे अराजकता पैदा होती है। हम डंडेसे राज्य नहीं चला सकते।

आजकल जनमतका राज्य है। अगर अुसमें आपकी भी जिम्मेदारी न हो, तो मत देकर प्रतिनिधियोंको वहाँ भेजनेका क्या अर्थ है? आप जिसे मत दे कर भेजते हैं, वह वहाँ क्या करता है, आपसे क्या चाहता है, यह सब आपको जानना और समझना चाहिये।

यह सारा भार जवान लोगों पर पड़नेवाला है। अुस जिम्मेदारीको अुठानेके लिअे आप चरित्रकी शुद्धि कीजिये। आपसे मेरी यही माँग है।

१४७

विट्ठल कन्या विद्यालयकी कन्याओंसे

[ता० ७-४-१९४७ को नडियादमें विट्ठल कन्या विद्यालयकी छात्राओंसे दो शब्द।]

तुम सबको मालूम होना चाहिये कि पिछली बार जब मैं विद्यालयमें आया, तब अेक तरहसे विदा लेने आया था। यह भरोसा नहीं था कि फिर मिलेंगे या नहीं, परन्तु अीश्वरकी कृपासे हम दुबारा मिल सके हैं।

दुनियामें और जगह जैसे परिवर्तन हुअे, वैसे विद्यालयमें भी हुअे। कुछ पुरानी अध्यापिकाअें और लड़कियाँ चली गअीं। अुनकी जगह नयी आ गयीं।

१९४२ में विद्यालय बन्द कर दिया गया था। कुछ अध्यापिकाअें और छात्राअें जेलमें गअी थीं।

बादमें अुसे दुबारा स्थिर करनेका प्रयत्न किया।

आजकल विद्यालयमें तुम सब क्या करती हो, कैसे रहती हो, अिसका मुझे पता नहीं है। वही जानने आया हूँ।

अिस विद्यालयमें भले ही थोड़ी बहनें आयें, परन्तु वे अैसी होनी चाहियें कि जहाँ जायँ वहाँ अपना असर डाल सकें और कोअी भी कहे कि यह अेक चरित्रवान स्त्री है।

तुम्हें दो चीज़ें सीखनी हैं। पाठशालाओं या कॉलेजोंमें पढ़नेवाली छात्राओंको अैश-आरामकी नहीं, बल्कि मेहनत करनेकी आदत डालनी चाहिये। छात्रोंमें भी यह बुराअी आ गअी है। वे यह मानते हैं कि परिश्रम करना नौकर-चाकरोंका, गँवारोंका काम है। यह बहुत बुरी बात है। हाथ-पैर चलानेमें ही सच्ची शोभा है। हम मज़दूरकी तरह नहीं, बल्कि शानपूर्वक मेहनत करें।

अुसके साथ-साथ हममें अच्छे संस्कार, अच्छे विचार आयें; दुनियामें जहाँ-जहाँ अच्छी चीज़ हो, अुसे खींच लेनेकी हममें वैसी ही शक्ति आये, जैसे मधु-मक्खी फूलोंमें से सारी मिठास खींच लेती है। गंदी मक्खीको फूल पर बिठा दिया जाय, तो भी वह सुगंधि नहीं लेगी, गंदगी ही करेगी। परन्तु मधु-मक्खी जहाँसे मिले वहाँसे शहद ही लेगी। वैसा ही हमें भी करना चाहिये।

हमारा देश गरीब है। हमें खुद गरीबोंमें रहना है। अुस गरीबीमें भी हमें सुगंधि फैलानी है। गरीबी किसी भी तरहकी बुराअी या दोष नहीं है। गरीबोंका मेरा अपना बचपनका अुदाहरण देता हूँ। आठ-दस दिनका सामान कंधों पर रखकर पेटलाद ले जाते और पाँच-सात लड़के साथ-साथ अेक कमरेमें रहते और हाथसे खाना पका कर खाते थे। मेरी माँ मुझे रेलकी कोठरी तक यहाँ पहुँचाने आतीं कि कहीं मुझे रेलमें बैठनेका लालच न हो जाय।

धनसे अेक प्रकारका नशा चढ़ता है। हमें यह सीखना है कि गरीब आदमी भी कैसे सुखसे रह सकता है, सुखी जीवन बिता सकता है।

सारा विद्यालय साफ रखनेमें, अपना शरीर और कपड़े साफ रखनेमें, अपने बरतन-भांडे माँजनेमें और जो छोटी लड़कियाँ अपना काम न कर सकें, अुन्हें मदद देनेमें ही सच्ची शिक्षा रही हुअी है।

पहले तो लड़कियाँ घरसे अेक घड़ा लेकर पानी भरना सीखती थीं। बादमें दो घड़े ले जाती थीं। बादमें कूटना-पीसना सीखती थीं। अिस प्रकार अुन्हें घरमें ही सब काम करनेकी तालीम मिलती थी। आजकल हमारे घर अव्यवस्थित हो गये हैं, अिसलिअे अैसी शिक्षा भी विद्यालयमें देनी पड़ती है। विद्यालयसे अैसी शिक्षा लेकर बाहर निकलना चाहिये कि कोअी भी पहचान सके कि यह विद्यालयकी लड़की है। अुसकी बोलीमें मिठास है, अुसके आचार-विचारमें विनय और विवेक है, अुसमें अूँचे दर्जेकी सभ्यता है, वह हिन्दू समाजमें शोभा देनेवाली चरित्रवान लड़की है — अैसी छाप अुसकी लोगों पर पड़नी चाहिये।

यह अेक प्रयोग है। ज्यों-ज्यों तुम समझोगी, त्यों-त्यों अुसकी सुगंध बाहर फैलेगी।

अब तो यहाँ अध्यापिकाअें पढ़ने आती हैं। वे तुमसे क्या सीखकर जायँ? यहाँ किसी लड़कीको कोअी भी काम करनेमें शर्म नहीं होनी चाहिये। सच बोलनेमें अुसे कोअी शर्म और संकोच नहीं होना चाहिये। कोनेमें बैठकर हमें किसीकी बात नहीं करनी चाहिये। हमारे लिअे छिपानेकी कोअी बात नहीं हो सकती।

ये शिक्षिकाअें तुमसे सीखने आअी हैं। तुमसे जो कुछ सीखकर वे ले जायँ, वह बाहर जाकर औरोंको दें। तुममेंसे कोअी शिक्षिका बन जाय, तो अुसे कहीं सीखने नहीं जाना पड़ेगा। वह अपना विद्यालय चला सकेगी।

अब तक माँ-बाप यह मानते थे कि पढ़ानेसे लड़कियाँ बिगड़ जाती हैं। मगर यह वहम तेज़ीसे मिटता जा रहा है। गृहस्थीकी गाड़ी दो पहियोंसे चलती है। परन्तु पिछले दो सौ वर्षसे हम अपंग हो गये हैं, क्योंकि हमने अपने अेक अंगको बेकार हो जाने दिया है। स्त्रियोंकी जितनी मदद मिलनी चाहिये, अुतनी हमें नहीं मिलती। अंग्रेजकी स्त्री ज़रूरत पड़ने पर पतिके टाअिपिस्टका काम करती है, अुसकी तरफसे पत्र-व्यवहार करती है। ज़रूरत होने पर बन्दूक भी अुठाती है; साथ साथ रसोअीघर भी सँभालती है और बच्चोंको भी पालती है। अकेली हो तो भी किसीसे डरती नहीं। यहाँ पादरी डॉक्टर आते हैं। अुनमें स्त्री-डॉक्टर भी होती हैं। वे घोड़े पर बैठकर सब जगह घूमती हैं। साथ-साथ धर्मका प्रचार भी करती हैं। अस्पृश्यता मिटानेके लिअे हरिजन स्त्री या पुरुषको अपने यहाँ कम्पाअुण्डर बनाकर रखती हैं। कोअी ब्राह्मण दवा लेने आये, तो अुससे छूकर दवा लेनी पड़ती है। अीसाअी अस्पृश्यता मिटानेके लिअे अितना करें, यह हमारे लिअे शर्मकी बात है।

हमारे विद्यालयमें तो अस्पृश्यता होनी ही नहीं चाहिये। जात-पाँतके भेद भी नहीं होने चाहियें। तुम सबको अेक माँ-बापकी लड़कियोंकी तरह रहना चाहिये। अेक कुटुम्बकी बनकर रहना चाहिये।

अिसमें से जितना हज़म हो सके अुतना कर लो और अुसीके अनुसार आचरण करो।

१४८

खेड़ा जिलेके कार्यकर्ताओंसे

[ता० ७-४-१९४७ को नड़ियादमें खेड़ा जिलेके कार्यकर्ताओंके साथ प्रश्नोत्तर । यहाँ प्रश्न नहीं दिये गये हैं, अुत्तर ही दिये गये हैं ।]

मैं किसी व्यक्तिका दुश्मन नहीं हूँ । मेरा किसी धनवानके साथ विरोध हो सो बात नहीं । पूँजी जमा करनेकी रीति — पूँजीवाद — से मेरा विरोध ज़रूर है । जिसके पास धन है और जो धन अिकट्ठा करता है, वह अुसे समाज-हितमें लगाये और समाजमें सबका भला हो, यह देखना हमारा कर्तव्य है ।

जिस वादसे नैतिक पतन होता है, अुसका मैं विरोधी हूँ । अमृतलाल सेठ*को लगा हो कि मैं अुनका भला करनेवाला हूँ, तो मुझे अिसमें कोअी आपत्ति नहीं है ।

* * *

बजट†में जो फेरबदल हुअे हैं, वे सर्व सम्मतिसे हुअे हैं । चौदहों मंत्रियों और धारासभाके सभी सदस्योंको लगा कि अैसा होना चाहिये । सबके विचार अेक नहीं हो सकते । मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना । परन्तु धारासभामें बजट पेश हुआ, तब चौदहों आदमियोंकी तरफसे हुआ माना गया । मंत्रियोंसे शपथ लिवाअी जाती है, अिसलिअे केबिनेटमें क्या हुआ, यह वे बाहर नहीं कह सकते ।

सरकारके आय-व्ययके हिसाबमें कमी पूरी करनेकी बात थी । अिस बारेमें मतभेद नहीं था कि लेना चाहिये धनवानोंसे ही । गरीबोंके देनेका सवाल ही नहीं था । रुपया धनिकोंसे ही लिया जा सकता है, वह भी सीधा कर लगा कर । अिसमें किसीका मतभेद नहीं था ।

* * *

आपके ज़िलेमें तुवरकी पैदावार अच्छी होती है, फिर भी वह आपको नहीं मिलती । अिसी तरह जहाँ गेहूँ होता है वहाँसे गेहूँ, और चावल होता है वहाँसे चावल ले लिये जाते हैं । आजकल हिन्दुस्तानमें १२ औंस अनाज

* आणंदमें कृषि महाविद्यालयके मकानके शिलान्यासके अवसर पर अपने भाषणमें अहमदाबादके सेठ अमृतलाल हरगोविन्ददासने कहा था कि करोड़पतियोंको सरदारका सहारा है । अिस परसे अेक कार्यकर्ताने जो प्रश्न पूछा था, अुसके अुत्तरमें ।

† देशका बँटवारा हुआ, अुससे पहले मिश्र मंत्रि-मण्डल था । अुस समय अर्थमंत्री लियाकतअलीखाँने जो बजट पेश किया था अुसका यहाँ जिक्र है ।

मिलता है, वह काफी तो नहीं है। जो चाहिये सो भी नहीं मिलता। हिसाब लगा कर जितना अन्दाज़ हो सकता है, अुतना करके यह व्यवस्था की गअी है। अिसमें बम्बअीके मंत्रियोंका ही दोष हो सो बात नहीं है। केन्द्रीय सरकारकी भी सब प्रान्तोंमें नहीं चलती। देशी राज्योंमें तो बिलकुल नहीं चलती। यह बात भी नहीं कि लोगोंका जितना चाहिये अुतना सहयोग है। और कण्ट्रोल हटा देनेके बारेमें जनता भी अेक मत नहीं है।

तेल और तेलके बीजोंका कण्ट्रोल सब तरफसे शोर मचने पर, अेकमत होने पर, हटा दिया गया। साधारण तौर पर यह कहा जा सकता है कि अिसका परिणाम अच्छा हुआ।

*   *   *

अेक व्यक्तिका विचार या राय लोकमत नहीं कहलाता। लोकमत तैयार करनेके लिअे व्यक्तिको अपनी संस्था पर प्रभाव डालना चाहिये। भाअी चन्द्रकान्त सवाल पूछते हैं, परन्तु अुन्हें अपनी जिला समितिके द्वारा प्रान्तीय समितिसे प्रस्ताव कराना चाहिये। बादमें मंत्रियोंसे जवाब माँगा जा सकता है।

आप पैदा करते हैं और आपको मिलना चाहिये, यह तो स्वार्थवृत्ति हुअी। देशकी मुश्किल देखकर व्यवस्था करनी पड़ती है। अगर आप यह मानते हों कि मंत्री सुनते नहीं, तो यह साबित करना चाहिये। फिर वे कुरसी परसे अुठ जायँगे। मगर आजकल गाँवोंमें दाल नहीं मिलती, तो लोग कहते हैं कि हमने आपको मत दिये थे और आप कुरसियोंसे चिपट गये हैं। अिसमें मंत्रियोंका तो कुछ है ही नहीं। वे या तो हट जायँगे या अुन्हें जो ठीक लगेगा सो करेंगे।

कांग्रेस कार्यकर्ताओंके मनमें यह खयाल हो कि हमारे पास सत्ता आ गअी है, अिसलिअे हम अधिकारियोंसे अपना मन चाहा काम करा लेंगे, तो यह भूल है। अधिकारियोंको जैसा सूझेगा वैसा काम करेंगे। हम जैसा कहें वैसा नहीं करेंगे। मगर वे कोअी बुरा काम करते हों, तो सबूतके साथ बताना चाहिये।

आज असली ज़रूरत जनताकी नीतिको अूँचा अुठाना है। दुनियामें आजकल सब जगह रिश्वत और पाखण्ड बढ़ गया है। जहाँ लोगोंका चरित्र अूँचा है, नैतिक बल अूँचा है, वहाँ ये बातें कम हैं।

कांग्रेसी कार्यकर्ताओंके भाषण देनेसे कोअी किसान गाय नहीं रखेगा। किसानको साबित करके दिखा देना चाहिये कि भैंसकी अपेक्षा गाय रखनेमें ज्यादा लाभ है। महात्मा गांधी भी आकर भाषण दें, तो किसान गाय नहीं रखने लगेंगे। अिसीलिअे तो आणन्दमें संस्था खोली है। वहाँ ये प्रयोग हो रहे हैं कि गायका दूध कैसे बढ़ाया जा सकता है।

कांग्रेसके पास अैसा कोअी जादू नहीं है कि भाषण दिया और दुःख मिटा। भाषण देते रहेंगे तो भिक्षुक ब्राह्मणकी रोजकी अुक्ति जैसी बात हो जायगी।

शहरके लोग थोड़ी ज्यादा शकर खाते हैं, तो अिसकी अीर्षा नहीं करनी चाहिये। भले ही खायें। जितनी शकर हमें मिलती है, विलायतमें अुतनी भी नहीं मिलती। वहाँ लोग रोज सुबह चायके साथ दो अंडे खाते थे। आजकल हफ्तेमें अेक मिलता है। परन्तु अुन लोगोंने अपनी खुराक ठीक व्यवस्थित कर ली है। वे लोग शोर नहीं मचाते। मगर हमें तो यही पता नहीं है कि कौनसा भोजन पौष्टिक है और कौनसा हानिकारक है। शहरके लोगोंको तेज़ और चटपटा खाना चाहिये। अुन्हें कन्द-मूल हज़म नहीं होते। विलायतमें लोगोंने जबान पर काबू करके डॉक्टरोंकी तय की हुअी खुराकके साथ मेल बिठा लिया है।

* * *

लाल झंडेवाले पैदा हुअे हैं। जब आजकल अुत्पादन बढ़ाना चाहिये, तब वे कहते हैं कि मज़दूरोंके दर अितने बढ़ा दो, नहीं तो हड़ताल करा देंगे। हड़तालकी हवा चल पड़ी है। डाककी हड़ताल, ट्रामकी हड़ताल, पुलिसमें भी हड़ताल। सिर्फ खानेकी हड़ताल ही कोअी नहीं कराता।

गुजरातकी सबसे बड़ी बुराअी यह है कि पुलिसमें अच्छे आदमी नहीं आते। पुलिसमें अच्छे आदमी नहीं भरती होंगे, तो अंधाधुंधी होगी ही। अब तक तो विदेशी सत्ताको हटानेके लिअे सेवादलकी ज़रूरत थी। अब पुलिस दलमें भरती होना चाहिये। अुसमें शामिल हो जाअिये। पढ़े-लिखे हुअे तो अफसर बन जाओगे। आपको पुराने अफसरोंके दिल बदलने हों, तो भीतर घुसना चाहिये। अभी तक बहुतोंका अैसा खयाल है कि स्वराज्य आ गया, परन्तु पुलिस पराअी है, वह तो अच्छी हो ही नहीं सकती, और अुसके साथ लड़नेके लिअे सेवादल खोलना चाहिये। मगर पुलिसको ही सच्चा सेवादल बनाना है।

अफसरोंको साथ रखना, अुनकी सहानुभूति प्राप्त करना नहीं आता हो, तो हम खतरेमें पड़ जायँगे। अब अधिकारियोंको पराअी सरकारके नहीं मानना चाहिये। अुनके और हमारे बीच गठबंधन हो जाना चाहिये। अब तक वे पराये थे और अुनके आगे-पीछे कुछ खुशामदी लोग फिरते थे। अब वे हमारे आदमी हैं।

साम्प्रदायिक दंगोंका अेक ही अुपाय है। व्यक्तिसे जितनी रक्षा हो सकती हो अुतनी करे। अिसका कुछ तो असर समाज पर होगा ही। वैसे नेता लोग जब तक अिसका निपटारा नहीं करेंगे, तब तक यह ज़हर नहीं मिटेगा।

हमें दूसरे देशोंमें अपने राजदूत अिसलिअे भेजने हैं कि वहाँ कैसा प्रबन्ध है, अुनसे सम्बन्ध रखनेमें हमें क्या लाभ है और वे देश दूसरे देशोंके साथ

कैसा सम्बन्ध रखते हैं, अिन सब बातोंकी हमें जानकारी मिले। यह सब जानकारी प्राप्त करनेकी योग्यता अुनमें होनी चाहिये।

वाअिसरॉयने भी कह दिया है कि मैं आखिरी वाअिसरॉय हूँ। हिन्दुस्तानको समझ-बूझकर सयानेपनके साथ यह सत्ता ले लेनी चाहिये। जैसे हड्डी फेंकने से दस-बीस कुत्ते खींचतान करते हैं, वैसे ही सत्ताकी खींचतान करनेकी जो बातें सब तरफ हो रही हैं, वे मूर्खताभरी हैं।

गुजरातमें रियासती प्रजा और अंग्रेजी अिलाकेकी प्रजाको अेक साथ खड़े रहना चाहिये। राजसत्ताके परिवर्तनमें चोर-डाकुओंकी सत्ता नहीं होनी चाहिये। सबको अनुशासनबद्ध होकर काम करना चाहिये। बड़ी जिम्मेदारी और खतरेका समय आनेवाला है।

अब तक तो हिन्दुस्तान लुटा हुआ, चुसा हुआ रहा। अब अुसकी प्रतिष्ठा और अिज्ज़त बढ़ेगी। अैसे समय छोटी-छोटी बातोंसे बचना चाहिये। अमुकने त्याग किया या नहीं किया, अमुक कांग्रेसमें था या नहीं था, ये सब बातें भूलकर अेक हो जाअिये और संगठन पक्का कीजिये। गअी-बीती बातें भूलकर जनताकी सेवा करने लग जाअिये।

१४९

बड़ौदामें सार्वजनिक सभा

[ता० १५-४-१९४७ को बड़ौदामें सार्वजनिक सभामें दिया गया भाषण।]

आपको मालूम है कि थोड़े समयमें हिन्दुस्तान आज़ाद होनेवाला है। अिस आज़ादीमें राजा-प्रजा दोनों शामिल हैं। किसने कल्पना की थी कि हमारी जिन्दगीमें ही यह प्रतिज्ञा पूरी हो जायगी? हिन्दुस्तानके सब राजा कहते थे कि हमारा सीधा सम्बंध चक्रवर्ती राजाके साथ है। अुनके साथ संधियाँ हुअी हैं। अुनमें कोअी दखल नहीं दे सकता। परन्तु राजाओंका राजा — अीश्वर — अुनमें हस्तक्षेप कर सकता है। अीश्वरी संकेत अैसा ही था।

१९४२ में हमने प्रतिज्ञा की और कहा कि आप हिन्दुस्तान छोड़ दीजिये। आपका वक्त आ गया है। वे अिससे नाराज़ हुअे। काफ़ी लड़ाअी हुअी। अब वे जानेको तैयार हो गये हैं। मगर यह नहीं कहा जा सकता कि हमींने अुन्हें निकाला। दुनियाके हालात ही अैसे हैं, अिसलिअे जा रहे हैं। विश्व-युद्धमें अुनकी जीत तो हुअी। अिंग्लैण्डने बड़ी मुसीबतें अुठाअीं, परन्तु अन्तमें अुसने सोचा कि हमें जीना हो तो साम्राज्यकी जो गाँठें बाँधी हैं, अुन्हें छोड़ देना होगा।

अेशियाकी तमाम प्रजा पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें युरोपकी कोअी न कोअी सत्ता सवार थी। अेक जापान ही अैसा देश था, जो अुससे स्वतंत्र था और जिसके लिअे हमें गर्व था। परन्तु अुसने अिंग्लैण्डकी नकल करना शुरू कर दिया। विनाशकाले विपरीत बुद्धिः। जापान लड़ाअीमें पड़ा। आज अेशियाका अेक भी देश अैसा नहीं है, जो सब तरहसे बिलकुल स्वतंत्र हो; कुछ देश थोड़े-बहुत अंशोंमें स्वतंत्र हैं, मगर अुनकी अिंग्लैण्ड और अमेरिकासे तुलना नहीं की जा सकती।

आजकल अेशिया अुठनेका प्रयत्न कर रहा है। दो सौ सालकी गुलामीके बाद भी अुसके गर्भमें अपार समृद्धि छिपी हुअी है। अुसमें बुद्धि है। गुलामीके बावजूद हमारे यहाँ अैसे लोग पैदा हुअे हैं, जो दूसरे देशों पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं।

अब हमारा मुल्क आज़ाद होने जा रहा है। अैसे समय मैं प्रजा और राजाओंसे प्रार्थना कर रहा हूँ कि समयका विचार कीजिये। लक्ष्मी तिलक लगाने आअी है।

अेक समय हिन्दुस्तान दूसरे देशोंको — दुनियाको — संदेश देता था। अपना संदेश हजम कर सके, तो अब भी वह दुनियाको त्याग, तपस्या और अहिंसाका संदेश दे सकता है।

हम छूटे तब तक तो कोअी नहीं मानता था कि अंग्रेज़ी सत्ता चली जायगी। जब हम जेलमें पड़े थे, तब किसीको आशा या अुम्मीद नहीं थी, परन्तु हमें थी। हम तो मानते थे कि जिस दिन छूटेंगे अुसी दिन बुलायेंगे। हम छूटे अुसी दिन मैंने तो कह दिया था कि अब हमें अंग्रेज़ोंसे नहीं लड़ना होगा। आपस-आपसमें ही लड़नेका हो तो लड़ेंगे। राजा-महाराजाओंको भी अैसा भरोसा नहीं था कि वे और प्रजा कभी स्वतंत्र होंगे।

बादमें विलायतसे केबिनेट-मिशन आया। चार-पाँच महीने तक चर्चाअें हुअीं। मुसलमानोंको डर लगा कि यह तो हिन्दुओंका राज्य हो जायगा। हिन्दुओंको लगा कि हिन्दुस्तानके टुकड़े होनेके बजाय तो मर जाना अच्छा है।

केबिनेट मिशनने कहा कि सार्वभौम सत्ता तो चली। तुम अपना सम्भालो। लीग और कांग्रेसके साथ बातचीत हुअी। अुन्होंने अेक कामचलाअू सरकार बना दी। हम अुसमें जाकर बैठे। अुस वक्त मुस्लिम लीग बाहर थी। बादमें अुसे भीतर लानेकी कोशिश हुअी। यह सभी चाहते हैं कि अुसे अपने वाजिब हक मिलें। मगर अिसका अर्थ दूसरा राष्ट्र नहीं होता। आखिर ९० फ़ी सदी तो हिन्दुओंमें से ही भ्रष्ट हुअे हैं। धर्मके बदल जानेसे क्या दूसरी जाति बन जाती है!

वाअिसरॉय साहबको लीगने आश्वासन दिया कि अेक होकर काम करेंगे। परन्तु आकर दूसरे ही दिन झगड़ा किया कि हमने कोअी आश्वासन नहीं दिया। बादमें वाअिसरॉय विलायत गये और जिन्नाको खुश करनेके लिअे ६ दिसम्बरको बयान प्रकाशित किया।

कलकत्ता, बंगाल और बिहारमें दंगे हुअे। पंजाबमें आजकल जो हो रहा है अुसकी जड़में क्या है? यही भावना है कि जिसके पास सत्ता होगी, अुसे सौंप कर जायँगे।

कांग्रेस, लीग और राजा मिल जायँ तो निपटारा हो जाता है। जो संस्था मजबूत है अुसके साथ मिल जानेकी बात समझ लेना विचक्षण बुद्धिका काम है। राजा लोग समझकर कांग्रेसके साथ मिल गये, अिसलिअे अुन्हें धन्यवाद देता हूँ।

जो राजा प्रजाको साथ रख सकेंगे अुनका राज्य रहेगा। जो राजा प्रजाको साथ नहीं रख सकेंगे, अुनके सिंहासन दूसरे राजाओंकी तरह मिट जायँगे। दीवान साहबने राजाको नेक सलाह दी अुसके लिअे धन्यवाद। बड़ौदा राज्यकी प्रथा पहल करनेकी है।

मेरी दीवान साहबसे बात हुअी कि आप प्रजाको अधिकार सौंप देंगे तो शोभाकी बात होगी। धारासभामें अधिकारियोंको छोड़कर दूसरोंके मत माँगेंगे, तो प्रजाको खयाल होगा कि हाँ, ये हमारे हैं। अुन्होंने सलाह मान ली और लिखा कि मैं भी दरबार साहबके साथ अुम्मीदवार हूँ।

अभी तक बहुतसे राजा विचार कर रहे हैं कि देखें क्या होता है। तेल देखो, तेलकी धार देखो। मैं अिन राजाओंसे प्रार्थना करता हूँ और कहता हूँ कि अभी आ जाअिये। अन्तमें हारकर आयेंगे, वह शोभा नहीं देगा। शादीके बाजे शादीके वक्त ही अच्छे लगते हैं। मौतके समय शोभा नहीं देते।

अितना बड़ा जमा-जमाया राज्य और दो सौ वर्षकी जमी-जमाअी हुकूमत अंग्रेज़ छोड़ रहे हैं। अैसे समय दुनिया देख रही है कि हिन्दुस्तानकी जनता और राजा क्या करते हैं।

अिस समय तो हिन्दुस्तानको जो अेक करे, वही हिन्दुस्तानका सच्चा हित समझता है। बहुतसे राजाओंको अैसा लगता है कि हथियार जमा करें, ताकि हम सत्ता जमा लें। परन्तु अंग्रेजोंके आनेके समय हिन्दुस्तान जैसा था वैसा आज नहीं है और न रहेगा। हिन्दुस्तानकी शान्ति पर जगतकी शान्तिका आधार है। हमारा क्या कर्तव्य है, यह हमें विचार लेना चाहिये।

बड़ौदाने पहल की। अुसके बाद दूसरे राज्योंने चुनाव करना शुरू कर दिया है। अन्तमें तो सभीको आना पड़ेगा, परन्तु जो आखिरमें आयेंगे अुनकी कदर नहीं होगी।

जो आज आयेंगे अुनके लिअे कहा जायगा कि अुन्होंने हिन्दुस्तानको संगठित करने और शान्ति स्थापित करनेमें भाग लिया। दूसरे तो तमाशा देखनेवाले रहेंगे।

हम — कांग्रेसके जिम्मेदार आदमी — राजाओंकी प्रतिष्ठा रखना चाहते हैं। कोअी-कोअी राजा शिकायत करते हैं कि प्रजामंडलमें कोअी लायक आदमी नहीं हैं। अैसा कहनेमें राजाओंकी शोभा नहीं है। राजकुटुम्बमें जन्मे हुअे कोअी सभी राजा बननेके योग्य नहीं होते।

बहादुर और लायक प्रजा पर राज्य करनेमें शोभा है। अुसमें राजाओंकी भी जिम्मेदारी है, केवल प्रजाकी ही नहीं। पहले अंग्रेज कहते थे कि तुम लायक बनो। तालीम लो। तुममें जात-पाँतके भेद हैं। कअी तरहकी बुराअियाँ हैं। मगर अब पूछते ही नहीं। कहते हैं कि हम तो चले। समझदार आदमी समय देखकर चलते हैं। अिसलिअे मैं राजाओंसे कहता हूँ कि समय देखकर चलिये। राजाओंमें चतुराअी होगी, बहादुरी होगी, तो सेनाका नेतृत्व कर सकेंगे। हिन्दुस्तानके राजदूत बन कर बाहर जानेमें आपकी शोभा होगी। यहाँ खड्डोंमें क्या पड़े हैं? महासागरमें आअिये।

पुलिस भी समझती है कि लोग हमारे हैं। हमें अुनकी सेवा करनी है। पुलिसमें योग्य मनुष्य भरती हों। कॉलेजसे ग्रेज्युअेट बन कर कलम लेकर क्लर्की करनेका समय अब चला गया। राज्य चलानेका बोझा आपके सिर पर पड़ेगा। समय बदल गया है। सहयोगका समय आया है। मैं सारी अुम्र लड़नेवाला आदमी आज आपको सहयोग देनेकी सलाह दे रहा हूँ। दूसरे राज्योंको दिखा दीजिये कि अिस तरह सहयोगसे चलो।

प्रजामंडलके नौजवानोंसे प्रार्थना करूँगा कि 'अिनकलाब जिन्दाबाद' तो हो गया। अीश्वरकी कृपासे यह काम पूरा हुआ। दुनियामें हमारी अिज्जत नहीं थी, परन्तु अब मौका आया है और हमारी अिज्जत बढ़ेगी। राज्यमें हमारा स्थान नहीं था, सो प्राप्त करनेका अब समय आया है। जो राज्य प्रजाके साथ लड़ेगा अुसकी खराबी होगी। हमें खराबी नहीं करना है। रचनात्मक कार्य करना है। बड़ौदाके मंत्रि-मंडलमें दो सदस्य प्रजामंडलके हैं। तीसरे श्री दाबु हैं। अुन्हें भी अपने ही मानना चाहिये। तीन अधिकारी हैं। हम चाहते हैं कि ये छःके छः चुनकर आयें। वे राजाका बोझा हलका करें। लायक आदमी नहीं हैं, अैसा कोअी नहीं कहेगा। नौजवान और बूढ़े अेक हो जाने चाहियें। मैं कॉलेजके नवयुवकोंसे बम्बअीमें कह कर आया हूँ कि नेतागिरीके लिअे हड़ताल कराना, तोड़-फोड़ करना तो अंधे आदमियोंका काम है। स्वराज्यकी बाढ़ तेजीसे आअी है, अुसके नीचे दब जाओगे। मजदूर, जनता, पुलिस और सेवक अपनी

जिम्मेदारी समझें। सरकारके साथ लड़नेका जमाना चला गया। अब तो वही प्रजाका काम कर सकेगा, जिसे निर्माण करना आता होगा, नैतिक गुण बढ़ाना आता होगा। मेरे पास पत्र आते हैं कि सिन्धसे और दूसरी जगहोंसे हथियार आ रहे हैं, मगर वे सब बेकार होंगे। केन्द्रीय सरकारके पास अितने सैनिक साधन हैं कि वह अच्छी तरह व्यवस्था कर सकती है और अराजकताको रोक सकती है। बड़ौदा जैसे राज्य अुसके साथ होंगे।

चलते-फिरते जरा-सी खड़खड़ाहट हुअी कि चले पुलिसके पास। तो अिस तरह आप आनेवाले स्वराज्यको पचा नहीं सकते।

जरा झगड़ा हुआ कि दुकानें बन्द करके भाग गये, खाटके नीचे छिप गये, अैसे नामर्दोंका जमाना चला गया। हरअेक आदमीको बाहुबल पैदा करना होगा। हमारे स्वराज्यमें कमजोरों और गरीबोंकी रक्षा करनी होगी।

स्वर्गीय महाराजाने अस्पृश्यताको मिटानेका अच्छा प्रयत्न किया था। फिर भी अभी तक यह हालत है कि जब मैं मेहमानघरमें आया, तो हरिजन कहने लगे कि हम सत्याग्रह करते हैं। पूछा क्यों? तो कहने लगे कि हमें महेसाणामें पटेल लोग बसमें नहीं बैठने देते। जितने मंदिर हों, जितने सार्वजनिक साधन हों, वे सब गरीबसे गरीब अछूतके लिअे खुले होने चाहियें।

राज्यको मुझे अभी कुछ नहीं कहना है। अुसने तो मेरी सलाह मान ली है। आपसे कहने आया हूँ कि कोअी अविश्वास न रखें। किसीको यह खयाल न होना चाहिये कि राज्य हमारी नहीं मानेगा और अपनी माँगोंके लिअे हमें लड़ना पड़ेगा।

गुलाबके फूल पर बैठी हुअी मक्खी अुसमें से शहद ही खींचेगी, परन्तु मैलेके कीड़ेको गुलाब पर बैठायेंगे, तो वह वहाँ भी थोड़ी सी गंदगी ही करेगा। अुसे अुसीकी बू आयेगी। अिसी तरह गुलामीकी दुर्गन्ध छोड़ दीजिये और स्वतंत्रता-की खुशबूदार हवा लीजिये।

सार यह कि आपके पास प्रजामंडल है। राज्य और प्रजामंडलको सिर्फ़ प्रजाको तकलीफ़ोंसे छुड़ानेमें हाथ बँटाना है। आपको रचनात्मक कार्यमें और साथ ही राज्यके शासनमें भाग लेना चाहिये। पुलिसके साथ अपना बरताव बदलिये। समय बदल गया है। जब हमारे आदमी राज्यकी हुकूमत चला रहे हैं, तब अधिकारियोंके साथ झगड़ा करनेसे काम नहीं चल सकता। राज्यको सुशोभित करनेके लिअे अुनसे सहयोग कीजिये।

अब जो समय आ रहा है, अुसमें अपनी, परिवारकी, पड़ोसीकी, गाँवकी, प्रान्तकी और राज्यकी रक्षा करनेको तैयार होना पड़ेगा। गुजरातियोंमें यह अैब है कि वे फ़ौज और पुलिस पर आधार रखते हैं। परन्तु हम थोड़े हों और बहुतसे

लोग हमला करें, तो हमें बहादुरीसे मरते आना चाहिये। कोअी रोते-रोते न मरे, अिस तैयारीके लिअे अभीसे सचेत रहिये। अेक दूसरेकी निन्दा नहीं करनी चाहिये। अेक हो जाअिये। नौजवान अपनी जिम्मेदारी अुठानेके लिअे तालीम लें। सोच कर काम करेंगे तो आपको कोअी तकलीफ नहीं होगी। गांधीजीने हमें जो शिक्षा दी है अुसे सुशोभित कीजिये। अीश्वरसे माँगता हूँ कि आप अपनी जिम्मेदारी अुठा सकें।

१५०

क्रान्तिके समयको पहचानिये

[ता० १६-४-१९४७ को बड़ौदाके पाटीदार विद्यार्थी छात्रालयमें दिया गया भाषण।]

अिस छात्रालयका मकान देखकर मुझे अुस मंदिरके खंडहरकी याद आती है जिसमें रहकर मैं पढ़ता था। हमारे छात्रालयके लिहाजसे तो यह महल जैसा है। परन्तु मकान मनुष्यको नहीं बनाता। हम करमसदसे पेटलाद आठ दिनका सामान लेकर जाते और हाथसे भोजन बनाते थे। गरीबीमें मनुष्य जितना बनता है, अुतना अमीरीमें नहीं बनता।

तुमको मकान तो बढ़िया मिल गया है। परन्तु चार-पाँच वर्ष यहाँ रहनेके बाद घर पर माँ-बापके गरीब होनेसे और चारों ओर अैसी सुविधा न मिलनेसे परेशानी हो, तो यह कामका नहीं।

जात-बिरादरी तेजीसे मिट जानेवाली है। अिन सब चीज़ोंको जल्दी ही भूल जाना होगा। चारदीवारीमें मनुष्य विकास नहीं कर सकता। तुम सबको नवयुगको, क्रान्तिके समयको पहचान लेना चाहिये।

संभव है कि क्रान्तिके समयमें कुछ अशान्ति भी हो। अिसके लिअे तैयारी रखनी चाहिये। दंगा करनेके लिअे नहीं, परन्तु दंगा होने पर अुसका मुकाबला करनेकी तैयारी रखनी चाहिये। मनुष्योंको दूरंदेश बनकर सावधानी रखनी चाहिये। यथासम्भव अराजकता नहीं होगी। अुसे रोकनेके लिअे काफी प्रयत्न होंगे।

अेक बात है। ब्रिटिश अिलाकेमें शराबबन्दीका काम तेज़ीसे हो रहा है। देशी राज्य अुसका फायदा अुठाते हैं। लोग वहाँ शराब पीने जाते हैं और राज्य आमदनी बढ़ानेके लोभमें पड़ते हैं। राज्यको समझाकर जितना काम हो सके अुतना किया जाय। पिकेटिंग और झगड़ेका समय नहीं है। जब

अंग्रेज़ी हुकूमत यहाँसे चली जायगी, तब अुम्मीद है कि देशी राजा समझ जायँगे। अभी अैसा समय नहीं है कि प्रार्थनाके सिवाय कुछ कर सकें। हरअेक चीज़का समय आता है, अिसे समझना चाहिये। धारासभाके सदस्य विवेकसे काम ले सकते हैं।

राज्यमें हरिजनोंको हिस्सा मिले, अिससे मैं तो नाराज़ हो ही नहीं सकता। सारा हिस्सा मिल जाय तो खुश होअूँ। राज्यकी ज़िम्मेदारी राज्य नहीं छोड़ सकता। राज्य जो कानून बनाता है, वह कभी-कभी कागज़ पर ही रह जाता है। हरिजनोंके लिअे कानून बना देने पर भी अुन पर जैसा अमल होना चाहिये वैसा नहीं होता। अिसमें समाजका भी क़सूर है।

राज्यको भी अितना तो करना ही चाहिये कि जहाँ हरिजनोंको लाभ न मिले, वहाँ मोटर चलानेके और होटल चलानेके परवाने न देने चाहियें। छुआ-छूत मिटानेकी हममें अधीरता पैदा होनी चाहिये।

प्रजामंडलकी बात तो साफ है कि ज़िम्मेदार हुकूमत चाहिये। परन्तु समय अैसा आया है कि हमें राज्यके साथ नहीं लड़ना पड़ेगा। यह अुम्मीद रखें कि बड़ौदा राज्य अिस दिशामें पहल करेगा।

पहले अिस ढंगसे काम करते थे कि राज्यके साथ लड़ने और राज्यकी कड़ी आलोचना करनेसे हमारे और राज्यके बीच संघर्ष हो। परन्तु अुन्हें रेज़ीडेण्टकी अिजाज़तके बिना दीवान रखनेका भी अधिकार नहीं था। अितनी अुनकी परतंत्रता थी। हिन्दुस्तानमें अब आज़ादीकी हवा चलनेवाली है। अुसके असरसे अब कोअी देशी राज्य अछूता नहीं रहेगा। अिस समय गाड़ी सँकरी गलीमें फँसी हुअी है। अिसमें से अुसे सँभाल कर सकुशल बाहर निकाल लेना है। सँभाल नहीं रखेंगे, तो गाड़ी टूट जायगी।

मैं बहुतसे राज्योंसे लड़ा हूँ और लोगोंको लड़ा चुका हूँ। मगर आज दूसरा स्वर निकाल रहा हूँ। क्योंकि अिस वक्त महासागरमें जो मन्थन हो रहा है, अुसमेंसे रत्न निकालना है। दूध बिलोकर अुसमें से मक्खन निकालनेके बजाय बिलोते ही रहें, तो दूधकी हँडिया फूट जाय और फूहड़ माने जायँ।

१५१

कांग्रेसके लिअे सत्ता नहीं चाहिये

[ता० १६-४-१९४७ को सूरतकी सार्वजनिक सभामें शामके छः बजे दिया गया भाषण ।]

१९४२ के अगस्त महीनेके पहले सप्ताहमें बम्बअी जानेसे पहले आपसे अिजाज़त लेने, आखिरी रामराम करने आया था । दुबारा मिलनेकी अुम्मीद नहीं थी । पाँच वर्ष अीश्वरकी कृपासे निकल गये । कअी साथी चल बसे । कस्तूरबा जेलमें गुज़र गअीं । जीवन भरके साथी महादेवभाअी चले गये । वह हमारा दीपक था, जो बुझ गया । परन्तु मैं तो वापस आकर खड़ा हूँ ।

जब मैं गया तब कह गया था कि हमारा तो अेक ही निश्चय है । 'विदेशियो, यहाँसे चले जाओ', यह प्रस्ताव ९ अगस्तको किया था । अुस वक्त तो ये लोग गुस्सा हुअे थे । मगर आज कहते हैं कि भाअी, हमें जाना ही है । अगर हमारा खयाल हो कि वे लोग सच्चे हैं, तो हमें अुनके साथ मुहब्बत रखनी चाहिये । अुन्होंने लड़ाअीमें बड़ी हिम्मत दिखाअी । आज भी अुनके यहाँ बहुत कष्ट हैं । अैसे बहादुर लोग यहाँसे जाना चाहें, तो अुनसे दोस्ती रखनी चाहिये । वे कहते हैं कि हमें शान्तिसे सत्ता सौंपनी है । बहुतसे लोग मानते ही नहीं थे कि वे अितनी बड़ी हुकूमत छोड़कर अिस तरह चले जायँगे । मगर वे लोग शराफ़तके साथ अपनी सत्ता छोड़ना चाहते हैं । आज दुनिया हिन्दुस्तानकी तरफ देख रही है कि ये सीधी तरह सत्ता लेंगे या लड़ मरेंगे । विदेशोंके अखबारवाले और राजदूत आये हे और हम क्या करते हैं सो देखते है । आजकल तो हम अेक दूसरेके गले काट रहे हैं । बालबच्चों और बूढ़ों तकको नहीं छोड़ते । जानवरोंसे भी बुरे बन गये हैं । अंग्रेजोंको भी शंका होती है कि हम क्या करेंगे ! परन्तु वे कहते हैं कि कुछ भी हो, हम तो जायँगे । अितना बड़ा मुल्क, अैसो जमी जमाअी हुकूमत छोड़ना किसे अच्छा लगता है ! फिर भी वे जा रहे हैं । और हम जो चाहते थे वह सामने आकर खड़ा है, तब हमें घबराहट हो रही है । हम लड़ाअी-झगड़ा करनेको तैयार हो गये हैं कि राज्य हिन्दुओंका होगा या मुसलमानोंका । सावधान नहीं हुअे और संगठन नहीं किया, तो मुँह तक आया हुआ कौर गिर जायगा; किनारे पहुँचा हुआ जहाज डूब जायगा । हमें अिसी देशमें रहना है । आखिर हिन्दू-मुसलमान सभी अिस मुल्कके रहनेवाले हैं । हमें भाअी-भाअीकी तरह रहना है ।

अितनी बड़ी फ़ौज, अितनी बड़ी सिविल सर्विस, अितनी पुलिस, अितनी बड़ी रेलवे — यह सब सत्ता लेना कोअी खेल नहीं है। आसान बात नहीं है। और समय अैसा है कि तेज़ीसे काम करना चाहिये।

थोड़ेसे राजा-महाराजा कहते हैं कि हम देखते रहें कि पलड़ा किस तरफ़ झुकता है। जब लक्ष्मी तिलक करने आअी है, तब कपाल धोने लगेंगे, तो तिलक तिलककी जगह रह जायगा और कपाल पर दाग लग जायगा। अगर हम यह मौका चूक गये, तो भावी सन्तानें हमें शाप देंगी कि हमारे ये बुजुर्ग बेवकूफ थे। अिसलिअे राजाओंसे भी बार-बार अपील करता हूँ। पहले तो वे कहते थे कि हमारा ब्रिटिश राजपरिवारसे सीधा सम्बन्ध है। हमारी जो पवित्र सन्धियाँ हुअी हैं, अुन्हें कौन मिटा सकता है? परन्तु सम्राटने घोषणा की है कि वे सन्धियाँ खतम हो गअीं। हम तो अिकहरे गुलाम थे। आप दोहरे थे। मगर अुस गुलामीसे हमारे साथ आप भी छूट गये हैं। हम आपसे भी अपील करते हैं। मैं मानता हूँ कि आखिरमें सब राजा ठिकाने आ जायँगे। जिस ढंगसे हिन्दुस्तानको प्रतिनिधित्व दिया गया है, अुसी ढंगसे देशी राज्योंको भी दिया गया है। दस लाख पर अेक। अिस हिसाबसे विधान-सभा दिल्लीमें बैठेगी और विधान तैयार करेगी।

आजके ज़मानेमें प्रजाकी गिनती है, राजाओंकी नहीं। प्रजा कमज़ोर है, यह कहनेमें शोभा नहीं है। प्रजा कमज़ोर तो राजा भी कमज़ोर। आपको अपनी गद्दी कायम रखनी हो, तो प्रजाको प्रसन्न रखना पड़ेगा। आप भी अंग्रेज़ोंकी तरह प्रजाको स्वतंत्रता दीजिये। आप यदि यही कहते रहेंगे कि प्रजा लायक़ नहीं, तो मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या राजकुटुम्बमें पैदा हुअे सभी व्यक्ति राजा बननेके योग्य होते हैं?

तमाम भेद, तमाम दल भूल कर हमें अेक हो जाना चाहिये। जो फूट डालेंगे, वे भारतके साथ द्रोह करेंगे। अिसीलिअे हम बार-बार अपील कर रहे हैं कि अेक हो जाअिये। लीग और कांग्रेस बहुत वर्ष तक साथ रहकर अंग्रेज़ोंसे लड़ी हैं। जुदाअी तो अभी-अभी हुअी है। अिसे मिटा कर फिर अेक हो जाअिये।

हम किसी पर जबरदस्ती करना नहीं चाहते। परन्तु साथ ही साथ कांग्रेसने यह भी कह दिया है कि वह किसीकी ज़बरदस्ती मंजूर नहीं करेगी। किसी भी लायक आदमीसे, जिसका अिसमें स्वार्थ या हित न हो, फैसला करानेको हम तैयार हैं। कांग्रेस हिन्दुस्तानकी बड़ी ज़बरदस्त संस्था है। सबसे बड़ी संस्था है, यह स्वीकार करना चाहिये। कांग्रेसका अुद्देश्य क्या है? कांग्रेसको अपने लिअे सत्ता नहीं चाहिये, परन्तु देशके तमाम लोगोंके लिअे चाहिये।

मुझे बात करनी है कांग्रेस वालोंके साथ। जो ताकत कांग्रेसके पास है अुसकी रक्षा करके अुसे बढ़ायेंगे, तो कांग्रेस अच्छी तरह मजबूत रहेगी। परन्तु जबसे सत्ता हाथमें ली है, तबसे कांग्रेसमें गंदगी घुस गअी है। काम किये बिना नेतागिरी लेनेकी कोशिश हो रही है। जो मिल जाय अुसे जल्दीसे बाँट लेनेकी नीयत और कोशिश होगी, तो वह पचेगा नहीं। अब जेलखानोंमें नहीं जाना है। विदेशी सत्तासे नहीं लड़ना है। भूगर्भमें छिपनेकी जरूरत नहीं है। संगठनके नाम पर पैसा अिकट्ठा करके खा जाना आदि सब बातें गलत हैं। आजकल कअी तरहकी चालें चली जा रही हैं। अेक चाल हड़ताल करानेकी है। मज़दूरोंसे अधिकसे अधिक माँग करानेकी होड़ लगी हुअी है। धनिकोंके खिलाफ लड़नेकी बात तो कुछ समझमें आती है, यद्यपि अुसका भी अभी वक्त नहीं है। मगर हमारी अपनी ट्राम, बस और म्युनिसिपेलिटी है, वहाँ भी हड़ताल! और पुलिस तककी हड़ताल कराने पहुँच गये हैं। ये सब हरकतें स्वराज्यकी हैं या बेकार फसाद पैदा करानेकी हैं? कहते हैं कि कांग्रेसके नेता धनवानोंके साथी हैं। अगर कांग्रेस धनिकोंकी होती, तो हिन्दुस्तानको यहाँ तक नहीं पहुँचा सकती थी।

हमारा काम तो पूरा होने आया है। हाथमें आया हुआ छीन नहीं लें, तो पूरा हो जायगा। अिसलिअे कहता हूँ कि भाअी, थोड़े महीने ठहर जाओ। कुछ नहीं सूझे तो आराम लो। बहुत काम किया है।

अपना घर तो है ही नहीं कि जले तो बुझाना पड़े। म्युनिसिपेलिटी कांग्रेसकी है। राज्य कांग्रेसका है। ये हड़ताल करानेवाले चोर-डाकुओंसे ज्यादा अपराधी हैं। चोर-डाकू अेकका अपराध करते हैं, ये तो समाजका अपराध करते हैं। मैं जब बम्बअी गया तब मैंने वहाँके कार्यकर्ताओंसे कह दिया कि पंद्रह सौ आदमियोंसे दब गये, तो हिन्दुस्तानका राज्य नहीं चला सकोगे। या तो राज्य लेनेकी बात छोड़ दो या मोटरके बिना काम चलाओ, नहीं तो बम्बअी छोड़ दो। मगर कांग्रेस अिस ढंगसे न बनी है और न बनेगी। अिस तरहकी हड़तालोंसे कांग्रेस नहीं डरेगी। कांग्रेस वह संस्था है जिसने अितनी बड़ी हुकूमतको भगा दिया। अब तक तो तोड़-फोड़का धंधा किया। जेलमें गये। वहाँ तो दुःख था ही नहीं। वहाँ राशनकार्डके बिना रोटियाँ लाकर दे देते थे। अुसमें कोअी बड़ा त्याग नहीं किया। अिस प्रकार अैसी त्यागकी बातें बहकानेकी बातें हैं। कांग्रेसको अैसी बेढंगी मत बनने दीजिये। हम अपना धंधा करते रहें और पाँच आदमी कांग्रेसका काम करते रहें, अिससे भी काम नहीं चलेगा। हम कहाँ हैं, क्या आ रहा है, अिस पर विचार कीजिये और तैयारी कीजिये, नहीं तो गुलामीको याद करेंगे। राज्यके कर्मचारी आज आपके सेवक हैं। जो

पुलिस नौजवानों पर लाठी चलाती थी, वह पुलिस चली गअी। आज पुलिसका साथ देनेमें हमारा हित है। पुलिसको हड़ताल करनेको कहनेमें मुझे केवल अराजकता दिखाअी देती है। अुसे वफ़ादारी सिखानी चाहिये। जिस समय आपको बिखेरना हो, तो अुसमें देर नहीं लगेगी। जो हुकूमत चलाने बैठे हैं अुन्हें तंग करनेका, अुनकी आलोचना करनेका अेक रोग-सा लग गया है। अनेक आलोचनाअें होती हैं। सरकारी नौकर रिश्वत खाते हैं, जो चीज़ चाहिये सो कुछ भी नहीं मिलती। मगर अिन सब बातोंके लिअे कांग्रेसको दोष देनेसे क्या होगा? यह तो पुराने राज्यकी विरासत है। अब हमें अिन सब बातोंकी सफ़ाअी करनी है। किसीको मेरी जगह लेनी हो, तो मैं पाँव पड़कर देनेको तैयार हूँ। मगर किसीकी यह अिच्छा हो कि कांग्रेसको तंग करें, तो कांग्रेस यों हारनेवाली नहीं है। जो आदमी बोझा अुठानेको तैयार हो वह सामने आये। परन्तु ठोस काम किये बिना लेनेकी बात करेगा, तो वह नहीं मिलेगा। अुसके लिअे तालीम लेनी पड़ेगी।

हम पाँच बरस बाद मिल रहे हैं। दुनियाकी जो स्थिति पाँच साल पहले थी, वह आज नहीं है। अुस समय अंग्रेज़ोंकी आँखोंमें वैरभाव था। अब अुन्हीं अंग्रेज़ोंकी आँखोंमें नम्रता है, अुनकी वाणीमें मिठास है। वे समझ गये हैं कि अिस तरह संसारमें हमारा काम नहीं चलेगा। अगर वे समझ गये, तो क्या हम न समझेंगे? अिसलिअे जिम्मेदारी अुठानेकी तैयारी कीजिये।

अेशिया महाद्वीपमें अेक ही मुल्क आज़ाद था — जापान। अुसने युरोपका अनुकरण किया। हथियारोंसे अुसका मुकाबला किया। अुसका माल सारी दुनियामें जाता था। मगर अिन नाटे लोगोंको अुससे सन्तोष नहीं हुआ। अुसे साम्राज्यका लोभ हुआ और अुसीमें बरबाद हो गया।

आज स्वतंत्र हिन्दुस्तानमें अितनी ऋद्धि-सिद्धि भरी है कि कोअी भूखा न रहे, अितना अुद्योग विकसित किया जा सकता है। परन्तु कुछ लोग अुद्योगका विकास करनेसे पहले कहते हैं कि मज़दूरोंको दे दो। सभी अुद्योग-धंधोंका विकास करनेमें कुछ वक्त तो लगता ही है न? हमें समयका विचार करना चाहिये। हमें नेतागिरी चाहिये तो सारे अेशियाकी पड़ी है। शराफ़तसे, कुशलतासे काम लेंगे, तो सब कुछ मिल जायगा।

पाँच वर्ष बाद यहाँ आया हूँ। स्वागतों और जुलूसोंसे थका हुआ हूँ। मगर दिलमें आग जल रही है कि क्या ये नौजवान बोझा नहीं अुठायेंगे? अुनसे विनती करता हूँ कि वफ़ादारीसे कांग्रेसकी सेवा करो। केवल आलोचना ही न करो। हम गुजरातके लोग व्यवहार-कुशल माने जाते हैं, हममें समझ है। अेक वर्षमें हम कांग्रेसकी शक्ति अितनी संगठित कर दें, आपसकी फूट अैसी मिटा दें कि

जिम्मेदारीका बोझा आ जाय तो अुठा सकें। यह कोशिश है कि सब अेक हो जायँ और धन ज्यादा पैदा हो। आजकल किसानोंमे आन्दोलन हो रहा है। ये काम करनेवाले मेरे देखे हुअे हैं और किसान भी देखे हुअे हैं। अुनके पास अेक या दो अेकड़ ज़मीन है। ८० फ़ीसदी किसानोंके पास ५ अेकड़के अन्दर ज़मीन है। अुससे वे अपने कुटुम्बका भी पालन नहीं कर सकते। अुनसे यह कहनेका क्या अर्थ कि मज़दूरको ज्यादा दो? अिससे न तो अुनका पेट भरेगा और न मज़दूरोंका भरेगा। जब खेड़ा जिलेमें गया, तब वहाँ नौजवानोंसे मैंने कहा कि हिन्दुस्तान छोड़कर बाहर कमाने जाओ। बापका कुआँ गहरा हो, तो क्या अुसमें डूब मरे? हम गुजरातवाले व्यापारिक बुद्धिके समझदार और होशियार लोग हैं। हमे बिना समझे दूसरोंकी नकल नहीं करनी चाहिये। आपसे जिस कामकी अपेक्षा है, अुसे तेजीसे पूरा कीजिये। अस्पृश्यता मिटाअिये। मंदिरोंमें, सार्वजनिक स्थानोंमें, सार्वजनिक सवारियोंमें, कुओं पर, रेल और मोटरमे कहीं भी छूत-अछूतका भेद नहीं होना चाहिये। अिससे दुनियामें हमारी बदनामी होती है। यह हमारी बेवकूफी है।

आज हमें चालीस करोड़ लोगोंका कल्याण करनेका अवसर मिला है। हमारे देशमें शान्ति हो, नौजवानोंमे चरित्र हो, साहस हो, तो सामने सारी दुनिया पड़ी है। व्यापार करो, धन पैदा करो और फिर दो मज़दूरोंको।

बीस पच्चीस वर्षसे सूरत शहरमें गटरें बनानेके लिअे चिल्ला रहा हूँ। पर अभी तक नहीं बनीं, क्योंकि हम कमअक्ल है। पंगतोंमें अिस गटर पर बैठकर लड्डू और श्रीखंड खानेका हमें शौक है। कोअी हमारे फोटो ले ले तो शर्म आये। हम सूरतमें रहते हैं, मगर वह तो बदसूरत है। अितने पर भी स्वराज्य आ टपका है। वह ज्यादा तो गांधीजीकी मेहनतसे और कुछ-कुछ कांग्रेसकी टूटी-फूटी मेहनतसे और सबसे अधिक अीश्वरकी कृपासे हमें मिला है।

मैंने जो कहा है अुस पर शान्तिसे विचार कीजिये। जो कुछ कहता हूँ, वह आपके प्रति प्रेम होनेके कारण कहता हूँ। जन्म भर लड़नेवाला मैं आज आपसे मौजूदा सरकारका साथ देनेको कहता हूँ। हरअेक चीज़ अखबारमें छाप देनेसे अच्छी नहीं हो जाती। हरअेक बातकी आलोचना करना अच्छा नहीं है, आलोचना भी रचनात्मक होनी चाहिये। अैसी आलोचना कीजिये, जिससे लोगोंको लाभ हो।

आप सबके प्रेमके लिअे आभार मानता हूँ।

१५२

पंजाबके संकटमें सहायता कीजिये

[ता० १६-४-१९४७ को सूरतमें श्री छोटूभाअी मारफतियाके बँगलेपर व्यापारियोंकी तरफसे दी गअी पार्टीमें दिया हुआ भाषण ।]

आप सबने जिस प्रेमसे मेरा सम्मान किया है और पंजाबके संकट-निवारणके लिअे जो कुछ दिया है, अुसके लिअे मैं आपका आभार मानता हूँ। अिसमें जो कुछ सहायता दी जा सकती है, वह देना हमारा धर्म है। अुसके संकटकी कहानी कहनेके लिअे मेरे पास समय नहीं है। मानव धर्म तो है ही, साथ ही हिन्दुस्तानकी मदद करना भी हमारा धर्म है। अखण्ड हिन्दुस्तान चाहिये तो सहायता देनी होगी।

दुनियामें जबरदस्त लड़ाअी हो चुकी है। अुस भीषण संहारका असर सारे संसारमें पड़ रहा है। अेक बार सुलगाअी हुअी होलीके दावानलको बुझनेमें देर लगती है। यह क्रान्ति-काल है। हम अस्थिरताके कालसे गुज़र रहे हैं। अुसमें मुश्किलें सभीके लिअे रहेंगी। बत्तीका फ्यूज़ अुड़ जाता है, तो थोड़ी देर अँधेरा हो ही जाता है। तब अितनी बड़ी सल्तनतका चिराग गुल हो जानेपर अँधेरा छा जाये, तो अिसमें आश्चर्य ही क्या? अिस डाँवाडोल समयमें हमें बड़ी कुशलतासे, सावधानीसे काम करना चाहिये। बहादुर आदमी मुसीबतोंसे घबराते नहीं हैं। दूसरे देशोंके मुकाबले हमारी मुसीबतें कम हैं। जो जर्मनी अेक समय सारी दुनियापर सत्ता जमाने निकला था, अुसके यहाँ आज मनुष्य धड़ाधड़ मर रहे हैं। जो कामचलाअू विदेशी सरकार अुसपर थोप दी गअी है, अुसके विरुद्ध भूखे नरकंकालोंके जुलूस निकाले जाते है।

मगर हममें कुशलता हो, मेल हो, तो हमारा भविष्य अुज्ज्वल है। दुनियाके लोग हमारे साथ व्यापारिक सम्बन्ध जोड़ने और मित्रता करनेको अुत्सुक हैं। अब हमारे और अुनके बीच कोअी नहीं आयेगा। तमाम स्वतंत्र राज्य समझ गये हैं कि अब हिन्दुस्तान भी स्वतंत्र जैसा ही है।

आज दुनिया छोटी हो गअी है। दुनिया तो अुतनी की अुतनी ही है, परन्तु आने-जानेके साधन अितने बढ़ गये हैं कि लम्बे-लम्बे अन्तरोंकी कोअी गिनती नहीं रही।

हम अपने आपसी वैरभाव मिटा दें, तो हमारा भविष्य अुज्ज्वल है। अिसके लिअे प्रयत्न कर रहे हैं। जब अितनी बड़ी क्रान्ति होती है, तब दुर्भाग्यसे अुसमें

अैसे दंगे-फसाद होते ही हैं। फिर भी हम समझ जायँ और दिमाग ठंढा रखें, तो अपनी रक्षा कर सकते हैं।

१९४३ में बंगालमें भूखसे तीस लाख आदमी मर गये। अिन दंगोंमें अितने आदमी नहीं मरे। परन्तु जिस ढंगसे लोग अेक दूसरेको मारते हैं, अुसमें हैवानियत है। हम पशुसे भी गिर गये हैं। अिससे दुनियामें हमारी बदनामी होती है।

हमारे देशकी संस्कृति दूसरी ही है। अुसने दुनियामें जो नाम पाया है, वह तलवार-बन्दूकके जोरसे नहीं, परन्तु केवल प्रेमसे पाया है। यदि हम अुस संस्कृतिके योग्य बननेका प्रयत्न करें, तो आज जो क्षणिक दुःख आ पड़ा है, वह आसानीसे मिट जायगा और भुला दिया जायगा।

स्वतंत्र भारतमें हमारा पुराना वैभव वापस आ जाय, हम भगवानसे यही प्रार्थना करें।

१५३

अधिक अुपजाओ

[ता० १७-४-१९४७ को बारडोली स्वराज्य-आश्रममें हुअी सार्वजनिक सभामें दिया गया भाषण।]

बहुत लम्बे अरसेके बाद मैं आप सबसे मिलने आया हूँ। बहुत काममें फँसा होनेके कारण बार-बार नहीं आ सकता। आअूँ या न आअूँ, मेरा दिल तो यहीं रहता है।

अिस तहसीलमें आपके साथ रहकर हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी लड़ाअीमें काफी हिस्सा लिया है। पाँच वर्षमें काफी अुथल-पुथल हुअी है। आपके यहाँ भी हुअी होगी। परन्तु जब हम मिलते हैं, तब अिस तरह दिल भर आता है, जैसे अेक परिवारके हों। हम कठिन समयमें से गुज़र रहे हैं। थोड़ा बहुत संकट आ जाय, तो अुसे सहन करनेकी दृढ़ता रखनी चाहिये।

बारडोली तहसीलके लोग दुःख पड़ने पर रो दें, यह हमें शोभा नहीं देता। जिस बहादुरीसे वे सरकारके खिलाफ लड़े थे, अुसी बहादुरीसे दुःखका सामना भी करें। सुख और दुःखको पहचानना सीखना चाहिये। सुख और दुःख जीवनके साथ लगे हुअे हैं। गरीबीमें अेक प्रकारका दुःख है, परन्तु अुसमे जो सुख है वह अमीरीमें नहीं है। गरीबीमें भगवानने अेक तरहका सुख दिया है। सूखी रोटी खानेसे गरीबको मजा आता है, क्योंकि अुसके पेटमे आग जलती है।

अिस कठिन समयमें खुराककी कमी है। दुनियाके थोड़े ही देशोंके पास अनाज है। वह भी काफी नहीं है।

जर्मनीने अमेरिका और अिंग्लैण्डके विरुद्ध लड़ाअी की, जापानके साथ दोस्ती की, परन्तु अंतमें वह हार गया। अुसने किसी दिन भूख नहीं देखी थी। आज अुसके बच्चोंको भूखका रोग लग गया है। आज अमेरिका जब अुसे अनाज भेजता है, तब वह खाता है।

यहाँ आजकल अेक आदमीको १२ औंस अनाज मिलता है। हम मांसाहारी नहीं हैं। वे लोग तो थोड़ा मांस भी खा लें। मगर आज अुसके लिअे भी काफी जानवर नहीं रहे। विलायतमें बाल-वृद्ध सबको सुबह नाश्तेमें दो अंडे चाहियें। आजकल हफ्तेमें मुश्किलसे अेक अंडा मिलता है, तो भी वे रोते नहीं।

किसानमें बुद्धि हो, तो वह भूखों क्यों मरे? सरकारमें हमारे आदमी बैठे हैं। हमारे पाससे जो अनाज जाता है, वह हिन्दुस्तानमें दूसरी जगह भूखों मरनेवाले लोगोंके लिअे ले जाया जाता है। हमारे पास जितना अनाज है, अुसे बाँटकर खा लिया जाय, अिस हिसाबसे सारा अिन्तजाम किया गया है।

शहरके लोगोंको शकर ज्यादा दी गअी, क्योंकि अुन्हें चाय अधिक पीनेकी आदत है। परन्तु गुड़-शकर जैसी छोटी-छोटी बातोंकी ओर ध्यान देनेकी जरूरत नहीं है। यह तो थोड़े ही समयका दुःख है।

पिछले बड़े विश्व-युद्धमें जो तोड़-फोड़ हुअी, ज़मीन बिगड़ गअी, खेती न हो सकी, अुसीसे अनाजकी कमी हो गअी है। बरस दो बरसमें सब ठीक हो जायगा। बरस दो बरस यह दुःख किस तरह सहा जाय, अिसकी तरकीब ढूँढ़नी चाहिये। शकर या अनाजके लिअे रोना नहीं चाहिये। हम किसानोंको चप्पा-भर ज़मीन भी बेकार नहीं रहने देनी चाहिये।

हम जुवार पैदा करते हैं, परन्तु अुसीसे हमारा पोषण नहीं हो सकता। सूरण, रतालू, मूली जैसे कंद-मूलमें खूब पोषक तत्त्व होते हैं। मैंने यहाँ केलेकी खेती की, तब तक मुझे पता नहीं था कि अिस ज़मीनमें अितना केला होता है। अब खेड़ा जिले तक सब जगह बाड़ियाँ हो गअी हैं। जो चीज़ें आसानीसे हो सकें, वे अिन बाड़ियोंमें भी पैदा करनी चाहियें।

हमने जब सरकारसे लड़ाअी लड़ी, तब अेक बात सीखी कि सभी जातियाँ अेक पिताकी संतानकी तरह रहेंगी, तो हममें कोअी फूट नहीं डाल सकेगा। अुस समय हममें मेल था, अिसीलिअे हम लड़ सके थे।

हमें मेल रखकर काम करना हो, तो किसान और मज़दूरमें कोअी बेबनाव नहीं पैदा होना चाहिये। वर्ना दुःख अुठाना पड़ेगा।

१५४

शिक्षकोंका गौरव

[ता० १७-४-१९४७ को बारडोली स्वराज्य आश्रममें जिला स्कूलबोर्डके तालीम लेने आये हुअे शिक्षकोंसे ।]

कुछ समय पहले बोचासण गया था। वहाँ भी शिक्षक-शिक्षिकाअें तालीम लेने आये थे। यह आश्रम बोचासणसे अलग प्रकारका है। वेडछीका दूसरी तरहका है। जिस आश्रममें जाते हैं, वहाँ कुछ-न-कुछ खास बात सीखनेकी होती है।

बम्बअी सरकारने फैसला किया है कि शिक्षक-शिक्षिकाओंको तालीम दी जाय। शिक्षामें फेरबदल करनेके लिअे शिक्षकोंको तालीम देनेकी ज़रूरत महसूस हुअी। विद्यार्थियोंको कुछ न-कुछ अुद्योगकी शिक्षा देनी हो, तो पहले शिक्षकोंको देनी चाहिये।

मौजूदा सरकारने हुकूमतकी बागडोर कठिन समयमें सँभाली है। अिससे अधिक कठिन संयोगोंमें केन्द्रीय सरकारने देशका शासन सँभाला है।

जब बम्बअीका शासनतंत्र सँभाला, तब शिक्षकोंने हड़ताल कर दी थी या करनेवाले थे। मेरे पास अुस समय किसी शिक्षकका पत्र आया था। मेरी सलाह माँगी थी। मैंने अुसे जवाब दिया कि आप अिसमें न पड़िये। किसीने वह पत्र छपवा भी दिया। कुछ शिक्षकोंको दुःख भी हुआ। कोअी मेरी सलाहको अुलटी समझे तो भले समझे, मैंने तो सीधी ही सलाह दी थी।

आपकी थोड़ी बहुत तनखाहें तो बढ़ गअीं, मगर समाजमें आपका दर्जा भी कुछ बढ़ा? पुराने ज़मानेमें जब शिक्षक मंदिरोंमें बैठ कर पढ़ाते थे, तब अुनका जो दर्जा था वह आज आपका है?

मुझे याद है कि हम पढ़ते थे, तब शिक्षक कैसा भी कम-ज़्यादा पढ़ा हुआ होता, तो भी अुसकी अिज़्ज़त होती थी। मुझे यह भी याद है कि अेकादशीके दूसरे दिन शिक्षकका व्रत खुलवानेको घी, आटा, तेल, साग वगैरा देनेके लिअे विद्यार्थियोंके घरोंमें तैयारी होती थी।

मजदूर वेतन बढ़वानेके लिअे हड़ताल करते हैं, परन्तु आप शिक्षक लोग क्या मज़दूरों जैसे बनना चाहते हैं?

साढ़े तीन महीनेमें आप क्या सीख कर जायँगे? आश्रममें अगर कुछ सीखना है, तो दिलकी शुद्धि करना और समाज-सेवा करना ही सीखना है।

गाँवमें किसी भी सवालके बारेमें सलाह लेनी होती, तो पहले लोग शिक्षकके पास जाते थे।

मगर आपको दुःख न हो तो मैं कह दूँ कि आजकल तो शिक्षकोंको विद्यार्थियोंको पढ़ानेकी भी परवाह नहीं है। पढ़ाना अेक बेगारका काम हो गया है और अिसलिअे समाजको भी शिक्षककी परवाह नहीं है। आज़ाद हिन्दुस्तानमें अैसा नहीं होना चाहिये। आज़ाद हिन्दुस्तानको तालीम देनेकी कुंजी आपके हाथमें है। आपका व्यवहार अैसा होना चाहिये कि समाजमें आपका दर्जा और सम्मान बढ़े।

जो स्कूलमें चार-पाँच घंटे बेगार कर दे, वह शिक्षक नहीं। कारखानेमें मज़दूरों पर मुकादम होता है। वह हाज़िरी लेता है और कामका हिसाब लिखता है। परन्तु आप पर कोअी मुकादम नहीं होता। कभी कभी अिन्स्पेक्टर आता है, जो आपमेंसे ही होता है। मज़दूर तो दो दिन हड़ताल करके दबाव डाल सकते हैं। यह बात सच है कि शिक्षकका वेतन मज़दूरसे कम है। मगर मेरे खयालसे शिक्षकका वेतन औरोंके मुकाबले कुछ कम ही रहेगा। सारी दुनियामें अैसा ही है। हमारे लोकल बोर्ड सबसे गरीब हैं। अुनके स्कूल, अुनके दवाखाने कुछ भी देखिये, सब खंडहर जैसे हैं। अैसे टूटे-फूटे हिन्दुस्तानको अूपर अुठाना है। आप जब यहाँ आ गये हैं तो अपने कान, आँख खुले रखिये। आश्रमका अितिहास समझिये। यह कैसे स्थापित हुआ, यहाँ कौन कौन हैं, अुन्होंने कहाँ तक पढ़ाअी की है, कैसे कॉलेज छोड़े, कितनी बार और क्यों जेल गये, यहाँ कौन आता है, कौन जाता है? ये सब जाननेकी बातें हैं। अिनके जाननेसे आपको बहुत कुछ सीखनेको मिल सकता है। आपके दिमागमें ये सब बातें सीखनेके लिअे जगह हो, तो हड़ताल करनेकी बात ही न रहे।

दो दिन पहले जब मैं बंबअी आया, तो वहाँ मोटर, बस और ट्रामवेकी हड़ताल हो रही थी। वह बड़ी कंपनी है, अंग्रेज़ मैनेजर है। पहले तो संगठन करने ही नहीं देते थे, परंतु अब लोगोंको किसी तरहका डर नहीं है। 'करो हड़ताल' का बोलबाला है। समाजके लिअे अत्यन्त अुपयोगी तार-डाक विभागमें भी हड़तालें होने लगी हैं। जनताकी सेवा करनेके महकमोंमें हड़ताल करना सिखाया जाता है। ये सब बातें देशके लिअे अच्छी नहीं हैं।

हड़ताल करानेका सबसे अधिक कारण तो यह है कि हड़ताल करानेवालोंको नेता बननेकी हवस है। आप मज़दूर वर्गके आदमी नहीं हैं। आपके नेता आपके शिक्षक वर्गमें से हो सकते हैं। आप कोअी मजदूर नहीं हैं। आपको अपने दिमागसे काम लेना चाहिये।

आपका दर्जा अेक कीमती चीज़ है। अुसे प्राप्त कीजिये। शिक्षकोंमें किसी हद तक अुद्धतता आ गअी है। अनुशासन नहीं रहा। हड़तालकी हवासे अनुशासन-पालन घटता जा रहा है। हड़तालमें भी युरोपमें लोग वफ़ादारीसे काम करते हैं। हमारे यहाँ तो आजकल सरकारी शासनमें लगे हुअे आदमी चौथाअी काम करते हैं। सरकारने मजबूर होकर 'पे कमीशन' मुक़र्रर किया। लड़ाअीके समय विभाग बढ़ा दिये गये थे और वेतन भी बढ़ा दिये गये थे। अब अुन्हें कम करनेका वक्त आया है।

आजकल तो आदमी बढ़ाने और काम कम करनेकी हवा चल पड़ी है। गलत खयाल फैले हुअे हैं। आपके प्रति लोगोंका आदर न रहेगा, तो आपका थोड़ा-सा वेतन बढ़ जानेसे भी क्या होगा?

१५५

सेवादलका फर्ज

[ता० १८-४-१९४७ को बारडोली स्वराज्य आश्रममें सेवादलके भाअी-बहनोंसे।]

सेनामें समाजके लिअे ज़रूरी माने जानेवाले कामोंकी तालीम पाया हुआ जैसा दल होता है, वैसा ही दल आपको बनाना चाहिये। सेनामें बाहरसे भंगी नहीं आता। सैनिक जहाँ जाते हैं, अेक शहर-सा बसा देते हैं। आपमें और सेनामें अितना ही फर्क होना चाहिये कि आप बन्दूक नहीं रखते। आप अहिंसक सिपाही हैं। आपको अपना शरीर अच्छी तरह कसना चाहिये। भोजन अैसा करना चाहिये, जिससे पोषण मिले।

हमारी खुराक मात्रामें अधिक होती है, लेकिन अुसमें पौष्टिक तत्त्व कम होते हैं। आजकल विलायतमें साधारण आदमीको जितने पौष्टिक तत्त्व मिलते हैं, अुनसे हमें आधे ही मिलते हैं। पेट भरा हुआ मालूम होता है, लेकिन अुसमें ज्यादातर पानी होता है। हम मसाले भी ज़रूरतसे ज्यादा खाते हैं।

शरीरको मजबूत और कसा हुआ बनाकर समाज-सेवाकी तालीम लेनी चाहिये। किसीको अकस्मात चोट लग जाय, तो तात्कालिक सहायता कर सकनेके लिअे आपको प्रारम्भिक अुपचारकी तालीम लेनी है। साथ ही सैनिकोंको सभ्यता भी सीखनी है। सेवा करनेवाले मनुष्यको विनय खूब सीखना चाहिये। वरदी पहनकर अभिमान नहीं, बल्कि खूब नम्रता आनी चाहिये। हमारा व्यवहार अैसा होना चाहिये, जिससे हमारे लिअे लोगोंमें आदर पैदा हो। सबको अैसा लगे कि ये सेवा करनेवाले हैं।

१५६

दिल्लीके गुजरातियोंसे

[ता० ११-५-१९४७ को दिल्लीके गुजराती समाजके मानपत्रके जवाबमें ।]

आपका मुझ पर प्रेम है, यह ठीक है। परन्तु आप मेरा जो गुणगान कर रहे हैं, अुस सबको मैं सच मान लूँ तो पागल हो जाअूँ। मैं ७० वर्षका हो गया हूँ, परन्तु मेरी बुद्धि ठिकाने है। मैं खुद जानता हूँ कि मैं कहाँ हूँ।

आप सबसे मिल कर मुझे बड़ी खुशी हुअी। आजकलका समय बड़ा कठिन है। अिस समय हमें अपना धर्म समझ लेना चाहिये। आप गुजरात छोड़कर यहाँ रोज़ी पैदा करनेके लिअे आये हैं, परन्तु दिल्लीमें रहते हैं तो आपको पूरी तरह दिल्ली-निवासी बन जाना चाहिये। दिल्लीके प्रति आपका धर्म पहले पालन करना चाहिये। जहाँ जायें वहाँ गुजरातकी संस्कृतिको सुशोभित करना चाहिये। दिल्लीमें जो भी सार्वजनिक काम हो, अुसमें आपको भाग लेना चाहिये।

यह निर्णय हो चुका है कि हिन्दुस्तान स्वतंत्र होगा। कोअी कहेंगे कि हमने बड़ा काम किया, अिसलिअे हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ। परन्तु वह तो दुनियाकी परिस्थितिके कारण हुआ है। अिसमें अीश्वरकी कृपा तो ज़रूर है। परन्तु स्वतंत्रताका चित्र देखकर घबराहट होती है। जैसे सूर्योदयसे पहले प्रकाश दिखाअी देता है, वैसे स्वतंत्रताका प्रकाश दिखाअी नहीं देता।

लम्बे अरसे तक रोगशय्या पर पड़े रहनेके बाद जब बीमारी मिटती है और भूख खुलती है, तब परहेज़ रखना चाहिये। न रखनेसे कोअी बड़ी बीमारी लग जाती है। अिसी तरह स्वतंत्रताके साथ हमें परहेज़ और संयम रखना चाहिये। परन्तु आजकल तो सब यह चाहते हैं कि हमारी जाति या हमारे दलके हाथमें सत्ता आ जाय। लोग पागल हो गये हैं, और होश भूल गये हैं।

अैसे संयोगोंमें हमें निर्भय बनना चाहिये। किसी भी मनुष्यको घबराना नहीं चाहिये। अुड़ती अफवाहोंको नहीं मानना चाहिये। अैसे समयमें दिल मज़बूत रखना चाहिये। अपना और आसपास वालोंका बचाव करना सीखना चाहिये। अपने कुटुम्बकी रक्षा करना हमारा धर्म है। पुलिसके पीछे-पीछे नहीं दौड़ना चाहिये। हरअेकको पुलिस बन जाना चाहिये, यानी निडर हो जाना चाहिये। पुलिसवालेको भी मौत आती है। अितनी बात निश्चित है कि जीवनके साथ मरण लगा हुआ है। फिर डर क्यों रखा जाय? मौतसे मुहब्बत करना सीखना चाहिये।

जो निर्भयता पैदा न करे और अपना बचाव न करे, वह स्वतंत्रता हज़म करने लायक नहीं है।

हिन्दुस्तानमें सभी लोग पागल हो जायँ, तो अुतनी पुलिस कहाँसे लायें? अिसलिअे हरअेकको अपना-अपना और पड़ोसियोंका बचाव करना सीख लेना चाहिये। निर्भयता पैदा करनी चाहिये। अंग्रेज जा रहे हैं। परन्तु अुनमें अब भी अैसे लोग मौजूद हैं, जिनका यह खयाल है कि यहाँ अैश-आराम किया है, राज्य किया है, नौकरी थोड़े ही की है। अिसलिअे जाते-जाते भी रह सकें तो अच्छा है। हममें भी अैसे लोग मौजूद हैं, जो यह समझते हैं कि अिनकी मदद लेकर अपनी सत्ता जमा ली जाय। जो कमजोरियाँ होती हैं, वे अैसे वक्तमें अूपर आ जाती हैं।

हमारा अपना मार्ग सरल है। हम सच्चे सिद्धांत पर चलें। तीसरा मनुष्य हमारा नुकसान करे तो गांधीजीके कहे मुताबिक अुसे समझकर सहन किया जाय। या तो गांधीजीका मार्ग अपनाना चाहिये, या दुनियाका रास्ता पकड़ना चाहिये। अितनी सलाह मैं आपको अिस कठिन समयमें दे रहा हूँ।

समाजकी तरफसे आप जो सेवा-कार्य कर रहे हैं, अुसमें प्रगति हो और दिल्लीवाले यह कहें कि यह सज्जनोंका समाज है, तो गुजराती समाजकी शोभा बढ़ेगी।

१५७

रियासती विभाग

[ता० ५–७–१९४७ को भारत सरकारमें रियासती विभाग नया खोला गया, अुस समय देशी राजाओंको सम्बोधन करके दिया गया बयान।]

थोड़े दिन पहले घोषणा की गअी थी कि भारत सरकारने देशी रियासतोंके लिअे अलग विभाग खोलनेका निश्चय किया है। यह विभाग दोनों पक्षोंके सामान्य प्रश्नोंसे सम्बन्ध रखनेवाला कामकाज करेगा। यह विभाग आजसे खोला जा रहा है और राजाओंको अिसकी सूचना दे दी गअी है। अिस महत्त्वपूर्ण अवसर पर मैं देशी राजाओंको सम्बोधन करके दो शब्द कहना चाहता हूँ। मुझे यह कहते हुअे आनन्द होता है कि राजाओंमें बहुतसे तो मेरे निजी मित्र हैं।

अितिहासने हमें यह पाठ सिखाया है कि जब हमारा देश अनेक छोटे छोटे राज्योंमें बँट गया और हम अेक होकर बाहरके हमलोंका सामना न कर सके, तब हिन्दुस्तानमें विदेशी सत्ता जम गअी। हमारे आपसी झगड़ों, अीर्ष्या, द्वेष और वैरभावके कारण ही जो कोअी विदेशी आये अुनके सामने हम हार गये। हम दुबारा यह भूल न करें और अैसे जालमें न फँसें। हम स्वतन्त्रताके

द्वार पर खड़े हैं । यह बात सही है कि हम देशकी अेकताको पूरी तरह कायम न रख सके । मुस्लिम लीगने हिन्दुस्तानसे अलग होकर अपना अलग राज्य कायम करना तय किया है । अिससे हमें बहुत निराशा हुअी है और बड़ा दुःख हुआ है । परन्तु अिस तरह बँटवारा हो जाने पर भी यह बात निश्चित है कि हमारे देशमें कितने ही वर्षोंसे चली आ रही संस्कृति और हितोंकी अेकता की भावना कायम रहेगी । यह बात अधिकांश देशी राज्योंको और भी अधिक लागू होती है । बाकीके हिन्दुस्तानके साथ अुनकी भौगोलिक अेकता होनेके कारण और व्यापार-धन्धे, संस्कृति और राजनैतिक मामलोंके अटूट सम्बन्धोंके कारण हिन्दुस्तानके साथ मित्रता और सहयोग रखनेके सिवाय अुनके लिअे दूसरा कोअी चारा नहीं है । अिन राज्योंकी और साथ ही हिन्दुस्तानकी सलामती और रक्षाका तकाज़ा है कि हम देशके अलग-अलग भागोंमें अेकता बनाये रखें और अेक दूसरेके साथ मित्रता रखें ।

जब अंग्रेज़ लोगोंने अिस देशमें अपनी सत्ता कायम की, तब अुन्होंने सार्वभौमिकताका अेक सिद्धांत निकाला । अुसका अर्थ अितना ही था कि अंग्रेज़ लोगोंके स्वार्थोंको सर्वोपरि माना जाय । अभी तक अिस सार्वभौमिकताके सिद्धांतकी निश्चित व्याख्या नहीं हुअी । परन्तु अुसके परिणामस्वरूप व्यवहारमें देशी राज्योंको सहयोग देनेके बनिस्बत अंग्रेज सरकारकी ताबेदारी ही ज्यादा करनी पड़ती थी । अिस सार्वभौमिकताके क्षेत्रके बाहर कितनी ही बातें अैसी हैं, जिनके बारेमें ब्रिटिश भारत और देशी राज्योंके बीच दोनोंके लिअे लाभदायक संबंध रखे जा सकते हैं । अब अंग्रेज़ तो जा रहे हैं । अैसे समय यह कहा जा रहा है कि देशी राज्योंको अुनकी स्वतंत्रता वापस मिलनी चाहिये । सार्वभौमिकताके सिद्धांतके कारण देशी राज्योंको विदेशी हुकूमतकी जो ताबेदारी भोगनी पड़ती थी, अुससे स्वतंत्र होनेकी अिस माँगके साथ मेरी सहानुभूति है । परन्तु मैं यह नहीं मानता कि अुस ताबेदारीसे छूट जानेका देशी राज्य अिस तरह अुपयोग करना चाहेंगे कि हिन्दुस्तानके साथ अुनके जो सामान्य हित संबंध हैं, अुन्हें नुकसान पहुँचे; या अिस बातका वे विरोध करें कि अन्तमें तो प्रजाका हित और कल्याण ही सर्वोपरि है; या पिछली सदीमें ब्रिटिश भारत और देशी राज्योंके बीच दोनों पक्षोंके लिअे जो लाभदायक संबंध कायम हुअे हैं, अुन्हें वे तोड़ दें । अिस हकीकतसे यह चीज़ साबित हो जाती है कि अधिकांश देशी राज्य तो विधान-सभामें शामिल भी हो गये हैं । जो अभी तक शरीक नहीं हुअे हैं, अुनसे मैं अपील करता हूँ कि वे जल्दी शरीक हो जायँ । देशी राज्योंने अिस मौलिक सिद्धांतको तो मान लिया है कि वे रक्षा, विदेशी मामले और डाक-तार तथा यातायातके विषयमें भारतीय संघमें शामिल हो जायँगे ।

संघमें शामिल होनेके लिअे अिससे ज्यादा की हम अुनसे माँग नहीं करते। ये तीन विषय अैसे हैं, जिनमें देशका सामान्य हित समाया हुआ है। दूसरे मामलोंमें वे अपनी स्वतंत्रता रखना चाहेंगे, तो हम अुसका बराबर आदर करेंगे।

हमारे देशकी प्राचीन परम्पराओंका हमें जो अुत्तराधिकार मिला है, वह हमारे लिअे गर्वकी चीज़ है। यह तो अेक संयोगकी बात है कि कुछ लोग रियासतोंमें रहते हैं और कुछ लोग ब्रिटिश भारतमें। हमारे देशकी अुच्च परम्पराओं और संस्कृतिके हम सब बराबरीके हिस्सेदार हैं। हम सबके हित सम्बन्ध अलग-अलग नहीं हैं; अितना ही नहीं, हम सब अेक ही खून और अेक ही भावनाके बंधनमें बँधे हुअे हैं। कोअी हमें अलग-अलग टुकड़ोंमें बाँट नहीं सकता। कोअी हमारे बीच अैसी रुकावटें पैदा नहीं कर सकता, जिन्हें दूर न किया जा सके। अिसलिअे मैं कहता हूँ कि हम अेक दूसरेसे अलग हो जायँ, अिस ढंगसे संधियाँ करनेके बजाय अेक सभामें मित्रोंकी तरह बैठकर अपना विधान तैयार करें, अिसमें हमारी शोभा है। मैं अपने मित्र राजाओं और अुनकी प्रजाओंको निमन्त्रण देता हूँ कि मैत्री और सहयोगकी भावनासे विधान-सभामें आअिये। हम मिल-जुलकर सबके कल्याणके लिअे मातृभूमिके चरणोंमें बैठकर वफादारीके साथ अपना विधान तैयार करनेकी कोशिश करें।

अैसा मालूम होता है कि देशी राज्योंके प्रति कांग्रेसके रुखके बारेमें बहुत गलतफहमी फैली हुअी है। मैं बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि कांग्रेसकी यह जरा भी अिच्छा नहीं है कि रियासतोंके अन्दरूनी मामलोंमें दखल दिया जाय। कांग्रेस राजाओंकी दुश्मन नहीं है, बल्कि वह यह चाहती है कि अुसकी छत्रछायामें राजाओंको और साथ ही अुनकी प्रजाको पूरी खुशहाली, संतोष और सुख मिले। और अिस नये विभागको अिस ढंगसे चलानेकी मेरी नीति नहीं होगी कि राजाओंके साथके हमारे सम्बन्धमें श्रेष्ठताकी गन्ध आये। अगर कुछ भी श्रेष्ठताका भाव होगा, तो वह परस्पर कल्याण और परस्पर प्रगतिके लिअे होगा। हमें कोअी स्वार्थ नहीं साधना है और न हमारे मनमें कोअी दूसरा अुद्देश्य है। हमारा प्रयत्न हमेशा यह रहेगा कि हम अेक दूसरेका दृष्टिकोण समझें और अैसा निर्णय करें, जो देशके कल्याणके लिअे सबको स्वीकार हो जाय। अिस बातको ध्यानमें रखकर मैं यह विचार कर रहा हूँ कि क्या अिस नये विभागके प्रबन्धके लिअे अेक अैसी स्थायी समितिकी रचना की जा सकती है, जिसमें देशी राज्य और ब्रिटिश भारतके प्रतिनिधि हों।

हमारे देशके अितिहासमें यह अमूल्य अवसर है। हम मिलकर काम करेंगे, तो देशको महत्ताके शिखर पर पहुँचा देंगे; और अगर मेल नहीं रख

सकेंगे, तो नअी-नअी आफतोंको निमंत्रण देंगे। मुझे आशा है कि देशी राज्य अितना ध्यानमें रखेंगे कि अगर हम अपने समान हितके लिअे सहयोग नहीं करेंगे, तो दूसरा विकल्प अव्यवस्था और अराजकताका ही रह जाता है। अपनी सामान्य भलाअीके लिअे हम मिलकर काम नहीं करेंगे, तो छोटे और बड़े सभी राज्य विनाशके मार्ग पर अग्रसर हो जायँगे। भावी संतानें हमें यह शाप न दें कि अिन लोगोंको मौका तो मिला था, परन्तु अिन लोगोंने अुसका अिस तरह अुपयोग नहीं किया, जिससे सबका भला होता। अिसके बजाय मैं तो यही चाहता हूँ कि भावी सन्तानोंके लिअे हमारे अच्छे सम्बन्धोंका अुत्तम अुत्तराधिकार छोड़ जानेका सौभाग्य हमें मिले, ताकि हमारी यह पवित्र भूमि दुनियाके देशोंमें अपना अुचित सम्मानपूर्ण स्थान ले सके और शांति तथा समृद्धिका निवास-स्थान बने।

१५८

प्रजाके टुकड़े नहीं होंगे

[ता० ११-८-१९४७ को दिल्लीमें रामलीला मैदान पर दिये गये भाषणसे।]

यह दिन अुन लोगोंकी स्मृतिमें रखा गया है, जो आज़ादीके लिअे शहीद हुअे, जिन्होंने अपने प्राण अर्पण किये। अुन्हें याद करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। हमारी फतह अुनके बलिदानके कारण हुअी है। हम अुन्हें याद न करें तो बेवफ़ा कहलायेंगे।

चार दिन बाद विदेशी सरकार यहाँसे हट जायेगी। अब कांग्रेसका काम पूरा होता है। हमारा जीवन-कार्य पूरा होता है। जब लोकमान्यका देहान्त हुआ, तब चौपाटीके मैदानमें हमने प्रतिज्ञा की थी कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। अुसके बाद लाहोर कांग्रेसमें रावीके किनारे कांग्रेसके अिस झंडेके नीचे आज़ादीके लिअे प्राण देनेकी प्रतिज्ञा की और निश्चय किया कि हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी सब अेक होकर रहेंगे। वह निश्चय हम पूरी तरह नहीं निभा सके, अिसलिअे आज जितना आनन्द होना चाहिये, अुतना नहीं हो रहा है। मगर अितना समझ लेना चाहिये कि अब विदेशी हमारे बीचमें किसी तरहकी फूट नहीं डाल सकेंगे। यह बहुत बड़ी बात है।

लोग कहते हैं कि कांग्रेसने मुल्कके टुकड़े कर दिये। अेक तरहसे यह बात सच है। हमने सोच-विचार कर यह जिम्मेदारी ली है। किसीके डर या

दबावसे नहीं ली। हिन्दुस्तानके टुकड़े करनेका मैं सबसे कट्टर विरोधी था। लेकिन जब मैं केन्द्रीय सरकारमें आकर बैठा, तो देखा कि साम्प्रदायिक ज़हर चपरासीसे लेकर अूँचे अधिकारियों तक फैल गया है। अैसी हालतमें साथ रहकर लड़ते रहने और तीसरेसे बीच-बचाव कराते रहनेसे अलग हो जाना ही अच्छा है।

कुछ हफ्तोंके बाद २ सितम्बरको हमें केन्द्रीय सरकारमें आये अेक बरस पूरा हो जायगा। कलकत्तेमें मारकाट मचनेके थोड़े ही दिन बाद हम केन्द्रीय सरकारमें आये। दोनों जातियोंमें बहुत वैरभाव है। कलकत्ता, लाहौर और बम्बअीमें जाकर देखिये तो जगह-जगह पाकिस्तान बन गये हैं। मुस्लिम मुहल्लेमें कोअी हिन्दू नहीं जा सकता। रावलपिंडीमें जाकर देखिये तो वहाँ कोअी हिन्दू नहीं रह सकता। हमने देख लिया कि जब तक विदेशी सरकार रहेगी, तब तक अिस प्रश्नका निपटारा नहीं होगा। अंग्रेज़ सरकारने डेढ़ वर्ष बाद सत्ता छोड़नेका निश्चय किया, तब आसाम, पंजाब, बंगाल, सरहद प्रान्त चारों तरफ दंगे हुअे, खूनखराबी हुअी। हमने सरकारसे कहा, आप जल्दी चले जाअिये। तब अुन्होंने कहा कि तुम आपसमें फैसला कर लो तो हम चले जायँ। अिस पर हमने कहा कि अच्छा, पाकिस्तानकी बात हमें मंजूर है, परन्तु बंगाल और पंजाबके टुकड़े कर दीजिये।

हमने मजबूरीसे यह बात मानी। नतीजा यह हुआ कि सरकार जो जून १९४८ में सत्ता छोड़नेवाली थी, अुसके बजाय अुसने १५ अगस्त १९४७ को छोड़ना तय किया। सेना और अधिकारियों वगैराका भी बँटवारा कर दिया।

विभाजनके बाद भी देशकी कुल आबादीकी ७५ फ़ीसदी प्रजा अिस तरफ रही है। अुसे अूँची अुठाना है। हिन्दुस्तान अिस वक्त कठिनाअीमें है। आर्थिक कठिनाअियाँ हैं। हिन्दुस्तान देनदारसे लेनदार देश ज़रूर बन गया है, मगर यह निश्चित नहीं है कि अिंग्लैंड रुपया कब तक लौटायेगा। तब लेनदार बननेसे क्या लाभ?

* * *

बोलनेसे कुछ नहीं होता। पण्डित तो बहुत हैं। हमारे समाजवादी भाअी समाजवादी राज्यकी बातें करते हैं। मैं अुनसे कहता हूँ कि तुम अेक प्रान्त लेकर अुसमें सब कुछ करके दिखाओ। अिंग्लैंडमें समाजवादी दलका राज्य है, मगर वे मज़दूरोंके कामके घण्टे बढ़ानेकी बात कहते हैं और हमारे यहाँ समाजवादी हड़तालकी बातें करते हैं, और कहते हैं कि वेतन बढ़ाओ। तब पैसा कहाँसे आयेगा? नासिकके कारखानेमें नोट छापते रहनेसे देशका धन नहीं बढ़ेगा। देशमें धन है कहाँ? हिसाब लगाओ, फ़ी आदमी कितनी पाअियां आती हैं?

* * *

राजा-महाराजाओंसे मैं कहता हूँ कि वक्त आने पर आपको प्रजाके कहे अनुसार करना है। जिन राजाओंके साथ प्रजा नहीं होगी, वे अपने आप खतम हो जायँगे। मैं अुनसे कहता हूँ कि १५ तारीख तक जो भारतीय संघमें आ गया वह आ गया, बादमें दूसरी तरह हिसाब होगा। आज जो शर्तें मिलती हैं, वे फिर नहीं मिलेंगी। अिसलिअे राज्य सम्हालना हो, तो अंदर आ जाअिये। आजकी दुनियामें अकेला रहना मुश्किल है। जब तेज आँधी आती है, तब अकेला पेड़ गिर जाता है। मगर जो दूसरे पेड़ोंके समूहमें होता है, वह बच जाता है। आप भी रामचंद्रजी और अशोक जैसोंके वंशज हैं। परन्तु आजकल आप अंग्रेज़ अधिकारियोंके छोटे-छोटे चपरासियोंको भी सलाम करते हैं! आपको अभी तक विश्वास नहीं होता कि १५ अगस्तको अंग्रेज़ चले जायँगे। परन्तु जब वे जायँगे और आपको स्वतंत्रताकी हवा लगेगी, तब आपके हृदयपट खुलेंगे।

* * *

मैं जेलसे छूटा तभीसे कहता हूँ कि अब अेशिया महाद्वीपमें युरोपियनोंके लिअे हुकूमत करना मुश्किल है। अिन्डोनेशियामें डच लोग गड़बड़ कर रहे हैं। पिछले युद्धके नतीजे तो अभी खतम ही नहीं हुअे कि फिर जहाँ तहाँ छोटी-छोटी लड़ाअियाँ हो रही हैं। दुबारा बड़ी लड़ाअी होगी, तो सब लड़ने-वालोंका कब्रिस्तान बन जायगा।

* * *

देशमें शांति होनी चाहिये। जंगली ढंगसे लड़ने, कोअी बहन जा रही हो या बच्चा जा रहा हो, अुसे छुरी मार देनेसे किसी जातिकी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ी। शांतिके बिना हमारा किसी तरह अुद्धार नहीं होगा। अिसमें किसीके संतोषके लिअे झुकनेकी बात नहीं है, अक्लकी बात है। फिर भी आपको लड़ना हो तो लड़िये। मगर फौजसे लड़िये। अिस तरह गले काटनेमें तो दुनिया हमारा तमाशा देखती है। अंग्रेज़ लोगोंके दिलमें ज़हर था, वह तो निकल गया है। अब हम कितना ही लड़ें, तो भी अेक प्रजासे दो प्रजा नहीं हो सकते। देशके टुकड़े होने पर भी प्रजाके टुकड़े नहीं हो सकते। टुकड़े कौन कर सकता है? नदी और पहाड़के टुकड़े हो सकेंगे? मुसलमानोंका भी मूल यहीं है। यहाँ जुम्मा मस्जिद है, ताजमहल है, अलीगढ़ युनिवर्सिटी है। अिसलिअे हमारे साथ अेक हुअे बिना अुनका छुटकारा नहीं।

आज जो सरकार बन रही है, अुसमें सावधानी रखनेकी ज़रूरत है। सेनामें जितने मुसलमान थे, वे अुस तरफ चले गये हैं और हिन्दू अिस ओर आ गये हैं। अैसी सेनामें राष्ट्रीयता कहाँसे आयेगी? हिन्दू चपरासी और

बल्कि सब अिधर आ गये हैं और मुसलमान अुधर चले गये हैं। मगर जब मुश्किल पड़ेगी तब वे लौट आयेंगे। हमारा राज्य साम्प्रदायिक राज्य नहीं है। देशके टुकड़े हो जानेके बाद भी हमारा मुल्क बहुत बड़ा है! आबादी भी बहुत है। बीते हुअे समयको सपनेकी तरह भूल जािअये। पाकिस्तानको भूल जािअये। हाँ, अेक बात है। अुनकी तरफसे झगड़ा करनेकी कोशिश की जाय, तो फिर हमारे बदनमें ताकत होनी चाहिये। हममें संगठन होना चाहिये।

कुछ लोग अिस समय गोरक्षाकी बात करने लगे हैं। अभी तो बच्चों, स्त्रियों और बूढ़ोंकी ही रक्षा नहीं होती, तब गोरक्षाकी तो बात ही कहाँ! जिन मुल्कोंमें गायोंकी हत्या करनेकी मनाही नहीं है, वहाँ जैसी हृष्ट-पुष्ट गायें पाअी जाती हैं, वैसी यहाँ नहीं पाअी जातीं। सचमुच गोरक्षा करनी हो तो गायको अच्छी तरह पालना सीखिये।

अिस समय हिन्दुस्तानको अेक करनेका मौका है। आज लाहोरसे लेकर पूर्व बंगालका थोड़ा भाग छोड़ कर बाकीके हिन्दुस्तानको अेक करनेका मौका अेक हज़ार वर्ष बाद आया है।

हमें आज़ादी मिल गअी है। हमें अच्छी तरह काम करना हो तो देशमें शांति चाहिये। शांति नहीं होगी, खानेको नहीं होगा, तो लोग कहेंगे कि अंग्रेज़ोंकी गुलामी अच्छी थी।

पिछले डेढ़ सालका अितिहास भूल जािअये। १५ अगस्तके बाद कांग्रेसका कार्यक्रम बना लीजिये। अब तकका बहुत-सा समय झगड़ेमें बीता है।

हम यहाँ अिस तरह नहीं बैठे है कि धक्का मारते ही हट जायँ। जैसा परसों जवाहरलालजीने कहा है, जो हमसे अच्छा काम करके दिखाये वह आ सकता है। हम अुसे सत्ता सौंपनेको तैयार हैं।

सूची

अंगड़ी २०८
अणे ५३०-१
अधिक अुपजाओ ६०५-६
अफगान —का डर ३३—४; — युद्ध ५३६
अफ्रीका २५६, ५३४
अब्दुल गफ्फारखान ५२४
अमेरिका २०३, ४६४, ४८०, ५०२, ५१७, ५२३, ५२९—३१
अमृतलाल, सेठ ४६६, ५८९
अमृतसर ५३०
अरेबियन नाअिट्स ३२१
अलाहाबाद ४५४, ५१४
अलीभाअी १२, ३९
अशोक ६१६
असहयोग ११, १७—९, २३—३१, ७८, ८५, २०२, २१९—२०, २८५—६, ५२०, — चार प्रकारका २७—९
अस्पृश्यता ३५, ४५, १७६, १९३, २०२, २०५—६, २५६, २९१, ३१७, ३६९, ४७५, ४८९, ५०१, ५६४—६, ५७८, ५८४, ५८८, ५९५—७, ६०३
अहमदनगर ४६५—६
अहमदाबाद १०, १२१, ३६८—९, ४०१, ४७०, ४८७, ४९५, ५०५, ५०७—११, ५७१; — की म्युनिसिपेलिटी ४७—५०, ४६७—८
अहिंसा १९९, २१३, २२०, २२६, २४३, २४६—७, ३६५, ४४९, ४५२, ४६२, ४८१, ४९२, ५०८, ५१६, ५२२, ५२४, ५६७
आणन्द ४९३
आदर्श गाँव १६५—८, ५७४
आशाभाअी ५७१, ५७४—५
अिंग्लैंड २२०, ३८५, ३९६, ४२४, ४३५, ५२३, ५२५, ५४७—८, ५५५, ६१५
अिंचकेप, लॉर्ड २५४
अिंडोनेशिया ५५८, ६१६
अेण्ड्रूज़, दीनबन्धु २५६
अेटलांटिक चार्टर ५१७, ५३३, ५४८
अेटली, मेजर ५४६, ५५८
अेबिसीनिया ३२१
अेमरी ५४५
अेशिया छोड़ो ५५७—६०
ओडायर, माअिकेल, सर १५
कंट्रोल ५८५, ५८९—९०
कमिश्नर, नागपुरके ७३—४, ८१
कराची ३६४, — कारपोरेशन ३६८—९
कर्नाटक २००, २०७
कस्तूरबा ५७५
कांग्रेस १७, ६५—६, ७१, ७८, २१६, २१९, २२६, २४५—५८, २६५—७, ३२६—७, ३५६—७, ३६५, ४१२, ४८१, ५१३—४, ५१६—८,

५२०, ५२४, ५२९–३१, ५३६–४४, ५४९, ५५४–५, ५६६, ६०१–२, ६१४
'कॉम्यूनल ट्रैंगल' ५२८
किशोरलालभाओी ४६१
किसान २१०–१२, २१४–५, २१८, २४३–४, २४६, ३०३–१९, ३४८–९, ३५३, ३६७, ३७२–३, ४०५, ४१४, ५७४
कुंजरू, हृदयनाथ २५६
कुमारप्पा ५७१
केडल ३८९, ३९१–४, ३९८–९
कोठारी, मणिलाल ६८, ७३
क्लाअिव, राबर्ट ४३५
क्रिप्स, स्टेफर्ड, ५१३–५, ५२५–६, ५३९, ५४१, ५४६–७; –के प्रस्ताव ५१३, ५२२–३, ५३०–१, ५४५
खादी १९३, २४२–४, २५२, २५७, २६६, २७७, ४५१, ५६४
खिलाफत — और पंजाबका सवाल ११–२; कमेटी १७
खेड़ा सत्याग्रह ३–८
गांधी, कबा ३९५–६
गांधीजी १७, ६३, ६६, ७५, ७८, ८५, १९६–९, २०४, २०९–१०, २१३–४, २२२–३, २३१, २४५–६, २६०, २६३–४, २९३, ३०९–१०, ३२२, ३५८, ३९५, ४०२, ४४७–९, ४६०, ४७३–५, ४९२, ४९९, ५१०, ५१४, ५१९–२०, ५३४, ५४९–५३, ५६५
गिब्सन, रेज़ीडेण्ट ३८९, ३९८
गिल्डर, डॉ० ४३०
गुजरात बाढ़-संकट १२०–३७; –में किसानोंको मदद १२२–४; –में गाँवोंका नाश १२१; –मकान बाँधनेका सवाल १२३–४, १३४, १३६–७
गुजरात विद्यापीठ २१३, २१५, ४८२
गुलाबराजा ८२
गोखले १९९
गोरक्षा ५८२–३
गोलमेज परिषद २४७, ३५८, ३६६, ५२३–४
गौतम, मोहनलाल ३०३
ग्राम पंचायत २०३, ४८९, ४९३; –कानून २९१, ५८४
ग्रामसेवक ३००–२, ४५७–८
चंचल बहन २२५
चंदूलाल, डॉ० ७७,३३१
चम्पारन २०९–१२
चरखा २०४, २२२, २५१, ४१९, ४२२, ४५१, ४५७
चर्चिल ५१७, ५२३, ५४५, ५४७–८, ५६६
चिकोड़ी २०८
चीन ५०२, ५१७, ५२५, ५२७, ५३०, ५४०
चीनाओी, सेठ ५०९
चूड़गर, बैरिस्टर ३९२
चौधरी, महेन्द्र ५५१
छोताभाओी ४०६–७
'जन्मभूमि' ३६१, ३९७
जमींदारी प्रथा ३०५–७
जयपुर ४८५–६
जयप्रकाश ५६७
जयरामदास १९९

जर्मनी ४३१, ४३७, ४८१
जलियाँवाला बाग ४३१, ५३०
जादवजीभाअी ४१६–७
जापान ५१७–८, ५९३
जावा ५०२
जिम्मेदार हुकूमत ३७२, ३८०–४, ३८८, ४४२–४
जुगतराम २१३
जोशी ५४१
ज्ञाननाथ ४८५

टंडनजी ३०३, ३१०
'टाअिम्स ऑफ अिण्डिया' ७४, २४१, ३९८, ५१७, ५४१
ट्रिंकोमाली ५३२
ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल १९३
टैगोर १९७
ठक्कर बापा ४३८
डाकू ७९–८१
डॉक्टर ४४१–२; — वकील २१८
'डेली हेरल्ड' ५१८
ढेबर, अुछरंगराय ३६१–३, ३७१, ३८९–९३, ३९५–९
ताता और पेटिट २३८
तिलक, लोकमान्य १०, ११८, २३९, २५६, ४२६–८ ४३०, ६१४
तुलसीभाअी ३७८
थामणा ४०७, ४८२–४
दरबार गोपालदास ७९, ३७१, ४६९
दाँडी-कूच ३२३, ४३६, ४५६, ५७५
दाबू ५९५
दिल्ली २७२, ६१४
देव, शंकरराव ३५५
देशपांडे, गंगाधरराव ७९, २०१, ३५५
देशी राज्य १७०–८७, २६१, ३२०–२, ३४६–५०, ३५५–८, ३६१–३, ३७१, ४०१, ४०९–१८, ४४२–६, ४५३–६; —और भारतीय संघ ६१२; —के प्रति कांग्रेसकी नीति ६१३
देसाअी, दादूभाअी २८९

धनीआवी ३८६
धरना (पिकेटिंग) २३१, २५३, २५५
धारासभा २८–९, ७०, ७२, ७९, २०१–३, २६५, ३२२, ३६०, ५५५; —का चुनाव ३२२–३५; —का बहिष्कार २०–१, ७८–९, ३२३; —के चुनावमें कांग्रेसको ही मत दें ३३०–५, ५५६–७

नमक कर २२१, २२८, २५५
नमक कानून २२८
नरोत्तम मुरारजी, सेठ २५४
नागपुर झंडा सत्याग्रह ६७–७७; —का अितिहास ६८–७५; —का रहस्य ७५–७; —की सच्ची विजय ७३
नानाभाअी ४१६–७, ४१९, ४२१
नासिक ४३४, ६१५; —जेल २२५
नून, फिरोजखाँ ५३१

नेहरू, पंडित जवाहरलाल १९०, २२८, २३९, २४५, २५८, ३०३–४, ३०५–१०, ३३३, ४४९, ५१४, ५८३, ६१७
नेहरू, पंडित मोतीलालजी २३९, २४५, २४८
नेहरू, स्वरूपरानी २४५
नौरोजी, दादाभाअी २३५–६

पंजाब संकटनिवारण ६०४–५
पंडया, मोहनलाल ८१, ८६, २१४
पटणी, प्रभाशंकर, सर ४१४–५
पटवर्धन, रावसाहब ४६६
पटेल, भास्कर, डॉ० २८२, २८५
पटेल, विट्ठलभाओी ६५–६, ७३, ७५, १९९; –का जवाब ६६
पत्रकार परिषदमें 'भारत छोड़ो' सम्बन्धी सवाल-जवाब ५२१–६
पद स्वीकार ३२५–६
परदा प्रथा २०९–११
पाकिस्तान ५३१, ५५६, ५६७
पारसी २३५, २३८
पुरुषोत्तमदास, सर १२८
'पे कमीशन' ६०९
पेट्रिक ४७४
पेरीनबहन २३१
पोलैंड ४३१, ४३६, ४८१
प्रवासी भारतीय २५६–७
प्रेट साहब ७
फूलचन्दभाओी १७७, ४७३
'फेडरेशन' २४९–५०
फ्रांस ४३२, ४६५, ५४८
बंगलोर २०७
बम्बओी २३०, २३४, २४०, २४२–३, ४२६, ४८१, ६०७–८, ६१५
बजाज, जमनालाल ६७–८, ७९, १९३, २०२, ४८५
बड़ौदा २६१, २७३, ३७८–८८, ४५३–६, ४८६
बबलभाओी ४८२
बर्मा (ब्रह्मदेश) २५०, ५१३, ५१८, ५२१, ५३५, ५३९, ५४५–६
बहिष्कार २५७; –की नींव खादी २४२–३; –विदेशी वस्त्रका २३४, २४२, २५१–३; –स्कूल कॉलेजोंका २३१; देखिये असहयोग
बाबर देवा ८१, ८६–७, ८९,–को पकड़नेके लिओ अलियाकी दोस्ती ८८
बाबला २६१
बारडोली १९५, २६१, २६८–७०, ६०७, ६०९
बारडोली सत्याग्रह १३८–५७, १९९, २०१, २११, २१३, २१७, २२८, २६१, २६८; –पैसे बचानेके लिओ नहीं १४३, १४८; –में प्रजाको सन्देश १३८–९, १४१–३, १५१; –में बहनोंको साथ रखें १४०; –में बहिष्कार, आत्म-रक्षाके लिओ १४–५, अफसरोंका नहीं १४९; –में बीज बन कर गड़ जाओ १५३
बेचरभाओी ४७४
बेल्जियम ४८१
बोचासण ५७८, ६०७
बोरसद २९७; –के स्वयंसेवकोंसे १०१–३; –तहसीलके लोग ३, २२८; –प्लेग-निवारणके बारेमें निवेदन २७८–८८, २९७
बोरसद सत्याग्रह ७९–१००; –का विजयोत्सव ९६–८; –की पूर्णाहुति ९९–१००; –की शुरुआत ७९–८३; –के कारण, अतिरिक्त पुलिस ७९–८१, ८३, ८५–९२; हैडिया कर ७९–८०, ९३; –झूठे सबूत ९३–६; –डाकू ८४–९२, ९७; –प्रान्तीय समिति द्वारा स्थितिकी जाँच

८६; —में स्वयंसेवक ८०, ८३,९१
बोलशेविज्म २०१, २३५
भक्तिबा ४६९
भगतसिंह २४५
भाअीलालभाअी ५७१–३
भादरण ३८३, ३९८
भारत छोड़ो ३२३–७, ४५६, ४७६–७, ४८१–२, ५१६–२१, ५२६–९, ५३४, ५३७, ५४०–४, ५५३, ५५५, ५५८, ५६०, ५९९
भारत मंत्री ८, ३४०, ४३२–३, ५०५ ५३९, ५५२
भारतीय संघ ६१२
भावनगर ३९४, ४११–५; —का दंगा ४१६–८
मगनभाअी, डॉ० ५६१, ५८१, ५८३
मनुभाअी, डॉ० ४४२
मरोली आश्रम २७७
मलाया ५०२, ५१३
मलीकन्दा ४६१
मसानी ५३६
महादेवभाअी ५७५
महाराष्ट्र १९३–२०१
मांटेग्यु, मि० १७
मांटेग्यु—चेम्सफोर्ड सुधार २८९
मार्टिन, मि० ५०
मार्शल लॉ २३०, २३२–३
मालवीय, पंडित मदनमोहन १५, १९३
मालेगाँव ३५
मीराबहन २०९–१०
मुहम्मदअली, मौलाना ७८–९, २४५
मुन्शी ५८३
मुस्लिम लीग ४५३, ५२४, ५९३, ६१२
मृत्यु भोज २६२
मेकडोनाल्ड, रेमज़े ५१८
मैक्सवेल, गृहमंत्री ५१७, ५४१
मोरारजीभाअी २६२, २७०–१
म्युनिसिपेलिटी ७-१०,२६४,२८९-९९, ३६८–९, ४३९–४०, ४६७–८, ४८७, ५२४, ५७१; —आन्दोलन ४७–५०; —और सरकार २९३–९; —के कर्मचारी ५८६–७;
'यंग अिंडिया' २१५
यरवदा जेल २२७, २४३, २६३
युवकोंसे दो शब्द १९५–६
रचनात्मक काम १९१–४, ३६८, ४०७, ४८३, ४९५
रविशंकर ८१, ८६, २१५, २२५, ३०१, ३३६
राजकुमार कॉलेज ३७६, ३९६
राजकोट ३६१–३, ३७१–७, ३८९–४०१, –की संधि ४७३
राजगुरु २४५
राजगोपालाचार्य (राजाजी) २०२, २०६
राजपीपला २६१, ३४६–५०, ४४२–६
राजमार्ग, सत्य और अहिंसाका २२६
राजा–महाराजा १७१–३, ३२०, ३७२–६, ३८४–५, ३९०, ३९७–८, ४०९, ४१२, ४४२–३, ४७३–४, ५९४–५, ६००, ६११–४, ६१६
राजेन्द्रबाबू ७८
रानीपरज परिषद २७२–७
राष्ट्रीय मोर्चा ५३६–७
रियासती विभाग ६११
'रिवोल्युशन' १९७, २०९

रूज़वेल्ट ५५९
रूस ५१६–७, ५३४, ५४८
रौलट,–सत्याग्रह ८–९; –कानून १३, ५२०, ५३०
लैंकाशायर ४२९, ४८७
लंदन ४८६
लाखाजीराज ३६१–२, ३७६, ३९०, ३९३, ३९५–६
लायड, जार्ज ५४५
लींबड़ी ४०९–१०, ४६९–७२
लेनिन १८९
लैंड अेक्विज़िशन अेक्ट २९४
वढ़वाण ४७३–८
वरदाचारी ७८
वरसाले ४८१, ५२७
वाअिसरॉय १८९, २२०, ३०९
विट्ठल कन्या विद्यालय ५८३–८
विदेशी कपड़ेका बहिष्कार १९३; –की होली ४२; देखिये असहयोग, बहिष्कार
विधान-सभा ६१२
विभाजन क्यों मंजूर किया ६१५
विल्सन, प्रेसिडेण्ट ५३०, ५४५
विश्वयुद्ध ४३३–४०, ४५३, ४५६, ४५९, ४६४, ४७६–८१, ४९४–५, ४९८, ५३०, ५४१–२, ५४५
विश्वविद्यालय ५६१–२
वीरावाला ३८९, ४७४
वुड, कलेक्टर ८२–३
वेड़छी २१३; –आश्रम २७५, ६०७
वेवल, लॉर्ड ५५१
व्यापारियोंसे २१७, २१९, २३०–२, २३४, २५७–६०
शराबबन्दी २०२–३, २५४–५, २८८, ४२६–३०, ५९७
शिक्षक — और हड़ताल ६०७–९; –का दर्जा, पहले और अब ६०७–८; –का वेतन ६०८
शेखुपुर परिषद २७२, २७४, २७७
शेरवानी, टी० के०, स्व० ३०३
शोलापुर २३०, २३२, ४३९–४१
संखेड़ा मेवास ३८५
संघशासन २४९–५०
सतीशबाबू ५२७
सत्याग्रह १९९, २१६–२३, २१९, ३११, ४०६; –की तैयारी ४५०–२; –में अभी समझौतेका समय नहीं २२७, २३७–८
सप्रू, तेजबहादुर, डॉ० ३४–५, ५२३
सफाअी ३१६–७; –शहरकी ३५९
'सयाजीविजय' ३८७
सरकार, अंग्रेज ३–५, २७–८, ९४-५, १५४, २२२, २२४–५, २३२–३, २३७, २४९, ४५३–४, ४८०–१, ४९४, ५०३, ५३०–१, ५४४–५; –और अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटी ४७–५०, ११०–३, २९५–७; –और म्युनिसिपेलिटी २९६–९; –और स्थानीय संस्थाअें २८९–९०; –के बोरसद सत्याग्रहके बारेमें झूठे सबूत ९३–६; –को बोरसद प्लेग-निवारणके बारेमें जवाब २७८–८८
सविनय कानून भंग ७१, २२०, २६१, २६५–६, ५५३
साम्प्रदायिक अेकता ३४, १९४, २५०, २९१, ३१७, ५२८, ५६३, ५६४–५, ५७४
साम्प्रदायिक बँटवारा ४५३–४
साबरमती २२०;–जेल २४३

सिंगापुर ४९६, ५०२, ५१२, ५४४–५
सिनहा, लॉर्ड १४
सिपाही कैसे बने २१३–४
सीतलवाड़, चिमनलाल, सर १४, ४५०–१
सुखदेव २४५
सुणाव २६१–२
सुन्दरलालजी ७६
सुभाष बाबू ५१७
सूरत २६१, ६०३
सेडलर ५६१
सेनगुप्ता २३९
सेवाग्राम ४५८
सेवादलका फर्ज़ ६०९; देखिये स्वयंसेवक
'स्टेट्समेन' ७४, ४७६
स्नातक २१३–६, ४०७–९
स्यादला २६२
स्वयंसेवक ६९, ७६, १२१, १९५, २४०, २८२, ३६४, ४२४–५
स्वराज्य १९५, २६५, ३२४
स्वराज्यदल ६५–६
स्वामी आनन्द ३०१
हकीम अजमलखाँ ४६
हलपति ३४०–५, ३५१–५, ४०४–५
हालैंड ४८१
हिन्दुस्तान ५१३–२८, ५३०–४६, ५५५, ५५८, ५९८
हिजरत २४१–२
हिटलर ४३१, ४३५, ४७८, ५२७; –हिन्दुस्तानके ४८६
हिन्दू-मुसलमानोंकी अेकता १९९, २२१; देखिये साम्प्रदायिक अेकता
हीली, सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस २०१
हूर ५२२
हेग, हेरी, सर (गवर्नर) ३०५
हेलिफेक्स, लॉर्ड ४८६
हैडिया कर ७९–८०